

श्रीवास्तुकपुजा.

श्रीगुरुभ्योनमः

श्री शांतीजीनेश्वर समरिये ॥ पंचमा चक्री जेह ॥ ती
कर सोलमा नमुं॥शांतीकरल.गुण गेह॥१॥ श्रीस्नात्र
जा नली ॥ करु स्तवना सार ॥ वास्तुक पुजा घरत
॥ कस्तां हरख अपारं ॥२॥ प्रथम घर प्रवेशमां ॥
जा भणवो उदार ॥ अथर वास्तुक दुर करो ॥ जे मा
या उपचार ॥३॥ पुजा पुजादीक प्रते ॥ जल कलसा
खकारा॥पांच नरीनवराविए॥श्रीजीन अगे धारा॥४॥
जल फुल नैवेद तेम ॥ वास दीप धुप जेह ॥ प्रजु आ
जल ते धोइए ॥ शांती होए संत तेह ॥५॥

अथः ढाल १ ली.श्री अरीहंत पद ध्याइए॥ए देसी॥
शांतीजीनेश्वर पुजता॥ होवे शांती अपाररे ॥ वास्तुक
पर माहे कीजीए ॥ ए पुजा मनुहाररे ॥ शांतीजीनेश्वर
हजीए॥१॥ वास्तुक दोय प्रकारनुं ॥ द्रव्य-भाव ते जा
गोरि ॥ द्रव्य वास्तुक दोय भेदथी ॥ शुच अशुच कहा
गोरि ॥शांती० २॥ होमादीक घरमां करे ॥ ब्राह्मण भौ
जन जासरे ॥ कोला प्रमुख वीदारतो॥मनुष घात होय
तासरे ॥ शांती० ३ ॥ श्रीफल प्रमुख होमता ॥ पंचेंद्री
ठरावी तासरे ॥ ए अपमंगलीक जाणीए ॥ जीहां जीव

हंसांनी रासरे ॥शाती० ४॥ एह अशुभ वास्तुक कह
 होवे पापनी रासरे ॥ आ नव परनव दु ख लहे ॥
 न करीए वासरे ॥शाती० ५॥ मगलीकभणी कीजी
 वास्तुक घरनुं जेहरे ॥ सरव मगलमे मगल कह्यु
 जीज नाम छे एहरे ॥शाती० ६॥ घर मधे पथरावी
 श्री जीन तीव सुखकाररे ॥ ण्ठ त्रण रची उपरे ॥
 पना कीजे मनुहाररे ॥शाती० ७॥ श्री शातीजीन
 करवी जगती उदाररे ॥ पच पंच वस्तु मीलावीए
 आगल धरो मनुहाररे ॥ शाती० ८ ॥ पंच सनाथी
 कीजीए ॥ कलस पंच ते जरीएरे ॥ प्रतेके प्रतेके ते
 रो ॥ एम शाती गुण वरीएरे ॥शाती० ९॥ अपमंगली
 होवे नही ॥ माहामगलीक ते कहीएरे ॥ मुनी हुकम
 शातीजी ॥ रीद्धि सीद्धि सर्व लहीएरे ॥ शाती० १०
 काव्य श्री परम पुरपाय ॥ परमेश्वराय ॥
 जरा मृत्यु नीवारणाय ॥ श्रीमतेजीनेद्राय ॥ जलनी
 अजास्वाहा
 अथ बीजी पुजा ॥ दुहा ॥ श्रीजीन थापन
 हां करे ॥ चमर छत्र संयुक्त ॥ ते आगल पुजा करे
 जेम कह्यु छे सुत ॥१॥ पुजा करता प्रभुतणी ॥ रिद्धि
 सिद्धि घर होय ॥ पुत्र परीवार वाधे घणो ॥ वास्तुक
 कीजे सोया ॥२॥ ढाल २ जी ॥ जेम जेम ए गिरि जे

२॥ तेम तेम पाप पलाय सलुणा ए देशी॥ स्नान
 १ प्रभु तणुरे ॥ पुजा रचो मनुहार सलुणा ॥ श्री
 रचो नव नव पेरेरे ॥ दीपक झाक झमाल सलुणा ॥
 शांतीजीन पुजीएरे ॥ तेम तेम मंगलीक थायसलुणा ॥
 आंकणी ॥ १ ॥ गर्ज थकां मरगी हरेरे ॥ हेवो गुण छे
 तास सलुणा ॥ सर्व उपद्रव हरे सहीरे ॥ याधी व्याधी
 ही तास सलुणा ॥ श्री शांती ० २ ॥ द्रव्य वास्तुक पुजा
 शिरे ॥ पुजा भणावो एह सलुणा ॥ जथा शक्ती तुमे
 वरीरे ॥ स्वामीवछल गुण गेह सलुणा ॥ श्रीशांती ३ ॥
 एम वास्तुक पुजा करोरे ॥ तजी अवर पक्ष सलुणा ॥
 अन्य मती कह्युं नवी करोरे ॥ समजा ज्ञान दक्ष सलु
 णा ॥ श्री शांती ० ४ ॥ द्रव्य वास्तुक एम जाखीचुरे ॥ मा
 हामंगलीकनुं घर सलुणा ॥ एणी वीधी वास्तुक कीजी
 एरे ॥ होवे वछीत सर सलुणा ॥ श्री शांती ० ५ ॥ हवे भाव
 वास्तुक दाखवुरे ॥ आगमने अनुसार सलुणा ॥ समजी
 खेजो प्राणीआरे ॥ ज्ञानी वचन सुखकार सलुणा ॥ श्री
 शांती ० ६ ॥ जाव वास्तुक जे करेरे ॥ तेह लहे भव पार
 सलुणा ॥ संक्षेपे ते वरणवुरे ॥ ते सुणजो अधीकार सं
 लुणा ॥ श्री शांती ० ७ ॥ जाव वास्तुक श्री शांतीजीरे ॥
 करी पाम्या सीव वास सलुणा ॥ मुनी हुंकम वास्तुक
 करेरे ॥ अक्षय पद उलास सलुणा ॥ श्री शांती ० ८ ॥

काव्य प्रथम प्रमाणे ॥ पुजा बीजी सपूर्ण ॥

पुजा त्रिजी ॥ दुहा ॥ वास्तुक पुजा भावथी ॥ ४

ते सारा ॥ ते अधिकार ते दूरणवु ॥ समजी लेजो विचार ॥

ढाल ३जी ॥ धन धन ते जग प्राणी आ मन मोहन मे

ए देशी ॥ वास वसो स्वभावमा मन मोहन मेरे ॥ तज

तुमे पर दुरा ॥ मन मोहन मेरे ॥ काल अनादी अनंतनी

मन मोहन मेरे ॥ मोहदशामा पुरा ॥ मन मोहन मेरे ॥ १

तेहथी भव भ्रमण कर्यु ॥ मन ० ॥ चोगती ससारा ॥ मन ० ॥

ख चोरासी योनी विशे ॥ मन ० ॥ नाव्यो दु खनो पार

म ० २ ॥ असं व्यवहार नीगोदमे ॥ मन ० ॥ काल अनादी

संत ॥ मन ० ॥ पुनरपी पुनरपी उपन्यो ॥ मन ० ॥ चोगती

तो दु ख अनत ॥ मन ० ३ ॥ कोइक कर्म विवर थकी ॥

मन ० ॥ अकाम निर्जरा जाण ॥ मन ० ॥ व्यवहार रासीम

आवियो ॥ मन ० ॥ थाचरादी वखाण ॥ मन ० ४ ॥ बे ती चो

द्रीमा नम्यो ॥ मन ० ॥ तेम असज्ञी विचार ॥ मन ० ॥

लचर थलचर खेचरा ॥ मन ० ॥ उरपरीभुज परीधार ॥

मन ० ५ ॥ संज्ञी पचेद्रीने विपे ॥ मन ० ॥ नरंक त्रीजच धा

॥ मन ० ॥ देव मनुप पण तेम थयो ॥ मन ० ॥ पण नही व

स्तु उदार ॥ मन ० ६ ॥ जेह जेह वारतु जाहा कर्यु ॥ मन ०

ते ते पाप उपचार ॥ मन ० ॥ जीवहसाथी सुख नहीं ॥

मन ० ॥ समजो सवी ससारा ॥ मन ० ७ ॥ ते कारण हेम य

श्रीवास्तुकपुजा.

तजो ॥मन०॥ तजो ब्रह्मज्ञो ज मुल ॥मन०॥ बीजे अंगे
 ज्ञाखीयुं ॥मन०॥ सातषी नरकनुं सुल ॥मन०८॥ वास्तु
 करो तुमे ज्ञानमां ॥मन०॥ स्व. स्वभाव धार ॥मन०॥
 जन्म मरण जेहथी टले ॥मन०॥ पामे सुख उदार ॥ म
 न०९॥ श्री शांती वीव पधरावीने ॥मन०॥ वास्तुक करो
 उदार ॥मन०॥ मुनी हुकमे. ए वास्तुथी ॥मन०॥ होंवे मंग
 लमाल ॥मन०॥ पुजा त्रीजी संपूर्ण काव्य प्रथम प्रमाणे ॥
 पुजा चौथी ॥ दुहा ॥ एम जव जव हुं. जम्यो ॥ अ
 शुध वास्तुक कीध ॥ हवे सुध वास्तुक आदरुं ॥ सदगु
 रु वचनथी लीध ॥१॥ ढाल ४ थी ॥ ए गिरीवर, दर
 सन जेह ॥ ए देशी ॥ सदगुरु मलीअरारे ज्यारे ॥ पा
 म्यो वंछीत हुं त्यारे ॥ उपदेश सुण्यो जव जास ॥ पा
 म्यो हुं ज्ञान उलास ॥ सदगुरु मलीअरारे ज्यारे ॥ पा
 म्यो वंछीत हुं त्यारे ॥१॥ ए आंकणी ॥ जाण्यो जव शत्रु
 जेह ॥ राग द्वेष मोह तेह ॥ अंतरमांथी ते खसीयुं ॥
 तत्र वेरागे मन ते वसीयुं ॥सद० २॥ समकीत तव ते
 पाम्यो ॥ मिथ्यात्व ते दुरे वाम्यो ॥ गुणठाणुं चौथुं ते
 सार ॥ वीज चंद्रसम उदार ॥सद० ३॥ सुमती तव घ
 रमां आवी ॥ कुमती तव दुरेरे जावी ॥ तव दीपक थयो
 घरमांही ॥ दीठी वस्तु पोतानी त्यांही ॥सद० ४॥ ज्ञा
 नादीक गुण ते दीठा ॥ मुज मन लागे ते मीठा ॥ अ

बरती नारी ते देखी॥ताकीदयी दूर उवेखी॥सद० ५॥
 सुधर्म बुद्धी तव आवे ॥ चोकडी दौध दूरे जावे ॥ पा
 पनो खजानो खुट्यो ॥ मोहनो परीवल लुट्यो॥सद०
 ६॥ प्रदेश असंख्यनी रचना॥ निर्मल करवा थइ जच
 ना॥सजम श्री वेगे आवी ॥ कारक समेत ते जावी ॥
 सद० ७ ॥ गुणठाणुं सातमु तेह ॥ फरसतां हूवो गुण
 गेह ॥ छठे सातमे रमता ॥ हीचोलाकारे करता ॥सद०
 ८॥ प्रमत्त अप्रमत्त जाण ॥ सिद्धांतमांही वखाण॥ एम
 वास्तुक ज्यारे कीधी ॥ सदगुरु वचनथी लीधी ॥सद०
 ९॥ अपमंगलीक सरवे नाठां ॥ करमदल पण घाठा॥
 सरव मंगलिक माही एह ॥ ढसवीकालक जाखे तेह
 ॥सद० १०॥ ए वास्तुक पुजा कीजे ॥ मनवछीत फल
 तो लीजे॥मुनी हूकम वास्तुक कीधुं॥ मनवछीत कारज
 सीधुं॥सद०११॥काव्य प्रथम प्रमाणे पुजा चौथी संपूर्ण
 पुजा पाचमी ॥दुहा॥ वास्तुकपुजा स्वग्रहे ॥ कर
 ता नवनीध थोय ॥ पर वास्तुक दूरे करो ॥ सहेज श्मि
 वपुरजाय ॥१॥ ढाल ५ मी ॥ सोना रुपाके सोगटे
 साही खेळत बाजी ॥ए देशी ॥ वास्तुकपुजा घरतणी॥
 स्वस्वरुपमा लीजे ॥ असख परदेशछे आतमा॥ तिहा
 कने कीजे ॥ स्वघर तो तेने कहु ॥ खेत्रथी जाण ॥ द्र
 व्यथी चेतन जाखीयो ॥ एम चित्तमा आण ॥गा० १ ॥

कालथी अग्ररुलघु कह्यो ॥ तुमे समजोनाइ ॥ छठाँण
 वहीआ ताहां कने ॥ एम चीत्तमे लाइ ॥ नावथकी ते
 जाणीए ॥ ज्ञानादिक गुण ॥ संदगुरु हेते नाखीआ ॥ ए
 म वास्तुक सुण ॥ गा० २ ॥ वास्तुक पुजा तुमे करो ॥
 श्री सांतनुं नामा ॥ संतपणुं तुमे पांमशो ॥ भाख्यु शास्त्र
 ते तामावास वसो तुमे ते विपे ॥ जे गुणनुं गेह ॥ अठ्या
 बाध सुख तीहां कने ॥ पांमशो तुमे तेह ॥ ३ ॥ अवेदी अ
 छेदी सदा ॥ अभेदी कहीए ॥ अखेदी ए आत्मा ॥ एम स
 मजी लहिए ॥ असख्य प्रदेश ते देखता निर्मल ते ना
 से ॥ सीद्धतणा ए साधरमी ॥ अक्षय सुख वासे ॥ ४ ॥ सं
 नावे तीहांकने ॥ नही रागने देश ॥ ए नाव चितने धरो ॥ पे
 हेरो अक्षय वेश ॥ बाहाज्य द्रष्टि मत दियो ॥ दियो अंत
 रमांही ॥ तव पियो सुमता सुधा ॥ संतरस ज्यांही ॥ ५ ॥
 सरव जीव ते सारीखा ॥ सत्ता ए देखो ॥ राग द्वेष की
 नसे कसो ॥ कोण परायो पेखो ॥ ज्ञानादिक गुण अनंतनो ॥
 स्वामी ते कहीए ॥ आत्म सीद्ध ते सारीखा ॥ जेद तेहमां
 ना लहिए ॥ ६ ॥ विभाव सर्व दूरे करो ॥ दूखदाइ जा
 णी ॥ स्वभावमांही खेलीए ॥ शुद्ध नाव चीत्त आणी ॥
 ज्ञान दरसन चरण ते ॥ आत्मने कहीए ॥ अनेद ज्ञान ते
 आदरो ॥ केवळतिहां लहिए ॥ ७ ॥ जथा खाएक जाणीए ॥
 चारित्र तेह ॥ ते गुण तिहां प्रगटे ॥ अनंत विरज एह ॥

वरंती नारी ते देखी॥ताकीदधी दूर उवेखी॥सद० ५॥
 सुधर्म बुद्धी तव श्रावे ॥ चोकडी दौय दूरे जावे ॥ पा
 पनो खजानो खुट्यो ॥ मोहनो परीवल लुट्यो ॥सद०
 ६ ॥ प्रदेश असख्यनी रचना ॥ निर्मल करवा थड जच
 ना ॥ सजम श्री वेगे आवी ॥ कारक समेत ते लावी ॥
 सद० ७ ॥ गुणठाणु सातमु तेह ॥ फरसता हूवो गुण
 गेह ॥ छठे सातमे रमता ॥ हीचोलाकारे करसा ॥सद०
 ८ ॥ प्रमत्त अप्रमत्त जाण ॥ सिद्धातमांही वखाण ॥ एम
 वास्तुक ज्यारे कीधी ॥ सदगुरु वचनथी लीधी ॥सद०
 ९ ॥ अपमंगलीक सरवे नाठा ॥ करमदल पण घाठा ॥
 सरव मंगलिक मांही एह ॥ दसवीकालक नाखे तेह
 ॥सद० १० ॥ ए वास्तुक पुजा कीजे ॥ मनवछीत फल
 तो लीजे ॥ मुनी हूकम वास्तुक कीधुं ॥ मनवछीत कारज
 सीधु ॥सद० ११ ॥ काव्य प्रथम प्रमाणे पुजा चौथी संपूर्ण
 पुजा पाचमी ॥ दुहा ॥ वास्तुकपुजा स्वग्रहे ॥ कर
 ता नवनीध थोय ॥ पर वास्तुक दूरे करो ॥ सहेज श्मि
 वपुर जाय ॥ १॥ ढाल ५ मी ॥ सोना रुपाके सोगटे
 सर्ही खेलत बाजी ॥ ए देशी ॥ वास्तुकपुजा घरतणी ॥
 स्वस्वरुपमा लीजे ॥ असख परदेशछे श्रातमा ॥ तिहा
 कने कीजे ॥ स्वघर तो तेने कहुं ॥ खेत्रथी जाण ॥ द्र
 व्यथी चेतन नाखीयो ॥ एम चीत्तमा श्राण ॥ गा० १ ॥

श्रीवास्तुकपुजा.

कालथी अगुरुलघु कह्यो ॥ तुमे समजोनाइ ॥ छठांण
 वहीआ ताहां कने ॥ एम चीत्तमे लाइ ॥ चावथकी ते
 जाणीए ॥ ज्ञानादीक गुण ॥ संदगुरु हेते चाखीआ ॥ ए
 म वास्तुक सुण ॥ गा० २ ॥ वास्तुक पुजा तुमे करी ॥
 श्री सांतनुं नामा ॥ संतपणुं तुमे पांमशो ॥ भाख्यु शास्त्रे
 ते तामावास वसो तुमे ते विपे ॥ जे गुणनुं गेह ॥ अड्या
 बाध सुख तीहां कने ॥ पांमशो तुमे तेह ॥ ३ ॥ अवेदी अ
 छेदी सदा ॥ अभेदी कहीए ॥ अखेदी ए आत्मा ॥ एम स
 मजी लहिए ॥ असख्य प्रदेश ते देखता निर्मल ते चा
 से ॥ सीद्धतणा ए साधरमी ॥ अक्षय सुख वासे ॥ ४ ॥ सं
 चावे तीहांकने ॥ नही रागने द्वेष ॥ ए चाव चितभे धरो ॥ पे
 हेरो अक्षय वेश ॥ बाहाज्य द्रष्टि मत दियो ॥ दियो अंत
 रमांही ॥ तव प्रियो सुमता सुधा ॥ संतरस ज्यांही ॥ ५ ॥
 सरव जीव ते सारीखा ॥ सत्ता ए देखो ॥ राग द्वेष की
 नसे करो ॥ कोण परायो पेखो ॥ ज्ञानादीक गुण अनंतनो ॥
 स्वामी ते कहीए ॥ आतम सीद्ध ते सारीखा ॥ जेद तेहमां
 ना लहिए ॥ ६ ॥ विभाव सर्व दूरे करो ॥ दूखदाइ जा
 णी ॥ स्वभावमांही खेळीए ॥ शुद्ध चाव चीत आणी ॥
 ज्ञान दरसन चरण ते ॥ आत्मने कहीए ॥ अजेद ज्ञान ते
 आदरो ॥ केवलतिहां लहिए ॥ ७ ॥ जथा खाएक जाणीए ॥
 चारित्र तेह ॥ ते गुण तिहां प्रगटे ॥ अनंत विरज एह ॥

सलेशीकरण तिहा करो॥ प्रकृती वोतेर टाली॥ प्रकृती.
 तेरने टालतो॥निजगुण अजुआली॥टावधन छेदी स
 र्वथी॥शिवपथे चाली॥दीय जाग श्रवगाहना॥ ते वास
 मा मांजो॥ एक समे थीती तेहनी॥ शिवपुर ते पोचो॥
 वास्तुक पुजा तिहा करो॥ अक्षय पद राचो॥९॥ एम वा
 स्तुक जे फरे॥ पछे वासमा वशीए॥ ते सुख पामे शास्व
 ता शीवरमणी रशीये ॥ मुनी हुकम वास्तुकतणो॥ एम
 करे उमेद ॥ जीनवाणी रुदीए धरी॥टाली मननो खेद
 ॥१०॥काव्य प्रथम प्रमाणे पुजा पांचमी संपूर्ण ॥

॥कलसा॥ गायो गायो रे श्री सांतीजीनेश्वर गायो॥सं
 तस्वरुप देखी अनोपमा॥वास्तुकपुजा मेलायोरे॥श्रीशांती
 जीनेश्वर गायो॥ १ ॥ एम समजी जे वास्तुक करशे॥तस
 नव दुख ते जायो ॥ शांतीजीनेश्वर शांतीकारण ॥
 वास्तुक पुजाए गायोरे ॥ श्री शा० २ ॥ सवत ओगणी
 स सतावीस वरसे॥ फागणमास कहायो॥ सुद चीथने
 गुरुवारें ॥ ए पुजा रचायोरे ॥श्री शा० ३ ॥ अद्वावाब सु
 श्रावक ॥ नेमाज्ञाती कहायो ॥ मोदी गीरधरे पुजा र
 चावी ॥ बहू द्रव्य खरचायोरे ॥श्री शा० ४॥ गोधरपु
 रे श्री शांतीजीनेश्वर ॥ परसाद सुंदर सोहायो ॥ स
 घ आग्रहथी रचना कीधी ॥ मुनी हुकम सुख पायोरे
 ॥श्री शा० ५॥ इतिश्री वास्तुक पुजा संपूर्ण.

श्रीसम्यक्द्वार.

श्रीगुरुभ्योनमः

॥द्विहा ॥ श्रीसंखेश्वरसाहेवा॥प्रणमिपासजिणंद॥ तेहृत
 णेपसायथी॥ करुंशुद्धप्रबंध ॥१॥ सदगुरुनेचरणेनमी॥
 समरीसरश्वतिसारा॥ग्रथरचुंध्यवहारमां॥ नामेसम्यकद्वार
 र ॥२॥ नव्यजीवनाहितनृणी॥ करुंग्रथरसाल॥ न्रणतल
 ओलखावसु॥संक्षेपेसुखसार ॥३॥ मूढमतिसमझेनहि ॥
 तेमांनहिकोयदोप॥कुगुरुआदिकनरमावियो॥करेकर्मको
 पोप॥४॥ सुलनबोधिजीवहशे॥तेसद्वहशेएह॥तेहसुखले
 शेतुरत॥टालिकर्मनेनेह ॥५॥ संप्रतिजेहनुंफुलछे॥देवलो
 कनरलोकधारा॥ अनुक्रमेफलतेलहे॥ परमपरमोक्षसार
 ॥६॥ करुवालाकोधमय॥सोरठनापामोझारा॥वालजीवने
 कारणे॥समझतांनहिवार ॥७॥

अत्रनापालिख्यते ॥ हवेइहांसमकितनेवास्तेअणतल
 ओलखावेछेपरंतुव्यवहारनिओलखाणविनासमकितनि
 मालमपडेनहिं तेवास्तेप्रथमव्यवहारनिओलखाणकरा
 वेछे तेश्रीजिनमार्गनेविपेतोस्यादवादमतछे इहांतोव्यव
 हारनोपूठथायछे त्यारेवादिएतर्ककरीजे श्रीजिनराजनो
 मार्गतोएकातछेनहि तुमेतोएकातेव्यवहारनेपोपोछे, श्री
 सुगडगमधेतोकहूछेजे॥एकातेहोइमित्छाओ इतिवचना

त्वातेनुकेमतेनोउत्तरजेतेप्रश्नकर्यु तेस्वरूपणनिश्चेतोप्रणा
मनीधाराएछेवाइयथकितोव्यवहारजोयामात्रावेछे श्रीम
हाविरस्वामीनेकेवलज्ञानउपन्युत्यारेतोएकलाहतात्यार
पठी इंद्रादिकसुरमलीनेसमोवसरणादिकनिरचनाकरी
त्येरिंद्रभूतिप्रमुखेजाण्युकोइकइद्रंजालीयोआव्योछेएवु
जाणीनेवादेकरवामयो जगवानेएहनासंदेहकाढ्याएणे
चारित्रलीधूं तेसर्वव्यवहारहतोतोवनिआव्यु एकलाहो
ततोकुणजाणता तथावलिजेसाधुतथाआवकनो प्रावर्तन
सर्वव्यवहारमेदिसेछेकिमजेसाधू जेसाधुनामानीपेतवस्त्र
पात्रराखेछे अनेसूधपरंपरागतआचारेवर्तेछे तेहनेसाधु
करीनेवादेतो समकितनिर्मलथाय जेतेहसाधुकरीजाणि
नेसाधूनेव्यवहारेवादेछेजिमश्रीप्रश्नचदराजरूपिकाउस
मकरीनेउच्चारह्याहतादूर्ध्यानध्याताथकम श्रेणिकराजाए
तेहसाधूजाणिनेव्यवहारेवाद्याछे साधूकरीनेवाद्यापणमि
थ्यात्वकिधूनथि तेवास्तेजिनसासननेविपेचतुरविधसंघ
निजक्तिवहूमानकरवू तेव्यवहारनेजोइनेकरवूजोव्यवहा
रनेमानेनहितोतिर्यनोउछेदथाया॥

यदुक्तं॥श्रीआवशकनिर्युक्ति॥चौमल्लसमयंचजा॥व्यव
हारनयाणूसारणिसवा॥तंजहा॥सामायरजो॥सूझईसवो
वीसुधमणो॥१॥सविवहारीविवलि॥जिनशुद्धपीगोहिया॥
सुवविहिए॥कोवईनसवाणू॥ वंदइयकयाइछउमल्ल॥२॥

निधयव्यवहारनो॥वणियसिहसासणं॥जीणीदाणं॥गंय
रपरीवाओ॥मीथसंकादउजेयया॥३॥ जईजीणमईयंपव
जहतो॥ माववहारनयमथमुयहां॥विवहारपरीवाए॥तिल्लु
छेओजउवसा॥४॥हवेचारगाथानोअर्थकहिऐछिये॥छउम
थसमयके० छदमस्थनोकाल॥यंपुन्यजाके० जिहांसुधीछे
एटलेजिहांसुधि छदमस्थपणुंछे केवलज्ञानउपन्यूनधि
त्यांसूधि॥व्यवहारनियाणुंसारणीसूवाके०॥सरवेकिरीया
जेव्यवहारनयअनुंसारणीकहिछे श्रीतीर्थकरदेवे ततहस
मीयरतोके०॥तेआचरतोथको अगीकारकरतोथको जि
वसिद्धिहके०॥सिधितथाए कर्मरहितथाए सवोविके०॥स
र्वन्नव्यजीव विसूधमणोके०॥जेभव्यजिवकपटपणेरहित
व्यवहारनयनिकिरीयाकरतोथकोकर्मरहितथाएएप्रथम
गाथानोअर्थ॥१॥ एगांयामांहेविसूधमणोएपदैकरीतेनि
श्रेपणकह्यो हवेविजीगाथामांहेनिश्वेथकिव्यवहारवलि
पुछेतेदेखाडेछे॥सव्यवहारोवीवलिके०॥समेक्यविवहार
तेजेउनोउक्त सूधव्यवहारछेतेवलिपुछे तेसामाटेजे सम
सुधंग्रीगहिअंसूपवहिऐज्यंके०॥ एतएशुधंआधाकर्मादि
दोप दूष्टआहारामिदकगहियंके०॥पहवोसूरावहीर्षिके०॥
स्तुर्तनिविधिकरीने एटलेछदमस्थे पोतानाजाणपणा
थि सूधमांनजांणिनेवोहरे अनेनिश्वेथकितोकेवलआधा
कर्मादिकसहितआहारछे तोहिपणकाई नसपणोके०॥

नेकीईजतिप्रमाणकरेपणनिषेधनकरे सर्वग्यके०॥केवल
 ज्ञानिपणआधाकरमादिक आहारछदमस्तेसूधमानजां
 णीनेआप्योहोयते आहारकेवलपणसूनकरे वदिइकया
 धनउमत्तके० ॥ कटाचित्कोईदने चउमत्तवंदियके०॥
 छंदमस्तप्रतेवदिकेवली एंटलेसिष्यनेकेवलज्ञानउपन्युछे
 अनेगुरुतेछदमस्तछे तोहिपणजिहासुधिकेवलज्ञानउ
 न्युजाप्यनयित्यासूधिसिष्यनोव्यवहारवदणादिकनोहो
 यतेजालवे एगायामाहेनिश्रेथंकीव्यवहारनयवलवानदे
 खाढ्यो एविजीगाथानोअर्थकह्यो॥२॥हवेत्रीजीगाथामा
 होनिश्रेनयव्यवहारनयसहितजिनसासनतोहिपणएकन
 यत्यागकरेतोमिथ्यात्वथाय तेकहेछे न्थिव्यवहारनउवां
 णियमेहसासण जिणदाणंके०॥निश्रेव्यवहारसहितछे इ
 हके०॥इहलोकनेविपे जिणदाणके०॥ जिनेद्रनूसासनछे
 तेनिश्रेव्यवहारसहितछे॥एगयरपरीइओके०॥एकत्वनय
 नोपरीत्यागकरेएट्ठोनिश्रेनयतथाव्यवहारनयएवेदुमवे
 थाएकनयनेमानेतेहतोमीत्त माकादियोजेयेके०तेहनेमि
 थ्यात्वथाये संस्यादिकउपजे तेपणइहांमिथ्यात्वजछे ए
 त्रीजीगाथानोअर्थकह्यो॥३॥हवेचोथिगाथानोअर्थकहियेछि
 ये जोव्यवहारनयनेतजेतोतिथेनोउछेदथाये॥जीणइजण
 मयपवजहके०जोजिनमतनेविपेपवजयके०परवरजाश्र
 गीकारकरवि व्यवहारनयमयमुईहिके०तोव्यवहारनयना

मतनेमुकसोमां व्यवहारपरीचात्रोके० जोव्यवहारनयनो
 परीत्यागकरसे अनेमांसोनहितो तच्छ्लेओजउवसं
 के०॥तिर्थनोउछेदथांएअवसकें०।तेनिश्रेकरीनेजांणजो
 एचोथीगाथानोअर्थकह्यो॥४॥ एविरीतेव्यवहारछेतेवली
 पछे वास्तेव्यवहारनेविसेपेकरीनेदेपाडयोछेअनेनिश्रेछे
 तेतोकेवलगम्यछेव्यवहारछेतेप्रतक्षदीठामांआवेछेवास्ते
 व्यवहारनोउपदेशविशेषदेतांकोईदोपणनहि। इतिउत्तर
 पूर्ण ॥ इतिश्रीसम्यक्द्वारग्रंथोमुनिश्रीहूकमचंद्रजी विर
 चितेप्रथमोध्यायसमाप्तं-

हवे व्यवहार जे धणी आदरे तेधणिप्रथममिथ्या
 तनोत्यागकरे ॥ शामाटेजे मिथ्यात्वथकि समकित होय
 नहि मिथ्यात्वगये समकितथाय हवेइहां मिथ्यात्वनो
 सरुपसंक्षेपथाकि देखाडेछे ॥ मिथ्यातना पांचभेदछे ॥
 यदूक्तं ॥ अभिगहीया॥१॥ मणजिगहीया॥२॥अनी
 निवेसिय ॥३॥ संसय ॥४॥ मणाजेग ॥५॥ पण मिल्ह
 वार १२॥अविराइ॥मण १॥ करण॥५॥ नियमूछजियवही
 ॥६॥ एगाथा ॥५१॥ चौथाकर्मग्रथनी तेहनोअर्थ अजिग
 हिअके०॥ अभिगृहितमिथ्यात्व ॥१॥ जेजीवकूगूरुकूदे
 वकुधर्मनेसत्यकरीनेग्रह्या तेमूकेनहि तेहलोहवांणीयानो
 दृष्टांत एअजिग्रहीतमिथ्यात्वनोपेहेलोजेदा॥१॥अनजिग्र
 हीयके०॥अनजिग्रहीतमिथ्यात्वजेकरे सर्वदेवासर्वगूरुस

त्यछे तथाखराखोटादेवगुरुनिखवरनथि तेहनेतेमिथ्या-
 त्व एविजोभेदमिथ्यात्वना॥२॥ अग्निनिवेसियके०॥ अग्नि
 निवेसीकमिथ्यात्वकहिये अभिनिवेसीके०॥ खोटाहठक
 दाग्रहंकहिये तेजीवएकवारअजाणताजूठवोलेपछेतेहने
 थांपवानेकाजे घणाउपायंकरे पछेजाणिनेखोटिजूक्तिए
 करीजेजूठवोले तेअभिनिवेसिमिथ्यात्वकहिए तथापूर्व
 श्रीमहाविरश्वामिनासासननेविपे जम्मालीप्रमुखनिनव
 नेअग्निनिविसमिथ्यात्वकहिए प्रथमतोअजाणताजूठवो
 ल्या पछेतोजाणीनेकदाग्रहनेवसेकरीनेपोतानूचनराख
 वानेकाजेजूठवोल्यातेनेअभिनिविसीमिथ्यात्वकहिएइहां
 आचोविसिमध्येहूडाअवसरपणीनेजोरेकरीनेदसतोअठे
 राथयाछे वर्तमानघणाजीववहूलकर्माकृष्णपक्षादिसेछे
 मूकलपक्षीलयूकर्मा जिवथोडादिसेछे देहथिइहाएकपू
 द्रजप्रवर्तनमाहेमोक्षेजावहोय तेशुक्लपक्षीजीवकहिए
 जैकृष्णपक्षीजिवहोय तेहनेमतकदाग्रहघणोहोय तथा
 शुक्लपक्षीजीवहोय तेमध्येपणचारेकर्मिजिवहोय तेहनेम
 तकदाग्रहघणोहोय हठवादघणोहोय जेश्रीमहाविरश्वा
 मिनासासनमध्ये सातनिनवयथा तेश्रीठाणगसूत्रना ७
 भेठाणेकिधूठे तेअलावोलखिएछे ॥ समणभगवउ महा
 विर सतधमी सतपवयणनर्पनता तजहा जहावहूरी
 या॥१॥ जीवपयसिया॥२॥ अवतवा॥३॥ समउइया॥४॥ दो

करीया॥५॥तेरासीया॥६॥अवठियाए ॥७॥ एएसणसत्त
 नंपवयण निहूगाणं सत्तधम्माअरीयाहोत्थ तजहाजमा
 लीजमाला॥१॥सीतंगूतोअसाढे॥३॥आसीमिति॥४॥गंगे
 या॥५॥छलूए॥६॥गूठामाहेले॥७॥एएसिणंसत्तन पवयण
 नीनगाणं सतउमत्तिनगरेहोथां॥सावथि॥१॥उसभरं॥२॥
 सियविया॥३॥महिला॥४॥ उलगातिरं ॥५॥ पुरमसरजी
 ॥६॥दसपूरनिनगाउपतिनभराइ॥हवेएहनोअर्थलिखीए
 छीये श्रीमहाविरस्वामिनेकेवलज्ञानउपन्यापछिचउदव
 रसथयापछीवहूमतमतिजंमालीनांमानीनवथयो॥ बहूर
 तके०॥वहूसमयेकारजपूरुंथाएवहूके०॥घशासमयकरीने
 कारजपूरुथायछे तेकिमनजहा कूंभारमाटिलाविनेपांणी
 सूंभेजविनेपछेघडोकरे तेघडोज्यारेपूरोघडे तारेघडोक
 हिएएटलेघणेसमयेकार्यपूरुंथायतेहनेविपो॥ रतके०॥ अ
 सकवहूसूसमीये॥सूरतआसक्त॥इतिवहूरतअनसमया॥प
 ढलोमात्तमव्यधपदहलोपसमासएहंवनामे काढ्योजमा
 लीनांमानिनवथयो श्रीमहाविरस्वामिजीतोकरेमाणेक
 रेजेकारजकरवामांडंथूतेकारजकरंनहि॥एवचनउथापी
 नेपोतानो मतपरुपवालाग्यो श्रीसावथी नगरीमांहिथ
 यो इतिप्रथमनिहवथयो॥१॥विजोनिनवजिवपरदेशिक
 मनिके०॥चरमप्रदेशीजीवनिप्ररुपणानोकरुंनारो तिपगू
 तनांमा ॥श्रीजगवतश्रीमहाविरस्वांमिनेकेवलज्ञानउप

न्यापछि सोलेवरसेथयोनिनवा॥२॥ श्रीमहाविरस्वामिछ
 ताउत्सूत्रनिपरुपणाकरताहूवा श्रीमहाविरस्वामितो
 असस्यातपरदेशलोकाकास परदेशसमापतसपूर्णनेजी
 वकहेछे तेतोछेलापरदेशमाजीवमानेछे इतिद्वितीयनिन
 वा॥२॥हवेत्रिजोनिनवआसाढजूतिआचार्यतेनासिष्य श्री
 श्रवक्रनामामतपरुपकथयो तेकैम श्रीमहावीरस्वामिनि
 रवाणथयापछिवसेनेचउदेवरसेथयो२१४॥श्रीआचार्यपा
 सेघणासिष्यजोगवहेछे श्रीसिद्धातनाजोगवे प्रकारेछे
 एकअगाढ विजोअनागाढ हवेतेअगाढजोगहोयतेमध्ये
 थीकारणेनिकलेतो तेजोगफरीवेहवोपडे तेजोगअगाढ
 कहिए तेजोगमाहेकारणेनिकलेतो, जेटलोअधुरोहोय
 तेटलोजोगवहिनेपूर्णकरे तेजोगअनागाढ कहिए ॥
 तेसिष्ये अगाढजोग वेहवामाढयो तेहिजदिवसे कोई
 कर्मनेउदयेकरीने आचारजकालकरीने सुधर्मदेवलोके
 नलनिगुलमन्निमाने उपन्या ॥ पछे श्रवजिज्ञाने करीने
 जोधु तारेष्टलामालामध्ये कोईजोगपुरोकरावे एहवो
 आचारजदिठोनहि तारेसाधुनिअनुकपाएकरीने तेहिज
 पोतानासरीरमध्येआविने देवतानिशक्तिएकरीनेकोईजा
 णेनहि तेहिजरात्रेउठिनेवृत्तिकालगृहणलेइने जोगक्रि
 याउदेस समउदेस अनुग्यानीतकरावे अनेसाधुनाव्यव
 हारआचारनेप्रवर्तैछे॥गाथा॥आलियविहारसमिमूयो॥हू

लोभूतोवियोसमणद्धमे॥पढमपईमणूरपेविरीयामोपाईंवा
 याओ॥१॥इत्यादिकव्यवहारप्रवर्तताथकाजोगशिष्यनेसं
 पूर्णकराव्यो पछेतेदेवतासांधूखंमाविनेठेकाएगयो तेवा
 रतेहिज शिष्यनेशंकापंडि जेवालिएमकोईकेकालंकयो
 होय अनेबीजोपणपोतानाशरीरिमांहीपेठाहोय कोइदेव
 ताआविने तोकूणजाणेजेसाधूछेकेदेवताछे एवंविचारी
 कोइकोइनेवादेनहि कोइजोवादि एतोआपणनेदोपणला
 गे तेजादेवताहोयतो अत्रत्तिअपच्छपाणीहोयतेहनेसाधू
 करीवादि एतोमिथ्यात्वथाय अनेमृपावादपणलागे ' एट
 लावास्तेकोईसाधूमांहोमांहिवांदेनहि श्रीअपाढाचार्यना
 शिष्यअवत्कव्यनांमामत्तनिपरुपणाकरताथकाविचरे ह
 वेतेकालेगीतार्थ बहुश्रुतमहापूरुपहता तेहनेघणीचरचा
 करी जेएकाएदेवताहोए अनेसाधूनोवेपधरीतेसाधूनेआ
 चारे मुलगूणपंच महाव्रतना ७ आचारपालतो हाय ते
 नेसाधूकरीनेवादेतोमिथ्यात्वनथायअनेमृपावादपणनला
 गे जेजिनसासननेविपेतोवाइयथिव्यवहारबलिष्ठछेइत्या
 दिकबीजोपणघणीकजूक्तिएकरीसमजाव्योपणसमजेन
 हि तारेतेअपाढाचार्यनाशिष्यने संघवहारकर्या, तोएक
 दाग्रहमुकेनहि एवाअवसरेश्रीराजगृहिनगरीमांहे श्री
 बलनद्रराजाराज्यकरेछे सूर्यवंशिनेजैनधर्मिछे तिहांते
 शिष्यआव्या त्यारे, तेनेप्रतिबोधवानेकाजेराजाएपकडी

मंगाव्यातेनेमारवामांढ्यातारेतेसाधुकेवालाग्याहेराजन
 तुंश्रावकथइनेअमनेकेममारेछेतारेकेवालाग्याजेकुणजाणे
 जेतमेसाधुछो केचोरछो केदेवताछो अमेषण श्रावकछूके
 देवताछूतेकुणजाणे तारेतेप्रतिबोधपाम्या पछेधिवरसा
 धुनेपगेलाग्यापोतानोमतंकदाग्रहमूष्यो आलोइने पछे
 शुधययाएतृतीय अवतव्यनांमांश्रीआपाढाचार्यनाशि
 प्यनोअधिकारपूर्णम् ॥ इतितृतीयनिनव ॥ ३ ॥

हवे चोयानिन्हवनो अधिकारकहेछे ते श्रीमथु
 रानंगरीने विपेययो श्रीमत् महावीरस्वामिना निर्वा
 णपछी वसेनेविसवर्षे श्रीआर्यमहागीरीना शिष्य को
 डननामा तेनाशिष्य अश्वमित्रनामा एकज विद्यानुं
 परवाद दसमू पूरवनिपूणनामा वस्तु नणताथका एवो
 आलावो आठ्यो जेपडिपून्यसमयनोरग्यासवे ॥ २ ॥
 विलिजस्सतिएवंजाववमाणाअति॥एवंअतिताए ॥समये
 सुवित्वव्या॥एहनोअर्थ॥पडिपून्यके०॥वर्तमानकालहोय
 एटलवर्तमानकालसमयनाजेनारकिछेतेविजेसमे॥बुछेद
 के०॥विनाशथाएछे एटलेप्रथमसमयवसपटजेनारकिह
 ता तैदिजनारकिविजासमयनेविपेविजेसमेविसिपृथाय
 तेनेतेममजणपडिनहीं मिथ्यात्वनाउदयथकिगुरुआदिके
 धणीपरेसमजाव्योतोएसमजेनहि तारेसंधवाहरकाठ्यो
 तेनामतमाहीजे जीवपापकरेछे तेनाशुपामेछे जेजीवपून्य

तरेछेतेपणनाशपामेछेसमयेरतेअश्वमित्रविहारकरतोश्री
 राजप्रहीनगरीएंआव्यो तिहांपडरस्याविद्वांसंतकछे
 नेदरवारनोचाकरछे मांडविनोदांणीछे एहनेप्रतिबोधवा
 नेकाजे पकडीने मारवालाग्यो तारेतेने कहेवालाग्यो
 जेहूसाधूछु तमोश्रावकछो तोमूनेकेममारोछो त्यारेदों
 णिवोल्योजेसाधूहततेतोनाशपाम्याहवेंतमनेकोणजाणे
 छे जेसाधूछोकेचोरछो तारेतेप्रतिबोधपाम्यो गुरुनेआवि
 नेपगेलाग्योखमाविनेशुद्धथयो एचोथोनिनवकह्यो ॥४॥
 हवेपांचमोनिनवकहियेछे द्विक्रियावादिगंगनामाआचार्य
 श्रीमहाविरस्वांमिना निर्वाणथकिवसेनेअठ्याविसवरसे
 श्रीआचार्यमहागिरिनाशिष्य श्रीधनुंपूरपत्यतेहनाशिष्य
 गंगनामाएकदाउठनदि तीरेपूर्वतटे श्रीधनगुप्तआचार्य
 चोमासुरह्याछे पश्चिमंतटनेविषे गंगनामाशिष्यचोमारुं
 रह्याछे तिहांथकिशर्दरुतुयेश्रीगुरुनेवांदवाआवतांमार्गने
 विषेनदिउतरतां माथेटालहतितेनपरैतडकोघणोलांग्यो
 अनेपगेनदिनूपांणीटाढुघणुलाग्यु तेमांमिध्यात्वनोउद
 यथयो तारेमनमांहेचितववालाग्यो जेएकसमेश्रीसिद्धां
 तमांहेवेहूकिरियानो उपयोगनिषेधकह्योछेतेखरुंछे जे
 हुसाक्षात्एककालेवेहूकीरीयानो उपयोगअनुंनवूछुं आ
 तोनष्टवेदनाअनुंनवूछुं पछीगुरुआगलचेष्टांकरी तारेगु
 रुकेहेवालाग्या जेएकसमये एकजक्रियानो उपयोग

होय एकसमेदोमुपेखातोहोय नेवालतोहोव पगेहिडतो
 होयएटलेक्रियातोएकसमेधणीकरतोथकोपएएकजक्रि
 यानोउपयोगहोय समयनोकांलसुक्ष्मछे एमघणुकह्युं
 पणमान्युनहि तारेगुरुयेसंघवाहरकाढ्यो पछेतेगंगाशि
 ष्ये श्रीराजगृहिनगरीएआव्योतिहामातप्रस्तरप्रभावना
 नुदेहेरुछे तिहामणिनागनामेजक्षनुदेहरुछे तेपासेखोटे
 परुपणाकरतोदेखीनेतेजक्षकेहेवालाग्यो श्रीवर्द्धमानस्वां
 मीयेएकसमेएकजक्रियानोउपयोगकहोछेरेपापीष्टदुष्टतुं
 एकसमेवेक्रियानोउपयोगकेमकेहेछेएवाघणाककठणवच
 नेकरीनेकह्यु तेसांचलिनेमनमांजयपामतोथकोगुरुपासे
 आव्योमिध्यात्वमूक्युगुरुनेखमाव्या इतिपाचमोनिनवक
 ह्यो॥५॥हवेछठोनिनवत्रिरासिकनोअधिकारकहेछे श्रीव
 र्द्धमानस्वामिनानिर्वाणथकि पाचसेनेचुमालीसवर्षेअनि
 जकानगरीनेविपे वलश्रीनामाराजाराज्यकरेछे तिहाजो
 हपटसालनामापरीत्राजक लोहपटवाध्युछे हस्तनेविपे
 जवृक्षनुंडाळुरास्येछे लोकपूछेतारेएमकहे जेमारापेटमा
 विचारहितेणकरीनेफाटेछे वास्तेलोहपटवाध्युं नेकोइ.
 प्रतीवादिजवृद्धिपमाहिठिठोनहि तेहजणाववानेकाजेजवृ
 वृक्षनुंडालुंछेतेलेइनेफरुछु तिहातकालेश्रीगुप्ताचार्यवि
 चरेछे तेहनाशिष्यरोहगुप्तनामागामतरेछे तिहांथकीगु
 ११ आवतावाटे राजाचरचानेकाजेपडहोवजडाघ

छे कोइएपडितहोयतेएपरीव्राजकनेसाथेचरचाकरे तिहां
 रोहूगुप्तशिष्येज्ञाल्यो पछेगुरुपासेआव्यो गुरुयेकह्युजे
 एसारुकर्तुंनहि आपणेवांढकरंवानुंशुंकामछे नलुहवेतो
 सारुंथायतेमकरो पछेगुरुएज्ञानेकरीनेजाण्युंजेतेहंपासे
 नकुलनीविद्या ॥१॥ सरपनिविद्या ॥२॥ उदरनिविद्या
 ॥३॥ मृगनिविद्या ॥४॥ सुयरनिविद्या ॥५॥ कागनिविद्या
 ॥६॥ पंखिनीविद्या ॥७॥ एसातविद्याछे एविद्यानेघातनी
 करनारी बीजीसातविद्यागुरुएआपी मोरविद्या ॥१॥ न
 कुलनीविद्या ॥२॥ बलाडीनीविद्या ॥३॥ वाघनीविद्या ॥४॥
 सिंहनीविद्या ॥५॥ गुढनीविद्या ॥६॥ वाजपंखिनीविद्या ॥७॥
 एसातगुरुएआपी ॥ वलिआठमो पोतानोओघोमंत्रनि
 गुरुए आप्यो बीजाउपद्रव्य निवारवानेकाजे हवेजेरो
 हगुप्तहता तेगुरुनेकंहिने राजसजामांहिआव्या त्यारे
 पटसालकपरीव्राजके जाण्युंजे एजैनिछे एहप्रतेजोसं
 रूकृतभाषावोलीशुंतीतेबोलशेनहि तेवास्तेजैननाघरनी
 वातलहिनेवाढकरुं जेउथापिसकेनहि हवेपटसालवो
 ल्यो जेसंसारमधे वेपदार्थनिरासिछे एकपून्या ॥१॥ अथ
 वापाप ॥२॥ रात्रिदिवस ॥४॥ आकास ॥५॥ धरती ॥६॥
 जीव ॥१॥ अजीव ॥२॥ इत्यादिकबवेनिराशिछे त्यारेरोहगु
 प्तबोल्हो जेसंसारमध्येरासित्रणनीछे कालत्रणछे अती
 ता ॥१॥ अनागता ॥२॥ वर्तमाना ॥३॥ स्वर्गा ॥१॥ मृत्यु ॥२॥

पाताला॥३॥ जीवा॥१॥ अजीवा॥२॥ नोजीवा॥३॥ इत्यादि
 करासीत्रणनीछे त्यारेपटसालकहे जेनोजीवतेशुंकहीए
 त्यारेरोहगुप्तकहे ॥जेनोजीवकं०॥ गरोलीनीपूछडीटुटी
 पढ्यापछीहालेछे एजीवपणनकहिये अजीवपणनकही
 ए. एनोजीवकहीए पछेसातविद्यामुकी तेउपरतेणेपण
 सातविद्यामुकी विद्याघातीनेझीत्यो पछेतेनीपासेएकप
 दवीविद्याहती तेमुकीनेविद्यानेप्रसादे जयपताकाकरी
 ने गाजंतेवाजते श्रीगुरुपासेआव्या सघलीवातकही
 गुरुएपूछ्यु हेवल्छसारुकर्युजे वादनेजीत्यो पणजीवअ
 जीवनेनोजिवकह्यो तेउतसूत्रनाप्युं तेहजइनेराजसभा
 माहिखमावो पछेअहकारनेविशे आत्मामांअग्निनिवेशि
 मिथ्यात्वनेवसेकरीनेगुरुए किधुतेमान्युनहि पछे राजस
 नामांगुरुसाथेवादकरताहार्यो पणमानिनहि तारेगुरुए
 कुनिआवडनेहाटेथकि नोजीव मगाव्यो पणआव्योनहि
 पछे गुरुएमघवाहरकाढ्यो एणेशकमतपरुप्यो इति
 श्रीरमशिकनामाछठोनिनवकह्यो ॥६॥ हवेसातमोनिनच
 गोष्टमालिनामा तेहनोअधिकारकहेछे श्रीमहाविरस्वा
 मिनान्निर्वाणथकि पांचसेनेचोरासीवर्षे श्रीमालवदेशने
 विपे दशपूरकहेतासंप्रतिहमणा मदीसरनेविपेथयो ॥ ते
 केम ॥ श्रीआर्यरक्षितआचार्य देशेउणादशपूरवधर शु
 तकेवलि जुगप्रधानछे सोमदेवब्राह्मणनोपुत्ररुद्रसोमा

मातजेहनिषरमश्राविकाहोति तेमातापूत्रप्रते कहेहेपूत्र
 माहूरोजोपुत्रहोयतो दृष्टिवादपूर्वज्ञणिने आवेतो हूराजी
 थाउ एवचनेकरीने. तेतलीपूत्रआचार्यपासेदिक्षालिधी
 श्रीवेरस्वामि. पासेदेशेउणा दशपूर्वज्ञण्या तेश्रीआर्य
 रक्षितनाच्यारशिष्यमुख्यछेएकदूरवलिकापुफमित्रजुगप्र
 धाना॥१॥ विजाआश्रावधयमांनामासाधु ॥२॥ त्रिजाश्री
 फालुरक्षितं ॥३॥ चोथाश्रीगोष्टमालि ॥४॥ फालुरक्षित
 श्रीआर्यरक्षितानालघूनाईछे अनेगोष्टमालिमामोछे सि
 दूरवलिकापुफ मित्रनामासाधूनवपूर्वसूधिज्ञण्या दसमु
 पूर्वभणे पणविसरीजाय तारेश्रीआर्यरक्षिते जाण्युंहवे
 आजथाकिदिवशेदिवशे घटतिरबुधियशे तेवास्तेश्रीआ
 चारंगादिकसिधांतनाजेअनुजोगके० ॥ वाख्यान टिका
 निर्युक्तियादिकजे सिधांतथकिजुदिकरीने पूस्तकपदेल
 खि एटले जेटिकानिर्युक्तियादिकतेआचारंगादिकथकि
 वेहेलांलिख्यांछेआचारंगादिकतो नवसेनेएसिवपेलख्या
 दिसेछे जेनिगम॥१॥संग्रे॥२॥व्यवहार॥३॥रजूसूत्र॥४॥
 शब्द॥५॥संजीरुढा॥६॥ एवंभूता॥७॥ एसातनुवाख्यान
 सूत्रमाहे विस्तारेहतुंतेसूत्रमाहेगोपव्यु अनेनिर्युक्तियां
 दिकनेविपेविस्तारीने किधां तेसाक्षत्रणप्रकारे कहिछे
 तेएकप्रणीता॥१॥ अतिप्रणीत ॥२॥ प्रणीता ॥३॥ प्रणीत
 तेजेनिखेपासमजे नहिअगीतारथा॥१॥ अतिपरणीततेए

कनेसाञ्जलिने एकातद्वारे स्यादवादतुरत जाणेसमजे
 नहि जाणजेहूसमजणोछु तेनेलोकमाहेढाधारंगोकहेछे
 तेनेपरणीतशिष्यकहिण॥१॥हवैजेपरणीता शिष्यतेनिश्रे
 व्यवहारउत्सर्ग अपवादमार्गसर्वसमजे॥३॥ पणवुधि
 नांथीडापणामाटे कलिकांलेविस्तारीनेवास्यानकरीशके
 नहि तेवास्तेसिधातमाहेगोपव्यापछे आर्यरक्षिते दूब
 लिकापूफामित्रने जोग्यउत्तमजुगप्रधानजाणिने आचा
 रजपदविथापिनेस्वर्गपधारथां पछेगोठमालीसाभलिखे
 द्यणीपाम्योथको श्रीदसपूरनगरीनेविपे श्रीदूवलिका
 पूफामित्रथकिजूदेउपाश्रयेआविनेउतरेतिहांश्रीवृधनामा
 साधूनेपासे करमपरवाढनामा आठमंपूर्वसाञ्जल्युछे ते
 नेविपेकह्युछेजे आत्मानेविपेकर्म रह्याछे जिमदूधमाहे
 पाणीनाखाए तेपाणीनेदूधएकमेकथासछे वलिलोहने
 अग्नीमाहेतपावीए तारेलोडुलालचोलमयथैजायछे ते
 मआत्मानेकर्मएकमेकप्रणमेछे तेगोठमालिकहेवालाग्यो
 जेआत्मानेविपेकर्मछे तेकचूकनेन्याएरह्या जिमपूरुपजा
 मोपेरे तेमएहवेआकारे कर्मरह्याछे तेवदासाधूएकह्युजे
 एहंवुसाञ्जल्युछे वलिप्रत्यास्यानपरवाढनवमुपूर्वसाञ्ज
 ताथकापचखाणनोअधिकारआव्यो जेसाधूदिक्षालेतारे॥
 करेमीभत्तेससायं सावजजोगपचखामी ॥ जावजीवाए॥
 तेवीह॥तीविहेण॥मुणेण॥वायाए॥काएण॥नकरेमी॥ इति

पाठ ॥ इहां जाव जीवा ॥ एपद केहवोनहि ॥ एपद केहतां ॥ सा
 धूनेदोपलागेछे ॥ जे जीवुत्या सुधी ॥ सावज्यजोगनुपछखांण
 साधूनेछे ॥ मुवापछीपंछखांणमोकलुं ॥ तारेआसंसाकेहतां ॥
 वंछानोदोपलागेछे ॥ जेपरचवेजाइश ॥ तारेभोगविशतेवा
 स्तेजावजीवएवा पदेकेहवोनहि एवुसांभलिने श्रीदृध
 साधूएमान्युनहि पछेआविनेश्रीदुवलिकाजिनेकहुं जेगो
 ष्टमालीएविपरुपणाकरेछे करमआसरीतथापचखाणआ
 सरी तेसांभलिनेदुवलिकापुफमित्रे कहुंजे गोष्टमालि
 उत्सूत्रनीपरुपणाकरेछे तेखोटुवोलेछे तारेसंघनेसंदे
 हपड्यो श्रीदुवलीकाचार्यकहेछेएखरुके गोष्टमालिक
 हेछेएखरुछे तारेसंघेसासनदेवीनेसमरीने श्रीश्रीमंधर
 स्वामिपासेमोकली तेदेवित्याजईने श्रीमंधरस्वामिनेपू
 छ्युत्यारेश्रीमंधरस्वामि एकहुंजेएगोष्टमाली सातमोनि
 नवछेतेउत्सूत्रजाखेछे श्रीदुवलिकापुफमित्रतो जुगप्रधा
 नछेसत्यवादिछे एवचनसाभलिने सासनदेवीएइहांआ
 वीनेकह्युपण नारेकरमीजीवहता तेकहुंपणमान्युंनहि
 जेएदेवीखोटुवोलेछे श्रीमंधरस्वामीपासे जइशकेनहि
 अवधकमतपरुपक गोष्टमालीसातमोनीनवसमाप्ता ॥७॥
 एसातनीनवकह्या तेमध्येबीजोनीनव तीक्ष्णगूहनामा च
 रमप्रदेशेजीवमानतो ॥१॥ त्रीजोनीनव आपाडाचार्यनो
 शीष्य साधूछेकेदेवताछे एअवक्तव्यमत ॥२॥ चोथोनी

नवश्वमीत्रनामा वर्तमानकालना नारकीदेवताउछेद-
 पामेछे तेसमुछेदिकक्रिया॥३॥वादिगगनामानीनवपांच
 मो एकसमेवेक्रियावादि॥४॥एच्यारेनीनवपाछावलापेहे
 लोनीनवजमाली बहूसतवादीघणोसमे कारजपूरुंथाय
 ॥१॥ हवेछठोनीनवरोहगुप्तनामा त्रीयराशीकमतवादी
 ॥२॥ सातमोनीनवगोष्टमाली अवधककरमवादी॥३॥ए
 त्रणनीनववलाहहि आठमोनीनवडीगवरथयो सरवव
 स्तवादी तेआवसगनिरयुक्तिमध्येकह्युछे अनेवेतोश्रीम
 हावीरस्वामीथकी छसेनेनववरसेसेसमलयकी तेतोप्रसि
 द्दछे अनेवेतो श्रीमहावीरस्वामीथकांज निकल्याछे
 श्रीमहावीरस्वामी पछीथया कालानुजावेकरीने त्यार
 पछी मतीकेवाणा ते प्रवचनप्रक्षामांहे दसमति कहीने
 बोलाव्याछे अनेश्रीआवसगनिरयुक्ति मध्येतो निन
 वकहीनेबोलाव्याछे जदपिनिनवनेमतीतेएकजछे पण
 निनवपदतेभारेछे अनेमतिपदहलवोछे जेआगमधरकेव
 लज्ञानी तथाचउदपूर्वधरादिकअतिशेग्यानी आगम
 वालाहोयतेजाणे जेउत्सूत्रजाणीनेबोलेछे तेहनेनिनव
 कहीए अनेजेमूरखपणायीतथायथाछदापणायकि पोता
 नीमतिकल्पनायेकरीने उत्सूत्रपरुपणाकरे तेहनेवस्तु
 गतनिनवकहिए जेसाक्षातसिद्धांतमध्ये अक्षरदेखे अने
 मानेनहि अनेवल्लिजीतमरजादाविना अनेसूधश्रीगण

धरनीपरंपराविना नवीजपोतानीमति परुपणाये करीने
 परुपे जेजाणीनेपरुपेते निनवकहिए पणआजनागीता
 रथते पापथकिडरताथकाजाणेछेजे अमने तेवुज्ञाननथि
 जेउत्सूत्रबोले जेजाणीने बोलेछेंके अजाणेबोलेछेपण
 मतकदाग्रहमुकतानथि तारेमतीकहि बोलाव्या अने
 प्रवचनपरीक्षा धरमपरीक्षाछे नमवुजावुंएअभिनीवेशि
 कमिथ्यात्व कहिए ॥ एत्रिजोभेदमिथ्यात्वनो कह्यो ॥३॥

हवेचोथोनेद मिथ्यात्वनोकहीएछे एसंसेके ०॥मिथ्यात्व
 कहिए तेकेमजेवासीरोटली खीचडी वाशीशीरो लाक्सि
 ठोठडी कालपोतानीसूखढीलेवुं केरीकेरां इत्यादिकनो
 बोलोलुंणपाड्यापछि त्रणदिवशउपरांतरहेतो वेरंद्री
 जीवअसंख्यातउपजेनेमरे तेहमानेनहि तेतोजीवअप
 वेशनारुपमिथ्यात्वथाए अनेवलीएमजाणेजे एमांजीव
 हशेकेनहिहोय एवोसंदेहहोयतेनेसंसइकमिथ्यात्वथाए
 वलीउनुंपाणीकरयापछी शीयालेच्यारपोहरपछि हुना
 लेपांचपोहरथकिकाचुपाणी थाए अनेवली काचुदहि
 काचीछासकाचुंधूधतेसंघातेविदलभले ॥ विदलंतेमगचो
 लाझालरअडदचण्या इत्यादिककठोलजेटलुधानहोयते
 विदलकहिए तेकाचीछासादिकमां भलतांअसंख्यातवेरं
 द्रिजीवउपजेछे तेपणमानेनहि अथवासदेहराखे तेने
 पुर्ववतमिथ्यातलागे एअधिकारश्रीप्रवचनचुलणी तथा

प्रवचनसारोद्वारादिकग्रथोनेविपेछे हवे कोईक कहेजे-
 श्रमेतो ग्रथमानतानथि काएसिद्वांतमाहिहोयतोकहोते
 हनेकहिए जेसिद्वांतमाहेवणेठेकाणेअक्षरदिसेछे पणजे
 हनेमिध्यात्वनोउदयहोय तेसिद्वातनेमानेनहि तोएपण
 न्हयजीवनाउपगारनेअर्थे सिद्वातनाअक्षर देखाडीयेछे
 जेअसजीवनी आठखाणश्रीदशवैकालिकसूत्रमध्येकही
 छे यदुकइडया॥१॥पोइया॥२॥उटाउवा॥३॥रासिया
 ॥४॥ससमि॥५॥समुछमा॥६॥अजिया॥७॥वारया॥८॥
 हवेएइडियाइहजडजापक्षाताहकोकालादि एटलेएजीव
 इडुजणेछेपछिसंपूरणशरीरपापप्रमुखउपजेछे तेहजग
 भंपेचद्रीजीव तेपखीतथागरोलिजेजीवने इंडजकहिए ए
 प्रथमखाण ॥१॥ पोताजायते ॥ इतिपोताजाके० ॥
 जेगर्जजणेंतारे ॥ पोता कहेता० ॥ चामडीनी चादर
 पछेडीकहिए तेसहीतगर्भजणे तेने पोताजाकहिए हा
 थिप्रमुपएत्रिजीखाण॥२॥ जराउइयाके० ॥ जराउवेष्टि
 ताजायते इतिजराउजामनुप तथागायत्रेसजाणवि ए
 त्रीजीखाण॥३॥ रसीयाइतिरसजायतेजंतैरज्यएहनोअर्थ
 रसियाके० ॥ पाणीकहीए तेहथकीजेउपन्यु एटलेपाणी
 एराधुं घानजेटलुंहोय तथापाणीनोभाग जेहमारह्यो
 होय तेसुखडीनीलीहोयसीरालावसीतथापूरी तेमाहेपा
 णीनोनागरहे तेवासीथाय बीजेटीनेवेरद्रीजीव असं

स्थिताउपजे तथाउपनकालेतो दालप्रमुखतेहीजदीने
 वीणसेसुखडीतथारांध्युधानज्यारेविणसे वरण गंध रस
 फरसबदलाए त्यारेजीवउपज्यांनुंसदहवुं त्यारेइहांकोइ
 ककहेजेजे घीपणखोरुंदीसेछे तेमध्येतमेजीवसदहोछो
 तेनेउत्तरदेवो जेघृतकाचूंतावणनुंहोय तरततावीमूक्युहो
 य पछीएकवेदीनमेवीणसे तेघृतमध्येजीवक्यारेकंसदही
 ए तेघृतअल्पजाणवूं तिहांजघृतउण्णकर्युं अग्नीनेजोगे
 पछीतेघृतखोरुंदीसेतोएजीवनसदहीए तेहिजपुदंगलनो
 स्वजावछे। भगवतीमां। पुदंगलतिविहापनंता तंजह।।पयो
 गसा।।१।।विशेसा।।२।।मीश्रसा।।३।।इत्यादिकापयोगसाके०
 जीवप्रयोगके०।।वेपारजीवनिमतनोजीवनेवेपारेकरिनेपू
 दंगलनागंधादिकफरेतेप्रियोगसापुदंगलकहीए जिमउ
 दारीकादिकव्यवहारंतेनीपरे।।६।।हवेविशेसाके०।स्वजावे
 जेपुदंगलनागंधरसादिकफरेतेपणविशेसापुदंगलकहीए
 पणतेमध्येजीवसदहतानथीतेघृतपाकीतावणीनुंछे तेघणे
 दिवसेखोरुंथायछे एविश्रसापुदंगलसंजवेछे परंपराए
 पणएहवूंसांजल्युंछे भगवतीप्रमुखसीदांतमांहे अक्षरप
 णदीसेछे एवीजोनेदा।।२।।हवेमीश्रसाके०।। जीवतेवेपारे
 पूदंगलनेस्वजावे वरणगंधादिकफिरे तेमीश्रसापुदंगल
 कहीए जेममूवंकलेवरफूलेछे मोटुंवधेछे तेममीश्रसापू
 दंगलकहीए एत्रीजोभेदपरीपूर्णम्।।३।। रसियाएहपद

नीटीकामाहेकहयुजे आलनालदधितिमनादिपू खाटधि.
 तस्याकृतयोत्यतसूक्ष्मभित्ति आलनालके०॥ कांजीक
 हीए मारुआडमध्ये कांजीतेअडदनांवडा अनेकाचूदधि
 जेलुकरेयेयकेएवेविदलकहीए तेमध्येवेरद्रीजीवपडे तेके
 वामेडे पेटमाहेसगवगीया एहवेआकारेअत्यंतसूक्ष्मजी
 व असंस्थाताउपजे इतिरसचौथीखाण॥४॥ ससेइमां
 सरवेदाजाता सखेदजामकणउकादय सखेदके०॥ परसे
 वोसरीरनापरवापरसगे माकणतथाजुलीख तेरद्रीजीव
 उपजे ससइमां एहपाचमीखाण॥५॥ समुच्छिमासमूर्छना
 जाता इतिसमूर्छिनजा सलजपीपालीकामक्षिकासालू
 रदय समूर्छिमके०॥ पोतानीमेलेमाटीमांही तथाकादव
 माहेउपजे तेसमूर्छिमकहीए सलजके०॥ दीवामाहीपतं
 नीयापडेछे तेहनेकहीए पिपलिकाके०॥ कीडीप्रमुख
 मंखीकाके०॥ माखीप्रमुख सालुरके०॥ डेडकाप्रमुख त
 थासमूर्छिममनुष्यपचद्रि तेहचौदठेकाणेउपजेछे तेश्रीपं
 नवणासूत्रनेचौयेउपागेतेहनाप्रथमपदनेविपेकहयुछे ॥तं
 जहा॥आलापकश्रायसौ॥कतमणुसाहूविहापनेता॥तजहा
 समूर्छिणामणुसाया॥गजवकतिपमणुसाया॥सेकंतसमूर्छिम
 मणुसा॥कहाणंनतेसमूर्छिममणुसा॥ समूर्छितिगोयमाअ
 नोमणुसा॥खितेपणयालियाए॥जोयणसतसहतेजु॥अढा
 सुदोसमूदेसू॥पनरसकमजोमीसु॥तिसाएअकमजोमी

सु॥पनतंअतरदिवएसु॥गभवकंतियसू॥ मणूसाणचेवा॥उ
 चरेसुवा॥ १ ॥ पासवणेसुवा॥ २ ॥ खेलेसुवा॥ ३ ॥ सि
 घाणएसुवा॥ ४ ॥ वंतेसूधा॥५॥ पितेसुवा॥६॥ पुसएसु
 वा॥७॥ सोणियेसुवा॥८॥ शुकुसुवा॥९॥ शुकपृगलपरी
 साडेसुवा॥१०॥विगयकलेवरेसुवा॥११॥ धिपुरीससंजोएसु
 वा॥१२॥नगरनिधमणेसुवा॥१३॥सेवेसुचेवा॥ अंगुचेएसुधां
 णेसुवा॥१४॥इच्छणंसमुच्छिममणुसासमुच्छंति॥ अंगुलसअ
 संखिजइजागमेताए॥ऊगहणाय॥असणीमिछदधि॥सवा
 हिपजताहिअपजतगायतो॥मुहूताउयाचेवकालकरंति॥से
 तसमुच्छिममणुसा॥इतितद्वति॥अप्रतिमनुष्यानभिधिगुराह
 सेकितमित्यादि॥अत्रापिसमुच्छिममनुष्यममनुष्यविसये॥प्र
 वचनबहुमानंतं॥सिष्याणांसाक्षातदगवते॥तदमुक्तमिति॥
 बहूमानोत्यादनार्थं॥मतर्गातमालापकोपद्वतिकहिणंभंते
 इत्यादिसुगमनवरसवे॥सुचेवअसूईधांणेषुवी॥अन्यायपि
 यांनकानिचिन्मनूष्य ॥ ससगावसाढमुचिन्नूतिनिस्थांना
 नितोपु॥सवेवितिउक्त॥समुच्छिममनुष्या॥हवेजेचौदठेका
 णो॥ समुच्छिममनुष्यउपजेछे॥ तेहश्रीपनवणासुत्रनेपाठ
 तेनोअर्थलखिएछे॥सेकतंके०॥ अथकंके०॥ शुतकंके०॥
 तेहमनुष्यबेहूप्रकारेछे एकगर्भजमनुष्य॥१॥ विजोस
 मुच्छिममनुष्य॥२॥ सेकतं समुच्छिममनुसाके०॥ अथस
 मुच्छिममनुष्यनुं स्वरुपपूछेछे॥केहेणंजते॥ समुच्छिममनु

प्यकेहणंभक्तेके०॥हेभगवान्कुणकुणठेकाणेतमेकह्युछे॥ते
तूसाभळ॥अंतोमणूसपितेके०॥मनूप्यक्षेत्रनेअंतके०॥म
ध्यपीस्तालिसलाखजोजनप्रमाणे मनूप्यक्षेत्रछे अढीद्वि
पके०॥१॥जवद्विपा॥२॥धातकिखड०॥आधोपुखरद्विप
तेअढीद्विपमाहेवसमुद्र एकलवणसमुद्र॥१॥विजोका
लोदाधि॥२॥पनरसकमजोमीसुक०॥पांचजरता॥पांच
एवर्त्त॥पाचमहाविदेह॥जवद्विपमध्येत्रणखेत्रछेधातकिखं
डमध्येछक्षेत्रछेपुखरार्धमध्येपणछे एवपंजरतिसएअक
मजोमिएशुके०॥त्रिसअक्रमभोमीजूगलियानाक्षेत्रजाण
वा तेकयाजवद्विपमध्येदक्षणादिसेएकहेमत विजोहरिव
र्षे त्रिजोदेवकरु उत्तरदिसेएत्रणनांनामउत्तरकरु॥१॥अ
णकवास॥२॥रमणीकवास॥३॥एवछक्षेत्रजवद्विपमध्ये
धातकिखडेवार पुखराअर्धवार एताएछनामजाणवा ए
वत्रिसखेत्रजुगलीयानाजाणवा छपनअतरद्विवेसुके०॥
छपनअंतरद्विपतेकिया जवधिपनेविपेलघूहेमवंत पर्वतथं
किलवणसमुद्रमध्ये पुरवनीदिसेवेदाढायोनिकलिछे,एक
दाढउपरसातक्षेत्रएवपूर्वेवेदाढायोना॥१४॥क्षेत्र एमपश्चि
मदिसे वेदाढाना॥१४॥क्षेत्रछे, एवहेमतनीदाढाऊपरअ
श्चाविसक्षेत्रयया इणिपेरेउत्तरदिसे सखरीपर्वतनीचारदा
ढातेउपरअश्चाविसक्षेत्रजाणवा एवछपनअतरद्विपजाण
वा गनीयके०॥मोटामकतियेमणूसाणचैवके०॥निश्चेक

रीनेजाणवा एटलेत्रिजं चपंचद्रिनां छाणतथामुत्रादिकने
 विपे समूर्छिममनुष्यउपजेनहिं एटलेगायनामूत्रनोचोवि
 सपोरनोकालकहोछे त्यारपछिवेरंद्रियादिकजीवउपजेप
 णसमुर्छिममनुष्यउपजेनहिं एमानिश्वेजाणवुं हवेगंर्जज
 मनुष्यसत्राधिचउदस्थानकदेखाडेछे उचारेसुवाके०॥ मनु
 ष्यसंबधिविष्टानेविपे समूर्छिममनुष्यउपजे॥वाके०विजेप
 णथानकेजाणवानेकाजे॥वाशब्दजाणवो॥१॥पासवणेसूवा
 के०॥लघुनित्यनेविपे॥२॥वतसूवाके०॥ वमननेविपे॥३॥
 पतेसूवाके०॥ मुखेकरीनेपीतनाखेछेतेनेविपे॥४॥पूयेसूवां
 के०॥परुकहिएजेलोहीपाचतेनेविपे॥५॥श्रोणिथेसुवाके०
 मनुष्यसंबधिरुधिरनेविपे॥६॥शुकसूवाके०॥ जेमनुष्यने
 तिर्यचनेविपे॥७॥ शुकपूगलेपरीसाडेसूयाके०॥तिर्यचना
 पुदगलनेविपेके०॥छांटाकहिए परीसाडेसूवाके०॥ जुदा
 जुदापड्यातेनेविपे॥८॥विगीयेकलेवरसूवाके०॥ मनुष्य
 नेविगीयेके०॥ जीवगयापछिकलेवरमुवूतेअरीरने विपे
 ॥ ९॥ थिपूरीससियोयेसूयाके०॥ स्त्रिपुरुषनेसंजोगने
 विपे॥१०॥वलखानेविपे॥११॥शलेखमनेविपे॥१२॥नग
 रनिधमणेसूवाके०॥ नगरनिखालनेविपेजेमनुष्यसंबधि
 लघुनित्यवाडिनित्यएठवांणि प्रमुखवहेतुरहे तेहनेविपे
 समूर्छिमउपजे ॥१३॥ सवेसुचेवअशुयेसुधाणेसुयाके०॥
 सर्वसघलामनुष्यसंबधीअशुचीथानकनेविपे एटलेमनु

प्यनुयुं क तथापरशंवो तथाएठवांणी अथवाअंनपाणीज
 मताएठमुकेते अथवामुखेमुहपतिघणिवांधिराखे तेह
 मूहपतिथूकेकरीने नोजीजाए तेहनेविपे समूछिममनु
 प्यअसख्यातउपजे इत्यादिकसमूछिमउपजवानाथान
 कधेणांठे तेसतगुरुसेवनाथकि भालमपडे एचौदस्थान
 कियाजीव ॥१४॥ अंगुलसअसखिजेनागमतिये ऊगा
 हणायके०॥एकआंगुलनोअसख्यातमोनागमात्र ऊगह
 णायके०॥शरीरनूपरमाण एटलेएपढेकरीने असख्यात
 जीवकहिए असनियेके०॥असनिया मिछुदधियेके०॥
 मिथ्यात्विनहोए अप्रजातोअंतोमूहताये केहता अतर
 मूहतेनूआउखंपूरुकरीनेकालकरे जेयअपचेयथाए पूर्व
 नीपरेनवाऊपजे केटलाएक थानकनेविपे जिवसदहता
 नथि तेहनेजिवे शुयजीवसनारुपमिथ्यात्वथाए कोइक
 जिवसदेहकरे जेएहमध्ये ऊपजताहशेकेनहि उपज्याने
 सशय सशयकके०॥तेहनेसशइकमिथ्यात्वकहिए एहस
 मूछिममनुप्यनीखाण॥६॥नभेदाजन्मयेपतिइतिउभेद
 जापतगखजारीउपरेप्रवादिय उभेदके०॥ भौमिफोडीने
 बाहेरनिकले एटलेवेरंदिआदिकअसजीवउपजेछे नोमि
 डिनेबाहेरप्रगटथाए तेहउभेदजाचेदकहिए जिमस्
 तावमध्येजिवउपजे पडेबाहेरनिकलेछे तेपतगख
 उपरप्लवादिकजिव विशेषजिवनानामजाणव

जद्यपिएहसमूर्द्धिमनिजातछे तोएचोमिफोडिने बाहर
निकले एनेदग्गहिनेजुदोनेदकरघो जेमरसजापणनेद
जूदोकिधोछेतेमएपणभेदजाणवा एउनेदजजीवनी सात
मीखाण ॥ ७ ॥उत्पादीइतिउत्पादजाउत्पादेचवाइतिउ
त्पातिकादेवानारकिश्च उत्पातके ० ॥ देवतानेउपजवानि
सभानुनाम उत्पातसजाकहिए त्यादेवताआविने अंतर
मूहूर्तमावत्रिसवर्पनोजुवान पुरुपउठीवेसे उत्पातसजा
मध्ये सज्यामाउपजे एटलावास्ते देवतानिउत्पातयोनि
कहिये नारकिपणकुभिपाकमध्येआविने अंतरमूहूर्तमा
प्रगट थाए तेवास्तेनारकिपणउत्पातयोनि कहिए ए
आठमिउत्पातजाजीवनीखाण॥८॥ अड्या॥१॥ पोयाए
॥२॥ एहवेहूखाणगर्जजपचेद्रियत्रिजंचनीजाणवि॥ २ ॥
जरागूजाएहगर्जजमनुष्य तिर्जचनिखाणजाणवि॥ ३ ॥
रुसीयाइतिवासीवदलवोल्यादिकनेविषे पाणीनासंसर्ग
नेविपेथकिवेरंद्रियाजिवनीखाण॥ ४ ॥संसेइमा॥ १ ॥उ
च्येया॥२॥इतिवेहुविगलींद्रिनीखाण॥ ५ ॥समूर्द्धिमएह
वेरंद्रितेरंद्रियचउरंद्रिपंचद्रि असनीयासमूर्द्धिम मनुष्य
तिर्जचनिखाण॥ ६ ॥उथाइयाएहदेवतानारकिनिखाण
॥८॥एहआठखाणत्रसजीवनिजाणवि रसियाएहनेचोथि
खाणनेविषे जेठेकाणेजेजीवरह्योछे तेठेकाणेजिवमानता
नथितेहनेविषेजिवसनारुपमिथ्यात्वथाए जेहनेसशयछे

तेहनेसशइकमिथ्यात्वकहिए एहमशइक मिथ्यात्वरुप
 चोयोनेद॥४॥ अथअणभोगरुपमिथ्यात्वनोपाचमोभेद
 कहिएछे जेअणभोगतेसमझणविद्याप्रवर्तवु तेजीवजी
 वादिकनुस्वरुपजाणेनहि समझेपणनहि सज्ञापणनहि
 एरुद्रियादिकंपंचंद्रियपर्यंतनेअणभोगीकमिथ्यात्वकहिए
 एउपाचमोनेद॥५॥ एटलेपांचमिथ्यात्वकह्या बारअवरत
 के०॥चारअवरति॥१२॥ तेकेइवेमणा॥१॥करण॥१५॥
 नीयमछंजीववहोइके०॥एकमननिअवरत॥१॥पाचइद्रिछ
 अवरता॥६॥उकायजाणवि॥इतिगाथानोअर्थसमाप्तः॥
 ॥ इतिमुनिश्रीहूकमचदजि विरचिते द्वीतियोध्याय
 परीपूर्णम् ॥ २ ॥

एवमिथ्यात्वजाणिटालिनेसमकितनिप्राप्तियाएते
 समकितना ३ चेदछे उपसम ॥१॥ क्षयउपसम ॥२॥
 क्षायक ॥३॥ तेमदेप्रथमजेजिवसमकितपामेतेउपसमसु
 कितपामे तेनुस्वरुपदेखाडेछे अनादिकालनोजविमि
 थ्यात्वहूतो तेकाललव्यपामिनेमार्गानुसारीथाए तिहां
 अणकर्णकरे जथाप्रवर्तिकर्ण॥१॥अपूर्वकर्ण ॥२॥ अनी
 वर्तिकर्ण ॥३॥ प्रथमथकिजथाप्रवर्तिकर्णकरे तेनिविधि
 कहिएछे ॥ ज्ञानावर्णी ॥१॥ दर्शनावर्णी॥२॥वेदनि॥३॥
 अतराय ॥ ४ ॥ एच्यारकर्मनित्रिसकोडाकोडीसागरोप
 मानिस्थितिडे तेमदेथि २९ उगणत्रिसकोडाकोडि

कपल्योपमनोअसंख्यातमोभागअधिक एटलिस्थितिख
 पावे तथामोहानेकर्मनिसितेरकोडाकोडीसागरोपमनि
 स्थितिछे तेमद्वेथिउगणोत्तेरकोडाकोडीसागरोपम तथा
 पल्योपमनोअसंख्यातमो चागअधिकएटलाखपावे त
 थानामकर्म ॥६॥ गोत्रकर्म ॥७॥ एवेकर्मनिविसकोडाको
 डिसागरोपमनिस्थितिछेतेमद्वेथकिओगणीसकोडाकोडि
 सागरोपम तथापल्योपमनोअसंख्यातमोचागअधिक
 एटलिस्थितिखपावे सेपथाकतिएककोडाकोडीसागरो
 पममध्येथी एकपल्योपमनोअसंख्यातमोचागओछीएट
 लिस्थिति आयूवर्जिनेसातेकर्मनिराखे एहवाजउदासि
 प्रणाम संसारथिउदवेगतापामे संसारनेअनित्यजाण
 तोथको संसारथिमहाभयभ्रांतथातोथकोएमप्रणामनि
 धारायेचढत्तोथको एकअतरमूहूर्तमाहे सातेकर्मनिउत्त
 कृष्टिस्थितिजिमपूर्वकहितिमखपावे तेनेजथाप्रवर्तिकर्ण
 कहिए तेजथाप्रवर्तिज्ञानविनाघणाजिवकरेछे एकजीव
 अनतिवारकरे अभव्यपणकरे माटेएकरणकिधांकांइसी
 धिथईनहिंहेवेएकएँरहेतोअंतरमूहूर्तरहेचडेतोअपूर्वकर्ण
 जाण पडेतोपाछोठेकांणेआवे मार्गनेदृष्टांते जेमत्रणपूर्ष
 नेजाथइनेमार्गेचाल्याजायछे आगेजातांमहाअटविमां
 पोहोतात्यांभयघणोजाण्यो त्यारेएकजणोपाछोवल्यो ए
 कजणोत्यांउजोरहोतेनेचोरेपकड्यो एकजणोहिमतकरी

नेआगलगयोतेवछितपूरेगयो तेसूखपास्यो एदृष्टात्तेउ
 पनयजोडियेछे त्रणजिवससारीसंसाररुपअटविमाभम
 तायथाप्रवर्तिकर्णस्थानकंपोत्या तेमध्येथिएकाजिवपाछो
 वल्यो तेहनेरागद्वेपचारेपकड्यो विजोजिवत्यारह्योतेमि
 थ्यात्वकर्मनेउदयेकरीने उत्सूत्रपरुपवालागयो अग्निनि
 वेसिक मिथ्यात्वनाजोगयी कुदेवकुगुरुकुधर्मने अग्नी
 कारकरीनेरह्यो मनथकिखोटुजाणेपणकदाग्रहनालिधो
 तेमेलेनहि हवेत्रीजोजीवअपूर्वकर्णकरीने समकितपामे
 सुखिथाए इतिउपनयसपू॥ इतिप्रथमकर्णपूर्ण ॥ १ ॥
 हवेविजोअपूर्वकर्णनोस्वरुपढंखाडेछे ॥ अपूर्वके० ॥ पूर्व
 एवाभावकोइकालेआव्यानथि विपेशनिर्मलभावेहोय
 स्यामाटेजेजेजीवने समकितपामवूहोय तेजिवनेएवाजा
 वहीयतेप्रथमयथाप्रवर्तिकर्णथकि अपूर्वकर्णसुधिजाता
 रस्तामाअसंस्यातियोकाठियोछेपरतुकमपेडीटिकामधेत्रि
 सगवेखिछे तेकाठियूके० ॥ पावडिर्यूकहिए तेटलाअधवी
 सायनाठेकाणांछे इहाविचारघणोछे परतुआग्रथनेक्से
 विरहारनयनोपूठताविशेपछे माटेइहांवातवर्णविनथीवि
 पेशजोविहोयतो श्रीकमपेडीनीटिकाथकिजोजो हवेजे
 यथाप्रवर्तिकर्णनेविपेजेसातकर्मनिस्थितिएककोडाकोड
 सागरोपम तेमयेएकपल्योपमनोअसंस्यातमोजागओ
 छिरहिहति तेमधेथकिएकसूहूर्तखपावे तारेअपूर्वकर्णथा

य त्तारेऽपूर्वनामविर्यउदरे पछेडहांथकिऽपूर्वनामामोघ
 रलेइनेऽग्गाडिगंठीउपरजाए. तिहाजईनेगाठीनेविदारे.
 गंठिनेदतिहाऽनिवृती कर्णथाएं. तिहापूर्वेरहेलाकर्मते
 मांथकि एकमूहूर्तस्थितिखपावे तिहाऽनंतानुबंधि चो
 कटीतथामिथ्यात्वमोहनी एपांधप्रकृतिउदीयेऽविरुद्धे
 विपाकेतथापरदेसे अतरमूहूर्तमात्रपंचप्रकृतिउपसमावे
 तेमाटेएहनेउपसमसमाकितकहिये तेउपरद्रष्टांतदेखा
 डेछे जेमकोइखारीऽभोमिनांटावानलनिपरेके० ॥ जेम
 कोईकटावानलबलतो २ आवे एमकरतांऽआगेखारीऽभो
 मिऽआवितेखारीऽभोमिनेविपे त्रखलाप्रमुखकाईछेनहि जे
 तेनेवाले तेमइहाखारीभोमसमानसमाकितऽभोमिकहिये
 अनेटावानलसमान मिथ्यात्वकहिये तेजेमटावानलनी
 अग्नीखारीऽभोमीएऽआवतारोकांणी॥ऽआपसुंऽआपउपसमी
 तेमइहांमिथ्यात्वपणसमाकितभोमिकायेप्रवेशकरीसकेन
 हितेपणऽआपसूऽआपउपसमे एदृष्टांतजाणवो॥१॥एमजीव
 उपसमसमाकितपाने तेउपसमसमाकितमाहे शुभ्रप्रणा
 मेमिथ्यात्वमोहनीनां त्रणपूजकरे एकसूधपूजा॥१॥बीजो
 अर्धसुधपूजा॥२॥ त्रीजोऽशुधपूजा॥३॥उपसमसमाकितने
 अंते शुधपूजनोउदयथायतो क्षयोपसमसम्यक्तकहीएअ
 र्धसुधपूजनोउदयथायतो मीश्रगूणठाणूत्रीजूजाणवु अ
 शुधपूजनोउदयथायतो मिथ्यात्वकहीए जेमकोद्रवधां

ननात्रणपूजकरीए एकछोतराकाढीनेपूजकरे बीजोपूज
 खाडीनेएमनोएममूफ्यो त्रीजोपूजअशुधके०॥ कोद्वराव
 एखांडघा अमजलनोदृष्टात एकजलानिरमलकर्यु बीजुं
 थोडुनिरमल त्रीजुंदूर्गधव्यापी एदृष्टातेशुधजलते सम
 कीतमोहनी अर्धशुधतेमीश्रमोहनी अशुधतेमिथ्यात्वमो
 हनीजाणवी हवेउपसमसमकीतआदि देइने समकीत
 नाघणाजेदछे पणउपसमअधिकारसमाप्त॥१॥ हवेक्षयो
 पसमकहेछे तेक्षयोपसमविचित्रप्रकारनुंछे तेरुर्मनाक्षयो
 पसमनाघणाजेदछे ज्ञानावर्णिकर्म॥१॥ दर्शनावर्णि॥२॥
 मोहनी॥३॥ अतराय॥४॥ एच्यारकर्मनोक्षयोपसमथाय
 छं पणइहामोहनीकर्मनोअधिकारछे जेदर्शनमोहनीकर्म
 नाक्षयोपसमथकी जीवसमकीतपामे तेमाटेविचित्रपणुछे
 बहूविधजनागमेके०॥ जिननाआगमसिद्धातनेविपे बहू
 विधके०॥ घणाभेदकीधाछे एटलेचोथागुणठाणानु सम
 कीतजूदू अनेपाचमागुणठाणानूपण समकीतजूदू तथा
 छंठासातमागुणठाणानु समकीतजूदूजाणवू जदपिसम
 कीतनी रुचीजोतातोएकजनेदछे तोहेपणकर्ममोक्षउप.
 समादिजेदेकरीने समकीतनाघणाजेदथायछे तेकिया ए
 कप्रकारेसमकीतते श्रीअरीहंतभगवाननावचनपररुची
 जेअरीहंतभगवतेकह्युं तेसत्यछं एवंएकाश्रितते तत्वरु
 चीकहीए एचोथागुणठाणाथीमाडीने सग्रहनयनेमते ए

कप्रकारेसमकीतकहीए हवेकेटलेप्रकारे समकीतकही
एतेकहेछे एकद्रव्यसमकीत॥१॥ वीजुंभावसमकीत॥२॥
जेद्रव्यसमकीत जेजीवादिनवपदार्थने सम्यक्प्रकारेजा
णीजाणीनेसदहे तेद्रव्यसमकीतकहीए ॥यदूक्तं॥ जीवा
इनवपयथे ॥ जोजाणेइतसहोइसमतं॥ भावेणसदहंतो ॥
आयाणमाणेविसमतं॥१॥ जीवाटिकनवतत्त्वनेजाणे तेने
समकीतकहीए भावेणके०॥ जावेकरीनेसदहतोथकोजे
जीव आयाणमाणेके०॥ नवंतत्त्वनेनयनिक्षेपेकरीनेतजाण
तो पणसमकीतछे एगाथाऽर्थः ॥ जेनावसमकीतते न
वतत्त्वनाचेद नयनिक्षेपेकरीने सम्यक्प्रकारेजाणीनेसद
हे॥ तेभावसमकीतकहीए॥२॥ वलिनिश्वेव्यवहारेकरीने
वेप्रकारेसमकीतजाणवूं तेजीवनूंज्ञान॥१॥दर्शन॥२॥ चा
रित्र॥३॥तेमांगूभ्रपरीणामतेनिश्वेसमकीतकहीएइत्यादि
कसमकीतकेवालिगम्यजाणवूं छदमस्थजाणीशकेनहीश्र
रुपीपणामाटे हवेवव्वहारसमकितते संवेगाटिकनाआचा
रेकरीओलखायतेवव्यहारसमकितकहियेतेनुस्वरुपआ
गलकहिशु ॥२॥ वलीनिसर्गनेउपदेश एवेप्रकारेजाणवूं
तेहनीसर्गके०॥ स्वभावकहिये गुरुनाउपदेश चिनाजे
जीवपोतानीमेलेउपदेशपामे॥तेनिसर्गसमकितकहिये ते
उपर मार्गनो दृष्टांतजाणवो जेमकोइक मारगभूल्यो
होय तेपोतानीमेलेजमार्गजाणे विजोपूरुपकोइनाकीधा

थिमार्गजाणोतेमद्गुरुनाउपदेशविनासमकितपामेतेने
 निसर्गसमकितकहिये विजोगुरुना उपदेशसमकितपा
 मे तेनेउपदेशसमकितकहिये' वलित्रणप्रकारेसमकित
 कहुछे'एककारकसमकित ॥१॥ विजुरोचकसमकित॥२॥
 त्रिजुदिपकसमकित॥३॥'कारकसमकितसिद्धातमाहिजा
 वकहुछे तेजावनेअनुंसारेक्रियाकरे जेमसर्वप्राण॥१॥
 सर्वभूत॥२॥सर्वजीवा॥३॥सर्वसत्वनहणे॥एटलेछकायनाजी
 वनेहणेनहिहणावेनहिहणतानेअलोजाणेनहि॥मनवचन
 कायायेकरीने एहवानवकोटिनापछखाणपालनारसावूने
 कारकसमकितहोयाजसुमतिपासाहितमुणातिइतिवचनात्
 ॥१॥ हवेविजुरोचकसमकितते जिवादिपदार्थजाणीनेनि
 रापराधनिरपेक्षपणेसंकल्पीने त्रसादिक जिवनेहणेन
 हि जथाजोगचोथे पाचमेगुणठाणेरोचकसमकितकहियेए
 विजुंसमकित॥२॥ हवे त्रिजुंदीपकसमकित पोतेमिथ्या
 दृष्टियकोपरजीवनेजीवादिपदार्थनूस्वरुप सिद्धातनेअनु
 सारेसमझावे समकितादिगुणपमाडे तेहनाप्रतिदोष्या
 मोक्षपणजाय तेवारेवादिबोल्हो जेनेदिपकसमकितते
 नेशोगुणथाय तेनो उत्तरदेछे जेदिपकसमकितनोपणए
 टलोगुणछे जेउत्कृष्टिपुन्यप्रकृतिवाधेतोनवग्रेवीकसुधि
 नीवायेआमाटेजेउत्सुत्रनिपरुपणानकरेपोतेमिथ्यादृष्टि
 पणपरनेमिथ्यात्पमाडेनहि अनेनवनिनवादिक

पूर्वे एवि क्रियात्रनुष्टानत्राकरुं करेतोपणकुलविपियोदेव
 ताथाय एउत्सुत्रनिपरुपणाकरीनेपोतानात्रात्माने तथा
 परनात्रात्माने दूरगंतियेधाले एउत्सूत्रनी परुपणानो
 करनारो महापापीजाणवो तेनीत्रपेक्षाये दिपकसंमकि
 त्वालोघणोजरुडोजाणवो पोतिमिथ्यात्वथको परनेमि
 थ्यात्वपमाडेनाहि एतेजगुणेकरीनेनवग्रेविकेजाय ॥ न्य
 दुक्त ॥ जइलगमीच्छदिठि ॥ गेविजाजावजंतीमो ॥ कोस
 पयमविअसदहंतो ॥ सूत्रतंमिच्छिदिधिओ ॥ १ ॥ जद्यपिद्वाद
 शांगीसदहे ॥ एकपदमात्रनसदहेतोसुत्रमांमिथ्यादंष्टि
 कह्यो ॥ साधुमूलगुणेशुधहोयएटलेसाधुनीक्रियाशुद्धपा
 ले पणजोउत्सूत्रनिपरुपणानकरे तोनवग्रेविकेजाय ते
 श्रीनगवतिसूत्रमांकह्युंछेप्रथमसतकेविजेउदेसे ॥ तंजहा ॥
 अहंजंतो ॥ अहंजयभवियदवदेवाणं ॥ १ ॥ अविराहियसंजमा
 ण ॥ २ ॥ विराहियसंजमाणं ॥ ३ ॥ अविराहीयसंजमासजमाणं
 ॥ ४ ॥ विराहियसंजमासंजमाणं ॥ ५ ॥ असणीणं ॥ ६ ॥ धतावसा
 ण ॥ ७ ॥ कंदप्पीयाण ॥ ८ ॥ चरगपरीवायगाण ॥ ९ ॥ किलविसि
 याणं ॥ १० ॥ तिरीछीयाणं ॥ ११ ॥ आजिवीयाणं ॥ १२ ॥ अची
 योगीयाणं ॥ १३ ॥ सजिगाणदंसणवावणगाण ॥ १४ ॥ एएं
 सिणदेवलोगेसु ॥ उववजमाणं ॥ कसकाहिउववाएगोय
 मा ॥ असंजणयभवियदवदेवाणं ॥ जुहणेणं ॥ नवणवासिसू
 वोकोसेणं ॥ उवरीमगेविजेसू ॥ अविराहियसजमाणंजे

दूषेणं॥सुहमेकप्पेउकोसेणं॥सवधसिद्धेविमाणे॥ विराहि
 यसंजमाणजह०॥भवन०॥उकोसेणसोहमेकप्पे॥ उकोसे
 एअचुएकप्पे॥विराहियसजमांसजमाण॥ जहण०॥ भव
 एवासिसुउकोसेण ॥ जाइसीयेसुअसणाणं ॥ जहणभव
 णे०॥उकोसेणंवाणवंतरेसुयवसेसासवे॥जह०॥भवणवा
 सिसुउकोसेण॥वोत्थिमितावसाण॥जोइसीयेसुदपूयाणं॥
 सोहमेकप्पे॥ चरगपरीवायंगाण ॥ वेलेलोएकप्पेकिबि
 सियाएण॥ लंतएकप्पे ॥ तेरीछियाण ॥ सहसारेकप्पे॥
 अजियाणं॥अचुएकप्पे ॥ अनीयोगीयाण॥अचुएकप्पे॥
 सलिंगिणंदसणवावणगाण ॥ उवरीमगे॥विजयेसु॥१॥
 एहनोअर्थकहेछेलेशमात्र ॥ असंजयके०॥ चारीत्रप्रमाण
 कहितद्रव्यलिंगधारी॥नवियके०॥ देवगतिगमीनयोग्य
 द्रव्यदेवजैजीवमनुष्यनिगतिमाहिथकि कालकरीने दे
 वताथाए॥तेहनेद्रव्यदेवकहिए॥एटलेकोइभव्यजीवचक्र
 वर्तिप्रमुखति पूजासतकारवहूमानसाधूनेकरता देखिने
 तेवहूमानादिकनेकाजे॥मिथ्यादृष्टिचारीत्रलेई सपूर्णस
 माचारीनेअनुसारेक्रियापाले तेउत्कृष्टोनवग्रेविकसूद्धि
 जाए अणउत्सूत्रनिपरुपणानकरेतोजाए एश्लोकनोना
 वार्थजाणवो ॥ १॥अविराहियसजमाणके०॥ अखडचारी
 त्रनापालनारसाधू जघन्यसुधर्मदेवलोकेजाए उत्कृष्टो
 सर्वार्थसिधेजाये॥ २ ॥विराहिके०॥ विराधकचारीत्रनोध

णीजघन्यन्नवनपति उत्कृष्टोसौधर्मदेवे॥ ३ ॥ अविराहि
 यसंज्ञमासंज्ञमाणके॥ अखंडश्रावकनात्रतपालिने जघ
 न्यसौधर्मदेवे उत्कृष्टोऽर्चुक ॥ एकप्पेके॥ वारमुंदेव
 लोक॥ ४ ॥ विराहियके॥ श्रावकत्रतधारीनेजघन्यन्नव
 नपति॥ उत्कृष्टोजोतपी॥ ५ ॥ असणिके॥ असनियोपंच
 द्रियकोइकअकांमनिर्जराएकरीने जघन्यभुवनपति॥ उत्
 कृष्टोव्यंतर॥ ६ ॥ धतावसाणके॥ भुमीएपड्यांपांडडाना
 खानारतपश्विजघन्यभुवनपति॥ उत्कृष्टोजोतपी ॥ ७ ॥
 कंदपियारणके॥ कंदर्पके॥ परहास्येतेहनेकरीनेनिर्जा
 तेकंदर्पिककहिए ॥ एटलेजेव्यवहारथकिचारीत्रपाले ॥
 पणपरनिहास्यमशकरीविपेशेकरे तेजघन्यभवनपति उ
 त्कृष्टोसौधर्मदेव॥ ८ ॥ चरगपरीवयगाणके॥ चरकत्रिदही
 परीत्राजकके॥ कपिलशिष्याजघन्यभुवनपतिउत्कृष्टोब्रह्म
 देवलोकपांचमुतेत्रसाजिवनिदयाविपेशेपालेछे॥ ९ ॥ कविसि
 याणके॥ किल्वपंपापउत्सूत्ररुपंजेपांतिकुलविषिका॥ एटले
 विवहारथकिचारित्रवंतज्ञानादिकना श्रावणवादनोबोल
 नारो ॥ यदूक्त॥ नाणसकेवलिणं॥ धम्मायरीयंससंघसा
 हूण॥ मायेअवणवाए॥ किथिसियंजावणंकुणइ॥ १० ॥ जेजं
 घन्यभुवनपतिउत्कृष्टुलंतकदेवलोक ॥ १० ॥ निरीच्छि
 याणके॥ त्रिजंघगायत्रैसप्रमुखे देसविरलिआदेदेइने
 अकांमनिर्जरानाधणिजघन्यभुवनपति उत्कृष्टोसहसा

रआठमूदेवलोक॥११॥ अजिवियाणके० ॥ पाखडीवेप
 धारीणं॥ गोसालासिप्याणांमित्यने॥ कोइकगभेसालीप्यने
 पणआजिवकारेछे तथापाखडीवेपधारीने आजीवकाक
 हिये तेजघन्यभुवनपति उत्कृष्टुअच्युतवारमुदेवलोक॥
 ॥ १२ ॥ अजीयोगीयाणके० ॥ अजीयोगकहिए
 ॥ विद्यामत्रादीक ॥ यदूक्त ॥ दूविहापलुयजियो
 गे ॥ दवेजावेयहोइनायठ्वो ॥ दवमिहोइजोगा ॥
 विजामंतायभावमिति ॥ १ ॥ जोगचर्णादितंत्रविद्यामं
 त्र ॥ विद्याअक्षरानुयोग ॥ एटलेंविवहारथकिचारीत्रपा
 ले पणमत्रजंत्रादिकेप्रवर्ते तेअभीयोगीकाकहिये तेजघ
 न्यभुवनपति॥उत्कृष्टुवारमुदेवलोक॥१३॥सलिगीणदसण
 वावगाणके०॥ सलिगीणके०॥ साधुनोवेपधरनारा॥दस
 णवावणगाणके० ॥ दर्शनसम्यक्तव्यापत्रभ्रष्टं॥ जेखांते
 दर्शनव्यापनासम्यक्तरहितातेजघन्यभुवनपति ॥ उत्कृ
 ष्टुनवग्रेविकजाय॥१४॥ एटलेंदिपकसम्यक्तनोएहगुण ॥
 जेइद्रियजघन्यसुखपामे उत्सूत्रनिरुपणानकरे तेमाटे
 एहदिपकसम्यक्तनोगुणछे एत्रिजुसम्यक्त॥३॥ एटलेक्ष
 यउपसमनाअनेकभेदकह्याहवेक्षायकसमकितनाजेदकहे
 छेएटलेअनुतानवधियोक्रोध॥१॥ माना॥२॥ माया ॥३॥
 लोभ॥४॥ मिथ्यात्वमोहनि ॥५॥ समकितमोहनि ॥६॥
 मिश्रमोहनी॥७॥ एसातेप्रकारतिक्षयकरीनेक्षपकश्रेणिमां

डे त्वारेक्षायकसमकितकहिये आगलकेदिकसातप्रकृति
 खपावे पेहेलांआवपुवांध्युंहोय पछिसातप्रकृतिखपावेते
 नेखंडश्रेणिक्षायककहिये एटलेउंपशमतेसातप्रकृतिउप
 समावेतेनेउपसमकहिए ॥१॥ अनेक्षयोपशमतेजेसमकि
 तमोहनीरुपपूजनोउदयथायसमकितपामेतैक्षयोपसमस
 मकितकहिए॥२॥ सातप्रकृतिखपावेतेनेक्षायकसमकित
 कहिए॥३॥एत्रणसमकितकह्यां वलिच्यारनेदेसमकित
 कहिए त्वारेसास्वादनसमकितमेलवीए तेजेमकीइकपु
 रुपखिरखांडनुंभोजनकरीतुरतवमेतेधणिनेशोसवादंआ
 वे तेमजिवपणउपसमसमकितथकि पडेतोबीजेगुणठांणे
 आवे तेहनेसास्वादनसमकितकहिए तेहनोकालउत्कृ
 ष्टोपटआविलीनो जघन्यएकसमयनोजाणवो॥४॥ वली
 समकितपाचभेदेकहिये त्वारेवेदकसमकितमेलवीये तेवै
 दसमकितजेसमकितमोहनिक्षयकरवानोएकसमयवाकी
 रहेअने क्षायक समकित पांमवानो पैलोसमय तेवेदक
 समकितजाणवु ॥५॥ हवेएसमकित रेहेवानि स्थीति
 नोकालकहेछे उपसमसमकितनोअंतर्मुदूर्तकांल॥१॥सा
 स्वादननोछआवलीकाल॥२॥ वेदकनोएकसमयनोकाल
 ॥३॥ क्षयोपसमनो छसठसागरोपम झाझेरानोकाल॥४॥
 क्षायकसमकीतनो एकसागरोपम झाझेरानोकाल॥५॥
 हयेसंसारनेविपे परिव्रह्मणकरतां एकजीवने एवाजेसम

कीतनाभेद तेकेटलीकवारआवे ॥उपशमा॥१॥ तथासा
 स्वादन॥२॥ एवेसमकित उत्कृष्टआवेतो पांचवारआवे
 क्षायक॥१॥ तथावेदक॥२॥ एवेसंसारमाएकवारआवे ह
 वेएहनोविरहकालकहेछे॥उपशम ॥१॥ ॥सास्वादन॥२॥
 क्षायोपसमा॥३॥एत्रणनोविरहकाल उत्कृष्टोअर्धपूढगल
 परावर्तनहोय जघन्यथीअंतरमूर्हतजाणवू क्षायकतथावे
 दक॥२॥ एवेसमकीतनो विरहकालहोयनहि शामाटेजे
 वेदकसमकीतनीरहेवानीस्थितीएकसमानीछेअनेसंसार
 माभमता एकजीवएकवार वेदकसमकीतपामे वीजावार
 पामेनहीत्यारेकेनीसाथेविरहकालमेलवीएमाटेएहनेवि
 रहकालहोयनहि तथाक्षायकसमकीत आव्यापछीजाय
 नहि अनेआव्याविना विरहकालथायनहि एटलामाटेवे
 दकतथाक्षायक एवेनेविरहकालहोयनहि एटलेसमकीत
 ना स्वरुपनाजेदकीधा पणहेअव्यप्राणी जेनेजेवाप्रकार
 नोक्षयोपसमहोयअटलेजेवोक्षयोपसमतेभेदधिरजरापी
 ने अगीकारकरवो हेअव्यप्राणियो पोतानीबुद्धि निरमल
 राखी शुद्धउपियोगेकरीने समकीतनीरुचि आचारप्रमा
 णेपालवी हवेजेसमकीतछे तेबीजाजीवने ओलरूयामाके
 मआवे तेनुस्वरुपकहेछे जेलींगलक्षण इत्यादिकजीया
 यकी मालमपडेतेकेहेछे सदहणाचार॥४॥ लींग॥३॥ वि
 नय०॥१०॥शुद्धी॥३॥ दोषा॥५॥ प्रजाविका॥८॥भूषण॥५॥

लक्षणा॥५॥ जलना॥६॥ आगारा॥६॥ चावेना॥६॥ स्थान
क॥६॥ एवसडसंठबोल समकीतना॥हवेएनो ऽर्थ संक्षेपे
देखाडेछे प्रथमच्यासदहणांकहेछे जीवादिकनवप
दार्थनु जथारथपणे नयनिक्षेपादिकेकरीनेअर्थ सम्यक्प्र
कारेधारवूं एवीजिवनेशुचप्रणति तेप्रथमसदहणाकहेछे

॥ १ ॥हवेज्ञान क्रियाशुधवितरागजापितकरवानीखप
विशेपेराखें कदापिकोईकालनेयोगे तथाशरीरनायोग
यकिकोइदोषणलागे तेनीआलोववानी खपकरें तेवा
साधूनीचक्तिवहूमानकरवूं तेवीजीसदहणा ॥२॥ उसंन्ना
॥ १॥पासथा॥२॥कुशिलिया ॥३॥कुलिंगीया॥४॥सेसदा
॥५॥एपांचनीसगतीतजवि॥एनुस्वरुपआगलकहीशुएत्रि
जीसदहणा॥३॥कुदर्शनीयोगी सन्याशिप्रमुखनीसंगति
तजवि एचोथिसदहणा॥४॥

हवेसमकितना त्रण्यलिगकहेछे जेसिद्धांतादिकाजि
नागम तेसांचलवानोअजिलाख एप्रथमलिग ॥ १ ॥
स्त्रीचरतारनासुख देवतादिकनामुख तेनीरीतीएधर्मसां
भलवानोराग एवीजोलिंग ॥२॥ देवगुरुनोविनयवियाव
चावहूमानता ॥ आलसमुकिनेविशेपेकरे एत्रिजोलिग
॥३॥ जेमघुघेकरीने अग्नीनुं उनमानथाय॥तेमएहत्रण
लिगेकरीनेअरुपिसमकितनुमानथाय॥

हवेदशप्रकारेविनयकहेछे॥यदुक्तं॥अरिहंतसिद्धचेइया॥

३॥ सुएया ॥ ४॥ धम्मेया ॥ ५॥ साहू ॥ ६॥ वगोया ॥ आयरीया ॥ ७॥
उवझाया ॥ ८॥ पवयणा ॥ ९॥ दसणा ॥ १०॥ विणटा ॥ ११॥ अरीहंत
तेवर्तमानकाले विचरतालेवेएटलेमातानिकुक्षे आविने
अवतरचा त्याधिकिमोक्षजशे त्यासुधिवर्तमानकाले वि
चरताकहिए एअधिकार जगवतिमूत्रना वारमासतक
नानवमाउटेसे पचदेवनेअधिकारेकह्योछे तंजथा ॥ सेके
णठेएनंते ॥ एवंवुचतिदेवाधिदेवागोयमाजेइमा ॥ अरीहता
भगवता ॥ ऊपणणाएदसणधराजिवसरवेदेशि ॥ सेकेणठे
एजीवदेवाधिदेवा एमाकह्यु जेहेजगवतदेवाधिदेव ते
केनेकहिए त्यारेजगवतेकह्युं जेअरीहतभगवंतनेदेवाधि
देवकहिए एटले अरीहतनेदेवाधिदेवएकजकहिए जेम
पुणोसोने पचोतेर तेएकजकहिए तेमअहिपण जाण
वुं हवेदेवाधिदेवनिस्थितीपूछेछे ॥ तंजथा ॥ भविद्यदवदे
वाणा ॥ केवितियकालधीतिपन्नता ॥ गोयमा ॥ जहणेण ॥
अंतोमूहताउकोसेणं ॥ तिणिपलियोवमाईणरे ॥ देवाणा ॥
पुछागोयमा ॥ जहणेण ॥ संतवामसताए ॥ उकोसेण ॥
चडरासितिपुवसयसहसाइ ॥ र्मदेवाणा ॥ पुछागोयमा ॥ जह
॥ मूहते को सेणु ॥ उकोसेदेवाये
पुछागोयमाजहणेणं ॥
सितिपुवसयसहसाई ॥ नावदेवाणा
दसविगसहसाए ॥ उकोसेणते

यदवतिके ०॥ जेमनुष्य ॥ तथातिर्जचपंचंद्रिय ॥ एवेगति
 मांहियकि॥जेदेवताथनारहोय तेनेद्रव्यदेवकहिए तेनि
 स्थितिजघन्य अंतरमूर्हृत उतकृष्टितिनपल्योपमनी
 स्थिति एटलेमनुष्यतिर्जचनु तिनपल्योपमनुं आवखुं
 त्यांसुद्धिद्रव्यदेवकहिए नरदेवतेचक्रवर्ति कहिए तेआ-
 वखापर्यंतनरदेवकहिए धर्मदेवतेसाधुकहिए तेजघन्य
 अंतरमूर्हृतऊतकृष्टो देशेउणुंपर्वकोडनिस्थिति ज्यांथ
 किचारीत्रलिधुं त्याथकिधर्मदेवकहिए देवाधिदेवअरी
 हंतजगवतकहिए तेहनिस्थितिजघन्य ७२ वर्षनि उत
 कृष्टिचोरासिलाखपूर्वनि स्थिति एटलेआवखा पर्यंत
 अरीहंतजगवंतकहिए त्यांसुधिपुजनिककहिए॥एटलेको
 इककेछेजे अरीहंतभगवंतनेकेवलज्ञान उपजे तथाचा
 रीत्रलिधुंत्यारपछि पूजनिक कहिए॥ तेजुठुं ॥जेदिवशे
 मातानीकुक्षेत्रवतरचाउपन्या त्यांथकिपूजनिकअरीहंत
 जगवंतविचरता कहिए वलिकोइवादीबोल्पो जेअरीहत
 जगवंत गृहस्थावस्तानेविपे होय त्यारेसाधुनिग्रंथपंच
 महाव्रतनापालनारा वादेनमस्कारकरे के नकरे एवादि
 नुवचन एनोउत्तर ॥ जेवांदवूंनमस्कारकरवो तेनाप्रकां
 रवे एकद्रव्यथकि विजोभावथकि एवेप्रकारछे जेद्रव्यथ
 कीवांदवु तेपंचांगिप्रणाम तथाद्वादशवर्त्यादिकवांदवुं॥१॥
 जेभावथकिवांदवूं तेमननाशूजप्रणामेकरीनि तथानमोअ

रीहताणइत्यादिकनोकारगणवेकरीनेवाढवूतेभाववदनक
 हिए तेज्यासुधिअरीहतभगवंतगृस्थावस्तामाहोयत्यांसु
 विसाधुनगवतनेवांदि जेमगुरुशिष्यने नमोलोएसवसाहू
 ण इत्यादिकपढगणवेकरीने नगवतनेवादेछे पणखमा
 श्रमणद्वादशवर्त्यादिकवदणेकरीने द्रव्यवदनथिनथिवां
 दनातथातेमजव्यवहारजाणवोनमोञ्छरीहताण एहपदे
 अतितअनागतवर्तमानकालनासर्वे श्रीहत्तनगवंतने स
 दासाधुवादेछे पणजेदिवसेमातानिकुक्षेत्राधिनेअरीहत्त
 नगवतअवतरया त्याथकिचवनकल्याणकादिकेकरीनेपू
 जनिकविशेषप्रकारे चोसठइद्रमलिनेपूजेछे तेकारणमा
 टेमातानीकुक्षेत्रावतरया एटलेमनुष्यपणामाटे श्रीअरी
 हंतनगवंतविचरताकहिए त्याथिजथाजोगेविनयकरवो
 घंटे मोक्षनेऽर्थे ॥१॥ सिद्धकहेता॥ आठकर्मनेक्षयकरीने
 मोक्षेपोहोच्या॥ तेसिद्धकहिए ॥२॥ चेइय॥ श्रीअरीहत
 भगवतनिप्रतिमा ॥३॥ श्रूतकहेता॥ समायकादिकसिद्धा
 ता॥ तेहनोविनयकरवो ॥४॥ धर्मके० ॥ चारीत्रधर्मक्षांता
 दिकजाणवू ॥५॥ तेधर्मनोअधि०॥२॥ साधुवर्गपचमहा
 व्रतनापालनार॥६॥ आचार्यछत्रिसगुणेविराजमान॥७॥
 उपाध्यायपचविसगुणेकरीनेसहित ॥८॥ प्रवचनके०॥
 संघकहिए ॥९॥ दसणके०॥ सम्यक्तकहिए ॥१०॥ एद
 शनोविनयकरवो॥ तेविनयपचप्रकारेजाणवो॥११॥

बहुमान ॥२॥ गुणस्तुति ॥३॥ श्रवणवादनोनाश ॥४॥
 आशातनापरीहार ॥५॥ भक्तितेवाह्यद्रव्येकरीने ॥ तेध
 नखरचवेकरीने ॥ पतिके ॥ सेवाकरेतेभक्तिरुपविनयक
 हिए ॥ जेमउदायनादिके ॥ श्रीश्रीहंतभगवंतनीवधाम
 णिनासाडिवारलाखसोमइयानुज्ञानआप्युतेभक्ति ॥ ॥
 बहुमानतेहृदयनेविपेधणोप्रेम ॥ तेबहुमानकहिए ॥२॥
 गुणस्तुतितेछतागुणनुप्रगटकरवूं ॥ जेमश्रीश्रीहंतनाजे
 गुणहता ॥ पणश्रीश्रीहंतनु कयां ठेकाणु होए ॥ तेथी
 श्रीश्रीहंतभगवंतनिप्रतिमा तथादेहरांकराविनेश्रीहं
 तभगवंतनोगुणप्रगटकरवो ॥ श्रीश्रीहंतनिप्रतिमादेखि
 नेविजादेवनिमूर्तिझाखिदीसेछे ॥ वलिसाधूमहापुरुषएक
 लाजताहोए त्यारेकोइकजाणेजेएमहापुरुषछे अनेघणा
 कजीवतोजाणैन्हि घणाश्रावकंश्रावीकासाथेहोय त्यारे
 जाणेजेकोइकमोटापुरुषछे एमअनेकप्रकारेगुणीनागुण
 प्रगटकरवाएगुणस्तुतिरुपविनयजाणवोसहि ॥३॥ कोइ
 श्रावणवादेबोलतोहोयतोतेनुनिवारणकरवूं तेश्रावणवा
 दनोनाशरुपविनय ॥४॥ असातनातेतांबूलमैथुनादिकवर्ज
 वूं तेअसातनापरीहाररुपविनयकहिए ॥५॥ एश्रीहंता
 दिकदशनोपांचप्रकारेविनयकरवो ॥१०॥

हवेशुद्धिके ॥ सम्यक्तनित्रण्यशुद्धि ॥ एकमननीशुद्धि
 ११॥ बीजीवचननिसुद्धि ॥२॥ त्रिज्जिकायानीशुद्धि

जेजिनतथाजिननासिद्धातादिक विनाविजुसर्वेजुठुंएवम
 नमांचितववू तेमनशुद्धि ॥ १ ॥ जेश्रीतिर्यकरनिजक्तिवि
 नयेथाए ॥ विजानिभक्तिएशुयाएएवममुखेकहेवूनेवचनशु
 द्धि ॥ २ ॥ जो छेद्योनेद्योशरीरदूखपामे तोपणाविजाटे
 यनेननमेतेकायशुद्धि ॥ ३ ॥

पंचगयदोसके०सम्यक्कनांपांचशंकादिकदूपण्टालवां
 १०३भायके०आठप्रजावकपुरुपाजिनसासननादिपावन
 रजाणवा॥१॥पदुक्त॥पावयणी॥१॥धम्मकहि॥२॥वाई॥३॥ने
 मितिउ॥४॥तवसीया॥५॥विद्या॥६॥सिद्धाया॥७॥कइ॥८॥
 अठेवप्रभावग्गमणीय॥१॥प्रवचनिके०॥वर्तमानकालेजे
 सिद्धातादिकनो यथार्थऽर्थजाणवे॥ तेप्रवचनीप्रथमप्र
 जावक॥१॥ धर्मकथानदिपेणनिपरे॥ विजोप्रजावक॥२॥
 वादकरीनेजथार्थपणेजीनसासनथाये॥ तेवादित्रीजोप्र
 जावक॥३॥ जीनसासननेनिमितेनिमितकहे॥ तेभद्रवाहू
 निपरेनिमित्तकचोथोप्रभावक ॥ ४ ॥ क्षमासहिततपश्वीपं
 चमोप्रजावक॥५॥ विद्याके०॥मत्रनेजोगेजिनसासनने
 दिपावे जेमवेरस्वामीछठाविद्यापुरुपप्रजावक॥६॥ सि.
 द्दके०॥ अंजनादिकप्रयोगेकरीने॥ जिनसासनदिपावे ॥
 कालकाचार्यनिपरे तेसिद्धपुरुपप्रभावकसातमा॥७॥ क
 इके०॥ कविश्वरजेनवनवाकाव्यकरीराजादिकरीइवे ध
 र्मादिपावेतेआठमाकविप्रभावक ॥८॥ एआठप्रजावकजा

एवाएमतिर्थजात्राकल्याणमहोत्वच्छ दिक्षामहोत्सवप्रमु
खकरीनेजिनसासनदिपावे तेपणप्रज्ञावककहिए

चूपणके० ॥ सम्यक्तनां पांचचूपणजाणवांतेवंदनपचखाण
प्रमुखजेनक्रियाविपेडाह्यापणुं ॥ तथाकुशलपणुं ॥ तेप्रथम
चूपण ॥ १ ॥ वडूश्रुनगीतार्थादिकनुंसेववूतेतीर्थसेवारूपवि-
जुभूपण ॥ २ ॥ जेगुरुदेवनिभक्तिकरेतेजाकिरुपत्रिजुभूपण-
॥ ३ ॥ जेदेवतादिकनोचलाव्यीचलेनाहि एअचलरूपचो
थुंभूपण ॥ ४ ॥ तेथकिघणाजिवधर्मनिअनुमोदनाकरे ते
प्रजावनारूपपांचमुचूपण ॥ ५ ॥

लक्षणके० ॥ सम्यक्तनां पांच लक्षण जेणेकरीस
म्यक्तओलखाय तेलक्षणकहिए जेमअग्नीनुं लक्षण
न्यायशास्त्रने मतेउपनरूपगर्तवं ॥ अग्नीत्व धुम्रलिगत्वं
अग्नीनुं लक्षणते उष्णरूपर्तुं जाणवो नेअग्निनुलिंग
ते धुम्रजाणवो तेमसम्यक्तनुं लक्षण तेसमसंवेगादि
कपंचजाणवाने कहेछे उपशमजे पोताना वेरीउपर
पणप्रतिकुलपणुं चिंतवेनाहि तेउपशमएवंलक्षणकहिए
कोइकवादिकेहेछे श्रीजगवती सुत्रना सातमासतके ॥
नवमाउदेसानेविपेवारुणनामावर्णांगनटु ॥ श्रीचेडामहा
राजनासेवककुणिकनिलडाइमधे ॥ आशुरुतेजावमीसी
मीसीमांणेके ० ॥ कोपकरीनेवेरीनेहण्योदिसेछे ॥ सम्यक्द
ष्टिआवकवारव्रतधारी छठनेपारणेकरतापण

लक्षणतो जणातुं नथी जो अतरग उपशम होत तो पंचंद्रिय
मनुष्यने हणतानहि तेने सिद्धातिक उत्तर देछे जेते कह्युं
तेसाचूं पणसाजलजो वारुणं नामावरणागनटुआने अं
तरग उपशमन होत तो एक अवतारी पणे सौधर्म देवलो
के उपजतानहि जे पंचोद्रियनो घात करयो तेतो अनुता
नवद्वि क्रोधादिक पणे नथि करयो जो अनुतानवद्विको
धादिक पणे करयो हीत तो 'एका अवतारी पणे सौधर्म
देवलोके उपजनानहि एह काले करीने निश्चय अं
तरगे उपसमरुप लक्षणछे जद्यपि सम्यक् दृष्टि तथा
मिथ्या द्रष्टी एवे जणा सरखी क्रिया करे तो पण सम्यक्त
द्रष्टी शुभफल पामे मिथ्या द्रष्टी अशुभफल पामे जु
आने एठे काणे वरुणागनटुओ मनुष्यनो घात करीने ए
कावतारी सौधर्म देवलोके पहोतो अने तेहनो वयरी मनु
ष्यनो घात करी नरकादिकने विपे पहोतो इहा परिणामनो
भेद जाणवो जेवो २ परिणाम होय तेवो २ कर्मनो वध पडे
एसम्यक् मनुज अतरग उपशमरुप लक्षण जाणवु ॥ १ ॥ हेवेवी
जुलक्षण संवेगरुप ॥ सवेण ० ॥ मोक्षनो अजिजाप इच्छा
कही ए। संवेगत्व नाम किक्षा अभिजापत्व ॥ मिति वचनात् ॥
वलि श्रीउतराध्ययनसूत्रना श्रोगणत्रीसमा अध्ययनने
विषे प्रथम एहपुछ्यु ॥ सवेगेण नते ॥ जीवे किं जणईय इ
सवेगेण ॥ अणुतर ॥ धम्मस ॥ धजणायई अणुतराए ध

म्मसधाये ॥ सवेगहवामागच्छ ॥ इयनंताणं ॥ वधिकोह
 मानमायालोभे ॥ पवेईनवलकम्मनबंधई ॥ तपवइपंच
 णमित्छत विसेहिकाउणंदंसणारांहरो ॥ नवेदंसणविसु
 द्वाए ॥ अत्तेगइएतिणेवभवगाहणेण सिइइईवुइईई दं
 सणसोहिएअं विसुधाए तचपुणो ॥ नवगहणंनार्इकम्मे
 ॥१॥ सवेगेणंके० ॥ संवेगमोक्षाभिलापरुप ॥ सम्यकंतनुं
 लक्षणते अंगीकारकरीनेजीवशुं ॥ किंजणइके० ॥ सोगु
 णप्रगटकरे ॥ एप्रश्न ॥ एनोउत्तरदेछे ॥ संवेगेणंअणुत्तरं
 ॥ धम्मसद्वंजणअइके० ॥ जेनीउपमानहोय ॥ अणुत्तरंए
 हविधर्मके० ॥ श्रुतधर्मतथाचारीत्रधर्मनेविपे श्रधातेधर्म
 करवानेविपे अत्यंतअभिलापउपजावे अणुतराएह ध
 म्मसधाए संवेगहवामांगच्छइके० ॥ उत्कृष्टि सुतचारीत्र
 धर्मनासंवेगहवके० ॥ सिध्रआगच्छतीके० ॥ उत्कृष्टोसंवे
 गुमोक्षाभिलापप्रतेपामे त्यारेउत्कृष्टिदर्शननि आरा
 धनाकरे देवगुरुनीभक्तिअत्यंतकरे जेश्रीअरीहंतजगवं
 तनी वधामणीलाव्यो तेनेसाढिवारलाखसोनइयाआ
 प्या श्रीअरीहंतजीननेवणदिठेएटलुं धनखंच्युं तेश्री
 अरीहंतजिननेदिठेतोकेटलुकधन खच्युंहशे जेसकोइक
 देशमुलकजमाडे तेमव्येशाकमांहि १०१ एकसोनेएक
 रुपीयानांमरचांनुं खरचथाय तोत्यांसुखडीनोशोसुमार
 रह्यो तेमत्यांसाढिवारलाखसोनइया वधामणीआपीतो

बीजावनखरच्यानिसिवातकहेवी. श्रीउदायन प्रमुखेतो
 श्रीअरीहंतजगवतनीदेशना साजलीने तत्कालचारीत्र
 लीपु श्रीश्रेणीकश्रीकृष्णवासूदेव प्रमुख पोतानाजोग
 कर्मनेउदये चारीत्रलेइनशक्या तोपणसंवेगगुण वधे
 धके चारीत्रना बहुमानताएकरीने जेकोईचारीत्रले तेनी
 घणीपेरे साज्यकरे इत्यादिकगुणआवेथके अनुतान
 वधिक्रोधमानमायालोचनोक्षयकरे नवचकमनबंधिके ०।
 पापानुबंधिकर्मनवा नवाधे तपचइयंछणमित्छ तविसो
 हिकाउण दसणाराहएजवतिके ०॥ सवेगप्रतयउसवे
 गनीमितिउ ॥ मिथ्यात्वनिशुद्धिकरीने दर्शननोआरा
 धकथाए ॥ दसण सोहिएयणवसुथाई ॥ अछगइ
 एतेणेव ॥ जवगाहणेण ॥ सीइइइवुइइइके ० ॥ दर्शननी
 शुद्धिकरीनेविशुधाएके ०॥ अत्यतनिर्मलपणे केटलाकते
 हजजवनेविधे सिद्धबुद्धथइनेमोक्षेजाया ॥ दसणसोहिएय
 ण ॥ विशुधाएचपुणोनयमहणनाइकमइए ॥ दरशनशुद्धि
 करीने त्रिजोभवउलघेनहि ॥ १॥ एहसम्यक्तनुंसवेगारुप
 विजुलक्षणजाणवू ॥ २ ॥ त्रिजुलक्षणसम्यक्तनुनिरवेदप
 णु निर्वेदतेससारनेवधिखानारुपजाणे नीवेएणजतेजि
 वेकिंजणजईनीवेएणंदिवमाणु ॥ सतेरीत्छिएसुकामेभोगे
 सुनिवेयमागछइसव्वविस ॥ एसुविरजई ॥ सवविमए ॥
 सुविरजमाणे ॥ आरंजपरीचायकरेइ ॥ आरजपरिचाय

करेमाणे ॥ ससारमगावुछुदइसिद्धमगोपडीवनेपञ्चवई ॥
जिवन्तेनिर्वेदगुणतेदेवादिकजोगनोत्यागकरीने संसार
मार्गनाडदेवधकरीने सिद्धमार्गनेअंगीकारकरे एहसम्य
क्तनुंलक्षणत्रिजुनिर्वेद ॥३॥ सम्यक्तनुंचोथुंलक्षण अनुकं
पाद्रव्यथाकि आत्मानिपरनिमच्यारभेदथाय तेकेम ॥
आत्मानिद्रव्यअनुकंपा ॥ १ ॥ पोतानाआत्मानिभावअनु-
कंपा ॥२॥ परआत्मानिद्रव्यअनुकंपा ॥३॥ परआत्मानि
भावअनुकंपा ॥ ४ ॥ पोतानाआत्मानिक्रोधादिकेकरीने वि
षयादिकनेप्रयोगेकरीने आपघातेमरे तेद्रव्यअनुकंपापो
तानाआत्मानिकरी।पणपोतानाआत्मानिद्रव्यहिंसाकरी
वस्तुगतेतोक्रोधेकरीनेमरे तेणेपोतानाआत्मानिद्रव्यअ
नेभावअनुकंपानकरी केवल पोतानाआत्मानिद्रव्यभा
वभेदेहंसाकरी।जेकोइकजीवव्रतपचखांणराखवानेकाजे
आपघातकरीने मरेतो व्यवहारनयनेमते द्रव्यहंसापो
तानाआत्मानिकहि निश्चयेतोपोतानाआत्मानिद्रव्य
भावे अनुकंपाजकरी वलीजेकोइलोकविरुद्धकामकरे ए
लोकनेविषे अपजसनिद्यादिक तथाताडनादिकपणपामे
तेणेपोतानी द्रव्यअनुकंपानकरी जेजयपामिने लोक
विरुधादिककामनकरे तेणेपोतानीद्रव्यअनुकंपाकरी ए
द्रव्यअनुकंपानोप्रथमभेद ॥ १ ॥ पोतानिभावअनुकंपाते
देवगुरुधर्मनिपरीक्षाकरीने साचोधर्मअंगीकारकरे खो

टोधर्मछाडे जेमशुकदेवपरीव्राजक शुदर्शनादिकनिपेरे
 वलिपोतानावृत्तपचखाण श्रीअरिहंतनगवत्तनिश्चाज्ञाए
 पाले तथाकटपडेपणमुंकेनहिं तेनेपोतानाजावअनुकंपा
 कहिये एविजोभेद २ हवेपरजिवनीद्रव्यअनुकंपाकहे
 छे जेछकायनाजिवना बाह्यप्राणउगारवा तेद्रव्यअनुकं
 पाकहीये॥३॥ जेसाधुमहापुरुपछे तेतोपोतानाआत्मास
 रीखा छकायनाजिवनेजाणेछे तेनेउपगारवानिघणी
 जखपकरेछे तेनेद्रव्यपरदयाकहिये तथाभावपरदयाते
 जेपरजिवने समकितादिकधर्मपमाडिने मोक्षेपोचाडुं एवा
 जेअद्यविसाय तेनेभावअनुकंपाकहिये॥४॥ एचोथुअनुकंपा
 लक्षणजाणवु॥५॥ हवेश्वास्तालक्षणपाचमुजेवर्तमानकाले
 पचागीजाव सम्यक्तप्रकारेसदहे जेअरीहतभगवतेजाव
 प्रकाडयो तेसर्वप्रमाणछे एवमनवचनकायायेकरीनेसदह
 वूतेहनेअनुसारेप्रवर्तवू एहपाचमुलक्षण॥६॥ एटलेस
 मांकेतनापाचलक्षणकह्या तथालिगपणपूर्वकह्याछे सि
 द्धातनुसानलवू अतिशेरागेतेनेलिगकहिए एलिगलक्ष
 णनोभेदजाणवो ॥

छविहाजयणाके० ॥ अरीहतभगवतनी प्रतिमा मि
 थ्याल्विएगृही होय तेने वदनादिकनकरवु एजतनाक
 हिए तेहनाछप्रकारछे तेकिया॥वदना॥१॥ नमण ॥ २ ॥
 दान ॥३॥ अनुप्रदान ॥४॥ आलाप ॥५॥ संलाप ॥६॥ ए

नामेछजतनाजाणवि वंदनते वे हाथजोडवा तेवंदनक
 हिए ते न करवुं ॥ १ ॥ नमणतेअन्यतिर्थादिकने ॥ धर्म
 वृद्धिदेखिनेमस्तकननेमाववुं ॥ तेनमण ॥२॥दानंतेअकित
 एकरिनेदानदेवूनही ॥ ३ ॥ वार२अन्यतीर्थादिकने धर्म
 वृद्धिसुपात्रजाणीनेदानदेवूं तेअनुप्रदानकहिएते नकरवुं
 ॥४॥ अनुकपादिकनेहेतुयेदानदेवुनिषेधनथि ॥४॥ मि
 थ्यादृष्टिनेकारणविनाअणवोलावेबोलाववुं तेएकवारबो
 लाववू तेआलापकहिए ॥५॥वार२वोलाववुतेसलापक
 हिए ॥६॥ एछजतनाकहि ॥

हवेछआगारकहिएछे जेजेसम्यक्तमांहेछआगारे
 करीने सम्यक्तजागे नहि - बाह्य मिथ्यात्वकरतांथकां
 भागेनहिते ॥ रायानियोगेणं ॥ १ ॥ गणानियोगेण
 ॥ २ ॥ बलानियोगेणं ॥ ३ ॥ देवाभियोगेणं ॥४॥ गुरु
 नीगहेणं ॥५॥ वीतीकंतारेणं॥६॥ राजानगरधणि ॥१॥
 गणतेनात्यप्रमुखलोकसमुह ॥२॥ चोरादिकनोहठतेबल
 ॥ ३॥ मिथ्यादृष्टिदेव इत्यादिकनोअजिजोगेके० ॥ तेने
 प्रयोगेकरीनेमिथ्यात्वनोआचारकरेतोसम्यक्तभागेनहि
 मिथ्यादृष्टिमातापिताकुलाचार्यनेनिगहके० ॥ परसन्नवेक
 रीनेव्रतिके० ॥ अजीवकाकंतारअटविरोगादिक ॥ दूखेपि
 डाणोथकोमिथ्यात्वशेवे॥गाथा॥ ॥ आगमतू ॥ इतिआख्यो
 मिथ्यामिति विज्ञेदक ॥ १४ ॥ अनाचारसेवेपणमनथकि

नसेवे एछआगारेसम्यक्तजागेनहि नगरनेरखोपाकाजे
कोटसरिखाआगारछजाणवा ॥६॥

हवेसम्यक्तनिछभावनाकेछे मूलभूत ॥ १ ॥ द्वा
रभूत ॥ २ ॥ प्रतिष्ठाभूत ॥ ३ ॥ निधिभूत ॥ ४ ॥
आहारभूत ॥ ५ ॥ भाषभूत ॥ ६ ॥ चारीत्ररुपधर्म
स्याके ० ॥ चारीत्रधर्मरुपदृक्षनुमूलतेसम्यक्तछे ॥ १ ॥
धर्मरुपनगरनुवारणासरिखुसम्यक्तजाणवू ॥२॥ धर्मरु
पमदिरनुपायासरिरुतेसम्यक्तजाणवूतेप्रतिष्ठाभूततृतो
य ॥३॥ जेमचक्रवर्तिनानिधानमाहे सर्वेजातनारत्नछूटां
होय तेसर्वेरत्ननिजातनिद्वानमाहेसमाय तेममूलगुण
उत्तरगुणरुपछुटारत्नसरिखागुण तेसम्यक्ततेनिद्विस
रीखुमननेविपेजाववू ॥४॥ जेमसर्ववस्तुनो आधारप्र
थविहोए तेमसर्वगुणनो आधारएकसम्यक्तछे आधा
रभूत ॥ ५ ॥ जेमअमृतादिकरसनोआधारतेकलसादिक
जाजनहोय तेशुतशिलादिकनोरसतेसम्यक्तमा रहेएम
एछजावनाएकरीनेनित्येसम्यक्तनिभावनाभावे ॥ ६ ॥

हवेआत्मानास्थानकरहेछे प्रथमस्थानकजेआत्मा
छे शशिरथकिभिन्नअसस्यातप्रदेशिज्ञानदर्शनचारीत्रवि
र्यमय ॥ आकारअनाकाररुपउपयोगमयएवोआत्मा
प्रतेशरीरजिन एवाअनताआत्मा व्यक्तिजेदेताजिए सि
द्धससारीरुपएकजआत्मातेकारणमाटे श्रीठाणागे ॥ एगे

आया॥इतिवचनप्रमाणात्प्रथमस्थानक॥१॥ त्रिजुंस्थान
 कनित्यके०॥ आत्मानित्यछे॥ द्रव्यार्थिकनये ॥ अतित
 अनागत ॥ वर्तमानकालेअविनासीछे पर्यायार्थिकनये
 तोदेवतामनुष्यादिकपर्यायनो अनित्यपणेअनित्यछे वि
 जुंस्थानक॥२॥ त्रिजुंस्थानकएआत्माकर्ताछेस्वकृतकर्म
 णाके० ॥ पोतानासुखदुखरूपकर्मनोकर्ता एआत्माछे-
 ॥ ३ ॥ तथापोतानाकरचारकर्मनोचोक्ताछेके० ॥ भोग
 वनारोपणएजआत्माछे ॥ ४ ॥ पांचमुस्थानकमुक्तिछे ते
 आठकर्मरहितथायजिवत्यारेमुक्तिकहिए॥५॥बहूस्थानतें
 मुक्तिनुसारतेज्ञानदर्शनचारित्रछे तेने आधारेआठकर्म
 क्षयकरिनेमोक्षजाय॥६॥ एछस्थानकमुक्तिनांजाणवां.
 हवेसमकितनापांचअतिचारकहेछेसंखाके०॥संशयतेवेप्र
 कारे एकदेशशंका॥१॥ विजिसर्वशंका॥२॥ जेदेशशंकाते
 श्रीअरिहंतभगवंतनिप्रतिमा मोक्षनुसाधनछेकेनथि ए
 देशशंका॥सर्वशंकाते श्रीवित्तरागनोधर्मखरोहशेकेखोटो
 हशे एसर्वशंका ॥१॥ कंक्षाके० ॥ परमतनोअभिलाप
 कंक्षाकहिए वितिगच्छाके० ॥ एकरुंछूतेआगलफलह
 शेकेनहिहोय अथवासाधुनुंमलिनगात्रदेखिने वृगंछा
 करवि तेचिकच्छाकहिए अन्यसशाके०॥ मिथ्यात्विनिप्र
 संशाकरविनाहि ॥४॥ संस्तवके०॥ मिथ्यात्विनोपरीचय
 करवोनहि ॥५॥ एपंचअतिचारसहितसम्यक्जाणवूं ॥

हवे समकितनी दशरुचीकेहेछे ॥ त्यांपहेलीनिसर्गरु
 चिकेहेछे निश्रयव्यवहारनयेकरी जिवअर्जावनवतत्वजा
 णी आश्रवत्यागेसवरलहे वितरागेकह्याजेजाव॥६॥ द्र
 व्यतेद्रव्यक्षेत्रकालनाभावशुजाणे नामादिच्यारनिक्षेपा
 जाणेसदहे आपणिवुद्धिशुसदहे वितरागनिजापाभावत
 हतछे एवीसदहणा तेनिसर्गरुचिकहिये ॥१॥ हवेउपदे
 गरुचिकहेछे जेएहिजनवतंतलछद्रव्यगुरुउपदेसशुजाणी
 नेसदहे तेउपदेशरुचिकहिए॥२॥ हवेआज्ञारुचिकहेछे रा
 गद्वेपमोह जेनागयाहोय अज्ञानमिठ्युहोयअनेजेअ
 रीहतदेवे आज्ञाकहितेमानेनेसदहे तेआज्ञारुचिकहिए
 ॥३॥ हवेसूत्ररुचिकहेछे जेसूत्रनानामनदिसूत्रार्थिलखी
 एछेअहवात्तसमासउ॥ दुविहपन्नतं॥ तजहा॥ आवसय
 चा॥ आवसया॥ वयरीतचा॥ आवसय॥ वयरीतदुविह॥
 आवसया॥ वइरीता॥ आवस्सय॥ वयरितं॥ दूविहपन्नतं
 तजहाकालीय॥ उकालीया॥ सेउकालिया॥ अणोगावह॥
 पणतत॥ ढसवेयालिय॥ कप्पिआ॥ १॥ कप्पी
 यं॥२॥ चूलकप्पसुय॥३॥ महाकप्पसूय॥४॥ उवाइ
 य॥५॥ रायप्पसेणिय॥६॥ जिवाग्निगमो॥७॥ प
 न्नवणा॥८॥ महापन्नवणा॥९॥ पमायपमाय॥१०॥ नंदि
 ॥११॥ अनुयोगद्वाराइ॥१२॥ देविदत्तओ॥१३॥ तदुलवे
 यालीया॥१४॥ चदाविजया॥१५॥ सुयभति॥१६॥ पौरासि

मंडलं॥१७॥मंडलप्वेसो॥१८॥विद्याचरणविणत्तीत्रो
॥१९॥गणिविद्या॥२०॥ज्ञाणविभक्ति॥२१॥मरणविजती
आयवीसोहिं॥२३॥वियरायसुर्य॥२४॥सलेहणासुयं
॥२५॥व्यवहारकप्पो॥२६॥चरणविसोहिं॥२७॥आ
उरपचखाणं॥२८॥महापचखाणं॥२९॥एवमाइशेकि
तकालिआतंजहा॥उत्तरझयणाइं॥१॥दस्याकल्पो॥२॥
व्यवहारो॥३॥नीसिहं॥४॥महानीसिहं॥५॥इसिभा
सियाइं॥६॥जबुद्विपन्नति॥७॥दिवसागरपन्नति॥८॥
पुरपन्नतीचदपन्नती॥९॥खुडीयावीमाणपवीजती॥१०॥मह
डीयाविमाणपवीभती॥११॥अंगचूलिया॥१२॥वंगचूलिया
॥१३॥व्यवहारचूलिया॥१४॥अरणोववाए॥१५॥वरणोववा
ए॥१६॥गरुलोववाए॥१७॥धरणोववाए॥१८॥वैसमणो
ववाए॥१९॥वेलंधरोवकाए॥२०॥देविंदोववाए॥२१॥
ठाणसूए॥२२॥समुठाणसूए॥२३॥नागपरीयावालिआ
॥२४॥नीरयावलीआ॥२५॥कप्पियांआ॥२६॥कप्पंव
सियाआ॥२७॥पुप्फियाआ॥२८॥पुप्फिचूलियाआ॥२९॥
येहिदेसाआ॥३०॥एवमाइतल्लअंगपवीवंदुवालसवीहं
जहाआचारो॥१॥सुयगडो॥२॥ठाण॥३॥समवाआ
४॥विवाहपन्नती॥५॥नायाधम्मकहाआ॥६॥उपासक
शाआ॥७॥अंतगडदशाआ॥८॥अणुतरोववाईदशाआ
९॥वीवागसूय॥१०॥:भाव॥११॥दीठावाआ

उच्चारितथाठाणगमध्ये चारसूत्रनानामठे. तथाजोगवि
 धिमध्ये आठनामवधतानाजोगछे नदीसूत्रेपणएवमाई
 एपाठयीउपदेशमाला प्रमुखसवीतीर्यकर विराजमान
 थकाजेथया जेवसूदेवंहूडप्रमुख तेसर्वमानवायोग्या॥ ह
 मणावर्तमानकाले॥४५॥आग्यमछे तेनानामकहेछे अग्नी
 यारअग ॥आचारग ॥ १ ॥सूयगडांग ॥ २ ॥ठाणंग ॥३॥
 सम्मवायाग ॥४॥जगवती ॥ ५ ॥ज्ञातार्धर्मकथा ॥६ ॥ उपा
 सकदशा ॥ ७ ॥ अतगददशा ॥ ८ ॥ अनुतरोववाइदशा
 ॥९॥प्रप्नव्याकरण ॥ १० ॥ विपाकसूत्र ॥ ११ ॥ एअग्नी
 यारअगजाणवा वारमोअगदृष्टिवाद जेमाहेचौदपूर्वहतां
 पणतेविछेदगयाछे वारउपागनानाम उववाई ॥१॥ राय
 ॥ ५ ॥ चदपन्नति ॥ ६ ॥ सूरपन्नति ॥ ७ ॥ कप्पिया ॥ ८ ॥ क
 प्पवडसिया ॥ ९ ॥ पुफिया ॥ १० ॥ पुफचुलीया ॥ ११ ॥ वन्नि
 दशात्रो ॥ १२ ॥ एउपागजाणवा अथछेदनानामक
 हेछे व्यवहार ॥ १ ॥ वृहत्कल्प ॥ २ ॥ दससुतस्कध ॥ ३ ॥ नि
 शीथ ॥ ४ ॥ महानिशील्ल ॥ ५ ॥ जितकल्प ॥ ६ ॥ अथदसप
 यनानानाम चौसरण ॥ १ ॥ संधारावयनो ॥ २ ॥ तडुलवेयाली
 या ॥ ३ ॥ चदाविजया ॥ ४ ॥ गणविजया ॥ ५ ॥ देविदल्लुओ ॥ ६ ॥
 विरकओ ॥ ७ ॥ गछाचार ॥ ८ ॥ योतीकरड ॥ ९ ॥ च्यारमूल
 सूत्रनांताम आवस्यका ॥ १ ॥ दशवैकालिका ॥ २ ॥ उत्तराध्य

यना॥३॥ओघनीर्युक्ति॥४॥वेचुलीकासुत्रनांदि॥१॥अनुजोग
 द्वारा॥२॥एआगमसर्वनाजोगछेअनेबीजानाजोगनीविधि
 नयीदिस्तीजेएवाजोगमध्येआव्याछेतेमाटेआग्यमसूत्रनि
 युक्तिजाण्यचुरणीटिकाएपंचांगीनांवचनमानेआगमसुणवा
 भणवानिइछाहोयतेसूत्ररुचिजाणवि॥४॥इहांश्रीजगवति
 नांदिसूत्रमधेगाथाछे जेसूतथोखंजोपढिमोवियोनिजुति-
 मिसीआो॥तइयोयनीखसेसो॥एसविहिहोईअणुउगो॥१॥
 तथाअनुयोगमध्ये नियुक्तोअनुगमकह्योछे॥ समवायां
 गे॥ सानियूताए॥ इत्यादिकघणीसीखछे॥ तेमाटेपंचांगी
 नीश्रद्धाराखे तेनेश्राराधनाछे॥ तेमाटेपंचांगीनिश्रद्धारा
 खवी हवेविजरुचिकहेछे ॥ जेजिवगुरुमुखे ॥ एक
 पदनो अर्थसुणी अनेकपदसदहे ते विजरुचिजाणवी
 ॥ ५ ॥ हवेअनीगमरुचिकहेछे जेजीवगुरुमुखे सुत्र
 सिद्धांतअर्थशुंजाणे अनेअर्थशुविचारसुणवानी नणवानि
 जेनेघणीचाहनाहोय तेअभिगमरुचिजाणवी ॥६॥ हवे
 विस्ताररुचिकहेछे छद्रव्यजाणेछद्रव्यनागुणपर्यायचारें
 प्रमाण॥ सर्वनयजाणे॥ एनयप्रमाणशुंछद्रव्यसदहे ॥
 तेविस्ताररुचिजाणवी॥७॥हवेक्रियारुचिकहेछे दर्शनज्ञा
 नचारीत्र तपविनयसुमतिगुप्ति ब्रह्मक्रीयासहित आ
 त्मधर्मशुंजेनेरुचिघणीहोय तेक्रियारुचिजाणवी॥८॥ हवे
 संक्षेपरुचिकहे अर्थमांज्ञानमांथोडोकहे घणीजाणेकुम

तमानपडे जिनमतमाप्रतितमाने तेसक्षेपरुचिजाणवी
 ॥९॥ हवेधर्मरुचिकहेठे जेपचास्त्रिकायनोस्वरुपजाणे
 श्रुतज्ञाननेस्वजावेअतरगसत्तासदहेतेधर्मरुचिजाणवी ॥
 १०॥ एदसरुचिकहि इत्यादिकसमकितनाघणाबोलछे
 माटेसडसठबोलोनियमरह्योनहिवर्त्तासमकितनावोलवी
 जाछेआगलकेटलाएककेवाशे॥इतिश्रीसमकितद्वारग्रथो
 मुनिश्रीहूकमचंद्रजिविरचितेत्तृतीयोध्यायपरीपूर्णम्॥३॥

एटलेत्रिजाअधिकारमां समकितनुस्वरुपदेखाड्यु
 हवेचोथाअधिकारदेवतत्वत्रोलखावेछे शामाटेजेशुद्धदे
 वा॥१॥ शुद्धगुरु॥२॥ शुद्धधर्म॥३॥ एत्रणतत्वनीसदहणा
 होय तेनेसमकितकाहिए माटेप्रथमदेवतत्वत्रोलखावेछे
 देवतेअरीहतनेकाहिए एटलेअरीहतके०॥ आठकर्मरुप
 शत्रुनेहण्यतेअरीहतकहियेत्यारेशिष्येप्रश्नकर्यु जेअरी
 नामशत्रुनेहणेतनेअरीहतकोछो त्यारे राजाप्रमुखघणा
 लोकशत्रुनेहणेछेतनेअरीहतकहीएएवुप्रश्नकर्युहेशिष्य
 प्रश्नतेमलुंकर्यु परतुतारीसरतस्वजातिविजातिमापुगी
 नहि शामाटेजेतेशत्रुनेहणेछे तेकाडशत्रुनथीकेमजेशत्रुतो
 विजातीहोय पणस्वजातिहोयनहि माटेएतोमूर्खछे जेस्व
 जातिनोघातकरेछे अरीहनप्रमात्माएविजातीनोघातक
 र्योछेत्यारेफारिशिष्यवलिवोल्याहेस्वामीस्वजातिविजा
 तिनीवेहेचणकरापणअमेस्वजातिविजातिजाणतानथीम

टेअमाराउपरकृपाकरीस्वजातिविजातिनुंस्वरुपओलखा
 वोत्तारेगुरुओलखावेछे जोशिष्यस्वजातिके॥जेपोतानि
 जातिके॥ जेनेविपेसरखागुणछे सरखालक्षणछेसरखो
 स्वभावछेतेनेस्वजातिकहिए अनेविजातिके॥ द्रव्यपण
 बीजो गुणलक्षणस्वभावपणबीजो तेनेविजातिकहिए
 इहांस्वजातीविजातीनीचोअंगींलगावीनेदेखाडेछे स्वज्ज
 तीनेहणेतेपहेलोभांगो॥१॥ स्वजातीविजातीनेहणे॥२॥
 विजातीस्वजातीनेहणे॥ ३॥ अनेविजातीविजातीनेहणे॥
 ४॥ एनोअर्थः॥हवेस्वजातीस्वजातीनेहणेके॥जेममोटोम
 छनानामछनेगले तेमछेमछजोतांतो ॥ स्वजातीछे पण
 शायकिहणेछे जेक्षुधावेदनिछे जेपुद्गलनाघरनीछे तेवि
 जातिनेऽर्थेस्वजातिनेहणेछे तेकेमजेकोइराजाविजाराजा
 नुराज्यलेवाजाय त्याहांतेराजानेहणे तेदेशनालोभे
 राजानेहणेछे तोजूओएप्रतक्षमूर्खछे शामाटेजेदेश
 छेतेपुद्गलनाभोगमाअवेछे अनेकर्मपोतानेभोगववांप
 छे अनेदेशतोविजातिछे अनेराजास्वजातिछे तेविजातिने
 ऽर्थेस्वजातिनोघातकरेछेतेस्वजातिनावेनेदछेएकद्रव्यस्व
 जाति एकजावस्वजाति तेद्रव्यस्वजातिके॥ राजानेह
 प्यातेद्रव्यस्वजातिकहिए अनेराजानिघातकरचाथीला
 ग्यांजेकर्म तेथकिपोतानोआत्मासंसारनेविपेपरिव्रह्मण
 करशे तेमाटेएनेजावस्वजातिनोहण्योकहिए एपेहेलोचा

गो ॥१॥ हवेस्त्रजातिविजातिनेहणे तेनोऽर्थकहेछे स्वजा
 तिके० ॥ पोतानोआत्माअनंतगुणेकरीनेसहितछे एजेट
 लाजीवछेतेसर्वस्वजातिछेशामाटेश्रीऊत्तराध्ययनमांकह्युं
 छे जेछलक्षणसर्वजिवमालाधे तेकिया ज्ञान ॥१॥ दर्श
 न ॥२॥ चरीत्र ॥३॥ विर्य ॥४॥ सुख ॥५॥ उपीयो
 घा॥६॥ एछलक्षणहोए तेनेजीवकहिए एटलेसग्रहनघेस
 तागवेपता सर्वजिवसरखाछे तेठाणंगमांकह्युंछे एरोआ
 याजीवा एटलेसर्वजिवनेएकजगवेरुयो माटेसर्वजिवस
 रखाछेमाटेसर्वजिवस्वजातिजाणवाहवेस्वजातिछेतेविजा
 तिनेहणे तेविजातिकियो तेनूस्वरूपदेखाडेछेएटलेविजा
 तिके० ॥ विजाजातछे तेनेविजातिकहिए तेपुद्गलास्ति
 ॥५॥ १॥ धर्मास्तिकाय ॥२॥ अधर्मास्तिकाय ॥३॥ आ
 कास्तिकाय ॥ ४ ॥ नेकाल ॥५॥ एपाचमां पुद्गलव
 र्जितचार तेतोहणातानथि अनेपुद्गलविशेषण विश्रस
 टिकपुद्गलनेहणवानुकामजरुरनथि एकमिश्रसापुद्ग
 लनेहणवानेनाआठनेदछे तेकहेछे उदारिकवर्गणा॥१॥
 कृत्यवर्गणा ॥ २ ॥ आहारकवर्गणा ॥ ३॥ तेजसवर्गणा
 ॥४॥ जायावर्गणा ॥ ५॥ उरुवासवर्गणा ॥६॥ मनोव
 र्गणा ॥ ७॥ कामणवर्गणा॥८॥ एआठवर्गणानानामजाणव
 वेपरमाणुंजेलाथाए त्यारे द्वणुकखंधथाए त्रणपरमां
 भेलाथाए त्यारेतणुकखंधथाए एमअसंस्थाते परर

गुंए असंख्यात्तखंधथाय अनंतापरमाणुये. अनताणुंखंध
 थायएसर्वजिवनेगृहेवायोग्यनथि अनेअभव्यथकिअनंत
 गुणाअधिकपरमाणुंजलाथाय त्यारे एकउदारिकनिवर्ग
 णालेवायोग्यथाया। एटलेएकएकथिअनंतगुणिअधिक॥
 एकथकि विजीविजीथकित्रिजीएमअनुक्रमेसातमाथकि
 आठमिवर्गणाकर्मणनामेवर्गणाअनंतगुणीअधिकमल्या
 थीजिवनेगृहेवाजोगथाय उदारीक ॥१॥ वैक्रय ॥२॥
 आहारक ॥ ३ ॥ तेजस ॥ ४ ॥ एचारवर्गणावांदरछे
 एमांपांचवर्ण ॥५॥ वेगंधर॥ पांचरस ॥६॥ आठफर
 स ॥८॥ एविसगुणछे जापा॥१॥ स्वास॥२॥ मन॥३॥
 कर्मण ॥४॥ एच्यारवर्गणासुक्ष्मछे एनेविपेसोलगुणछे
 केमकेफरसनाएनेच्यारहोयएटलामाटे तथाएकपरमा
 णुमापांचगुणहोय॥वर्णा १ ॥ एकगंधा ॥ २ ॥ एकरस
 ॥ ३ ॥ बेफरस ॥ ४ ॥ एपुदगलना अनेकविचारछे ॥
 एमानो गुणआत्मानानथि एपुदगलमांजछे एटले
 आत्माथकीन्निगुणठर्याछे माटे एने विजातीकहिए
 एटलेवर्गणानोघात आत्माकरे एस्वजातीविजातीघात
 विजोनांगो॥ २ ॥ हवेत्रीजोभांगोवीजातीस्वजातीघात
 नामे विजातीके०॥जेपूदगलकहेताजेकर्मदलतेआत्मानो
 घातकरेछे तेनोविवरोकहेछे जेआत्मानाआठगुणछे जे
 अनतुज्ञाना॥१॥अनतुदर्शना॥२॥ अनंतोअव्याबाधा॥ ३ ॥

अनतुचारीत्र ॥ ४ ॥ अटलअवगाहना ॥ ५ ॥ अरुपागुण
 ॥ ६ ॥ अगुरुलघू ॥ ७ ॥ अनतुविर्या ॥ ८ ॥ अथाठगुणहण्यप्रटले
 विजातीयेस्वजातीने हण्यो एत्रिजोनागो ॥ ३ ॥ हवेचोथो
 नागोविजातीविजातीनेहणे एटलेजंमकोइकपथ्यरप्रमू
 खभितादिकउपरछेउपरथकी स्वप्नवेरडीपड्यो निचेमा
 स्तिनावासणप्रमूख पड्यां हता तेनीघातथई एटलेपथ्यर
 पणपूढगलछे माटीनाजाजनपणपूढगलछे एटलेविजा
 तीविजातीनेहण्यो एचोथोनागो ॥ ४ ॥ एचोचगी कही
 हवेएच्यारजगमाहेथी जंविजोभागोछे तेनागोहोयते
 अरीहतप्रमात्माकहिए इहांविचारघणोछे पणग्रथगौर
 वथाय माटेजस्योनथि हवेएवाजेअरीहंतदेव जेअठारे
 दोपणेकररीरहीत तेनेजिनेश्वर देवकहिए तथाजिनचैत्या
 एके ॥ श्रीजिनराजरागद्वेपरहीतते जिनकहिए तत्स
 वधिचैत्यानिके ॥ प्रतिमाश्रीवितरागदेवनीप्रतिमानेचै
 त्यकहिए तयानीग्रंथाके ॥ बाह्यअभ्यतरगाठरहीतसा
 धूकहिए तेनीथापनानेनिग्रथकहिए थापनाचार्यनेपणनि
 ग्रथकहिए तथासमायकादिकआगमतथा आदिशब्दथ
 की सधसाधमिकादिकनीभक्ति बहुमानकरवु इपूठे ॥
 एहजेकह्या अरहचैत्यादिकजेनेविपे शकाकक्षादिक
 रहित आठआचारतेसम्यक्तनुंसाधन जाणवुं जेजि
 भद्रिकादिकगूणसहितअगीहतजगवतनीप्रतिमानादर्ग

पूजाथकीसम्यक्तपामे तथासाधूनादर्शनादिकथकितथा
 तिर्थजात्रा श्रीतीर्थकरभगवंतना पंचकल्याणकभूमि त
 थाश्रीसिद्धाचलगीरीनारप्रमुखमाहातीर्थनीजात्रा तथा
 साधर्मिकनीचकितदिक्षामहोछवादिक उपधानमालारो
 पणादिकजिननामहोछवदेखिने सम्यक्तपामे जेपास्या
 होयतेगुणनेवधारे सम्यक्तनिर्मलकरीने चारीत्रपांमीने
 यावत्मुक्तिपदपर्यंतसाधनथायं निसकितके०॥ देशशं
 का॥१॥सर्वशंका॥२॥देशशंकां तेवितरागनामार्गनेविपे
 जेजिवादीककहेतां०॥पदार्थकह्यातेमध्ये एकदेशतेपाणी
 नेविदुएअसंज्यातादिजीवकह्या तथावासिधाननेविपे सं
 ज्याताबेरेन्द्रियकह्या तेशंकानहिहोयतथाजैनामार्गनामत
 नेविपे शकातेसर्वशंकारहित निशंकितवेदाद्योके०॥प्रथ
 मआचार॥१॥निकांक्षितके०॥ जेअन्यतिर्थीतियोगीकाप
 डीनाधर्मनो अभिलाषतेरहित तेबीजोआचार॥ २ ॥
 दर्शनरूपाके० ॥ धर्मनाफलनोसंदेह तथा साधूनिदुगं
 छानिंयाकरेतेरहित ॥ एत्रिजोआचार ॥ ३ ॥ अमुढ
 द्रष्टित्वकुतिर्थिकनामंत्रचमत्कारदेखीने ॥ तथा स्व
 दर्शननेविपे नयनिक्षेपादिक ॥ उत्सुर्गापवादादिकअंगा
 धअर्थदेखीमुझायनाहि एअमुढदृष्टिचोथोआचार॥४॥ ए
 चारआचारअतरंगजाणवां जोनिशकितादिकवाह्यक्रिया
 करे तोअनुमानजणाव॥५॥ हवेच्यारआचारवाह्यवृत्ति

करे ॥तेकहेछे ॥ जेगुणीतीर्थकरादिकतथासाधुसाधविप्र
 मुखचतुर्विधसंघनेगुणिकहिए तेनिप्रसंशाकरवी जेतीर्थ
 करभगवतनिप्रतमाभरावितेगुणप्रसंशाकहिए जेश्रीती
 र्थकरदेवदेशांतरनेविपेहोयतेनीप्रतिमाथापिनेतेगुणप्रगट
 करवातेज्याहांसुद्धिपोतानाआत्मानांसम्यक्तादिकगुणवृद्धि
 पामेयावतचारित्रगुणअगीकारकरेछेत्याहांसुद्धिद्रव्यस्त
 वनीमुख्यताछेपछीचारित्रगुणआराधवेकरीनेविनयवयाव
 चादिकेकरीनेगुणनिप्रसंशाकरे एहप्रवृत्तिरूपपांचमोआ
 चारप्रधानछे ॥ ५ ॥ जेज्ञानदर्शनचारित्रनांगुणसाध
 तोहोय तेनेसाज्यादिककरवेकरीनेस्थीरकरेश्रीकृश्नवासु
 देवश्रेणीकप्रमुखे चारीत्रनीसहायकरी एविउदघोषणा
 करावीसाज्जलीछे एप्रवृत्तिरूपछठोआचार ॥६॥ वाछल्य
 ताके०॥ जक्तिरूपजाणवी बाह्यपतिश्रीतीर्थकरजगवं
 तनितथासाधर्मनि यथास्थितपूजासेवादिककरवितेवाछं
 ल्यतारूपसातमोआचारा॥७॥जिनसासननिउनतिकरे घ
 णाजिवजिनसासननिअनुमोदनाकरे तथाअमारनापड
 हचजडाविने जेमदिपावेतेसाधुहोय तेउत्कृष्टीतपस्यात
 थादेशनादिकनिकलायेकरीने अष्टमहाप्रजावककह्याते
 नीपेरेजिनसासनदिपावे एप्रभावकनामआठमोआचारा॥
 ८॥ समकितनाएआचारकह्या अष्टोआठसख्याये सम्य
 क्त्तनेनिर्मलके०॥ उजलूकरवानेहेतेएकह्या एआठसख्या

रश्रीउतराध्ययननाअठविसमामोक्षमार्गाध्ययननेविषे॥
 यदुक्तं॥ निसंकियनिकंखिय निवितिगळा अमूंणआठा॥
 १॥ एएकात्रिसमीगाथा उववुहके०॥ गुणवंतनीप्रसंशा
 करवी विजोऽर्थतोलख्योछे आवकनेजिनपूजाके०॥ श्री
 वित्तरागनीपूजानेविषे तथासमाथकनेविषे तथापोषधेपो
 सानेविषे एआठआचारयथायोग्येके०॥ ज्यांहांजेवूंघटे
 त्यांहांतेवूंजोडवूं तथामनवचनेकायानायोगेकरीने श्रीवि
 त्तरागनिपूजादिकनेविषेजोडंवा आदिशब्दथकिप्रणाति
 पात्तविरमणादिकवारव्रतनेविषे॥सकलके०॥ सर्वेआचार
 जोडवाजिनपूजायांसम्यक्तनेविषे तथावारव्रतनेविषेपण
 यथायोग्येजोडवूं एकवित्तरागनिपूजानेविषे निशांकिता
 दिकआठआचारजोडवातेकेमः ॥ श्रीवित्तरागदेवमां॥
 अनेश्रीवित्तरागनिप्रतमामां कशोअंतरजेदनथि ए
 वुंशांकादिकरहितपणुहोय तेपूरुपश्रीवित्तरागदेवनिप्रत
 मानिपूजाकरेअहींशिष्येप्रश्नकरयुं जेवित्तरागतोअनंतगु
 णनाधर्णाछे चोत्रिसअतिशयेकरीनेविसाजमान पांत्रिसं
 वाणिगुणनाधर्णाछे केवलज्ञानभास्कर इत्यादिकअने
 कगुणेकरीनेसहितछे श्रीवित्तरागनिप्रतिमामांतो ते
 मांनोएकेगुणदिसतोनथि तोतमेकह्युंजे श्रीवित्तरा
 गनिप्रतिमाने श्रीवित्तरागमांहिकशो अंतरजेदनथि
 तोइहाशंकामनमांऊपजेठे इहांशिष्यनेउत्तरदेछे जेहे

शिष्यतेसाचूंकहयुं तेजलुप्रश्नपूछयुं अभिप्रायजाप्या
 विनाशकाउपजे तेमाटेतुएवात्तना श्रभीप्रायमांसम
 ज्योनहि जेश्रमेकह्युजेकशोश्रत्तरभेदनथि तेश्रचिप्राय
 सांनल॥ जेचोत्रिसअतिशयादिगुणतो ॥ भावनिक्षेपामां
 होय तेजगुणप्रतिमामाहोयतो भावनिक्षेपोजकेहे
 त प्रतिमाकहेतनहि कशोश्रत्तरभेदनथिएजेकहयुं तेजे
 कोईभव्यजिवभद्रिकसम्यक्तदृष्टिदेववृत्ती तथासाधुनिग्र
 थहोय जेकह्युतेजेपोतानेघटमाउचित ॥ मन ॥ वचन ॥
 कायानिशक्ति बालविर्य॥१॥ बालपंडितविर्य ॥२॥ पंडि
 तविर्यरुपशक्तितथातेविपुन्यप्रकृतिने श्रनुसारे विद्यमा
 न श्रीश्ररीहतनगवंतनिप्रतिमानि शेवाचकितविनयबहू
 ॥१॥ करे पुन्यानुबधिपुन्यप्रकृतिवांधेतेविजमहानिर्जराए
 करीने उत्कृष्टपदेवर्तंतोजिव सिद्धिपामे त्याश्रीवितरा
 गनिप्रतिमामां कशोश्रत्तर भेदनथि एश्रचिप्रायव
 चनकहयुछे वलिजेसरखोगुणने सरखापणुनहि एवूजो
 एकातेकईतोमिध्यालथाय तेतोपूर्वश्रीसुगढांगनिसाखे
 कहुंजछे तोइहाकशुकहेवानुकामरहयुंनथि वलिजोतमे
 कहु जेश्रतिसयादिकगुणमाहेलोएकेगुणदिसतो नथि ते
 वगरसमज्योबोल्यो श्रीतिर्थकरभगवतनिप्रतिमामांतो
 नेर्विकारनेत्रप्रमुख संस्थानादिकेशैलेसिमोक्षजावानिश्र
 रथा तेनिमूद्रापरमउपसमरसनोश्राकार श्रीतिर्थकरभ

गवंतनाशरीरनुसरखापणु तेहप्रतिमादेखिनेसाक्षात्तग
 वंतनेसंज्ञारखानिशक्ति विषयकखायत्यागनापरीणामक
 राववानिकारणता तथाजातिस्मरणप्रमुखेकवलज्ञानपर्य
 ततेउपजाववानिकारणताइत्यादिकअनेकगुणश्रीवितरा
 गनिप्रतिमामाहेसाक्षात्दिशेछेतोकेमकहेवायजेगुणनधि
 ॥यदूक्तं॥प्रसमरसनिमग्न॥दृष्टीयुग्मप्रसना॥वदनकमलंक
 कामनिसंगशून्यंकरयुग्मपिधत्ये सस्त्रसंबंधिवंध्यतदासि
 जगतिदेवो वितरागस्त्वमेवं॥१॥प्रसमके०॥ उपसमरस
 नेविपेनिमग्नके० ॥ व्यापिरह्यांएहवां हेवितरागतारां
 नेत्ररुडां वलिप्रसनके० ॥ निर्विकारीतारुं मुखाकम
 ल ताहरो अंकके०॥ खोलोप्रेमदानेसंगरहितछे, वलि
 तारुंहाथजोडूं शस्त्रसंबंधेशून्यछे तत्तेहेतुमाटे तारि
 निर्विकारीप्रतिमाआकारने हेतुएकरी लंके० ॥ तुंवित
 रागद्वेपरहितछुं तेकारणमाटेश्रीवितरागनिप्रतिमाअने
 कगुणेकरीनेसहितछे जेसम्यग्दृष्टिजिवंहोय तेने तथा
 थोडाअवमांमोक्षेजवु होय तेने अज्ञेदबुद्धि, श्रीतिर्थक
 एनिताय तेआहार्यारूपकहिए एप्रथमआचारनिसंकित
 ते ॥ १ ॥ विजोनिकक्षितपरमतजिलापरहितपूजामां इ
 यादिकआचार जिनपूजादिकवारव्रतमांजोडवाश्रदान
 ५०॥श्रावकनेप्रथमके०॥मनुष्यप्रधानकारणतेजिननिपू
 णछेते द्रव्यभावस्तवात्मिकके०॥द्रव्यस्तवचावरुपपूजा

कहिएद्रव्यस्तवतेद्रव्यधनादिकेसंपदाएकरीने स्तवके०
 श्रीवितरागनाछतागुणप्रगटकरवा तेद्रव्यस्तवगृहस्थने
 दानपूजादी दिक्षामहोछवादीकसर्वद्रव्यस्तवकहिएश्रुत
 अध्यवसायेकरीने क्रियाअनुष्ठानकरे तेजावस्तवकहिए
 वलीतेपूजाकेबीछे नवविधधनधान्यपितवस्तु इत्यादि
 कतेणकरीने आर्तिके०॥आर्तध्यान॥रौद्रकके०॥रौद्रध्यान
 हंसानुबंधी॥ १ ॥मोसानुबंधी॥ २ ॥चोरानुबंधी॥३ ॥परी
 गृहरक्षानुबंधी ॥४॥ इत्यादिकरौद्रध्यानरूपेजे याधीम
 ननीपीडा तेरुपवाह्यअभ्यंतररुपरोगतके० ॥ हरतिते
 दूतएटलेपरीहरवु आर्तध्यानरौद्रध्यान रोगनीटालण
 हारीपूजाछे॥ २५ ॥जेपजमिवके०॥ जेम रोगने भेखज
 के० ॥बहुविधउपधनिपेरे सतरभेदिपूजातथा श्रष्टप्रका
 रीपूजा सदिष्टके० ॥प्रकाशिविधिवत्के० ॥ विधिसहि
 तदशत्रिकादिकेकरीने प्रकाशिपरमेश्वरे अंततेतीर्थकरे
 पूजाप्रकाशिछेआभरणोपमात्के० ॥अलकारनिउपमाछे
 वलीविप्रिसहितपूजाकरवीतेमादशत्रिकनानामक
 हेछे॥तिन्निनिसीहि॥तिन्नितिन्नियपयाहिणा ॥२॥ तिन्निचे
 वयपणामा॥३॥तीविहापूयायतहा॥४॥अवयतियजावणंचे
 वा॥५॥तिदिसिनिरखणविरइ॥६॥तिविहंभुमिपमज्जणचे
 वा॥७॥वन्नाइतिआ॥८॥मुहातीयचा॥९॥ तिविहचपणीहाणं
 ॥१०॥ पूजायात्रानेविपे पेहेलीनिसिहिके०॥ देहराने

वारणे घरनोवेपारत्यागकरीनेपेसे बीजीनिसिहिदेहरा
 नोवेपारकाजादिकनुकाढवुं तेनोनिपेव त्रिजीनीसीहीपू
 जानाव्यापारनोत्यागचैत्यवंदननी वेलाए ॥१॥ अंजली
 बंदोके०॥ हाथजोडवा॥१॥ अर्धअंगनमाववु॥२॥ पंचांगी
 प्रणामप्रणामत्रिका॥३॥ अणप्रदक्षणाप्रभुनेजमणेपासेथी
 ॥२॥ पुष्पादिकनेअंगपूजा ॥१॥ निवेदनेअंगपूजा ॥२॥
 चैत्यवंदनादिकभावपूजा ॥३॥ चोथोत्रिक ॥४॥ पींडस्थते
 छदमस्थावस्था॥१॥ पदस्थतेकेवलीअवस्था॥२॥ रूपाति
 ततेसिद्धावस्था ॥३॥ छदमस्थावस्थानात्रणजेद॥ बाल
 अवस्था॥१॥ राज्यअवस्था॥२॥ सामान्यचारीत्रअवस्था
 चवनकल्याणकमातानिकुक्षेत्रवतरे ॥ १ ॥ विजुंजन्मक
 ल्याणक॥२॥ त्रिजुंदिक्षाकल्याणक ॥३॥ चोथुंकेवलकल्या
 णक॥४॥ पांचमुनिर्वाणकल्याणक ॥५॥ जेदिवशेमातानी
 कुक्षे स्वर्गादिकथकिचविनेअवतरया तेजदिवशथकीवि
 शिष्टपूजनीकथया त्यांहांत्रणज्ञानसहितअवतरे ॥ त्यारे
 चोसठइंद्रमलीने अठाइमहोछवनंदिसरद्विपेजइने पूजा
 करे जन्मकल्याणकेतोविशिष्टपूजानी व्यवहारप्रवर्ते चो
 सठइंद्रमलीनेमेरुपर्वते एकक्रोडअनेसाठलाखकक्षसें ते
 वारजोजननेविस्तारे एकजोजननुंनालवु अढीसंवारअ
 जीशेककरे इत्यादिककारणथकिविशिष्टपूजनिकथया वा
 ह्यथकितोलीकिकप्रवर्ते अत्यंत निर्लेपचारीत्रनीप्रवृत्ति

होय त्रिभुवनमाकोइतिर्यंकरसरीखोनहोय ॥ जेलोगत
 माणं ॥ इत्यादिकस्तुतिलायकएहजपूरुपहोय एहपूर्णे
 तमनागुणकोणवर्णविशके तेकारणमाटेससारमांपूजनि
 कठे ॥ जेनिशेवानक्तिजन्माभिपेकादिके इंद्रादिककरे
 छे पोतानाआत्मानेउधरवानेवास्तेजाएवं तेजभावना
 ए सम्यग्दृष्टिजीवश्रीतिर्यंकरजगवंतनी प्रतिमानोअजि-
 पेककरतावाल्यावस्थाजावे घरेणुपेहेरावता राज्याव-
 स्थाजावे घरेणुउतारताचारीत्रावस्थाभावेछत्रचामरादि-
 कअष्टमहाप्रतिहार्यनीअपेक्षाएकैवल्यावस्थाभावेपर्यंका-
 सनकाउत्सर्गमुद्रानिअपेक्षाए सिद्धावस्थाजावे एपांचमु-
 त्रिक ॥५॥ श्रीतिर्यंकरजगवंतनेदेहेरे जात्राएजायत्यारे
 उचुनिचुंत्रिछूजोवूनहीं अथवापूठेजिमणीडाभि दिशे
 जोवुनहि एकजवितरागउपरदृष्टिथाय त्रिदशानिरखण
 विरतिरुपछठुत्रिक ॥ ६ ॥ प्रचुनेखमासणदेतात्रणवार-
 जोमिपूजवि ॥ एसातमुत्रिक ॥ ७ ॥ देववांदतांसूत्रनाअक्ष-
 रनुआलंबन ॥ १ ॥ अर्यालंबन ॥ २ ॥ वितरागनीप्रतिमा
 लंबन ॥ ३ ॥ वर्णादियालंबन ॥ ४ ॥ एआठमुत्रिक ॥ ८ ॥
 चैत्यवदनकरतायोगमुद्रा ॥ ९ ॥ उचारहिनेदेववांदतांजि-
 नमुद्रा ॥ १ ॥ जयविरायअर्धकेहेता ॥ निलाढेदेशेहाथकरीने
 मुक्तासुक्तिमुद्रा ॥ एनवमुत्रिक ॥ ९ ॥ जावंतीचइघाइं ॥ १ ॥
 जावतिकेविसाहू ॥ २ ॥ जयविराय ॥ ३ ॥ एत्रणनेप्रणीधान

कहिए एकाग्रहचित्ते प्रार्थना करे प्राणिधान एदृशमुत्रिका १०।
 वलीवार अधिकारे देववांद्वाते कहे छे ॥ नमुं ॥ १ ॥
 जे अइय ॥ २ ॥ अरीहं ॥ ३ ॥ लोगं ॥ ४ ॥ सव्व ॥ ५ ॥ पुखर
 ॥ ६ ॥ तमं ॥ ७ ॥ सिद्धा ॥ ८ ॥ जो देवा ॥ ९ ॥ उज्जिंज ॥ १० ॥ चत्तारि
 ॥ ११ ॥ वयावचग अधिकार ॥ १२ ॥ नमोथुणं ॥ इति
 प्रथम अधिकारे जावनिपेपोवाद्यो ॥ १ ॥ जे अइया सिद्धा
 विजे ॥ २ ॥ अरीहंत चैयाणं त्रिजे एकजीननी स्थापना ॥ ३ ॥
 लोग्गस्स उज्जोयगरे चोथो नाम जीना ॥ ४ ॥ सव्व लो ए अरीहं
 त चैयाणं ॥ पंचमे त्रिभुवनना चैत्यवांद्या ॥ ५ ॥ पूखवरदीवढे ॥
 छठे विहेरमानजिनवांद्या ॥ ६ ॥ तमतिमीरपडलसातमे
 सूज्ञाननेवांद्या ॥ ७ ॥ सिद्धाणवुद्धाण आठमे सिद्धनी स्तुति
 ॥ ८ ॥ जो देवाण विदेवो ॥ नवमे तिर्थद्विपमहावीर स्तुति ॥ ९ ॥
 उज्जितस्तुतिदशमे ॥ १० ॥ चत्तारी अठदशदोयवंडिया ॥
 श्रीअष्टापदनदेववांद्या अग्यारमे ॥ ११ ॥ वयावचगराणं ॥ स
 म्यक्कट्टिदेवताने स्मरणवारमे अधिकारे ॥ १२ ॥ एवार अधि
 कारे देववांद्वा ॥ अरीहंत भगवतनी प्रतिमानाध्यानुं आलं
 बनराखवुं ॥ एवार अधिकार ॥ परंपरागत चाल्या आवे
 छे जे मश्री आचारगसिद्धांत परंपरागत चाल्या आवे छे ते म
 नजाणवुं श्रीहरिन्द्रसुरिश्चरकृत नमोथुणानिटिकाललि
 तविस्तारनामे ते मध्ये नव अधिकार कह्या छे जे अइया जि
 न चैत्यानि प्रथा समा एकामगमादया सिद्धा एविजो अधि

कारा॥२॥ उजतसियलसिहरे ॥१०॥ चतारीअठदशदोय
वंटिया ॥११॥ एत्रणपरंपरागतजाणवि एटलेएद्वारअ
धिकारकह्या

वली श्रीतिर्थकरभगवंतनेदेहेरे चोरासीआसा
तनाटालवि तेग्रथातरथकीजाणवुं हवेमुलगजारिदश
आसातनाटालवि तेकहेंछे॥तजथा॥तबोल॥१॥पांणा॥२॥
जोयणा॥३॥वाहणा॥४॥मेदूणा॥५॥श्रुसुयणा॥६॥निद्वुवणं॥७॥
मुत्रु ॥८॥ चार ॥९॥ जुय ॥१०॥वज्जेजिणनाहजगइए
॥६१॥ तबोल पानसोपारी देहेरामध्ये खावुनहि
॥१॥ पाणीनपीवुं ॥२॥ भोजननकरवुं ॥३॥ पगर
खांपेरीनेदेहेरामध्येनजवू ॥४॥ देहेरामध्येमैथुननसेववु
॥५॥ देहेरामाहेसूवुनहिं ॥६॥ देहेरामाहेथुंकवू नहि ॥७॥
देहेरामाहेलघुनितकरवूनहिं ॥८॥ देहेरामाहेबडिनितकर
वूनहिं ॥९॥ देहेरामाहेजुगटूप्रमुखरमवूनहि ॥१०॥ एदस
जगनाथनीनित्येआशातनावर्जवी ॥१॥ इत्यादिकपूजानि
विधिकहिछे तेग्रथातरथकीजाणवि.

वलिइहाशिप्यबोल्हो श्रीतिर्थकरभगवंतनी प्रत
माकेवैआकारेछे ॥ १ ॥ केनिप्रतमाप्रतिष्ठीतवादवि पृ
जविघटित ॥ २ ॥ प्रतमानुंपरीमाणकेटलुंहोय ॥ ३ ॥
प्रतिमानाभरावनार देहेरानाकरनारकोणअधिकारीह
य एचारप्रश्न ॥ ४ ॥ हवेएचारनोउत्तरंकहेछे प्रतिम

बहुआकारेहोय एकपद्मासन ॥ १ ॥ विजिकाउसगमुद्रा
 ॥२॥ एवेहुआकारेजिनानिप्रतिमाहोय एजआकारेश्रीती
 र्थकरचगवंत सैलेसिंकरणेरुनीनेसकलजोगरुंधिकरिने
 मोक्षपधार्या एजस्वरुपनेध्यानमांहेध्यावानेकाजे भव्य
 जिवजिनप्रतिमाजरावे एसम्यक्दृष्टिनीकणिंछे वलिशि
 प्येपूछुजेद्विगंबरनेगछेतो जिनप्रतिमालिगसहितनग्न
 रावेछे॥१॥ स्वेतंवरगछेतोवज्रफछछोटोकदोरोआकाररुप
 प्रतिमाजरावेछेतेकेम तेनोउत्तरजेनग्नरुपप्रतिमाकरेछेतेने
 पूछिए जेतीर्थकरचारीत्रलेइनेनग्नपणेविचरता तेनेनग्नप
 णेलोकदेखताजोनग्नपणेदेखेतो श्रीतिर्थकरश्रतिशयरहि
 तथाय जोनग्नरहितपणेलोकदेखेतोसातिसयतिर्थकरजा
 णवा जेवूरुपलोकदेखे तेविजप्रतिमाजराववीघटेछे ज्या
 रेसाक्षात्तिर्थकरभगवंतहता त्यारेतोश्रपरलोकेनग्नदि
 ठानहोता तेहवेतोघरघरनेविषे नग्नपणेप्रतिमाजराववा
 मांडवी श्रनेलोकोनेदेखाडवूरुप तेश्रीतिर्थकरनिस्तुतिरु
 पज्ञासनुनथी श्रीतिर्थकरनिफजेतिरुपतथाहांशिसरिखु
 चासेछे वलीकोइककहेवालाग्योजेप्रतिमामांहेसपूर्णश्रव
 यवोजोइए तेनेकहिएजेएकलिगनुचिन्हकर्युएटलेसपूर्ण
 आव्यानहि विजाघणाश्रवयवश्रोछारेहेछेतेतोतिर्थकरच
 गवंतनिप्रतिमाकेहेवायछे तेथापनानिखेपोछे॥चतुर्थोमूढ
 दृष्टित्वांगुणाप्रसंसनवरंयत्स्थीरीणंपष्टो॥वाछल्यनक्तिरुप

ता तेमाहेश्रवयवञ्चावेनहि जेकोइआत्माअर्थिडाह्यो
होयतेविचारीजो जेइहामतनुकामनथिजेप्रतिमावज्जकछो
टासहितदेखेछे तेतोमांहाशिलवतनुचिन्हमहाप्रगटादिसे
छे तेकारणमाटेजेवज्जकछोटासहितजेप्रतिमा तेतोतिर्थक
रनिस्तुतिरुपभासेजोकोइडाह्योहोयतेइहांपणविचारीजो
जो एतोप्रवचनपरिक्षानैअनुसारेकह्युतत्वतोकेवलिंगम्य
जाणवुएप्रश्नोउत्तर॥१॥विजुप्रश्नजेकेनिप्रतिष्ठितवांदेवी
पूजवीघटे तेनोउत्तरजेकोइजतिवेपधारीप्रतिमाचरावे दे
हेरुंकरावेप्रतिष्ठाकरावे पोतानुद्रव्यखरचिनेकरावे तेप्र
तिमावांदविघटेनहि जेजतिनेविपेद्रव्यस्तवसर्वथानिपे
घछे श्रीमहानिशिथसूत्रमांहेविस्तारिनेकह्युंछे तेमा
टेनिपेधजद्यपिश्रीतिर्थकरनिप्रतिमा पूजनिकछे तोयप
एवेपपारीनिकरावी सप्तमस्त्वयमाचारो एमप्रभाव
नामय आचारथकिताअष्टौ सम्यक्तसेवनिर्मलाप्रतिमा
निपूजादिकनिश्रंज्ञा श्रीतिर्थकरजगवतआपेतोविजाप
णसाधुजाणेजेसाधुनेपणद्रव्यस्तवनोजोगछे तेसाधूपणुं
मुनीनेभ्रष्टथाय तेमाटेनिपेधकरयोछे गृहस्थनेसम्यक्तनु
कारणछे विजुस्वहस्तेप्रतिष्ठाकरीहोय तेप्रतिमानीत्रण
नोकारगणीनिधापीनेपूजादिकघटे तेकोइ ठेकाणेकरथु
सभवेछे जेद्विगवरनीभराविप्रतिमा पणश्रीरुपभदेवादि
कतिर्थकरनीयापनाछे तेकारणेसाधर्मिपणुंछे एमसर्वथा

पणोनिपेधकरेतो श्रीतिर्थकरजगवंतनी आसातनाथाय
 एकवेपधारीनिजरावी प्रतिमाजेहोय तेतोसर्वथावांदवि
 पूजवीनिपेधछे श्रीतिर्थकरजगवंतनी प्रतिमापूजनीक
 अन्यदर्शनीएगृहिहोय तेप्रतिमापण श्रीउपाशकदशां
 गादिकनेविपेनिपेधकहिछे वीजासर्वतिर्थकरजगवंतनी
 प्रतिमापूजनीककहिए वलीकोडकहेजेश्रावकनीप्रतिष्ठा
 करीकहिछे तेतोत्रणनोकारगणीनेपूजेवांदे तेपणप्रतिष्ठा
 कहिए कोडककारणेविशेषपणुंकरेछे तोपणइवरकालनी
 कहेवाय गुरुनेजोगेयावत्कालिकप्रतिष्ठाकरावे ॥ यंदु
 क्तं ॥ जंकिचिनामतिथं संगेपयालेमाणशेलोए ॥ जाइं
 जिनविंवाई॥ताइंसव्वाइंवदांमि॥१॥इत्यादिककहाथकी
 जाणवुं ॥ एविजोप्रश्नउत्तर ॥२॥ त्रिजुप्रश्नतेप्रतिमाके
 टलेप्रमाणेहोय॥तेनोउत्तर॥ एकआंगुलथकिमांडिनेपांच
 सेंधनुपप्रमाणे॥प्रतिमाभरावे जेवीपोतानशक्तिहोयतेवि
 जरावे इहांपोतानीकारणशक्तिजाणवी एत्रिजुंप्रश्न॥३॥
 हवेचोथुंप्रश्न॥तेकोणअधिकारीपूजवानेसारसंचालकरवा
 नेतेगृहस्तअधिकारीद्रव्यस्तवनाअधिकारीजाणवाएंचो
 थोप्रश्न॥४॥वलीशिष्येप्रश्नकरथुं श्रीतिर्थकरजगवंतनी
 प्रतिमावांदवीपूजवीयोग्या॥तेवेजआकारेप्रतिमावोधना
 देवनीदिशेछे एकजनोइनेफेरेकरीनेसर्वफेरजाणवो नाम
 नोभेश्रधानांजीनपूजायां समाचकेचपोषधे जोजनिया

जथाजोग्यमाचारासकलाश्रपिदछे जेतेसोगतादिकनामे
 साततिर्थंकरकहेछे विजोपणलिंगादिकनो भेदघणोछेते
 माटेपूजवाजोग्यनहीजोसाक्षाततिर्थंकरजगवंतनीप्रतिमा
 होय अनेअनदर्शनीयेगृहिहोयतोवादवी पूजवीनिपेधछे
 एतोसाक्षातअनदर्शनीनीप्रतिमाछे जेदजाणवानेकाजेज
 नोईकरीछे जेमहिंदूमुसलमाननेश्रोखवावानेकाजेडावा
 जमणाजामिवंधकरावेछे तेमइहापण जेदजाणवानेकाजे
 जनोइजाणवी तेमाटेजेननेबोधनीप्रतिमामानवीनहि.

श्रीतिर्थंकरजगवंतने देहेरेजात्रादिकजायत्यांपच
 अग्निगमनसाचवे ॥ यदुक्त ॥ सचितद्रव्यभूषण स
 चितपणुझाणमणोगतं ॥ एकसाडिउतरासणं ॥ अजली
 सिरीभिजिणदिठे ॥१॥ जेसचितवस्तुफूलफलादिकपोताने
 जोगववानेहोय तेनोत्यागकरवो जेसचितवस्तुनेअभय
 दानदेवानुंहोयतथाप्रभुनीभाकिनेकाजेलाव्याहोय तेनेत
 जवुनहिएप्रथमअभीगमन ॥१॥ अचितवस्तुआजर्णादिक
 सारवस्त्रादिकनेतजवुनहि ॥ एविजोअभिगमन ॥२॥ मण
 गतंके ॥ मननुंएकाग्रतापणुकरे ॥ एत्रिजोअभिगमन ॥३॥
 एगसाडिके ॥ एकपटनिपछेडीनुउतरासनकरे एचोथोअ
 भिगमन ॥४॥ अजलिके ॥ वेहुहाथजोडिनेमाथेचडावे
 प्रभुद्वेनराजुनेदिठथके एपांचमीअभीगमन ॥५॥ एपांच

गमनकहेछे एकखंडगतंरवार॥१॥छत्र ॥२॥ वाहनके० ॥
 पगन्निपावडी ॥३॥ सनडके० ॥ माथानोमुगट ॥४॥ चां
 मर॥५॥ एपंचचिन्हरांजानांमुकिनेप्रचुपासेआवे एत्रभि
 गमन॥६॥ साधुतथाश्रावकनेदिनप्रतेउत्कृष्टसातवारचै
 त्यवंदनकरवूंसम्यक्तनिर्मलनेकाजे तथापडिकमणे ॥१॥
 चैइय ॥२॥ भोयण ॥३॥ चरीम ॥४॥ पडिकमण॥५॥ सु
 यण ॥६॥ पडिवोहेचैइयवंदण साहूणसत्तवाराहोइअहो
 रत्त ॥१॥ प्रजातकालेविसाललोचनरुपचैत्यवंदनकरवूं
 एप्रथम ॥१॥ चैइयके० ॥ श्रीतिर्थकरभगवंतनेदेहरेजइ
 नेनित्येचैत्यवंदनकरवूं तेजोगवाईनहोयतोइशानखुणेश्री
 श्रीमंधरस्वामिनेसनमुखेचैत्यवंदनकरवूं ॥२॥ नोयणके०
 पचखाणपारतिवेलाएचैत्पवंदनकरिने सझायकरिनेपच
 खाणपालवूं पछेश्राहारजेवो ॥३॥ चरीमके० ॥ आहा
 रलेइनेपछेचैत्यवंदनकरिनेपाणीपीवूं ॥४॥ पडिकमणके०
 संध्यायेपडिकमणुकती तथानमोस्तुवर्द्धमांनाय एवेहुनुंए
 कपडिकमणानुंचैत्यवंदनगणवूं ॥५॥ सुयणके० ॥ पोरसी
 रात्रीनिवेलाए चउकसायकेहेवो एछठुंचैत्यवंदन ॥६॥ प
 डिवोहेके० ॥ पाछलीरात्रीएजागीनेकुसुमिणनोकाउत्स
 र्गकरिनेचैत्यवंदनजगचितामणिनुंकरवूं ॥७॥ एहचैत्ववं
 दन साहूणके० ॥ जतिनेसाधुनेअहोरात्रीमांहेकरवूं जेस
 म्यक्दृष्टिजिवश्रावकजघन्यत्रणकालेपूजाकरेत्रणकालेचै

त्यवदनकरे एकवारपडिकमणुकरेतेपंचाचारचैत्यवदनकरे
 रे जेबेटकपडिकमणुकरे तेनेसातवारचैत्यवदनथास्रएगृ
 हस्थितिनिविधि जेदेहरेचैत्यवदनकरवू तेपूरुपहोय तेप्रभु
 जिनेजमणिदिसेजर्मणिवाजुयेरहिनेचैत्यवदनकरे - स्त्री
 होयतेडाविवाजुएरहिनेचैत्यवदनकरे श्रीतिर्यंकरजगवंत
 नोमहामोटोप्रसादहोयतोपोतानासाठहाथवेगलारहिने
 चैत्यवदनकरेजेसाठहाथथफिश्रोछोनवहाथथकिअधिकते
 सर्वमध्यम अवग्रहमाहिजाणवू नानुदेहरुतथाघरनुदेह
 रुहोय त्याउतुकृष्णएकहाथ॥१॥ वेगलाजघन्यश्रद्धहा
 थवेगलारहिनेचैत्यवदनकरेजेखजमीवसदिठा विधिवत्प
 रसेश्वरे प्राज्ञोपधोपवासादेरासरणोपमात्युरएमअनेक
 विधिसहितश्रीदेवाधिदेवनिपूजाश्रावकनेकहिछे तजथा
 वरपुष्प-॥१॥ गंध ॥२॥ अरकय ॥३॥ पडवो ॥४॥
 फूल ॥५॥ धुव ॥६॥ निरपतेहै ॥७॥ नैवजबीहाणेहिय
 जिणपुयाअठहाभणिया ॥१॥ वरकउत्तमजातिनाफूल
 जाइजुइप्रमुखनाफुला॥१॥गंधके॥वरासकपूरप्रमुखा॥२॥
 अश्वयके॥अक्षतचोखा॥३॥पडवोके॥दिवो ॥४॥फलक
 के॥नालिएरप्रमुखा॥५॥अगरप्रमुखनोधुपा॥६॥निरप
 तिहके॥जलनाजरचाकलसेकरीनेपूजाकरे॥७॥नैव
 जविहाणेहियके॥नैवेद्यसुखडीप्रमुखेपूजाकरे॥८॥जि
 णपूजाअठहिजणीया एअष्टप्रकारीपूजा जीनके॥श्री

वितरागनीपूजाआठप्रकारे ज्ञानावर्णादिककर्मनेक्षयकरं
 वानेकाजेश्रावकएविजावनाकरे एमसत्तरजेदेसंजमआ
 राधवानेऽर्थे सत्तरजेदिपूजाकरे॥ तंजथा॥ नवणं॥१॥ वि
 लेपणं॥२॥ चखुजुअलंचा॥३॥ पूफारोहणं॥४॥मालारोह
 णं॥५॥ वण्यारोहणं॥६॥ चूणारोहणं॥७॥ जिणपूगवाणं
 पूरस्ताधजप्रगटनमित्याध्याहार्यं॥८॥ आहारणारोहणं॥
 ९॥ पूप्फगेहं॥१०॥पूप्फपगरो॥११॥ आर्तिमंगलपडवो॥
 दिवो॥१२॥ धुवरकेवानेवज्फलविहाणं॥ ढोवणयं॥१४॥
 गीयं॥१५॥नटां॥१६॥वजा॥१७॥पुयाभयाइमेसेना॥२३॥प्रथमपू
 जानवणकजलेकरिनेअनीपेककरवो॥१॥विलेवणअगमि
 के॥अंगनेविपेकेसरचंदनेपूजाकरे एविजोनेद॥२॥चखू
 जुअलंके॥त्रिजीपूजाचक्षुनितथाअंगलूणा३॥त्रिजोभेदा३॥
 चोथोवासपूजा॥४॥ पूफारोहणंके॥ वर्णकहणंके॥ छूटां
 फुलनिआरोहणंके॥ चढाववंपूजवूं॥५॥मालारोहणंके॥
 फुलनीमालानीपूजा॥६॥ वणियारोहणंके॥ वर्णके॥
 पंचवर्णअंगीनीपूजा॥७॥ चूणारोहणंके॥वरासादिकनि
 पूजा॥८॥ जिणपूगवाणं॥ श्रीतीर्थंकरजगवंतनेआगलद्व
 जनिपूजानवमि॥९॥ आहारणीरोहणंके॥ आचर्णनीपू
 जामूगटप्रमुखनुचढाववूं॥३॥ पूप्फगेहेके॥ फुलनुंघरा॥
 ११॥पूप्फपगरोहके॥ फुलनोप्रकारसमूहजेमश्रीतीर्थंक
 रनासमोवसरणनेविये॥ देवतापंचवर्णफुलनोवरसातवर

सावेतेमजइहांपचवर्णफुलनावर्पातनिपूजा॥१२॥आर्त्तिम
 गलपइवोके०॥ आर्त्तिउतारविमगलप्रदिपमंगलदिवो॥
 तथामगलके०॥ अष्टमगलीकनिरवस्तिके०॥१॥ दर्पण
 ॥२॥ कुंभा॥३॥ चद्रासन॥४॥ नंदावर्त्ता॥५॥ श्रीवछा॥६॥ व
 र्द्धमाना॥७॥ मठयूग्मा॥८॥ एतेरभिपूजा॥९२॥ धुवरकेवा
 नेवजफलविहाणढोयएव्यके०॥ अग्रप्रमुखनोधूपनैवेद्यं
 सुखडीप्रमुखनुचढाववांफलनालियेरप्रमुखनुचढाववां ए
 चौदमीपूजा॥१४॥ गितके०॥ स्तवना॥१५॥ नटके०॥ नाट
 कपूजा१६॥ वजके०॥ वाजित्रपूजा॥१७॥ पूयाज्ञेयाइज्ञे
 सत्तरा॥ एसत्तरभेदिपूजाकरवी तसत्तरज्ञेदसजमपालवा
 निचावनाकरवी इत्यादिकअनेकप्रकारेसम्यग्दृष्टिश्चाव
 कनुसम्यक्तनिर्मलकरेएश्चावकनेभेखजसरखीश्रीवितरा
 गनिपूजाकरवी एसम्यक्तनुंलक्षणव्यवहारनयनीअपेक्षा
 येजाणवू साधुनेश्रीतीर्थकरदेवनिआज्ञाएनित्येदर्शनकर
 वूचैत्यवंदनकरवू श्रद्धानाप्रथमपूजाज्ञेखज मिवसदिठा
 एंएलेएबिरीतेदेवतत्वनिपरीक्षाकरिनेदेवतत्वसदहे॥ इति
 प्रथमतत्वा॥१॥ इतिश्रीसम्यक्तद्वारग्रंथोमुनिश्रीहूकमचद
 जीविरचितेचतुर्थोऽध्यायपरीपूर्णम्॥४॥
 हवेगुरुतत्वओलखावेछे गुरुके०॥ साधुतेसाधुछठे
 तथासातमेगुणठाणेहोय निश्चेतथाव्यवहारथकिहोय ते
 नेसाधुकरिसदहवू एछठेतथासातमेगुणठाणेहोय तेसाधु

नेनुस्वरुपदेखाडेछे हवेछठुंगुणठाणुप्रमतनामा तथासात
 मुगुणठाणु अप्रमतनामे एवेनुस्वरुपजेगुं देखाडेछे जे
 प्रत्याखाननिचोकडीनीउदयटल्यो सर्वविरतिप्रगटिस
 मसाधनमाटेपुदगलिकलेवे अवंलंबिपणेग्रहे पणपुद
 लनेजोगीपणेपुदगलीकग्रहेनहीं स्वरुपरमणिआत्मध
 थिरतारुप - सर्वाविजावपरं अग्राहकतारुप एवोचारी
 धर्मप्रगट्योछे तेसाधुउछरंगअपवादमार्गे पंचमहात्र
 पाले त्यांद्रव्यजावपंचमहात्रतसहित पांचसुमति तिन
 सि दशयतिधर्मनेपात्रथकानिरासीसएकआत्मद्रव्यंना
 सिया एकआत्मानिर्मलकरवाना उद्यमिथकाविचरे ते
 ममहात्रतपाले त्यापेहेलुमहात्रत सवाओपाणाएवा
 ओविरमण व्यवहारेछकायनाजिवनाद्रव्यप्राणा॥१०॥ह
 हीहणावेनहीहणतांअनुमोदेनहीमनवचनकायाएकरी
 निग्रंथअनोनिश्चयथीज्ञानदर्शनचारीत्रसुखप्रमुखजाव
 णपोतानापरना कर्मआवर्णपणेहणेनहिहणावेनहिहण
 मुखअनुमोदेनहिं तथाविजेमहात्रतेसवाओमुसावाया
 विरमणा॥द्रव्यतेक्रोधे॥माने॥ भये॥लोभेसूक्ष्मवादर॥
 किकतथालोकोत्तर जुठुपोतेबोलेनहिं बोलावेत्तहिं बो
 अनुमोदेनहिं मनवचनकायाएकरिनेजावथिसर्वद्रव्य
 यि नयनिक्षेपायथार्थजाणपणो सत्यजापणरुपज्ञान
 शक्तिसाधेज्ञानसत्यपणेपालेतथावितरांगनाआगमेप्र

श्रीसम्यक्द्वार

माणे ऽर्थजावेछे तेनिसझायकरेततथापोतना ज्ञानदर्श
 नचारीत्रनिर्मलथाय तेभापावोले हवेत्रिजामहाव्रतसबा
 ओअदत्तादाणाओविरमणं जेद्रव्यत्रिणतुठमात्रपणअण
 दिधोलेवेनहि लेवरावेनहिं लेताप्रतेअनुमोटेनहिं जेले
 वेनेसर्वनेकहीकरीनेलेवे एटलेमनवचनकाएकरीनेलोकि
 कचोरीजेसमारनिवर्जिवस्तचोरीलेवेनहिं अनेलोकोत्तर
 चोरीजेतिर्थकरआणामे जेमलेवानुकह्युतेलेवे तेचोरीकरी
 नेभावधिआत्मानिग्राहकताशक्ति तेंस्वरुपगृहणकार्यनो
 कर्ताछे तेप्रभावसाहकताकरीरह्योछेएनिवारीस्वरुपग्राह
 कतापणेप्रणामावे तेअदत्तादानविरमणव्रततथयू तेअदत्ता
 दाननाच्यारजेदछे तिर्थकरअदत्तजेतिर्थकरनिआणामांन
 लेवोकह्यो तेसर्वप्रभावतेलेवाछे विजोगुरुअदत्तजेगुरुप
 रपराविनासुत्रनाऽर्थकहेवा त्रिजोस्वामिअदत्त जेवस्तुनो
 जेधणिहोवे तेनीअणदिधिजेवस्तुलेवि चोथुअदत्ततेको
 ईजिवएमकहेतोनथी जेमाहाराप्राणहणी अनेपोतानि
 इद्रिनास्वादमाटेपरजिवनाप्राणहणेतेजिवअदत्त तथाप्र
 शस्तकामकरताकोइजिवनाप्राणघातथाय तेषीभगवते
 हिंशाभागणानथिविनयतयावियावचमागण्युंछेएद्रव्यजा
 वअदत्तादानत्रिविधिपणेतजे२।चोथोमहाव्रतसबाओमि
 ड्ढुणाओविरमणजेद्रव्यथि पांचईद्रियना॥२३॥त्रेविसविष
 यसेवेनहिसेवरावेनहिं .मनवचनकायाएकरीने विषयनि

वांछानकरे नकरावेकर्तानि अनुमोदेनहि तेजावथिजेआ
 त्मद्रव्यआत्मगुणानोन्नोगीछे तेपरजावनोन्नोगग्रहे तेजा
 वमैथुनतेसर्वपरजावन्नोगिपणेन्नोगवेनहितेआत्मनिकक
 मकरवामाटेपरभावसाधनपणेगृहेपणअन्नोगीअग्राहकप
 णेअरमणिकमाने जेआत्मान्नीभुलछे एमआत्मानंदतोथ
 कोजेमाहरोआत्मा चिदानंदनोन्नोगीतेपरजाव अनंतजी
 वेअनंतिवारतेलेइभोगव्यो तेमुनेगृहवोभोगववोघटेनहिं
 एअनंतजीवे अनंतवारभोगविनेछांडयो एएठुचलुंजलते
 हनेहूनन्नोगवं एमसर्वपरजावन्नोगिपणेतजी स्वभावभो
 कापणेरहेवु तेद्रव्यमैथुन तेकार्णिरुपतथारुपिपंध मि
 ल्याजीवनेआणंदउपजे हवेक्षेत्रथीमैथुनतेत्रणलोकनेवि
 षे इंद्रिनास्वादनिइछा नेकालथीमैथुन दिवसतथारात्री
 जावथी मैथुनरागथीतथाद्वेषथी सरवथिशेववोनहिं ते
 नीवाडनवेपालविपेहेलीवाडेजेस्थानकेस्त्रिपशुपंडकरहेते
 स्थानके ब्रह्मचार्यसुवुंनहिं विजीवाडेस्त्रीसाथेहासितथा
 कामकृथाकरवीनहिं ॥२॥ त्रिजीवाडेजेपीठपाटलेस्त्रीवेठी
 होय तेपाटलेवेघडीलगीब्रह्मचारीपूरुपनेवेसवुनहिस्त्रिने
 तिनप्रहरलगीवेसवुनहिं ॥३॥ चौथिवाडेस्त्रिनारुपनीजरंजो
 डिनेजोइरहेवुंनहिं ॥४॥ पांचमीवाडेज्यांस्त्रीजरथारकाम
 भोगभोगवताहोयत्यांनेतनेआतरेब्रह्मचार्यनेरातरहेवुनहिं
 तेशब्दकानेपडवादेवानहिं ॥५॥ छठीवाडेगृहस्थपणेजेन्नो

गन्नोगव्यातेसभारवानहिं ॥६॥ सातमिवाडेसारोआहार
 जेथकीकामदोपेतेआहारकरवोनहिं ॥७॥ आठमीवाडेअ
 तिमात्रायेआहारकरवोनहिं ॥८॥ नवमीवाडेशरीरशाणगार
 लुगडानोतथाघरेणानोकरवोनहिं 'आनउगटणानकरवा
 एकलीखीसाथेमारगमाचालवूनहिं तथानानूंवालकवा
 लिकाथीएकसज्याएसुवूनहिं सातवर्षपछी ॥९॥ हवेपांच
 मुमहाव्रतसव्वाओपरीगहाओविरमणाजेद्रव्यथीपरीग्रह
 सूक्ष्मधादरराखेनहिं ॥ राखेनहिं ॥ राखेतेनेश्रनुमोटेनहि
 जेसंजमपालवामाटे सुखेसझायथायतेमाटेउपगरणचउ
 टा ॥१४॥ राखेकारणेअधिकोजोइए तोगृहस्थनाथकावा
 वरे एथीवरकल्पनीव्यवहारछे नेजिनकल्पकोईउपगस
 णनराखे अपवादेदशउपगणराखे बारकखायउदयत
 ल्या तेनेछठेगुणठाणेसाधूकहिए पणप्रमादसेवे ॥ निद्र
 ॥१॥ विकथा ॥२॥ आहार ॥३॥ अल्पविषय ॥१॥ अनादिव
 ॥२॥ एअल्पसेवे ॥ अनाभोगजाणे ॥ भोगीपणेसेवेनहिं ॥
 छठागुणठाणानीस्थिति ॥६॥ जघन्यएकसमय उत्कृ
 अतरमूहूर्त एगुणठाणेतिनचारीत्रछे समायक छेदोपस्
 पनीया ॥ परिहारविशुद्धएतीनचारीत्रछे तेनोस्वरूप परभ
 त्यागेस्वरूप एकलतेचारीत्रकहिए तेमध्येजेतजवायोग
 नावतजेतेद्वैपविनाअनेरत्नत्रयीजेआत्माधर्म तेगृहेस्व
 मंमाटे पणलोकिकादिकइष्टतारागविना एवोसमप

णामतेसमायककहिए तथाजेसमायकमध्येसंजना तिब्रो
 दयेजेआकरेअतिचारे अथवा १२ कखायनेउदयेसंजमप
 रीणामफरसे तेपूर्वपर्यायेछेदिने अभिनवपर्यायनिर्मल
 पर्यायनोअंगीकारकरवो तेछेढोपस्थापनिकहिए तेभरत
 ॥ तथा ॥ ५॥ एवरत ॥ ५ ॥ मध्ये प्रथम चर्मतिर्थकरना
 साधुजीनेहोय ॥ अथवातिर्थकरअथवा गणधरंजी
 नाशिष्य नवपूर्वधिउपरांत श्रुतवंत ॥ मध्यमवयना ॥
 प्रथमसंघयणी अठारमासनोउग्रतपतपता अप्रमादिनि
 द्रारहितनवंजणागच्छथकीवाहेरनीकलीनेतपकरेतेपरीहा
 रविगूढचारीत्रकहिये दसमेगुणठाणे शूकध्यानीसूक्ष्म
 लोचनोउदयछे तेसूक्ष्मसंपरायचारीत्रकहिए तथासर्वथा
 कखायनोउदयनथितेयथारूयातचारीत्रकहियेतेमधे १२ मे
 गुणठाणे उपसंतयथारूयातछे ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ मेगुणठा
 णेक्षायकयथारूयातछे हवेसांतमुअप्रमतगुणठाणु लि
 खीएछेछठेगुणठाणेजेजावसाधुजीनाकह्यातेसर्वेहोय पण
 पांचप्रमादनहोय तेमाटेअप्रमादिकएछठेगुणठाणेवर्ततो
 साधुजिनसासननेकामेलब्धीफोरवेपणसातमेगुणठाणेव
 र्ततोसाधुलब्धीनफोरवे एहनिस्थितिजघन्यएकसमे उत
 कृष्टेअतरमूहर्तनिछे छठेतथासातमेगुणठाणेमलिनेदेशे
 उणापूर्वकोडिरहे श्रीजगवतिसूत्रे एवेगुणठाणानिदेशेउ
 णिपूर्वकोडिस्थितिजुदि२कहिछे तेव्यवहारनयछे समयत

थावेसमयवचेगुणठाणूपलटे तेगवेरूयोनयितेमाटेअंतर
 मूहूर्तनिस्थितिकहि छठेसातमेगुणठाणे समायकतथाछे
 दोपस्थापन तथापरीहारविशुद्धचारीत्रछेतथासातमेगुण
 ठाणेसाधुजीलब्धीफोरवेनहि अनेछठागुणठाणानासाधु
 जिनसामननेकाजे लब्धीफोरवेतेनुसाधुपणुजायनहि अने
 उसस्थादिकपाचप्रकारसेवेतोसाधुपणुजाए केमतोकेश्री
 आचारगादिकमध्येकह्युछे जेहेसाधुतुंपासस्थादिकनोसं
 गकरीशनहि एनिसाथेश्रेष्ठाचारपणकरवोनहि तथासंस
 र्गकरवोनहि तथातेनिसाथेगोचरीतथाविहारपणकरवोन
 हि एटलेसर्वथाप्रकारे एनिसंगतकरवीनहि तथासंबोधशि
 त्रिमवेआवशकनिर्युक्तीमधे उक्तच॥उसथा ॥१॥ पासथा
 ॥२॥कुसेलिया॥३॥कुलिगीया॥४॥सेसदा॥५॥ जिनमार्गे
 अवंदाणिजा॥१॥ एटलेएगाथामधेजिनसासननेविपेवादवा
 पूजवायोग्यनहि तथाश्रीउपदेशमालानेविपेकह्युछेजेएह
 नेवादेतोसमकितनोनाशथाय मिथ्यात्वलागे एटलेउस
 स्थादिकपाचप्रकारनाहोयतेहनेसाधुकरिनेसदहवृजहित
 थावादवापूजवानहित्यारेशिष्येप्रश्नकरयुं जेस्वामिश्रम
 नेउमस्थादिकपाचनेदजेकहातेअमेजाणतानथि तेश्रोत्र
 स्वावोतेश्रोत्रस्वावेछेहवेप्रथमउसस्थानोनेदकहेछेजेश्रीति
 र्थकरदेवे नवकल्पिवीहारकह्योछे तेआठमासनाआठवि
 हार चतुर्मासानोएकविहार एटलेत्रीसरात्रउपर एकत्रि

समिरात्ररहेतेनेउसथ्योकहिए तेवारेवलिशिष्यबोल्योहे
 स्वामितमेतोत्रिसउपर एकत्रिसमिरातरहेतेनेउसत्छो
 कहिबोलाबोछो त्यारिकदापिकोइंग्लानतथा थीवरहोय
 तेवारे तेहथकि विहारकेमकरीनेयाय तेनोउत्तरदेछे हे
 शिष्यश्रीअरीहंतप्रमात्मासर्वज्ञहतातोनिपरुपणामां को
 इवातनोसदेहरहेनहिं सर्वनोमार्गदेखाडयोछे एटलेजे
 ग्लानतथाथिवरहोयनेविहारकरवानिसक्तिहोयनहीजद
 पि एकनगरमधेनवउपासराहोय तेमासे २ उपासरेउ
 पासरेफरे॥एटलेपेहेलोउपासरेउतर्याहोयत्यांहांमासा॥१॥
 मासकल्पपरहेउपरांतरहेनहि विजेमासकल्पेविजेउपाश्रे
 रहे एमअनुक्रमे आठमासकल्प आठमाउपाश्रेकरे
 अनेनवमोकल्पचारमासनोनवमेउपाश्रेकरे ॥ एमनवक
 ल्पीविहारसदायेकरे पणकल्पलोपेनहिं तथाएटलीश
 क्तिजोनहोयजेगाममध्येफरवुंतेपणथायनहिंतोएकउपाश्रे
 नानवजागकल्पे एकेकेकल्पेएकेकोजागजोगवे एमनव
 भागवकल्पेकरीनेजोगवे जेमअरणकाआचारजनोअ
 धिकार संथारापयन्नामध्येकह्योछे तेमइहांजांणवूं एटले
 कल्पलोपेनहि जेकल्पलोपेतेनेउसथ्योकहिए ॥एषेहेलो
 भेदा॥१॥हवेबीजोपासस्थानोनेददेखाडेछे॥पासथ्योके०॥
 जेआचारेढीलो॥जेपांचसुमतित्रणगुपति इत्यादिकअने
 कप्रकारनोआचारछेतेथकीढीलोचालेतेनेपासथ्योकहिए

॥केम॥श्रीज्ञातासूत्रमध्ये विजास्कंधनेविषे श्रीपार्श्वना
थजीनीचेलीयोविषे हाथप्रादकुक्षादिकपखाल्या त्थकी
पासस्थिकहेवाणीअनेचारीत्रविराधीनेभुवनपतिआदीग
तिनेविषेगइ कालिदेविप्रमुखइद्राणीयोथइ तथाश्रीमहा
निशियमध्येनागिलनेसोमिलनाभावमित्रछे एकदिनने
मित्रेविचारकर्योजेससारमहाअनित्यछे भाटेआपणेचा
रीत्रअगीकारकरीनेआपणाआत्मानुकल्याणकरीए एवं
विचारीनेवेजणाधरथकिनिकल्या साधुनिघणीखपकरेप
एसास्रप्रमाणेसाधुकोइहइएवेसेनहि एमकरतांएकसा
धूनोसंघाडोमल्योतेसाधुकेवाछे ॥ निराखंवी॥निरपरीगृ
हि॥विषयकखायेकरीनेरहित महासुमतानासमुद्र इत्या
दिकगूणेकरीनेसहित ॥ तेनीसगतेकेटलाएकदिनरहिने
तेनोआचारविचारसर्वजोयो तेवारेसोमिलरहिनेनागिल
प्रत्येकहेछे जेहेभाईआसाधुठीरुछे आपणेएनीपासेचा
रीत्रलइये तेवारेनागिलबोल्थोजेएसाधुवादवापूजवाज
ग्यतथी तोएनिपासेचारीत्रकेमलेइये ॥ तेवारेसोमलबो
ल्यो जेएवासाधुनीग्रंथछे एनेविषेएवढोवधोदोषणकेम
काढोछोतेवारेनागिलबोल्थो॥जेएनापचेमहाव्रतभागेल
छेजेयेहेलुव्रतहरीकायनासगटाधिभाग्युतेनुंकहचुंत्यारेन
पाडी॥२॥ त्रिजुडकपढायकिराखनीचपटीलिधी॥३॥ चं
थूगृहस्त्रिनाघरनोखालमध्येजोयु॥४॥ पांचमेचेमुहपतिर

खेछे ॥५॥ एबिरीतेवृत्तपांचजाग्यांछे तेवारेसोमजेमां-युंन
 हि चारीत्रएसाधूपसेलीधूं अनेनागीलनेसाधूनीजोम.
 वाइमलीनहि अनेकालपोतानों नजिकआव्योजाणीने
 एकांतेजइनेसंथारोकस्योतेकालतेसमयनेविपे जगवत
 श्रीमहाविरस्वामि ^{नमः १५-१६} गामाणुंगामविहारकरतांत्यांनजीकव
 नछेतेनेविषेसमांसरया तेवारेजगवंतसाधूनेकहेछे हेसाधु
 इहांवतनेविपेनागिलनामाश्रावकेसंथारोकस्योछे एनेचा
 रीत्रलेवुंहतुपणसाधूनीजोगवाइमलीनहि नेकालनजीक
 आव्योजाणीनेसथारोकस्योछे माटेतमेजइनेनिजमणाक
 रावोपछिसाधूयेजइनेनिजमणाकरावितेश्रावककालकरीने
 देवलोकेगयोतोहवेडाह्याहोयतोविचारीजोजो जेएवांसा
 धुनिग्रथहता तेनेसूक्ष्मदोपणमाटेनिपेध्याअनेश्रावकनो
 संथारोजगवंतेगणतिमांआण्योमाटेएवुंविचारीनेपासस्था
 नोंसंगकरवोनहि एबिजोचेद ॥२॥ हवेत्रिजोकुसेलियो
 कुसेलियोके०॥ सिलनामजेआचारकुके०॥ माठोहि
 णाचारी तेनेकुसिलकहिए एटलेभगवंतेपरुप्यो जेश्रा
 चार तेथकीवीप्रीततेनेहिणाचारीकहिएएटलेजगवानेजे
 साधुनोआचारपरुप्योछे जेसाधुगृहस्थिनि संगतिकरेन
 हिं तथामंत्रजंत्रजोतिष्यवैद्यकादिककरेनहिं करतेनेपा
 पश्रमणकरीनेबोलाव्याछे गृहस्थियादिकनि संगतव
 जितोविजुतेशुंकहेवुं एटलेजगवंतेतौनापाडिछेनेपोतेएवां

कामकरेजायद्ये तेनेकुसेलियोकहिए एत्रिजोनेद ॥३॥
हवेचोयोनेदकुलीर्गाफानोकहेछे एटलेकुलिगीयातेके०॥
भगवंतनोपरुप्योजेलिंगतेथकिविप्रीत तेनेकुलिगीयाक
हिए एटलेजगवतेजेपरुप्युं जेनरगेजानधोयेजा एवोपा
ठछे अनेजेमिणगलिप्रमुखेजेकपडारंगेछे तथामुखेमुहप
तिबांधेछे तेमहाविदपदिशेछे अनेजानवरकरतापणअव
लीरीतदीसेछे जेघोडातिर्जचपचेद्रिछे तेनेखातांतोवरोच
डेछेनेपछिउतरेछे अनेजेदुर्बूद्धिछेतेनेखातांउतरेछे पछिच
देछे एविअवलिचालछे तेनेकुलिगीयाकहिएतेवारेवादि
बोल्थोजेएतोतमेद्वेपेकरीनेबोलोछो अनेएतोमुखेमुहपति
बांधेछे तेवायुक्रायानहणाय तेवास्तेवाधिराखेछे तेनोउ
त्तरजेतमेद्वेपयकिकोछोपणसाधुनेरागद्वेपहोयनहींजद्यमि
आजसरागसंजमछे वितरागसंजमठेनहि अनेसरागस
जमछे तेनेविपेप्रशस्थरागद्वेपथाय तेआवकनेतोअप्र
स्थरागद्वेप्रनिआलवणकिविछे पणप्रशस्थनिआलव
किधीनयी एवंआवकोनाप्रतिक्रमणमधेदिसेछे अनेसा
तेअप्रमादिगुणस्थानकनेविपेतोरागद्वेपकरेनहीं अने
मादिमुण्ठाणप्रशस्थरागद्वेपकरेतेइरीयावइ पडिकमे
वारणयवानूछे तेअजगवतीमध्येजोजोनेइहांतोजथा
रुपणाकरवि तेमांकाइरागद्वेपनुकारणनथिजेमश्रीज्ञ
जिमध्यनागिलात्राह्मणीनि अपहेरणा उदघोपणाव

बितेमां इरीयावईनिआलवणआविनहितो इहांतोएक
 साधुनेकडवुतंबुंडोहराविनेमारयोहतो तेनोपणएटलो
 फजेतोकरयो तोआतोदूर्बद्धिपणें संख्याताजिवने धर्मथ
 किभ्रष्टकरीनेमिध्यात्वनेविपेपमाडेछेंतेअनंताजवभ्रमएक
 रशे तेमाटेजेवुंस्वरुपहोयएवुंवर्णविणतो विजालोककोड
 कुमत्तमांपडेनहिं नेपड्याहोयतेपणसुलजबोधिहोयं ते
 सतसांभलीने पाछावले माटेजथारथपरुपणाकर्ता को
 इदोपणछेनहि जेदूर्लज बोधिहसे तेनेतोरगद्वेपुंजभा
 सशे हवेजेउघाडा मुखेबोलतां वायुकायाजिव हणायते
 कहेछे. शामाटेजेवायु कायाजीवने आठफरसछे अनेभा
 पावर्गणाना फरसच्यारछे माटेकांइच्यार फरसीयाथी
 आठफरसीयो हणायनहिं किलामणाउपजेपण हणाय
 नहिं त्यारेवादिबोल्यो जेजगवतीमांकह्युंछेजेउघाडेमोटे
 बोलेतेनेसावद्यभापाकहिएतेनोउत्तरजेअमेक्यांकहीयेछे
 जेउघाडेमोटेबोलवुंपणहणावानुंकोछोतेखोटुंछेतथाजेमुहप
 तिवांधिराखेछेतेकियासूत्रमांकहयुंछेश्रीआचारंगजीमधे
 तोकह्युंछेजेहेसाधुवगासुआवेतथाछिकआवेतोमोढाआडो
 हाथदेजेतेलेखेपणमुहपतिवांधविसंभवतिनथीतथाश्रीविपा
 कसूत्रमधेश्रीपूज्यगाँतमस्वामिमहाराजमृगालोढोनेजो
 वानेगयात्यांमृगावतीराणीएकह्युंजेमुखेचोपडोवांधोतेवा
 रेजोमुखेमुहपतिवांधिहोततोशावास्तेकहेत त्यारेवादिबो

ल्यो दूर्गधश्चावेतेवास्तेनाकेदेवावास्तेकहञ्चं त्यारितेनोड
 तरदेछे जेविपाकजिमधेतोनाकबोलतुंनथीमुखजत्रोलेछे
 तमेखोटिजुक्तिशावास्तेकरोछो कोइकहेशेजेफलाणानुंमु
 खतोगोलछेमोढुतेहोठनेकहिए तेकपालमुधीकहिए तोहो
 ठनोआकारजोइएतोलाबोहोय पणगोलहोयनहि ज्यारे
 कपालसुधीले त्यारेमोढुगोलवने॥ तेमाटेमुखेचोपडानुं
 कहु त्यारेनाकजेगुआव्यु॥ तथापरंपरापणएमजदीसे
 छेजेमूहपतिमुखआडिदेतेवारेनाकउपरचढावेएवंआजदि
 नसुधिदिसेछेतो खोटीकल्पना शावास्तेकरोछो॥ वली
 जे साधुनुजिगछे तेजुदुछे॥ तेदेखाडिएछे॥ एटलेजेओ
 घोबत्रिसआगुलनोराखे॥ तेमधेचोवीसआगलनीढांडी॥
 दशआगुलनीदशीअनेअष्टमंगलआलेख्यो॥ एवोवना
 तनोपाटो तेथकिगुथी दशीतेप्रमाणेवत्त्रनोखंडते श्रीनि
 शिथनिभाष्यमद्वेकह्युछे तेउपरकावलियू॥ तेउपरदोरो॥
 दोरानात्रणआटावाधवा एवोबत्रिसआगुलनोओघोअने
 मुखप्रमाणेमुहपतिपोतानी एकैवतछआगुलप्रमाणेचोखं
 णेसरखी एविमूहपतितथाडिचणप्रमाणेचोलपटो तेउप
 रसूतरनोकदोरो॥ तेउपरकपडो जेवोदातारेदीधोहोयते
 वो जेतेनेरंगवोनहिं तथाथोवोपणनहितेनाउपरढाभेखने
 कांबलि नेडाजेहाथेढडो तथाडावाहाथेझोलिराखवि
 त्यादिकमानुपेतजोलिंग तेसाधुनुकहिएतेथकिविप्रीतते

लिंगीया कहिएते कुलिंगीया जाणीने एथकि खेटेरे हवूंकदा
 पिकुलींगीया नेसाधुजाणी आहार पाणी आपेतो एकांतपा
 पकर्म बांधे एवं श्रीजगवतिना आठमासतके कह्युछे एअ
 धिकारचो सोसमाप्तं ॥४॥ हवेपांचमोसेसदोदेखाडेछे एटले
 सेसदोके ॥ जहांजेवोतांहांतेवोथायके ॥ साधुमलेतांहा
 साधुजेवोथाय नेपासथादीकमलेतांहातेवोथाय तथाआ
 हाछंदोके ॥ स्वइछाचारीजेभगवाननिआज्ञाप्रमाणेनचा
 लेकेमजेभगवतेकह्युजे साधुनिमित्ततथासाधविनिमित्तक
 रीविहितिके ॥ उपाश्रेयतथाआहारतथावस्त्रपात्र अथवा
 उपदेशीनेजेकह्युहोयतेसाधुनेखपलागेनहि एविजेभगवं
 तनिआज्ञालोपिने पोतानीइछाएचाले पोतानीइछाएउ
 पाश्रेयप्रमुखकराविनेभोगवे ॥ तेस्वइछाचारीजाणीएइ
 त्यादिकअनेकचेदडाह्याहोयतेसमजे एपांचमोचेद ॥५॥
 एउसथ्यादिकपांचचेदजेकह्या तेवांदवापूजवायोग्यनहि
 तारेअजाणरहिनेबोल्यो जेरोजसाधुकयांथकिलावियेअ
 मनेतोधर्मशास्त्रनासंभलावनाराएजछे ॥ तेनोउत्तर ॥ ए
 नुंसंजलावेलुंशास्त्रपणखपलागेनहि अनेउसत्छादिकने
 वांदतांपूजतांमोक्षपणमलेनहि जेमकोइकबालकनीमा
 तामरीगइ अग्रपरदेशगइ नेबालकनेहीजडानेसुंपे ते
 हीजडानेधावणआवे तेबालकजीवतोरहे कदापिनहिपण
 बालकनिमातामलेतोजिवतोरहे केदुधादिकपायतो जि

तोरहे तेमइहांउपनयमेलवेछे जेवालकप्रायससारी
 व अनेमातातेमइहांसुद्धसाधु त्यांहीजडोतेमइहांउस
 ादिकसाधु ॥ जेमदुध ॥ तेमइहाधर्म ॥ जेवालकनेही
 ानेधवरावेजीवतुरहेनहि तेमइहाउसत्छादिकपासेध
 ानल्याथकिमुक्तिमलेनहि वलिजोतमेकहयुंजे साधु
 ागवाइक्याथकिअमनेमले ॥ तेनोउत्तर ॥ साधुनीजो
 ाइचोथेअरेपणघण्टिदुर्लभहतितेपासथानाअधिका
 धेनागिलनाअधिकारमांकहिछे त्याहांथकिजाणजो
 ापोतढाकालेपणसाधुनि जोगवाइघणीमुश्कलहति
 श्रुसाधुपणतढाकालेघणादिसेछे तेमाटेरत्नसाटेकां
 खेडेवाधे तेनादामवटेनहींलोकोमामूर्खकेहेवाय वा
 तोसाधुनीगुरुनिजोगवाइमलेतोवादवूपूजवू निरु
 ानेघेरवेठाशास्त्रसिद्धातनू वाचवूजणवू धर्मध्यांननूक
 ाजश्रेयछे माटेसांस्त्रजणवूअने उसत्छादिकपाचना
 ादुरकरीनेसूसाधुनिसदहणाराखवि तेसूसाधुनूंस्व
 ाथमपणकहयुंछे वलिसंक्षेपमात्रदेखाडेछेएकविध
 ात्यागीके ॥ एकविधअत्रत ॥ तेनूलक्षणतेजअग्रा
 ानेनोत्यागकह्योछे द्विविधबधण रागअनेरुनेहनूल
 ॥ द्वैपतेअप्रतिनूलक्षण ॥ तेवेबंधणथकिवेगलां
 विधडडेण ॥ एटलेमनथकिडंडायनहि ॥ वचनथकि
 नहीं ॥ कायाथकिडंडायनहि ॥ त्रिविधगूत्तेणंके ॥

मन ॥१॥ वचन ॥२॥ काया ॥ ३ ॥ एत्रणनेशुभमाठा
वेपारथाकिगोपवेछे तेमसलेणंके०॥ जेमतिरादिकनोघा
तछातिनेविपेसाले तेमजअनाचारहइएसाले तेनेसल्या
कहिये तेसल्यनात्रणप्रकार एकमायाके०॥ कपटरुपी
योसल्य ॥१॥ नियांणसलंके० ॥ परजवनिइछावछारूप
॥२॥ अनेमिथ्यात्वसल्यअज्ञानपणे॥३॥ तेहंगारवेणंके०॥
गारवके० ॥ अभिमान ॥ एटलैरिद्विपामिने ॥ रिद्विनो
गारवकरवो ॥ एरिद्विगारव ॥१॥ रसगारवपटविधर
सनुंपामिनेअभिमानकरवोएरसगारव॥२॥ शातागारव
मनवचनकायायेशातापामे ॥ तेमसंथारोसज्यासत्कार
मन्मानपामिनेशातानोगारवकरे॥ तेनेशातागर्वकहीए ॥
॥३॥ एटलेत्रण्येगर्वथाकिविरम्याछे ॥ तेहंविराणंके० ॥
नाननिविराधनाके०॥ जेज्ञानीवेअक्षरववताभण्योहोय
निआशातनाकरे॥ तथाकोइअणतोहोयतेनेउवेखे॥ तथा
पोधिपानूतेनीआशातनाकरीहोय ॥ तेनेज्ञानविराधना
कहिये ॥१॥ तथादर्शनविराधनाके०॥ साधूसधवीआ
कआविका ॥ तथाजिनपडीमानाआवर्णवादादिकप्रका
तेदर्शनविराधनाकहीए॥२॥ तथाचारीत्रविराधनाके०॥
चारीत्रलेइनेपालेनहि अथवांचारीत्रियानेशातनाक
एनेचारीत्रविराधनाकहीए ॥३॥ एत्रणथकिसदायवेग
रहे॥ चउकसाएणंके०॥ जेचारकखायचारीत्रनीघातकरे

वावालाछे अनेसाधुकेवाछे॥ एथकिसावचेतरहे एनाछला
 माआवेनहि एटलेतप्तप्रणामरहेतेनेक्रोधकहिए॥१॥ अ
 हकारीनेमानकहिए॥२॥ कपटिनेमायाकहिए॥३॥ मोर
 छातेलोभकहिए॥४॥ पचहक्रियाएहके०॥ जेव्यापारए
 नापाचप्रकारजाणवा कायाथकिजेक्रियांलागेजेअचत्या
 टिक तेकायक्रिया॥१॥ दूप्रणिहितकायकि॥२॥ उप्रतका
 यकि॥३॥ मिथ्यादृष्टितथाअत्रतसमोरदृष्टनि॥१॥ प्रमत
 सजतिनेविजीक्रियालागेअनेअप्रमतसजतिनेत्रिजीक्रिया
 लागे हवेविजीक्रियाकहेछे जेअधिक्रमणसहस्रजंत्रतत्रा
 दिकथाकिलगे एअधिक्रमणकिक्रिया॥१॥अनेपाउसिया
 के०॥ जिवउपरतथाअजिवउपर, द्वेपनाजेप्रणामतथा
 मछर्ता तेपाउसियाक्रियाकहिए॥३॥ परितावणीयाएके०
 आपणेतथापरनेताडनातर्जनादिककरीनेदूखउपजावे॥ते
 परितावणक्रिया॥४॥पणातिपातकिक्रियाके०॥आपणोतथा
 परनोघातकरवो एटलेस्वर्गादिकपामवानिमित्ये पर्वता
 दिकथाकिपडिने आपणाआत्मानिघातकरवि तथाक्रोधा
 दिकेकरीनेपरजीवनेहणवा तेप्रणातिपातकिक्रिया॥५॥
 एपांचक्रियाथकिबीहीतोरहे जेरखेमुनेक्रियालागे छहजि
 वनिकायाणांके०॥ छकायजिवनीरक्षाकरे सातभयमन
 माधारेनहि तेतानामकहेछेआलोकजयमनुष्यादिकथाकि
 ॥१॥ परलोकजयसिंहादिकथाकि॥२॥ आनदजयधनलो

आदिकथि ॥३॥ अकस्मात्भयअंधकरादिक ॥४॥ आ
 जीवकान्तयदूर्भक्षादिका ॥५॥ मरणंभयमरवानो ॥६॥ अपि
 तभयउपजवानो ॥७॥ वलिसाधुहोयतेआठमदकरेनहि ॥
 तेकिया ॥ जातिमदा ॥१॥ कुलमदा ॥२॥ रूपमदा ॥३॥ श्रुतम
 दा ॥४॥ बलमदा ॥५॥ तपमदा ॥६॥ लाजमदा ॥७॥ इश्वरम
 दा ॥८॥ वलिनवविधब्रह्मचर्यनोअधिकारआगे पंचमहाव्र
 तनाअधिकारमांकह्योछे तथावलिदशविधयतिधर्मकहेछे
 खतिक्रोधादिकरहिता ॥१॥ मार्दवमाननोत्याग ॥२॥ आर्ज
 वमायानोत्याग ॥३॥ मूक्तिनालोभनोत्याग ॥४॥ तपतेवार
 भेदे ॥५॥ संजमतेआश्रवनोरोध ॥६॥ सत्यतेमृपानोत्या
 ग ॥७॥ सौच्यतेनिलेपपणु ॥८॥ अकंचनतेधननोत्याग ॥
 ९॥ ब्रह्मचर्यतेदृढसजम ॥१०॥ नित्येआराधे ॥ अग्यार
 श्रावकनिप्रतिमाजाणे तथावारसाधुनिप्रतिमातेनांनाम
 कहेछे ॥ पेहेलीएकमासनि ॥१॥ वेमासनि ॥२॥ त्रणमासनि
 ॥३॥ चारमासनि ॥४॥ पांचमासनि ॥५॥ छमासनि ॥६॥
 सातमासनी ॥७॥ सातअहोरात्रिनि ॥८॥ वलिसातअहो
 रात्रिनि ॥९॥ सातअहोरात्रीनि ॥१०॥ एकअहोरात्रिनि ॥
 ११॥ एकरात्रिनि ॥१२॥ इतिसाधुनीवारप्रतिमा हवेपे
 हेलिप्रतिमावहेत्यारे एकदांतिआहारनि एकदांतिपाणीनी
 एमसातमीप्रतिमाए सातदांतिआहारनीने सातदांति
 पाणीनीलहे आठमीपंडीमाउतानसेन अथवापासाभरक

रे उपसर्गसहे ॥८॥ नवमेलुकट वाकापडेलाकाठनिफं
 ॥९॥ दशमेगोदोहिआसन अथवाविरासनकरे ॥१०॥ अग्या
 रेछठमक्तकरीपलंबनोजुअहोरात्रिलगेकरी काउसगकरे
 ॥११॥ वारमिअठमक्तकरीएकरात्रिलगे मेपोन्मेपअ
 होरात्रिनेत्ररहे ॥१२॥ एसंक्षेपथकीलखावलीविशेपेजोबु
 होयतो दशासूतस्कधथकीजाएवि साधूहोयतेसतरनेदे
 सजमनापालकहोय प्रथविकायसजम ॥१॥ अपकायसं
 जम ॥२॥ तेउकायसजम ॥३॥ वाउकायसंजम ॥४॥ वनरूप
 तिकायसजम ॥५॥ वैराद्रिसंजम ॥६॥ तेरंद्रिसजम ॥७॥
 चउरंद्रिसजम ॥८॥ पचद्रिसजम ॥९॥ अजीवसंजम ॥१०॥
 पेहासजम ॥११॥ उवेहासजम ॥१२॥ पमजणासंजम
 ॥१३॥ पारीठावणीयासजम ॥१४॥ मनसजम ॥१५॥ वच
 नसजम ॥१६॥ कायसजम ॥१७॥ एसतरभेदेछे वलीविश
 असमाधिस्थानकसेवेनहि ॥ तेकहीएछे ॥ उतावलोचालेन
 हि ॥१॥ अप्रमार्जितठामेवेसेनहि ॥२॥ दुप्रमार्जितठामेवेसे
 नहि ॥३॥ धधसालादिकनेविपेरहेनहि ॥४॥ अधिक
 आसनादिकनेविपेरहेनहि ॥५॥ गुरुनोपराभवकरेनहि
 ॥६॥ स्थावरउपघातकरेनहि ॥७॥ नूतउपघातकरेनहि
 ॥८॥ खिणमात्रमाहेकोपेनहि ॥९॥ कदापिकोपेताघणो
 कालराखेनहि ॥१०॥ पुठेअवर्णवादबोलेनहि ॥११॥
 नुठोआलआपेनहि ॥१२॥ समीयाअधिकर्णउदेरेनहि

॥१३॥ अकालेसज्याकरेनहि ॥ १४ ॥ रजस्रड्याहाथपेगरा
 खेनहि ॥ १५ ॥ पोहोररात्रिपछेताणीनेवोलेनहि ॥ १६ ॥ माहो
 माहेकलहकरावेनहि ॥ १७ ॥ माहोमाहेभेदपढावेनहि
 ॥ १८ ॥ आयमतालगेजमेनहि ॥ १९ ॥ दोपटालिआहार
 लेवे ॥ २० ॥ मुनिराजएविरीतेविचरेनिर्दोपपणे एथकिवी
 प्रितविचरेतेनेअसमाधिस्थांनसेव्युंकहिए हवेसबलक
 र्म२१तेकहेछे ॥ हस्तकर्मकरे ॥ १ ॥ मिथुनसेवे ॥ २ ॥ रात्रिभो
 जनकरे ॥ ३ ॥ आधाकर्मिका ॥ ४ ॥ राजपिंडले ॥ ५ ॥ क्लितले
 ॥ ६ ॥ प्रामितउछीनो ॥ ७ ॥ अभ्याहत ॥ ८ ॥ आछेघले ॥ ९ ॥
 पछखांणभांजे ॥ १० ॥ गणथकिविजेगछेजाय ॥ ११ ॥ मास
 माहेबेलेप ॥ १२ ॥ मासमाहेमातृस्थांन ॥ १३ ॥ आकुदिहिं
 साकरे ॥ १४ ॥ आकुदिमृखाभांखे ॥ १५ ॥ आकुदिचोरीकरे
 ॥ १६ ॥ आकुदिकदमूलखाय ॥ १७ ॥ फुलफलबहूविजखाय
 ॥ १८ ॥ वर्षमाहेगदलेप ॥ १९ ॥ वर्षमाहेमातृस्थांन ॥ २० ॥
 सचितसघटसहितहस्तजाजनआहारले ॥ २१ ॥ हवेवावी
 सपरीसहकहेछेखुहानूख ॥ १ ॥ पिवासातरसा ॥ २ ॥ सितता
 ढनुंसेहवुं ॥ ३ ॥ उश्नतापनुंसेहवुं ॥ ४ ॥ दंसमछरा ॥ ५ ॥ अचेल
 ॥ ६ ॥ अरति ॥ ७ ॥ स्त्री ॥ ८ ॥ चरीयाविहार ॥ ९ ॥ निसीर्हाया
 ॥ १० ॥ सज्जा ॥ ११ ॥ आक्रोश ॥ १२ ॥ वध ॥ १३ ॥ याचना ॥ १४ ॥
 अलाभ ॥ १५ ॥ रोग ॥ १६ ॥ वृणस्पर्श ॥ १७ ॥ मला ॥ १८ ॥ स
 ल्कार ॥ १९ ॥ प्रज्ञा ॥ २० ॥ अज्ञान ॥ २१ ॥ सम्यक्ति ॥ २२ ॥ अथ

सुगडगाध्यायनसूतस्कंध ॥१६॥ पुढरीकाध्यायनआहार
 परीक्षा ॥ क्रियास्थानप्रत्यास्यानक्रिया ॥ अनाचारसुतआ
 द्रकुमारनालंदीयाध्ययन ॥ धिसुतस्कंधे ॥ ७ ॥ एवंसु
 गडगनाध्यायन ॥२३॥ देव ॥२४॥ तिर्थकरा ॥ अथवाप
 क्षातरेभूवनपति ॥ १० ॥ अंतर ८ ज्योतपी ५ वैमानिक १ एव
 ॥२४॥ ५ ॥ हास्यत्यागआलोचिवोले ॥ ४ ॥ लोभत्याग ॥ क्रोधत्या
 ग ॥ २ ॥ व्रतजावनाएव ॥ १० ॥ धणिकह्या अवग्रहमागवो
 ॥ १ ॥ तृणादिकने अवग्रहमागे ॥ ९ ॥ अवग्रहनीमर्यादाकरी
 रहे ॥ ३ ॥ गुरुनो अवग्रहमागिभातपाणिजोगवो ॥ ४ ॥ साहमि
 कना अवग्रहमागिरहे ॥ ५ ॥ एव ॥ १ ॥ पनरे अतिसरसआहा
 रनले ॥ १ ॥ विजुखानकरे ॥ २ ॥ स्त्रिसहतवस्तीनरहे ॥ ३ ॥ एक
 लिस्त्रीकनेस्थानकेनरहे ॥ ४ ॥ स्त्रीना अगोपागनजोवा ॥ ५ ॥
 एचारव्रतभावना ॥ ५ ॥ एवविस एचोथोव्रतभावना एवं
 ॥ २ ॥ ० ॥ रुडोपाडवोशब्दसाजलिरागद्वेपनकरे ॥ १ ॥ एंवरुप
 ॥ २ ॥ गध ॥ ३ ॥ रस ॥ ४ ॥ स्पर्शआश्रीरागद्वेपनकरे
 ॥ ५ ॥ एपाचमेव्रतभावेना ॥ ५ ॥ एंमलि ॥ २ ५ ॥ जावना दश
 सुतस्कंध दशकालकल्पनाछे ॥ १ ० ॥ क्षहकाल ॥ ५ ॥ व्यवहा
 रसूत्रदशकाल ॥ १ ० ॥ एंवेत्रिहूसूत्र ॥ २ ६ ॥ कालजाणवाअथ
 अणगारगुण ॥ २ ७ ॥ कहेछे ॥ व्रत ॥ ६ ॥ पांचइद्रिजितवि ॥ १ १ ॥
 भावशूद्र ॥ १ २ ॥ पडिलेहणाविशुद्धे ॥ १ ३ ॥ क्षमा ॥ १ ४ ॥ वैरा
 ग्य ॥ १ ५ ॥ अकुसलमनवचनकायानीरुंधवो ॥ १ ॥ छकायनि

रक्षा॥२४॥संजमयोगयुक्त ॥२५॥ शितादिकवेदनासहन
 ॥२६॥मरणांतउपसर्गसहन॥२७॥ इत्यादिकसाधुनाअ
 नंतगुणछे श्रीउत्तराध्ययनथकिजो नोएटलेएवागुणेकरी
 नेसहितहोयतेनेगुरुकहिनेसदहे॥कदापिआकालतोदूप
 मछे माटेएवागुरुनिजोगवइमलविघणीमुश्कलछे पण
 कदापिआजनेकालेपणमुलगुणेकरीनेसहितजोइएएटले
 शुद्धलिंगआगलेकह्योतेप्रमाणैहोय अनेपंचमहात्रतमूल
 गुणेकरीनेसहितहोय॥अनेउत्तरगुणेशामान्याविसेप्रेहोय
 तेनुंकांइजोवानोविचारनहि सामाटेश्रीनगवतीजीमधेक
 ह्युंछेजेपांचमेआरेवकुशचारीत्रीयाहोशो।एटलेवकुशचारी
 त्रके०॥ चारीत्रछेतेनिरमलछे पणउत्तरगुणमांदोपणला
 गे एटलेदोपरुपपडिजेनाततेथकिचारीत्ररुपवस्त्रकावरुं
 थयूं एनेवकुशचारीत्रकहिंए एटलामाटेआकालेमूलगुणे
 उत्तरगुणेकरीनेसहित एवूचारीत्रसंजवेनहितेमाटेमूलगु
 णेकरीसहितहोय वलिवेतालिसदोपरहीतआहारलेतेने
 साधुकरिसदहवा॥तेवेतालिसदोपदेखाडेछे॥एनिगाथा६
 कहेछे॥आहाकम्मु॥१॥ द्वैसिया॥२॥पुइकम्मेय॥३॥मिस
 जाएअ॥४॥ ठवणा॥५॥पाहूडीयाए॥६॥पाओचरा॥७॥
 किया॥८॥पांमीच्चे॥९॥ परीअट्टिये॥१०॥अजिहडु ॥११॥
 भिन्ने॥१२॥मालोहडे॥१३॥अछिज्जो॥१४॥अणसिठे
 ॥१५॥अज्ञोयरा॥१६॥सोलसपिंडूगमेदोसा॥२॥धाइ॥१॥

दुई ॥ २ ॥ निमित्त ॥ ३ ॥ आजीव ॥ ४ ॥ वणिमगे ॥ ५ ॥ तिगी
 ल्याया ॥ ६ ॥ कोहे ॥ ७ ॥ माणे ॥ ८ ॥ माघा ॥ ९ ॥ लो जेया ॥ १० ॥
 हवतिदशएणा ॥ ३ ॥ पुर्व्वपल्हासंथवा ॥ १ १ ॥ विज्ञा ॥ २ ॥ संते
 या ॥ २ ॥ वुन्न ॥ १ ॥ जोगेय ॥ १ ५ ॥ उप्पायणाया ॥ २ ६ ॥ दोसा
 सांलसयेमूलकम्मेया ॥ ६ ॥ ४ ॥ सकिथं ॥ १ ॥ मखिया ॥ २ ॥ निखि
 ता ॥ ३ ॥ पिहीया ॥ ४ ॥ साहरीया ॥ ५ ॥ दायगु ॥ ६ ॥ मिस्से ॥ ७ ॥ अ
 परीणया ॥ ८ ॥ लित ॥ ९ ॥ छडिआ ॥ १० ॥ एसणदोसादसहवति
 ॥ ५ ॥ संजोअणा ॥ २ ॥ पमाणे ॥ २ ॥ इगाले ॥ ३ ॥ ध्रुमा ॥ ४ ॥
 कारणे ॥ ५ ॥ पढमावसहि बहिरतरेवा सहेउठवसंजोगा
 ॥ ६ ॥ एनोअर्थे सोलउड्गमदोषलीखीएछिए आधाक
 र्मिंतेअतिथीनेअर्थे मूलथकीछकायनोआरजकरीनिपायु
 आहारादिकतेआधाकर्मिदोषकहिए ॥ १ ॥ उदेशिकतेमा
 गणहारआवशेएमजाणीतेअर्थेकिधुंते ॥ उदेशिकदोषकहि
 ए ॥ २ ॥ पूतिकर्मतेआधाकर्मनेकारणसहितकिधु तेपूतिक
 र्मकहिए ॥ ३ ॥ मिश्रजातितेकोइजतिनेअर्थे कोइपोताने
 अर्थेकिधुतेमिश्रजातिदोषकहिए ॥ ४ ॥ स्थापनातेसाधु
 नेअर्थेइछाराखेतेस्थापनादोषकहिए ॥ ५ ॥ प्राहुआतेसुख
 डीके ॥ जमणवार आधिपाछिकरे तेप्राभृतदोषकहिए
 ॥ ६ ॥ प्राडु करणतेसाधुनिमिते अधारेकाइछानुप्रगटकर
 वाने छिदरादिकेकरीप्रकाशकरे तेनेप्राडुःकरणदोषकहि
 ए ॥ ७ ॥ करणनेसाधुनीमितेवेचातुलेइआपे तेकरणदोषक

हिए ॥८॥ प्रामित्यते उच्छिनुंसाधुने अर्थे लेइ आपे ते प्रामित्यदो
 पकहिए ॥९॥ परावर्त्तते नखरसखरवस्तुकांइ पाजटीसाधुने
 आपीएते परावर्त्तदोपकहिए ॥१०॥ अभ्याहृतते अनेरांआं
 मपाडिघरथकिसांमुंआणीआपे ते अभ्याहृतदोपकहिए
 ॥११॥ उद्धिनते साधुनीमितकमाडतथातालुउघाडीआपे
 ते उद्धिनदोपकहिए ॥१२॥ मालापहतते उचुंनिचुंत्रिंछुं
 तेथकीलेइनेदेते मालापहतदोपकहिए ॥१३॥ आछेदतेकु
 मारादिकनुंखुचावीलेइसाधुनेदिए ते आछेददोपकहिए
 ॥१४॥ अनिसृष्टवेहूं त्रिहूंनिवस्तुसाधारणमांहेएकदिए
 ते अनिसृष्टदोपकहिए ॥१५॥ अथ्यवपुरकते मूलआधणथ
 किअधिकुंतांखे अमारेसाधुजीआवनारछेतेनिमिततेअथ्य
 वपुरका ॥१६॥ एतादोपागृहस्थकरता हवेउत्पादनदोप
 साधुकरतानाकेहेछे ॥१६॥ एशोलेदोपआहारना तेउत्पा
 दनदोपकहिए साधुथकिउपजे धात्रितेगृहस्थनाबालक
 रमाडीआपजिदांनले तेधात्रिदोपकहिए ॥१७॥ दूतिते
 गामादिसंदेशाकह्यादांनलेतेदूतिदोप ॥१८॥ निमिततेज
 तिअतितअनागतकहिदांनले तेनिमितदोपकहिए ॥१९॥
 आजिवकातेजातिकुलादिककहिदांनलेते ॥ आजिवका
 दोषकहिए ॥२०॥ वनिपकके ० ॥ आहारनिमितब्राह्मणादिक
 नेधेरहूंपणब्राह्मणादिकनोभक्तछुंएवोथईले ॥ तेवनिपक
 दोषकहिए ॥२१॥ चिकित्सातेवैद्यककहिलेतेचिकित्सादोपक

हिए ॥६॥ क्रोधपिंडतेविद्यावतनृपमत्रादिकवलेदानले
 तेक्रोधपिंडदोपकहिए ॥७॥ मानपिंडतेगृहस्थनेअहकार
 चढाविदांनले तेमानापिंडदोपकहिए ॥८॥ मायापिंडतेमा
 यायेअनेकरूपकरीदानले तेमायापिंडदोपकहिए ॥९॥
 लोभपिंडतेसरसआहारनेअर्थे सईधईफरईकेसरीयामो
 ढकनेअर्थे तेलोभपिंडदोपकहिए ॥१०॥ पूर्वपछासंस्त
 वतेपहेलुं तथापछिगृहस्थनीनीस्तुतिकरेतोपूर्वपछासंस्तव
 दोपकहिए ॥११॥ विद्यापिंडतेदेवतानुआराधनकरेकरावे
 आहारादिकनेअर्थेविद्यापिंडदोप ॥ एविदेविअदृष्टातता
 होय ॥१२॥ मत्रपिंडतेअदृष्टातकरणादिमंत्रसाधेसधावे
 आहारादिकनेअर्थेमत्रपिंडदोपकहिए ॥१३॥ चूर्णपिंडते
 आखनुंअजनादिकआपिदानलेनेचूर्णपिंडदोपकहिए ॥१४॥
 योगपिंडतेशोभाग्यदोजाग्यादिककरीदानलिए तेयोग
 पिंडदोपकहिए ॥१५॥ मूलकर्मतेगर्जउत्पातादिककरेकरा
 वेअनेदानलिएतेमूलकर्मकहिए ॥१६॥ एउत्पादनदोपक
 हिए ॥ साधुथकिनिपजे ॥ एसोलदोप एवत्रिसा ॥३२॥ दो
 पसर्वमलिजाणवा हवेएखणादोपलिखीएछिए सकितते
 आचाकर्मादिकदोपतणिशकाए गृहणकरेतेसकितदोपक
 हिए ॥१॥ मखितदोपतेसचितअचितकरीखरडधोले तेम
 खीतदोपकहिए ॥२॥ निक्षिप्तसचितपूढविकायादिकउपर
 मेलेलीवस्तुसाधुलेतेनेनिक्षिप्तदोपकहिए ॥३॥ पिहितदोप

तेसचितेकरीढांकि अचितवस्तुलिएदिए तेपिहितदोषक
 हिए॥४॥ संहृततेमोटाभाजनथीनानाभाजने अथवाअसु
 जतेलिएदिए तेसंहृतदोषकाहिए ॥५॥ दायकतेखंडणपि
 सणादिकछकायनिविराधनाकरतां तथावालधवरावति
 उठी अथवागर्जवतिस्त्रीलिएदिएतेदायकदोषकाहिए॥६॥
 उन्मिश्रतेसचितफलादिकअचितखांडादिक एकठांनेलि
 लिएदिए तेउन्मिश्रदोषकाहिए ॥७॥ अपरीणततेकांड
 ककांचुकांडकपाकुदानलिएदिए तेअपरीणतकाहिए॥८॥
 लिप्ततेसचितेअथवामिश्रवस्तुभिनेहाथेतथालेपवालालि
 एदिए तेलिप्तदोष ॥९॥ छर्दिततेद्वातादिकछांडेपडेलिये
 दिये तेछर्दितदोषकाहिये॥१०॥ अखणादोषदशहोयसा
 धुयितथाग्रहस्थिथीलागे ॥ हवेपाचदोषमालानाकेहेछेस
 जोजनातेखीरखांडघृतंस्वादनेअर्थे एकठामेलिपोशाला
 मांहिअथवाबाहिरतेसंजोजननादोषकाहिए अप्रमाणते
 प्रमाणजेटलीले तेटलाथीअधिकले तेअप्रमाणदोषक
 हिए ॥२॥ इंगालतेमनमांहेदातारनेप्रशस्तरागे जिम
 तोकरे तेइंगालदोषचारीत्रवालीलाहालाकरे॥३॥ धुम्रते
 सामान्यअन्नमाटेदातारनेनदतोद्वेषेजिमतोकरे तेधुम्रदो
 षकाहिए॥४॥ कारणनेक्षुधावेदनिअहिआसनकेतां॥कारणे
 आहारकरे॥१॥ अथवाआचार्यादिकनुंवैयावचकरवानेका
 रणेआहाकरे ॥२॥ अथवाइर्यासुमतिपालवानेकारणेआ

हारकरे ॥३॥ अथवासजमपालवानेअर्थेआहारकरे ॥४॥
 अथवाधर्मध्यानधारवानेकारणेआहारकरे ॥५॥ अ्रेछकार
 णविनाआहारकरेतेसांकर्णदेपकहिए उपाश्रेयवारणे अ
 थवामाहीरसवधारवाहेतु एवेएकठांकरवां तेसजनाजा
 एवा ॥६॥ इत्यादिकएखाणादोपनेटाले मूलगुणेकरीनेस
 हितहोयतेनेसाधुकरिनेसदहेतेविजोतकह्यो ॥ इतिश्री
 सम्यक्तद्वारग्रंथोमुनिश्रीब्रह्मकमचदजी विरचितेपंचमोध्या
 यपरीपूर्णम् ॥६॥

पचमाश्रध्यायमागुरुतत्वश्रोलखाव्यो हवेछठाश्र
 ध्यायमांधर्मतत्वश्रोलखावेछे धर्मतत्वकेवोछे अतितकाले
 पणधर्मतत्वनेआराधीनेमुक्तिरुपणिलक्ष्मीनेवरया वर्तमा
 नकालेपणधर्मतत्वने आराधीनेघणा जिवमुक्तिरुपणील
 क्ष्मीनेवरेछे अनागतकालेवरशेतेमाटेहेनव्यजीवोप्रथम
 जेसदगुरुदेखाड्यातेवागुरुनिशेवाउपासनाकरो ॥ पाछेते
 नीपासेथीधर्मतत्वसाजलो शामाटेसदगुरुविनाविजागु
 रुधर्मतत्वनेयथार्थश्रोलखाववासमर्थनथी तेमाटेजेसदगु
 रुहोय अनेवहूश्रुतहोयतेनुंवहूमानभक्तिकरवी, अनेधर्म
 तेनीपासेथीसांभलीनेश्रोलखवो सदहीनेआराधवो आ
 राध्याथकिमुक्तिरुपणीलक्ष्मीले तेमाटेहेनव्यजीवोव
 र्मतत्वनीखपविशेपेकरिनेकरजो तेधर्मनावेजेद एकअण
 गारधर्म ॥१॥ विजोआगारधर्म ॥२॥ अणगारके ० ॥ साधूनी

धर्मतोपांचमाधिकारमांकहोछे अनेआगारके०॥ श्रा
वकनोधर्मतेकहेछे तेश्रावकनेदेशविरतिकहीए देशके०॥
थोडुछेव्रततेनेदेशविरतिकहीए तेनावारजेदछे तेनिश्चे
नेव्यवहारथकीओलंखावेछे तेप्रथमप्रणातीपातव्रत॥१॥
प्रणातिपातके०॥जिवनीहंसानकरवि तेजीवनाजेददेखा
डेछे हवेजिवके०॥चेतानालंक्षणोजिवात् एटलेचेतनाल
क्षणछेतेनेजीवकहिए तेजीवनावेभेदा॥त्रसा॥१॥थावर॥२॥
तेथावरनापांचभेदा॥पृथ्विकाय॥१॥अप्पकाय ॥२॥ तेउ
काय॥३॥वाउकाय॥४॥वनस्पतिकाय॥५॥हवेतेप्रथवीका
यनाच्यारजेद सूक्ष्मपृथ्विकायप्रजाप्तो ॥१॥ अप्रजा
प्तो॥२॥हवेसूक्ष्मके०॥जेनीकायात्रतिसेनानीछेएटलेचर्म
दृष्टियेगोचरआवेनहीं एतेकेवलीगम्यछे तेनाप्राणप्रजा
प्ति तथाशरीरबादरमांकहिशुं हवेसूक्ष्मपृथ्विकायनेत्र
णलेइयाहोय॥ऋण्ण॥१॥निल॥२॥कापोत ॥३॥ एप्रमा
णैसूक्ष्मपृथ्विकायअप्रजाप्ताजाणवा ॥ तेचौदराजलोक
व्यापिछे हवेबादरपृथ्विकायनावेभेदा॥एकप्रजाप्तो ॥१॥
बिजोअप्रजाप्तो॥२॥हवेप्रजाप्तीतथाप्राण एनीओलखा
णबतावेछे॥फरसेद्रि ॥१॥रसेंद्रि ॥२॥घ्राणेन्द्रि॥३॥ चक्षु
इंद्रि॥४॥ श्रोतेन्द्रि॥५॥मनबल ॥६॥वचनबल॥७॥ कायब
ल॥८॥श्वासोश्वास॥९॥आवखू॥१०॥तथाप्रजाप्तीछो॥आ
हारप्रजाप्ति॥१॥शरीरप्रजाप्ति॥२॥इंद्रिप्रजाप्ति॥३॥ श्वा

सोश्वासप्रजाप्ति॥४॥नायाप्रजाप्ति॥५॥मनप्रजाप्ति ॥६॥
 एछप्रजाप्ति हवेष्टथ्विकायनाजीवने एदशप्राणमाहेला
 चारप्राणहोयतेकहेछे फरसेद्वि॥१॥कायबल ॥२॥ श्वासो
 श्वासा॥३॥आवसू॥४॥एच्यारप्राणहोयतथाछप्रजाप्तिमा
 हेलाच्यारप्रजाप्तिहोयतेकहेछे आहारप्रजाप्ति॥१॥शरी
 रप्रजाप्ति॥२॥इद्विप्रजाप्ति॥३॥श्वासोश्वासप्रजाप्ति ॥४॥
 एच्यारमाहेथीत्रिजेजेइद्विधप्रजाप्तिवांधे तेनेकर्णप्रजाप्ति
 कहिए एटलेकोइजीवकरणअप्रजाप्तोमरेनहीं करणप्र
 जाप्तीवांध्यापछीमरे अनेजेजीवअप्रजाप्तोमरे तेलवधअ
 प्रजाप्तोमरे एटलेष्टथ्विकायनाजीवच्यारप्रजाप्तीथकीउ
 णीहोय त्यांसुधीअप्रजाप्तोकहिए अनेच्यारप्रजाप्तीपूरी
 बांधेएनेप्रजाप्तोकहिये ॥ हवेवादरष्टथ्विकायनेच्यारले
 इयाहोय क्रप्ना ॥ १ ॥नीला ॥ २ ॥कापोत ॥ ३ ॥तेजो॥४॥
 तथाष्टथ्विकायनेत्रणशरीरहोय ॥ उदारीका ॥ १ ॥ तेजस
 ॥ २ ॥ कारमण ॥ ३ ॥ तथाष्टथ्विकायनीअवगा
 हनाआंगुलने असख्यातमेत्तागेहोय ॥ तथाष्ट
 थ्विकायनु आवसु ॥ जघन्य अतर्महूर्त ॥ उत्कृष्ट २२
 हजारवर्षनु ॥ हवेअप्पकायनापणच्यारनेद सर्वष्टथ्वि
 कायनिपरे एटलोविशेष उत्कृष्टुंआवसु ७ हजारवर्षनु
 होय ॥२॥ हवेतेरकायष्टथ्विकायवत एटलोविशेषनेले
 इयात्रणहोय क्रश्ना ॥नीला॥२॥कापोत ॥३॥ तथाआउ

खुंउत्कृष्टुंत्रणश्चहोरात्रिनुहोय ॥३॥ हवेवाउकायपणपृ
 थिवकायनीपरेएटलोविशोपशरीरच्यारहोयउदारीक॥१॥
 बैक्रिया॥२॥तेजस॥३॥नैकारमणा॥४॥तथालेश्यातेउकाय
 वत् नेआनखुउत्कृष्टुंत्रण३हजारवर्षनुं॥४॥ हवेवनस्पती
 कायनावेनेदप्रत्येकनेसाधारण॥प्रत्येकनावेनेदप्रजाप्तोने
 अप्रजाप्तोप्रत्येकवनस्पतीपृथिवकायवत्एटलोविशोपत्रा
 उखुउत्कृष्टुं॥१०॥हजारवर्षनुंसाधारणवनस्पतीनाच्यार
 भेदसूक्ष्मनेवाढरा॥सूक्ष्मनिगोदकहिए तेनोविचारलेशमा
 त्रवतावेछे एटलेचौदराजलोकछे तेलोकके०॥आकाशते
 आकाशएकआंगुलनेअसंख्यातमेजागे आकाशनाअसं
 ख्यातप्रदेशछेतेएककेआकाशप्रदेशेएककोगोलोछेतेएकेक
 गोलामांअसंख्यातिनिगोदोछेएकेकनिगोदमेअनंताजीवछे
 तेकेटला॥अतीतकालनागयासमयतथाअनागतकालना
 जेटलासमयतेथकिअनंतगुणाएकनिगोदमेजीवछेहवेतेनी
 गोदियाजीवनुंआवखुं॥एकश्वासोश्वासजुवानपूर्पनिरोगा
 कायानोधणीएकसासउंचोलेइनेनीचोमूकेएटलामांसाडा
 सत्तरजवकरेएटलेसत्तरवारजन्मीनेमरे अढारमिवारनो
 जन्मे वलिविजेप्रकारेआउखुं वसेनेछपनआवलिनोपुल
 कजवजाणवो तेमांहोमांहेजडाजिडसूदुखजोगविनेमरे
 छे तेदुखनिवेदनाकेटलिकछे सातमिनकेतेत्रिससागरो
 पमनुंआउखुंछेतेतेत्रिससागरोपमनाजेटलासमयएटलि

वारसातमिनर्केउपजे तेत्रिससागरोपमनुंदूखएकठुंकरी
 येएथकिअनतगुणी वेदनाएकसमयेनिगोद्वियोजिवजोग
 वेछेतेसूक्ष्मनीगोदनेअव्यवहारराशिकहियेअव्यवहाररा
 शिके०॥जेजिवबादरमानथिआव्योत्यांसुधीअव्यवहाररा
 शिनोजाणवोजेजिवबादरराशिमांएकवारआव्योतेनेव्यव
 हारंराशियोकहिए तेवारेशिष्यवोल्यो हेस्वामिव्यवहार
 राशितथाअव्यवहारराशिनुशुकारणछे तेनोउत्तरजेव्यव
 हारराशिमाआवेलोजिव तेफरीसूक्ष्मनिगोदमाजायतो
 जंघन्यथकिअतरमुहूर्तरहे उत्कृष्टोरहेतो अटिपुदगल
 परावर्त्तरहे तेउपरातरहेनहि ॥ अनेअव्यवहारराशि
 मांजेजिवसूक्ष्मनिगोदमांथिनिकल्यानथि तेजिवअनता
 पूदगलपरावर्त्तनवहिजशे ॥ तोयपणनिकलशेनहि ते
 माटेव्यवहारराशिनेअव्यवहारराशिजुदिकहेविपडे हवे
 जेटलाजिव इहाथकिमोक्षेजाय एटलाजिवअव्यवहार
 राशिमाथि व्यवहारराशिमाआवे पणव्यवहारराशिघ
 टेवधेनाहें हवेसूक्ष्मनिगोदनाप्रजाप्ता तथाअप्रजाप्ता
 तथाबादरनिगोदकंदमूलादिकतेनाप्रजाप्ता अनेअप्रजा
 प्ता सर्वपृथ्विकायवत् एटलोविशेष ॥ लेश्यात्रणहोय
 अनेबादरनिगोदनुआउखुप्रतेकवनस्पतिवत् अनेबादर
 निगोदनिअवगाहनाएकशरीरेअनंताजिवहोयएटलेवन
 स्पतिनुस्वरूपकह्युं एटलेपाचथावरनावाविशनेदकरीदे

खाड्या॥१॥ असनाचारभेदावेरंद्रि॥१॥ तेरंद्रि॥२॥ चउरं
 द्रि॥३॥ पंचद्रि॥४॥ हवेवेरंद्रिनावेभेदा प्रजाप्तो॥१॥ अ
 प्रजाप्तो॥२॥ अलशियाप्रमुखजिवत्तेनेप्राण६होय॥ फरसे
 द्रि॥१॥ रसेद्रि॥२॥ वचनबला॥३॥ कायबला॥४॥ श्वासोश्वा
 सा॥५॥ आउखुद्ध एछप्राणंतथा प्रजाप्तिपांचहोय॥ आहार
 शरीरइंद्रो॥ स्वासोस्वासअनेजापाप्रजाप्ति ॥६॥ तथाले
 श्यात्रणहोय॥ कृश्रा॥१॥ नीला॥२॥ कापोत्ता॥३॥ तथाशरी
 रत्रणहोय उटारिका॥१॥ तेजंसा॥२॥ कारमणा॥३॥ अवगा
 हनाबारजोजन आउखुजघन्यअतरमूहूर्त उतकृष्टुवारव
 प्तं ॥१॥ हवेतेरंद्रिनूकिडिमकोडिप्रमुखवेरंद्रिवतएटलो
 विशेषजेसातप्राण एकघ्राणेद्रिवधे तथाअवगाहनात्राणग
 उनि आउखुउतकृष्टुओगणपचासदिवशनुं॥२॥ तथाचउ
 रंद्रिवेरिद्रिवत् एटलोविशेषजेप्राणआठहोय घ्राणेद्रिने
 वक्षूइंद्रिवधे तथाअवगाहनाच्यारगउनि तथाआउखुछ
 नासनु॥३॥ एत्रणनेविगलेंद्रिकहिए एत्रणनाप्रजाप्ताअ
 प्रजाप्ताथइनेछभेदथाय हवेपचद्रिनाच्यारभेदनारकि॥१
 इवता॥२॥ तिर्यंचा॥३॥ मनुष्य॥४॥ तेनारकिनांनामा॥ घं
 ना॥१॥ वंसा॥२॥ सिद्धा ॥३॥ अंजणाय ॥४॥ रिठा॥५॥
 ग्वा॥६॥ माघवति॥७॥ एसातनोप्रजाप्तोअप्रजाप्तोथइ
 तेचउदभेदथाय हवेदेवतांनाच्यारभेदभवनपति॥१॥ व्यं
 र॥२॥ जोतपि॥३॥ वैमानिका॥४॥ दसभवनपति पनर

परमाधामि सोलव्यतर दसतिर्यंचजबूक दशजोतपि ते
 पांचचर पांचथर॥ वैमानिकमेवारदेवलोकत्रणकुलविधि
 या नवलोकांतिक नवत्रैवेक पांचअनुतरविमान एसर्व
 मलिनेच्यारनिकायनादेवनानवाणुजेदथया तेनवाणुप्र
 जाप्तानेनवाणुअप्रजाप्ता सर्वथइनेएकसोनेअठाणुजेदथ
 याएदेवतातथानारकिनोआवार्थजिवाभिगमथकिजाणवो
 हवेतीर्यंचनापांचजेदजलचरे॥१॥ थलचर॥२॥ खेचर॥३॥
 उरपरि॥४॥ भुजपरि॥५॥ एपाचगर्जजपाचसमुच्छिमएदस
 नाप्रजाप्तानेअप्रजाप्ताथइनेविसजेदथयाहवेमनूप्यनापां
 चचर्तना पाचएवर्तना पाचमहाविदेहना एपनरकर्मजो
 मिनापनरजेद हवेअकर्मजोमिनात्रिसजेदलिखाएछे पां
 चहेमंतक्षेत्रना पाचहरीवर्षक्षेत्रना पाचदेवकरुक्षेत्रना
 पांचउत्तरकरुक्षेत्रना पांचरमणीकवास पाचअरणकवास
 एत्रिसअकर्मभोमिनामनुष्य छपनअंतरद्विपनामनुष्य प
 नरकरमजोमि त्रिसअकर्मजोमिछपनअंतरद्विपएएकसो
 नेएकक्षेत्रनाप्रजाप्तानेअप्रजाप्ताएवसेनेवेजेदएकअसनी
 याके॥ चउदस्थानकेउपजे एअप्रजाप्ताजमरे एत्रणसेने
 त्रणजेद वसेनेसाठपूर्वकह्यातेमळीजीवनीत्रणगतिनाए
 पांचसेनेत्रेसठा॥५६३॥ सहूभेदजीवनामनुष्यनेतीर्यंचनो
 विचारपनवणाथकिविशेषजाणवो इहातोयथगोरवथाय
 तेमाटेनाममात्रलिख्याछे एजिवनुस्वरुपअजिवनेश्रोल

स्याविनाजिवनुंस्वरुपवरावरजाणेनहिमाटिश्रजिवनुंस्वरु
 पसंक्षेपथकिद्रेखाडिएछिए हवेअजिवनावेजेदएकरुपिए
 कअरुपितेअरुपिअजीवनाच्यारजेद्द धर्मास्तिकाय॥१॥
 अधर्मास्तिकाय॥२॥आकाशास्तिकाय॥३॥काल॥४॥धर्मा
 स्तिकायखंधतेचउदराजलोकप्रमाण॥१॥देशतेकल्पनामा
 त्र॥२॥धर्मास्तिकायनोप्रदेश॥३॥अधर्मास्तिकायखंध॥१॥
 देश॥२॥प्रदेश॥३॥आकाशास्तिकायखंध॥१॥लोकालोक
 प्रमाणो॥२॥देश॥२॥प्रदेश॥३॥लोकाकाशप्रमाण॥कालनोए
 कसमय॥१॥ एनोखधदेशहोयनहिंशामाटेजेएकसमयथि
 विजोसमयमलतोन्थी माटेकालनोएकजजेद॥एदशभेद
 थया॥१०॥धर्मास्तिकायद्रव्यथकीनित्यछे॥२॥ धर्मास्ति
 कायक्षेत्रथकीचउदराजलोकप्रमाणे ॥२॥ धर्मास्तिकाय
 कालथकीअनादिअनत॥३॥धर्मास्तिकायजावथकी॥४॥
 वर्ण गध रस फरसनथि॥४॥धर्मास्तिकायगुणथकी॥ च
 लणसहायगुण॥५॥अधर्मास्तिकाय॥१॥द्रव्यथी॥२॥ खे
 त्रथी॥३॥कालथीभावथीपूर्ववत्॥४॥ गुणथकीथिरसहाय
 गुण॥५॥आकाशास्तिकायद्रव्यथकी॥२॥क्षेत्रथकीलोका
 लोकप्रमाण॥२॥कालथकी॥३॥जावथकी ॥४॥ गुणथकी
 श्रावगाहनागुण॥५॥ कालद्रव्यथकी॥१॥क्षेत्रथीकालथी
 ॥२॥भावथी॥३॥गुणथकी ॥४॥ नवापुराणावर्तनागुण
 ॥५॥अरुपिअजीवना२०भेदथया दश१० जेदपेहे

ह्याछे तेमली ३० भेदथाय हवेरुपिअजिवनापांचसे
 नेत्रीशनेदकहेछे वर्णपाच॥५॥काला॥१॥निलो ॥२॥ पी
 लो॥३॥रातो॥४॥घोलो॥५॥गध॥२॥ सुभिगध ॥१॥ दु
 निगध॥२॥ रसा॥५॥खाटो॥१॥ स्वारो ॥२॥ तिखो॥३॥
 तमतमो॥४॥मिठो॥५॥फरसा॥८॥खरखलो॥१॥ सुवालो
 ॥२॥टाढो॥३॥उनो॥४॥जारे॥५॥हलुओ॥६॥लुखो॥७॥
 चोपडयो॥८॥संस्थान॥५॥एपचविशभेदाएकवर्णम॥२०॥
 जेदलाधे॥वेगधा॥२॥पाचरस॥५॥आठफरस ॥८॥ पाच
 संस्थानाएविश॥२०॥एपांचवर्णना॥२००॥जेद॥एमपांचर
 सनापणशो॥२००॥जेद॥पाचसंस्थाननापण ॥२००॥जे
 द आठगधा॥८॥वेफरस॥एदशनावसेनेत्रिश॥२३०॥भेद
 थया एमरुपीअजिवनापाचसेनेत्रीशनेदथया॥ ५३० ॥
 अरुपीअजिवना॥३०॥जेदमाहेभेगाकरीये एटलेअजीव
 द्रव्यनापांचसेनेसाठजेद॥५६०॥थयाएनोविस्तारजोवो
 होयतोश्रीपुनवणाजीमध्वेछे एविरीतेजीवअजीवनुस्वरु
 पजाणीते पछिआवकनात्रतलेतेनेथावरजीवनापछखाण
 तोछेनहिं अनेत्रसजीवनाअपराधिनीजयणाछे विणअप
 राधिरह्यातेमाअरजेजयणा अणारभिरह्यातेमासउउप
 ग्रहितनिजयणा ॥ एटलेअणापराधिअणारभेअनेअण
 उपग्रहित ॥ एवाजिवनेहणवाना आवकने पचखाणछे॥
 तेपणछकोटीनापचखाणछे ॥ एटलो॥मन ॥ १ ॥वचन

॥२॥ काया ॥३॥ थकीअनुमोदवानिजयपणाछे। माटे
 श्रावकनुव्रतछेकथोडु तेमाटे देशधिरातिकहिए तेपेहेलुं
 व्रततेप्रणातिपात जेपरजीवनेआपणा सरिखाजाणी
 सर्वजीवने रखवालेतेदया॥ एव्यवहारप्रणातिपातवि-
 रमणजाणवो हवेनिश्चेदयाकहेछे जेआपणोजीवकर्मवशे
 दूखीथायछे तेआपणाजीवनेकर्मथीछोडाववो आत्मगुण
 रखवालवागुणविचारवोतेचारभ्रकारेबंधहेतुपणाथीनिवा
 रे स्वरुपगुणनोप्रगटपणोकरवो प्रगटययोगुणतेरांखवो
 एमआत्मस्वरुपनेविपे विश्रामतेतत्वानुभवतेचारीत्रकहि
 ए तेनिश्चेदया एटलेज्ञानथीमिथ्यात्वनेखपावे आपणा
 जीवनेनिर्मलकरेछे तेनिश्चेदया तेजिवप्रणातिपातथकि
 विरम्योछे तेप्रणातिपातकह्यो हवेमृखावादकहेछे कुडो
 वचनवालवो तेव्यवहांमृखावादविरमणकहिये हवेनि
 श्चेकहेछे जेपरवस्तुपूढगलादिकनेआपणीकहेवि तेमृखा
 वचनछेअनेजीवनेअजीवकहे अनेअर्जावनेजीवकहेइत्या
 दिकअज्ञान तंभावमृखावादमेछेअथवासिदांतनोअर्थखो
 टोकहे तेमृखावादमेछे एमृखावादजेणेछांडयो तेनिश्चेमृ
 खावादथिविरम्यो एटलेविजाअदत्तादानादिकजोनाजे
 तोचारीत्रभाजे पणज्ञानदर्सनचारीत्र अनेनिश्चे जेणेमृ
 खावादभांज्यो तेणेसमकितज्ञानचारीत्रभांज्यां तथाआ
 गममांएमकह्योछेजेएकसाधुएचोथोव्रतभांज्यो अनेएक

साधुएविजोमखावादजांज्यो एटलेइहाजेणेचोथोत्रतभां
 न्यो तेआलोवणालियेशुद्धयाए पणजेसिद्धातादिकना
 मखाउपदेशदेवेते आलोवणालिधेपणशुद्धहोवेनाहिं॥हवे
 अदत्तादानकहेछे जेपारकीधनवस्तुछुपाविनेचोरीनेठगी
 नेलीयेतेचोरीछे एटलेअणदिठिपारकिवस्तुलेवेतेअदत्ता
 दानव्यवहारनयर्थाजाणवो निश्चेनयअदत्तादानकहेछे ते
 पाचइंद्रिनात्रेविसविपयनेआठकर्मनिवर्गणा इत्यादिक
 परवस्तुतेआत्मानेअग्राहछेपरछे तेलवानिवांछाकरे ते
 निश्चेनयअदत्तादानकहिए तथाकोइककहेजे विपयनि
 अनेकर्मनिवाछाकरेछे तेवाछाकोणकरेछे तेनोउत्तरजेपू
 न्यनेभेलुलेवाजोग्यकहेछे तेजिवकरमनिवाछाकरेछे तेपू
 न्यनावेतालिसजेदछे तेचारकर्मनिशुचप्रकृतिछे एटले
 जेव्यवहारअदत्तादाननहिलेवो पणअत्तरंगपुन्यादिकानि
 वाछाछे तेनेनिश्चेअदत्तादानलागेछे हवेमैथुनविरमणत्र
 तकहेछे तिहाजेकोइपूरुपपरस्त्रीनोपरीहारकरे तेमैथु

न्यवहारकह्यो तथास्त्रिपूरुपनोपरीहारकरे ते

हिये इहासाधुनेस्त्रिनोसर्वथा
 राणिस्त्रिमोकालिछेअनेपरस्त्री
 हवेनिश्चेकहेछे जेविषयान्नि
 तृप्णाएपरभावअनेवरणादिक
 तनोअभोगिपणो आत्मानास्व

गकरे अनेज्ञानवंतजिवनेध्यावेतेहमारमेपरभावमां वसेन
हि तेनिश्चेदेशावगाशिकजाणवो हवेपोसहकहेछे जेच्या
रपहोरअथवाआठपहोरसुर्वासमतापरीणामेनिरारंजसा
वद्यछोडि शिझायध्यानमेप्रवर्ते तेव्यवहारपोसहकहए
अनेआपणाजीवने ज्ञानंध्यानशुपोपिनेपुष्टकरे तेनिश्चे
पोसहकहिये जिवनेआपणेस्वगुणेकरीपोपियेतेपोषहक
हिये हवेअतिथिसंविभागव्रतकहेछे जेपोसहनेपारणेअ
थवासदासाधुनेजिनधर्मिश्रावकेआपणिशक्तिसारुद्रानदे
वो तेव्यवहारअतिथिसंविजागकहिए अनेजिवनेअथ
वासिष्यनेज्ञानजणवोजणाववो संजलाववोसांजलवोते
निश्चेअतिथिसंविजागकहिए एवारव्रतकह्यां:—हवेएवा
जेवारव्रतधारीश्रावकछे तेकरणिशिकरे तेदेखाडेछे श्रा
वकपाछलीचारघडिरातलेइउठे त्रणमनोरथनेविचारे ते
नानामआश्रवथकिकेदहाडेमूकाइश॥१॥सर्वविरतिचारी
त्रकेदहाडेअंगीकारकरिशु॥२॥समाधिसंथारोकेदिनआ
वगे॥३॥एवात्रणमनोरथश्रावकविचारेएनोविस्तारमनो
रथनावनाथकिजाणवो तेवारपछिश्रावकप्रतिक्रमणकरे
तेवारपछिउठिने श्रीजीनमंदिरदरशनकरवानेजाथ तेपू
र्वेकहयुंछे तेमजपंचअभिगमन तथादसत्रिकसाचवतोय
कोदर्सनकरेजोकटापिछितिजोगवईयेप्रमादनेवशेदर्शनक
रवानजायतो एकछठनिआलोवणआवे तयामनमांशंका

श्वेनयेकर्मनोक्कर्ता कर्मछे एश्रात्मा अनादिनोपरभाव नो गी
 थयो द्वारेपरजावग्राहकथयो प्रभावरक्षकथयो एटलेश्रा
 त्मानिज्ञायकता ॥ १ ॥ ग्राहकता ॥ २ ॥ भोग्यता ॥ ३ ॥ रक्षकता
 ॥ ४ ॥ विगडेकर्ता पणो विगडयो तेथी परभावकर्ता थयो तेणे पर
 भावरगी पणेश्रा ठकर्मनो कर्ता थयो छे पणसत्तायेतो स्वभाव नो
 कर्ता छे पण उपगरण अवराणाथी स्वकार्य करी सकतो नथी
 विभावने करे छे ने अज्ञान पणो जिवनो उपयोग जल्यो उपण
 न्यारो छे अने जिवतो आपणा ज्ञानादिगुण नो कर्ता नो का छे
 एवापरीणामते स्वरुपानुजाइरुप तेनि श्रेभोगोपन्नोगत्र
 तजाणवो ॥ हवे अर्थदंड विरमणत्रतकहे छे अर्थकामो जि
 वने पाप आरभेल गाववो ते अर्थदंड त्यांहां जे पारके वास्ते आ
 ज्ञा प्रमुख देविते व्यवहार अर्थदंड अने जेशुभ अशुभ कर्म
 मिथ्यात्व आविरति कखाय जोगशुं कर्मबंधाय छे ते जिव आप
 णा करी जाणे एनि श्रे अर्थदंड जाणवो हवे समायक कहे छे
 जे मनवचन कायाना आरभयि टाले निरारंज पणो वतावे ते
 व्यवहार समायक जाणवो अने जे जीव ज्ञान दर्शन चारी त्रगु
 णा विचारे ते सर्व जिवसत्त्वगुणे एक समान जाणी सर्वसम
 तापरीणामते नि श्रे समतारुप समायक कहिए हवे देशाव
 गाशिकत्रतकहे छे जे मनवचन कायाना जोग एकठा करी ए
 कथानके वेशी धर्म ध्यान करवो ते व्यवहार देसावगासिक
 अने श्रुतज्ञान शुद्ध व्यवश्रो लखिने पांचद्रव्यत्या

गकरे अनेज्ञानवतजिवनेध्यावितेहमांरमेपरभावमांवसेन
हि तेनिश्चेदेशावगाशिकजाणवो हवेपोसहकहेछे जेच्या
रपहोरअथवाआठपहोरसुधीसमतापरीणामेनिरारंजसा
वद्यछोडि शिझायध्यानमेप्रवर्ते तेव्यवहारपोसहकहए
अनेश्रापणाजीवने ज्ञानध्यानशुपोपिनेपुष्टकरे तेनिश्चे
पोसहकहिये जिवनेश्रापणेस्वगुणेकरीपोषियेतेपोपंहक
हिये हवेअतिथिसंविभागव्रतकहेछे जेपोसहनेपारणेअ
थवासदासाधुनेजिनधर्मिश्रांवकेश्रापणिशक्तिसारुदानदे
वो तेव्यवहारअतिथिसंविजागकहिए अनेजिवनेअथ
वासिष्यनेज्ञानज्ञणवोज्ञणाववो संजलाववोसांजलवोते
निश्चेअतिथिसंविजागकहिए एबारव्रतकह्यां—हवेएवा
जेबारव्रतधारीश्रावकछे तेकरणिशिकरे तेदेखाडेछे श्रा
वकपाछलीचारघडिरांतलेइउठे त्रणमनोरथनेविचारे ते
नांनामश्राश्रवथकिकेदहाडेमूकाइश॥१॥सर्वविरतिचारी
त्रकेदहाडेअगीकारकरिशुं॥२॥समाधिसंथासेकेदिनश्रा
वशे॥३॥एवात्रणमनोरथश्रावकविचारेएनोविस्तारमनो
रथजावनाथकिजाणवो तेवारपछिश्रावकप्रतिक्रमणकरे
तेवारपछिउठिने श्रीजीनमंदिरदरशनकरवानेजाय तेपू
र्वेकहयुंछे तेमजपंचअभिगमन तथादसत्रिकसाचवतीय
कोदर्सनकरेजोकदपिछतिजोगवईयेप्रमादनेवशेदर्शनक
रवानजायतो एकछठनिश्रालोवणआवे तयामनमांशंका

राखिनेनजायतोपाचउपवासनिआजोवणआवे एवूपंच
 महाकल्पभाष्यमध्येकह्युछे तेमाटेजिनराजनांदर्शनअव
 श्यमेवकरवां दर्शनकरचापछिगुरुनेवादे वांदिने नम
 स्कारकरेपछिधर्मदेशनासाजलेपछि सांजलिनेजिनमंदि
 रेजीनपूजाकरवाजाय तेपूजाविधि आंधविधियंकिजा
 एजो त्याहासाजनाप्रतिक्रमणकरे इत्यादिकश्रावकनि
 विधि साध्यदिनकरथकिजीज्यो तथाश्रावकहोयतेपर्वति
 थियेपोसासमायकतपइत्यादिककरे तथाश्रावकहोयतेसा
 तेक्षेत्रेधनवावरतेसातक्षेत्रनांनामकहेछे साधु ॥१॥ साप
 वि॥२॥ श्रावक ॥ ३॥ श्राविका ॥४॥ देहरु ॥५॥ जिनपढि
 माने ॥६॥ ज्ञान ॥७॥ एसातक्षेत्रनोऽर्थसंक्षेपथकिदेखाडेछे
 हवेसाधुसाधवि एवेनि एकरीतछे मांटेजेगोकहेछे साधुने
 श्रावकहोयतेसातपिंडआपे अणके० ॥ आहार ॥२॥ पा
 एके० ॥ पाणि ॥२॥ खाढमके० ॥ मेवाप्रमुख ॥३॥ स्वादम
 के० ॥ मुखवासा ॥४॥ लेनके० ॥ वस्ति ॥५॥ सेनके० ॥ सिज्या
 पाटपाटलाप्रमुख ॥६॥ वल्लके० ॥ वस्त्रपात्रप्रमुख ॥७॥
 एसातपिंडसाधुसाधविनेदेवानिमित्तधनवावरे तथाश्राव
 कश्राविका एवेक्षेत्रनाकाजेपणधनवावरे शिरितेतकहेछे
 जेश्रावकहोयतेशयकाडे स्वामिवल्लकरे तथास्वामि
 भइनीजकिवहुमानकरे त्यारेवादिबोलयोजेसंघकाढ्याय
 एतोइशानांकामेछे एनोउत्तर जेतकिधुंसंघ

काढेगुंथायतेसंघ काढयाथकि अनंताकर्मनि निकाश्रित
गांठितोढे शामाटेजेतिर्येजइनेवांदवानांमोटांफलकिधांछे
केमकेश्रीजगवतिजीमातिर्येकरनिवदणाअधिकारेत्याहांज
इनेवांदवानोमहालाजकीधोछे॥तेवारेवादिबोल्याजेएतो
शास्वतातिर्येकरहता आतोप्रतिसाछेतेनुंकेम एनोउत्तर
जेप्रतिमानेजीनपडीमाकहिनेबोलाविछे॥ तेवारेतमेकेहे
शोजेएतोजिनपडिमाकहिछे षणजिनवरतोकह्यानथी ए
मानेएमांतोफरकघणो तेनोउत्तर जेजगाएधुपनांअधि
कारचाल्यो तेजगाएएवोपाठछे ॥दाहंधुवंजिनवराणां॥ए
वोपाठज्ञाताप्रमुखघणासूत्रमांछेएटलेइहांजिनपडिमाने
जिनवरकहिनेबोलाव्याएटलेएपाठजोतांजिनवरमानेजि
नपडिमामाफरककांइदिसतो नथी माटेतिर्येजइनेवांदवा
नुंघणुंफलछे तथातमेकह्युंजेहंशानाकांमछे ॥ तेनोउत्तरां
जेगाडांगडेराइत्यादिकजोडवां॥जोडाववां॥तेकारणथकि
तमेहंशामांगणोछो तेएमछेनहिं ॥ शामाटेजेश्रीदसासुत
स्कंधमां श्रेणीकराजाभगवाननेवांदवागयातेसमेवेसवा
नेवास्तेरथमगाव्योछे ॥ तेरथनेधर्मरथकहिनेबोलाव्यो
तेरथज्यांचालेत्याहाहंशाजथाय केमजेत्यांकह्युंछेके बल
धनेआरघोचतादोडावताथकागयातेजगाएहंशाकेमनथा
ए पणइहांतोधर्मरथकह्योछे॥ तथागाममध्येथीउकरडाक
ढाव्या पाणीछंटाव्यांतथावउरंगीशोनासजीनेगया तेले

खेतोमहाआरंभनुकामदिशेछे पणभगवतेतोकाइपापक
 ह्युछेनहिं भगवतेतोएनुफलमोक्षनुंकहयुंछेतेमाटेधर्मका
 मनेअर्थनिकल्या तेकामनेविपेजेटलुकामथाय तेटलुध
 र्मखातामागणाय एमजोनगणीएतोसाधुनोविहारगांच
 रीअटकीजायतेमाटेडाह्याहोयतेविचारीजोज्यो तथाति
 र्थेजइनेवाटवुतेनुकारणकेहेछेजेठेफाणोतिर्थकरादिमोक्षपो
 हतातेजआपणेपूजनिकछे शामाटेजेश्रीभगवतीजीमांड
 दायनराजानेअधिकारेकहयुंछे ॥ धनतेनगरी॥धनतेगाम
 आंगलइत्यादिकनेधनकहिबोलाव्याछेशामाटेजेश्रीजग
 वानविचरताहोयतेमाटे॥ एटलेज्यातिर्थकराविचरताहोय
 तेनगरीयादिकनेपणधनकेहेवाणु तोतेनगरीनेविपेतोको
 इजीवसुखनवोधिहशे कोइदूलनवोधिहशे अथवापापि
 कोइकहशे कोइकधर्मिहशेअथवागामनीमाहेलीकोर को
 इपणशुधअशुधकोइकवस्तुहशे तंपणसर्वेनेधनकह्युं तो
 जेजगाएतिर्थकरनुंनिर्वाणकल्याणकथयुं तोतेजगाएफर
 सनाकल्याणककेमनथाय वदणनमणकर्ताकर्मनिर्जरे डा
 ह्याहोयतेविचारीजोज्यो माटेसंघतिर्थजात्रानिमित्थाव
 कनेधनवावरवु ॥ तेनोविपेशअर्थसेत्रुजामाहात्मथकीजा
 णजो तथास्वामिवछलनोमितेधनवावरे ॥ एटलेस्वामि
 के०॥सखाधर्मनाश्रोनेजमवुजमाटवुंकरे॥शामाटेजेश्रीज
 गवतीजीमांसखजीपुष्कलीजीनेअधिकारे पणस्वामिव

छलनोअधिकारदिशेछे तथास्वांमिजईनीजक्तिवहूमान
 करवुंएनोपणपाठश्रीभगवतीजीमांसनंतकुमारइंद्रनेअधि
 कारेजोज्योअग्यारमांतथाधारमांशतकमांश्रावकश्रावक
 नेवंदणनमस्कारकरे ॥ एवोपाठछे ॥ तेमाटेश्रावकहोयते
 श्रावकश्राविकानाविषेवावरे हवेवलीश्रावकपांचमाक्षेत्रे
 देहरुंकरावे तथाछठेक्षेत्रेजिनपडिमानुंभराववुं ॥ तथाटे
 हरानुंरंगाववुं ॥ तथाआंगीरचांचवी ॥ तथाअठाइमहोछव
 करावे तेवारेवाडिबोल्यो ॥ जेदेहरुंकरावेप्रतिमाअरावे
 शुंथाय ॥ तेनोउत्तरा ॥ जेदेहरुकराववुं ॥ प्रतिमाभराववि ॥ एका
 मश्रावकनेअयेदिशेछेशामाटेजेदेहरु ॥ तथाजिनप्रतिमा
 आजपांचमाआरामांआधारभूतछे केमकेकेवलिनतोआ
 जविरहकालछेशुधआलंवनतोआजएछेतथाश्रीअनुयोग
 द्वारमांपणकह्युंछे जेभाषानिक्षेपोनामथापनाद्रव्य विना
 थायनहिं तथाचारनिक्षेपामां एकेनिक्षेपोउथापे ॥ तेने
 मिथ्यात्विकहिए ॥ तेवास्तेथापनानिक्षेपोअवश्यमानवो ॥
 यदूक्तं ॥ नामजणाजणजणा ॥ ठवणजणा ॥ जणपडिमाओ ॥
 दवजणाजणजिवा ॥ चावजणाजणसमोसणहुथा ॥ १ ॥
 एगाथामांपणथापनानिक्षेपामांतोजिनपडिमाजकहीछे ॥
 अथवाअनुजोगद्वारमध्ये श्रावशंकनेअधिकारेदशप्रकार
 नीथापनाकहिछे तेतोसदबोधअनेअसदबोधकहिछे त
 थाएतोगुरुनीथापनाछे आतोतिर्थकरनिथापनाअनेवली

सदबोधछे तो एनेकरावतांनफोकेमनहोय ॥ डाह्याहोकर
 विचारीजोज्यो तथादेहरानोकरावतारोतथाप्रतिमानोज
 रावनारो वारमेदेवलोकेउपजे एनुश्रीमहानिशियजिमां
 कह्युछेतेमाटेआवकहोयतेदेहराकरावे प्रतिमाभरावेश्रां
 गीरचावे अठाइमहोछवादिक्करे ॥ एवामारगेधनवावरे
 हवेसातमुक्षेत्रजेज्ञान तेमारगेपणधनवावरे एटलेज्ञान
 लखावे तथाज्ञानभणतोहोय तेनेसाज्यआपे तथाज्ञानि
 नाबहूमानकरावेशामाटेजेश्रुतज्ञानछेतेमोटुछे जदपिकेव
 लज्ञानमोटुछेपणस्वअनुंजायीछेअनेश्रुतज्ञानछेतेस्वपरप
 रकाशेदिसेछे माटेज्ञानिनाबहूमानकरवां केमजेश्रीमंठि
 सुत्रमांज्ञानिनेसूर्यनीचंद्रमानीकल्पवृक्षनीसंभुरमणसमु
 द्रनिइत्यादिकघणीउपमाआंछे॥माटेज्ञानीनुंबहूमानविशे
 पेकरवु ज्ञानभणतोहोयतेनीपणसाज्यकरवि॥ शामाटेजे
 ज्ञाननाभणनारापासेपइशोहोयनहिअनेव्याकरणादिक
 जणवानेपइशोपणजोइयेपुस्तकपानुंपणजोइयेमाटेएवात
 निसाज्यगृहस्थिआपेतारेभणाय त्यावाटिएतर्ककरी जे
 साधुतोसाज्यवछेनाहिं तमेकहोछोसाज्यआपेतोजसाधुभ
 णे तेनुकेम तेनोउत्तरदेछे जेसाधुहोयतेसाज्यनवंचेपणते
 दहाडेतोसूत्रपाठउपाध्यायजीभणावता अनेअर्थआचा
 र्यआपताअनेमारुंतारुहतुनाहि ॥ जेजतुंतेनेजणावता॥
 आजतेमानाआचार्यउपाध्याय कियातमारीसरतेआवेछे

जेतैनिपासेजइनेजणे अथवाज्ञानआशरीसाज्यवंचेतोदो
 पणजणातुंनथि शामाटेजेपोतानेशरीरेसुखवंचतोनथी ए
 तोआत्माहेतेज्ञानजणे. नेज्ञानकांजेसांज्यवंचेते तथा
 श्रीपंचमहाकल्पजाप्यमध्येपणकह्युंछे जेज्ञाननोसाधुअ
 भ्यासंकरतोहोयतेठामनेविपे कदापिआहारनेविपेआधा
 कर्मादिदोपलागतोहोयतोज्ञानअभ्यासकरवानेसाधुरहेके
 नरहे त्यांकह्युंछेजेज्ञाननोअभ्यासकरतांकदापिआधाक
 र्मादिदोपलागैतेनोविचारकरेनहिं पणज्ञाननोअभ्यासक
 रवोगामाटेजेज्ञाननहोयतोदोपअदोपकोणजाणेमाटेज्ञा
 नमोटोपदार्थछे तेमाटेज्ञानने वास्तेसाज्यवंचतांदोपण
 जणातुनथी तथाजोशरीरादिकनेअर्थेसाज्यवंचेतोदोपण
 लागे जोयामांतोहेवुंआवेछे पछिकेवलीगम्य तथाजेगृह
 स्थिआवकहोय तेसुत्रसिद्धातादिकलाखिराखे शामाटेजे
 साधुसाधविआव्यागयानेवांचवाचणवानेखपलागे तथा
 गाममांपणविजाआवकाने भणवागणवांखपलागे एसा
 तमुक्षेत्र एमआवकहोयते सातेक्षेत्रेधनवावरे वलि
 एनेअनुसारेविजापणउचितथानकजोइनेवावरे एमआव
 कनुंस्वरुपकह्युं तेआवकत्रणप्रकारनाछे॥ जघन्या॥१॥ मं
 ध्यमा॥२॥उत्कृष्टा॥३॥तेजघन्यआवककेनेकहिंएकेप्रजाते
 नोकारसिरात्रेदूविहारअनेवाविसअक्षनोत्यागकरतेने
 जघन्यआवककहिंए॥१॥अनेवारव्रतआवकनांअंगीकार

करचाहोय तेनेमध्यमश्रावककहिए॥२॥ अनेवारव्रतउच
 रचाहोयअनेअग्यारपाडेमावहिहोय तेनेउत्कृष्टोश्रावक
 कहिए॥३॥ एविरिंतेश्रावकनोधर्मतथासाधुनोसर्वविरातिप
 चमहाव्रतधर्म एवुंश्रीवितरागप्रमात्माएपरुप्यु जेधर्मते
 नेधर्मकरीसदहे तेनेधर्मतलसदह्योकहिए एतलेधर्मतल
 के०॥साधुश्रावकनुजेधर्मतथाखटद्रव्यनवतलनयनखेपाप
 क्षप्रमाण स्यादवाढखटकारकादिकसर्वसदहजो हेभव्य
 जीवोसमजमाआवेतोसमजवु कदापिसमज्ञमानआवेतो
 एमधारवुं जेमारीबुद्धिश्रीछीछे अनेकेवजोनुज्ञानअनतूछे
 तेपिमारीसमजमाआवतुनथी पणजेआगममांजावपरु
 प्या तेसर्वतेहेतछे एवोविचारराखवो पणपोतानिमतिक
 ल्पनाथी कशोनवोमार्गथापशोमां एविरिंतेहेभव्यजीवो
 धर्मतलनेसदहजो ॥ इतिधर्मतलतृतीय. ॥

॥ इतिश्रीसम्यक्द्वारग्रयोमुनीश्रीहूकमचंदजीविरचिते
 पटमोअध्यायपूर्ण ॥६॥

एछठाअधिकारनेविपेधर्मतलश्रोत्रखाव्यो हवेसा
 तमेअधिकारे एतलनासदहणानुंफलदेखाडेछे हेभव्यजी
 वोआर्यक्षेत्र मनुप्यजव देवगुरुनिजोगवाडतेपामविघणी
 दुर्लजछे अनंतापून्यनिराशिनाथोकडावध्यात्यारेतमेपा
 म्याछो पामिनेजोपरमादकरशोतो फरीनेच्यारगति
 ५ परीब्रह्मणकरशो फरीथिआजोगवाईमल

विघणीदूर्लभछे तुंजेआसंसाररुपमोहजालमांगुंथाणोछुं
 अनेपूत्रकलत्रधनधान्यादिकमाहरुंमाहरुंकरेछेतेतारीभूल
 छेतेकोइतारुंछेनहि केमजेमोहजालनेविपेगुंथायाथकि
 नर्कतिर्जचनांदूखभोगववांपडे तेनर्कनूस्वरुपलेशमात्रक
 हेछे तेनर्कनाक्षेत्रनोफरसकेवोछेतेकहेछे जेवितरवारनि
 धार जेविवराछिनीअणी जेविकटारीनीधार जेविनालो
 डनीअणी जेविअस्त्रानिधारजेवोनगरनोदाहजेवोगामनो
 दाहएवोतोउष्णफरसछे वलिजीहांगोस्वरुघणांतिखीअ
 णिनांपथरायेलांपडयांछे तथाडाअतिखिअणिनाउगेल
 नुवनछेवलिज्यांहावेतरणीनामानदियोछेज्यांहांअसिपत्र
 वृक्षनांवनछेज्यांहांघणाकुंजीपाकछेतेकुंजीपाकनोखरख
 रोफरसपूर्वैकहोतेवोजेवलीजेविपोपमाघनिमहाहिमा
 जलटाढ जेमहिमात्राक्षेत्रनीटाढज्यांहामाणसनामाणस
 क्षिजीजायछेतोढारोनूनेझाडनूंशुकहेवूएवाक्षेत्रफरसनादि
 कथीतेटाढअनंतगुंणीवधतीछे एकुंभीपाकतेउपरथीचोखू
 णीछेअनेमांहेथकिकुडानाआकारेछे तेकुंभीपाकनेविपेना
 रकिआविउपजेतेप्रथमसमयेनारकिनीआंगुलनेअसंख्या
 तमेजागेअवगाहनाहोयपछिएकअंतरमूहूर्त्तमांजेटलीना
 रकिनाशरीरनिअवगाहनाहोयएटलीवांधे तेवारेकुंजीपा
 कपेटेथकिपहोलीअद्वोउर्द्धसंकिर्णानोफरसमहा तिखोने
 वलिटाढोतेथकिथइजेवेदनातेथीमहारीवपोकारेअनेमुखथी

कहेजेमुनेइहांथकिकाढोकाढोतेवारैनर्कक्षेत्रनेविपेरह्याजेप
 रमाधामि तेपनरजातनाछे तेनानामकहेछे श्रंवा॥१॥ अंब
 रिखा॥२॥ श्यामा॥३॥ सवज॥४॥ रुद्र ॥५॥ महारुद्र ॥६॥
 काला॥७॥ महाकाला॥८॥ असिपत्रा॥९॥ धनुष्य ॥१०॥ कुंभ
 ॥११॥ वालुक॥१२॥ वेत्रणी॥१३॥ खरस्वर॥१४॥ महाघोष
 ॥१५॥ एवाजेपनरजातनापरमाधामितेत्यांपासेहोयतेदो
 डिनेआवेतेआविनेनारकिनेकहेजेमाहलिकोरतोहजीतने
 सुखछेअनेवाहेरतोमहादूखछेअनेकुभीपाकनुंमोढुंसांकडूंछे
 माटेतनेतोडितोडिनेकाढवोपडशे त्यारेतुंनापाडिशपणअ
 भेतनेछोडिशुनहि वास्तेनुपेहेलाजमाहिरहेपणतेनारकि
 महादूखेपिडयोथकोदिनवचनकहिनेबोलेजेहूंमहादूखिछु
 महाराथीनरकनुदूखजोगवातुनथीमाटेमनेकाइकरतांडहा
 थकिकाढोहूंनानहिपाडूतेवारपरमाधामिसाणशिथीतोडि
 तोडिनेकाढेत्यारेमहारीवपोकारेनेकहेजेमुनेरेहेवाद्योपण
 तेकाइछोडेनहिइत्याटिक वलीवाहेरनिकल्यापछिपणम
 हाछेदनभेदनताडनातर्जनादिकवेदनाघणिजोगवे ज्ञानि
 विनाआपणथकिहिजायनहि तेनोविशेषअधिकार श्रीजी
 वाजीगमंतथापन्नवणाप्रमुखसूत्रथकिजाणजो एवानरका
 दिकनामहादूखजोगवांपडे तेवास्तेहेभव्यजीवोमोहजा
 लनेविपेमुझावूंनहि जेमोहनेविपेमुझाय तेनेएवांदूखभी
 गववापडे ॥ जेमब्रह्मदत्रचक्रवर्तिमोहने विपेमुझाणो

अनेसाधुनोउपदेशनमान्यो त्वारेमरीनेसातमी नकेग
 यो तेमहेन्नव्यजिवो एवंजाणीने जोगवाइमलेथकेप्रमा
 दकरशोनहिं धर्मसाधनकरजो जेथकिदेवलोकनांसुख
 जोगवो परंपराएमोक्षनांसुखपणजोगवशो वलिजेपुत्र
 कलत्रधनधान्यादिकमाहारुमाहारुंकरोछो तेकांइछेनहिं
 तेतोसर्वस्वार्थनासगांछे तेनुंस्वरुपदेखाडेछे जेमश्रेणि
 कराजाकुणीकनोअंगुठो छमासेसुधिमुखमधेरारुयो अ
 नेलोहिपरुचुझ्या शामाटेजेमारोपुत्ररखेमरीजशे केरखे
 दुखीथशे एमजेमोहनावशथकिएविसीतेपुत्रनेवास्तेपोते
 दुखजोगव्युं तोतेजपुत्रे पोताने काष्टार्पिंजरमांघाल्यो
 अनेनित्यप्रत्येपांचसेहेकोरडामरावे अनेजीविथिपणगया
 तोजोयंपुत्रनुसगपण एकराज्यनेवास्तेपितानुंमृत्युकर्धुं
 अनेमहादूखदिधु. तोहेभव्यजिवोसंसारनेविपेपुत्रनुंसग
 पणअनीत्यछे एसर्वस्वार्थनुसगुछे तथाकलत्रके० ॥ जे
 स्त्रीतेनेतो माहारीकरीजाणेछे तेतोससारने विपेमहादू
 खदाइछे केमकेस्त्रिनामोहनामास्थाथका नंदिखेणेनि
 याणुंकरधु तोअंतेनर्कमलि. तोजुवोस्त्रिनोमोहरारुयोतो
 परजवेमहानर्कमलि अनेआजवनेविपे पणस्त्रिसुखदे
 नहिं जेमजसोधरने स्त्रिएझेरदेइनेमारयो तेनोअधि
 कारसमरादित्यचरीत्रथकिंजो जो तथापरदेशी राजाप्र
 मुखघणाजिवोस्त्रिएमारयाछे माटेहेन्नव्योस्त्रियोकोइनी

सगीयोनथी एतोस्वार्थनिसर्गीछे एवुखोटुसगपणतेनेवि
 पेतमेकेममुझाइरहाछो एस्त्रितोआभवपणदुखदाई अ
 नेपरजवपणदुखदाइछे स्त्रिभासगपणमापणराचवुनहिं
 तथाजेसंसारनेविपेमाताछे तेपणस्वार्थनिसर्गीछे जेमत्र
 ह्यदत्तनेचुलणीराणीएमारवानो उपायकरयो जुवोसगो
 टिकरोछे पणकाइदयाआविनहि तथाचेलणाराणीए कु
 णीकनेजनम्योतेजवखतेउंकरडेनखाव्योतोजुवोमातानां
 सगपणपण ससारनेविपेएवाछे इत्यादिअनेकट्टांतछे
 तेअथोधकिजाणजो बलिसंसारनेविपेजेसगपणछेतसग
 पणनोकांइनियमनथीजेएनुएसजगपणरेहेशेजेपूत्रहोयते
 पूत्रपणेएवोकाइनियमनथी जेपूत्रहोयतेपीतापणैथाय अ
 नेपूत्रहोयतेस्त्रिपणैथायकेमजेशुकराजानामातापीतातेओ
 पाछलेजवपोतानीस्त्रिओहती तेनीकथाश्राद्धविधिमांछे
 तथाश्रीअशकुमारनोजीव तथाश्रीऋषभदेवस्वामीनोजी
 व केटलाएकभवनेविपे स्त्रीभरतारनूसगपणथयु केट
 लाएकभवनेविपेमित्रपणुथयू आभवनोविपेदाढोनेपडपोत
 रोथया तथाजसोधरपोतानापूत्रनोपूत्रथयो तथाजसोध
 रनिमाताहतीतेआजवनेविपेस्त्रीथइइत्यादिकविचारतास
 गपणनोनियमरहेतोनथीतथासिद्धातमापणकहयुछेजेएक
 एकजीवनेमाहोमाहे अनंतांसगपणथयां एवुजेखोटुसग
 पणतेनेविपकोणराचे केमजेकियोजविआपणोसगोछेअने

कियोजीवसगोनथी एटलुंविचारिनेजोइएतो सर्वेजी
 वसाथे आपणांअनंतांसगपणथयां माटेएमांमातापि
 ताकोनेकहीए तथाभ्रातकलत्रपुत्र कोनेकहीए जेसर्व
 जीवसाथे अनंतांसगपणथयां माटेएवासगपणनेविपे
 राचीरहेवुनहि एवासगपणकरतां अनंतोकालगयो पण
 कांइआत्मानु कल्याणथयुनहि जेदहाडेसंसारथकी वैरा
 ग्यपामीने धर्मकरणिकरशो तेदिनआत्मानुकल्याणथशे
 वलिकायानुस्वरुपदेखाडेछे हेअव्यजविो तमेशरीरनाव
 णगंधफरस देखिनेघणुंलोचाइरह्याछो जेरखेमारी
 कायामुकाये रखेदूखपामे रखेविगडे एवंविचारोछोतेस
 र्वखोटुछे शामाटेजे हेदेवाणुप्रिय तमनेकायानास्वरुपनी
 खवरनथी एकायातोपुढगलदलछे एकायानेविपेतोरुधि
 रछे तथामसछे तथाजेजछे तथानसजालछे विर्यछे पेसि
 छे लघुनित्यछे वडिनित्यछे एवाशरीरनेविपेतमे शुंराचि
 रह्याछो एशरीरनेपूर्वेएटलुं पालोपोसोसाचवो पणअंते
 काइरेहेवानुंनथी शामाटेजेपुढगलनो स्वभावतो सडण
 पडणविद्वंसणछे तेमाटेएनेविपेमुर्छां शावास्तेलाववीपडे
 तुंतारास्वरुपनी गवेखणाकरेतोठीक माटेएहवीकायांउ
 पर मुर्छाराखवीनही केमकेकायाछे एतोअसास्वती
 छे अथीरछे एनोतोधर्मजं मलवाविखरबानोछे एटलेसं
 जोगेमले अनेविजोगेजाय एवाशरीरउपर ममताराख

वीनही हवेआवखानु अनित्यपणुदंखाडेछे हेभव्यजीवो
 ससारनेविपे जेआवखुंछे एतोअनित्यछे अनेतुमेतोतृपना
 घणीलावीराखोछो अनेजीवत्वर्ना घडीनिवखरछेनहि
 केमके आवखुतोअथीर जेमडाजविंदूके० ॥ जेमडा
 भनीअणीउपर पाणीनोविदू केटलीवारठरे तेमआ
 वखुपण अथीरजाणवुं तथाजेमहाथीनो कानचपलछे
 तेमआवखुपण अथीरछे तथाजेमपाणीनोपरपोटो जे
 मसंध्यानोरग इत्यादिकअनेकद्रष्टातेकरीनेआवखुतोअ
 नित्यछेएवुआवखुअनित्यछेतेनेविपेतु माहारुंमाहारुकरी
 माचीरह्योछुं अतिशयतृपनानोवायोथको अनेकआरंज
 करेछे अनेकालतोअचानक आवीपुगशे पछिबांध्यांजेक
 र्मते हारेआवशे अनेधनधान्यादिकमेलव्युं तेतोइहारहे
 शे अनेएनोतोभोगदारी कोइकथशे अनेनरकादिक दू
 खतोतारेभोगववापडशे जेमसभोमनामाचक्रवर्तिछखंड
 नोतोभोगदारीहतो पणअतिशयतृपनानोवायोथकोसमु
 द्रमध्येवुडीमुआ एराजपाठरिद्वितोइहारहि अनेपो
 तानेमरीनेनरकेजवुपड्युं तेमहेभव्यजीवो एवुआवखुं
 अथिरजाणीनेमोहममतानिवारीनेधर्मसाधनकरो तेधर्म
 साधवानुंमूलतेसमकितछेतेप्रथमकहयुंछेअनेदेवतत्व॥१॥
 गुरुतत्व॥२॥धर्मतत्व॥३॥एत्रणतत्वनेसदहेतेनेसमकित्ती
 कहिएएटलेसमकितआव्युएसमकितनुंफलशु समकितनु

फलव्रति व्रतिके० ॥ जेसर्वविरतिदेशविरतितेनेव्रतिकहिए
 व्रतिनुफलतेसंवर ॥ संवरके० ॥ आवतांकर्मनुरुंधवू ॥ तेहने
 संवरकहिए ॥ तेसंवरनुफलतेतप ॥ तेतपनाचारजेद
 अणसणके० ॥ नोकारसिथीमांडिनेछमासिपर्यंत तेअ
 णसणतपकहिये ॥ १ ॥ अणीदरीके० ॥ पुरुपनेवत्रीसकव
 लनुप्रमाणछे स्त्रीनेअठ्याविसकवलनुं प्रमाणछे ते
 मांथक्वितथाच्यारकवलचुरुंब्याउठे तेनेअणोदरीतपक
 हिये ॥ २ ॥ अनेवृत्तिसंक्षेपके० ॥ आगेवृत्तिहोयतेमांसको
 चाविके० ॥ सांकडीकरवी तेनेवृत्तिसंक्षेपकहिये ॥ ३ ॥ स
 चाहोके० ॥ पटरसमाथि ॥ १ ॥ २ ॥ ४ ॥ त्यागकरवा ॥ ४ ॥ काय
 क्लेशके० ॥ उश्नकाळेतापनीआतापनालेवि सितकाले
 सितनीआतापनालेवि ॥ ५ ॥ सलिनताके० ॥ अंगउपांग
 नुंसंकोचवूं ॥ ६ ॥ एपटविधवाह्यतप ॥ ६ ॥ एथाकिकायावलवा
 नि ॥ लोकोमातपसिजणाय ॥ अनेकर्मवलवानिजना ॥ हवे
 पटविधअभ्यंतरतपकहेछे ॥ प्रायश्चितके० ॥ लाग्यांजेपापते
 नेवारंवारतेसंभालिनेआलोवे ॥ १ ॥ अनेअरीहंतादिकनी
 विनयबहूमांनकरवू ॥ २ ॥ वियावचपुलकप्रमुखदसनोन्था
 बहूविधिके० ॥ घणानो ॥ ३ ॥ सझायजेअणवुअणाववूंतेनेस
 झायकहिये ॥ ४ ॥

ध्याननुस्वरुपलखीएछीए ॥ ध्यानके० ॥ धर्मध्यां
 न ॥ हवेच्यारध्यानकहिएछीए ॥ त्याच्यारजेदध्यानुज्ञा

छै॥ आर्तध्याना॥१॥ रुद्रध्याना॥२॥ धर्मध्याना॥३॥ शुद्ध
 ध्याना॥४॥ पेहेलावेध्यानअशुभछे एपरीहरवा अने२शु
 द्धध्यान एआदरवां एकध्यानविपेअंतरमूहूर्त चितनोउप
 योग तन्मयएकाग्रपणेथिररहेवो तेध्यानकहिए अनेके
 वलिनेध्यानेनोरोकवोतेजध्यानकहिए ॥यदूक्त॥ अतोमू
 हुतोमिता॥चितावस्थाएमेगवल्छु॥मिच्छोमच्छाएज्ञाणां॥जो
 गनिरोहोजिणाणंतु॥१॥ हवेआर्तध्यानकहेछेमनमाकांइ
 कपीडाए आर्तथायजेआहाटंदोहटप्रणाम तेआर्तध्यान
 कहिये॥१॥तेआरतध्याननापायाच्यारछे॥ पेहेलोइष्टवि
 योगा॥इष्टके०॥षलभभाइमित्रसञ्जनमातापितास्त्रिपुत्रध
 नप्रमुखनोवियोग एकत्वआर्तनुंकरवु तेइष्टविजोगआर्त
 ध्यानकहिये॥१॥विजोअनिष्टसजोगके०॥ अणगमतिव
 स्तुनुआविनेमलवुतेनिचिंता आक्वेवारेटलेएवोजेएकत्वप
 रीणाम तेअनिष्टसजोग॥२॥त्रिजोरोगचिताआर्तध्यान
 के०॥शरीरमारोगउपन्यातेनिचिंताकरे तेरोगचिताआर्त
 ध्यान ॥३॥ चौथोअग्रशोचआर्तध्यानते आवताकालनि
 चिंताकरवि जेआवताकालमाआमकरिशुकेआमकरिशुए
 अग्रशोचआर्तध्यानकहिए ॥४॥ हवेरुद्रध्यानकहेछे रुद्र
 ध्याननापायाच्यारपेहेलोहिसानुवधिरुद्रध्यानके०॥ जिव
 हिसाकरतोकरावतो अथवासग्रामसबंधिवातकरतोसाभ
 लतो तेनीअनुमोदनाकरतो तेपेहेलुध्यान॥१॥विजुमृपा

नुबंधिरुद्रध्यान ॥ जेसृपावोलिनेराजीथावा॥तेविजोपायो
 ॥२॥त्रिजुंचोरानुबंधिरुद्रध्यानके०॥चौरीठगाइकरवाना
 प्रणाम॥ एत्रिजोनेदा॥३॥घोथोपरीग्रहरक्षणानुबंधिरुद्र
 ध्यानके०॥ नवविधपरीग्रहवधारवानाप्रणाम ॥ अथवा
 होयतेनेरखवाजवानाप्रणाम॥ एघोथोपायो ॥४॥ ए
 रुद्रध्यानतोपेहेलोपायो छठागूणाठाणासुधिछे ॥ एआ
 र्तरुद्रध्यानवे श्रेशुनमाठीगतीनाकर्णहारछेतेछोडवा.

हवेधर्मध्यानकहेछे धर्मतेव्यवहारक्रियारुपकारणते
 धर्म तथाश्रुतज्ञानतथाचारीत्र एउपादानपणेतेंसाधन
 धर्म तथारत्नत्रयीनेदपणेतेंउपादानशुद्धव्यवहार एटलेउ
 तसर्गमार्गानुजायीपणेतेंअपवादधर्म तथाअनेदरत्नत्रयी
 तेंसाधन एटलेशुद्धजिश्चैनयेउतसर्गधर्मनुकारण धम्मो
 वल्लोसंहावो जेवस्तुनोसत्तागंतशुद्धपरीणामिक स्वगुण
 प्रवृत्तिकर्तादिक अनंतानंदरुपसिद्धावस्थारह्यो तेएवं
 भूत उतसर्गउपादानशुद्धधर्मनुभासनरमण एकाग्रतापणें
 चित्तजलन्मयनोउपयोगएकेत्वनोचितवृणोतेधर्मध्यानकहि
 ये तेधर्मध्याननापायाचारछे आज्ञाविचय॥१॥अपायवि
 चय॥२॥विपाकविचय॥३॥ संस्थानविचय॥४॥व्यांहांपेहे
 लोआज्ञाविचयकहेछे जेत्रितरागदेवनिआज्ञातेहेतकरी
 माने एटलेजगवंतेद्रव्यछनुस्वरुप तथासिद्धनुस्वरुपनि
 गोदनुस्वरुप स्यादवादनिश्रेव्यवहारसहहे तेनेविपेभास

त्तरमाणकरे ते आज्ञाविचयधर्मध्याननकाहिए ॥१॥ हवे
 विजोअपायविचयधर्मध्यानकहेछे जेजीवमांअशुद्धपणुर
 हयुछे जेअज्ञानरागद्वेषकंखायआश्रवणमाहारानहिहूंए
 धीन्यारोछु अनंतज्ञानदर्शनचारीत्रविर्यमांशुद्धबुद्धअवना
 शिछु अजअनादिअनत अक्षय अक्षर अनक्षर अचल
 अकल अमल अगमाअनमि अरुपी अकर्मा अबंधक
 अनुदय अनुदिरक अजोगी अभोगी अरोगी अभेदि
 अवेदि अछेदि अखेदि अकखायी असखायी अलोशि
 अशरीरी अनासीय अणाहारी अव्यावाध अनअवगा
 हि अगुरुलघु परीणामि अणेद्रि अप्राणि अजोति असं
 सारी अमर अपर अपरपर अंब्यापि अनाश्रित अकंप
 निविरुद्ध अनाश्रव अलख अशोकी असंगी अलोक लो
 कालोकज्ञायक शुद्धचिदानंदमाहरोजिवछे एवोजेएकाग्र
 तारुपध्यानते अपायविचयधर्मध्यानजाणवो ॥२॥ हवेवि
 पाकविचयधर्मध्यानकहेछे जे एवोजिवछे तोयपणकर्मव
 शेदूखिछे जेज्ञानंगुण ज्ञानावर्णिकमैदबाव्योछे एटलेआ
 ठकमैजिवना आठगुणदवाव्याछे एटलेसंसारजमतां जे
 सुखदूखउपजेएसर्वकर्मनाकिघाछे एटलेइहाकर्मस्वरुप
 तुविघारवूं ॥ तेविपाकविचयधर्मध्यानकहिए ॥३॥ हवे
 चौथोपायोसरुथानविचयधर्मध्यानकहेछे ॥ त्यांहांचौदरा
 जलोकछे तेमांउर्द्धअदोत्रिछोलोक तेउर्द्धलोकमाविमा

निकदेवतावसेछे तेउपरसिद्धक्षेत्रछे एमलोकनुमानछे ए
लोकछेतेसंस्थानछे - आपणोजिविसर्वलोकससारमांभम
तो जन्ममरणकरीफरस्योछे; एवंजेलोकस्वरूप तथालो
कनेविषेपंचास्तिकायनु अवस्थानतनोविचार तेसंस्थान
विषयधर्मध्यानकहिए ॥१४॥ - एधर्मध्याननाचारपायाकं
ह्या ॥१४॥ तेध्यानसातमागुणठाणासुधीछे हवेशुद्ध्या
तकहेछेशुद्धके ॥ निर्मलसुद्वमरआलंबनविना आत्मा
नास्वरूपनेतन्मयपणेधारे ॥ तेशुद्धध्याननापायाचारछे
प्रथक्तववितर्क सप्रविचार ॥१॥ एकत्ववितर्क अप्रवि
चार ॥२॥ सूक्ष्माक्रियाअप्रतिपाति ॥३॥ उछिनक्रियानिवृ
त्ति ॥४॥ तिहांपेहेलोप्रथक्तववितर्कसप्रविचारजिविथीअजी
वजुदाकरवास्वजावविजावजूदाप्रथकपणेवेचवास्वरूपने
विषेपण द्रव्यतथापर्यायनो प्रथकपणे ध्यानकरवो पर्या
यतेगुणमांसक्रमावेगुणतेप्रजायमांसक्रमणकरे एवीरिति
स्त्रधर्मनेविषेधर्मांतरनेदते प्रथक्तवकहीएतेहनोवितर्कजे
श्रुतज्ञाने स्थितउपयोगने सप्रविचार तेसविकल्पउ
पयोग एकचितव्यापछी त्रीजोत्रितववो तेविचारकहीए
निर्मलविकल्प सहितपोतानीसत्तानेध्यावे - एप्रथक्तवि
तर्कसप्रविचार एप्रथमशुद्धध्यानजाणवुं एपायोआठमा
गुणठाणाधीसांडीते अगियास्मासुधीछे ॥१॥ एकत्ववि
तर्कअप्रविचारकहेछे जेजीवआपणा गुणपर्यायनी एक

ताकरीध्यावे जीवनागुणपर्याय अनेजीवते एकजछे अने
 माहारोजीवसिद्धस्वरूप एकजछे एहवुंध्यानते एकत्वपणे
 स्वरूपतन्मयपणे आत्मधर्मअनंतानो एकत्वपणे ध्यान प
 णवितर्कपणे केहेता श्रुतज्ञानावलंबीपणे अप्रविचारके
 हेतां विकल्परहित दर्शनज्ञाननोसमयांतरे कारणतां
 विनाएरत्नत्रयीनो एकसमयीकारण कार्यतापणे जेध्या
 नविर्यउपयोगनीएकाग्रता एएकत्ववितर्कअप्रविचारजा
 णवो एपायोवारमेगुणठाणेध्यावे एवेपायामांश्रुतज्ञाना
 वलंबीपणोछे । पणअवधिमनपर्यवज्ञाननाउपयोगेवर्ततो
 जीवकोइध्यानकरीसकेनाहि एवेज्ञानपराजुजायीछेतेमाटे
 एध्यानधीघनघातिचारकर्मखपावेनिर्मलकेवलज्ञानपामे
 पछितेरमेगुणठाणेध्यानअतरीकापणेवर्तछे पछितेरमाने
 अंतैअनेचउदमेगुणठाणेएवेपायाध्यावे त्याहांत्रिजोसूक्ष्म
 क्रियाअप्रतिपातिकहेछेतेसूक्ष्ममनवचनकायानाजोगरुधे
 शैलेशीकरणकरीअजोगीथायतेजेअप्रतिपातिनिर्मलविर्य
 अचलतारूपप्रणामतेसूक्ष्मक्रिया अप्रतिपातिध्यानजाण
 वुं इहासत्तायेपचाशीप्रकृतिहति तेमाहेवहोतरखपावे हवे
 चोथोलछिनक्रियानिर्वृत्तिकहेछे जेजोगनोरुधकिधापछिते
 रप्रकृतिखपावेनेअकर्माथायसर्वकर्मथीरहितथाय॥तेसमु
 छिन्नक्रियानिर्वृत्तीशुद्धध्यानकहिये॥एध्यानचारेकह्या॥१॥
 एनेध्यानकहिए॥५॥काउत्सर्गके०॥ आत्माथकिकायाने

श्रीसराववि तेनेकाउत्सर्गकहिए॥६॥ एपटविधअभ्यंतर
 तप तेथकिकायापणवलवानिजना तथालोकतपसिजा
 प्यानपणभजना प्रणकर्मवलवानि—एहवोजेवाइयअ
 भ्यंतरथईनेवारजेदेजेतपतेतपनुंफलतेनिर्जरा ॥ नीर्जरा
 के॥आत्मानेसर्वकर्मथिमुकीनेलोकनेअतेसिद्धक्षेत्रनेविपे
 सिद्धपणेजइनेवसवुं एनेमोक्षकहिये तेमाटेहेचव्यजीवो
 जुओअनुक्रमेसमकितनुफलमोक्षथायएवुंश्रीनगवतीजी
 मांपणकहयुंछे माटेसर्धाशुद्धराखेजो सर्धाहशेतोसर्वका
 मवनिआवशे ॥ इतिश्रीसम्यक्द्वारग्रथोमुनिश्वर
 श्रीहूकमचंदजीविरचित्तिसप्तमोऽध्यायपरीपूर्ण ॥ ७ ॥

दुहा ॥ सप्तद्वारेकरिविणव्यो ॥ पुरणहूओप्रमाण
 तेअनुक्रमेवर्णवूं ॥ सुणजोचतुरसुणजांण ॥१॥ प्रथमव्य
 वहारपूष्टिकरयो ॥ विजोमिथ्यानिसेद ॥ त्रिजुंसम्यक्व
 र्णव्यं ॥ जिहांकह्योवहूजेद॥२॥ देवतत्वचोथोकह्यो॥जि
 हांजिनपडिमाविचार ॥ तत्वकह्योगुरुपांचमो ॥ छठोध
 र्मतेधर ॥३॥ सातमोसाधारणकह्यो॥वहूउपदेशविचार
 एमसप्तद्वारेकरी ॥ रच्योग्रंथनिरधार ॥४॥ ग्रंथसंखेपकेहे
 वाभणी ॥ हतोएहविचार ॥ कारणजोगेअधिकथयो ॥ ते
 हकहूअधिकार ॥५॥ उत्तमविजयशिष्यए ॥ जसविजयगु
 णजाण॥तेहतणाआग्रहथकि ॥ विशेषकह्योविनांण ॥६॥
 शशिग्रहखगवांणमां(१९०५) ॥ ज्येष्ठत्रिजशुक्लपक्षावार

भृगुयेवर्णव्यो॥ वजाणागामप्रत्यक्ष॥ ७॥ स्वयंबुधतेवर्ण
 व्यो ॥ मुनिहूकमजसनाम॥ भविकजीवनाहितभणि॥ प
 ठताश्रविचलठाम ॥ ८॥ जवलगेरविसशिरहो॥ तवलगे
 रहोएग्रथ ॥ नामेसम्यक्द्वारते ॥ पसरोपूहविसथ ॥ ९॥

इति श्रीसम्यक्द्वारग्रंथो मुनिश्री
 हूकमचंदजकृतसमाप्तः ॥

श्रीज्ञानविलासः

श्रीवितरागदेवनमः ॥ श्रीगुरुभ्यानमः ॥

॥ अथ श्रीज्ञानविलासग्रंथलिख्यते ॥

दुहा ॥ प्रणमुप्रासजिणंदने ॥ जेहछेसुखदा
 तार ॥ वंछीतपुरणदूखहरण ॥ न्वदुवारहजार ॥ १ ॥
 समरुसरस्वतिनगवती ॥ जिनवरकठेजेह ॥ पसरती
 नव्यजीवने ॥ अत्रणेषुखदाईतेह ॥ २ ॥ तेहेतणीक
 प्राथकी ॥ करुकवितासार ॥ वचनरसालतेहसांठवुं ॥ श्री
 तालेजोविचार ॥ ३ ॥ धर्मअर्थिजेहजीवडा ॥ तेहनेसुखदा
 ईहोये ॥ मुजंपणअनुभवएहछे ॥ आत्मज्ञानेजोय ॥ ४ ॥
 तेकारणरेवनाकरुं ॥ तालवोधसुखकार ॥ भेदघणाइहां
 वर्णवुं ॥ खटद्रव्यविचारा ॥ ५ ॥ ढाला ॥ केपुरहोवेअतिउ
 जलारे ॥ एदेशी ॥ राजअहीउद्यानमारि ॥ समोसखजिन
 राया ॥ चोत्रीसअतिसयदिपतारे ॥ विरजितेश्वररायसो ॥ चो
 गीजिन ॥ वंदोभवियणएह ॥ जेहथीजवनोछेहसोनागी
 जिन ॥ वंदोभवियणएह ॥ १ ॥ साधुमाहेसिरोमणारे ॥ ल
 वधीतणोमंडार ॥ सजाविसरजितवतीहारे ॥ पुछेप्रश्नसार
 ॥ सो ॥ २ ॥ विनयसहितगौतमतीहारे ॥ पुछेद्रव्यविचा
 रा ॥ विरजिणंदतवउपदेशेरे ॥ सांभलगौतमउदार ॥ सो ॥

३॥ द्रव्यकहिजेजेहेनेरे ॥ नविचदलेत्रणकाल॥वस्तुताजे
हमारिहरे॥एहजद्रव्यश्राचार॥सो०४॥ तेहद्रव्यसंक्षेपथी
रे॥दोयभेदकहेवाया॥रुपीश्ररुपीजाणीयेरे॥तेहनाचेदखट
थाय ॥सो०५॥ उपजेविणसेतेसहीरे ॥ थिरताभाववखा
ण॥सक्षेपेएमसमजियेरे॥ द्रव्यपणुतेजाण॥सो०६॥खटभे
दहवेवर्णवुरे ॥ तेसुणजोधरिकान ॥ मुनिहुकमजाणेद्रव्य
जेरे ॥ तेहलहेवहुमान॥सी०७॥ढालपहेलीसपुर्ण ॥

॥दुहा॥ त्रणतलनासोधथी ॥ व्यवहारसमकितजोय ॥
तेथिमुक्तिजहेनहि ॥ कारणमुक्तिनुहोया॥१॥ द्रव्यश्रन्या
संकरवायकी ॥ निश्रेशमकितजाण॥ उतराध्येनजाखियु
तेहभविमनश्राण॥२॥ तेकारणजव्यप्राणिया॥ केरोद्रव्य
श्रभ्यास ॥ श्राभवपरजवसुखघणु ॥ पामोमुक्तिनिवा
स ॥३॥ढाल ॥२॥ नदिजुमनाकेतीरउडेदोयपंखियांएदे
शी॥जाखेविरजिणदसुषोभव्यप्राणिया ॥ द्रव्यसमज्या
विणजेहरहाभवरणिया ॥ तेकारणतुमेएहसमजोचितध
री॥द्रव्यतणोविचारश्रनुजवखरोकरी ॥१॥ प्रथमधर्म
द्रव्यविजोश्रधर्मकह्यो ॥ त्रिजोआकाशजाणचोथोकाल
जह्यो ॥ पुदगलेद्रव्यतेजाणपाचमोभाखियो॥ छठोजिव
तेजाणज्ञानियेदाखियो॥२॥ भास्यांद्रव्यएछोय तमेचित
मांधेरो॥ तेहमाश्रास्तिकायपांचएकदूरेकरो॥ तेहतणोवि
चार आगेकेहेशुंसही ॥ कालतणोश्रभाव जाणोचितमां

हीं ॥ ३ ॥ गुणलक्षणते पक्षप्रमाणतेजापशुं ॥ नयनखेपां
 संजुत कहिनेदाखशुं ॥ कारककेहेशुं खटसंतंजंगीसही ॥
 चउभगीतेसजोण ॥ अनेकनेदेग्रही ॥ ४ ॥ प्रत्येकेप्रत्येके
 तेहा आगेतेभाखशुं ॥ तेहमांअनुभवसार आत्मतोदाखशुं
 ॥ मुनीहूकमजाखेएहं अनुभवनित्प्रकरो ॥ तजिपरमादने
 दूर शिवरमणीवरो ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ढालबीजीसपूर्ण ॥ ॥ ॥
 दुहा ॥ धर्मद्रव्यहवेवर्णवुं ॥ जेहधुरेकेहेवाय ॥ ॥ श्रोतासु
 णजोकानदेई ॥ भेदअनेकलेवाय ॥ १ ॥ ॥ ढालत्रीजी आग
 बंगाली ॥ ॥ धर्मद्रव्यभाख्योछेजेह ॥ गुणचारेकरेशोनेते
 ह ॥ अविसांचजो ॥ परजायच्यारेकह्यातेसार ॥ अनुक
 मेजाखुंविचार ॥ अवि ॥ १ ॥ गुणअमूर्तिपेहेलोजेहे ॥ तस
 विचारभाखुंगुणगेह ॥ अवि ॥ २ ॥ चरणपांचदिशेनेहितास ॥
 तेविनाकेशिमूर्तिनिआश ॥ अवि ॥ ३ ॥ गंधरसफरसनहि
 जेह ॥ संस्थानजावदिशेनहितेह ॥ अवि ॥ ४ ॥ वर्णविनानवि
 रूपिहोय ॥ संस्थानविनामूर्तिनविकोय ॥ अवि ॥ ५ ॥ अथ
 मगुणथयोएसिध ॥ त्रिजातणितुमेजांणोरींढा ॥ अवि ॥ ६ ॥ न
 हिचेतनातेअचेतनजोय ॥ ज्ञानादिकरिद्धीनहिसोय ॥ अ
 वि ॥ ७ ॥ अक्रियेगुणतिजोजांण ॥ व्यवहारनयेतेहवखाण
 ॥ अवि ॥ ८ ॥ कोइकहेकिरियांतेनिपेदा ॥ तोक्यमसाज्यकरेछेउ
 मेदा ॥ अवि ॥ ९ ॥ तेहनेकहियेसांचलवर्ण ॥ साज्यतर्णोतुं
 सुणजेसेण ॥ अवि ॥ १० ॥ साज्यतेस्वजाविकहोया ॥ अजत

एतेलदुवणजोया॥नवि०६॥ स्वभाविककिरियानविकि
 धा॥ किरियातोविभाविकलिद्व॥नवि०॥ चोथोगुणकरेचा
 लतासाहाय॥ जडचेतननेएहिजन्याया॥नवि०७॥ मींन
 ज्युंचालेजंलमाहे ॥ पणनविचालेवेलुआहे॥नवि०॥ मींन
 पेरेजडचेतनजाण ॥ जलपेरेधर्मास्तीमांन ॥ भवि० ८॥
 एगुणचारेस्वजाविकजाण॥ संखेपेएभाष्युमांन॥भवि०॥
 हवेकहूपरजायच्यार ॥ पेहेलोखधस्वरुपउदार ॥ भवि०
 ९॥ लोकाकाशप्रमाणेजेह ॥ खंधएकभाष्योछेतेह॥भवि०
 उरंधअंधोत्रिछादिकजेह ॥ कल्पीतदेशकहावेतेह ॥ न
 वि०१०॥ लोकाकाशनाजेपरदेश॥ प्रदेशेप्रदेशेतेहनोप्रदे
 श ॥ भवि०॥ प्रदेशंकेफरसछेसात ॥ आपआप्राणिलोवि
 जात॥भवि०११॥ अगुरुलघुचोथोपरजाय ॥ विस्तारपं
 न्नवणाएथाया॥ भवि०॥ हानिवृद्धिगवेखीजेह॥ अगुरुलघु
 जोरुयेछेतेह ॥ नवि०१२ ॥ सुमतिथयेभाष्युतेह ॥ तेह
 माहेनविकाइसदेह॥नवि०॥ गुणपरजायएजास्यासार॥
 मुनिद्वक्तसेकह्योविचार ॥नवि०१३॥ ढालत्रिजिसपूर्ण ॥
 ॥ दुहा॥ धर्मद्रव्यएवर्णव्यो ॥ हवेअधर्मास्तिकाया॥ आ
 काशकालद्रव्यनो॥ केहेवामनउछाय ॥१॥ ढालचोथी॥चे
 तनचेतारेचेतना एदेशी॥ अधर्मद्रव्यअरुपिछे॥ अचेतन
 केहेवायरो॥ किरियापणतेहमांनही॥ गुणत्रणएथायरे ॥ अ
 धर्मद्रव्यअरुपीछे॥ २॥ चोथोगुणहवेजाणजो ॥ थिरता

भावेसाररो॥जिवपुद्गलनेतोदिए ॥ विसांसोमनोहाररो॥अ०
 २॥ वाटेवेहेतापंथिया ॥ ग्रिष्मकालेजेहरे ॥ देखिवृक्ष
 उन्नारहे ॥ तेमजडचेतननेएहरे ॥अ०३॥ परजायच्यार
 पुर्वपेरे॥ इहांतेपणकेहेवारे ॥ आकाशद्रव्यहवेसांचलो ॥
 गुणत्रणेएमलेवारे ॥अ०४॥ चौथोगुणहिवेतेहनो ॥ अत्र
 गाहनातेआपेरे ॥ जिवादिजेद्रव्यछे ॥ आकाशउदरमांथा
 पेरे॥अ० ५॥ नितमांहिज्यमंखीलनि ॥ मारगत्रापेसारं
 रो॥ एमईहांमनजावजो ॥ चौथोगुणउदाररे ॥अ० ६॥ लो
 कालोकप्रमाणए ॥ खंधजेहनोसाररे ॥ लोकाकाशतेदेश
 छे ॥ प्रदेशअनंताधाररे ॥अ० ७॥ अगुरुलघुपुर्वपेरे ॥
 हवेकहुकालविचाररे ॥ गुणत्रणेपुर्वपेरे ॥ चौथोवरतनासा
 ररे ॥अ० ८॥ नविवस्तुपुराणीकरे ॥ एहिजकालस्वभावे
 रे ॥ गयोकालअनंतजे ॥ प्रथमप्रजायचितलावरे ॥अ०९॥
 अनागतअनतछे ॥ वरतमानसमयएकरे ॥ अगुरुलघुचो
 थोलह्यो ॥ एहिवचनविवेकरे ॥अ० १०॥ अरुपिएवरण
 व्या ॥द्रव्यच्यारेउदाररे ॥ हवेरुपिद्रव्यवर्णवु ॥ तेसुणजो
 अधिकाररे ॥अ० ११॥ आगेआगेज्ञाननो ॥ ब्रहूविचारक
 हायरे ॥ मुनिहूकमकहेद्रव्यथी ॥ शुकलर्ध्यानतेथायरे ॥अ०
 १२॥ ढालचौथीसंपूर्ण ॥ पुद्गलद्रव्यहवेवरणवु ॥ जेहरुपिकेहेवाये ॥ सर
 वजगतनेआवरे ॥ कहुअधिकारबनाय ॥१॥ ढाले ५ मी

देखोगतिदंडवनिरे ॥ एदेशी ॥ पुद्गलद्रव्यहवेवर्णधुरे ॥ जे
 हरुप्रकृहेवाया ॥ जेदघणातसजाखियारे ॥ सास्त्रमाहिसो
 हाय ॥ सोजाभिजनसाजलारे ॥ पुद्गलतणोस्वभावअनुस
 वचितधरोरे ॥ ११ ॥ रक्तादिकतिहावर्णछेरे ॥ मधुरादिवलि
 रसा ॥ सुरनिदुरभिगधछेरे ॥ सीतादिकफरसासो ० २ ॥
 परिमडलादिकजाणियेरे ॥ सस्थांतपाचिजास ॥ मुर्तिपणु
 तेथीथयुरे ॥ रुपिप्रणोनोविलासासो ० ३ ॥ जोगत्रणतेपु
 द्रलछेरे ॥ प्राणप्रजातिधारालेइयापणपुद्गलकहिरे ॥ सं
 जासोजनिहारसासो ० ४ ॥ तनतामनतावचनतारे ॥ जड
 ताजिडसंकेतासयेणसस्थानजाणियेरे ॥ तेसविपुद्गलखेत
 ॥ सो ० ५ ॥ इन्द्रिअणेद्रिपणकहिरे ॥ शुभाशुभतेजाण ॥ कि
 रियासर्वपुद्गलदेशारे ॥ पुण्यपापवखाणे ॥ सो ० ६ ॥ वर्ग
 णाआठेजिवनेरे ॥ ब्रजगिछेवलिसोयातेपणपुद्गलजाणि
 येरे ॥ करेगतागतजोय ॥ सो ० ७ ॥ जिवविनापणअवरछेरे
 अजिवखंधअनेक ॥ द्विपरदेशीथीलहिरे ॥ अनतप्रदेशी
 छेक ॥ सो ० ८ ॥ इत्यादिकेवहूनेदर्थारे ॥ पुद्गलतणुपरिमा
 णासखेमेइहांत्रणव्युरे ॥ ग्रथेवोहोलुवखाण ॥ सो ० ९ ॥ गुण
 च्यारेहवेजाखियेरे ॥ पुद्गलतणाप्रसिंध ॥ मुर्तिगुणमेहेलो
 कह्योरे ॥ सस्थांतणिएरिद्ध ॥ सो ० १० ॥ अचेतनविजो
 कह्योरे ॥ त्रिजोकिरियाजाण ॥ प्रणामिकपणुछेसहिरे ॥ ते
 हंथिकिरियावखाण ॥ सो ० ११ ॥ गुणचोथोहवेवर्णधुरे ॥

सङ्गप्रदं विद्वंश ॥ मलणविखरणस्वभावछेरे ॥ पडण
 गलेण अकेश ॥ सो ० १२ ॥ परजाय चयारे तेहनारे ॥ सांभ
 लजोधरिचित ॥ खधपरजायपेहे लोकहोरे ॥ अनेकछे अति
 त्या ॥ सो ० १३ ॥ देशजेकांडकल्पवारे ॥ खंधखंधप्रत्येजाण
 जेहचतारिग्रहिएरे ॥ तेहनोदेशवखाण ॥ सो ० १४ ॥ प्रदे
 शतेहनाजाणिएरे ॥ द्विपरदेशीथीजोय ॥ अनतप्रदेशीलं
 शेरे ॥ प्रदेशकेहणिसोय ॥ सो ० १५ ॥ चोथोपरमाणुकह्योरे ॥
 छुटाजेताहोय ॥ तेताइहांग्रहणकरोरे ॥ चोथोपरजायमो
 य ॥ १६ ॥ सो ० १६ ॥ अगुरुलघुसहितभाखवारे ॥ एच्यारेपर
 जाय ॥ शिष्यकहेस्वामीसुणारे ॥ शकामोहोदिथाय ॥ सो ०
 १७ ॥ पुर्वद्रव्यमांजुदोकह्योरे ॥ अगुरुलघुपरजाय ॥ आं
 मांपरजायगण्योनहिरे ॥ चारमांहिसमाय ॥ सो ० १८ ॥ ते
 कारणमुंजनाखिएरे ॥ कृपाकरीनेदेत ॥ गुरुकहेतुमेसांभ
 लोरे ॥ मोहदशादुरेखेव ॥ सो ० १९ ॥ हांनिवृद्धीतेहमांनहि
 रे ॥ पुर्वद्रव्यमांजाण ॥ अपेक्षितद्रव्यथिरे ॥ करिएछिएते
 मान ॥ सो ० २० ॥ तेकारणजुदोलह्योरे ॥ तेहमांनविस
 माय ॥ हांनिवृद्धिएहमांसहिरे ॥ गुणपरजायमांथाय ॥ सो ०
 २१ ॥ तेकारणनेगोलह्योरे ॥ समजोशिष्यसुजाण ॥ मुनि
 हूकमपुद्रलदंशारे ॥ तेजतांकोडकल्याण ॥ सो ० २२ ॥
 बालप्राप्तिसंपूर्ण ॥ अजिवपांचेवरणव्या ॥ जडताजेहकेहेवाय ॥ उठाद्र

व्यहवेवर्णवु जेहछेचेतनराय ॥१॥ विणआतमजेहजेहक
 था निष्फलजाणोतेह आत्मकथाअनुभवसही आपेशि
 वपुरगेह ॥२॥ तेकारणआतमकथा नाखुछुअभिराम मुझ
 मनउलटछेधणो पामवावछीतठाम ॥३॥ तेकारणओता
 तुमे माचलोथईसावधान तनमनवचनएकाग्रहे गुरुवच
 नेधरिकान ॥४॥ ओतावक्तागुणलहे पामेवछीतधाम आ
 त्मद्रव्यचरचाथकी शुकलध्याननुठाम ॥५॥ ढाल ६ ठी ॥
 देशीमोतीडानी ॥ छठोद्रव्यजिवतेभास्यो चेतनालक्षणे
 करिनेदास्यो साहेवाआतमसुखकारी मोहनाज्ञानिगुण
 धारी जिवनासमजोने ॥ एआंकणी ॥ अवेदिअछेदिनास्यो
 अजोगिअजोगिदास्यो ॥ सा०१ ॥ अवर्णअगंधिकहिए
 अरसअफरशीलहिए अक्रोधिअमानिजाण अमाइअलो
 चिवखाण ॥ सा०२ ॥ अरागिअद्वेपीजेह अकंचनिदिठोगु
 एगेह अमौहिअद्रोहिकहिये अलेशीगुणताहरेवहिये ॥
 सा०३ ॥ प्रणएकेदिसेनहिताहरे परजासीएकेनहिधारे
 अमूर्तिअरूपिकहिये अक्षयपदगुणताहरेलहिये ॥ सा०४ ॥
 अचलअविनाशीतुहिस्वामि आव्यअतनुहिअनामी अयो
 निअजन्मीकहिये अशरीरीआतमलहिये ॥ सा०५ ॥ अ
 जंरामरपदताहरेसोहे तेदेखिअविनामनमोहे इत्यादिक
 तुजगुणअनंत एकजिभकेमनाखेसंत ॥ सा०६ ॥ तोपण
 संखेपइहांनाखु वालजिवनेहेतकरिदाखु तेमाहिमुख्य

गुणचार तेहकहूसुणोअधिकार ॥सा०७॥ प्रथमगुणज्ञान
नजजाणो अनंतुलोकालोकप्रमाणो सुरजपेरेकरेउद्योत
जेहनिभाखिअनंतिजोत ॥सा०८॥ त्रिजोगुणतेदर्शन
भाख्यो सांमान्यउपयोगकहिनेदाख्यो समग्रअंतरउप
योगकहावे विशेषज्ञानगुणतेथावे ॥सा०९॥ तीजोगुण
चारित्रकहिये ज्ञानदर्शनमांहिरहिये थिरताचावअनंतो
जेह तेगुणनाख्योचारित्रएह ॥सा०१०॥ विरजअनंतु
सोहियेसार गुणत्रोथोकह्योमनुहार इहांचरचात्रोहोली
जणाय तेतोआगलकेहेवाय ॥सा०११॥ अव्यावाध्रपेहेलो
परजाय बाधापिडातिहांतकेहेवाय रोगसोगतिहांतवि
होय होयेतोविजावेजोय ॥सा०१२॥ अमूर्तिपरजायवि
जोलाहिये संस्थानतणोअजावकहिये वर्णादिदिशेनहि
तास तिहांरुपिनिकेविआस ॥सा०१३॥ अणअवगा
हत्रिजोकेहेवाय शिष्यकहेकेसहेवुथाय शिदनेपणअवगा
हनभाखी तुमेतोइहातेनविदाखी ॥सा०१४॥ कहेगुरुसां
नजतुंजाई अवगाहनविचारचितलाई जेहअवगाहनसी
दनेकहिये तेतोपुद्गलचावथीलहिये ॥सा०१५॥ कहेशि
ष्यतिहांपुद्गलनांहि केसमनायकहोनेसांहि सांभलशिष्य
तुंवातएह अवगाहनजेदकहूछुतेह ॥सा०१६॥ जिवअ
नंतछेसंसार अवगाहनअसख्यतेधार जेहजिवरेहेतोहि
गोदमांहि तवअवगाहनाछोटीतांहि ॥सा०१७॥ याख्यो

रूपचंद्रीनुजारे तव अवगाहनामोटीधारि एमभवन्नवकं
 रतातेजाणो अवगाहनाफरतितेवखाणो ॥सा०१८॥ व
 लिअवगाहनासिद्धनेजेह सोपणएकजावनहितेहा जवन्म
 आंगुलवत्रिशायिलहिये उतकष्टेधनुपत्रणसेकहिये ॥सा०
 १९॥ धनुपतेत्रीशउपरजाणो आंगुलवत्रिसंप्रमाणो अ
 वगाहनामध्यजावेजेह असरूपभेदकह्याछेतेहा ॥सा०२०॥
 जेह छेडधुंसंसारमाहि शरिरप्रमाणेलहियेताहि जागएक
 पांलारनोछेडी दोयभागअवगाहनमडी ॥सा०२१॥ पुं
 दंगलथिअवगाहनसिद्ध पणस्वजाविकनविकिध स्वजा
 विकअवगाहनकहिये तोसरवेनि एकजलहिये ॥सा०२२॥
 एकभेदतोदीसेनहि तेथीअणअवगाहनसहि ॥अंगुरुलघु
 चौयोपरजाय एचारेपरजायथाय ॥सा०२३॥ गुणच्यारे
 द्रव्यनादाख्या परजायचारेसाथेजाख्या खटद्रव्यनाते
 जाणो सक्षेपेइहांवखाणो ॥सा०२४॥ जिवस्वरूपएभा
 स्युसार जेहथकीलहियेचवपार मुनिहूकमहवेआगेकेहे
 से साधरमिकेपणुउल्लासे ॥सा०२५॥ ढालछठीसंपूर्ण
 ॥इहा ॥खटद्रव्यएवणव्यावर्णव्योगुणपरजाय हेवेसा
 धरमिकेपणुकहू अन्योन्यसोहाय ॥१॥ ढालसातमी ॥
 तिरथानिआशातनानविकारियो ॥ एदेशि ॥ साधरमिकेपणु
 द्रव्यनुएमभास्यु सास्त्रेकाहिनेदास्यु समजुएचितमारा
 स्यु तमेसमजोएम साधरमिकेपणुद्रव्यनुएमजाख्या ॥१॥

अगुरुलघुपरजायएतुमेजाणो सरस्वोसहृद्रव्यमांत्राणो
 अरुपिगुणवखाणो पांचद्रव्यमांएह ॥सा० २॥ एगुणन
 थिपुद्गलविपेएमजाणो अचेतनपाचनेमानो जीवमांएनवि
 कहाणो एमजाणोवात ॥सा० ३॥ किरियागुणछेदोयमां
 एमजाणो जिवपुद्गलमाहिं वखाणो व्यवहारनयेपरमाणो
 नहिचारमांसोय ॥सा० ४०॥ चलणगुणधर्मांस्तिमांएमजहि
 ये विजापांचमांनविकहिये अंधर्मथिरगुणवहिये नहि
 पांचमांसोय ॥सा० ५॥ अवगाहनागुणआकाशमांतुर्मेधा
 रो तेपांचमांनविविचारो वर्तनागुणकालमांसारो नहि
 पांचमांकोय ॥सा० ६॥ मलणविखरणगुणपुद्गलमांएभाख्यो
 मुर्तिपणेपणदाख्यो जेहनिग्रथेदिसेसाख्यो पांचद्रव्यमां
 नांहि ॥सा० ७॥ ज्ञानादिकगुणचारछेजेकहिये तेतोजीव
 जमांहिलहिये विजेद्रव्येनवीकहिये तेतोचेतनसार ॥सा०
 ८॥ अमुर्तिअचेतनअकिरिये परजायच्यारेभरिये त्रणेंद्रव्य
 अनुसरीये प्रथमनाजाण ॥सा० ९॥ त्रणगुणेकरिकालद्रव्य
 छेसरस्वो जिवपरजायजुदानरस्वो सरवेनेगारह्यापरस्वो
 लोकाकाशमांही ॥सा० १०॥ मुलगुणएकएकनोनविमलतो
 अन्योन्यनविमलतो निजस्वभावनधरतो एहवोद्रव्य
 स्वभावा ॥सा० ११॥ साधर्मिछद्रव्यनुकहिनाख्यु मुनिहूक
 मेदाख्यु समजुयेचित्तमांराख्यु जेहनेवलभज्ञान ॥सा०
 १२॥ ढालसातमीसंपूर्ण ॥

॥दुहा॥ साधरमिकपणुभाखीयु द्रव्यछेयनुजांण हवे
 गुणद्रव्यनावर्णवु श्रोतासुणोएकतांन ॥१॥ ढाल् ८ मी
 एतिरथतारु ॥ एदेशि ॥ निश्चेनयनेमतेजाखु छद्रव्यप्र
 णामिकढाखुरे एगुणछेवारु वेहेवारनयेचारनेभाख्या
 जिवपुद्गलकहिनेदारुधारे एगुणछेवारु ॥१॥ पांचद्रव्य
 अजिवकहावे एकचेतनातेजिवथावेरे ॥१०॥ छयेद्रव्यमां
 पुद्गलरुपी विजापांचेअरुपिरे ॥ १० २॥ छयेद्रव्यस्व
 प्रदेशिभाख्या निश्चेनयेएदाख्यारे ॥१॥ व्यवहारनयेपा
 चजलहिये कालअप्रदेशिकहियेरे ॥ १० ३॥ धर्मअधर्म
 असंख्यप्रदेशि आकाशअनतप्रदेशिरे ॥१०॥ असंख्यप्रदे
 शीजिकहावे पुद्गलपरमाणुआवेरे ॥ १० ४॥ अनंत
 प्रदेशिखंधकहावे एहवाखंधअनताहोवेरे ॥१०॥ तेपण
 सर्वेद्रव्यमागणवा स्वप्रदेशीभणवारे ॥ १० ५॥ धर्मअ
 धर्मआकाशकेहेवे एकएकद्रव्यतेहोवेरे ॥ १० ॥ पुद्
 गलकालनेजिवकहिये तेहनाद्रव्यअनेकलहियेरे ॥ १०
 ६ ॥ आकाशसर्वेद्रव्यनुजाजन तेमाहिवसेपांचमाहाज
 नरे ॥१०॥ एकखेत्रनेपाचछेखेत्री एकठावसेछेमित्रिरे ॥
 १० ७॥ निश्चेनयेकरिनेजांणो छयेद्रव्यसक्रियमांणो
 रे ॥ १० ॥ व्यवहारनयेचारअक्रिय जिवपुद्गलजाप्या
 सक्रियरे ॥ १० ८ ॥ निश्चेनयेकरिनेजांता छयेद्रव्यनि
 त्यहोतारे ॥१०॥ अथवाछयअनित्यकहिये एमनिश्चेनय

थिलहियेरे ॥ ए० ९ ॥ व्यवहारनयेकारिएमभाखुं चार
द्रव्यनित्यदाखुरे ॥ ए० ॥ जीवपुद्गलान्नित्यकहावे एमन
यभेदसांहावेरे ॥ ए० १० ॥ सर्वद्रव्यनुसारतेजाणो कारण
एकजिववखांणोरे ॥ ए० ॥ पांचद्रव्यमांकारणनहि तेथीअ
कारणीकह्यासहिरे ॥ ए० ११ ॥ कर्तापणुएकजिवमाजा
स्यु तेतोनिश्रयनयेदाख्युरे ॥ ए० ॥ जिवपुद्गलदोहिकर
ता व्यवहारनयेमनधरतारे ॥ ए० १२ ॥ सर्वव्यापिकआका
शजांणो पांचद्रव्यलोकप्रमाणोरे ॥ ए० ॥ एछयद्रव्यए
कठारेहेवे आपआपणीसत्तायेहोवेरे ॥ ए० १३ ॥ एगुणतो
विचारवासरखा बहुश्रुतपासेपरखारे ॥ ए० ॥ मुनिदूकम
कहेवहुश्रुतशेवो जेथीपामोज्ञानगुणमेवोरे ॥ ए० १४ ॥ ढाल
आठमिसंपुर्ण.

॥ दुहा ॥ स्यादवादहवेनाखीये जिनसासननोमर्म पक्ष
आठइहांवर्णवु जेहथिजायदूकर्म ॥ १ ढाल ९ मी ॥ धन
धनसंप्रतिसाचोराजा ॥ एदेशि ॥ द्रव्यसर्वमांपक्षभाख्या
नित्यादिकजेहआठरे तेहस्वरुपसमजेकोइविरला जेहनि
दुरमतिनाठरे स्यादवादजिनवांणिवखाणि श्रोतासमजो
सुजाणरे ॥ एआंकाणि ॥ नित्यानित्यपक्षतेभाखुं खटद्रव्य
मांसाररे प्रथमधर्मद्रव्यतेकहिये जेहनागुणछेचाररे ॥
स्या० २ ॥ खंधपरजायपेहेलोकहिये तेसविनिव्यकहायरे
छेकत्रणेअनित्यभाख्या धर्मविचारएमथांयरे ॥ स्या० ३ ॥

अधर्मद्रव्यनागुणचारण वल्लिएकपरजायरे वाकित्रणे
 अनित्यनाख्या परजायएमसोहायरे ॥स्या० ४॥ पुर्वप्र
 माणेआकाशद्रव्यने कालमानित्यगुणचाररे परजायचार
 अनित्यकहिये पुद्गलनित्यगुणचाररे ॥स्या० ५॥ परजाय
 चारअनित्यभाख्या जिवनाजेहगुणचाररे त्रणपरजायस
 हितनित्यकहिये अगुरुलघुअनित्यविचाररे ॥स्या० ६॥ एक
 अनेकपक्षहवेनाखु खटद्रव्यमासोचरे धर्माधर्मद्रव्यनोखंध
 जेह एकएकतिहाहोयरे ॥स्या० ७॥ लोकप्रमाणेखधतेभा
 ख्यो गुणपरजायप्रदेशअनेकरे लोकालोकप्रमाणेजाणो
 आकाशखधछेएकरे ॥स्या० ८ ॥ गुणअनतपरजायअन
 ता प्रदेशअनंताजाणरे कालद्रव्यमावर्तनालक्षण एक
 जछेगुणखाणरे ॥ स्या० ९ ॥ गुणपरजायनेसमयजेहवल्लि
 तेतोअनेककहायरे अतितअनागतकालनासमय तेतोअ
 नंताथायरे ॥स्या० १०॥ तेमाहिवर्तमानकालनो समय
 एकजहोयरे पुद्गलद्रव्यनुएकपणुजेह नामथाकिजेहजोय
 रे ॥स्या० ११॥ पुद्गलपरमाणुअनंता अनतखंधकहायरे
 तेमाहिपुद्गलपणुएह एकजनियमथायरे ॥स्या० १२॥ गु
 णपरजायअनंताजाख्या एकपरमाणुमाहिरे स्यादवाद
 मंजरीवेजो जो विशेषविचारछेतांहिरे ॥ स्या० १३॥ जीव
 अनताछेजगमाहि असख्यप्रदेशिसतरे प्रत्येकेप्रत्येकेजि
 वनाजाणो गुणपणुछेअनंतरे ॥स्या० १४॥ परजायअनं

तावलिजाणो एवाबोलत्रनेकरे जिवपणुतेमांहिजोतां दिसे
छेकांईएकरे॥स्या० १५॥ एवांचनसुणीनेबोल्योशिष्यविन
यकरितांहिरे स्वामीतुमेजिवसरखोन्नाख्यो दिशेजुदो
आंहिरे॥स्या० १६॥ एकाजिवतोसिद्धपोहोचो पांम्योसुख
अनतरे एकाजिवकर्मनेवगपडीयो नाव्योदूःखनोअंत
रे॥स्या० १७॥ एमजोतातेएकनचासे जुदादिसेसर्वेरे
अममनमांशकाएमोटि केमन्नाखोएकजद्रव्यरे॥स्या० १८
कृपाकरिगुरुउत्तरनाखे समझोचित्तमोझाररे जिवसर्व
कर्मखपावी पांमेछेनवनोपाररे ॥स्या० १८॥ निश्चयनये
करिनेजोतां जिवसर्वेसिद्धथायरे सत्ताजोताएकजदिशे ते
थिएककेहेवायरे ॥ स्या० २०॥ शिष्यकहेजोसत्ताएकछे
तोअनविसिद्धथायरे पणअभविकोईमुक्षेनजावे तोकेम
एककेहेवायरे ॥ स्या० २१ ॥ शिष्यसंदेहनिवारवाकाजे
कहिशुंतासस्वरुपरे मुनिहूकमकहेद्रव्यस्वभावनु आगे
कहिशुंरुपरे ॥ स्या० २२॥ ढालनवमीसंपूर्ण ॥

॥दुहा॥ एकानेकस्वरुपमा आव्योजिवविचार नव्यअ
नव्यनोभाखशु स्वभावतेएकाकार ॥१॥

ढाल १० मी ॥ नवितुमेवंदोरेसुरीश्वरगछराया ॥एदेशी॥
भवितुमेसमजोरेजिवस्वरुपएसाचु भव्यअभव्यएकजक
हिये मतकोइजाणोकाचु भवितुमेसमजोरेजिवस्वरुपएसा
चु ॥१॥ जेहजिवनिगोदमांवाशिया तेमवलिसिद्धनाजांणो

तेसविएकस्वजावजकहिये जेदत्रणेवखाणो ॥ जवि० २॥
 जव्यत्रभव्यनेजवाभवि तेहतणोविचार कारणजोग्यसा
 मग्रीपामी पलटेभव्यनिरधार ॥ ज० ३॥ सामग्रीअजा
 वेकरिने भव्याभव्यतेजाणो पामिसांमग्रीजेहनविपलटे ते
 अजव्यकहाणो ॥ भ० ४॥ जिवसरवअसंख्यप्रदेशि लो
 काशप्रमाणो ओछोअधिकोएकनहोवे एमस्वरुपतेजाणो ॥
 भवि० ५॥ ज्ञानादिकगुणचारेजाणो जिवसरवमासरखा
 लक्षणस्वभावएमजकहिये ज्ञानिवचनेपरखा ॥ भवि० ६॥
 कांडसीद्वमाकाइससारि तेहस्वरुपहवेजाखु आपआप
 णिविर्यशक्ति फोरवाविणतेदाखु ॥ भवि० ७ ॥ पदअरि
 हतपाम्याजेहनर कर्मशत्रुहणिने शिष्यकहेइहांशंका
 मोटि कर्मपणानेभणीने ॥ भवि० ८॥ अरिएहवोशब्दश
 त्रुनो हणतोअरिहतकहिये त्रिजचादिकपणजाणो वेहेर
 पोतानुलहिये ॥ जवि० ९ ॥ राजाराकपणतेसर्वे वेहेर
 पोतानुसजारे आपआपणाशत्रुहणेछे अरिहंतपदतेधा
 रे ॥ जवि० १० ॥ एमजोतासर्वेतेदिसे अरिहतपदतेसा
 चो तेहशब्दमाकर्मनदिशि केमखोटुइहाराचो ॥ भवि० ॥
 ११॥ कृपाकरिहवेगुरुजिबोल्या सांभलशिष्यसुजाण ते
 कहातेसरवेमुढ करेस्वजातिनिहाण भवि० १२ स्वजाति
 निघातकरचाथी अरिहंतपदनविथाय विजातिनोघातक
 रचाथी अरिहंतपदकेहेवाय ॥ भवि० १३ ॥ शिष्यकहेअ

मेनविजाणु स्वजातिविजातिविचार कृपाकरिनेअमनेस
मजावो जेमजाणुनेठमनोहार ॥ भवि० १४ ॥ कृपाकरि
गुरुजिहवेवोल्या सांभलभेदउदार मुनिदूकमकहेआग
लकहिशु स्वजातिविजातिविचार ॥ नवि० १५ ॥ ढालद
शमिसंपूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ नव्यअभव्यस्वरुपमां आविचरचासार अ
रिहंतपदनेकारणे स्वजातिविजातिविचार ॥ १ ॥

ढाल ११ मी ॥ सिद्धाचलसिखरेदिवारे आदेश्वरअलवे
लोछे ॥ एदेगी ॥ स्वजातिराखिथयानाथरे अरिहंतपद
तुमेपूजोने ए आंकणी विजातिनेदेखाड्योहाथरे अ०
स्वजातिविजातिजोगरे अ० चौभंगिउठिरंगेरे ॥ अ० १ ॥
स्वजातिविजातिलहिशुरे अ० प्रथमतसस्वरुपकहिशुरे
अ० पछीचउन्नगिजाखिशुरे अ० तसभेदविवरिनेदाखि
शुरे ॥ अ० २ ॥ सरखेवइभवेजेतारे अ० स्वजातिकहिये
तेतारे अ० ज्ञानादिकगुणेजरियारे अ० जीवसर्वेतेवरि
यारे ॥ अ० ३ ॥ लक्षणस्वभावतेसरखारे अ० तेस्वजाति
नरखारे अ० तेहथिविपरितजेहदेखारे अ० विजातिपद
तुमेपेखारे ॥ अ० ४ ॥ जिवेजिवस्वजातिजाणारे अ० पांचद्र
व्यविजातिमानारे अ० तेहनिचउन्नगिजाखुरे अ० नामा
दिककहिनेदाखुरे ॥ अ० ५ ॥ आपआपणिजातमांवेहेररे
अ० हाणिकेकरताकेहेररे अ० तेप्रथमजंगतेजाणारे अ०

स्वजातिस्वजातिवखाणोरे ॥अ०६॥ जेहपुद्गलद्रव्यनेह
 एतारे अ० स्वजातिरखोपुकरतारे अ० भगवीजोतेहिजा
 णोरे अ० स्वजातिविजातिमानोरे ॥अ०७॥ पुद्गलथिजि
 वहणाधरे अ० जगतमांएमजणायरे अ० विजातिस्वजा
 तिजाणोरे अ० जगत्रिजोएहिमानोरे ॥अ०८॥ जडजड
 प्रतेहणतारे अ० माहोमाहेक्षयकर्तारि अ० विजातिविजा
 तिमानोरे अ० जगचोथोएवखाणोरे ॥अ०९॥ जंगचार
 माहितुमेजाणोरे अ० जंगत्रणेतुमेनवखाणोरे अ० भंग ए
 कजअरिहतकहियेरे अ० विजोनागोतिहालहियेरे ॥अ०
 ॥१०॥ नामचारेइहान्नाख्यारे अ० सक्षेपेकहिनेदाख्या
 रे अ० आगेविस्तारेकहिशुरे अ० भेदघणाइहांलहिशुरे
 ॥ अ०११॥ भावार्थजेरुदयेधरशेरे अ० श्रोतातेसमकि
 तवरशेरे अ० मुनिहुकमज्ञानएसाचारे अ० प्रत्यक्षहिरोजा
 चोरे ॥अ०१२॥ ढालअगिश्रारमिसपूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ स्वजातिविजातिवर्णव्या वर्णव्यावलिचउजं
 ग वरणवकरुचउजगनो रुदयधरिवहूरंग ॥१॥
 ढाल १२ मी ॥ कोयलपरवतधुधलोरेलाल ॥ एदेशि ॥
 स्वजातिस्वजातिवरणवुरेलाल पेहेलोभांगोजेहनविहाणि
 घेरे हणताकर्मवधहोयखरोरेलाल दुरगतिजावेतेहन
 विहाणियेरे स्वजातिस्वजातिवर्णवुरेलाल ॥१॥ वाघमंजा
 रीदिपडारेलाल पन्नगादिकवहुजाति ॥ नवि० ॥ सारगमु

सादिहणरेलाल मेंडकोदिवहूजात ॥नवि स्व०२॥ विजा
तिजाणेअज्ञानियारेलाल ज्ञानिजाणेस्वजात नवि० ज्ञा
निवचनथीओलखोरेलाल जिवेजिवछेजात ॥नवि स्व०
३॥ जिवेजिवनेहणरेलाल क्षुधावेदनिनेकाज नवि० स्व
जातिस्वजातिशंहणरेलाल तेचंभेचउदराज ॥नवि स्व०
४॥क्षुधावेदनिपुद्गलदशारेलाल तेतोविजातिहोय नवि०
तेकारणजिवनेहणरेलाल तेस्वजातिजोया॥नवि स्व०५॥
धनरमणिनिलालचेरेलाल प्रथविप्रमुखजाण नवि० रा
ज्यलेवावलिअन्यतणुरेलाल तेहथिएअनाणा॥नवि स्व०
६ ॥ अथवावेहेरपुर्वतणुरेलाल पुत्रपितानुसंभार नवि०
अथवाअनागतकालनुरेलाल अगमबुद्धिविचार ॥ नवि
स्व० ७॥तेकारणजिवनेहणरेलाल तेसुणोविचार नवि०
धनतोछेजडदशारेलाल तेविजातिधार ॥नवि स्व० ८॥
कृत्यअकृत्यनविगणरेलाल रमणिरसविरुद्ध नवि० वि
पयरसपुद्गलदशारेलाल साचिएहिजबुद्धा॥नवि स्व० ९॥
प्रथविपणविजातछेरेलाल राज्यमिश्रचांगोमान नवि०
प्रथविधनादिविजातछेरेलाल मनुष्यादिस्वजातिजाण॥न
वि स्व० १०॥राजाराजादिस्वजातछेरेलाल देशविजाति
होय नवि० विजातीनेकारणरेलाल स्वजातिनेहणसोय
॥नवि स्व० ११॥ देशधनरमणिसाहिरेलाल जोगविजा
तितेजाण नवि०जिवनाभोगमांतेनाहिरेलाल पुद्गलजोग

इहांमांन ॥नवि स्व० १२॥ ज्ञानादिजेगुणछेरेलाल तेह
 नोजोगीजिव नवि० पुद्गलजोगजिवनविलहेरेलाल एम
 समजोसदिव ॥नवि स्व० १३॥ इत्यादिकारणथकिरेला
 ल किधोजिवसहार नवि० शत्रुनेमिन्नगण्योरेलाल तेमुर
 खसिरदार ॥नवि स्व० १४॥ विजातिभोगनेकारणेरेला
 ल-किधिस्वजातिनिहांण नवि० स्वजातितेमिन्नदशारे
 लाल विजातितेशत्रुजाण ॥नवि स्व० १५॥ तेहनेश्ररिह
 तक्यमकहियेरेलाल तेतोमिन्निहत नवि० मुरखमाहि
 शिरोमणिरेलाल जेणेहण्याछेजत ॥नवि स्व० १६॥
 स्वजातिस्वजातिनेहणेरेलाल एपेहेलोनांगोकिध नवि०
 श्ररिहतपणुतेहमानहिरेलाल पापतणिएरिद्धा॥नवि स्व०
 १७॥ स्वजातिविजातिनाखशुरेलाल जेश्ररिहतकेहेवाय
 नवि० मुनिहूकमविजेनागेरेलाल शेवताशिवपुरजाय ॥
 नवि स्व० १८॥ ढालवारमीसपूर्ण॥

॥ दुहा ॥ स्वजातिस्वजातिवरणव्यो हवेकहूविजोन्नग
 स्वजातिविजातिजाणजो रुदयधरिवहूरग ॥१॥ भावति
 र्थकरजेहुवा हुवावलिकेवलजेह तेसविएन्नगशेवता पां
 म्यावलितगेह॥२॥तेहतणेचरणेनमी नाखुतेवृत्तात मुजम
 नमाईच्छाघणी पामवाभवनोश्रत॥३॥निद्राविकथापरिह
 रो परिहरोदुध्यान मननेणएकतानकरी श्रोतासुणोसाव
 धाना॥४॥ आगेएहमारसघणो ज्ञानतणोविशाल श्ररिहं

तपदजेहथिलहे अविचलसुखरशाल ॥५॥
 ढाल १३ मी॥ करजोडीकहेकामनिललनां ॥ एदेशि॥ अ
 रिहंतपदनिजशक्तियेळलनां लालाहोहणिविजातिथाय
 एपदवारुरेललनां ॥ एआंकणि ॥ स्वजातिविजातिभाख
 शुललनां लालाहोभांगोविजोकेहेवाय एपदवारुरेलल
 पुद्गलसविविजातिछेललनां लालाहोतेहनाचांगाआठ ॥
 एपद०॥ वर्गणातेसविजाणियेळलनां लालाहोसुणोतेह
 नोठाठ ॥ एपद० २॥ उदारिकवर्गणापेहेलिकहिललनां
 लालाहोविजिवैक्रीयजाण ॥ एपद० ॥ आहारकवर्गणा
 त्रिजिकहिललनां लालाहोचोधितेजसवखाण॥एपद०३॥
 चापावर्गणापांचमिललनां लालाहोउसासछठिकेहेवा
 य ॥ एपद० ॥ मनोवर्गणासातमिललनां लालाहो
 आठमिकारमणथय ॥ एपद०॥वर्गणाआठेतेसहिललनां
 लालाहोहवेनाखुतसमान ॥एपद०॥ छुटाजेतापरमाणु
 आललनां लालाहोतेनविवर्गणाजाण ॥ एपद० ५ ॥ दो
 यपरमाणुनेलामलेललनां लालाहोद्वीपरदेशिकेहेवाय ॥
 एपद०॥ द्वणुकखंधतसनामछेललनां लालाहोएमअनुक्र
 मेथाय ॥एपद० ६ ॥ त्रणप्रदेशिजेहूवेललनां लालाहो
 तणुकखंधकेहेवाय ॥एपद० ॥ एमएकएकवधुतेथकेलल
 नां लालाहोआठलगेतेकेहेवाय ॥एपद० ७॥ आपआ
 पणानांमथिललनां लालाहोसंज्ञातिहठराय ॥एपद० ॥

थकीरे दूधखिनाघृतनहोय तेकारणतृणमारह्युरे घृतस
 दातेजोय॥प्रा०११॥श्रीघशक्तीथीजेमतृणमार, घृतरह्यु
 छेसार तेमनिगोदादिकजाणीयेरे ॥ जिवपदार्थउदार
 ॥प्रा०१२॥एकसुखिएकदूखिदिशेरे एकराजाएकराकए
 कवेसेएकउपाडतारे एकआगलदोडेआक ॥प्रा०१३॥ ते
 मविपुर्वचवकरारे शुभाशुनतेजोय पचभुतमाकरणिन
 हिरे तेहविचारीजोय॥प्रा०१४॥शुभाशुननेटालिनेरे निज
 स्वरुपथयोजेह शक्तितेव्यक्तितथईरे मुक्तीजाणोतेह॥प्रा०
 १५॥तेहिजदेवजापियारे तसआणाधारेजेह तेहनेगुरुज
 णीयेरे निग्रथपढेतेह ॥प्रा०१६॥ भाख्युतेहनुधर्मकहारे
 तलत्रणेएह व्यवहारथकीएदाखियारे निश्वयत्रातमजेह
 ॥प्रा०१७॥कर्ताएसृष्टीतणारे दिशेनहिइहांकोय सासि
 याजावछेसहिरे आगमबुद्धीतेहोय ॥प्रा०१८॥ कर्तापुद्ग
 लधर्मनोरे पुद्गलकर्ताजाण जिवधर्मनोजिवछेरे निश्व
 यज्ञानतेआण॥प्रा०१९॥कर्ताधर्मवाढीकहरे कर्तावीणके
 मथाय जेजेपदारयनीपन्यारे कर्ताएनीपाय॥प्रा०२०॥त
 सउत्तरआगेसहीरे भाखीशुसुखकार मुनीहूकमतेसुणता
 रे मोहदशानीवार॥प्रा०२१॥ढालपदरमीसपुर्ण ॥
 ॥दुहा॥ नास्तिकवादपुरोधयो हवेसुणोइश्वरमत कर्ता
 मानेतेसहि ज्ञाननसमजोसता॥१॥ तिखोथडतवभोलियो

॥२॥ बालभाषातमेभाखता बालज्ञानीसोय अमेगिरवाण
भाषाकहिये ज्ञानिसाचाजोय ॥३॥ रोसकरिनविवोलि
ये रोसेसमजनहोय समताराखिसुणतु अज्ञानभावतेजो
य ॥४॥ ॥ढालसोलमी॥ ताहरामेहेलउपरवरसेमेह
झवुकेविजलिहोलालझवुकेविजलि ॥एदेगि॥ नारुयुतु
मेएमअमेज्ञानिसहिहोलाल अमेज्ञानिसहि पणविचारि
जुओतुमेकाईचितयईहोलाल ॥तुमे॥ कर्तापणुदाखोछो॥
तुमेकाईअन्यतेहोलाल ॥तुमे॥ तोतुमेरह्याअनाण विचारो
मननेहोलाला ॥वि० १॥ ज्ञानअनाणतसहाथरह्युतेजाणियेहो
लाला ॥२०॥ तोतुमेज्ञानिकेमकहोतेमाणियेहोलाल ॥क०॥
कर्तासृष्टीनोजेह ईश्वरतुमेभाखियोहोलाला ॥ई०॥ तोपुन्य
पापफलकेम ईहातुमेदाखियोहोलाला ॥ईहां०२॥ शुभाशु
भजेकरणिपोतानिजोगवेहोलाला ॥पोता०॥ ईश्वरकर्तापणुं
ईहानविजोगवेहोलाला ॥ईहा०॥ ईश्वरकर्तापणुंहोवेतो क
रणिसहिहोलाला ॥तो०॥ फलनविआपेकोईविचारोचि
तग्रहिहोलाल ॥वि० ३॥ सुखदुखदेवुतेसविकर्ताथिरह्यु
होलाला ॥क०॥ तोकर्णिनुशुकामकृष्टफोगटथयुहोलाला ॥
क०॥ रागद्वेशनहिहोयईश्वरतेनेकाहियेहोलाल ॥ई०॥ स
जाविहोयजेहपरमपदतेलहियेहोलाला ॥प० ४॥ एक
नेआपेसुखबीजानंदुखघणुहोलाला ॥विजा०॥ एविकर
णिनहोयईश्वरनिसास्त्रेभणुहोलाला ॥ई०॥ तेथिकर्तानहि

थकीरे दूधबिनाघृतनहोय तेकारणतृणमारह्युरे घृतस
 दातेजोय॥प्रा०२१॥श्रोघशक्तीथीजेमतृणमारै, घृतरह्यु
 छेमार तेमनिगोदादिकजाणायेरे ॥ जिवपदार्थउदार
 ॥प्रा०१२॥एकसुखिकदूखिदिशेरे एकराजाएकरांकए
 कवेसेएकउपाडतारे एकआगलदोडेआक ॥प्रा०२३॥ ते
 सविपुर्वचवकरारे शुभाशुनतेजोय पचभुतमाकरणिन
 हिरे तेहविचारीजोय॥प्रा०२४॥शुभाशुननेटालिनेरे निज
 स्वरुपथयोजेह शक्तितेव्याक्तिथईरे मुक्तीजाणोतेह॥प्रा०
 २५॥ तेहिजदेवजापियारे तसआणाधारेजेह तेहनेगुरुजा
 णीयेरे निग्रथपढेतेह ॥प्रा०२६॥ भाख्युतेहनुधर्मकहारे
 तत्रत्रणेएह व्यवहारथकीएदाखियारे निश्चयआतमजेह
 ॥प्रा०२७॥कर्ताएसृष्टीतणारे दिशेनहिइहांकोय मासि
 यानावछेसहिरे आगमबुद्धीतेहोय ॥प्रा०२८॥ कर्तापुद्ग
 लधर्मनारे पुद्गलकर्ताजाण जिवधर्मनोजिवछेरे निश्च
 यज्ञानतेआण॥प्रा०२९॥कर्ताधर्मवादीकहेरे कर्तावीणके
 मथाय जेजेपदारथनीपन्यारे कर्ताएनीपाय॥प्रा०३०॥त
 सउत्तरआगेसहीरे भाखीशुसुखकार मुनीहूकमतेसुणता
 रे मोहदशानीवार॥प्रा०३१॥ढालपदरमीसपूर्ण ॥

॥दुहा॥ नास्तिकवादपुरोधयो हवेसुणोइश्वरमत कर्ता
 मानेतेसहि ज्ञाननसमजोसता॥२॥ तिखोथइतववोलियो
 अमेकेमअनाण वेदादिकबहुशास्त्रना चौदविद्यागुणजाण

॥२॥ बालभाषातमेभाखता बालज्ञानीसोय अमेगिरवाण
 भाषाकहिये ज्ञानिसाचाजोय ॥३॥ रोसकरिनविवोलि
 ये रोसेसमजनहोय संमताराखिसुणतु अज्ञानभावतेजो
 य ॥४॥ - ॥ढालसोलमी॥ ताहरामेहेलडपरवरसेमेह
 झबुकेविजलिहोलालझबुकेविजलि ॥एदेशि॥ नाख्युतु
 मेएमअमेज्ञानिसहिहोलाल अमेज्ञानिसहि पणविचारि
 जुओतुमेकाईचितथईहोलाल ॥तुमे॥ कर्तापणुदाखोछो॥
 तुमेकाईअन्यतेहोलाल॥तुमे॥तोतुमेरह्याअनाण विचारो
 मननेहोलाल॥वि०१॥ज्ञानअनांणतसहाथरह्युतेजाणियेहो
 लाल॥र०॥ तोतुमेज्ञानिकेमकहोतेमाणियेहोलाल ॥क०॥
 कर्तासृष्टीनोजेह ईश्वरतुमेभाखियोहोलाल॥ई०॥तोपुन्य
 पापफलकेम ईहांतुमेदाखियोहोलाल॥ईहां०२॥शुभाशु
 भजेकरणिपोतानिजोगवेहोलाल॥पोता०॥ईश्वरकर्तापणुं
 ईहांनविजोगवेहोलाल॥ईहा०॥ ईश्वरकर्तापणुंहोवेतीक
 रणिसहिहोलाल ॥तो०॥ फलनविआपेकोईविचारोचि
 तग्रहिहोलाल ॥वि०३॥ सुखदुखदेवुतेसविकर्ताथिरह्यु
 होलाल ॥क०॥ तोकर्णिनुशुंकामकठफोगटथयुहोलाल॥
 क०॥ रागद्वेगनहिहोयईश्वरतेनेकहियेहोलाल ॥ई०॥सं
 जाविहोयजेहपरमपदतेलहियेहोलाल ॥प०४॥ एक
 नेआपेसुखबीजानंदुखघणुंहोलाल ॥विजा०॥ एविकर
 णिनहोयईश्वरनिसास्त्रेभणुंहोलाल ॥ई०॥ तेथिकर्तानहि

तुमेजाणोसहिहोलाल ॥तुमे०॥ वलिविचारोजेहपदास्थ
 छेसहिहोलाल ॥प० ५॥जिवादिक्छेजेहकहोकोणेकरचा
 होलाल ॥क०॥ कर्ताथाशेतासतोपूर्वेनविठरचाहोलाल ॥
 पू०॥ कृत्रिमजिवस्वरूपकेनाशथाशेखरोहोलाल ॥ना०॥
 ईश्वरसमरणतेहसविफोगटठरचोहोलाल ॥सवि० ६॥
 श्रुष्टिनोहितितवईहाजासोशुहतुहोलाल भा० सप्तपदा
 धनवद्रव्यकहेन्यायकछतुहोलाल क० तेनविहूतुतोइहा
 लाव्याकिहाथकीहोलाल ला० अवरनथानककोईकेला
 व्यातिहाथकिहोलाल ॥ला० ७॥ कृत्रिमवस्तुजेहतेहवि
 एसेसहिहोलाल ते० घटपटादिजेहपदार्थनासेवहिहोला
 ल प० पृथगीनभादिकजेहपदार्थश्रक्षयमहिहोलाल प०॥
 माटेकर्तानहिकोईतुमेसमजोवहिहोलाल ॥तु० ८॥ क
 र्तोसर्वनोईश्वरतोएहनोजोईयेहोलाल ए० परंपराए
 मजोतांथागनलाहियेहोलाल था० तेथिकर्तानहिजगतमा
 कोईछेहोलाल ज० स्वजाविकपदार्थश्रुष्टिएहछेहोलाल
 ॥श्रु० ९॥ करणिजेहविपोतेकरशेतेहवुहोलाल क० पाम
 शेफलइहातेहएमतेध्याववुहोलाल एम० थाशेकरणिथि
 रहिनतवपदआणोहोलाल त० लेशेनिरविकल्पएमशा
 स्त्रिमणोहोलाल ॥ए० १०॥ मुक्तिकाहियेतेहस्वरूपनेसहिहो
 लाल स्व० तत्रवालयोतिहावेदातवादिविहोला ल वे० ॥
 मुनिहूकमकहेतेहस्वरूपश्रागेजाखशुहोलाल स्व० वेदा

तनोविवादकहिनेदाखगुहोलाल ॥ क० ११ ॥ ढालसो
लमी संपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥ तवहसिवोल्योसहि वेदांतवादीजेह अमेजा
र्युतेसत्यछे एमांनहिसदेह ॥ १ ॥ कर्ताकोइदीसेनहि वस्तु
स्वजाविकएह सर्वजगतमांएकछे ब्रह्मस्वरूपीतेह ॥ २ ॥

क्रियाकष्टफोगटकरे तिरथजात्रातेम नक्तीजुक्तीतेजाणि
ये फोगटव्रतनेनेमा ॥ ३ ॥ पथराषाणिपुजतां पामिकेमभव

पार आत्मदमनजेकरे सुखकेमपामेधार ॥ ४ ॥ एकजब्रह्म
मांरमे जेछेचिदानंद मुक्तिदातातेहछे पामियेनेथीआणंद

॥ ५ ॥ वलतुसद्गुरुएमकहे सांचलनाईवात एकांतवचनन
बोलिये तेथिधर्मनीघात ॥ ६ ॥ धर्मवस्तुचाहोसहि तोसम

जोस्यादवाद मतवादनेछोडियो समजोज्ञानउलाढा ॥ ७ ॥

॥ ढाल १७मी ॥ तुमहममेरेएकठा मनमोहनमेरे ॥ एदे
शी ॥ ब्रह्मज्ञानिसांचलो म० धर्मस्वरूपउदार म० सर्व

जगतमाब्रह्मकह्यो म० एतुममतविचार ॥ म० १ ॥ एवचने
जडपणलह्यो म० समजोतासविचार म० नजमांहिवहू

जातछे म० पदार्थसातउदारा ॥ म० २ ॥ द्रव्यनवतेजाणीये
म० तेनविब्रह्मकेहेवाय म० ब्रह्मएकछेआत्मा म० चि

दातंदसुखदाया ॥ म० ३ ॥ तेसवितुमेब्रह्मकह्यो म० मिथ्याव
चनतेथाय म० भेदवेहेचीजुदाकरो म० आत्मएकलेवाय
॥ म० ४ ॥ मनादिजेतत्वछे म० तेतोजडकेहेवाय म० तेआ

तुमेजाणोसहिहोलाल ॥तुमे०॥ वलिविचारोजेहपदास्थ
 छेसहिहोलाल ॥प० ५॥ जिवादि कछेजेहकहोकोएकरचा
 होलाल ॥क०॥ कर्त्ताथाशेतासतोपूर्वेनविठरचाहोलाल ॥
 पू०॥ कृत्रिमजिवस्वरुपकेनाशथाशेखरोहोलाल ॥ना०॥
 ईश्वरसमरणतेहसविफोगटठरचोहोलाल ॥सवि० ६॥
 श्रुष्टिनोहितवईहानाखोशुहतुहोलाल भा० सप्तपदा
 र्थेनवद्रव्यकहेन्यायकछतुहोलाल क० तेनविहूततोइहा
 लाव्याकिहाथकीहोलाल ला० अवरनथानककोईकेला
 व्यातिहाथकीहोलाल ॥ला० ७॥ कृत्रिमवस्तुजेहतेहवि
 णसेसहिहोलाल ते० घटपटादिजेहपदार्थनासेवहिहोला
 ल प० पृथ्वीनभादिकजेहपदार्थश्रक्षयसहिहोलाल प०॥
 माटेकर्त्तानहिकोईतुमेसमजोवहिहोलाल ॥तु० ८॥ क
 र्त्तासर्वनोईश्वरताएहनोजोईयेहोलाल ए० परंपराए
 मजोताथागनलहियेहोलाल था० तेथिकर्त्तानहिजगतमां
 कोईछेहोलाल ज० स्वभाविकपदार्थश्रुष्टिएहछेहोलाल
 ॥श्रु० ९॥ करणिजेहविपोतेकरशेतेहवुहोलाल क० पाम
 शेफलइहातेहएमतेध्पाववुहोलाल एम० थाशेकरणिथि
 रहितवपदआपणोहोलाल त० लेशेनिरविकल्पएमशा
 स्त्रेमणोहोलाल ॥ए० १०॥ मुक्तिकाहियेतेहस्वरुपनेसहिहो
 लाल स्व० तववालयोतिहावेदातवादिविहोलाल वे०॥
 मुनिहूकमकहेतेहस्वरुपआगेनाखशुहोलाल स्व० वेदां

तनोविवादकहिनेदाखगुहोलाल ॥क० ११॥ ढालसो
लमी सपूर्ण ॥

॥दुहा॥ तवहसिवोल्योसहि वेदांतवादीजेह अमेजा
स्युतेसत्यछे एमांनहिसदेहा॥१॥कर्ताकोइटीसेनंहि वस्तु
स्वभाविकएह सर्वजगतमांएकछे ब्रह्मस्वरूपीतेह ॥२॥
क्रियाकष्टफोगटकरे तिरथजात्रातेम नक्कीजुक्तीतेजाणि
ये फोगटव्रतनेनेमा॥३॥पथरापाणिपुजतां पामेकेमभवे
पार आत्मदमनजेकरे सुखकेमपामेधार ॥४॥ एकजब्रह्म
मांरमे जेछेचिदानंद मुक्तिदातातेहछे पामियेनेथीआणंद
॥५॥वलतुसद्गुरुएकहे सांजलजाईवात एकांतवचनन
बोलिये तेथिधर्मनीघाता॥६॥धर्मवस्तुचाहोसहि तोसम
जोस्यादवाद मतवादनछोडियो समजोज्ञानउलादा॥७॥

॥ढाल१७मी॥ तुमहममेरेएकठा मनमोहनमेरे ॥ एदे
शी॥ ब्रह्मज्ञानिसाजलो म० धर्मस्वरूपउदार म० सर्व
जगतमांब्रह्मकह्यो म० एतुममतविचार॥म०१॥एवचने
जडपणलह्यो म० समजोतासविचार म० नजमांहिवहू
जातछे म० पदार्थसातउदार॥म०२॥द्रव्यनवतेजाणीये
म० तेनविब्रह्मकेहेवाय म० ब्रह्मएकछेआत्मा म० चि
दानंदसुखदाया॥म०३॥तेसवितुमेब्रह्मकह्यो म० मिथ्याव
चनतेथाय म० भेदवेहेचीजुदाकरो म० आत्मएकलेवाय
॥म०४॥मनादिजेतत्वछे म० तेतोजडकेहेवाय म० तेआ

स्मनाक्रयमकहो म० सजोगेमेलापथाय॥म०५॥ अरुपिजे
 आत्मा म० त्याविनाचनहोय म० ज्ञानानंदितेकह्यो म०
 अमुर्तिपदजोय॥म०६॥ मुक्तीपणतुमेकहो म० लोकमाहि
 समाय म० सर्वज्ञगुणथयोनहि म० विभावदज्ञानविजा
 या॥म०७॥ विभावदशाजिहारहि म० त्यामुक्तिनविहोय
 म० मनशुमुक्तिमानिलहो म० अयगजजेमजोया॥म०८॥
 मुक्तिस्थानकजाणोनहि म० तोमुक्तीक्यांथीथाय म०
 आत्मद्रव्यसमजेनहि म० नहिगुणपर्जाया॥म०९॥ नयाय
 कशास्त्रधि म० जोजोतासविचार म० द्रव्यगुणातिहांकह्या
 म० नवचोविशधारा॥म०१०॥ इत्यादिकवहूवातछे म० ब
 हूश्रुतपासेधार म० क्रियाप्रमुखउथापता म० नविकरो
 मनशुविचारा॥म०११॥ जोजनपणनावेएकधि म० कारण
 विनानुविधाय म० अग्निपाणीप्रमुखमळे म० तवरोटिनि
 पाया॥म०१२॥ तेमइहापणधारिये म० तपक्रियासुखकार
 म० कारणधीकारजहोवे म० एश्रदामनोहार॥म०१३॥
 केहेस्योआत्मानुक्रामछे म० क्रियाकामनकोय म० अग्नि
 विनारोटिनहि म० क्रियाविनामुक्तिजोय ॥म०१४॥ मु
 क्तिस्थानकजाणोनहि म० तोकिहाजावुथाय म० लोक
 माहेसमावता म० गतागतिकेहेवाय ॥म०१५॥ स्थूलब्रह्म
 छणवाथकी म० किचित्तआवेहाय म० स्वरुपजथारथजा
 णिये म० करियेज्ञानिनोसाथ ॥ म०१६॥ निश्चययकी

ब्रह्म ध्याइये म० वेहेवारे क्रिया सार० म० नित्या
 दिक बहू जेदछे म० ते समजो विचार० ॥ म० १७ ॥
 जथाजोग्यजेजाणवु म० तेहिजसत्यनांण म० स्यादवाद
 तेजाणिये म० तिहानविरहेअनांण ॥ म० १८ ॥ अथवा
 ब्रह्मब्रह्मकरे म० तेथिकारजनहोय म० चुर्योपुरुषधा
 वतो म० चोत्तमाघेवरजोय ॥ म० १९ ॥ मुखथकिपणभा
 खतो म० जमशुधेवरथाय म० तेहथिभुखजागेनहि म०
 जोजनथिभुखजाय ॥ म० २० ॥ तेमब्रह्मस्वरुपभजे म०
 क्रियाविनाविथाय म० अथवातुच्छजोजनकरे म० ते
 थिकौवतनआय ॥ म० २१ ॥ मनशुश्रेष्ठमानेसहि म०
 प्राक्रमनआवेतास्य म० तेमएकवेदांतथाकि म० नकरवि
 मुक्तिनिआश ॥ म० २२ ॥ जक्तिक्रियावेहूमिले म० त्रिजु
 अध्यात्मसार म० त्रणमलेकारजहोवे म० एहिजशुद्ध
 विचार ॥ म० २३ ॥ नयायकतववोलियो म० अमंघरद्रव्य
 स्वरुप म० प्रत्यक्षपरोक्षनेजाणता म० एअमज्ञानअनुप
 ॥ म० २४ ॥ तसउत्तरवलिआगले म० केहेशेसदगुरुसा
 र म० मुनिहूकमज्ञानेरमे म० पामेपदमनोहार ॥ म० ॥
 २५ ॥ ढालसतरमिसंपूर्ण ॥
 ॥ दुहा ॥ नयायकतववोलियो साचिछेमुजवांग्य न्याय
 मारगछेखरो एसमजुनोलाग ॥ १ ॥ न्यायविनास्वरुपनहि
 बांधेकोईजाणतेकारणन्यायजवडो एहिजमोटुंज्ञाना ॥ २ ॥

अनुमानउपमानवलि एमअनेकविचार. एसविन्यायनां
 रह्या विजामतमानविधार ॥३॥ पदार्थजाणुअमे छणना
 मुझघरमाहि प्रत्यक्षज्ञानअमेकह्यु मोहोटाएविणनाहि ॥
 ४॥ वलतुसदगुरुएमकहे तुझमतछेअनाण. द्रव्यस्वरुप
 छणेघणो पणतुजनाव्युनाण ॥५॥ तेस्वरुपजाखुहवे
 सांजलजोधरीकान रागद्वेशनेदूरकरि रुदियेआणोसान
 ॥६॥ ढाल १८ मी ॥ एकदिनगगाकेविचेसुणसाथवहो
 रा ॥एदेशि॥कहेसदगुरुसाजलो तुमेज्ञानिवाता द्रव्यस्व
 रुपनेछणता होतवचननिघाता ॥ १ ॥ पदार्थतमेजाखिया
 सानतेजाणो भाखुतासविचारए तुमेचित्तमाआणो द्रव्य
 गुणनेकर्मए सामान्यविशेषतेधारो. समवायनेअभावजे
 सप्तपदार्थविचारो ॥३॥ द्रव्यकह्यानवजातना प्रथविपा
 णिअमितेह वायुआकाशकालढाशिजे आत्ममनगुणगेह
 ॥४॥ गुणचोविसहवेजाखिये तेमुणजोसुखकार. रुपरस
 गंधफरसए सरूयाप्रमाणधार ॥ ५ ॥ प्रथकत्वसयोगवि
 भागए प्रत्वाप्रत्वगुणसार गुरुत्वद्रव्यत्वस्नेहए शब्दबु
 द्धिनिरधार ॥६॥ सुखदुखइच्छाद्वेपए प्रयत्नधर्मअधर्म
 जेह संस्कारतेमजाणिये एचोविसगुणनेह ॥७॥ कर्मपां
 चतेजाणिये उतपेक्षणपेक्षणसार आकुचनपरसारण. ग
 मनानिएहविचार ॥८॥ परमअपरमद्विविध सामान्यक
 हिजे नित्यद्रव्यएकविशेषछे समवायसत्वएकलिजे ॥९॥

आवचारप्रकारनो प्रागजावप्रदंशाजावो अत्वंतिकात्रं
 अन्य एअभावसुणावो ॥१०॥ सातपदारथतुमेकह्या
 अबहूछेविचार द्रव्यविनागुणकारहे जुदोकेमपरका
 ११ ॥ कर्मद्रव्यविणकोणेकरु सामान्यविपेशकिहांल
 ते समवायपणुजुदूनहि एमविचारग्रहिजे ॥१२॥ जि
 स्तुनोनाशछे तिहांअभावलहिये तेनेपदारथकेमंक
 सुधुमनसदाहिये ॥ १३ ॥ इत्यादिकवद्विचारथी अ
 नेजाख्या पुनरपिकारणसाभलो तुमेशास्त्रेदाख्या
 १४ ॥ प्रत्यक्षअनुमानउपमानथि विवादजकरवो इंद्रि
 त्यक्षज्ञाननो हठवाटजधरवो ॥१५॥ इद्रिथकिप्रत्यक्ष
 ज्ञानजकहोछो तेतोअनुमानजाणिये उपमानवहोछो
 १६ ॥ मननिवाततोनविलहे तेमदुरनिकहिये भुतजवि
 र्तमाननी तेज्ञानिकेमकहिये ॥१७॥ मत्रादिकसाधन
 देवसाधजेहोवे मनचितविवातजे उत्तरतेकेहेवे ॥१८॥
 वालोकिकमालह्यो जगवततेजाणे मननितननितेह
 मचित्तमेआणे ॥१९॥ इद्रियेप्रत्यक्षथि ज्ञानिकेमक
 ते बालगोपालनेहोवे विंगेपशुंलहिये ॥२०॥ तेथिअ
 निकह्या शास्त्रेएतमने भुतजविप्यवर्तमाननि वातजा
 हींमनमे ॥२१॥ जेजाणेनुतभविप्यना वर्तमाननाभाव
 अरुपिपदार्थ तेज्ञानिंध्याव ॥२२॥ द्रव्यगुणपरजायए
 हपजेजाखे सत्यासतपक्षेकरिजेवरणविदाखे ॥२३॥ आ

स्तिनास्तिप्रमुखलहि सत्तातेप्रकासे रघादवादएमनाख
 ता तिहादुरमतिनासे ॥२४॥ इत्यादिकवहुजाणने ज्ञानि
 कहिजे तेथिउपराठाजेरह्या तेअज्ञानिवहिजे ॥२५॥ ज्ञान
 अज्ञानतेमसाहि एमनिरणेकरिजे अज्ञानिदुरेतजो ज्ञानि
 संगवरिजे ॥२६॥ सेवाकिजेज्ञानिनि ज्ञानआपेलहिजे मु
 निहकमज्ञानिप्रते परमानदवहिजे ॥ २७ ॥ ढाल
 अढारमिसपूर्ण ॥

॥दुहा॥ वादिसर्वआपआपणु धरमस्वरुपजणावे जै
 नितसउत्तरकरि सुधुतेमनावे ॥१॥ तर्कवादबहुविधथि
 खटदर्शननाहोय बहुविधवादतेथीकरि जिनदर्शनधाण्यु
 जोया ॥२॥ दर्शनशक्तिनिजआत्मनि निश्चेथिवरता देव
 गुरुधर्मआपछे एमस्वरुपधरता ॥३॥ सातप्रकृतिनाशथि
 दर्शनएमलहिये अगियारप्रकृतिनाशथि आधधर्मकहि
 ये ॥४॥ प्रकृतिपदरनाक्षयथकि मुनिगुणधारो मोहनिक
 र्मनानाशथि वितरागसुखकारो ॥५॥ कर्मचारदुरेथए अ
 रिहतपवकहिये एविधसिखसमजिकरि त्रिजोभगलहिये
 ॥६॥ त्रिजोभंगहवेनाखशु विजातिस्वजातिजेह अज्ञानप्र
 माददुरेकरि सांचलजोगुणगेह ॥७॥ ॥ढाल १९ मी॥
 अजितजिनेश्वरचरणानिसेवा ॥एदेशि॥ त्रिजोभगहवेसां
 चलोए विजातिस्वजातिदोखु गुणवातिआत्मतणोए ते
 न चितर उ ॥१॥ नवितुमेजाणिरेएहनेदुरकरिजे

॥ एत्रांकणि॥ गुणअनंताआत्मतणाए तेहमांआठछेमुख्य
 चाखुतेतुमेसानलोए तजवाथिलेशेसुखा॥नवि०२॥ज्ञान
 दर्शननेअव्याबाध चोथुचारित्रजाणो अटलअवगाहनअ
 रुपिगुण अगुरुलघुचीत्तआणो॥भवी०३॥लब्धीपांचेवल्लि
 जेदाखी दानलाभनेजोग उपजोगविरजअनंतु आठमोगु
 णतेजोगा॥भवि०४॥ एआठेगुणआठेकरमे, छायाछेतेभाखु
 नामलहिनेतेकहुछु आगममाहिजेदाखु॥नवि०५॥ज्ञाना
 वरणिकर्मेज्ञानना, गुणअनंताढांका, दर्शनावरणिकरमे
 दाव्या दर्शनगुणथयारांका॥भ०६॥अव्याबाधगुणत्रिजो
 आत्मनो, वेदनिकरमेढकाणो, थिरतागुणचोथोआत्मनो
 चारित्रगुणछेराणो॥नवि०७॥ मोहनिकरमेतेगुणहणियो
 तेथिअसंजतिजाख्यो समकितगुणपणतेणेहणियो, तेथि
 मिध्यात्विदाख्यो॥भवि०८॥ अटलअवगाहनगुणपांचमो
 आयकरंमथिढकाणो, अरुपिगुणछठोआत्मनो नामकरम
 थिजाणो॥नवि०९॥ अगुरुलघुगुणसातमोकहिये गोत्रक
 रमथितेह, लब्धीगुणअत्रायकरमेए, एमआठेगुणजेह ॥भ
 वि०१०॥ गुणआठेस्वभाविकहिये आत्मस्वजाविरहिया
 तेहगुणनेहणताजाणो पुद्गलवर्गणाकहिया॥भवि०११॥पु
 द्गलतेविजातिथइने हणतोस्वजातिनेजेह तेथिविजाति
 स्वजातिजागो त्रिजो जाख्योतेह॥नवि०१२॥चोथोनांगो
 विजातिविजाति हणतानेकहिजे भोमिजाजनकोइपड्युं

छे उर्ध्वथिनाललहिजे ॥भवि० १३॥ एचडभगमाहिजेवि
 जो स्वजातिविजातिजाणो तेभगशेवेजेजेचेतन तेअरिहं
 तकहाणो॥भवि० १४॥तेअरिशब्देशत्रुविजाति हणताअ
 रिहंतकहिये त्रिजचादिकहणवाथि अरिहतपदनविल
 हिये॥भ० १५॥ प्रथमत्रिजोनेवलिचोथो एभंगदूरेकिजे
 हरखधरिविजोचगहणता अरिहतपदतेलिजे ॥ भवि०
 १६॥ कारणमलेपलटणस्वभावे भव्यहोयतेपलटे लहि
 सामंथ्रीगुरुआदिककेरी काललवधतेवरटे ॥भवि० १७॥
 पलटणस्वभावथिसिद्धपणुए जव्यजिवनेजास्यु ज्यारेत्या
 रेकारणपामिने आत्मगुणतेरास्युं॥भवि० १८॥ जवस्थि
 तिपरिपाकथयाथि पाचेकारणमलशे निमितकारणशुद्धगु
 रुमलवाथि मोक्षसुखतेवरशे॥भवि० १९॥नेकारणगुरुशुद्ध
 जोइने तेहनिशेवाकिजे ज्ञानगुणश्रद्धासहितजरियो मु
 स्यगुणएहलिजे ॥भवि० २२॥ कारणवेजिनवरेभास्या
 मुक्तिकेराजाणो उपादाननिमिततेलहिये उपादानआत्म
 गुणराणो॥भवि० २१॥ निमितकारणवहूविधजास्यु तेह
 मामुस्यतेजाणो सदगुरुविणतरेनहिकोई पुष्टआलंबन
 चित्तआणो॥भवि० २३॥कारणजेदएमसमजीने शुद्धशुद्ध
 अहिजे मुनिहूकमएकारणमलतां सेहेजेशिवपदलिजे॥
 भवि० २४॥ढालओगणिसमिसपूर्ण॥
 ॥दुहा॥कारणसामथ्रीमले पलटेनहिनिरधार तेअज

व्यस्वभावछे एजाख्योविचार ॥ १ ॥ तेकारणएअन्नवि
 जिवनमोक्षेजाय सत्तास्वरुपजोडये तोसरखागुणकेहे
 वाय ॥ २ ॥ प्रत्येकेप्रत्येकेजिवना गुणअनंताजाण गुण
 स्वभावनेजोवतां एकजपणुंचित्त्रांण ॥ ३ ॥ कोइसुखीको
 इदूखी पणतेनोवेदकएक एमएकमांअनेकछे अनेकमांए
 कछेक ॥ ४ ॥ ज्ञाननदर्शनादिक गुणअनंताजेह तेमांहेएक
 पणुलहो चेतनरायगुणगेह ॥ ५ ॥ अगुरुलघुपरमुखजे पर
 जायकहियेअनत तेमांहिपणएकछे चेतनमाहागुणवंत ॥
 ६ ॥ चेतनएकमाहिरह्या गुणपरजायअनंत गुणपरजाय
 मांएकछे चेतनपणुंतेसतः ॥ ७ ॥ एकअनेकपक्षवर्णव्यो हवेक
 इसत्यासत जावधस्निनेसांभलो श्रोतागुणलहत ॥ ८ ॥
 ॥ १ ॥ २० मी ॥ नरखीनरखीतुजविवने ॥ एदेशी ॥ स
 त्यअसत्यपक्षजे जाप्याशास्त्रेसार ज्ञानीतेखरा ॥ एआंक
 णि ॥ समजेतेनरधन्यछे भाखुतासविचार ॥ ज्ञानि० १ ॥
 द्रव्यखटआपआपणा स्वद्रव्यखेत्रसार ज्ञानि० कालजा
 वतेमजांणिये चारेथिसत्यउदार ॥ ज्ञानि० २ ॥ द्रव्यद्रव्यप्र
 तेकहू विवरितासविचार ज्ञानि० द्रव्यखेत्रकालभावए
 प्रत्येकेप्रत्येकेधार ॥ ज्ञानि० ३ ॥ प्रथमधर्मद्रव्यकह्यो ते
 हमांजाखुएचार ज्ञानि० स्वद्रव्यनोमुलगुणएहछे चल
 एसाहेसत्यउदार ॥ ज्ञानि० ४ ॥ खेत्रअसंख्यप्रदेशथि सत्य
 धर्मास्तीकाय ज्ञानि० अगुरुलघुस्वकालछे स्वधर्मेसत्य

थाय ॥ज्ञानि० ६॥ स्वस्वभावत्रापणा गुणपरजायेअनं
 त ज्ञानि० धर्मद्रव्यमांएचारकह्या सत्यधर्मएसंत ॥ज्ञानि
 ६॥ अधर्मास्तीआकाशास्ती कालपुद्गलजिव ज्ञानि० एपा
 चेअपरसहि धर्मद्रव्येअसत्यइवा॥ज्ञानि० ७॥ अधर्मास्ति
 कायद्रव्यमां स्वद्रव्येथिरसहायगुण ज्ञानि० असख्यप्रदे
 शेस्वखेत्रछे हवेभाखुकालगुण॥ज्ञानि० ८॥ अगुरुलघुपर
 जायजे स्वकालकेहेवाय ज्ञानि० गुणपरजायअनतजे स्व
 स्वभावतेथाय ॥ज्ञानि० ९॥ धर्मअकाशकालजे पुद्गलने
 वलिजिव ज्ञानि० एपाचेतेमानहि असत्यअधर्मसदिव॥
 ज्ञानि० १०॥ आकाशास्तिकायद्रव्यजे अवकाशगुणस्वद्र
 व्यज्ञानि० अनतप्रदेशस्वखेत्रछे अवकाशआपेसर्व ॥ज्ञा
 नि० ११॥ अगुरुलघुपरजायजे स्वकालसत्यतेथाय ज्ञा
 नि० अनतगुणपरजायजे स्वस्वभावेसत्यकेहेवाय॥ज्ञानि०
 १२॥ धर्मअधर्मकालजे जीवपुद्गलवलितेम ज्ञानि० एपांचे
 असत्यजाखिया आकाशद्रव्यमाएमा॥ज्ञानि० १३ ॥ कालद्र
 व्यहवेज्ञाखशु स्वद्रव्यवर्तनासार ज्ञानि० खेत्रसमयएक
 छे तेद्रव्यउपचारा॥ज्ञानि० १४॥ स्वकालअगुरुलघुकह्यो
 स्वस्वभावहवेथाय ज्ञानि० गुणपरजायथिभाखिये एचारे
 वा ॥नि० १५॥ धर्मअधर्मआकाशए पुद्गलजि
 वअसत्ये ज्ञानि० द्रव्यादिकमलेनहि कालभावनेखेत॥ज्ञा
 नि० १६॥ पुद्गलद्रव्यजेपाचमो स्वगुणभाखुतास ज्ञानि०

पङ्कणगलणस्वभावछे स्वगुणएसत्यजास ॥ज्ञानि०१७॥
 स्वखेत्रपरमाणुकह्यो. एकएवाअनंतः ज्ञानि०. अगुरुल
 घुपरजायछे प्रदेशेप्रदेशेसंत ॥ ज्ञानि० १८ ॥ स्वस्व
 भावजेआपणो गुणपरजायकेहेवाय ज्ञानि० एचारेसत्य
 जाणिये स्वद्रव्येतेथाय ॥ज्ञानी०१९॥ धर्मअधर्मआकाश
 जे जिवनेकालकेहेवाय ज्ञानी०. एपांचेएमांनहि तेथिअ
 सत्यएथाय ॥ज्ञानी० २० ॥ जिवास्तिकायस्वरुपजे भाखु
 तासविचार ज्ञानी०. एकएवाद्रव्यअनंतए प्रत्येकेप्रत्येके
 धार ॥ज्ञानी० २१ ॥ जिवास्तीस्वद्रव्यनो. गुणज्ञानादिक
 सार ज्ञानी०. चेतनालक्षणजाणिये स्वद्रव्यसत्यविचार. ॥
 ज्ञानी० २२ ॥ असंख्यप्रदेशिजिवछे स्वखेत्रएहंविचार
 ज्ञानी०. स्वकालेहांनिवृद्धिकहि तेअगुरुलघुधार ॥ज्ञानी
 २३ ॥ गुणपर्यायअनंतछे तेहिजस्वस्वभाव ज्ञानी० छद
 मस्तपूर्णजाणेनहि जाणेकेवालेभाव ॥ज्ञानि० २४ ॥ स्व
 द्रव्यखेत्रकालथीभावमलीथयाचार ज्ञानि०. स्वस्वद्रव्येए
 सत्यछे एमआगममांविचार ॥ज्ञानि० २५ ॥ धर्माधर्मआ
 कास्ति कालपुद्गलजेह ज्ञानि०. एपाचेनाजाणिये जिवमां
 असत्यएह ॥ज्ञानि० ॥ द्रव्यखेत्रकालभावजे स्वस्वद्रव्येस
 त्य ज्ञानि०. परद्रव्येअसत्यछे पांचेनाअरत ज्ञानि० २७ ॥
 द्रव्यखेत्रकालभावए प्रत्येकेप्रत्येकेचिन्न ज्ञानि०. एकनो
 बिजामांलाधेनहि जदाजटाछेचिन्न ॥ज्ञानि २८ ॥ तेथिए

स्वद्रव्यादिके चारेसत्यकेहेवाय ज्ञानि० अपरद्रव्यना
 व्यादिक तेहमांअसत्यतेथाय॥ज्ञानि०२९॥ गुणपर्जाय
 ततेद्रव्यछे खेत्रआधारतेथाय ज्ञानि० उत्पातवयनिवर्तन
 तेहिजकालकेहेवाय ॥ज्ञानि० ३०॥ विशेषगुणपरणति
 पर्जायविशेषप्रमुख ज्ञानि० तेहनेस्वभावकिजिये एस
 ज्याहोयसुख ॥ज्ञानि ३१॥ इमछद्रव्यतेजाणिये आप
 पणागुणोसार ज्ञानि० सत्यगुणतेहथिकह्यो एजिनवचन
 चार ॥ज्ञानि० ३२॥ परद्रव्यादिकचारजे तेहमांअसत्य
 थाय ज्ञानि० सत्यासत्यपक्षए बहुश्रुताथिसमजाय ॥ज्ञानि
 ३३॥ तेमाटेज्ञानिगुरु शेवोधरिवहुमान ज्ञानि० मुनि
 कमगुरुसेवता पामेवछितस्थान ॥ ज्ञानि० ॥ ३४॥ ढा
 विसमिसपूर्ण ॥

॥दुहा॥व्यक्तवअव्यक्तववर्णवु जेनाजेदअनत एहअ
 समजाथकीसेहेजेथायेसता॥१॥ढाल२१मी॥भुर्तिहोप्रभुमु
 श्रजितजिणंदाएदेशि॥व्यक्तवहोजिनव्यक्तवेनअव्यक्त
 क्षहोजिनप्रक्षतेहवेभाखिशुजि व्यक्तवहोजिनव्यक्तवकेहे
 जेह वचनहोजिनवचनगोचरदाखिशुजि॥१॥अव्यक्तवह
 जिनअव्यक्तवकेहेताजेह॥ वचनहोजिनवचनमाश्रावेन
 जी एमहोजिनएमएसकेत खटहोजिनखटद्रव्यमांजा
 सहिजि॥२॥द्रव्यहोजिनद्रव्यद्रव्यप्रतेसार गुणहोजि
 गुणअनंताजाखियाजि ॥ परजायहोजिनपरजायअनंत

ताम्र एमहोजिन एमप्रत्येकेटाखियाजि ॥३॥ वचनगुंहोजि
 नवचनगुंकेहेवाजोग ॥ नहिहोजिन नहितेअव्यक्तवकेद्या
 जे तेहिहोजिनतेहिजाखुक्विवार समजुहोजिनसमजुविक
 रेलह्याजि ॥४॥ केवलीहोजिनकेवलज्ञानिजेह भगवंतदे
 जिनभगवंतेदीठाभावसाविजि तेहनेहोजिनतेहनेअनंद
 नजाग व्यक्तवहोजिनव्यक्तववचनेहवीजि ॥५॥ तेहनेदे
 जिनतेहनेअनंतमेभाग गणधरेहोजिनगणधरेनु नांय
 राजि तेहथिहोजिनतेहथिअसंख्यातमेजाग ठनाहोति
 तेहमणां आगमइहारह्याजी ॥६॥ तेहथीहोजिनतेहनेदे
 यमांसार खटमांहोजिनखटमांप्रत्येकेकेद्वयवचन
 जिनगुणअनंताजेह पर्जायहोजिनपर्जायवचनेहनेदे
 जी ॥७॥ तेमांहोजिनतेमांदीशोद्विपक्ष अहोतिहोति
 तवअव्यक्तवजाणीयेजी एमहोजिनअव्यक्तवजा
 न्याहोजिनजाख्याएचित्तआणीयेदीशोद्विपक्षहोति
 तसमजोएहविचार ॥ पामेहोजिनअव्यक्तवजा
 स्यादहोजिनस्यादवादकेहेवाय अहोजिनमात्र
 तेथकरेजी ॥९॥ माटेहोजिनमांटेअहोतिहोति
 तेहनेसदेहहोवेनहिजी जथाहोतिहोतिहोतिहोति
 होजिनजाणेतवस्तुमहिजी ॥१०॥ अहोजिनके
 अज्ञान हानीहोजिनहानीहोतिहोतिहोतिहोति
 मानेठेकाणरेना ॥ एमहोजिनअमस्वदिक

॥११॥ एमहोजिन एमभाखेछेजेह तेहनोहोजिनतेहनोमत
 दूरेरुजो सुधुहोजिनसुधुवचनप्रमाण एमहोजिन एम
 स्यादवादवरोजा ॥१२॥ जाणोहोजिनजाणोवहुंश्रुतजेह
 तेहनेहोजिनतेहतेचरणेरहोजि मुनिहोजिनमुनिहुकम
 शुद्धज्ञान स्यादहोजिनस्यादवादगुणोगहगहोजि ॥ १३ ॥
 ढाल २१ मी सपूर्ण ॥

॥दुहा॥ पक्षआठेवर्णव्या भाखूएतसनाम तित्यअनि
 त्यतेजाणीये एकअनेकतेताम ॥१॥ सत्यअसत्यतेजाखि
 या व्यक्तवअव्यक्तवविचार पक्षआठेतेजाणिये स्याद
 वादसूखकारा॥२॥ एजाणीसुखीयाथया आगेअनंतासत
 वलीएजेजाणगे तेलेजेनवअत ॥३॥ मूरखएसमजेनहि
 जेहनिबुद्धिजड अल्पशास्त्रिसमजेनहि जेहनेकर्मनोभ
 ड ॥४॥ अल्पबुद्धिपणजेहनी सद्वहणाराखेतास अल्प
 कालेतेशिवलहे ॥ करीकरमनोनास ॥ ५ ॥ अल्प
 ससारीजेहोवे होवेशुक्कपक्ष एसद्वहणातेग्रहे जेहनिबु
 द्धिछेदक्ष ॥६॥ बोहोलससारीजिविडा कश्चपक्षिजेह ते
 हनेश्रद्धाहोवेनही अथवाअनविएह ॥७॥ वाचेनणेशास्त्र
 सही उपदेशदियेसुखकार पणहृदियेश्रद्धानही एअज्ञा
 नआचारा ॥८॥तेकारणस्यादवादमा समजवाकरोखप ज्ञा
 निगुरुसेवाकरी आलसकरोअल्प ॥९॥ ढाल २२ मी ॥ आ
 जसफलदिनउग्योहोश्रीसमेतशिखरगेरीनेटिया एदेशी

आजप्राणीतुमेधारोहो स्वस्वभाववस्तुस्वरूपनो कांइम
 जीयोसद्गुरुजोग पुन्यउदयएमोटीहोपंचंद्रिपणुंपाम्योस
 ही मानवजनमसंजोग॥१॥ आजप्राणीतुमेधारोहो ॥ स्व
 भावहवेजेभाखुहो ज्ञारख्याजे श्रीजीनवरे सामान्यनेविशेष
 प्रकार तेहना जेद एकविसहोनां मांदि कलहिनैकहू तमेसु
 एजोतासविचार ॥ आज ०२ ॥ आस्तिने १ नास्तिहो २ नो
 यस्वभाव एजाणिये ३ अनित्य ४ एकस्वभाव ५ अने
 स्वभावहो ६ जेदस्वभाव ७ अजेदए ८ जव्यस्वभावते
 ताव ९ ॥ आज ० ३ ॥ अभव्यस्वभावहो १० परमस्वभावअ
 गियारमो ११ एसामान्यस्वभाव हवेकांइकहूछुहोविशेष
 वभावजेकह्या एसमजवानोदाव ॥ आज ० ४ ॥ चेतनस्वभा
 हो १ अचेतनएहस्वभावछे २ त्रिजोमूर्तिस्वभाव ३ अमूर्ति
 रभावहो ४ एकप्रदेशस्वभावजाणिये ५ अनेकप्रदेशस्वभा
 ६ ॥ आज ० ५ ॥ शुद्धस्वभावहो ७ विभावस्वभावतेआठमो ८
 शुद्धस्वभावतेधार ९ उपचरित २ होस्वभावदसमोजाणी
 १० विशेषस्वभावविचार ॥ आज ० ६ ॥ सामान्यस्वभाव
 स्वरूपसक्षेपेतेदाखव सामान्यउपयोगिजेह दर्शनगुण
 होदेखीयेसर्वद्रव्यमां सामान्यकह्योगुणगेहा ॥ आज ० ७ ॥
 शोपस्वभावहोसक्षेपस्वरूपतेहनुंकहू नहिसर्वद्रव्यमांही
 ईद्रव्यमांतेछेहोकोईद्रव्यमांछेनहि ज्ञानउपीयोगेजा
 तांही ॥ आज ० ८ ॥ सामान्यमाहेथीहोपचस्वभाव

खाणशु पूरवग्रथअनुमान कोईकेहेशेतुमेहोसर्वनोअर्थ
 नवीकह्यो तेहनुशुअनुमान ॥आज ९॥ विजाग्रथमाहोस
 र्वस्वभावअभेदाखीया तेथीईहाजाख्यानांहि पंचस्वभा
 वहोतेहवेइहावर्णवु जेवाजाख्याज्ञानीताहि ॥आज० १०॥
 भेदस्वभावहोस्वकारजकरे गुणपर्जायपरवर्तनजास
 अभेदस्वभावहोस्वस्थानपणेरहे मुलस्वरुपएखास ॥
 आज० ११॥ पलटणस्वभावहोअनव्यस्वभावकह्यो ल
 हिंसुगुरुसंयोग धर्मआराधेहोकाललब्धेसही लहेनि
 जगुणजोग ॥आज० १२॥ अनव्यस्वभावहोचोथोहवेए
 दाखीये अपलटणएहस्वभाव कालसांमग्रोपांमीहोसुगु
 रुसजोगने नपलटेअनव्यस्वभाव ॥आज० १३॥ द्रव्य
 द्रव्यनाहोसर्वधर्मतेप्रते विशेषधर्मअनुजोय जेजेप्रण
 मेहोतेतेप्रमेयस्वभावछे एपंचस्वभावतेहोय ॥आज०॥
 १४॥ सर्ववस्तुमाहोपंचस्वभावतेजाणिये द्रव्यनोमुलस्व
 भाव मुनीहूकमहोसदगुरुसेवनथीलहे जेहनोमोहअभा
 व ॥आज० १५॥ ढालवावीसमीसपूर्ण ॥

॥दुहा॥स्वभावपाचेएकह्या खटद्रव्यमांसार तेमाटेसा
 मान्यकह्या समजील्योविचार ॥१॥ हवेचउन्नगीवर्णवु ख
 टद्रव्यमाजेह नित्यअनित्यजेपक्षथी प्रगटथइतेह॥२॥ च
 उन्नगीवहूविधछे भाखशुतासविचार सजथईश्रोतासाभ
 लो तजीआलपंपाल ॥३॥ आलसनिद्रादूरकरो तजेवि

कथाविचार मोहद्रष्टिदूरेकरी सावधानसुखकार ॥४॥ ए
 मांज्ञानअगाधछे थईजावोसावचेत मनवचकायाथिरक
 री श्रवणकरोचित्तेत ॥५॥ ढाल २३ मी ॥ देशिचंदरी
 यानी ॥ हवेचउजंगीवर्णवुरे लहीआगमअनुमान जेहमां
 भेदछेघणारे तेसमजवानुतान त्रुटक० तेहसमजवानुता
 नतेजाणो अनादिअनंतजगचीत्तमांआणो पेहेलोभंगतेह
 कहीजे विजोअनादिसंतलहीजे ॥ १ ॥ सुणोचवजि
 नएह ॥एआंकणी ॥ सादिसतहवेजाणीयेरे त्रिजोभंगए
 खास सादीअनंतचोथोकह्योरे एचउभंगीउलास त्रुटक०
 एचउभंगीउलासेढाखी खटद्रव्यमांहेतेभाखी परथमजी
 वद्रव्यमांकहीशु ज्ञानादिकगुणसाथेलहीशु ॥सुंणो० २॥
 जिवमांज्ञानादिकगुणरे अनादिअनतछेतेह नित्यस्वभावे
 जाणीयेरे एप्रथमगुणगेह त्रु० एप्रथमगुणगेहतेसाचो
 जेयोहीरोढीसेजाचां विजोगुणहवेजाखजेह जीवकरमस
 बधछेतेह ॥सुंणो० ३॥ जीवकरमसबधछेरे कालअनादि
 नोतास.ज्यारेत्यारेछुटशेरे मोक्षपुरीनीआश त्रु०मोक्षपुरी
 नीआशतेजाणो तेहथीसंतपदकहांणो अनादिसंतएवी
 जोभग एजंगेमुजलाग्योरंग ॥सुं०४॥ देवमनुपत्रीजंचत
 णारे नवतेसादीसंत जन्मादीकतेआदछेरे नाशथयेथा
 यअंत त्रु० नाशथयेथायअंततेजेह सादीसंतत्रीजोगुण
 गेह जंगनाख्योएजगनाथ जेहचलावेछेशिवसाथा ॥ सुणो

५॥जेजीवमोक्षेगयारे कर्मखपावीथयासीद्व फरीपाळाआ
वेनहिरे पाम्याअनंतीरीद्व त्रु० पाम्याअनंतीरीद्वतेसार मु
क्तीदीनतेआद्यविचार फरीनावेतेअंतकहीजे सादीअनत
भंगचोथोलहीजे ॥सुणो ६॥ जीवमाहेचउन्नंगीकहीरे ह
वेकडुधर्मास्तीकाय गुणच्यारेखधपजवारे अनादीअन
तथाय त्रुटक० अनादीअनतथायतेजाणो बीजोअगईहां
नकहाणो त्रणपर्जायईहोतेलहीये सादीसंतभगएकही
ये ॥सुणो० ७॥ देशप्रदेशअगुरुलघुरे सादीसतसंजुक
आदित्ततेहनोहोवेरे तेथीत्रीजोभगयुक्त त्रुटक० तेथीत्री
जोअगयुक्ततेजाणो चोथोअंगसीद्वजीवथीवखाणो धर्मप्र
देशतेसगेजेह सादीअनतअगकहीयेतेह ॥सु०८॥ एमअ
धर्मास्तीकायमारे चउन्नगीकेहेवाय आकास्तीकायमाजा
खशुरे गुणच्यारेतेयाय त्रु० गुणच्यारेतेथायतेजाणो ख
धअनादीअनतवखाणो बीजोअगएहमानही एहवातक
हूछुसही ॥सुणो०९॥ सादीसतहवेजाखशुरे जागोत्रीजो
सार देशप्रदेशअगुरुलघुरे आदित्तएहवीचार त्रुटक
आदित्तववीचारतेसार अभवीजीवसाथेतेधार चोथो
अंगएमतेसही अपेक्षितपणाथीलही ॥सु० १०॥ काल
द्रव्यमागुणच्यारछेरे अनादीअनत पर्जायमाअतितकाल
छेरे तेहीअनादीसत त्रु० तेहीअनादीसततेजाणो वर्तमा
नकालसादीसतआणो अनागतकालतेचोथोकहीये सा

दीअनंतभगतेलहीये ॥सु०११॥ कालनुस्वरूपउपचारथी
 रे नहीवस्तुस्वरूप वीवाहपनत्तीयेभाखीयुरे जोजोतेहअ
 नुप त्रु० जोजोतेहअनुपतेसही एमवलीवहूग्रथेवही ह
 वेनाखुपुद्गलजेह चउभगीयेलहीयेतेह ॥ सु०१२ ॥ पुद्ग
 लद्रव्यहवेजांणजोरे च्यारगुणेकरीसार तेहअनादीअनंत
 तछेरे प्रथमभंगनिहाल त्रु० प्रथमचंगनीहालतेसा
 रो बीजोभगइहांनवीधारो पजायिच्यारेभाख्याजेह खं
 धदेशप्रदेशतेह ॥सु०१३ ॥ परमाणुतेजाणीयेरे तेमअ
 गुरुलघुपरजाय सादीसंततेजाणीयेरे त्रिजोचंगतेथाय
 त्रु० त्रिजोभंगथायतेजांण कोइकेहेशेपरमाणुकेमआंण
 तेहनेकहीयेसांचलनाइ मलवावीखरवानीशक्तीछेतांही
 सुणो०१४॥वर्णगधरसंफरसनोरे परावरतनछेधर्म खंध
 मलेनेवीखरेरे एपुद्गलनोमर्म त्रु० एपुद्गलनोमर्मतेजाणो
 चोथोभंगएहमानवीआंणो अपेक्षीतपणेतेकहीये बीजो
 चोथोचंगतेलहीये॥सुणो०१५॥ कर्मतजीमोक्षेगयारे एह
 अनादीसत तेजीववीणतेपुद्गलारे भांगोसादीअनंत त्रुट
 क० चांगोसादीअनततेजांणो मुनीहूकसांमान्यवखांणो
 वीशेपपणेतेअगिकहीशु जेदघणातीहांकणेलहीशु ॥ सु
 णो०१६॥ ढालत्रेवीसमीसंपुर्ण ॥
 ॥दुहां॥जीवद्रव्यमांजाखशुं चउचंगीएह द्रव्यखेत्रका
 लजावथी जेछेगुणगेह॥१॥ जीवद्रव्यमांगुणच्यारअना

दीअनत जीवनेकर्मसजोगए तेअनादीसत॥२॥कर्मकोई
 कालेछुटशे तेकारणजाणो नरकत्रिजचादीनव सादीसंत
 वखाणे॥३॥जीवनेमोधपणुप्रगटे करीकर्मनोनाश तेदीन
 भगचोथोहोवे सादीअनंतखास॥४॥ हवेचउजगीद्रव्यथी
 खेत्रकालनेभाव तेसाथेअमेढाखशु समजील्योसुखलाव
 ॥५॥ढाल२४मी॥मेंदीरगलाग्यो॥एदेउी॥जीवद्रव्यमांजा
 णीयेरे द्रव्यखेत्रकालभाव श्रुतशुरंगलाग्योरे रंगलाग्योरे
 चोलमजिठ श्रु० ॥एआकणी॥ ज्ञानादीकगुणजीवनारे द्र
 व्यथकीचीतजाव श्रु०१॥अनादीअनंतएथयोरे स्वखेत्रजी
 वप्रदेश श्रु० असख्याताजाणीयेरेउदवर्तनापणेखास श्रु०
 ॥२॥सादीसतनांगोजाणीयेरे जगत्रीजोकेहेवाय श्रु० अथ
 वाअवगाहनथकीरे छतीपणुतीहाथाय श्रु०३॥एमजोताए
 जाणीयेरेअनादीअनतभग श्रु०स्वकालअगुरुलघुरे तेगु
 णयीजोतारग श्रु०४॥एपणअनादीअनतछेरे अथवावीजेप्र
 कार श्रु०अगुरुलघुगुणजाणीयेरे उपजवोवीणसवोसार
 श्रु०५॥तेजोतांसादीसतछेरे अथवाअवरप्रकार श्रु०स्व
 नावगुणपर्जायजेरे अनादीअनतवीचार श्रु०६॥ अगुरु
 लघुपर्जायजेरे सादीसतकेहेवाय श्रु० हवेकहूअजीवद्र
 व्यमारे सुणतातेसुखथाय श्रु०७॥ धर्मास्तीकायद्रव्य
 रे द्रव्यथीस्वद्रव्यजाण श्रु०चलणसहायगुणजेरे अना
 दीअनंतप्रमाण श्रु०८॥स्वखेत्रथीजाणीयेरे असख्यात

प्रदेशं श्रु० लोकप्रमाणेतेहछेरे जाणोआगमरेहेडा श्रु०
 ॥१॥अवगाहनपणेजाणीयेरे सादीसंतकेहेवाय श्रु० स्व
 कालेकरीतेकहोरे अनादीअनंतथाय श्रु०॥१०॥अगुरुल
 घुगुणजाणीयेरे अनादीअनंतछेएह श्रु०उत्पातवयतेजाणी
 येरे सादीसंतछेतेह श्रु०॥११॥स्वजावगुणचारछेरे अगु
 रूलघुतेमजाण श्रु० अनादीअनंततेजाखीयेरे सुधुएमची
 तत्राण श्रु०॥१२॥खंधदेशप्रदेशएरे तेमअवगाहनमानं
 श्रु०सादीसतएजाणीयेरे धर्मद्रव्यनुज्ञान श्रु०॥१३॥एम
 अधर्मास्तीजाणीयेरे सरखाजावसोहाय श्रु० हवेआका
 स्तीकायमारे स्वद्रव्येगुणकेहेवाय श्रु०॥१४॥द्रव्यधीद्रव्य
 नेअवगाहनारे अनादीअनंतकेहेवाय सु० हवेस्वखेत्रभा
 खशुरे अनंतप्रदेशीथाय श्रु०॥१५॥लोकालोकप्रमाणछे
 रे अनादीअनंतएह श्रु० अवगाहनापणेजाणीयेरे सादी
 सतभास्योतेह श्रु०॥१६॥स्वकालनेअगुरुलघुरे गुणएअ
 नादीअनंत श्रु० उपजेवीणसेतेमसहारे तेकारणसादी
 संत श्रु०॥१७॥स्वभावधीगुणचारएरे तेमवलीएकजखंध
 श्रु०अगुरुलघुतेमजाणीयेरे अनादीअनंतसध श्रु०॥१८॥
 देशप्रदेशजाणीयेरे तेछेसादीसंत श्रु० तेआकाशदेयभे
 दधीरे भासुतेसुणजोखंत श्रु०॥१९॥लोकाकाशतेएकछेरे
 लोकाकाशनोखंध श्रु० तेतोसादीसतछेरे हवेवीजोभासु
 खंध ॥श्रु० २०॥अलोकाकाशतेजाणीयेरे खंधअलोकनो

मह श्रु० सादीअनतभांगेकह्यारे आगमवचनछेतेह
 ॥२१॥ कालद्रव्यहवेनाखशुरे द्रव्यथीद्रव्यछेएक श्रु०
 वापुरानावर्तनारे गुणछेतेहनोनेका॥श्रु० २२॥ ने
 दिअनंतछेरे स्वक्षेत्रसमयविचार श्रु० २३॥ स्वका
 धरे वर्तमानसमयएकधार ॥श्रु० २३॥ स्वका
 संतछेरे वर्तमानसादीसंत श्रु०
 रे जेछेसादीअनंत ॥श्रु० २४॥ कालद्रव्य हवे
 व्यथीद्रव्यपणुंएह श्रु० पुरणगलणधर्मछेरे
 जेह॥श्रु० २५॥ क्षेत्रप्रमाणुंतेहनारे सादीसंतकेहेवाय
 कालथीगुणअगुरुलघुरे अनादीअनततथाय श्रु० २६
 उपजवोनेविणसवारे तेसादीसतक्रहाय श्रु० स्व
 एव्यारछेरे अनादीअनंतथाय श्रु० २७॥ दि
 लवारे चारैसादीसंत श्रु० मुनीहुकमहवेआगलेरे
 जेह॥श्रु० २८॥ ढाल २४मीसपूर्ण॥
 ॥ इहा ॥ द्रव्यक्षेत्रकालजावनी साथेचोचंगीएह
 लोचनेद्वयनां अनादीप्रमुखंतेह ॥२९॥ एव
 चोचंगीतिहांजोडशु
 पारै नुनवातइहाघणी

नही मूरख कहिये सोय ॥५॥ ते कारण परमादतजी करोश्रू
 तश्रभ्यास ज्ञानी गुरुने गोतीने समकित सहित गुण जास
 ॥६॥ ॥ ढाल २५मी ॥ क्युं जाणु क्युं वनी आवही एदेशी ॥
 हवे प्रथम इहां जोडीये आकाशद्रव्यथी सार हो भवीक - अ
 लोक आकाशमां नही अवर पचद्रव्यविचार हो भवीक ॥१॥
 हवे प्रथम इहां जोडीए ॥ लोकाकाशमां जाखिये खटद्रव्यनो
 वास हो भवीक प्रत्येके प्रत्येके चंउ जंगी लागेते भाखूतास
 हो भवीक ॥ ह० २ ॥ धर्म अधर्मद्रव्यजे संबंध अनादि अनंत हो
 भवीक लोकाकाश प्रदेशमां प्रदेशे प्रदेशे संत हो भवीक ॥ ह०
 ३ ॥ धर्म अधर्मद्रव्यना प्रदेशरह्या छेतास हो भवीक तेपण
 कदापी वीछडे नही तेणे अनादी अनंत जास हो भवीक ॥ ह०
 ४ ॥ आकाशखेत्रजे लोकछे तीहां सर्वे जीव कहाय हो भवीक
 तेतो अनादी अनंत छे एतोपे हे लोकां गोथाय हो भवीक ॥ ह०
 ५ ॥ अथवासं सारी जीवजे ह द्रव्यकर्मसही तजे ह हो भवीक ते
 मवली लोकप्रदेशथी सादी संत संबंधते ह हो भवीक ॥ ह०
 ६ ॥ लोकाकाशसंबंधने पुद्गल अनादी अनंत हो भवीक आ
 काशप्रदेशे जेरह्या पुद्गलद्रव्यगुणवंत हो भवीक ॥ ह० ७ ॥
 शीपरदेशी प्रमुखसही खंधसरवे एजाण हो भवीक . तेमप्र
 नाणुसंबंधए सादी सत चीत आण हो भवीक ॥ ह० ८ ॥ आ
 काशद्रव्यजे मजाखीयो तेमधर्मास्ती काय हो भवीक तेनो
 संबंधपण एमछे एम अधर्मास्ती काय हो भवीक ॥ ह० ९ ॥

एसवैसरखेभाविकह्या । संबंधद्रव्यनाजासहोन्नवीक सर
 खेभावेवीचारिने गुणग्रहणकरजोतासहोभवीक ॥ह० १॥
 १०॥ हवेभाखुर्जावद्रव्यने पुद्गलसाधेसंबंधजेहहोभवीक
 अभवीजीवनेजाणीये अनादीअनततेहहोभवीक ॥ह० ११॥
 जेअन्नवीजीवडा नवीपामेपदनीरवाणहोभवीक तेथीकर्म
 क्षयतेहनेनही सदापुद्गलसगजाणहोभवीक ॥ह० १२॥
 हवेजेअव्यजीवछे नाखुछुतासवीचारहोभवीक । लाग्याक
 र्मतेछुटशे तेथीअनादीसतधारहोभवीक ॥ह० १३॥ हवे
 नीश्वेनयेकरी नाखुद्रव्यविचारहोन्नवीक खटद्रव्यस्वभावे
 प्रणमे तेणेप्रणामीकसुखकारहोन्नवीक ॥ह० १४॥ तेथी
 परणामीकपणुसदा सास्वतोएछेजावहोभवीक तेथी
 अनादीअनंतछे एमसुधुचीतलावहोन्नवीक ह० १५॥ ह
 वेजीवपुद्गलवीशे वेद्दुमलतांसवधथायहोभवीक तेथीपर
 णामीकपणुकहुं परपरणामीककेहेवायहोभवीक ॥ह० १६॥
 परपरणामीकपणुजाणीये अन्नव्यजीववीचारहोभवीक अ
 नादीअनतएहछे हवेकहुभव्यजीवनोमारहोभवीक ॥ह०
 १७॥ अनादीसतएहछे कारणनाखुतासहोभवीक जीवपु
 द्गलमलवांतणो आदिनहिछेजासहोभविक ॥ह० १८॥ को
 ईकालेतेछुटशे तेथीएहसंतकेहेवायहोभवीक जीवपुद्गलमा
 जाणीये एमभगतेथायहोभवीक ॥ह० १९॥ पुद्गलपरमा
 णुपणे सत्ताअनादीअनंतहोभवीक जेमलवोनेवीखरवो तेतो

भास्वयोसादीसंतहोभवीक ॥ह० २०॥ एमचउभंगीवर्णवी
 खटद्रव्यमांसारहोचवीक मुनीहूकमआगेचलु कहिशुनय
 नोविचारहोचवीक ॥हवे०२१॥ ढाल २५ मी संपूर्ण।
 ॥दुहा॥ चउभगीएवर्णवी खटद्रव्यमासार ओतालेजो
 समंजीने जीवपुद्गलविचार॥१॥ जीवपुद्गलमलवाथकी स
 क्रीयकेहेवाय तेहपुद्गलरहीतथयो तवअक्रीयथाय ॥ २॥
 तेमाटेएपुद्गल सदासक्रीयजाणं तेविचारआगेभास्वशुं न
 पपदमांचितत्राण॥३॥ नयतणोविचारवहू जाणवुदुरधर
 नेह कर्मक्षयउपसमजेहने तेसमजेगुणगेह ॥४॥ सदगुरु
 म्गोतेलहे विनयकरीवहूमान अल्पबोधथीविस्तरे तेल
 बंदुसमान॥५॥ अवनितनेआवेनही नयतणुएज्ञान आवे
 पिणजाणीये अवलुछेतसज्ञान॥६॥ ब्रहामेहजपेरेजाणीये
 लदायकनहितास पदपदसंकटतेलहे खोटीपडेजसभा
 ॥७॥ भद्रवाहूतणीपरे फलदायकहोयसार तेकारणवि
 यकरो जेननुमुलउदार ॥८॥ हवेश्रोतासावधानथई सां
 लजोएकचित्त मनवचनकायाथीरकरी ज्ञानीनीएरीता१।
 ल२६ मी॥देशीएकवीसानी॥ एकअनेकपक्षथीरे निश्चे
 त्वहारज्ञानेकरी॥ नयोजाखेरे निश्चेव्यवहारतेचीतधरी
 द्विव्यमारे अनेकस्वप्नावरह्याखेरा तेएकवचनथीरेनवी
 येकह्यापरा॥ त्रुटकातेणेमांहोमांहिसंखेप एमकहिनेजा
 ये मुलनयनाजेदवेछे तेकहीनेदाखीये एकनयद्रव्यार्थ

क बीजीपरजायनयकही श्रंन्योश्रन्यवीचारजुदा भाख
 गुहवेतेसही ॥ १॥ द्रव्यार्थकनारे जेदहवेइहांनाखशु द्र
 व्यपणार्थीरे तेतोकहीनिदाखशुं परजायार्थकरे परजायग्र
 हणथीकहू उत्पातनेरेवयपरजायतीहांग्रहू॥त्रुटका॥परजाय
 श्रणलेवेकरी द्रव्यतीहातेलीजीये सत्तानेग्रहेवाथकीद्रव्यार्थ
 कतेकीजीये तेद्रव्यार्थकनयतणो भेदनाखुछुहवे दशनेदते
 जाणीये सत्यभापणतेकहे॥२॥नीत्यद्रव्यार्थकरे प्रथमभेद
 एभांखीयो अगुरुलघुगुणरे खेत्रश्रपेक्षावीणदाखीयो ए
 कद्रव्यार्थकरे मुलगुणनेग्रहे पिंडपणेरे उत्पातवयतेनवीलहे
 ॥त्रुटका॥ ज्ञानादीकगुणसरवे जीवसरवनेसरखा तेमपुद्र
 लादीकद्रव्यमाहेगुणसरवेनरखा तेकारणएएमजाणी ए
 कद्रव्यार्थिकनये हवेत्रीजोभेदभाखु साखेजेमतेकहे ॥३॥
 सत्यद्रव्यार्थिकरे स्वद्रव्यग्रहेसही जेमसत्यलक्षणरे द्र
 व्यमांहिभाख्यावहीव्यक्तवछेरेद्रव्यार्थिकचोथोभेदएवचन
 थीरे केहेवानोनखेदए॥त्रुटका॥ केहेवानोनखेदएही द्रव्यगु
 णपरजायते सर्वद्रव्यसहीतभाखीये वचनेग्रहेवाजोगए
 अशुद्धद्रव्यार्थिकए भेदपाचमोभाखीये कर्मउपाधीसही
 तलेता क्रोधादीकएदाखीये॥४॥ उत्पातनयेरे॥वयसापेक्ष
 तेजाणीये अशुद्धद्रव्यार्थिकरे छठानेदचीतश्राणीये कोई
 द्रव्यरे नामलहीनेभाखीये तेमाहीरे उपजवुवीणसवुदाखी
 ये॥त्रुटका॥प्रथमद्रव्यार्थिकनये मुलसत्ताएकजाणीये सर्व

सत्तासरखेभावे तेथीचीतणमआणीये॥ शुद्धद्रव्यार्थकग्रही
जीवसर्वनादाखीये आठप्रदेशनीर्मलाछेतेथीअशुद्धएजा
खीये ॥५॥ द्रव्यार्थकरे सत्ताभेदएनवमो स्वद्रव्यरेजीव
तेअसंख्यनो प्रदेशअसख्यरे तेसर्वेसरखाकह्यातेकारणरे
सत्ताद्रव्यार्थकएलह्या॥ त्रुटक ॥ द्रव्यार्थकभेदएहि परम
भावग्राहिककह्यो ॥ गुणगुणीस्वभावतेहि सर्वनोतेएकक
ह्यो ज्ञानरुपजेमआत्माए सर्वद्रव्यतेमभाखीये द्रव्यार्थ
कदशभेद एमकहिनेदाखीये॥६॥ परजायार्थकरे नयस्वरु
पतेभाखीये परजायनयनारे खटभेदतेदाखीये तेहमांहिरें
द्रव्यपरजायएमकह्यो भव्यपणोरेसिद्धपणोतेएमलह्यो
त्रुटकाव्यंजनपरजायद्रव्यना स्वस्वपरदेशमारहे गुणपर्जा
पएकथीयेअनेकतापणुलहे जैनधर्मएमभाख्यु द्रव्यधर्म
तेआपणी चलणसहायगुणतेथी जिवपुद्गलमांथापणी॥७॥
गुणव्यंजनरे परजायएचोथोकह्यो एकगुणनारे जेदघणा
हांलहो स्वभावपरजायरे अगुरुलघुतेजाणीये एपांच
नारे परजायतेहवखांणीये॥ त्रुटक ० ॥ पर्जायतेहवखांणी
जेसर्वद्रव्यमांजाखीया एपांचिपर्जायजाणो ज्ञानीवचने
जाखीया छठोपर्जायजांणीये वीजावनामतेकह्यो जीव
द्रलमांहीलाधेश्रवरमांहीतेनवीलह्यो॥८॥ इहांजीवमारे
रनरकादीगतीकही नानाप्रकारनारे नवकरतांतिलही
हवीभावरें परजायतेहनेजाखीये कर्मपरजायरेतेमकही

नेदाखीये॥त्रुटक०॥तेमकहीनेभाखीयेए हवेपुद्गलमांकहू
 द्वीपरदेशथीमांडीने एअनतपरदेशीलहू खंधतणुतेमलवु
 कहीये वीजावपर्जायतेजाणीये परावर्तनसमयसमये ते
 हचोतएमआणीये ॥९॥ पाठंतरैरेछपरजायतेजाखशु शा
 स्त्रमारैकह्याछेतेदाखशु अनादीरे नीत्यपरजायपेहेलोक
 ह्यो मेरुपरमुखरे श्रोतातुमेसमाजिलह्यो॥त्रुटक०॥श्रोता
 तुमेसमजजो जे सादीनीत्यपरजायए सिद्धमाहीएहलाधे
 एमवीजो जेदथायए अनीत्यपरजायएते॥समयेसमयेभाखी
 ये छद्रव्यमाहीतेहलाधे उपजेविणसेदाखीये॥१०॥अशु
 दरेअनीत्यपर्जायचोथोकह्यो जन्ममरणथीरे एपरजायस
 त्यथयो हवेउपाधीरेपरजायपाचमोनाखीये कर्मसंबध
 थीरे शुभाशुभथीदाखीये॥त्रुटक०॥शुभाशुभथीदाखीयेए
 परजायशुद्धछठोसही मुलपरजायसर्वद्रव्यना एकसरखा
 तेकहि ॥पलटेनहितेमुलपरजाय स्वभावपरजायजाणीये
 पलटेतेहीकर्मपरजाय मुनीहुकमचीतआणीये ॥ ११ ॥
 ढाल २६ मी सपूर्ण ॥

॥दुहा॥ परजायनयएवरणवी ॥खटभेदउदार खटखट
 दोयप्रकारना जारुयोतासविचार ॥ १ ॥ तेमद्रव्यार्थकव
 णव्यो ढसभेदथीजाण आगममावीस्तारघणो इहासक्षेप
 प्रमाण ॥२॥हवेसातेनयवरणवु तेसुणजोअधिकार नाम
 प्रथमइहांदाखशु आगेजेदविचार॥३॥ निगमनयपेहेलो

कह्यो बीजोसग्रहजाण त्रीजोव्यवहारजांणीये बहूवीद्व
 चीत्तआंण॥४॥रजुसुत्रचोथोकह्यो शब्दनयसुखकार संज्ञी
 रुढछठोकह्यो एवंभुतनीरधारो५॥नामकह्याएसातनां हवे
 कहुतासविचार भेदघणाइहांदास्वशुखटद्रव्यमांसार॥६॥
 ॥ ढाल २७मी॥ जीरेमाहारेजांभ्योकुंवरजाम ए देशी॥
 जीरेमाहारेहवेकहूनयविचार प्रत्येकेप्रत्येकेजाखियेजी
 रेजी जीरेमाहारेसातेनयनीमांहे प्रथमनीगमनयदाखिये
 जीरेजी॥१॥ जीरेमाहारेनीगमकेहेतांजैह नहीछेतसए
 कंगमोजीरेजी जीरेमाहारेअनेकविधतेगणाय जीहांती
 हांतिएमसमोजीरेजी॥२॥ जीरेमाहारेअंशगुणथीतेहं उ
 पन्योतेहनेग्रहेजीरेजी जीरेमाहारेवस्तुपणुंमानेतेह एम
 नीगमनयलहेजीरेजी ॥३॥ जीरेमाहारेअत्रजाखुंद्रघांत
 तेहतुमेचीतमांधरोजीरेजी जीरेमाहारेजेमकोइमनुष्य म
 नमांहेविचारकरचोजीरेजी ॥४॥ जीरेमाहारेपालीलेवा
 काज तेवनमांहीसंचरयोजीरेजी जीरेमाहारेकाष्टलेवाने
 हेत पंथमाहीवहेखरोजीरेजी ॥५॥ जीरेमाहारेपंथेमलि
 योएक सामोमाणसजाणियेजीरेजी जीरेमाहारेतेणेपुछी
 वात कीहांजावोछोएमनाणियेजीरेजी ॥६॥ जीरेमाहा
 पुछ्यानोउत्तर तेणेसमेकांइतेकहेजीरेजी जीरेमाहारेपा
 लियाकाजवनमांहेजावुंवहेजीरेजी॥७॥जीरेमाहारेकरचो
 हांरेविचार मोहोडोएकमनमांखरोजीरेजी जीरेमाहारे

पालीवनमारेकाम वणघडेतेवचनठरघोजीरेजी॥८॥ जीरे
 माहारेकाष्टपणकाप्युनांही दीठवीणएवचनकह्युंजीरे
 जी जीरेमाहारेतोमनचितवीवात तेनेतेवस्तुलह्युंजीरेजी
 ॥९॥ जीरेमाहारेतेमजजोवस्वरूप श्रंशथकीतेग्रहणकरी
 जीरेजी जीरेमाहारेमानेसिद्धसमान श्रथवातेसिद्धजापे
 खरीजीरेजी॥१०॥ जीरेमाहारेतेनीगमनारेजेद कह्यात्र
 एतेजाणियेजीरेजी जीरेमाहारेअतितश्रारोपणएह वर्त
 मानकालंचितश्राणियेजीरेजी ॥११॥ जीरेमाहारेएप्रथ
 मभेद बीजोभाखुछुहवेजीरेजी जीरेमाहारेअनागतश्रारो
 पणजेह वर्तमानमांहेतेठवेजीरेजी॥१२॥ जीरेमाहारेवर्त
 माननीगम जेदत्रणएजाणियेजीरेजी जीरेमाहारेतेहत
 णारेविचार जाखुतेचितश्राणियेजीरेजी॥१३॥ जीरेमाहा
 रेअतितनीगमजेह श्रारोपणविधिकहूजीरेजी जीरेमा
 हारेश्रीवीरनुनिर्वाण श्राजदीवालीएमलहूजीरेजी॥१४॥
 जीरेमाहारेअतितकालनीवात वर्तमानमांएलहीजीरेजी
 जीरेमाहारेएअतितनीगम प्रथमजेदतेएमकहीजीरेजी
 ॥१५॥ जीरेमाहारेअनागतनीगम जेदतासएमखशुंजी
 रेजी जीरेमाहारेपद्मनाज्जिनवर दीक्षाज्ञानतेदाखशुंजी
 रेजी॥१६॥ जीरेमाहारेसतोककालनीवात वर्तमानतेक
 हीजीरेजी जीरेमाहारेनीगमनयएमथाय त्रणेभेदेतेलह
 जीरेजी ॥१७॥ जीरेमाहारेहवेकहूसंग्रहनय सताग्राहेत

सहीजिरेजी जीरेमाहारेकारणसमजोतास एकनामिसर
 वेग्रहीजिरेजी॥१८॥ जीरेमाहारेद्रव्यकहियेएक एमकेहे
 तांगुणपरजायसहीजिरेजी जीरेमाहारेसर्वपरिवारसमेत
 तेनयग्रहेछेवहीजिरेजी॥१९॥ जीरेमाहारेइहांभाखुंएकद्र
 ष्टांत तेतमेसुणजोचितदइजीरेजी जीरेमाहारेकारणजा
 खुतास मनुष्यकोइपरभातलहीजिरेजी॥२०॥ जीरेमाहा
 रेबेठोघरनेबहार दातणवेलातेसहिजीरेजी जीरेमाहारे
 आपणाचाकरपास दातणमागेतेवहिजीरेजी ॥२१॥ जी
 रेमाहारेतवतेनोकरजाण जलरुमालसाथेसहिजीरेजी
 जीरेमाहारेदांतघसणनेकाज तेआवेदातणलहिजीरेजी
 ॥२२॥ जीरेमारेमाग्युहुतुतवएक पणसर्वेसंग्रहथकीजिरे
 जी जीरेमारेतेमद्रव्यमांएह गुणपरजायआवेनकीजिरे
 जी ॥२३॥ जीरेमारेसग्रहनयनातेह जेददोयतेदाखीया
 जीरेजी जीरेमारेसामान्यसंग्रहजेह द्रव्यकहीनेभाखीया
 जीरेजी॥२४॥ जीरेमारेजीवनेअजीव भेदजुदातेनवीथया
 जीरेजी जीरेमारेजेदवीजोहवेजास विशेषसंग्रहकह्याजिरे
 जी॥२५॥ जीरेमारेविशेषताएमथाय जीवद्रव्यतेकह्याजी
 जी जीरेमारेअजीवद्रव्यदूरतेह एमसंग्रहनयेलह्याजी
 जी ॥२६॥ जीरेमारेएसग्रहनयजाण हवेव्यवहारनय
 नाखशुंजिरेजी जीरेमारेमुनीहुकमकहेएम शास्त्रथीएदा
 वशुंजिरेजी॥२७॥ ढालसतावीसमीसपूर्ण॥

॥दुहा॥हवेव्यवहारनयवर्णवु जेहनाभेदअनेक तेसांभ
 लजोचितधरी भाखुछुकइछेक ॥ढाल २८ मी ॥ सुतसी
 द्वारथनुपनारे ॥एदेशि ॥ नयव्यवहारहवेतुणारे जेहना
 दोयप्रकार एककल्पव्यवहारछेरे बीजोज्ञानाचाररे ॥१
 वियणसाजलो एहअनुभवउटाररे अमृतरसखरो ॥एआ
 कणी ॥ कल्पव्यवहारजेजाणियेरे जिनआज्ञायेविहार ते
 थीवाहेरकष्टजेरे फोगटएनिरधाररे ॥भवि० २ ॥ वेहेवारके
 हेतांवाह्यजेरे स्वरुपदेखीनेरेजेद वेहेचेतेव्यवहारछेरेजे
 मावोहोलोखेदरे ॥ भवि० ३ ॥ दिसतागुणनेमानतारे
 अतरस्थानप्रमाण बाहेरदृष्टीनयछेरे अतरदृष्टीनवखां
 णरे ॥ज० ॥ जेकारणनीगमसग्रहरे ज्ञानरुपध्यानतेनाही
 तेहपरणामवीनाअशथीरे अथवासत्ताग्राहीछेताहीरे ॥
 जवि० ५ ॥ तेमइहाकारणमुख्यतारे मनुपपणुएरेसार
 जीवनिअवस्थातीहाकनेरे अनेकजातविचाररे ॥ जवि०
 ६ ॥ नीगमसग्रहनयथकीरे जीवसत्ताएकरुप व्यवहारन
 यथीअनेकछेरे भाखुभेदअनुपरे ॥जवि० ७ ॥ दोयभेदती
 हाजिवनारे ससारिनेरेसिद्ध सिद्धनाजेदपणअनेकछेरे
 पन्नबणाएरिद्ध ॥जवि० ८ ॥ ससारीदोयजेदथिरे अजो
 गीसजोगीरेजाण सजोगीदोयजातनारे केवलिछदम
 स्थवखाणरे ॥जवि० ९ ॥ छदमस्यदोयभेदेकह्यारे स्वीण
 मोहिउपसतमोहि उपसतमोहदोयजातनारे सुक्ष्मकखा

इसोइरे ॥ नवि० १० ॥ बीजोवादरकखाइछेरे तेहनापण
 भेददोय एकअवेदिजाणियेरे श्रेणिप्रतिपनसोयरे ॥ न
 वि० ११ ॥ श्रेणिप्रतिपनदोयजातनारे आठमेगुणठाणे
 जाण श्रेणिरहितविजाकह्यारे तेहनादोयभेदवखाणरे ॥
 नवि० १२ ॥ अप्रमादिपरमादिजाणियेरे प्रमादिनादोय
 नेद सर्वविरतिदेशविरतिएरे दोयनेदनाखुउमेदरे ॥ न
 वि० १३ ॥ विरतिप्रणामिअविरतिरे दोयभेदेअविरतिरेजा
 ण एकअविरतिसमकितिरे विजोमिथ्यात्वीअनाणरे ॥ भ
 वि० १४ ॥ मिथ्यात्विदोयभेदथिरे एकनव्यविजोअभव्य
 ग्रथिभेदपेहेलोकह्यारे अग्रथिभेदइव्यरे ॥ भवि० १५ ॥
 जेजिवजेहवोदेखियेरे तेहवोभाखियेतेह एमतव्यवहार
 नपनारे अतरउपयोगनएहरे ॥ भवि० १६ ॥ एमजपुद्ग
 लद्रव्यमारे भेदघणाकेहेवाय इहासंखेपेदाखशुरे व्यवहा
 रनयेतेथायरे ॥ भवि० १७ ॥ पुद्गलद्रव्यदोजातनारे परमाणु
 बिजारेखंध खंधनाभेदपणदोयछेरे एकजिवसाथेसंधरो ॥
 भवि० १८ ॥ विजोजिवरहितकह्यारे तेहनानेदअनेक जिव
 सहितखंधनारे भेददोयकह्यानेकरो ॥ भवि० १९ ॥ एकसुदम
 वादरविजोरे इहांवर्गणानोविचार तेपुर्वेभाखीगयारे अ
 रिहंतपदेतेधाररो ॥ भवि० २० ॥ एमअनेकभेदजाणियेरे व्य
 वहारेवेहेचाय खटभेदइहांदाखशुरे तेसुणजोसुखदायरे ॥
 भवि० २१ ॥ सुद्रव्यवहारपेहेलोकह्यारे सुणजोतासविचार

ज्ञानदर्शनचारित्र्ये निश्चयनयथि एकधाररे। भवि २२। एक
 रूपछेतेसहिरे तेहनाकरवारेभेद शिष्यादिकसमजाववारे
 एव्यवहारउमेदरे ॥ नवि० २३ ॥ अशुद्धव्यवहारबीजोक
 ह्योरे अज्ञानिकेहेवोरेजिव रागद्वेषलागिरह्यारे एहअशु
 द्धनहिशिवरे ॥ नवि० २४ ॥ त्रिजोशुभव्यवहारछेरे पुन्य
 करणिछेरेजास तपनेमनेकष्टजेरे व्यवहारचारित्र्यतासरे
 ॥ नवि० २५ ॥ अशुभव्यवहारचोथोकह्योरे अशुचकर्म
 करेजेह पापकर्मथिपाछोनहिरे जिवहशानोनेहरे ॥ न
 वि० ॥ २६ ॥ पांचमोउपचरितजाणियेरे वस्तुधर्मनहिजा
 स उपचारथापितेहनेरे वस्तुकरिमानियेतासरे ॥ भवि०
 ॥ २७ ॥ अणउपचरितव्यवहारछेरे शरिरादिकपरजाण
 शरिरजिवजुडापणुरे प्रणामिकभावेएकठाणरे ॥ भवि०
 ॥ २८ ॥ एमव्यवहारनयजाणियेरे बहुश्रुतचरणथिसार
 मुनिहूकमगुरुज्ञानथिरे होवेभवनोपाररे ॥ भवि० २९ ॥
 ॥ ढालअठाविशमिसपूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ चोथीनयहवेभाखीये रजुसूत्रगुणजास श्रती
 तअनागतकालनी अपेक्षानकरेतास ॥ १ ॥ वर्तमानकाल
 ग्रहे वस्तुनोजेगुण जेजेगुणप्रणमे तेतेमानेसुण ॥ २ ॥ प्र
 णामग्राहीजाणिये एनयनोविचार द्रष्टातएकइहाढाखशु
 समजील्योसुखकार ॥ ३ ॥ ग्रहस्थावासेजेवसे अंतरंगसा
 धुपरमाण तेनेसांधुमानेते एनयनुएकाम ॥ ४ ॥ परणांम

चपलछेतेहना विपयादिकसंजोग अजीलाखीतेसर्व
 नो टल्योनहिकोइरोग ॥ ५ ॥ अविरतीएजीवछे तेहेने
 मानेसाध इत्यादिकविचारबहु समकितिमनबाध ॥ ६ ॥
 दोयजेदरजुसूत्रना सूक्ष्मबादरजाण सूक्ष्मइहांवखाणिये
 प्रथमभेदचित्तआण ॥ ७ ॥ वस्तुसर्वसदायते वर्तमानकाले
 जेह समयमात्रतेग्रहे देखाडुगुणतेह ॥ ८ ॥ अतितकाले
 जीवए हूतोअज्ञानीजाण अनागतकालेतेवली अज्ञानथा
 शेचित्तआण ॥ ९ ॥ वर्तमानकालेज्ञानिछे ज्ञानिजाखेतास
 भूतजविष्यकालनी अपेक्षानहिजास ॥ १० ॥ एकजवर्त
 मानकालनो समयग्रहेएक देखेतेवोजाखतो सूक्ष्मरजु
 सूत्रनेक ॥ ११ ॥ बादरथुलपरणामने ग्रहेतेरजुसूत्र एम
 चीनतेजाणिये रजुसूत्रनयहुत ॥ १२ ॥ ढाल २९ मी ॥
 क्रांटाकरधिरेआविया ॥ एदोशि ॥ शब्दनयहवेभाखशु जे
 हनागुणअनेकरे केहेतांपारअविनहि समकीतगुणनीटे
 करे शब्दनयहवेभाखशु ॥ १३ ॥ वस्तुसर्वगुणेभरी अथवा
 निर्गुणजेहरे नामलाहिवोलाविये भापावर्गणाधीतेहरे
 ॥ शब्द ० २ ॥ वचनगोचरजेहोवे तेशब्दनयजाणोरे अरुपि
 द्रव्यवचनशु ग्रहोनजायेताणोरे ॥ शब्द ० ३ ॥ पणवचनशु
 जाखिये तेषीशब्दनयथायरे शब्दनाअर्थजेहवा वस्तुमां
 गुणतेपायरे ॥ शब्द ० ४ ॥ घंटपटजेमतेशब्दथी तेवोअर्थती
 हाहोयरे तेकारणएनयनो विपयतेवोजोयरे ॥ शब्द ० ५ ॥

अथवाव्याकर्णादिक विनक्तीसमासरे तेप्रतेअव्ययधा
 तुसही तेसवीशब्दमांखासरे॥शब्द०६॥ नामादिकनखेपा
 सही एनयमाकेहेवायरे तेसवीआगेनाखशु नखेपअधि
 कारेथायरे ॥शब्द० ७॥ छठीनयहवेभाखिये संभीरुदसु
 खकाररे गुणघणावस्तुतणा प्रगटेतेहविचाररे ॥शब्द०॥
 ८॥ अल्पगुणबाकीरह्या प्रगटशेतेखासरे तेहनेवस्तुमा
 नतो एअनिप्रायछेजासरे ॥शब्द० ९॥ नामादिकवाचक
 अर्थ प्रगटरुपधर्मजेहरे तेपरजायनेवस्तुकहि बोलावेछे
 एहरे ॥शब्द० १०॥ अर्थपर्जायप्रगट्याविना पर्जायपणु
 नमानेरे प्रगटपर्जायनेमानता एककरीनेजाणरे ॥शब्द०
 ११॥ जेमजीवचेतना आत्मशब्दएहरे नामार्थधर्मप्रगटहू
 वा तेमांगणेगुणगेहरे॥श० १२॥ एमपदार्थतणो एकअर्थकरे
 तेहरे एछठीनयजाणिये अशओछीछेएहरे ॥श० १३॥ तेर
 मागुणठाणेइहा केवलभगवंतजाणोरे सिद्धकहितेबोलता
 नेदकोइचितनआणोरे॥श० १४॥ देशउंणानेपूर्णकहे एवि
 यछेजासरे एवभुतहवेभाखशु सातमीनयछेखासरे श० १५
 गुणेजेसपूर्ण वस्तुजेदेखायरे क्रियाकरेतेआपणि तेवस्तुठ
 रायरे॥श० १६॥ वस्तुनावचनपर्जायजे तथावस्तुधर्मजेह
 रे, सर्वप्रगटपरवर्तता तेहनेवस्तुकहेतेहरे॥श० १७॥ जेजिव
 कर्मक्षयकरि, मोक्षेपोहोतासाररे तेहनेसिद्धकहेसहि, एव
 भुतेएहविचाररे॥श० १८॥ इहांद्रष्टात एकभाखीये तेसमज

जोसाररे कुंजशब्दतसकिजिये सुणोतासविचाररे॥श०
 १९॥स्त्रिमस्तकथापियो जलभरीयोसुखकाररे जलधार
 णक्रियाकरे आवतोकुंजतेधाररे॥श०२०॥एमसपुर्णमान
 तो एवभुततेजाणोरे एमसातेनयभाखीया तुद्धाचित्तमा
 आणोरे॥श०२१॥पुनर्पिसातेनय द्रष्टांतेकरिजाखुरे मुनि
 हूकमआगेसहि अनुजोगद्वारथिदाखुरे॥श०२२॥ढाल
 श्रीगणत्रिसमिसपुर्ण॥

॥दुहा॥जेमकोइपुरुपप्रते पुछेअवरतेसोय कहोभाइंतुमे
 कीहांवसो वलतुकहेतेजोय॥१॥लोकमांहेहूवसु निगम
 अशुद्धतेएह वलतुपुछेलोकए त्रणनेदछेतेह॥२॥ उर्धने
 त्रिछोकह्यो अधोलोकतेमजाण तेहेमांतुमेकिहांरहो ते
 भाखोसुवीनाण॥३॥ त्रिछालोकेहुरहू शुद्धनिगमएवाक्यं
 वलतुपुछेत्रिछाविपे ॥द्विपअसरुयसाक्या॥४॥तेमसमुद्रअ
 संरुपछे वसोकोणद्विपमांहे तेवारेवलतुकहे जंबुद्विपेताही
 ॥५॥शुद्धातरनीगमतणु जाणोतमेविचार हवेवलतुतेणेपु
 छियु तेभाखुउदार॥६॥जंबुद्विपमाखेत्रघणा कोणखेत्रेतुम
 वास तवअतिशुद्धबोलियो नरतखेत्रेखास॥७॥वलतुपुछेभर
 तना खंडछकेहेवाय तेमांहेतमेकिहावसो तवजाखेसुखदाय
 ॥८॥मध्यखंडेअमोवसु दक्षणादिशामाजेह तवतेपुछेदेशवहू
 कोणदेशमांकेह॥९॥तवकहेमगधदेशमां तवपुछेतेगाम तव
 कहेराजग्रहिविपे पाडोघरतेठांम ॥१०॥ इत्यादिकवहूपू

छिय तिहालगेनीगमकेहेवाय हवेअवरनयवर्णवु तेसुण
 जोसुखदाया॥११॥ढाल३०सी॥रामचद्रकेवागमाश्रांवांमो
 रीरहोरी एदेशी॥पुछेनरवलोतेह धरमाजीवघणोरी वल
 तुबोलेतेह सग्रहनयनणोरी॥१॥नयनयप्रतेसार उत्तरप्र
 त्युत्तरकहोरी समजिलेजोविचार सक्षेपेतेहवहोरी॥२॥त
 वउत्तरदेतेह आसनमाहेरहोरी वलतुपुछेतेह तमेकिहां
 वसोरी॥३॥हवेबोल्योव्यपहार शरिरमाहेवसोरी रजुसुत्र
 नाखेएम निजउपयोगरसोरी ॥४॥ शब्दनयबोल्योताम
 स्वभावमाहेरहोरि परनावकिधोत्याग श्रद्धाशुद्धग्रहोरि॥
 ५॥नयसन्निरुद्धतांम कहेनिजगुणमावसोरि ज्ञानादिकगु
 णमाहे एवभुतकहोरि॥६॥भाख्योजेमद्रष्टांत सर्ववस्तुमा
 हेकहोरि पुछेकोइकएम एकप्रदेशलहोरि ॥७॥ खेत्रकरि
 श्रगिकार कहोखेत्रएकोणतणोरि निगमभाखेएम पटद्र
 व्यपणोरि ॥८॥ कारणसुणजोतास आकाशप्रदेशल
 हेरि एकेपटद्रव्यहोय तवसग्रहकहेरि ॥९॥ अप्रदेशी
 छेकाल तेतिहानविमलेरी सर्वलोकमाहेजाण एकसम
 लहेरि॥१०॥तेथिजुदोनहिआकाश कालविनापंचग्रहोरी
 तवबोलेव्यवहार मुर्यद्रव्यलहोरी॥११॥ रजुसुत्रनाखे
 एम उपयोगजासदियोरी तवतेद्रव्यकहाय दृजोनाहि
 कहोरी॥१२॥बोलेशब्दनयसार नामजासलहोरि तेद्रव्य
 नोप्रदेश वलतिसभिरुद्धकहोरि ॥१३॥ एकआकाशप्रदेश

तेमध्येप्रदेशरहोरी नाखुतासविचार प्रदेशधर्मनोएकक
 होरी ॥ १४ ॥ अधर्मद्रव्यनोएक जिबनाअसंख्यरहेरी
 पुद्गलअनंतप्रदेश परमाणुछुटापणकहेरी ॥ १५ ॥ भाखेए
 वंचुतताम प्रदेशतेनोकहेरी गुणक्रियासहितजास तेस
 मयेरेलहेरि ॥ १६ ॥ एमएसातेनय खेत्रप्रदेशेकहेरी दाखु
 जिबमांहेवेतेह सातेनयवहेरी ॥ १७ ॥ भाखेनिगमनयताम
 गुणपरजायधरेरी तेहनेजिवकहेवाय शरिरसहितवरेरी
 ॥ १८ ॥ तेनयजोताएम पुद्गलद्रव्यग्रहेरी धर्मास्तीकाया
 दिकएम जिबमांहेलहेरी ॥ १९ ॥ सग्रहनयतववोल अ
 संख्यप्रदेशकहेरि जिबतेहकहेवाय ॥ आकाशविणसर्व
 ग्रहेरी ॥ २० ॥ बोलेतवव्यवहार ॥ नयतेहकहेरी वि
 पयलहिकरेकाम ॥ विचारेतेजिवसहेरी ॥ २१ ॥ ते
 धिधर्मास्तीकाय ॥ अधर्मआकाशटलोरी ॥ अवरपुद्ग
 लपणजाय पणइंद्रिमांनवरोरी ॥ २२ ॥ कारणवीपेएजेह
 जीवधीजुदाकहेरी पणइहांनेलाधार तेजिवसांहेगहेरी
 ॥ २३ ॥ रजुसुत्रभाखेजेह उपयोगीतेजिवकहेरी मिथ्या
 त्विनेपणहोय तेथिमिथ्यात्वग्रहेरी ॥ २४ ॥ इंद्रियादिविष
 यतास मनसुद्धाटलोरि ज्ञानअज्ञानएकजाव तेथिमिथ्या
 त्वमलोरि ॥ २५ ॥ शब्दनयविचार तेवारेबोल्पोखरोरि ना
 मथापनाद्रव्य जावसाथेचारवरोरि ॥ २६ ॥ तेहनयनिमां
 हे गुणनिरगुणलहोरि जेदजुदोनविथाय तवसंनिरुढक

होरि॥२७॥ ज्ञानादिकगुणजेह तेहनेजिवकहेरि तेनयने
 अनुसार साधनासर्वग्रहेरि ॥२८॥ मतिश्रुतज्ञान इत्या
 दिकसर्वग्रहेरि साधकअवस्थाएह तेजिवमांहेलहेरि
 ॥२९॥ तेवारेएवभूत नयबोल्योवहेरि जिवकहियेछियेता
 स अनंतज्ञानग्रहेरि ॥३०॥ दर्शनचारित्रअनंत सत्ताशुद्ध
 मात्रकहेरि एनयेजिवजाण सिद्धगुणग्रहेरी ॥३१॥ जिव
 स्वरूपएसार सातेनयेकहोरी मुनिदूकमसुखकार सम
 जागुणलहोरी॥३२॥ ढाल ३० मिसपूर्ण॥

॥दुहा॥ धर्मधर्मसविजगकरे अनेधर्मनजाणेजास ए
 कातवादेखेचता लहिमिथ्यात्वनिवास॥१॥ अथवामतपक्ष
 मापड्या नविजाणेतमर्म आपमतखेच्याकरे नविजाणे
 तेधर्म॥२॥ धर्मजाणवाकारणे जाखुतासविचार नयसाते
 भगवंतेकहि तेसमजोसुखकार ॥३॥ सातेनयेतेहोवे धर्म
 नाजुदाजेद तेसमजवाकारणे टालीमननोखेद॥४॥ एका
 तपक्षनेआपमत वलीकुगुरुनोसग आलसप्रमादतेमतजी
 करोसुगुरुशुरंग ॥५॥ हवेसातेनयेकरी भाखुंधर्मसुखका
 र मनवचकायाथीरकरी साजलोतासविचार ॥६॥

॥ ढाल ३१ मी ॥ हमलीलालरगावूवरनांमोलियां॥ ए
 देशी हवेसातेनयेधर्मभाभलो जेजाख्युछेवीतरागरे तेह
 तूमेचीतमाधरो तेसमजवानोछेलांगरे॥१॥ हवेसातेनयेध
 र्मसांभलो ए आंकणी॥ प्रथमनीगमनयकहे धर्मसर्वेमांसा

ररे, धर्मइच्छेछेसर्वेते तेकारणधर्मविचाररे ॥हवे०२॥ अश
रुपधर्मजे अथवानामधर्मवलीजेहरे तेनयेतेग्रहणकरचुं
हवेसंग्रहभाखेगुणगेहरे ॥हवे०३॥ जेहवडैरेआदरचुं तेह
धर्मसुखकाररे अनाचारतेणेत्यागियो पणमिथ्यात्वरह्यो
धाररे ॥हवे०४॥ कुलाचारनेधर्मकहे तेयीअज्ञानपणुके
हेवायरे व्यवहारनयतववोलियो जेसुखनूकारणथायरे
॥हवे०५॥ हवेतेहनेधर्मतेदाखवे पुण्यकारणने तेहरे
पुण्यनेधर्ममानतो आश्रवग्रहेछेएहरे ॥हवे०६॥
रजुसुत्रतववोलियो उपयोगसहिततेधर्मरे वेरागसहि
तपरणामने धर्मनाखिजेतेएमरे ॥हवे०७॥ जथाप्रवृ
त्तीकर्णना परणामप्रमुखतेलिधारे सर्वेतेधर्ममांगणे ते
तोमिथ्यात्वनावमापणकीधारे ॥हवे०८॥ तववोल्कीशब्द
सही धर्मतेसमकितकहीयेरे धर्मनुमुलसमकितकह्यु ते
मार्गसुद्वोलहियेरे ॥हवे०९॥ तवसर्भरुढउचरे जेहजिव
अजिवरे नवतत्वखटद्रव्यते तेओलखियेसदीवरे ॥हवे०
१०॥ जिवसत्तानेध्याइये करीअजिवनोत्यागरे ज्ञानदर्श
नचारित्रजे शुद्धनिश्चयनयनोरागरे ॥हवे०११॥ वधताव
धतापरणामजे क्षपकश्रेणीआरोहरे कर्मक्षयनेकारणे ए
साधनधर्मसोहरे ॥हवे०१२॥ मुलस्वभावजेजिवना धर्म
स्वभावपणतेहरे सभिरुढएधर्मछे तुमेसमजिल्योगुणगे
हरे ॥हवे०१३॥ हवेएवभुतनयाथि धर्मतेशुद्धकेहेवायरे सं

पुर्णनयमानतो तेवातचित्तसोहायरे ॥ हवे० १४ ॥ कार
 जजेचेतनतणु मुक्तिरूपसुखकाररे मिद्वखेत्रमांहरिहे ते
 हिजधर्मविचाररे ॥ हवे० १५ ॥ एसातेनयेकरि चास्युध
 र्मस्वरूपरे समकितमिध्यात्वजोइने तुमेग्रहणकरजोअनु
 परे ॥ हवे० १६ ॥ नयच्यारेमिध्यातमा मलतिकहिजिनरा
 जरे तेउपदेशदूरेकरि मनथिकरोतेताजरे ॥ हवे० १७ ॥
 पाचमीनयथिचितधरो त्रणेनयसुखकाररे समकितसहि
 ततेजाणिये धर्मखरोतेविचाररे ॥ हवे० १८ ॥ एमजाणित्र
 उत्यागीये त्रणआदरियेउदाररे आत्मअर्थीजिवने उप
 देशजास्योमनुहाररे ॥ हवे० १९ ॥ हवेसिद्धस्वरूपने नयसा
 तेकरुवखाणरे प्रथमनयेजिवसवी सिद्धपणेतेजाणरे ॥
 हवे० २० ॥ रुचिकप्रदेशआठजिवना निर्मलसिद्धसमान
 रे तेथिसर्वेजिवसिधछे हवेसंग्रहनयविज्ञानरे ॥ हवे० २१ ॥
 सत्तासर्वेजिवनि सिद्धसमानछेएहरे तेणेपरजायनयेकरि
 कर्मअवस्थाटालिजेहरे ॥ हवे० २२ ॥ द्रव्यार्थनयेग्रहि अ
 वस्थाभाखीएहरे तवत्रीजोनवबोलियो विद्याप्रमुखसिद्ध
 गुणगेहरे ॥ हवे० २३ ॥ रजुसुत्रनयउचरे आलखिसत्ता
 साररे सिद्धसमानआत्मनी उपयोगध्यानविचाररे ॥ ह
 वे० २४ ॥ तेहसमेतेजिवने सिद्धकहियेछेसुखकाररे एणे
 समकितसिद्धसमगणु हवेपंचमीनयमनुहाररे ॥ हवे० २५ ॥
 शुद्धध्यानशुद्धतिहा प्रणामजेहनाहोयरे नामसहितनखे

मो॥१॥ प्रत्यक्षप्रमाणपेहेलुकह्युरे बीजुपरोक्षतेधार॥ज्ञा
 न० प्रत्यक्षप्रमाणतेजाखशुरे प्रथमअर्थविचार ॥ज्ञान०
 २॥ जेजेचेतनआपणेरे उपयोगथीसुखकार ज्ञान०
 वैद्रव्यनेजाणतोरे गुणप्रजायउदार ॥ज्ञान० ३॥ कर्मख
 पाविकेवलियथारे तेज्ञानप्रत्यक्ष ज्ञान० खटद्रव्यतेजा
 णतारे रुपिअरुपिदक्ष ॥ ज्ञान० ४॥ मुर्तिअमुर्तितेहनेरे
 जाणपणामासार ज्ञान० सर्वप्रतक्षतेजाणियेरे एखंपक
 रोउदार ॥ज्ञान० ५॥ देशप्रत्यक्षहवेजाखशुरे जेहनाने
 दछेदोय ज्ञान० मनपर्जवज्ञानजेरे अवधीबीजुजोय ॥ज्ञा
 न० ६॥ अढीद्वीपनिमाहिऐरे सन्नीपिचंद्रीजेह ज्ञान० ते
 हजीवतणातिहारे मनोज्ञावजाणेएह ॥ज्ञान० ७॥ रुपि
 द्रव्यनेजेलहेरे पुद्गलजेहकेहेवाय ज्ञान० परमाणुतेजाण
 तारे तेथीदेशप्रत्यक्षथाय ॥ज्ञान० ८॥ छदमस्थजेजावछे
 रे तिहामतीश्रुतज्ञान ज्ञान० परोक्षप्रमाणतेहनेकहीयेरे
 सर्वथकिएजाण ॥ज्ञान० ९॥ मतिश्रुतज्ञानथीरे जेजेजा
 णेजाव ज्ञान० तेहपरोक्षप्रमाणनारे त्रणनेदकहाव ॥ज्ञा
 न० १०॥ आगमप्रमाणप्रथमकह्युरे बीजुअनुमानजाण
 ज्ञान० बीजुओपमाजाणियेरे कहुप्रथमनुवखाण
 ज्ञान० ११॥ आगमकेहेताशास्त्रजेरे तेमाचारुयोविचा
 ज्ञान० तेहस्वरुपआपणेरे जाणीयेसर्वउदार ॥ज्ञान०
 १२॥ देवलोकनेनरकनीरे मनुपत्रीजंचतेसार ॥ज्ञान० न

गोदस्वरुपतेजाणियेरे द्वीपसमुद्रउदार ॥ ज्ञान० १३ ॥
 खटद्रव्यतेजाणियेरे जडचेतनवीभाग ज्ञान० रुपिअरु
 पितेसविरे सिद्धांतथीजाण्यानोलाग ज्ञान० १४ ॥ अनु
 मानप्रमाणजेरे देखीकोईसेनाण ॥ ज्ञान० देखीधुमाडो
 कोईघरथकिरे वहीतेचित्तआण ॥ ज्ञान० १५ ॥ औपमा
 नप्रमाणजेरे द्रष्टातथीथायतेह ज्ञान० मुखगोलछेसहीरे ई
 दुपुंनमसमजेह ॥ ज्ञान० १६ ॥ एमपरोक्षप्रमाणनारे अ
 वरजेदअनेक ज्ञान० शास्त्रथीतुमेजाणजोरे एहवचनवि
 वेक ॥ ज्ञान० १७ ॥ प्रमाणतेनयभाखीयेरे नयनखेपाहो
 य ज्ञान० माटेआगेनिक्षेपातणोरे कहीशुविचारजोय ॥
 ज्ञान० १८ ॥ मूनीदूकमगुणतेसहीरे निक्षेपचउविचार
 ज्ञान० तेशीवलायकजाणियेरे जेहनेअनुभवउदार ॥ ज्ञा
 न० १९ ॥ ढाल ३२ मी सपूर्ण ॥

॥ दुहा ॥ हवेनखेपावर्णवुं शब्दथकीकेहेवाय तेकारणश
 ब्दनयमां चारनखेपाथाय ॥ १ ॥ निगमसग्रहादिकनय प्रत्ये
 केप्रत्येकेजाण चारचारनखेपंछे एहसमुचीतआण ॥ २ ॥
 अथवाअनुजोगद्वारमां नखेपतणुनहिमान अनेकनखेपा
 वर्णवे समजुनेएज्ञान ॥ ३ ॥ विशेषशक्तिज्ञाननी तेहनेदा
 खुएह जेहनीशक्तिकमहोवे चउनखेपगुणगेह ॥ ४ ॥ चतुः
 नखेपवीणवस्तुनहि एशाखेविचार तेकारणनखेपातुमे
 धारोशुद्धविचार ॥ ५ ॥ ढालतेत्रीसमी ॥ सहीमोरीचालोसु

गुरुजीनेवदीये ॥ एदेशी ॥ भवीतुमेनखेपारेवीधीसाचलो
जेहनाचेदअनेकहो ज्ञानितुमे ० तेहमाचारमुख्यकह्या ते
सुणजेविवेकहो ॥ ज्ञानितुमे ० १ भवीतुमेनखेपाविधिसांच
लो ॥ नामनखेपनेथापना त्रीजोद्रव्यकेहेवायहो ॥ ज्ञा ० ॥ भा
वनखेपोचोथोलह्यो एंचारनखेपाथायहो ॥ ज्ञा ० २ ॥ नवी ० ॥
गाथा ॥ पर्यायाणनीधेय ॥ ठियमणत्छेतथय ॥ निरविखं
जायथीयचनामा ॥ जावदब्धचयेण ॥ १ ॥ तथाथापनालक्षणा ॥
जंपुणतयथसुन्नतय ॥ भिप्पाएणतारिसागारं ॥ कीरद्रवनि
रागार ॥ इत्तरमीयस्चठाणा ॥ २ ॥ द्रव्यलक्षणा ॥ दब्बएदू
वएदोव ॥ पवोविगारोगुणाण ॥ सदावोदवंनवजावस्स ॥
भुयजावचजजोगा ॥ ३ ॥ अथवायच्चकारणदृद्रव्यं ॥ भु
तस्सजावीनोवा ॥ भावस्सहिकारणतूयलोकेतद्रव्यं ॥
ईत्यादिजावलक्षण ॥ हरीचद्रपुज्येभावोविवक्षीत ॥ क्रि
यानुभुतियुक्तो ॥ हिवेसामाख्यात ॥ सर्वज्ञेरिद्धाहीवहिता
ददिक्रियानुजावात् ॥

स्वस्वद्रव्यथी नखेपाचारतेथायहो ॥ ज्ञा ० ॥ अवरपक्षमां
हीनवीलहो नीजवस्तुमांकेहेवायहो ॥ ज्ञा ० ३ ॥ कोईभाखे
उपचारथी नखेपाएजाणहो ॥ ज्ञा ० ॥ तेहनेकीजीये एतु
हवेकहूतासवीनाणहो ॥ ज्ञा ० ४ ॥ परद्रव्यमाजोथापीये न
खेपातेजाणहो ॥ ज्ञा ० ॥ तेउपचारथकीहोवे भीनस्वरूपची
तआणहो ॥ ज्ञा ० ५ ॥ पणतेनीजस्वजावमां नामादिकएचा

रहो ॥ ज्ञा० ॥ स्वस्वरूपमांदाखता नही ईहां उपचारहो ॥ ज्ञा०
 ६ ॥ श्रीजीनन्नद्रगणीजाखीयो तेहने एहविचारहो ॥ ज्ञा० ॥
 शंखाकखांतेथीदुरकरो धारोसुद्धमनुहारहो ॥ ज्ञा० ७ ॥
 ॥ उक्तचा ॥ ईहाजावाच्चीयवत्छनयत्छसुनेहीकिषसेसेहिं ॥
 नामदयोविभावजंतेविह्वत्छुपजांया ॥ इतिथद्यस्मात्ते
 पिनामादयो ॥ वस्तुनापर्यायाधर्मास्तबाधविशेषेइंद्रवस्तु
 न्युच्चरीतेनामादयोपीजावविशेषएव ॥
 पुनर्पिकह्युच्छे भावनीखेपानेश्रंते तदेवचिन्नवस्तुपु ॥ विशे
 पतश्चित्यमांना ॥ नामादिनाप्रधानेतर ॥ जावोदंशितसामा
 न्यत ॥ पुनःश्चित्यमांनानांसर्ववस्तुपु ॥ प्रत्येकांचतुर्णामप्य
 मीपा ॥ सद्भावप्राप्यते ॥ एवेतिदर्शयन्नह ॥ अहवावत्छनिहा
 णं नामंठवणाया ॥ जोतयागारो ॥ कारणयासेदव्वं ॥ कज्जाव
 न्नंभप्पयंतोवो ॥ गाथा ॥ १ ॥
 एतन्ननेकशास्त्रकरी पुरवाचारजएहहो ॥ ज्ञा० ॥ तेहनां
 वचनतेएमछे धारोतुमेगुणगेहहो ॥ ज्ञा० ८ ॥ एकवस्तुमां
 रेजांणीये नखेपाचारतेहहो ॥ ज्ञा० ॥ तेथीनीजनजिद्रव्य
 मां नखेपाभाखोएहहो ॥ ज्ञा० ९ ॥ एकद्रव्येथीज्जिनिभाख
 तां नखेपानोहोयनाशहो ॥ ज्ञा० ॥ भीनज्जिननखेपारहे
 जुढेजुढेद्रव्येवासहो ॥ ज्ञा० १० ॥ तेकारणएकद्रव्यमां न
 खेपामांनजोचारहो ॥ ज्ञा० ॥ नयन्नथवानखेपजे एकद्रव्ये
 चीतधारहो ॥ ज्ञा० ११ ॥ भीनद्रव्येमानवाथकी लागेत्त

समिध्यातहो ॥ज्ञा०॥ पुर्वग्रथमांतो एमछे
तहो ॥ ज्ञा० १२ ॥

॥ उक्तचपुज्ये ॥ एववयतीनया मिछ नामि
प्परत्रो इतीवचनात् ॥

पुनरपीवीजेप्रकारथी स्व. जाय स्यात्
तेथीपरमारेनवीमले नयनखेपनीरासहो ॥ज्ञा०१३॥

कारणसरधाकरो स्ववस्तुनाछेपरजायहो ॥ज्ञा०॥ नामा
दिकंतेजाणिये तेथीपरमानकेहेवायहो ॥ज्ञा०१४॥

॥ उक्तंच ॥ जेनामाइभेअसद्वथ ॥ पु. १२
नियया ॥ जंवथअथीलौए ॥ चउपज्जायनयसव्वं ॥ २ ॥

स्वस्वरुपमाजाणीये नामादिकएचारहो ॥ज्ञा०
ल्पनानवीकरो सुद्धअर्थएधारहो ॥ज्ञा०१५॥ एहनखेप

नोजाणीये वीस्तारजेछेताहीहो ॥ज्ञा०॥ अवरग्रंथेसखे
छे जोजोमनउछांहीहो ॥ज्ञा०१६॥ अथ.

ज्यए श्रीजीनन्नद्रगणीधारहो ॥ज्ञा०॥ तेपुज्यनावचन
हछे ग्रंथरच्योमनुंहारहो ॥ज्ञा०१७॥ विशेष्यावशकतेज

णीये तेमाजो जो एजावहो ॥ज्ञा०॥ मुनीदूकमसुखसंप
लेवानोछेएदावहो ॥ज्ञा०१८॥ ढाल ३३ मी सपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥ स्वद्रव्येएवर्णव्या नखेपातेचार स्वपरजाय
जाणीये उत्तमएआचार ॥ २ ॥ अजिन्नधर्मछेएहन ते

स्वुंसुखकार जिन्नद्रव्येहवेभाखशु नखपातणीवीचार

१॥ निम्नभिन्नद्रव्यमली नखेप्रातेथाय तेहीजभिन्नधर्मछे
 पचारेकेहेवाय॥३॥ तेहतणोवीस्तारकरी देखाडीशुंएह
 प्रनुजवीतेरसलहे समजीगुणनोगेहा॥४॥ रहश्यसवीतए
 ना समजेज्ञानीसार मुखअर्थपामेनही तेममतपक्षी
 ॥५॥ तेकारणश्रोतातुमे तजीमतपक्षदूर एहअर्थतु
 धारजो ज्ञानरसजरपुर ॥६॥ ढाल ३४ मी ॥
 जेहोकुंवरवेठोगोखडे॥एदगी॥ जीहोजिन्नद्रव्यमांजाणी
 जीहोजिन्नधर्मतेह जीहोनखेपाचारलहो, जीहोअथवा
 नेकहोयजेह ॥ १ ॥ ज्वीकजिनसमजोनखेपवीचारा॥ ए
 कणी ॥ जिहोनामनखेपपेहेलोकहू जिहोसुणजोता
 वीचार जिहोवस्तुगुणआकारथी, जिहोनामधरेउ
 र॥ भ० २ ॥ जिहोद्रष्टांतथीतेजाणीये, जिहोजेमको
 ठीरेभंग, जिहोकटकोएकतासग्रही जिहोजीवकहे
 रंग, ॥ भवी० ३ ॥ जिहोअथवावीजेद्रष्टांतथी जिहो
 वानिजिविरेजेह जिहोतेहेनेपणाकिजिये जिहोनामन
 तेह॥ न० ४ ॥ जिहोकोर्वकहेतेमांजिवनहि जिहोतेकेम
 योरेजाय, जिहोउत्तरतेहेनेदिजिये जिहोसमजील्योसु
 णय ॥ भ० ५ ॥ जिहोकृश्वरंगेदोरही जिहोकृश्वपक्षे
 जिहोअहिवुद्धियेतेहेनेहणे जिहोअहिपापतसलेख
 ०६॥ जिहोजेमएपातकलागियु जिहोनामनखेपथि
 जिहोतेमसर्वमाजाणिये॥ जिहोनामनखेपसुखकार

॥भ०७॥ जिहोनामतपवासिद्धये जिहोइत्यादिकबहूबोल
 जिहोनामसत्यतेजाखियु जिहोसुत्रमाहितेखोल॥न
 जिहोथापनानखेपोजाखशु॥ जिहोकिणहिमाकिणहिनी
 आकार जिहोदेखिनेतेहनेकहे जिहोतेहिवस्तुमुखकार
 ॥न०९॥ जिहोकाष्टपापाणनीसहि ॥ जिहोमूर्तिबहूप्रकार
 जिहोहेज्ञेपरमुखजाणिये ॥ जिहोआकारथिबोलविचार
 ॥न०१०॥ जिहोअथवाचित्रामणसहि ॥ जिहोआकारथि
 नामंठराय॥ जिहोतेमप्रतिमाजिनराजनि जिहोअरीहंत
 सिद्धनिकेहेवाय॥न०११॥ जिहोहवेद्रव्यनखेपना जिहो
 भाखुकाइविचार जिहोजेहद्रव्यमानामहीवे जिहोथाप
 नाआकारधार॥न०१२॥ जिहोगुणअनेलक्षणहोवे जि
 होआत्मउपयोगनाहि जिहोतेहनेद्रव्यतेजाणिये जिहोन
 खेपोत्रिजोच्यांही॥न०१३॥ जिहोअज्ञानिजेजिवछे जिहो
 निजउपयोगविणतेह जिहोतेहनेद्रव्यतेजाखियो जिहो
 अनुजोगद्वारेएहा॥भ०१४॥ जिहोपदअक्षरनेमातरा जिहो
 सुत्रसिद्धातरेवांच जिहोपुछेअथवाअर्थकरे जिहोजिन्नउप
 योगिताच॥न०१५॥ जिहोगुरुमुखतेसद्धहे जिहोसत्ताओ
 लखेरेनाहि जिहोतेथिद्रव्यनखेपछे॥ जिहोपुन्यब्रधनेते
 ज्यांही॥न०१६॥ जिहोमुक्षकारणनविजाखियु जिहोजो
 जोसुत्रविचार जिहोकष्टक्रियातेबहूकरे जिहोतपकरेरेउ
 दार ॥न०१७॥ जिहोजिवअजिवसत्तातणु ॥ जिहोओल

खाणजेहनेनाहि जिहोभगवतिसुत्रेतेभाखिया जिहोअव
रतिअपचखाणितांहि ॥भ० १८॥ जिहोबाह्यक्रियादिक
करी जिहोसाधुपणुमानेजेह ॥ जिहोलोकमांपणकेवरावता
जिहोसाधुपणुगुणगेह ॥न० १९॥ जिहोतेहमृपावादीजा
खीया जिहोउत्तराध्येनमोक्षार जिहोज्ञानिनेमुनिकह्या जि
होकष्टादिकथिअज्ञानिधार ॥न० २०॥

॥उक्तंच ॥ नमुणीरन्नवासेणं ॥ इतिवचनात् ॥ नाणेण
यमुणीहोइ ॥ इतिवचनात् ॥

जिहोकोइगणताणुजोगथि ॥ जिहोकोइककल्पविचार
जिहोचरणसित्रिकरणसीत्रीना ॥ जिहोकोइकथानुजोग
धार ॥भ० २१॥ जिहोएमअनेकप्रकारथी जिहोजाणीदेउप
देश ॥ जिहोनाखेअमेज्ञानिछिये ॥ जिहोपणअज्ञाननिवेश
॥भ० २२॥ जिहोद्रव्यगुणपरजायने जिहोजाणेजेमुखकार
जिहोज्ञानितेहनेनाखीया जिहोउत्तराध्येनमोक्षार ॥भ० २३॥

॥उक्तंच ॥ श्रीउत्तराध्येनमोक्षमार्गअध्ययनमां ॥ एयंपंच
विहणानां ॥ दवाणयगुणाणय ॥ पञ्जवांणयसव्वेसिनाणं
सव्वेसि ॥ नांणानांणीहिदसियं ॥१॥

जीहोनवतत्त्वओलरुयांयकी जीहोश्रद्धाजोथिरथाय जी
होसमकीततो कहियेतेहने जीहोनेहितोमिथ्यातीकेहेवाय
न० २४॥ जीहोसमकीतवीणज्ञाननहि जीहोज्ञानवीना
चर्णनहोय जीहोतेकारणश्रधाशुद्धधरो जीहोदेखीउत्त

राध्येनसोय ॥२५॥

॥उक्तच॥नाएदसएनाणं॥नाएणविनानहुंतीचरणगुंणा॥

जीहोआक्कालेवहूआडंबरी जीहोकिरियाकष्टदेखाड जी
होज्ञानहिणतेनरा जीहोतेहनोसंगदूरछाड न० २६॥

जीहोवाहाजकरणीतोअनवी जीहोकरेछेनीधार जीहोते
उपरराचवुनहि जीहोतेतोठगधार ॥न० २७॥ जीहोआ

त्मस्वरुपओलख्याविना जीहोसामायकादिकव्रत जी
होपच्छखाणपडीकमणाजाणिये जीहोद्रव्यनखेपेसत ॥

न० २४॥ जीहोपुन्याश्रवतेजाणिये जीहोसंवरतिहांनहि
लेश जीहोआत्मसामायकनाखिउ जीहोभगवतिसूत्रेवि

शेषा॥न० २९॥ जीहोजीवस्वरुपजाण्याविना जीहोतपसं
जमधारेजेह जीहोपुन्यप्रकृतीबाधेसहि जीहोदेवलोकन

वतेह न० ३०॥

॥उक्तच॥ जगवती॥ आयापलुमांमाईया॥-पुवतकेणदे
वादेवलोयेउवजंती ॥ पुवसजमेणदेवादेवलोयेउवजती ॥

नोचेवणंआयभाववत्तवयाए॥

जीहोज्ञानहिणजेनरा जीहोकीयालोपरितेह जीहोग
छनीलाजेसिद्धातते जीहोअणेवाचिछेजेहा ॥ न० ३१॥ जी
होव्रतपच्छखाणपालतो जीहोद्रव्यनखेपेतेह जीहोअनु

जोगद्वारमा जीहोसूत्रेनाख्युछेएहा ॥ भ० ३२॥

॥ उक्तच ॥ ईमेसमणगुणमुक्कयोगी॥छकायनिरणुकपा

हयाईवदूदामा॥गयाइवनिरंकुसा॥घठामठातुप्पोठा॥पंडु
रयांडरणाजिणांणं॥आणाएसछंदा॥विहारिउणउभओका
लं॥आवस्सगस्सउवछंतिंतं॥लोगुतरियंदव्वावसयं॥

॥जीहोजोतीपजुवेवैदककरे॥जीहोपापश्रमणकह्यातेह॥
जीहोआचारजउवज्ञायते॥जीहोखोटांरुपियासमएह॥भ०
३३॥ जीहोघणाभवतेचटकशे ॥ जीहोअवंदनीककह्याते
ह॥जीहोअनाथीअध्येनथीजाणजो॥जीहोउत्तराध्येनेएह
॥भवी० ३४॥ जीहोसुत्रअर्थजेजेकरे॥ जीहोगुरुगमजोयो
रेनांही ॥ जीहोनयनखेपजाण्याविना॥ जीहोपरमाणसत
भगीतांही॥भवी० ३५ ॥ जीहोनिश्चेथीनिजआत्मनु जी
होओलखाणथईरेनही जीहोनीर्युक्तिप्रमूखजाण्याविना
जीहोउपदेशदेवेतांही॥भवी० ३६॥जीहोआपेतेसंसारमां
जीहोडुब्याछेनिरधार जीहोतेहनीपासेजेवेसतां जीहो
सांजलेशास्त्रविचार ॥ भवी० ३७॥ जीहोतेहनेसाथेजेइ
ने जीहोडुबेछेकांइतेह जीहोदसमेअंगेतेमकस्यु जीहोअ
नुंजोगद्वारेएह ॥भवी० ३८॥जीहोतेमभगवतीअंगमां जी
होसुतअथोपरमुक्ष जीहोएमअनेकशास्त्रथकी जीहोजोई
जेजोतुमेदक्ष॥भवी०॥ जीहोएवोलजेजाण्याविना जीहो
मरखावादिकह्यातेह जीहोतेकारणवहुश्रुतनी जीहोशेवा
करोगुणगेह॥भवी०४०॥ जीहोतेकारणउपदेशजे जीहो
सुणजोतुमेभवीजन जीहोवहूश्रुतपासेरंगथी जीहोछोडी

द्योसंगअन्या॥नवी०४१॥जीहोबहुश्रुतनेसोलउपमा जी
 होउत्तराध्येनमोझार जीहोमेरुप्रमुखतिहांकही जीहोबहु
 श्रुतमोटोधार॥ नवी०४२॥जीहोद्रव्यनपेपोएजाखीयो
 जीहोनारुपात्रणवलीएह जीहोभावनखेपोहेवेदाखशु
 होसामलजोगुणगेह ॥नवी०४३॥ जीहोमुनीहूकमएभा
 खीयो जीहोबहुशास्त्रअनुसार जीहोनावधरीजेआदरे
 जीहोतेलहेभवनोपार॥नवी०४४॥

॥दुहा॥नामथापनाद्रव्यए त्रणेनिक्षेपाजाण नावविना
 अशुद्धछे कहाश्रीजीनजाण॥१॥तेकारणतुमेनावए नि
 क्षेपोसुखकार आदरोनवीबहुमानथी जेहथीभवनोपार
 ॥२॥लक्षणगुणेसहीतजे नामआकारजसदेख वस्तुतेभाव
 निक्षेपछे अनुजोगद्वारेपेखा॥३॥ दानशीयलतेतए किरी
 याज्ञानतेजाण नावविनानीफलसही तेकारणनावची
 तत्राण ॥ ४ ॥ केटलाकएमनाखेसही द्रढकरीमनपरी
 णाम तेहनेनावजजाणीये एवुभाखेछेताम ॥५॥ एप
 णवचनअसत्यछे सुणोतासविचार सुखअर्थीजेजीवडाम
 नथीरकरेनिरधार ॥६॥ मत्रजत्रजापादीके मिथ्यात्वी
 पणतेह मनथीरतेहराखता नवीगणीयेनावएह ॥७॥
 सूत्रसाखवीतरागनी आज्ञायेसुखकार ॥ हेजेउपादीये
 एमअनेकविचार ॥ ८ ॥ अजीवआश्रवबधए तेहनेक
 रोरेत्याग जीवस्वगुणसवरसही नीर्जरामोक्षेराग॥९॥

एउपादेयजाणिये एमजनावकेहेवाय तेविनासर्वद्रव्य
 छे समज्यातेसुखथाय ॥१०॥ रूपिद्रव्यतेगुणछे अरु
 पिगुणतेभाव मनवचकायलेस्यादिक तेद्रव्यनिक्षेपेचित्त
 जाव ॥११॥ ज्ञानदर्शनचारित्रए विर्जध्यानप्रमुख जीव
 गुणसर्वस्वभावछे एभावनिक्षेपेसुख ॥१२॥ नामथापना
 व्यंशं भावसहितएचार भाख्यावद्विविचारथी समजीले
 नोउदार ॥१३॥ ढाल ३५मी॥ वीनवुपारसपदा॥टलीयो
 ॥जमदा॥एढोशि॥ द्रव्यखटमांहि निक्षेपाचारतांहि वर्णवु
 सुखकाररे तुमेलालसुरंगा निक्षेपातणोविचाररे तुमे
 लालसुरंगा ॥एआंकणी॥ प्रत्येकेप्रत्येकेतेह द्रव्यद्रव्ये
 हि जाखुकईतासविचाररे तुमेलालसुरंगा निक्षेपातणो
 विचाररे तुमेलालसुरंगा॥१॥ जीवद्रव्यविपे निक्षेपाचार
 से जाखुकइतासस्वरुपररे तु० न० जीवएवुनामधार अ
 कथानकउदार जाखुद्रष्टातअनुपररे ॥तु० न० २॥ मांचा
 वाणमांहि जीवकहेछेताहि तेनांमनखेपोथायरे तु० न०
 वितणीरेएक मुर्तिथापियेटक तेथापनाकेहेवायरे ॥ तु०
 ०३॥ द्रव्यनखेपोभाखु उपयोगरहितदाखु तेजीवद्रव्य
 हेवायरे तु० न० एकंद्रीथीलहि पंचंद्रीपरजंतकही द्र
 वनखेपोतेथायरे ॥तु० न० ४॥ उपयोगसहितजारे चेत
 चगुणधारे परभावदूरेजायरे तु० न० सेहेजस्वभावखे
 निजगुणज्ञानचेले तेजावनखेपोकेहेवायरे ॥तु० न०

५॥ धर्मास्तीकायजाणो द्रव्यमांहितेआणो नखेपाकहि
 येतेचाररे तु० न० धर्मकहिनेभाखे नामलहिकोईदाखे ते
 नामनखेपोधाररे तु० न० ६॥ वस्तुकोईथापिएह धर्मद्र
 व्यनामतेह तेथापनानखंपोजाणरे तु० न० जिवपुद्गलने
 जेह चालतांसाजडेनाहितेह तेसमेद्रव्यचित्तआणरे ॥तु०
 न० ७॥ साज्यकरेछेज्यारे द्रव्यचालेछेत्यारे तेजावनखे
 पोकेहेवायरे तु० न० हवेअधर्मास्तीजेह द्रव्यजाखुछुतेह
 नखेपोतेचित्तलायरे ॥तु० न० ८॥ कोईकनामलहि अथ
 र्मद्रव्यकहि तेनामनखेपोजाणरे तु० न० मुर्तिप्रमुखकोई
 वस्तुथापियेसोई तेअधर्मथापनाआणरे ॥तु० न० ९॥ द्र
 व्यनखेपजेह थीरसाह्यनाहितेह जिवपुद्गलनेधाररे तु०
 न० थीरजावकरेसाज जिवपुद्गलनेकाज तेजावनखेपोउ
 दाररे ॥ तु० न० १०॥ आकाशएवनाम भाखेकोईद्रव्यने
 ताम तेनामनखेपोधाररे तु० न० कोईद्रव्यथापि आका
 शएवनामआपी तेबीजोनिक्षेपोउदाररे ॥तु० न० ११॥
 आकाशद्रव्येएह द्रव्यनिक्षेपोतेह अणअवगाहनकेहेवा
 यरे तु० न० अवगाहनाआपेज्यारे द्रव्यप्रतेतेत्यारे भा
 वनिक्षेपोथायरे ॥तु० न० १२॥ कालएवनामकोई बोला
 वेद्रव्यजोई निक्षेपोपेहेलोकेहेवायरे तु० न० कोईद्रव्य
 देखी थापनाकालनीलेखी थापनानिक्षेपोतेथायरे ॥तु०
 न० १३॥वर्तनानहिज्यारे द्रव्यनिक्षेपोत्यारे उपचारीका

लकेहेवायरे तु० न० वर्तनावर्तेज्यारे जावनिक्षेपोत्यारे
 कालद्रव्यमांथायरे ॥ तु० न० १४ ॥ पुद्गलद्रव्येजेह निक्षे
 पाच्यारतेहं चाखुछुतासविचार तु० न० पुद्गलनामएव
 कोईद्रव्यमांकेहेवु नामनिक्षेपोतेधाररे ॥ तु० न० १५ ॥ व
 तुकोईदेखी थापनापुद्गललेखी थापनानिक्षेपोतेजाण
 ॥ तु० न० ॥ मलणविखरणगुन ज्यारेतेहोवेसुन त्रिजोनि
 नेपोचित्तआणरे ॥ तु० न० १६ ॥ मलणाटिकज्यारेगुणव
 छित्यारे भावनिक्षेपोधाररे ॥ तु० न० ॥ खटद्रव्यएह
 यारेनिक्षेपतेह लेजोएमविचाररे ॥ तु० न० १७ ॥ साधु
 इमांहि नखेपाचारताहि भाखुछुतासविचाररे तु० न०
 धुएवनाम चाखेकोइद्रव्यनुताम मुर्तिसाधुनिसुखकाररे
 तु० न० १८ ॥ थापनानखेपोदाखो हवेतेद्रव्यचाखो विण
 पयोगेकेहेवायरे तु० न० पंचमाहाव्रतपाले क्रियाकष्ट
 रे दोपटालिगोचरीजायरे ॥ तु० न० १९ ॥ ज्ञानध्यांनजे
 मोक्षकारणतेह तेउपयोगनविहोयरे तु० न० उपयोग
 नाकरतो आश्रवभाववरतो एद्रव्यनक्षेपोसोयरे ॥ तु०
 २० ॥ जावसाधुतेचाखु गुणकहिनेदाखु चोथोनक्षेपो
 ाररे तु० न० सवरकरणीकरतो भावमोक्षनोवरतो श्रं
 गतीउदाररे ॥ तु० न० २१ ॥ संवरभावएक जुदोनहिने
 आश्रववेहेवारएककेहेवायरे तु० न० मुनीडुकमचाखे
 रभावज्ञानराखे लाहिमुक्तिसुखदायरे ॥ तु० न० ॥

२२॥ ढाल ३५ मीसपूर्ण ॥

॥दुहा॥ अरीहतादिकपदविषे भाखुनखेपासार प्रत्ये
केप्रत्येकेवर्णवु तेसुणजोअधिकार॥१॥ पणतेसवीनखेपए
चिन्नपदेकेहेवाय कारजएथीनविहोवे समजील्योसुख
दाय ॥२॥ अचिन्ननखेपोआदरो जेथीकारजसिध पुर्वा
चारजजाखिया आत्मतणीएरीद्व॥३॥ विशेष्यावशकग्रथ
मा तेमवलिमाहाजाप्य इत्यादिकबहुशास्त्रमां जोइलेजो
उलास ॥ ४ ॥ तवकोइकेहेशेएसो भिन्नतमेकेमदाखो
लोकभरमावाकारणे फोगटशानेजाखो॥५॥ उतरतेनेआ
पुहवे सुणोसंतसुखकार हालनेपाडितेरच्या चिन्ननखेपवि
चार ॥६॥ तेकारणहूजाखुछु भिन्ननखेपविचार पणकार
जछेअभिनमा निश्चेथिनिरधार ॥७॥ ढाल ३६ मि ॥
रागसिंदूडों ॥ चित्रोडिराजारे ॥ एदेशि ॥ अरिहंतए
वुनामरे कोइजिवनुतामरे थापनाअरिहतनिमुर्तिलिजि
येरे द्रव्यअरिहतरे जिहालगेसतरे छदमरुथकालत्या
किजियेरे ॥१॥ केवलज्ञानधारिरे दर्शनपदअजुवालीरे
समोसरणेजावअरिहतजाणियेरे सिद्धएवुनामरे कोइजि
वनुतामरे अथवाविद्यादिकथिजाणियेरे ॥२॥ प्रतिमागु
णगेहरे सिद्धजिननितेहरे थापनानखेपोतेचित्तआणियेरे
द्रव्यसिद्धजाणोरे तेरमेगुणठाणोरे तेमचउदमामाकिजि
येरे ॥३॥ सिद्धखेत्रेवसियारे आत्मगुणरसियारे भावन

खेपोसिद्धनोतेलह्योरे कोइनामेज्ञानरे कोइजिवनुतामरे
 नामनखेपोतेत्यांजाणियेरे ॥४॥ शास्त्रजेलखीयारे अक्षरप
 रमुखश्रौलखियारे अथवामुर्तिज्ञानानिकहिरे द्रव्यनखे
 पोनाखुरे विणउपयोगेदाखुरे सीद्धांतभणेवलीतेसहिरे
 ॥५॥ अथवाअन्यमतिनारे शास्त्रसर्वरतीनारे वैदकजोती
 शप्रमुखएमलहोरे ॥ नवतत्वजाणोरे षटद्रव्यपरमाणोरे
 जावनखेपोतेनेभापियेरे ॥६॥ नामतपकहियेरे एवुनाम
 कोइनुलहीयेरे प्रथमनखेपोएणीपेरेजाणीयेरे तपाविधि
 जेहरे लखिपुस्तकमांतेहरे थापनातपतेनेदाखियेरे ॥७॥
 मासखमणादिजाणोरे दशपच्छखाणोरे पुन्यकारणतेनेलि
 जियेरे धर्मनहितेहरे आश्रवगुणएहरे द्रव्यनखेपोतेने
 किजियेरे ॥८॥ परवस्तुजाणोरे त्यागजावचीतआणीरे
 निजस्वभावेतेहनररमेरे जावतेजाणोरे नखेपोचितआ
 णोरे नखेपाचारेतपमाहिलीजियेरे ॥ ९ ॥ सवरादीकरे
 वस्तुउतमठीकरे तीहातीहांनखेपाएणीपेरेवरणवोरे प्र
 थमनात्रणएहरे नयचारभांगुणगेहरे चोथोनखेपोत्रिणन
 यमांहेजाणियेरे ॥१०॥ नामथापनाजेहरे द्रव्यनखेपोतेहरे
 कारणभास्यांभावनखेपनारे मुख्यजावतेजाणोरे निमी
 तअवरत्राणोरे माहाभाष्येएणीपेरेजाखीउरे ॥११॥
 ॥उक्तचक्षाष्ये॥ अहवांनामठवणा ॥ दव्वाइजावमंग
 लाइपाएणा॥जावमंगलपरीणामा॥निमित्तउभावाश्रो॥

त्रणनखेपापाखेरे नावनखेपोदाखेरे कारजसिद्धिए
 कलोकरेरे अथवाएदोयरे द्रव्यनावतेजोयरे वेनखेपा
 उपकारीकह्यारे ॥१२॥ नामादीकधीनारे नावनीक्षेपेकी
 नारे कारजकारिमाहाजाप्येकह्यारे, तेमाटेएमजाणीरे
 नावनखेपोलेजोताणीरे एहथीकारजसीद्धीहोशेखरीरे १३

॥उक्तचावथसरुवनाम॥तप्पवयहेओओसधम्मव्व
 ल्छुणाणाभिहाणाहोज्जाजावोविवज्जासो ॥१॥ वल्छसल
 खणंसववहारोहसदाओ ॥ अन्निहाणाहीणाओबुद्धिस
 द्दाओकिरियाय॥२॥

नामथापनाजाणीरे उपगारचीतआणीरे कारणनिमीत
 एहनेधारीयेरे मोक्षाजीलाखीरे मोहदशादूरनाखीरे,जे
 साधवावछेतेहनेहवेकहूरे ॥१४॥ सवरनीजराजेहरे वद
 ननमनतेहरे नावनखेपेसवी सुखपामीयेरे कोइभाखेरे
 अरीहतगुणदाखेरे भावनखेपेएहसुखपामशुरे॥१५॥ एम
 नहीछेएहरे भाखुसमजोतेहरे भावअरीहंतथीपणअवर
 तरेनहीरे जोएहथीतरतारे संसारीगुणवरतारे तोसर्वेसं
 सारीमोक्षमाहीवशेरे ॥१६॥ पोतपोतानोजाणीरे नावन
 खेपोचीतआणीरे तेहथीजीवसर्वेमुक्तीलहेरे एमजाणी
 शुद्धरे आदरोभलीबुद्धरे भावनखेपोआराधनकरेरे॥१७
 ॥नीक्षेपाएभाख्यारे वीवरीनेदाख्यारे समजुनेउपगारघ
 णोथशेरे मुनीहूकमतेभावेरे रमेनीजगुणदावेरे सेहेजे

लअनेवलीभावरें सु० ॥ ११ ॥ ज , जी मांहे ज
 ममर्वद्रव्यमारे स्वगुणपर्जायरे सु० अस्तीनागोपेहेलो
 थयोहोलाल स्यात्नास्तीवीजोकह्योरे भागातणोविचा
 ररे सु० तेहअर्थहवेलहोहोलाला ॥ ५ ॥ जीवद्रव्यमापाच
 नां द्रव्यक्षेत्रनेकालरे सु० नावसहितचारजाणियेहोला
 ल तेजीवमालाधेनहीरे तथीनास्तीनागोथायरे सु० एम
 सर्वद्रव्यमात्राणियेहोलाला ॥ ६ ॥ स्वद्रव्येअस्तीकहीरे प
 रद्रव्येनास्तीभावरें सु० गुणपर्जायपणएमलहोहोलाल
 स्वगुणपर्जायस्वद्रव्यमारे अस्तीभावकेहेवायरे सु० पर
 गुणादिनास्तीपणोकह्योहोलाल ॥ ७ ॥ हवेत्रीजाजगनीरे
 अस्तीनास्तीविचाररे सु० स्यातपदेएजोडियेहोलाल
 जेसमेअस्तीतेसमेरे नास्तीपणुंतिहांदेखरे सु० स्यातव
 चनेअसतमोडियेहोलाल ॥ ८ ॥ शुद्धस्वगुणेअस्तितरे तणे
 समेपरगुणजाणरे सु० नास्तिपणुतिहांकह्युंहोलाल एक
 समेतेकेमजाखियेरे दोयभगभेलाथायरे सु० तेकारणभंग
 त्रीजोलहोहोलाला ॥ ९ ॥ हवेअस्तनास्तीदोउरे एकसमे
 नेगाह्योयरे सु० तोस्वअस्तिकेहेताथकाहोलाल असख्या
 तसमयहोवेरे तवनास्तनिकेहेवायरे ॥ सु० ॥ मरखावादलागे
 तिहाहोलाल ॥ १० ॥ परनावेनास्तीनाखियेरे स्वअस्तीन
 केहेवायरे ॥ सु० ॥ इहाअसत्यआवेखरुहोलाल बेहूवचन
 बोलवारें एकसमेनहोयरे ॥ सु० ॥ एहवीचारमनधरोहो

लाल॥११॥ एकअक्षरउचारणरे असंख्यातसमयथायरे
 सु०तेथीचोथोनांगोकह्योहोलाल अवक्तव्यएजाणियेरे व
 चनअगोचरएहरे सु० जीहाउचारणनवीलह्योहोलाल ॥
 १२॥ शीष्यकहेस्वामीकहारे अवक्तव्यकेहनोथायरे सु०
 दोयनोनेगोभाखियोहोलाल गुरुकहेतुमेसांजलोरे अ
 स्तीजावेअवक्तव्यरे सु०वचनउचारणनविदाखियोहोला
 ल ॥१३॥ तेथीअस्तीअवक्तव्यछेरे तेमनास्तीपणजाण
 रे सु० पाचमोछठोएमजाणियेहोलाल जुगपतपणअवक्त
 व्यछेरे सातमोभांगोजेहरे सु० एमसप्तभंगीचित्तआणिये
 होलाल॥१४॥ शिष्यकहेस्वामीकहारे अवक्तव्यजावछेए
 हरे सु०उच्चारणकेमकीजियेहोलाल गुरुकहेस्यात्पदल
 हारे उच्चारणसुखेथायरे सु०एमसमोजावलिजियेहोलाल
 १५॥सर्वेपदमास्यात्जोडियेरे तोलागेनहिमृपावाढरे सु०
 सत्उच्चारणएहछेहोलाल जेमएअस्तीनास्तीविपेरे नां
 गासातेदाखरे सु०तेमवीजामाकेहेछेहोलाल॥१६॥ नित्य
 अनित्यमांजाणियेरे एकअनेकमांसाररे सु०सतअसतपण
 मकह्याहोलाल नेदअभेदमांजाखियेरे नव्यअनव्यम
 ाररे सु०गुणपर्जायपरमुखेलह्याहोलाल॥१७॥ एमअने
 प्रकारमारे सप्तभंगीकेहेवायरे सु० सर्वेथानकेलागेखरी
 होलाल जेकारणएमजाणियेरे सिद्धमांनयनहोयरे सु०स
 भंगीतीहांठरीहोलाल॥१८॥सप्तभंगीएंसिद्धमारे लागे

रण ८ तेमश्रवशरे ॥ प्रा० ॥ गती ९ थीती १० तुमेजाण
 श्रवगाहनापणचितश्राणोरे ॥ प्रा० ६ ॥ वरतना १२ गुण
 तैकहिये चेतनपणू १३ पणलहियेरे ॥ प्रा० ॥ अचेतन
 गुणतेह मुर्तीपणुपणएहरे १५ ॥ प्रा० ७ ॥ तेमश्रमूर्तिव
 हाणो १६ एसोलेविशेषवखाणोरे ॥ प्रा० ॥ सामान्यवि
 पगुणएह लक्षणपणकहियेतेहरे ॥ प्रा० ८ ॥ अस्तीक
 यपेहेलोजेह हवेअर्थकद्रूछूतेहरे ॥ प्रा० ॥ खटद्रव्यएपो
 गुणपरजायतेहूतेरे ॥ प्रा० ९ ॥ प्रदेशेकरिअस्तीजाणो
 मपाचद्रव्यकहाणोरे ॥ प्रा० ॥ कालअस्तीनकहिजे ध
 अधर्मआकाशलीजेरे ॥ प्रा० १० ॥ निवअसख्यप्रदेश
 द्रव्यनाकहेशरे ॥ प्रा० ॥ खधअकेकोजाणो पुद्गलमांहवे
 हेवाणोरे ॥ प्रा० ११ ॥ खंधहोवानीशक्तीअनत तेणेपच
 व्यएसतरे ॥ प्रा० ॥ पणकालनोसमयएक केणथमिल्यो
 हिछेकरे ॥ प्रा० १२ ॥ एकविणशेरेवीजोथाय तेनेका
 अस्तीनकेहेवायरे ॥ प्रा० ॥ एपाचेद्रव्यअस्तीकाय ए
 थमगुणचितलायरे ॥ प्रा० १३ ॥ हवेवस्तुपणुभास्तीजे
 टद्रव्यमाहेदाखीजेरे ॥ प्रा० ॥ एकाकाशप्रदेश ध
 नोएकप्रदेशरे ॥ प्रा० १४ ॥ जे . न . १ .
 छेसतरे ॥ प्रा० ॥ पुद्गलपरमाणुआजाण
 णोरे ॥ प्रा० १५ ॥ ए . १ .
 जेगाएहरे प्रा . १६ ॥ ए . १ .

आवरे ॥ प्रा० १६ ॥ हवेद्रव्यत्वगुणकहीजे खटद्रव्यमाहिलही
 जेरे प्रा० आपआपणी क्रियाजेह सर्वद्रव्यकरेछेतेहरे ॥ प्रा०
 १७ ॥ धर्मास्तीकायआपणो चलणगुणस्वप्रदेशेजाणो
 रे प्रा० तेसदाकालपुद्गलने जीवनेचालवारुपकरनेरे ॥ प्रा०
 तिहाकोइएमभासे सिद्धक्षेत्रलोकातवासेरे प्रा० धर्मा
 स्तीकायछेतांहि सिद्धजीवचलावेनांहिरे ॥ प्रा० १९ ॥ ते
 नोउतरएम सिद्धजिवअक्रियनेमरे प्रा० तेथीचालेनहि
 एह पणतेक्षेत्रेवाजाछेतेहरे ॥ प्रा० २० ॥ सुक्ष्मनीगौढी
 जिव पुद्गलपणतिहांसदीवरे प्रा० तेहनेचलावेछेतेह तेथी
 द्रव्यत्वगुणएहरे ॥ प्रा० २१ ॥ अधर्मास्तीकायद्रव्यजेह
 जिवपुद्गलनेथीरसाह्यतेहरे प्रा० एकियारेतेहमांजाणो
 आकाशद्रव्यचितआणोरे ॥ प्रा० २२ ॥ सर्वद्रव्यनेजेह
 अवगाहनआपेछेतेहरे प्रा० इहांकोइपुछशेएम अलोका
 काशमाकेमरे ॥ प्रा० २३ ॥ विजोद्रव्यतिहानहि अवगाह
 नकेनेआपेतांहिरे प्रा० उतरतेहनेएमदीजे अलोकाकाशे
 एमकिजेरे ॥ प्रा० २४ ॥ अवगाहनशक्तिछेतेने द्रव्यविना
 आपेकेनेरे प्रा० पुद्गलनेमलवुविखरवु तेरुपक्रियानुकरवु
 रे ॥ प्रा० २५ ॥ कालद्रव्यआपणिजाणो वर्तानक्रियाकेहे
 वाणोरे प्रा० ज्ञानलक्षणजिवनेकहिये उपयोगक्रियाति
 हांलहियेरे ॥ प्रा० २६ ॥ पोतेपोतानेद्रव्ये परणामीपणुते
 सर्वेरे प्रा० स्वसंतानीकिरिया छद्रव्यकरेछेगुणवरियारे

॥प्रा० २७॥ हवेप्रमेयत्वकहिजे गुणचोथोएमलहिजेरे
 प्रा० मुनिहूकमगुणखास जाणेतैनोशिवपुरवासरे ॥प्रा०
 २८॥ ढाल३८मिसपुणे॥

॥दुहा॥ हवेप्रमेयत्वपणुकहू तेसुणजोसुखकार जि
 वस्वरुपनेजाणवा एहसतमआचार ॥१॥ केवलीयेज्ञाने
 कगी खटद्रव्यदिठाजेह प्रत्येकेप्रत्येकेप्रमेयत्वपणु तेजा
 णोगुणगेह ॥२॥ खटद्रव्यनानामए कहिनेदाखुसार ध
 र्मअधर्मआकाशए एकएकद्रव्यधार ॥३॥ हवेजिवस्वरु
 पनु भाखुतासविचार अनतातेजाणीये सक्षेपेसख्याधार
 ॥४॥सत्रीपचद्रिमनुपजे सख्याताजाख्याएह असख्याता
 असंतीछे नारकिअसख्याताजेह ॥५॥ देवपणअसंख्य
 छे तिर्यचपंचद्रिजेण असख्यातातेजाखीया वेरंद्रिअस
 ख्येकेण ॥६॥ असख्यातातेरद्रिछे चौरद्रिअसख्याताजे
 ह प्रथविकायअसंख्यछे अपकायअसख्यातातेह ॥७॥अ
 संख्यतेउकायजाणिये वायुकायअसख्याताधार प्रत्येकव
 नरुपतिजाणीये जिवअसंख्याताधार ॥ ८॥ तेथिसि
 द्दजिवअनतछे वादरनिगोदजेह तेथीजिवअनंतछे एमस
 मंजोगुणगेह ॥ ९॥ सुक्षमनिगोदजाणिये जिवअनताधा
 र इहानिगोदतणोकहू सक्षेपेविचार ॥१०॥ढाल३९मि॥
 जिनजीत्रिविसमोजिनपासके आशमुजपुरवेरेलोल॥एदेशि
 हवेजेहनिगोदनाचावके प्राणितमेसाचलारेलोल सुक्षमअ

तिसेदिसेएहके गुरुमुखथीधरोरेलोल ॥हवे० १॥ लोका
 काशनाजेहप्रदेशके प्रदेशप्रदेशेहोरेलोल तिहांगोलो
 अकेकोजोयके तेहमांनीगोदलहोरेलोल ॥हवे० २॥ गोलो
 प्रत्येअसख्यनीगोदके तेकायाकहिरेलोल अनंतजीव
 तणीएधारके एकशरीरलहिरेलोल ॥हवे० ३॥ एमएकनी
 गोदेअनताजीवके एवीअसख्यछेरेलोल तेहनोगोलोए
 ककेहेवायके एहवाअसख्यछेरेलोल ॥हवे० ४॥ एमअके
 कीनीगोदमांजोयके जीवअनंताकह्यारेलोल तेजीवएक
 तणाप्रदेशके असंख्यातावह्यारेलोल ॥हवे० ५॥ जीवतणे
 एकप्रदेशेजोयके कर्मअनंतरह्यारेलोल वर्गणाआठवलगी
 छेतामके प्रत्येकेप्रत्येकेकह्यारेलोल ॥हवे० ६॥ अनंतप्र
 माणवासाथके वर्गणातेकहिरेलोल जीवशूलागीछेनिर
 धारके पन्नवणामालहिरेलोल ॥हवे० ७॥ हवेकहूआड
 खानोविचारके जवितुमेचितधरोरेलोल मनुष्यपचंद्रीजे
 निरोगके तेहनुंमानकरोरेलोल ॥हवे० ८॥ एकसांसोस्वा
 समांसत्तरके जवझाझीराकरेरेलोल मूर्तएकमांहेवजीजेह
 के साडत्रीसोतोतेरधरेरेलोल ॥हवे० ९॥ एटलास्वासो
 स्वासकेहेवायके पुलकजवहवेकहूरेलोल पासेटहजारने
 सतपाचके छत्रीसभवलहूरेलोल ॥हवे० १०॥ नीगोदना
 एकजवनुंमानके बसेछपनसहिरेलोल आवलीतणुंछेप्रमा
 णके नीगोदएभवकहिरेलोल ॥हवे० ११॥ हवेजेनीगोदमांर

ह्याजीवके तेहनुंस्वरुपसुणोरिलोल पाम्यात्रसपणूनहितेह
 के केवारतेनणोरिलोल ॥हवे० १२॥ तेमनहिपामेआवतेका
 लके एमज्ञानीकीहीरेलोल उपजेवीणसेत्यानात्यांहीके अ
 नादीअनतलहिरिलोल ॥हवे० १३॥ तेनीगोदनाभेदछेदो
 यके विचारतससुणोरिलोल व्यवहारनीगोदपेहेलोनेदके
 वीजोअव्यवहारभणोरिलोल ॥हवे० १४॥ हवेजेजीववाढ
 रगतीमाहिके एकद्रिपणुलहेरेलोल जावतत्रसंपणानोठां
 मके तेव्यवहारीकहेरेलोल ॥हवे० १५॥ पाछोनीगोदगतीमां
 जायके कर्मउदयेकरिलोल तेजीवव्यवहारराशीकेहेवाय
 के वीजोभेदकहूवलीरेलोल ॥हवे० १६॥ नथीनिकल्योनीगो
 दथीजेहके निकलगेनहिकदारेलोल तेअव्यवहारराशी
 जाणके एमलहोमुदारेलोल ॥हवे० १७॥ नीगोदमांदोय
 जातनाजीवके भव्यअन्नव्यकह्यारेलोल नवनभानुकेव
 लीचरित्रके विचारतिहालह्यारेलोल ॥हवे० १८॥ मनुष्य
 पणैथीजेटलाजिवके कर्मखपविकरिलोल जेटलाजिव
 मोक्षेजायके एकसमेवलीरेलोल ॥हवे० १९॥ तेटलाजीव
 तेणेसमयके सुक्ष्मनीगोदथकीरेलोल अव्यवहारराशी
 माहेथीआवेके व्यवहारीनकीरेलोल ॥हवे० २०॥ को
 इसमेओछानिकलेभवके ॥ बाकीअन्नव्यजाणियेरेलोल
 व्यवहारराशिवधेघटेनहिके एविचारचितआणीयेरेलोल
 ॥हवे० २१॥ लोकमांहीअसरुयकेहेवायके गोलानीगोद

नारेलोल तेछदीशीनोलैवेछेआहारके पुद्गलसोदनारेलो
 ल ॥हवे० २२॥ जेरह्यालोकनेअतेजाणके चर्मप्रदेशेसहि
 रेलोल तेगोलानाजिवनेआहारके त्रणादिशीनोकहिरेलो
 ल ॥हवे० २३॥ फरशापुद्गलनोलेवेआहारके एमतमेचितध
 रोरेलोल हवेएसुक्ष्मनीगोदमाजाणके वनस्पतिखरोरे
 लोल ॥हवे० २४॥ एकसाधारणवनस्पतितेहके सुक्ष्मनी
 गोदतेकहेरेलोल अवरथावरदिसेछेचारके तेहनासुक्ष्मव
 हेरेलोल ॥हवे० २५॥ पृथविपरमुखचारेजाणके पणप्र
 त्येककहिरेलोल साधारणपणुवनस्पतिमाहिके विजेनवं
 लहीरेलोल ॥हवे० २६॥ एसर्वेनोलोकमांहिस्वस्थानके
 नेलारहेछेसहिरेलोल काजलकुपिपेरेतेहकेतेजीवसंख्या
 लहिरेलोल ॥हवे० २७॥ तिहांदूखघणुतुंधारके अवक्त
 व्यभावेकहूरेलोल केहेतातेहेनोनावेपारके शास्त्रेवहुलहू
 रेलोल ॥हवे० २८॥ एहनीगोदतणोविचारके नाख्योसंक्षेप
 थिरेलोल मुनीदूकमज्ञानगुणजासके संगेसुमतासखीरे
 लोल ॥हवे० २९॥ ढाल३९मीसंपूर्ण॥

॥दुहा॥ एमप्रणमेतेद्रव्यए जिवसहितजाणो आपआप
 णास्वजावभा प्रमेयपणोकहांणो ॥१॥ हवेसत्यपणुकहू
 गुणपांचमोसार खटद्रव्यमाज्ञाखशुं उपजेविणसेधार
 ॥२॥ थिरताभावपणतेरहे तेहिजसतकेहेवाय तत्वार्थमां
 तेकह्यु तेहचितमालाय ॥३॥ हवेथोडाकविस्तारीशु जेदए

हनाधार समजुजिवतोसुखलहे जेहनेज्ञाननोप्यार ॥४॥
 ॥ढाल४०मि॥ सुनंदाकतनेवदिरे ॥ एदेशि॥ धर्मास्ती
 कायनाजाणारे असख्यप्रदेशकहांणारे एकप्रदेशमांचित
 आणो॥१॥सलुणासत्पणोएधारारे॥एआंकणी॥अगुरुल
 घुअसख्यातोनाख्यारे विजेप्रदेशेअनंतोदाख्यारे तिजे
 प्रदेशेसख्यातोआख्यो॥स०२॥असख्यप्रदेशएमकहियेरे
 प्रदेशेप्रदेशेलहियेरे अगुरुलघुपरजायसहिये ॥स० ३॥
 घटतोवधतोरह्योछेएहरे अगुरुलघुपरजायजेहरे तेथिच
 लनाख्योछेतेह॥स०४॥ जेप्रदेशेअसख्यातोहोयरेतेणेप्र
 देशेअनंतोजोयरे अनताठामेअसख्यातोसोय ॥स०५॥
 एमलोकप्रमाणेजाणारे असख्यातप्रदेशप्रमाणारे सम
 कालेअगुरुलघुआणो ॥स० ६॥ परजायतणुएभाखुरे
 परावर्तनधर्मदाखुरे प्रदेशप्रदेशमांआखु ॥स० ७॥
 अनंतफिटिअसख्यातथायरे उत्पतिअसख्यकेहेवायरे
 नाशअनंततणोलेवाय ॥स० ८॥ ध्रुवपणुनीश्रलहोवेरे
 त्रणनंगतेएमलेवेरे उत्पातवयध्रुवकेहेवे॥स०९॥जेमएध
 र्मद्रव्यमाजाख्यारे तेमअधर्ममादाख्यारे असख्यप्रदेश
 माआख्यो॥स०१०॥आकाशद्रव्यएमकहियेरे अनंतप्रदे
 शतेलहियेरे अगुरुलघुएमवहिये ॥स०११॥ जिवद्रव्य
 अनताजाणारे प्रत्येकेप्रत्येकेवखाणारे एकजिवनाचित
 आणो ॥स०१२॥ प्रदेशअसख्यातानाख्यारे एकजिव

नाकहिनेदाख्यारे एमअनंतजिवनाराख्या ॥ स० १३॥
 उपजवुविणसवुतेमारे ध्रुवपणुछेजेमारे एमत्रिभंगीछेएह
 मां॥स० १४॥ पुद्गलप्रमांणुजांणोरे समेसमेएहवखांणोरे
 त्रिभंगीएमकहांणो ॥स० १५॥ वर्तमानसमयेनाशरे तेतो
 अतितकालनोथाशरे अनागतसमयआवेजाश ॥ स०
 १६॥ एमउपजवोविणसवोजाणोरे कालपणोध्रुवप्रमाणो
 रे एमअगुरुलघुकहांणो॥स० १७॥ एथुलपणामांजाख्योरे
 उत्पातवयध्रुआख्योरे हवेवस्तुपणेकांइदाख्यो॥स० १८॥ व
 स्तुगतेमुलएभाख्युरे गयेपलटवेज्ञानदाख्युरे एमभासनं
 चितमांराख्युं॥ स० १९॥ पुर्वपर्जायभासनजेहरे सिद्धमां
 पणकहिथेतेहरे उत्पातवयध्रुवएह ॥स० २०॥ धर्मास्ती
 कायमांजाणोरे प्रदेशेप्रदेशेवखाणोरे पुद्गलजिवखेत्रगत
 आंणो ॥स० २१॥ अशख्याताप्रथमसमयेकहियेरे चल
 णसाह्यपणोतेलहियेरे बीजेसमयेअनतासहिये ॥ स०
 २२॥ तेहनेचलणसाह्यकरतारे असंख्यातानोवयवरतारे
 अनंतानोचलणसाह्यधरता ॥ स० २३॥ एमउत्पातनेवय
 जाणोरे ध्रुपणेद्रव्यवखाणोरे एमसमयेसमयेकहाणो॥
 ॥स० २४॥ एमसर्वद्रव्यमाधारोरे पंचास्तीकायनीहारोरे
 एककालछेउपचारो॥स० २५॥ तेकालउपचारेलहियेरे ए
 मांवस्तुपणुनकहियेरे नावसवीउपचारेवहिये ॥स० २६॥
 एमसत्वपणोएजाणोरे गुणपांचमोवखांणोरे मुनीहूकम

वचनप्रमाणो ॥ स० २७ ॥ ढाल ४० मी सपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥ जो अगुरुलघुतणो जेदजुदोनथाय तोपरदेश
 माहोमाही जेदकेभकेहेवाय ॥ १ ॥ तेणेअगुरुलघुसर्वमां
 भेदजतेहकेहेवाय जेटलो जेटलो जाणीये उत्पातवयरुपथा
 य ॥ २ ॥ सत्यपणे एकद्रव्यछे जेहना जेदन होय जीहासत्व
 पणो जुदोपडे तीहांद्रव्यदोजोय ॥ ३ ॥ एमएसत्यपणो जो
 जोवीचारीसार हवेगुणछठोवर्णवू अगुरुलघुचीचारा ॥ ४ ॥
 ढाल ४१ मी ॥ प्रीतमजीरगरसेरमिये ॥ एदेशि ॥ गुण
 अगुरुलघुचारुयो छठोपर्जायथीरारुयो हानीवरधीथकी
 दासुयो ॥ १ ॥ सनेहीसमजोसुखकारी एआकणी ॥ खटप्रकारे
 तेसार वरधीपणुप्रथमधार चारुयुशास्त्रेउदार ॥ स० २ ॥
 अनतभागवरधीकहिये असख्यातजागकहिये संख्याता
 भागवरधीसहीये ॥ स० ३ ॥ सख्यातगुणीवरधीजाणो अस
 ख्यातगुणीवखाणो अनंतगुणीतेपरमाणो ॥ स० ४ ॥ एख
 टवरधीकहो हवेखटहानीलही सुणजोतुमेचितदेई ॥ स०
 ५ ॥ अनतभागहानीजाणो असख्यातजागवखाणो स
 ख्यातभागप्रमाणो ॥ स० ६ ॥ सख्यातगुणीहानीकही अ
 सख्यातगुणीलही तेमअनंतगुणीसही ॥ स० ७ ॥ एमख
 टगुणीहानीजाणो वेडुथईभेदएमआणो द्वादशजेदव
 खाणो ॥ स० ८ ॥ हांतीतेनोवयकहीये वरधीतेतोउपजवुल
 हिये एमअगुरुलघुवहिये ॥ स० ९ ॥ नहिलघुनेनहिगुरु

अगुरुलघुतेनामधरु सर्वस्वज्ञावमांतेहसरु ॥स० १०॥
 सर्वद्रव्यमांतेलाधे अगुरुलघुसर्वसाधे आवर्णतणोनहि
 छेबाधे ॥स० ११॥ पचमअगतेजाख्युंश्रमिखथीकांईतेदा
 ख्यु तेगुणतोचीतमांराख्युं ॥स० १२॥ आतममध्येगुणसा
 रो अगुरुलघुएगुणधारो सर्वप्रदेशेविचारो ॥स० १३॥ खा
 यकभावेएजाणो आवर्णराहितकहाणो सामान्यगुणपरी
 माणो ॥स० १४॥ सर्वसामान्यंएनेकहिये अधिकोओछो
 नवीलहिये छठोगुणजाखोसहिये ॥स० १५॥ खटगुण
 जाख्याएह खटद्रव्यमांलाधेजेह तेथीसामान्यकहियेतेह
 स० १६॥ वाकीचाररह्याजेह अर्थनवीजाखुतेह समजी
 लेजोगुणगेह स० १७॥ स्वस्वद्रव्यअपेक्षाय सामान्य
 पणुतेमथाय तेथीसामान्यकेहेवाय स० १८॥ अपरद्रव्य
 मांनहिजेह सरखाजावनहितेह तेथीअर्थनांख्योनाहिएह
 ॥स० १९॥ हवेगुणतणीजाखु जावनारीतइहांदाखु शुद्ध
 अर्थइहाआखु ॥स० २०॥ खटद्रव्यमाहिधारो सरखागु
 णजेमांजालो तेसामान्यगुणविचारो ॥स० २१॥ एकद्रव्य
 मांजेगुणदेखो बीजाद्रव्यमांतेनवीपेखो विशेषगुणतेमां
 लेखो ॥स० २२॥ कोईकोईद्रव्यमांहिजाणो कोईद्रव्यमां
 नकहाणो तेगुणएमचीतमांआणो ॥स० २३॥ साधारण
 असाधारणतेकहिजे एमगुणसर्वेअहीजे एरतिगुणनेसमजी
 लीजे ॥स० २४॥ एछद्रव्यमांसार गुणअनंतासुखकार प

र्ताथयोविभावनो रागादीहोआवरणजेहके द्रव्यक
 ोर्त्ताथयो चावकर्मनोहोपणकर्त्ताएहके ॥हवे० ८॥
 याअव्ररतकखायजे जोगआश्रवहो प्राणघातादी
 एके तेइहाकारणजाणिये चावकर्मनुहोकरवूकारज
 एके ॥हवे० ९॥ द्रव्यकर्मनोलाजजे अशूद्धतायेहोस
 नकेहेवायके स्वपरनोरोधकहोवे क्षयउपसमहोहानी
 थायके॥हवे० १०॥ अथवापरअनूजाइये परवरतवुहो
 दाननिवासके अशूद्धभावनाप्रमुखजे कर्मशक्तिहोरा
 नीआशके॥हवे० ११॥ एमआवारतेजाणिये अशूद्ध
 टचक्रविचारके बाधकभावतेजाखियो हवेजाखूहो
 रूसूखकारके॥हवे० १२॥ आत्मप्रणतीआदरी पल
 होकारकचक्रतेहके साधकआत्मधर्मतणो वरतावेहो
 गुणगेहके॥हवे १३॥ सम्यकगूणठाणाथकी जीवल
 अजोगीठाणके तिहालगेसाधकजाणिये पछीपामे
 जवनिरवाणके॥हवे० १४॥कर्त्ताआत्मद्रव्यए शूद्धआ
 प्रगटकरवाकाजके तेहिजकारजजाणिये तेनिमित्ते
 रकारणसाजके ॥हवे० १५॥ स्वस्वभावरुपजे रम
 होकरतेहनीमाहीके तेपरणतीआदरे एक्रियाहोभा
 ताहिके ॥हवे० १६॥ स्वरमणादिकजोक्रिया तेकर
 अधुरोछेज्याहिके पुर्णनेकरवीनवीकही भाख्युंछेहो
 नाप्येताहिके ॥हवे० १७॥

॥ उक्तं च ज्ञाप्ये ॥ तस्मात्क्षुध्यध्याविसित्तं कार्यं ॥ अप्पात्म
कारणमेव्यं इती ॥

हवे कारणचोथुकहू संप्रदानहोनीज आतमसरिके ज्ञान
दर्शनचरणतणा पर्जायदानहोदे आतमनेधारके ॥ हवे ० ॥

२८ ॥ आतमजेनीपजे तेरीतेहो प्रगटकरवाकाजके तेम आ
तमधर्म आदरे दानदाताहो ग्राहक अभेदराजके ॥ हवे ० १९ ॥

॥ उक्तं च ॥ देउसजस्सतसंपयाणं ॥ मिह तं पीकारणं तस्स हे
ईतदच्छित्ताउनकीरइतवीणाजंसो ॥

हवे उपादानसांचलो कारकहो पांचमो छे जेहके आतम
गुणपरणतीपणे ज्ञानदर्शनहो चारित्रतेहके ॥ हवे ० २० ॥

तत्त्वमणनीराधारता तत्त्वरुचीहो तत्त्वमणादिकजेहके
अहसकनीराबाधता जथार्थहो ज्ञानगुणगेहके ॥ हवे ० ॥

२१ ॥ परजावदुरेत्यागतो अज्ञोगीहो परजावनातेहके स्व
स्वरूपभोगता नीजवीरजहो फोरवे गुणगेहके ॥ हवे ० २२ ॥

आतमसिद्धिरुपजे उतकृष्टोहो कारजनो कारणएहके आत
मशक्तिप्रगटहोवे स्वअनुजाईहो जाणोगुणगेहके ॥ ह ० २३ ॥

॥ उक्तं च ॥ साधकतमकारणकरणं ॥
हवे अधीकरणजाणिये स्वपर्यायनोहो आधारछे एहके
व्यापव्याप्तसंबंधछे आतमनोहो पर्जायथीछे तेहके ॥ हवे ०

२४ ॥ स्थानकर्ते आतमा पर्जायनेहो रेहो वानुठामके खट
कारक एजाखिया सक्षेपेहो दाख्याछे एमके ॥ हवे ० २५ ॥ तेम

वलीसिद्धमाजाणिये स्वटकारकहों आतममाहितेहके कर्त्त
दिआतमजाणिये विशेष्यावश्यहोकभाख्युछेजेहकोह०२६।

॥उक्तंचा॥ कारणव्याख्यातावशरे॥ छवीहकत्ताइकरण
कम्मा॥ चततोयसपयाणा॥ वयाणतहसंनिहाणाइ॥ इति
गाथायतथाच॥ कारणषोढायथाकारणतहावा॥ वद्धातच्छ
सततोत्ति॥ कारणकत्तावज्जपसायगतम॥ करणच्चिउप्पि
उदडा॥॥१

ईत्यादिकबहुवारता नाखीछेहोग्रंथातरेमनुहारके मुनी
हूकमबहुश्रुतथी पामशोहोज्ञानगुणअपारके॥हवे०२७॥
ढाल ४२ मी सपूर्ण॥

॥दुहा॥ नीश्रयव्यवहारएवर्णव्यो ज्ञानस्वरूपसुखकार
तेकारणव्यवहारए ज्ञानउत्तमआधार ॥१॥ ज्ञानव्यवहा
रेकरी सुद्वउपयोगथाय जेदज्ञानतेहनेकह्यो असुद्वउ
पीयोगजाय ॥२॥ मिथ्याअवरततेहथीटले टलेकखायने
जोग एहीजआश्रवनहेनुछे एहीजमोटोरोग ॥३॥ तेटले
व्यवहारज्ञानथी शुक्लध्यानपणहोय प्रथक्तवीतर्कए
ताणीये प्रथमपायोसोय ॥ ४ ॥ तेकारणएज्ञानते व्यव
हारनयेसार सुद्वचारीत्रपणहोवे अभेदज्ञानपणधारा॥५॥
मजाणीहदयेधरो निश्रयव्यवहारसार व्यवहारकारण
नेश्रेनुनिश्रयमुक्तिआधार ॥६॥ हवेकिंचितचारीत्रनु नि
येनेव्यवहार स्वरूपइहातेभाखशु आगमनेअनुसार॥७॥

॥ ढाल ४३ मी ॥ नुलौमननमरातुं कयां नम्यो ॥ एदेशी ॥
 चारीत्रवीधितेसां नलो नीश्रयव्यवहारदोयभेद आगमत्र
 नुसारेदाखं मतकोइ वरज्योखेद ॥२॥ चारीत्रवीधितेसां
 भलो एआकणी ॥ प्रणातीपातादीत्यागजेव्यवहारचारीत्र
 एह सुखअर्थीजेप्राणीया आदरेछेतेह ॥ चा० २ ॥ अभवी
 पणआदरे आश्रवभावतेजाण मोक्षहेतुतेनवीकह्यो ज्ञान
 वीनाचीतश्रांण ॥ चा० ३ ॥ नीश्रैचारीत्रहवेभाखं थीरता
 परीणामछेजेह आत्मस्वरूपएकत्वपणे रमणकरोगुणगे
 हा ॥ चा० ४ ॥ मोक्षहेतुजाणीकरी उद्यमकरोअभीराम जो
 उद्यमएहवोनवीहोवे तोश्रद्वाराखोएहठाम ॥ चा० ५ ॥ ए
 हीजसमकीतशुद्धछे तेवीनाज्ञाननेध्यान कीरीयापरमुख
 निष्फलकही माटेश्रद्वाराखोसुजाण ॥ चा० ६ ॥

॥ उक्तचगाथा ॥ जसकइतकरिइ ॥ अहवानसकेइ ॥ तहयस
 दहइ ॥ सदहमाणोजीवो ॥ पावेअयतमरंठांणं ॥ १ ॥

एमश्रद्धाशुद्धराखजो ज्ञानश्रद्धाछेएक अनुजोगद्वार
 मांभाखीयु जोइलेजोजिनेक ॥ चा० ७ ॥

॥ उक्तचगाथा ॥ नायम्मीगिएहिसव्वो ॥ अगिणिह
 सव्वेयइछे ॥ अछमीडाजइवमेवइ ॥ यजोसोगउवसोसो
 नउनाम ॥ १ ॥

रुडीपेरेमहाव्रतधरे कखायनोकरेजेत्याग तोपणमुक्ति
 नवीलहे समकीतविनाहिलाग ॥ चा० ८ ॥

रुपमां मुक्ति लेशेतेह ॥चा० २५॥ एहग्रथपुरणथयो जे
माज्ञानछेसार मुनिदूकमजेआराधने तेलेशेभवपार॥चा०
२६॥ढाल ४३ मि संपुर्ण॥

॥कलस ॥ गायोगायोरेमेतोज्ञानसुधारसगायो खट
द्रव्यनोवर्णनकरता ज्ञानअनुभवपायोरे ॥मेतो० १॥ ध
र्मअधर्मआकाशतेजाणो कालपुद्गलनगरायो एपाचेअ
जीवजाणीने चीतमापणनवीलायोरे ॥मेतो० २॥ सर्वर
समाहीउत्तमरसए अमृतरसकहायो शूद्धचीदानदधर्म
प्रगट्यो तेहीजज्ञानकहायोरे ॥मेतो० ३॥ सर्वद्रव्यमांप्र
गटएछे सतधर्मकहायो ज्ञानसुधारसउत्तमजाणी एहध
र्मचीतलायोरे ॥मेतो० ४॥ एवोधर्मदिशेनहीबीजो शिवप
दएमाठरायो ज्ञानविनाधर्मनविहोवे एवोनिश्चेकरायो
रे ॥मेतो० ५॥ द्रव्यगुणपर्जांनीरचना जेदज्ञानठरायो शु
द्धव्यवहारनयथीजाणो एहस्वरूपभरायोरे ॥मेतो० ६॥
मोहनीकर्मनाशएहथी तेथीव्यवहारनयध्यायो निश्चेनय
पणजाख्योछेएहमा अजेदज्ञानतेपायोरे॥मेतो० ७॥ खट
द्रव्यनाभेदतेभाख्या गुणपर्जायसुगायो साधर्मीकपणूते
दाख्यू पक्षआठतेलायोरे ॥मेतो० ८॥ चोभंगीबहूजात
नीजाखी तेमस्वजावकहायो नयजंगवहूरीतेदाख्या ते
मनिक्षेपापठायोरे ॥मेतो० ९॥ तेमवलीप्रमाणतेजाख्या
सप्तभंगीचीतलायो श्रीभंगीपणतिहादाखी गुणलक्षण

कहायोरे ॥मैतो० १०॥ कारकखटपणतेजाख्या निश्चे
व्यवहारतेध्यायो एमज्ञानस्वरूपमारमियो अनुभवआ
त्मपायोरे॥मैतो० ११॥ चारित्रवेजातनुंभाख्युं तेमसमकि
तसुहायो अन्यदर्शननीचरचादाखी तेपणइहाकहायोरे
॥मैतो० १२॥ एसर्वेनुसारतेजाणो ज्ञानस्वरूपसवायो नि
श्चेस्वरूपआत्मनुचाख्यु तेलेजोसुखदायोरे॥मैतो० १३॥
सर्वशास्त्रनुंसारएजाणो ज्ञानस्वरूपसुखदायो तेविनास
विधर्मनहोवे संशयकोइनलायोरे ॥मैतो० १४॥ नगरन,
सोत्तेजेममेदनीवीण तेमजीवविनाकायो शरीरनशोभेजे
मनाकविण तेमधर्मकहायो ॥मैतो० १५॥ मुनीडुकमए
ज्ञानरसगायो उलटअंगनमायो दीनदीनआनंदहोयअ
धीकेरो अनुभवसहजसवायोरे ॥मैतो० १॥

॥कलस २ जो ॥ त्रीजगभासन ॥एदेशि ॥ द्रव्यगुणप
र्जायजासन आत्मगुणतेअनुभव्यो सर्वग्रथमांसारएछे अ
वरबीजोकोईनवीहवो ब्रक्षमांहिजेमकल्पब्रक्ष रत्नमांघिं
तांमणीलह्यो वेलमांहेजिमचित्रावेली धातुमांसोदणकह्यो
॥१॥पर्वतमांहेमेरुपर्वत रसमांजलरसजाणियेधर्ममांजेम
दयाधर्म वाक्यमांसत्यवखाणीये सर्वग्रथमांएहग्रंथ सहूथी
मोटोजाणिये एवोग्रंथअवरकोईनही जेमांआत्मस्वरूपव
खाणिये ॥२॥ अवरग्रंथअनेकछेपण एजेवोकोछेनहि जे
मशंभुरमणसमुद्रसरिखी अवरसमुद्रनहीसही एहग्रंथ ।

वाचताकाईं सेहेजेसमकीतउपने ज्ञानस्वरूपतेशुद्धहोवे थी
 रतान्नावआवीबने ॥३॥ तेहनेमुक्तिसुखसेहेजे प्राप्तहोवे
 छेसही जन्मजरामर्णनासे एवोअवरग्रथकोनाहिं देवलो
 कनरलोकजेने थीरतापदजेहनेनाहिं जेहनेरमणएग्रंथमां
 ही थीरतायेमुक्तिछेसही ॥४॥ तेमाटेएग्रथज्वीजन हाथथी
 नमुकशो रातदीनअभ्यासएहनो करतांनवीचुकशो एहअ
 र्थअगाधछेकाईं तेथीमुरखनवीलहे अथवामतिपक्षीजेनर
 एथीअलगातेरहे ॥५॥ ज्ञानीपुरुपजेहजाणे तेतोएमानित्यरे
 मे आत्मअर्थीजेहप्राणी कालतेएहमागमे तेकारणभव्यजी
 वतुमे एअभ्यासनचूकशो रातदीनरमणकरतां कर्मसवीते
 मुकशो ॥६॥ जिहालगेसुरगीरंदएहि तिहालगेएहग्रथरहो
 रविससी जिहालगेमडल वसुधामाविस्तारजहो तेलविंदु
 जेमजलमा विस्तरेवहूपेरेसहि तेमएग्रथमुखमुखहोवे ज्ञा
 नितणेतेचितवहि ॥७॥ हूकममुनिनोजेहमाने तेहज्ञानपांमे
 खरो निमितकारणपुष्टएछे एहथीमननवदुरकरो मुक्ति
 दाताएहसाचो ज्ञानधोरधरवली एवामुनिनोहूकममानो
 एहिजशिवशुदरीमलि ॥८॥ विक्रमादित्यसवछरेए एप्रवं
 धरच्योखरो आगणिशसतपचिसमाहि कारतगमासेचि
 तधरो शुकलपक्षअष्टमिये वारभ्रगुछेसहि तेदीनएपूर्ण
 किधो आमोदनयरमाहेरहि ॥९॥ चतुरमासुद्धहाकिधुं सघ
 आग्रहघणोकरयो श्रावकश्रोताबहुशुदर द्रव्याणुजोगेचि

तधरयो अनुभवज्ञानमांहिरशिया तेहनेवास्तेएरच्यो ते
कारणअनुभवज्ञानएहि दाख्योअमृतरससच्यो ॥१०॥
मुनिहूकमउपगारबुद्धे संघहेतेएकरयो अवरनेपणउपगा
रथाशे जेनरएहदएधरयो अर्थएहनोबहुश्रुतप्रासे धारतां
सविमुखसंपजे अहोनिसेग्रंथमांरमतां शिववधुधिकरे
मजे ॥ ११ ॥

इति श्रीज्ञानविलासग्रथप्राकृतबंध
ढाल ॥ ४३ ॥ कलश ॥ २ ॥
मुनीश्रीहूकममुनिजिकृतसंपूर्ण ॥

श्रीध्यानविलास

श्रीगुरुभ्योनम

॥ दूहा ॥ धुरनमुपरमात्मा चिदानंदजगवंत तासपसा
 यरचनाकरुं देखोरीझेसंत ॥१॥ मूक्तिमारगनेसाधवा क
 हूध्यानविचार शुभाशुभनेत्यागवु आदरबुशूद्धअनुसार
 ॥ २ ॥ मूक्तिमार्गसाधनतणा मार्गदिशेअनेक पणमूक्ति
 छेध्यानमा जाखूछूतेछेक ॥ ३ ॥ तपजपक्रियाअनेकविध
 व्यवहारिकेहेवाय पणमूक्तितेहमांनही पुन्यप्रकृतीथाय
 ॥ ४ ॥ मुक्तिरहिएकध्यानमा ज्ञानेकरौतेशूद्ध मूर्खअर्थपा
 मेनही पामेपडितबुद्ध ॥५॥ तेकारणइहाजाखशू ध्यानत
 णोविचार नेदघणाइहादाखशू शास्त्रतणेअनुसार ॥६॥
 ध्यानविलासतेजाणिये नामग्रथनूएह ज्ञानीजनसूखीहो
 शे वाचीगूणनोगेह ॥ ७ ॥ अत्रभापालिख्यते
 हवेध्यानतेशानेकहीए जेचेतननाचपलपणानेथीरकर
 वु चेतननाअद्यविसायथीरभावरारखीनेध्यावु तेनेध्यानयो
 गीकह्यो तेनात्रणप्रकारछे एकजाधना ॥१॥ अनुपेक्षा ॥२
 चितध्यान ॥३॥ एत्रणप्रकारेध्यानेकरिनेचित्तनेथीरकरवु
 तेनेध्यानकहीए हवेअतरमडुरतएकाग्रहर्चितनोउपयोग
 थीररेहेवोतेनेध्यानकहीए एटलेएकअर्थनेविशेजविचार
 करवोतीहाघणाअर्थ पडखेथीसंक्रमणथाय तीहास्थीर

पणेरहेवु तथातीहांध्यानदिर्घपणेध्याननीपरपरा थए
जजायछे तीहांकोइअंतरमहूरतनोनीयमछेनही एटले
छद्मस्थनेएवीरतिध्यानप्रवर्ते अनेकेवलीनेजोगनुरोकवुं
तेजध्यानकहीये ॥

॥उक्तच॥ अंतोमुहुत्तमित्तं चित्तावस्था मेगवच्छुमि छो
मच्छाणंजोगनीरोहोजिणाणंतु ॥१॥

हवेतेध्याननाचारजेदछे आर्तध्यान ॥ १ ॥ रुद्रध्यान ॥
२ ॥ धर्मध्यान ॥ ३ ॥ शुक्लध्यान ॥ ४ ॥ तेमध्येप्रथमनावेध्या
नतेअशुचछे तेथकीअशुचकर्मबंधाय अशुचगतीप्राप्तथां
यवाकिवेध्यानरह्यांतिमुक्तिनाकारणवाच्यछे एउत्तमजिव
नेजप्राप्तथाय हवेतीहाप्रथमजेआर्तध्यानछेतेनुस्वरूपकहि
येछिये तेनाचारपायाछे प्रथमईष्टविजोगनोविचारकरवो
केरखेमनेतेवस्तुनोवीजोगथायएटले ईष्टकेहेतांजेवलभ
पोतानामननेगमेएवापदार्थमल्या तेमांमगनथइनेरेहेते
कीयाकीया जेमातापीताचाई मीत्र पुत्र कलत्र धन धान्य
सजनकुटुंबमेढीमेहेलवाडी आरामप्रमुखनो रखेमनेवी
जोगथायएमकरतां कदीविजोगथयोतोमाहाचितामांपडे
मोटोशोककरे माहावीलापकरे तेअचीलाखरूप, एकत्व
पणेंजेपरिणामते इष्टवीजोगआर्तध्याननो पेहेजोपायो
कहिए ॥ १ ॥ हवे बीजो अनिष्टसंयोगकेहेतां जेअ
निष्टवस्तुनी प्राप्तिथइएटलमनने नगमेतेवा शब्दादि

कपदार्थनुमलवुथयुछे तेनोविजोगंधवानोचितवे एटलेअ
नीष्टजेभुंडांदुखनाकारण जेआशत्रुअर्हीथी क्यारेजाय ।
अथवाआदरिद्रअवस्थामाहारीकाहारेजशे अथवाआ
कुमाणसनासमागमथयो तेकेमटले अथवाएथकी आप
णोछुटकोक्यारेधशे ईत्यादिकवीचारवु ते अनिपूसयो
गवीजोपायो कहिये

हवेत्रीजोपायोरोगचिताआर्त्तध्यानकेहेतां शरीरनेवी
शे वायु गरमी पीत ज्वर इत्यादीकउपने थकेदूखघणु
करे घणी चितामांप्रवर्ते एनाआशडउपचार करवानी
चितामांरहे तेरोगचिता आर्त्तध्यानत्रिजोपायो कहिए ए
ध्याननेविशे पराए त्रणलेस्याहोअ क्रश्रलेस्या ॥ १ ॥
निललेस्या ॥ २ ॥ कापोतलेस्या एत्रणलेस्या सजवेछे ।

हवे चौथो पायो अग्रशोचकेहेता जे मन मांआ
गलनाकालनो शोचकरे जेएणेवरसे एकामकरिशु
अथवाआवतेवपे आवीरीतेकामकरिशु एमचींतवे तथा
दान शिपल तपनुफलमागे जेमाएणेजवआतप प्रमुख
कीधा तेनुमनेअमुकुफलहोजो एटलेहूआवतेजवे इद्र
तथा देव तथा चक्रवर्ती तथा वासुदेव बलदेव शोठसा
हूकार पुत्र कलत्र धन धानादीक हरकोइमागे एआग
लनाजवनीवच्छा एटलेअग्रशोचनापरीणामउपजे अ
थवानीआणानुकरवुं तेपण एअग्रशोचमधेछे ॥

॥ उक्तच ॥ निदानचितनंपाप ॥ एटले एआर्तध्याननोचो
थोपायो अग्रशोचनामांकह्यो ॥

हवे एध्याननुलक्षणकहीछीए एजे आर्तध्यानछे तेने विशेषे
अतीशे संछिष्टनावनथी एटले कुर प्रणाम दुरजय
तीवनलाधे इहां एकर्मनीप्रणती एवीजदीशेछे हवे इहां
गुलक्षणलाधेछे तेकहीएछीए हाहा हूंशुकरीश इत्यादी
कआक्रदकरे उंचेस्वरकरे निरुदनकरे घणासोचकरे नाम
देइनेरुवेअथवानामदेइदेवनेपरचारीनेकहेजेतेमाहारुआ
शुंकरधुं वलीछाती मस्तकताडनातरजनाकरे केशमाथा
नातोडे इत्यादीकएसर्वे लक्षणआर्तध्याननांछे अथवा
अमेमांदाछीए हवेअमेशुकरीए इत्यादीकपोतानाआत्मा
नीनिंघाकरे इत्यादीकलक्षणएसर्वेआर्तध्याननांजाणवां
अथवासाधुथइनेदूर्जननीरीतराखे तेनांलक्षणकहिएछीए
अरेजाइओ अमेशुपालीए आजपाचमोआरो दूश्मका
लछे नेमुक्तिमार्गतोमाहामोटांछे पणआकालेपालवुधणु
कठणछे पडतेकालेकोइकजेवलोलाधे वलीपोवेपमांदी
छे नेवीपयमालेलीनछे व्रत नेम तप जप थकीउपरांठा
धर्ममार्गथकी चुक्या जिनवांणीनेगोपवे एटले जथार्थउ
पदेशकरेनही अनेलोकोपासेजाचनाओकरताफरे तेध
णीआर्तध्यानमांजप्रवर्ते तेनेदूरिजनकहिए ॥ उक्तच ॥
प्रसक्तश्चैतदुर्जना ॥ एध्यानछठागुणठाणासुधीहोय तेमा

टे जे आत्मार्थीमुनीश्वरहोय ते नेएंपर्मादिनुस्वरुपजाणनि
 श्रवश्यतजवुअनेएध्यानवालानीगतीपराए त्रीजचसुधी
 होय एवजाणनि श्रवश्य छांडवु ॥

॥हवेरुद्रध्यानकहियेछिये॥ रुद्रकेहेतां महाकठोर ति
 देय दुष्टपरणाममाप्रवर्ते एवुजेमाठु चितवणहोय तेने
 रुद्रकहिये तेरुद्रध्याननाचारपायाकहाछे हिंसानुवधी १
 मृखानुवधी २ चोरानुवधी ३ परीग्रहरक्षणानुवधी ४
 एच्यारपायानांनामजाणवा हवेहिंसानुवधी रुद्रध्यानक
 हीयेछिये जेजिवहिंसाकरवानुचितवे अथवाजिवहिंसाकर
 ताहरखसंतोपपामे तथाहिंसाकरतादेखिनेखुशीथाय तथा
 ज्याहासग्रामनी वारताओथतीहोय अथवाएवाशास्त्रवा
 चवानोघणोउमेदराखे अथवा अेवासुरविरपुरुपो नाघणां
 वखाणकरे अथवा एवातनीअनुमोदनाकरे एसर्वे हिंसा
 नुवधीरुद्रध्यान पेहेजोपायोजाणवो १ हवेमृखानुवधी
 केहेता जेजुठुवोले मनमाहरखपामे जेदूकेवुजुठुवोल्योछु
 नेमारानुठानीकोइनेखवरपडतीनथी अथवा आवीरीतिजु
 ठुवोलीतिअमुकने समजाविशु अथवा परनीचाडिकरे अ
 थवा अन्योअन्यखोटाविवाटचलावे अथवा मिथ्यात्वना
 वचन उच्चारणकरे अथवा कपटसहितवीचारकरे एसर्वे
 मृखानुवधी रुद्रध्याननोत्रिजोपायोजाणवो २ हवेतिजो
 चोरानुवधीकेहेता जेचोरीकरवी अथवा ठगाइकरवी अ

एसंजवेछे एलेस्यावालानाप्रणामअतीसच्छिष्टहोय के
 ामहाक्रुरदूष्टपरणामी होय एकर्मनीप्रकृती एमज
 यछे एलेस्याघणादोपनुकारणछे नानाप्रकारनाजीव
 रणनेदोपेकरीहिंसादिकनी प्रवरतीएकरी पापेकरीने
 शबरुतीपणुनिर्दयपणुहोय पश्चातापहोयनहि परनाअ
 ाटथयाथीराजीपणुमाने माहाविपयनेविशे प्रवरतनप
 धारि एलक्षणसर्वे रुद्रध्याननाजाणवा एध्यानवांलानी
 तीपराए नर्कनीहोय माटेएनेअवश्यछाडवुं एटले एआ
 यान तथा रुद्रध्यानवनेअशुचछे नेवनेमाहानवलांछे
 नेजेमजेमएनोपरीचयविशेपेराखेतेमतेम एनोरसमा
 कडवोथाय अनेएनोवीपाक माहाकटुकप्रगटे माटेजे
 त्मार्थीमुनिश्वर अथवा सर्वेभव्यजीवीनेकहूछुके एथ
 सदाएवेगलुरेहेवुं एध्यान नकरवु अनेजेथकिआत्मा
 र्मलथाय नेपोतानुमुलस्वरुपप्रगटे एवुध्यानकरवुं सं
 णनिर्मलध्याननआवे तोपणद्रव्य क्षेत्र काल जाव जो
 शोभन्नावनाजाववी पणआत्मानिर्मलकरवानीरुचीहो
 तो पोतानीसत्तानेआलवनलेइनेध्यानकरवुं नेतेथकी
 रपेक्षपणेप्रवर्तवु तेशुचलेस्यानुलक्षणछे ॥
 हवेधर्मध्यानकहियेछिये ॥ धर्मव्यवहारक्रियारुपतेनि
 तकारण एबाहारनुछे पणधर्मजे श्रुतज्ञान तथाचारीत्र
 र्म तेउपादानकारणछेतेनुसाधन धर्मतथारत्नत्रयी चेद

पणोउपादानधर्मछे तेनेशुद्धव्यवहार उत्सर्गानुजायीछे
 अथवा अपवादधर्म तथाऽनेदरत्नत्रयी तेध्यानशुद्धकहि
 ए निश्चयनयेतेउत्सर्गधर्मछे जेवस्तुनुसत्तागत शुद्धपर
 णाम स्वगुणप्रवरतीकरतादिक अनंतानंदरूप सिद्धअ
 वस्थाएरह्योते एवंभुत उत्सर्ग उपादान शुद्धधर्मछे
 तेधर्मनुज्ञापणरमण एक थिरतापणे चेतनतन्मयप
 णानोउपयोग एकत्वनुचितववु ते धर्मध्यान कहिये
 हवेते धर्मध्यान एवजाणीने पछी चार ज्ञावनाने ध्याइये
 ज्ञानभावना॥१॥दर्शनज्ञावना॥ २॥ चारीत्रज्ञावना ॥ ३॥
 वैरागभावना॥४॥ हवेएचारनांलक्षणकहिएछिए ज्ञान
 भावनाथकीनिश्चलपणुथाय एटलेपरवस्तु साचीज्ञासे
 नहि पोतानास्वभावमा स्थिरतापणुआवे नेदर्शनभाव
 नाथकीमुझायनहि एटले मंतर तंतर देवदेवीना चम
 त्कार परमुखदेखीसाचुमानेनहि जाणेकेएसर्वपरजावछे
 कृत्रिमवस्तुछे तेसर्वेअसतछे नेअकृत्रिमवस्तुजे आत्म
 स्वरूपप्रमुख सर्वे सत छे चारीत्रभावनाथकि पुर्वकृत
 कर्म नीर्जरे नवांकर्म नउपारजे वैराग्य ज्ञावना थकी
 स्त्री आदीनोसंग तथापुद्गलीकनोसंग एटले एपरवस्तुनो
 संगसुखेतजवुंथाय संशयमात्रतेनेनहोय एचारेज्ञावनानु
 फलअनुक्रमेकहीनेदेखाड्यु हवेएविरीतनीजेज्ञावनाजा
 वे अथवाएवीज्ञावनामांजेनुचितथीरथयुहोयतेधणीध्या

नकरवामांथीरपणुपामे माटेतेवाप्राणीजेछेतेध्यानकरवा
 नेयोग्यछे बीजावाकीरह्यातेध्याननेअयोग्यछे शामाटेके
 मनछेतेअतिशेचचलछे तेचपलतानेलीधेकरीनेजितायन
 ही शत्रुनुशैन्यलाखोहोयतो तेनेजीतवाने पुरुपसमर्थथाय
 छे पणतेवोपुरुपमननोनिग्रहकरवासमर्थनथइशके शामा
 टेकेमनतोपवननीगोडेहाथमांआवेनहि तेथीमनजीतवुघ
 णुकदुर्धरछे एवातमाकाइसशयनहि पणआत्मारथी एतो
 अवश्यएवाचपलमननेपणजीतवुजोइए तेशीरीतेजीताय
 तेनीरतरएनोअभ्यासराखे शब्दादिककोइनोकानेनपडे
 एवीवस्तीमाएकातध्यानकरे नेवैरागेकरीनेमनवशकरे ए
 मकरता करतामनवश्यथाय अनेजेधणीनुमनवश्यनथी
 थयु तेपुरुपकइध्यानकरवासमर्थनथाय अनेजेवारेध्यान
 दशानआवेतेवारेमुक्तिक्याछे एतोध्यानेकरीनेछे माटेम
 ननेवश्यकरवानोउद्यमकरताथकां अभ्यासेकरीनेध्यान
 दशापामवीसुलजथाशे जेजेपदार्थ देखवामाआवे तेते
 सर्वे बाहाजपदार्थकहीए तेनोविश्वासनराखे तेतृश्रा
 सरवनीछोडे तेधणीअभ्यासकरवाजोगछे तेशुद्धजाववा
 लाने, वस्तीकेबीजोइए तेकहिएछिए के वस्तीकेहेता उ
 पासरानेविशे स्त्रीनोरेहेवासनजोइए पशुकेहेता ढोरन
 जोइए कलीवकेहेतां नपुशकनजोइए बीजामाठाआचा
 रनाकोइनजोइए एवीवस्तीनेविशेमुनीनेरेहेवुं ध्यानवेला

ए विशेषेकरीने एवीवस्तीजोइए एवुआगममांपरमा
 त्माएकह्युछे हवेजेनुचित्तीरवेठेलुछे मनवचनकायाना
 जोगवश्यंछे तेवाआतमानाधणीने गाममांरह्यातोपणठी
 कजछे वनमांरह्यातोपणठीकजछे एटलेतेनेकांइ वननोने
 घरनो वाहाधएकेनोछेनही तेवामुनीश्वरनेतो ज्यांपोता
 नाचित्तेसमाधानरहे नेपोतानाउपयोगथीनचूके तेवेठे
 काणेरहेवुं नेध्यानकरवुं जेजेस्थानकनेविशेजोगथीररहे
 छे तेजकालपणरुडोजाणवो एटलोदिवश रात्रिपोहोर मु
 हुरत घडी पल जेध्यानमांजाय तेवेलाधनकरीनेमानवा
 नीछे तेनेकांइ कशविलानुनिमछेनहि वलीमुनीनेजेअव
 स्थाएकेहेतांजे शोचाशोचपणुकईविचारवानुंछेनहि तेमा
 सर्वस्थानकनेविशे शुभाशुभकांईजोवुंनहि ज्यांपोताना
 ध्याननी व्याघातथायतेतजवाजोग बाकीसर्वथानकने
 विशे जेमुनीश्वथीरचित्तवालाछेते वेठां अथवा सुतां ध्या
 नकरे जेद्रव्यक्षेत्रकाल जावना अवस्थाननेविशेरह्याजे
 मुनीतेने कशीएवातनो नियमछेनहि जेनित्यपुणेजोगने
 विशेथीररह्याअेवा त्यारेतेनेकरणीशरिहिकेवांचनापुछना
 परीअटना अनुपेक्षा अेचार ॥४॥ धर्मनांआलवनछेअने
 तेवापुरुपने अवश्यअेजकरणीछे अेवीखरीवस्तुनु जेने
 आलवनहोयतेप्राणी कठणमांकठण थानकहोय त्यांप
 णचडे तेमतेवाआलवन वालाप्राणी ध्यानरूपीमेडीअे

रुडीरीतेचडे शामाटेकेआलवनग्रहेवाना आदरथकीप्रग
 थयोजे गुणते थकीवीधनमात्रनोक्षयथयो तेनाजोगर्थ
 कीकरीनेध्यानरुपीयापर्वतउपर सुखे सुखे चढतां जोगि
 श्वरनेकोइरितनुभ्रष्टपणुनथाय अनेकेवलीपरमात्मानेतो
 जोगनोरोधकरवो तेजध्यानकह्युछे जिनमतनुतोएजप्र
 माणछे अने अनदर्शनवालातो जेनेजेनीनजरमांआवे
 तेमसमाधानकरेछे तेउपरकाइपरतीतथायनहि एवीरी
 तेध्याननुस्वरुपजाणीनेओलखे तेध्यानकरवायोग्यहोय
 तेधर्मध्यानना॥४॥ चारपायाछे आज्ञावीचय॥१॥अपाय
 वीचय॥२॥वीपाकवीचय॥३॥संस्थानवीचय ॥४॥ तेमध्ये
 प्रथमआज्ञावीचयकहिएछीए जे वितरागदेवनी आज्ञा
 तेहेतकरिमाने सदहे एटलेभगवंते खटद्रव्यनु स्वरु
 प्रदेखाडयुं तेसातेनयेकरीचारप्रमाणेकरीचारनीक्षेपेकरी
 इत्यादीकजेनाख्युछे तेमध्येपाचद्रव्यअजिवजाणीनेतज
 वाकह्याछे एकआत्मद्रव्य शुद्धआदरवाजोगछे
 स्वरुपनेओलखाणनेवास्ते ५ वा ६
 पक्ष नीश्रय व्यवहार

त्रयधर्मध्यानकहिए ॥१॥ हवेबीजोपायो अपायबीचयक
हिएछीए॥ अनेकसंसारोजिवकर्मनेवशपड्या संसारमा
हेदूखीथायछे शाथकिके अज्ञान राग द्वेष कखाय आ
श्रव तेनेवशपड्यातेदुखीयाछे पणहेचेतनतुंतोहवे जांण
पुरुपथयो एवस्तुतेंपरजांणी माटेएवस्तुताहारीनहि तुं
तोचेतनछे नेएजडछे हवेतारुंशुछे नेतुंकेवोछे तेकहिए
छिए अनंतुज्ञान अनंतुदर्शन अनंतुचारीत्र अनंतवीर्य
मयतुंछे वलितुशुद्धछे बुद्धछे अविनाशीछेअजछे अनादि
छे अनंतछे अक्षयछे अक्षरछे अनक्षरछे अचलछे अकं
लछे अमरछे अगम्यछे अनामीछे अकर्माछे अवंधकछे
अनुदयछे अनुदिरकछे अजोगीछे अज्ञोगीछे अरोगीछे
अभेदीछे अवेदीछे अछेदीछे अखेदीछे अकखाइछे अस
खाइछे अलेशि अशरीरी अनाहारिछे अव्यावाधछे अ
नअवगाहिछे अगुरु लघुछे परिणामिछे अतेद्रिछे अप्रां
णिछे अयोनीछे असंसारीछे अमलछे अपरंपरछे अ
व्यापीछे अनास्त्रातिछे अकंपछे अवीरुधछे अनाश्रवछे
अलखछे अशोकिछे असंगीछे अनाकारछे अमुतिंछे लो
कालोकज्ञायकछे एवोसुद्धचिदानंदमाहारोआत्माछे अ
बुजेअेकाग्रतारुप तन्मयपणेरमण तेनेध्यानकहिअे अ
अपायबीचयधर्मध्याननोबीजोपायोजाणवो॥२॥

हवेबीजाकविचय त्रिजोपायोकहियेछीये हेवोआपणो

आत्मावितरागपरमात्मासरीखो सिद्धनोसाधर्मिछे त्रे
 आसंसारमांकेमखुत्योछे तेस्वरुपविचारता एमजासनथयु
 जेपरायोसगाकिधो तेमाराचीमार्चारह्यो तेथिकर्मनेवशप
 ड्योदूखीथाउछुतेकर्मनोविचारकरेजेकारणज्ञानगुणतेज्ञा
 नावरणीकर्मदाव्योछेजावतविर्यगुणअतरायकर्मदाव्योछे
 एमआठकर्मथीजीवनाआठगुणदबाणाछेतेथीआससारने
 विपे जीवनेजन्म मरणअनंताकरवापडेछे नेसुखदूख पो
 तेपोतानाकिधेलाकर्मनाछेतेसुखउपरराचवुनहि एशुभक
 र्मनाउदयथकीछे दूखउपन्येशोचकरवोनहि एअशुभकर्म
 नाउदयथीछेएवनेपुद्गलीकभावछे हेमाआत्मीकजावछेन
 हि वलीएकर्मनुस्वरुपविचारवु तेकहियेछिये प्रकृतीबंध
 १ थितिवध २ रसवध ३ प्रदेशवध ४ एच्यारवधना
 थानकविचारवा तथाउदयउदीरणासत्तातेनास्वरुपनुचित
 वनकरवु तेएकाग्रतापरणामेवरते तेविपाकविचयधर्मध्या
 ननोत्रिजोपायोजाणवो ३ हवेसस्थानविचय चोथोपायो
 कहियेछिये त्याउत्पात वय धु काल जावादीविचारे पर
 जायलक्षणैकरी जुदाजुदाजेदे नामथापना द्रव्यभाव
 नेदेकरीने चउदराजलोककेवाछे उचपणे चउदराजछे
 तेमध्येसातराजनीचोछे तेनेअधोलोककहिये अनेविचा
 छे अठारसेजोनन मनुष्यलोकछे तेनेतरीछोलोककहिये
 तेउपरे कइंकउणीसातराज उर्धलोकछे तेमध्येदेवता

विमानिक तेउपर सिद्धशल्या सिद्धक्षेत्र सिद्धजिववर्तेछे
 एमलोकनुमानछे एलोकसंस्थाननुचिंतन विशेषेछे शा
 माटिके अनंताकालमांआपणेजिवे संसारमांभमतां सर्व
 लोकमां जन्मरणकरी फरगोछे हेवोजेलोकस्वरुप तथा
 लोकनेविशे पंचास्तीकायनुअवस्थान तथा प्रणमन द्र
 व्यगुणपरजायनुअवस्थान त्यांपोतानाकर्मनो कर्ताभो
 का आत्माछे पणतेआत्माकेवोछे अरुपि अविनासी उ
 पयोगलक्षणेकरीयुक्त एवोमारोआत्माछेएवीरीते एका
 ग्रतापणे विचारवुं तन्मयपणे प्रणमवु तेध्यानते संस्था
 नविचय धर्मध्याननो चोथोपायोजाएवो॥४॥ हवेसंक्षेपथ
 की धर्मध्याननुलक्षणकहियेछिये हवेकर्मजनितसमुद्रव
 खाणीएछिये एटलेकर्मकरी प्राप्तथयोएवोजेसमुद्रजन्म
 जरा मरण रुपजलेकरीसंपुर्णभरेलोछे नेमोहरुप मोटा
 भमरापडीरह्याछे नेकांमरुपवडवानलनामाअग्नी रही
 छेअनेकखायरुपीयाचारपतालकलसाछे तेमधे आशारु
 पीयो मोटोवायुतेणेकरीनेभरेलोछे माठावीकल्धरुपीआ
 जेकलोल मोटाउछलीरह्याछे अेवोमाहामोहरुपउधतत्र
 वसमुद्रकह्योछे हवेमनमाहे वीश्रातकेहेतां हरखशोकनुथा
 वुंतेरुपणीवेलतेमांहेपड्यो तेनेनिकलवुघणुकठणजाएवू
 वलीत्यां जाचनारुपशेवालनोसमुहघणोछे अनेदुखेकरी
 नेपुर्णथायअेवोजेविपयसुखतेसमुद्रनोमध्यजागछे अज्ञां

नरुपीवादलानोअधकारघणोव्यापिरह्योछे आपटारुप्र
 णी वीजलीपडवानोभयघणोछे कदाग्रहरूप पवनअद्भुत
 वाइरह्योछे वलीत्या विवीधजातीनारोग तेनोजेसंबंधते
 रुपीया मच्छ कच्छादीक जलजीवघणाउच्छलीरह्याछे
 वलीत्याजेसमुद्रमाहे पर्वतछेतेकहीअछीअ चंचलतारुप
 सुनपणारुप गर्वपणारुप जेजेदोपतेतेपर्वतमोटा जीहां
 अचोन्नवसमुद्रतेनेविचारवु हवेतेवोजेचवसमुद्रतेनेतरीने
 पारपामवानोउपायकहिअछीअ ज्यांसमकीतरुप दृढवं
 धनवांधेलु अढारहजार शिलग तेरुपीयापाटीआं ज्यां
 जडेलांछे त्याज्ञानरुपीया नीर्यामक अज्ञाननाचला
 वनाराछे सवररुपीकीचकेहेतां तेलेकरीनेपाटीयांना आ
 श्रवरुपछीद्रनेपूरचाछे जेहेनोमनोगुप्तीरुप गुप्तसुकान
 तेणेसमुचाले आचाररुपमडपेकरीदीपतुं नेउत्सर्गने अ
 पवाद अवे मार्गछे जेहेने हेवुजेवाहाण तेनेवीशे सुजटनूं
 सेन्य चढयुंतेकोण जेशुद्ध अधवीसाय रुपीया घणां
 बलवंत-हेवा शुजटछे वली तेवाहाणनो कुवो चलाजो
 ग रुप थजछे तथंजउपर थापेलो एवो जे शड वहा
 णनेचलावेएवो वेगेभवसमुद्रने पारपमाडेएवोउजलनी
 र्मल अध्यात्मरुपीयोशड ज्याचडावेलोछे हवेएशंडरुप
 अध्यात्मथकीप्रगटथयोजे तपरुपीयोजेपवन अनुकुलवा
 तोथको चालवानेवेगेकरीने सवेगरुप तेणेकरीनेचालतु

थकुवहाण वेरागमारगमांहे हेवुजेचारीत्ररूपीउझाहाज
 महावेगेकरीनेचाल्युजायछे तेनीमांहेलीकोरे महामुनी
 राजबेठाछें महारीधीनाधणीछे तेमनीअनित्यादीकजे भ
 लीभावनाओ तेरुपणीपेटीपोतानी तेमध्येज्ञानरूपीयां र
 लजरेलांछे तेपोतानीपासेराखेलीछे हेवीरीतेजेमुनीश्वर
 प्रवरतेछे तेधणी निर्विघ्नपणे मुक्तिरूपीया नगरनुराज
 सुखेसुखेपामे हवेहेवीरीते मोक्षरुपनगरे जातांथकां एक
 संसारनीमांहेलीकोरे मोटोएकपल्लीपतीछे तेनुनाम मोह
 राजाकेहेवायछे तेसर्वक्रोधादीकजील तेनोएराजाछेते
 माहाजोरावरछे ईंद्र चंद्रनागेंद्र तेपणएनेजीतवासमंर
 थनथी एवोजोरावर तेनेखबरपडी जेआचारित्ररूपीया
 झाहाजमां ज्ञानरूपियांध्यानथीजरैला मुनीमाहेवेठेलां
 तेमोक्षनगरेजायछे तेवीखबरसांजलीघणोक उदाशथ
 यो विचारवालाग्योके आपणासंसाररूपीयानाटकनोउ
 छेदथायछे अनेआपणीरिद्धिनोनाशथायछे एमघणोक
 शोकातुरथइनेवेठो चितारूपीयाकोठारमांपेठो ल्यांएवो
 विचारउत्पन्नथयोजे कंगालथइनेवेशीरहेतोकिंकामवन
 शेनही माटेउद्यमकरु अनेजइनेयुद्धकरीने एरिद्धिछेतेव
 धींएलेइआवुं अनेएजीवने लेइआवीनेपाछोसंसारमांक
 बजकरुं एमविचारी पोतानोदुरध्याननामाझाहाइनोजे
 टंडेल तेनेतेद्वार्वीनेकह्युंकेआपणुं दुरबुद्धीनामावाहाण

सग्रामनेविशेवेशीनेलेइजवानूछे तेतईयारकरोबीजांदुष्टा
 चारप्रमुख झाहाजछेतेसर्वेतइयारकरो त्यारपछी पोता
 नाजेयोदा राग द्वेश प्रमुखनेकह्नुके आपआपणीसेना
 लेइने तइयारथाओ त्यारेतेसर्वेपोतपोतानाशुचट सेना
 ओसजकरी वाहाणमावेठा भवसमुद्रमातेवाहाणचलवी
 ने लडाइउपरपोहोच्या तेवासमानेविशे धर्मराजानासु
 चटो चारित्ररुपीआझाहाजनेवीशेथीरता रुपीआमंडप
 नेविशेवेठाहता तेणेमोहराजानुसैन्यआवतुंदीठुं देखीतेतु
 रतउठीसजथइने रणमडपनुमीएआवताहूवा तत्वचिं
 ताप्रमुखजेवाहाण तेलेइनेसर्वेसजथया पछीमोहराजा
 साथे मांहोमाहे युद्धकरवाजाग्या त्यारेसम्यक्दर्शनप्र
 धाने मिथ्यात्वप्रधानने अतदशाएपोहोचाडयो केवोमा
 हाजोरावरहतो मोहराजानोमोटोशुभट माहावीखमका
 मनोकरनारो तेवाप्रधानने शेजमाएकलीजाएकरिनेह
 ण्यो हवेजेमोहराजानोजेरणस्थभतेनेजइनेरोकीलीधो हे
 वोजेउपसमनामाशुचट तेणेकपायादिकचोरटाओसर्वनेव
 श्यकरया नेशीयलसुभटे कद्रपचोरनेजीत्यो अनेवैरागसु
 चटे हास्यादिकखटनेजीत्या हवेश्रुतज्ञानजोगादिक सुभ
 टतेणेनिद्रादिकसुभटोने हण्यो धर्मध्यान शुक्लध्यान बे
 सुचटे आत्त रुद्र एवेसुभटोनेहण्यो इद्रीनीग्रहसुचटे अ
 संजमचोरनेहण्यो क्षयउपसमयोद्वे दर्शनावरणीचोरोने

हण्यो बलीश्रशातारुपसैन्य मोहरांजानुं घणुहतु तेसर्वे
 पुन्यउदययोद्धाना प्राक्रमथकीनाठुं हवेजेद्रुष्यस्वरुपहा
 थीउपरवेठी रागरुप सिंहेकरीनेसहित हेवोजेमोहराजा
 पोतानारागकेसरी पुत्रनेलइने लडाइउपरपंडे आव्यो
 त्यारे धर्मराजा श्रद्धारुप श्रष्टापद वाहन उपर बेशीने
 साथेज्ञानरुपपुत्र भारंडपक्षीरुपलइने पोतेचडचोत्यांमो
 हरांजानेहण्यो त्यांसर्वमोहराजाना सैन्यनोक्षयकरी नी
 कदंनकरयुं तेवारतेमुनीराजमाहाश्राणंदने प्राप्तथया ध
 र्मराजानापसायथकी पोतानुइछीतकाजथयुं तेवारतेसां
 धुमाहा व्यवहारीयाथया चरेदेशनो वेपारकरवालाग्या
 तेमनेकोइरीतनो हवेजयरह्योनहि एवीरीतेपोतानामन
 नीमाहेलीकोरेबंनेसैन्यनुंस्वरुपविचारवुं इहांवाहारनोको
 इचोरनथी तेमराजाएकोइनथी पोतानास्वरुपनीमाहेलि
 कोरेविचारीनेजुवेतोजासनथाय केमकेस्वरुपानुजायीपणे
 प्रवर्तेतो धर्मराजानापक्षनीझीतसमजवी नेपरानुजायी
 पणेप्रवर्तेतो मोहराजानापक्षनीझीतजाणवी एमपोता
 नेअंतरमाबन्नेस्वरुपविचारवानांछे परअनुजायीए प्रवर्त
 वुतेबंधछे स्वअनुजायीएप्रवर्तवुतेथि मुक्तिछे माटेमुक्तिने
 बंध सर्वेपोतानाअंतरमांहेछे एवीरितेधर्मध्यानमांपेसवा
 नुएलक्षणथकीपामे एवाविजाएपण आगमनेविशे पदा
 र्थनासमुहकहेलाछे तेपोतानेविचारीलेवा जेमुनीइंद्रीयो

ने तथामननेझीतिनेनिर्विकारबुद्धिवालोथाय तेधर्मध्या
 नध्यावावालोछे अनेतेहनेजधर्मध्यानध्याताकहिए वलि
 संतदतपणतेनेजकहिए ज्ञाननुलक्षणएमजछे थिरभावि
 रहेतेनेसर्वघटे संतीपीथइनेआत्मामाथीरभावग्रहे तेनेप
 रिज्ञावंतकहिए तेनेजध्यानीकहिए एधर्मध्याननुलक्षण
 कहु एधर्मध्यानछठागुणठाणायी तेआठमागुणठाणासु
 धीहोय वलिकेटलाकआचारजकेहेछेकेचोथागुणठाणा
 थितेआठमागुणठाणासुधीहोय केटलाकआचारजकेहे
 छेकेचोथागुणठाणार्थीते सातमागुणठाणासुधीहोय पछी
 तत्वतीकेवलीगम्यछे पणचोथेगुणठाणेजोधर्मध्यान न
 होयतोसमकीतरहेनहि माटेएमसमज्यामाआवेछेकेचोथे
 गुणठाणेथीजधर्मध्यानछे तेसातमागुणठाणासुधीछे ने
 आठमे गुणठाणेतो शुद्धध्यानआवे एवुभासनमाआवे
 छे पछीतोकेवलीजाणेतखरुंछे एटलेएधर्मध्यानकहु हवे
 एठेकाणेबीजापण चारध्यानकहेलाछे तेकहिएछिये पद
 स्थ॥१॥पिडस्थ॥२॥रूपस्थ॥३॥रुपातीता॥४॥ हवेएपद
 स्थध्यानकेहेताजे अरिहतादीक पाचपदतेनाजेगुणतेवि
 चारी पोतानाआत्मसरूपमामेलवीलेवा तेगुणसर्वपोता
 नाआत्मामालाधे तेगुणनुध्यानकरवु शामाटेके अरि
 हंतादिकपदमां नेमाराआत्मामां कश्योभेदछेनहिमाटे
 तेनुध्यानकरवु तेनेपदस्थध्यानकहिए हवेबीजुपिडस्थ

ध्यानकहिएछीए पिंडकेहेतांजे शरीरनी मांहलीकोरे
 असंख्यातपरदेशे नीर्मलआपणो आत्मा अनंतगुणे
 करी व्यापिलोएवोमांहेरह्योछे तेसिद्धपरमात्मा सरखो
 जछे इत्यादिकविचारवुं अथवासिद्धनीबरोवर गुणने
 मेलववा एपिंडस्थध्यानकहिए हवेरुपस्थध्यानकहिएछि
 एरुपकेहेतांजे आशरिरादिकमाहेरह्योछे एवोमाहारोचे
 तनपण पोतेतोस्वभावेअरुपीछे अनंतगुणीछे वलीरुप
 शब्दएवोजेकेहेतां वस्तुनुजेमुलस्वरुप सत्ताएछेएवुं तेने
 पणरुपीकहिए हवेएवोआत्मस्वरुपतेने अवलंबीनेध्या
 नकरवुं एटलेआत्मानुरुप एकत्वतापणे एवुंजेध्यानकरवुं
 एटलेमुलस्वरुपमांजरमणतारहे एटलेपरभावनुत्यागीप
 णुं स्वभावनुंनोगीपणुं एवीरीते एकत्वतापणे तन्मयपणे
 जेरमवुतेत्रणेध्यानधर्मध्यानमांगवेख्यांछे एमुक्तिदातारन
 यी मुक्तिनाकारणीकएछेएधर्मध्यानपराएदेवलोकनीगती
 आपे हवेजेचोथुध्यान रुपातीतनामेछे तेशुकलध्याननाघ
 रनुछे पणइहांसमुदाएभेगुआव्युंछे तैथीधर्मध्यानमलतुं
 कहियेछिये पणएध्याननेशुकलध्यानभेगुंसमजवुं हवेते
 रुपातितध्यानकहियेछिये रुपातितकहेतांजे रुपथकि
 अतित एटलेपुद्गलादिकरुपथकिरहितपणुं स्वस्वचावी
 कआत्मा, कर्मरुपरजेकरीनैरहित निर्मलसंकल्प वि
 कल्परहितअज्ञेद

त्वामृत असर्ग अखंड अनतगुण परजायरूप आत्म
 स्वरूपनुंध्यान तेरुपातितध्यानजाणवु इहांमार्गणा गु
 णठाणा नयप्रमाणपक्ष मतीआदिकज्ञान क्षयउपसमभा
 व . एसर्वेछाडवाजोगथया तेएठकाणे खपमांआवेनहि
 ईहांतोगुणनुंकर्ताजेध्यानते लेवाजोग सिद्धपरमात्माना
 मुलगुण तेरुपआत्मस्वरूपनेध्यावे ईहांपरपक्षकशोयन
 लाधे मुक्तिपामवानुकारण एजध्यानछे माटेजेवुंमुक्तिमां
 स्वरूपछे तेवुंजआत्मानुस्वरूपध्याववुं एटलेएरुपातीत
 ध्यानजाणवु हवे एधर्म ध्याननी भावनाओ च्यारछे
 तेकहिएछिए मैत्रिभावना १ प्रमोद जावना २ मध्य
 स्थजावना ३ करुणाजावना ४. हवेतेमध्येप्रथममैत्रि
 जावनाकहिएछिए मैत्रिकेहेतांसर्वजीवसाथेमित्राइपणां
 नाजावनी चितवणाकरवी जेमपोतानामित्रनुजलुचाहेछे
 अनेतेनेरुडुकरवानेतेनेखुशवरुतीघणीरेहेछे तेमसर्वजी
 वनुकल्याणथवानीधाहनाकरवी कोइजीवनुनुडुचितववु
 नहि एसर्वजीवनुहितथायहेवीचितवनाकरवि एटलेसर्व
 जीवउपरहेतबुद्धि जेसर्वजीवसुखीथाय सर्वजीवनुकल्या
 णथाय नेमुक्तेजाय अथवासर्वजीवधर्मपामेतोसारुं एम
 सर्वजीवनामित्रभावेकरीने कल्याणनुचितववु पणकोइनु
 अकल्याण चितववुनहि एवि रितनीचितवणाहोयतेवार
 मैत्रिजावनाजाणवी १ हेवेविजीप्रमोदभावनाकहियेछि

वे प्रमोदकेहेतां महाहरंखनुथानकपांमवुतेशायकीजे गु
 णवंतनेदेखीनेअथवाज्ञानादीकगुणउपरघणोरागरेहे हवे
 जेगुणवंतकेहेतां जेपोतानाधर्माचार्य अथवाबीजापणज्ञा
 नजोगीश्वर महामुनितेवानामेलापथीमहाआणंदप्रगटे
 अहोमहारांधनजाएगजे आजमूनेमहाराधर्माचार्य अथ
 वाज्ञानीपुरुषोनोसमागमथयो आजमनेतेमनादर्शनथयां
 अहोहुतेमनीशेवाञ्जिकरीश महारांसर्वपापगयां आज
 महारे मोटोपुन्यनोउदयथयोवलीतेगुरुकेवाछे केअनंतगु
 णनाधाणिछे मोक्षनासुखनादातारछे मोक्षमारगनुकारण
 एजछे वलीतेगुरुकेवाछे तत्वभोगीछे तत्ववीलासिछेतत्वा
 श्रीयछेस्वपरनाजाणछे परभावत्यागीछे हेवाजेकोइमहा
 राजे धर्माचार्य साक्षातआकाले परमात्मारुप अहोएम
 नुंडपगारतापणु जे अज्ञानजीव अजाणतेवाने बहू
 रीतथी उपदेशकरिनेधर्मपमाडे मार्गमांलावीमोक्षपोचा
 डे दूरगतथीपडतावारे एवाजेगुरुजीनो माहामोटोउप
 गार एउमगार विजाथकिनिपजेनहि हेवाउपगारीना गु
 णओशींगणथवानु कोइरितथीदिसतुनथि कोटानकोटि
 चवसुधि सर्वरितेकरिने शेवाञ्जिकि आदेदेडनेकरे तोयण
 गुणओशींगणनथायमाटे हेवागुरुनोमनेसमागममल्यो
 छे धन्यछेमहारांभाएग धन्यआजनोदहाडो धन्यघडीव
 न्यवेला अथवास्यादवादधर्मनोजोगमल्यो ज्यांआत्मस्व

रुपनीचरचा वारताथइरहिछे हेवोसमागमज्यामले त
 पणघणो आणदमाने, एमगुरुवादीकनामलवाथकी ए
 मनमांविचारेजे आजमनेचिंतामणीरत्नकोटाकोटिमले
 आजमहारामनना मनोरथसर्वेफल्या एवो घणो आ
 द पांमतो वलीमनमां एवुविचारेजे आवांकारणमु
 ने मलेलाछे तेनोविरहेपडेनहि मारेअहोनिश एवाका
 एनोसमागमरहेतोघणुसांरु एमआनंदमय चितवतोव
 तेनेप्रमोदभावनाकहिये २ हवेत्रिजीमध्यस्थभावनाका
 येछियेएटलेमध्यस्थकेहतांसमपरीणाम एटलेधर्मवतपु
 प अथवाज्ञानिपुरुषअथवासरस्वीसरधावालाएवाजीवो
 देखीनेतेउपररागउपजेतथामिध्यादृष्टी कुमार्गीहिसक
 रुपो तेउपरपण तेवाओतेमनाधणीने तेवादेखीने दयाउ
 जे पणतेनाउपर द्वेशनउपजे हेवोमननीमांहेलीकोरेवि
 चारथायजेएविचाराअज्ञानछे तोहूएनेउपदेशदेइने हे
 युक्तियेकरीने एनेहूमार्गमांलावुं एधर्मपामेतो घणुसा
 रु हूतेनेमार्गमालावीशकुतो बहूजसारुथाय नहितोएव
 चारा अनाथजिव नर्कादिकचारगतिमारखडशे एवीरि
 तेविचारी तेनेउपदेशप्रमुखदेवो एमउपदेशदेतां कदा
 पिंमार्गमा नआवेतो पण एजीवउपर द्वेशकरवोनहि
 एमर्चातववुं के एवचाराअजाणछे नेसंसारबोहीलोबा
 कीजणायछे माठाकर्मनाउदये करीने धर्मपामीसकतोन

थी एमसमपरिणामराखवा एवीरीतनीचीतवणा तेनेम
 ध्यस्थजावनाकहिये ॥३॥ हवेचोथीकरुणा भावनाकहिये
 छिये करुणाकहेतांदया सर्वजीवउपरराखवी सर्वजीवआ
 षणा सरखाजाणवा पणकोइजीवनेहणवानंहि तथाकोइ
 जीवदुखीहोयतो तेनाउपरपणकरुणाकरवी तेजीवनुदुख
 टालवानीजोपोतामांसामरथीहोयतोतेनुदुखटालवु पण
 बीजाजिवनेबाधापीडानथायतो तथाधर्महीणहोयतोतेनी
 पणकरुणाकरवी जेअहोत्रावचाराधर्म पाभ्यानंहि एसं
 सारमारखडशे नेमहादुखीथशे ईत्याडिकचीतवना तेने
 करुणाजावनाकहिये एटलेएचारेभावना धर्मध्याननाघ
 रनीकहितेजाणवी.

हवेशुक्लध्यानकहियेछैये शुक्लकेहेतां निर्मलशुद्धपर
 आलबन विनाआत्मस्वरुपने ओलखीने तन्मयपणे
 ध्यावे एवुध्यान तेशुक्लध्यानकहिये शामाटेजे स्यांतद्यां
 तहोय पोतानाआत्मस्वरुपने वीशेरमे तेजशुक्लध्यानजो
 गळे केमकेसिद्धनोपणएजस्वजावछे तोसाधकनोपणस्व
 जावएजजोइये विजेस्वजावेएवस्तूमलेनहि हवेतेशुक्ल
 ध्याननाचारपायाछे तेकहियेछइये प्रथत्तववित्तर्कसप्र
 विचार ॥१॥ एकत्ववित्तर्कअप्रविचार ॥२॥ सुक्ष्मक्रियाअ
 प्रतिपाति ॥३॥ उच्छिन्नक्रियानीवृत्ति ॥४॥ एचारनेदमां
 हे प्रथमप्रथत्तववित्तर्कसप्रविचारकहियेछइये पणत्यां

प्रथमनाजे वेपायाछे, तेअप्रमतज्ञावे ध्यानथाय अनेप्रा
 छलनावेपाया केवलनेध्यावानाछे अनेएध्याननाविश्रा
 मनेविशे अनित्यादिज्ञावनानोत्यागनंथाय धर्मणारहित
 पणेतैज्ञावनाछे तेध्याननाप्राणजाणवा हवेएध्याननेवि
 शेलेस्यात्रणहोय प्रथमतेजु विजिपद्म त्रिजिशुक्कलेस्या
 एध्याननेविशेवर्ततोजिव जेदनोचजनारथायतेनुचिन्हए
 छेजेआगंमनीसर्धाकरे एध्यानथकिउतमधर्मप्रगटे एथ
 किस्वर्गनासुखनिप्राप्तीथाय मोटुपुन्यानुवधीपुन्यउपार्जे
 पणएथकिमुक्तिनथाय हवेमुक्तिवारुपशुक्कध्यान तेक
 हियेछइये त्याप्रथमसमपरिणामथयिकेपटरहितपणे जि
 वनेमुक्तपणुधारणकर्तो शुक्कध्याननेध्यावे छद्रमस्यंपणे
 आत्मामामनधरिनेरहे त्यारेरांगद्वेशनेजिते तेधणीनिमु
 क्तिथाय हवेतेपायानोविचारकहियेछइये हवेप्रथक्तंवित्त
 कसप्रविचारनामि पेहेलोपायोकहियेछइये एटलेजिवथी
 अजिवजुदोकरवास्वज्ञावथीविज्ञावजुदोकरवोप्रथक्तकेहे
 ताभिन्नजिन्नजुदावेहेचीनाखवा स्वरुपनेविशेतथाद्रव्यत
 थापर्जायनेविशेप्रथक्तप्रथक्तपणेध्यानकरवुपर्जायतेगुणने
 विशेसक्रमणकरवागुणनेपर्जायनेविशेसक्रमणकरवाएवि
 रितेस्वधर्मनेविशे धर्मातरजेदतेप्रथक्तवकहिये तेहनोजे
 वित्तर्ककेहेतां श्रुतज्ञानादिकउपयोगे एटलेत्यांनानाप्र
 कारनानयनिखेपाप्रमुखजागेकरिविचारवुएटलेएविचार

रूपश्रुतज्ञानध्यावुथयु त्यांअर्थअक्षरजोगइत्यादिकनोजे
 विचारतेनुमांहोमिहेसंक्रमणकरवु अथवाभिन्नजुदूकरवु
 अथवाछद्रव्यविनागुणपर्याय तेमांजेनिगतिकेहेतांरमण
 तथइछे ॥ एविरितेप्रथक्तप्रथक्तनोखोनोखो सप्रविचार
 केहेतांआत्मद्रव्य चिन्नकाहाडि परद्रव्यपांचअप्रविचा
 रजाणिदूरकरे तेसविकल्पएटलेपोतानोउपीयोग एटले
 एकविचारचापछिविजोविचारथायेएविरितेप्रथक्तकेहेतांजे
 निर्मलनेवित्तर्ककेहेतांजेविचार स्वपरनोजेकरवो एविरि
 तेएकाग्रतापणे जेध्यान तेप्रथक्तववित्तर्कसप्रविचारनामे
 शूकध्याननोपेहेलोपायोजाणवो हेविरितेपोतानासत्तास्व
 रूपमांध्यावेप्रजावनोन्यागकरेएपक्षसर्वेशुद्धवेहेवारनयनो
 छे ज्ञानथाकिभेदज्ञानकहिये ध्यानथाकिशूकध्याननोपेहेलो
 प्रायोकहिये एपायावालोस्वर्गगतिपामे एपायोआठमाथी
 तेअंगिअरंमागुणठाणासुधिहोय एपायावालानेत्रणेजोग
 उतकृष्टानुसाधनथाय एप्रथमप्रायोजाणवो हवेविजोपायो
 एकलवित्तर्कअप्रविचारकेहेतां ते ठेकाणेपोहोच्योथको
 जिवजेवरजे पाचेद्रव्यधर्मास्तीकायादिक तेनागुणपर्या
 यतेकांइइहांध्यानमाआवेनहि तथाअनताजिवरह्या तेनो
 पणविचारलावेनहि त्याएकपोताना आत्मानागुणपर्या
 यसहित एकलपणेध्यावे एटलेआत्मद्रव्यज्ञानादिकगुण
 पर्याय एसर्वमलिने एकआत्माथायछे माटेमाहारोआ

दस

त्सागुणपर्यायेकरिने एकरूपछे जेमासिद्धपरमात्मानुरूप
 छे तदवत्माहारुस्वरूपछे हेवुध्यानतेएकत्वपणेस्वरूप त
 न्मयपणेआत्मधर्मअनंतानोएकत्वपणेध्यानछेपणइहावित
 ककेहेतांश्रुतज्ञानावलविपणेअनेअप्रविचारकेहेताविकल्प
 रहितदर्शनज्ञाननोसमयांतरेकारणताविनारत्नत्रयीनुएक
 समयीकारणकार्यता पणेजेध्याननेविर्जउपयोगनिशक्तिछे
 तेथीएकाग्रतापणे शामाटेजेएस्थानकनेविशे त्रणेजोगशु
 द्धहोय अनेवित्तर्ककेहेता विचारतेपणथोडोहोय एटलेम
 ननुचंचलपणूथोडुहोय जेमसमुद्रपवनरहितथीरथाए ते
 ममनथीरथाय एटलेहियाविचारछे पणसूक्ष्मछे एटलेए
 ध्यानअवधीज्ञानमनपर्जवज्ञाननोउपयोगदेता एध्यानब
 निशकेनहि शामाटेकेअवधिमनपर्जवज्ञानछे तेपरानुजा
 यीछे हेनोविषयरुपिद्रव्यनेजाणवानोछेअनेआध्यानछेतेस्व
 अनुजायीछेअनेहेनोविषयअरुपिद्रव्यनेजाणवानोछेमाटे
 एवेनोउपयोगअन्योअन्यप्रतिपक्षीछे तेमाटेएध्यानतेश्रु
 तज्ञानवडेजनिपजे एध्यानथकीनिर्मलकेवलज्ञानपामे प
 णएध्यानथकिमुक्तिकोइयामेनहि शामाटेकेएपणजोगा
 टिकग्राहिकछे तेकारणमाटेएविरितेएकाग्रहपणे एध्या
 ननेविषेप्रवर्ते तेनेएकत्ववितर्कअप्रविचार नामेविजोपा
 योजाणवोनेथीरपरिणामीएध्यानछे दीपकजेमपवनरहि
 तथीरशिखारेहेतेमसकल्पविकल्पपरहितमनएध्यानमांरेहे

एध्यानपर्यायरूपछे वारंमागुणठाणानाअंत्यसुधीएध्यान
 छे हवेसुक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति त्रिजोपायोकहियेछिये एट
 लेबिजापांधानाअतेकेवलज्ञानपामि तेरमागुणठाणामांवं
 तें त्यांतोध्यानात्रीकपणुहोय तेवारपछितेरमानेअंते चउ
 दमेजतांत्रीजोपायो शुक्लध्याननोआवे एककायजोगवां
 धरथकिरुंधेलोछे तथामनजोगवचनजोग समस्तरुंधेला
 छे तथाकेटलाकआचारजकेहेछेके बाधरजरोकेलाछे एवि
 रीतेबाधरजोगरोकिने तथावच कायानासुक्ष्मजोगपण
 रोकीने अजोगीथयो त्यांअप्रतिपातिनिर्मलविरज अच
 लतारूपपरीणाम तेसुक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिध्यानजाणवुं
 इहांसत्तायेपंच्यासिप्रकृतिहती तेमध्येबोतेरप्रकृतिखपा
 वानी नेवाकिनीतेररहिएतिजोपायोजाणवो हवेचोथोउ
 छिन्नक्रियानिवृत्ति नामेकहियेछिये जेजोगकायानोसुक्ष्म
 रह्योहतोतेपणरोकयोएटलेसर्वेजोगरुंध्यानेसर्वेक्रियानोइ
 हांउछेदथइगयो अनेइहांशैलेशिकर्णकरे एटलेशैलकेहे
 ताजेवोपर्वत जेमकोइपवनथकीकपेनहि तेमअजोगीमु
 नीश्वर शैलेशिकर्णपोचाथका निष्कंपपणेरहे तेरप्रकृति
 जे रहिहूती तेनोपणत्यांक्षयकरिने अकर्माथाय सर्वक्रि
 यारहितथइने स्वस्वरूपप्रगटकरे एध्याननुनामसमुच्छिन्न
 क्रिया शुक्लध्यानविजुपणानामछे हवेएध्याननोचोथोपायो
 ध्यातांथकां शरीरअवगाहनाआवखुसर्वथकी अलगोथइ

नेमोक्षमाजाय एटले एशुक्लध्याननोचोयोपायो कह्यो हवे ए
 शुक्लध्यानना च्यारपायानुफल कहिये छिये ते प्रथमनाजे
 वेपायाछे ते ध्यावावालो देवलोक जायने उपरन विपायामां
 पेहेलोजे पायो छे ते मारण छे नहि अने चोथा पायावालो मो
 क्षे जाय ने त्रिजाने मरण छे नहि पण चोथे पाये थइने सिद्धी वरे
 एकइ पाछापडवाना छे नहि माटे एबने पाया अवश्य मोक्ष ग
 तिज छे हवे एशुक्लध्यानवालो जथार्थ पदार्थ देखे आश्रवनो
 नाश देखे ने संसार स्वरूप एनवनी परंपरानुकारण देखे अ
 न्यपदार्थ सर्व आत्साथ किविपरितपणे जाणे एशुक्लध्यानना
 विसामामां ए विरीते जाणे देखे तथा शुक्लध्यानना त्रणे पाया
 माधर्म उत कृष्टिशुक्ललेस्या जाणवि ने चोथो प्रायोजे छे ते तो
 ले स्याये करीने रहित कह्यो छे एटले तैने वीशे ले स्या होय नहि
 ने शुक्लध्यानवालाना जोगपण सर्वेशुद्ध होय हवे एशुक्लध्यान
 नु लक्षण कहिये छिये अहि सक होय मोहरहित होय विवेकि
 होय त्याग बुद्धि होय बली अवध थयो ते माटे उपसर्ग परीस
 हथी रूपे नहि नीरज्यपणे वर्ते सुक्ष्म अर्थने विशेषण मुझाय
 नही नीशकपण रहे मोहमाया नालक्षण थकि तथा सर्वस
 जोग थकि जुदोरहे एसर्व विवेकनां लक्षण जाणवां देह तथा
 उपगर्णनित्याग बुद्धिये असग अनुष्ठाने वर्ते एटले उपसर्ग
 अनुष्ठानरूप लक्षण करी वर्ते हे वीरीते जे मुनी ए लक्षण ध्या
 नादीकने वीशे प्रवर्ते ते ज्ञानी पणुपामे एरीते ध्याननोजे अ

नुक्रमनेशुर्धरेतिजाणीने एजपरमात्मानिआज्ञाछे हेवीरितिते
 आज्ञानोअभ्यासकरेशे तेसंपूर्णअध्यात्मज्ञानीथशे ह
 वेएध्याननो महिमाकहियेछिये केज्यांएवुपरिपकउत्क
 ष्ट ध्यानपामेथके ईंद्रचंद्रनागिंद्रनीपदवी तेमुनिश्वर त
 रखलावरोवरगणेछे शामाटेकेआत्माने प्रकाशसुखेसुखे
 करे एवुज्ञानप्रगटे नेवलिभवनोनाशकरेएवुतेमाटे एज
 ध्यानतेशेवो अनेजेकामातुरिहोय तेपणकामदशानेछो
 डेशामाटेकेजडस्वप्नावजाणिने विषयसुखनोत्यागकरेप
 णरागदशा छांडवितोघणीदूकरछे अनेजेध्यानवंतमुनि
 श्वरछे तेतोपरमात्मारुपजसाक्षातदसेंछे तेध्यानमांतृप्ति
 पामिने फरीनेतेरागाडिकनवछे अनेविजाजेजिवोरह्या
 तेनेरात्रीसर्व निंद्रामांजायछे अनेध्यानदशावालानेरा
 त्रितो ओछवमोछवएसर्वे सरखाआनंदमांजजायछे अ
 नेजेससारिजीवविषयमालव्यथका जेवेलाएजागेछे तेवेला
 ध्यानिपुर्षानेसयनकरवानुछे जेमअवडकुवानुपाणि जेमडो
 होलायेलुवगडेलुहोय तेमध्यानविनानुमनएवुजाणवू अ
 नेजेसर्वथकिसिद्धफलनीइच्छाराखेतो, त्यांतोध्यानरुपी
 याघटमा मनरुपीउजलभरे तोतेनिर्मलथाय जेमहवड
 कूवानुजल घटमांभर्युनिर्मलथाय तदवतूजाणवू सर्वक्री
 यानुफलतेध्यानथीजछे, अनेध्यानतेपरमअर्थनूकारणछे
 कदापि कोइनमनवीपयकखायनेविशेपरवर्ततुहोय तोय

पणध्यानवत चेतननेकर्मव्यायनहि वलिअतिशेअनिष्ट
 विषयपणूहोय नेघणेप्रकारेतेउदयनाकष्टमांपडयोथकोपण
 निश्चलपणुनछडे तेआत्मानेविशेलीनकहिये हवेप्रगटदी
 ठु मोक्षसुखरुपजेसूरज एवुएध्यानएटले मोक्षसुखथकिप
 णध्यानमोटुछे वलिजेशास्त्रनाविचारथकिजे नास्तिकजा
 वअतिशेहण्योनयि एटलेनास्तिकभावरहितज्ञानमोटुछे
 ज्यांस्वर्गनुतेजचंद्रमाग्रहनक्षत्र तारतेमनातेजनेविशोद्विप
 कनुतेजअल्पछे तेमध्यानेकरिनेभेदाणोछे जेनोअज्ञानरुपि
 योअधकार तेप्राणिनेमाहाआनदरुप आत्मानुतेजतेपण
 आत्मामाहेशोभीरह्युछे वलिप्राणिनेघणाकालनो जेसम
 तारतीरुपणीस्त्रीसाथे विजोगहतो ते एकक्षणेकमांही
 स्त्रीनोविजोगभाग्यो नेसजोगथयो एवोध्यानरुपियोपर
 ममित्र अमारंपरमहेतुछे नेअमनेपरमवाहालोछे एम
 ध्यानिपुरुपकेहेछे अनेससारमाकृत्रिममीत्रथकिशुथायह
 वेध्याननुघरवखाणीयेछैए एटलेध्यानरुपीयुघरकेबुछे के
 ज्याकामरुपियो तापतोछेजनहि नेशीयलरुपशितलंसु
 गंधेजरेलि एवितोवेठकोछे ज्यावलिमोटीसमतारुपणि
 यो तलाइयोकेहेतागादीतकिया ज्यांतेवेठोछे एटले
 ध्यानमंदीरमां आत्माएविरीतेवेठोथको सुखपामेछे वलि
 शीयलरुपसिहासन ज्याइद्रिटमनरुपजलभरेलांछे स
 मतारुपीयापोलीयाखडाछे ध्यानघरमांहेपोतानी स्मृ

तीनामास्त्रीयेतेड्योथकी आत्मापरुणापेरेपुजातोथको ए
 बुध्यानकहिये एटलेआत्मानेविशे अनेपरमात्मानेविशे
 जेअंतरहंतोतेअंतरजाग्योअनेएस्थानकनेविशेपंडीतलो
 कोनाविवाद झघडाघणाहता तेध्यानरुपियासंधीपाले
 सर्वनाविवादझघडातोडीनाखिनेसिघ्रपणे परमात्माने ने
 आत्मानेअचेदपणेकरिदिधा हवेअमृतरस देखाडियेछ
 इये एटलेअजाणलोकअमृतरस घणेकठेकाणेमानेछे ने
 ज्ञानीलोकतोएकध्याननेविशेजमानेछे तेकहियेछैये .

॥उक्तच श्लोकः॥ कामृतंविपन्नृतेफणिलोके॥कक्षयिष्य
 पिविधौत्रिदिवेवा॥क्वाप्सरोरतीमतांत्रिदशानां॥ध्यानमेवत
 दिदंबुधसेव्यं॥१॥ गौस्तनेपुनसिक्तासुसुधायां॥नापिना
 पिवानिताधरविवे॥ तेरसंकंचुकमपिवेत्ति॥मनस्याध्यानसं
 नवध्रतोप्रथनेय. ॥ २ ॥

॥अर्थः॥ हवेजेनागलोकछे त्यांअमृतक्यांथकिहोय ए
 तोवचाराविषमारंगाइगयेलाछे अथवाकोइकहेशेचंद्रमा
 मांअमृतछे तोतेपणवातजासनथतिनथी शामाटेकेदिनदि
 नप्रतोक्षिणथतोजायछे तोअमृतरसज्यांहोय त्यांक्षिणप
 णुकेमलाघे कदापिकोइकेहेशेके देवलोकनेविशेअमृतछे
 तेपणकांइसंभवतुनथी शामाटेकेदेवलोकनादेवपण अप
 छरायोना रंगमारंगाएलाछे माटेत्यांपणअमृतरसनथि
 माटेएकध्यानमांजअमृतरसछे तेकारणमाटेहेपंडीतो ए

ध्याननुजशेवनकरो एपेहेलाश्लोकनोअर्थ हवेविजाश्लोक
 नोअर्थकहियेछइये हवेअहियाकेटलाकजिव गायनास्त
 नकेहेता दुधमाअमृतमानेछे केटलाएकसाकरमांमानेछे
 तेमातोरसछेजनहि केटलाकस्त्रीनाअधरनेविशे अमृतर
 समानेछे पणतेरसतोकोइस्थानकेछेजनहि एअमृतरसछे
 एतोअपुर्वछे तेकोइपंडीतपुरुपजाणे अनेएरसतोध्या
 नथकिजप्रगटथाय एविजाथकिनहोय एवोजेअमृतर
 सतेनोस्वाद ध्यानिपुरुपचाखे तेसतोपनुसुख तेनेजछे
 एटलेएविजाश्लोकनोअर्थकह्यो एविरितेजेनुप्रवर्तनहोय
 अनेजेएशुक्लध्यानध्यावे तेधणीमुक्तिनांसुखपामे एटलेए
 शुक्लध्यानकह्यु तथाएच्यारध्यानकह्या एच्यारध्यानमध्ये
 थी प्रथमजेवेध्यानआर्तध्यान तथारुद्रध्यानछे तेअवश्य
 छांडवाजोगछे अनेधर्मध्यानजेछे तेआदरवाजोगछे पण
 एथकी मुक्तिपरावर्तनथी पणस्वर्गनासुखमले अनेशु
 क्लध्यानछे तेमध्येवेपायाछे तेतोस्वर्गनासुखनादातारछे
 तेकोइकजिवआश्रीनेछे पणघणाजिवनेतोएमुक्तिनुजकां
 रणछेशामाटेजेपेहेलोपायोआठमाथी तेदसमागुणठाणा
 सुधीछे एटलेएत्रणगुणठाणानेविशे तोकइंमरणछेनहिं इ
 हांजेस्वर्गादिकगतिकेहेविते उपरनागुणठाणाने अथवा
 निचलागुणठाणाने आश्रीनेकेहेवानुछे शामाटेकेजे मृत्यु
 पामवुहोयतोपाछापडे नेछठेसातमेआविने मृत्युपामे

अथवाचडेतो अगिआमैंगुणठाणेजइनेमरे तोसवरिथासि
 द्वेजायअथवाअगिआरमेनजजायनेपाधरोवारमेजायतो
 केवलज्ञानउपारजी अंतघडकेवलिथइ चडदमानेअंतेका
 लकरिमोक्षजाय पणशुद्धध्याननापेहेलापायामांतो कइं
 जिवकालधर्मपामेनाहि इहांकोइकेहेशेके जोकालगतिन
 थिपामतातो स्वर्गगतिकेहेवानीशीजरुरछे तेनोउत्तरकेए
 ध्यानेवतेछेजेआत्मा तेनोउपयोगसर्वकर्मनाशकरवाजेवो
 नथीएटलेजेटलिएनाउपयोगनिरमणतानोसुमारजोइने
 स्वर्गगतिकहियेछिये पणइहांमरणपामेनाहिज हवेविजा
 पायानेजेस्वर्गगतिकहि तेनोविचारकहूछु जेएपणकोइ
 कजिवआश्रीछे पणकाइसर्वजिवआश्रीनथी शामाटेजेउ
 पसमश्रेणीजेजिवआदरेतेजिवअगिआमैंगुणठाणेआव्यो
 थको मर्णपामेतोसर्वारथमिद्वेजाय नेपाछोपढेतोदशमेगु
 णठाणेजाय तेनितोकइगतिकेहेवानिजरुरछेनहिशामाटे
 जेएमकरतांफरिथीचडेतोमोक्षपणजाय अथवाछठेसातमे
 गुणठाणेजतारेहेतो स्वर्गपणजाय तेथीपणघणोनिचोउ
 तरिजायतो नर्कादीकगतिनेविशेपणजाय माटेपडतानो
 तोकइंनियमछेनाहिहवेजेजिवउपसमश्रेणिएनचडेनेक्षपक
 श्रेणीएचडे तेजिवदशमागुणठाणानेअंते मोहनिकर्मनो
 क्षयकरे इहांसुधीपेहेलोपायोजाणवो हवेत्यांथकिदशमा
 नोउठथो बारमेगुणठाणेजाय पणतेअगिआरमेसर्वध्यान

जजाय त्यातोउपसमश्रेणीवालोहोयतेजजाय हवेजेबा
 रमेगुणठाणेगएलोजिव क्षपकश्रेणिवालोत्याशुक्लध्यान
 नो विजोपायोध्याय तेएपायानाध्याननेविशेवर्तेतेथके त्र
 एकर्मनोनाशकरे ज्ञानावरणी ॥१॥ दर्शनावरणी ॥२॥
 अतराय ॥३॥ अनेएकमोहनिकर्मनोनाशप्रथम दशमेगु
 णठाणेकरेलोहतो एटलेएचारेकर्मनोक्षयथयो तेकमनेघा
 तीकर्मकहिये एटलेघातीकेहेता आत्मानागुणनिघातकर
 ताछे तेकहियेछिये ज्ञानावरणिकर्मछे तेज्ञानगुणनेहणेछे
 दर्शनावरणिकर्मछेते दर्शनगुणनेहणेछे मोहनिकर्मछेते
 चारीत्रधर्मतथासमकीतधर्म बनेनोनाशकर्ताछे तथाविरं
 जगुणअतरायकर्मदाव्योछे एटलेएच्यारेकर्मआत्माना
 जेच्यारेगुणमोटाछे तेएहणताछे माटेएनेघातिकर्मक
 हिये नेवाकीनाजेच्यारेतेआत्मानागुणनेहणतान
 थी तेतोशुचाशुचनकाराछे माटेएवाजेच्यार
 क्लृप्तिकर्म एविजानचाउ विहणाय तेधणीकेवल
 तेकोइकाजे पणइ तेनेक्षपक र्तेते

अथवाचडेतो अगिआर्मेगुणठाणेजइनेमरे तोसवरिथासि
 द्वेजायअथवाअगिआरमेनजजायनेपाधरोवारमेजायतो
 केवलज्ञानउपारजी अतघडकेवलियइ चडदमानेअतेका
 लकरिमोक्षेजाय पणशुद्धध्याननापेहेलापायामांतो कइं
 जिवकालधर्मपामेनहि इहांकोइकेहेशेके जोकालगतिन
 थिपामतातो स्वर्गगतिकेहेवानीशीजरुरछे तेनोउत्तरकेए
 ध्यानेवर्तेछेजेआत्मा तेनोउपयोगसर्वकर्मनाशकरवाजेवो
 नथीएटलेजेटलिएनाउपयोगनिरमणतानोसुमारजोइने
 स्वर्गगतिकहियेछिये पणइहांमरणपामेनहिज हवेविजा
 पायानेजेस्वर्गगतिकहि तेनोविचारकहूछु जेएपणकोइ
 कजिवआश्रीछे पणकांइसर्वजिवआश्रीनथी शामाटेजेउ
 पसमश्रेणीजेजिवआंदरेतेजिवअगिआर्मेगुणठाणेआव्यो
 थको मरणपामेतोसर्वारथमिद्वेजाय नेपाछोपढेतोदशमेगु
 णठाणेजाय तेनितोकइगतिकेहेवानिजरुरछेनहिशामाटे
 जेएमकरतांफरिथीचडेतोमोक्षपणजाय अथवाछठेसातुपे
 गुणठाणेजतारेहेतो स्वर्गपणजाय तेथीपणघणोविमांथी
 तरिजायतो नर्कादीकगतिनेविशेपणजाय मुक्तिथइचुकी
 तोकइंनियमछेनहिहवेजेजिवउपसमश्रेणीमोक्षेजाय
 श्रेणीएचडे तेजिवदशमागुणठाणानेअत्मान ध्यानजेद
 क्षयकरे इहांसुधीपेहेलोपायोजाणवो पाया
 नोउठयो वारमेगुणठाणेजाय

ध्याननुजशेवनकरो एपेहेलाश्लोकनोअर्थ हवेविजाश्लोक
 नोअर्थकहियेछइये हवेअहियाकेटलाकजिव गायनास्त
 नकेहेता दुधमाअमृतमानेछे केटलाएकसाकरमांमानेछे
 तेमांतोरसछेजनहि केटलाकस्त्रीनाअधरनेविशे अमृतर
 समानेछे पणतेरसतोकोइस्थानकेछेजनहि एअमृतरसछे
 एतोअपूर्वछे तेकोइपडीतपुरुपजाणे अनेएरसतोध्यां
 नयकिजप्रगटथाय एविजाथकिनहोय एवोजेअमृतर
 सतेनोस्वाद ध्यानिपुरुपचाखे तेसतोपनुसुख तेनेजछे
 एटलेएविजाश्लोकनोअर्थकह्यो एविरितेजेनुप्रवर्तनहोय
 अनेजेएशुक्लध्यानध्यावे तेधणीमुक्तिनांसुखपामे एटलेए
 शुक्लध्यानकह्यु तथाएच्यारध्यानकह्यां एच्यारध्यानमध्ये
 थी प्रथमजेवेध्यानआर्तध्यान तथारुद्रध्यानछे तेअवश्य
 छाडवाजोगछे अनेधर्मध्यानजेछे तेआदरवाजोंगछे पण
 एथकी मुक्तिपरावर्तनथी पणस्वर्गनासुखमले अनेशु
 क्लध्यानछे तेमध्येवेपायाछे तेतोस्वर्गनासुखनादातारछे
 तेकोइकजिवआश्रीनेछे पणघणाजिवनेतोएमुक्तिनुजकां
 रणछेशामाटेजेपेहेलोपायोआठमाथी तेदसमागुणठाणा
 सुधीछे एटलेएत्रणगुणठाणानेविशे तोकइंमरणछेनहि इ
 हांजेस्वर्गादिकगतिकेहेविते उपरनागुणठाणाने अथवा
 निचलागुणठाणाने आश्रीनेकेहेवानुछे शामाटेकेजे मृत्यु
 पामबुहोयतोपाछापडे नेछठेसातमेआविने मृत्युपामे

अथवाचडेतो अगिआमिंगुणठाणेजइनेमरे तोसवरिथासि
 द्वेजायअथवाअगिआरमेनजजायनेपाधरोवारमेजायतो
 केवलज्ञानउपारजी अंतघडकेवलिथइ चडदमानेअतेका
 लकरिमोक्षेजाय पणशुद्धध्याननापेहेलापायामांतो कइं
 जिवकालधर्मपामेनाहि इहांकोइकेहेशेके जोकालगतिन
 थिपामतातो स्वर्गगतिकेहेवानीशीजरुरछे तेनोउत्तरकेए
 ध्यानेवतेछेजेआत्मा तेनोउपयोगसर्वकर्मनाशकरवाजेवो
 नथीएटलेजेटलिएनाउपयोगनिरमणतानोसुमारजोइने
 स्वर्गगतिकहिचेछिये पणइहांमरणपामेनाहिज हवेविजा
 पायानेजेस्वर्गगतिकहि तेनोविचारकहूछु जेएपणकोइ
 कजिवआश्रीछे पणकांइसर्वजिवआश्रीनथी शामाटेजेउ
 पसमश्रेणीजेजीवआदरेतेजिवअगिआमिंगुणठाणेआव्यो
 थको मरणपामेतोसर्वारथमिद्वेजाय नेपाछोपढेतोदशमेगु
 णठाणेजाय तेनितोकइगतिकेहेवानिजरुरछेनहिशामाटे
 जेएमकरताफरिथीचडेतोमोक्षपणजाय अथवाछठेसात
 गुणठाणेजतारेहेतो स्वर्गपणजाय तेथीपणधरणेविमांथी
 तरिजायतो नर्कादीकगतिनेविशेपणजाय क्तिथइचुकी
 तोकइनियमछेनहिहवेजेजिवउपसमश्रेणीमोक्षेजाय
 श्रेणीएचडे तेजिवदशमागुणठाणानेअंतेमान ध्यानजेद
 क्षयकरे इहांसुधीपेहेलोप्रायोजाणवो अंधध्यानए पाया
 नोउठयो वारमेगुणठाणेजाय पणदेनाख्याएसोय॥२॥

ध्याननुजंशेवनकरो एपेहेलाश्लोकनोअर्थ हवेविजाश्लोक
 नोअर्थकहियेछइये हवेअहियाकिटलाकजिव गायनास्त
 नकेहेतां दुधमाअमृतमानेछे केटलाएकसाकरंमांमानेछे
 तेमांतोरसछेजनहि केटलाकस्त्रीनाअधरनेविशे अमृतर
 समानेछे पणतेरसतोकोइस्थानकेछेजनहि एअमृतरसछे
 एतोअपूर्वछे तेकोइपडीतपुरुपजाणे अनेएरसतोध्या
 नथकिजप्रगटथाय एविजाथकिनहोय एवोजेअमृतर
 सतेनोस्वाद ध्यानिपुरुपचाखे तेसतोपनुसुख तेनेजछे
 एटलेएविजाश्लोकनोअर्थकह्यो एविरितेजेनुप्रवर्तनहोय
 अनेजेएशुक्लध्यानध्यावे तेधणीमुक्तिनांसुखपामे एटलेए
 शुक्लध्यानकह्यु तथाएच्यारध्यानकह्या एच्यारध्यानमध्ये
 थी प्रथमजेवेध्यानआर्तध्यान तथारुद्रध्यानछे तेअवश्य
 छाडवाजोगछे अनेधर्मध्यानजेछे तेआदरवाजोगछे पण
 एथकी मुक्तिपरावर्तनथी पणस्वर्गनासुखमले अनेशु
 क्लध्यानछे तेमध्येवेपायाछे तेतोस्वर्गनासुखनादातारछे
 तेकोइकजिवआश्रीनेछे पणधणाजिवनेतोएमुक्तिनुजका
 रणछेशामाटेजेपेहेलोपायोआठमाथी तेदसमागुणठाणा
 सुधीछे एटलेएत्रणगुणठाणानेविशे तोकइंमरणछेनहिं इ
 हांजेस्वर्गादिकगतिकेहेविते उपरनागुणठाणाने अथवा
 निचलागुणठाणाने आश्रीनेकेहेवानुछे शामाटेकेजे मृत्यु
 पामवुहोयतोपाछापडे नेछठेसातमेआविने मृत्युपामे

ग्रंथपुरणथयो पुरणआत्मीकसुख मुनिहूकमकहेएहध्याव
 शे तेनेनहिभवदुख॥१७॥ भवदुखसेहेजेमटे ध्यानरसेसु
 खकार किरियाकष्टनजोइए एफोगटआलपंपाल॥१८॥
 खटपटसविदूरेकरो थीरकरोनिजचीत आत्मगुणप्रगट
 होशे प्रगटेबोहोलुवित॥१९॥ एग्रंथजेवांचेभणे तैथायसं
 तरूप रागद्वेषतेहनाटले होयआत्मस्वरूप ॥२०॥ मुनिहू
 कमकहेआत्मीक जेहनेप्रगटीचाल शिववहूनांसुखभोग
 वे होवेमंगलमाला॥२१॥

॥इति श्रीध्यानविलासग्रंथा॥
 ॥ मुनी श्रीहूकममुनिकृतसमाप्त ॥

धर्मध्यानच्यारभेदथी ज्ञास्योतासविचार पदस्थपिंडस्थए
 मजाणिये रुपस्थकह्योनिर्धार॥३॥ भावनाच्यारकहितेह
 नी ज्ञास्वीग्रथमोझार लक्षणादिस्वरुपते ज्ञानिमनसुख
 सार॥४॥ शुद्धध्यानतेमज्ञास्वीयु पायाच्यारसमेत तेमरुपा
 वितज्ञास्वीयु एमुक्तिनुखेत॥५॥ इत्यादिकबहूवारता ज्ञा
 स्वीग्रंथमोझार वांचीआणदपामशे पडितजननिरधार
 ॥६॥ एहग्रथजणताथकां टुटेकर्मनीजाल पांमेसुखतेसा
 स्वतां मुक्तितणांतल्काल ॥७॥ एहग्रथरुदयेधरि ध्यानं
 करेवलिजेह तेजवअटविनवभमे पांमेशिववधुगेह ॥८॥
 ध्रुपेरेअविचलरहो एहग्रंथसुखकार अर्कतेजेमेविस्तरे
 नेमविस्तरोउदार॥९॥ पंडीतनेमुखमुखवसे आत्मअर्थिते
 मजोय एग्रथसमअवरजो नविदिसेपणकोय॥१०॥ मुक्ति
 दायकएग्रथछे एहिजमुक्तिस्वरुप समजेज्ञानीहोयते
 भास्युआत्मस्वरुप ॥ ११ ॥ एग्रथरुपछेब्रक्षजलो पत्रस
 मतारुप कुशमतेहनांजाणिये नरसरगस्वरुप॥१२॥ फलए
 नुअविचलछे सुखपणअविचलएह थितिपणअविचलंज
 लि शिववधुनेगेह॥१३॥ जिनवरमुनितणो हूकमजेमाथे
 चढाय पांमेसुखतेसास्वतां वेगेपोचेधाय॥१४॥ ओगणी
 सतसवछरे उपरवाविसजाण वैशाखशुदिपचमिदिन वा
 रगुरुप्रमाण ॥१५॥ आमोदगामेएरच्यो निजआनंदप्र
 माण संघतणेआनदघणो ध्यानरसेगुणखाणा॥१६॥ ए

ग्रंथपुरणथयो पुरणआत्मीकसुख मुनिहूकमकहेएहध्याव
 शे तेनेनहिभवदुख॥१७॥ भवदुखसेहेजेमटे ध्यानरसेसु
 खकार किरियाकष्टनजोइए एफोगटआलपंपाल॥१८॥
 खटपटसविदूरेकरो थीरकरोनिजचीत आत्मगुणप्रगट
 होशे प्रगटेवोहोलुवित॥१९॥ एग्रंथजेवांचेभणे तेथायसं
 तरूप रागद्वेषतेहनाटले होयआत्मस्वरूप ॥२०॥ मुनिहू
 कमकहेआत्मीक जेहनेप्रगटीचाल शिववहूनांसुखभोग
 वे होवेमंगलमाला॥२१॥

॥इतिश्रीध्यानविलासग्रंथ॥
 ॥मुनीश्रीहूकममुनिकृतसमाप्त ॥

श्रीअध्यात्मछनुवि.

श्रीगुरुभ्योनम.

॥ दुहा ॥ प्रणमिभगवतिभारति जेछेजगतआधार तेह
 तणिकृपाथकी कहूआत्मविचार ॥१॥ ज्ञानविनाव्यवहा
 रजे तेतोवालकचार बालधुलिलिलासमो नारख्योएआ
 चार ॥ २ ॥ अध्यात्मगुणजिहांकने भावचारित्रजाण
 दर्शनज्ञानपणछेसहि एवुग्रथेविनाण ॥ ३ ॥ मिथ्यादृ
 ष्टिजीवडा करेवाहाजव्यवहार अतरभावजेदेनहि केमल
 हेचवपार ॥४॥ जेमभाजनएकवासियुं हिंगलखणकेसंग
 सुगंधतेग्रहेनहि उलटोग्रहेकुरंग ॥५॥ मिथ्यादृष्टिदालेन
 हि करेसमकितकिवात पुर्वदोपदालेनहि केमहोयतेसु
 जात ॥६॥ बाह्यद्रष्टिछंड्याविना अंतरद्रष्टिनहोय परमा
 त्मपदक्युंमले हृदयविचारिजोय ॥७॥ तेमाटेभविजीवडा
 छंमोवांहेरद्रष्ट परमात्मगतिचाहिये तोकरोअतरद्रष्टा ॥८॥
 अतरद्रष्टिगुणविना कोईनहोवेशुद्ध बाह्यद्रष्टियेखेलता र
 हे नवभ्रमणनिबुद्ध ॥९॥ बाह्यअव्रतनात्यागसें निर्मलहुवो
 नकोय अन्नविपणतेहिजकरे दिलशुविचारिजोय ॥१०॥
 अहिजेमकंचुकतजे पणनिरविषनविथाय तेमज्ञानविना

जिवडा चारगतिकहेवाय॥११॥ एमसुणिकोइवोलशे ल
 हिअध्यात्मलेश कहेआत्मअवधछे शानेकरोउदेश॥१२॥
 एपणजापाअसत्यछे चालेअज्ञानचाल अवधकहिअव्रत
 मा काढेप्रमादेकाल॥१३॥ अध्यात्मपोकारता तजेनहिप
 रजाव तेतोबंधमापमे फेरनहिलवलावा॥१४॥ अथवाआ
 त्मआत्मंकरे छमेनअशुद्धआचार कहोनिर्जरांतकेमहोवे
 तेतोथिरसंसार॥१५॥ त्रणशुद्धिकहिशास्त्रमां विषय १ आ
 त्म २ तत्व ३ दोमंतोधर्मछेनहि एवुसमजोसत्व ॥१६॥
 तत्वएकशुद्धिथी पामेपदनिरवाण सद्गुरुसिखतोएमदि
 ये समजोचतुरसुजाण ॥१७॥ विषयशुद्धिकरवाथकि
 कारजकबहुनाहोय भवभ्रमणएथिवधे बोहोलसंसारिते
 नोय॥१८॥ मोक्षमार्गजातांथकां आडोहोवेपाहाडखस्व/व्यो
 खसेनहि जेहनोउडोगाहाड॥१९॥ आत्मशुद्धिविजीकहू ते
 सुणजोअधीकार समजोनेदूरकिजिये ज्ञानिवचनअनुसा
 र॥२०॥ आत्मआत्मजेकरे करेनज्ञानविचार संसारमां
 लग्योरहे एमुरखआचार ॥२१॥ शत्रुमित्रमनचितवे करे
 तेहशुविरुध रागद्वेषवजगीरह्यो एमाजेहनिछेमदबुधा॥
 २२॥ पुत्रकलत्रप्रेममां लुब्धाणाअहनिश कोइशिखाम
 एदेजलि तोकरेखोटीरीसा॥२३॥ लुब्धोपरीग्रहभावमाइ
 त्यादिकबहुजेद एहनिसाधकरतोरहे मटयोमनकोखेद
 ॥२४॥ साधुभयोतोक्याहूठ आव्योनहिसंजाव समतावि

नासुखनविलहे फोगटकपटकहावा॥२५॥लोचकरोभोमिसु
वो अमवाणेपगचाल निस्पृहपणेचालतो सुजतोआहार
निहाल ॥२६॥ इत्यादिकवहूकष्टकरे जाणेशिष्योकाज
मुखमनसमजेनहि उलटीखोईलाज ॥२७॥ सदगुरु
शिखसुणेनहि चलवेनाकममाल किरियाकष्टसंजगठगे
मानपुजाव्यवहार॥२८॥ व्यवहारकिरीयाजेकहि दोय
गुणस्थानेधार तेतोपरमादजावमा तेप्रथमविचार॥२९॥
अप्रमतभावजीहांकने तेतोज्ञानिकोहोय तेमाटेकारज
सिद्धि आत्मआत्मकरेनाहोय ॥३०॥ विजीशुद्धिऐवेमहि
संसारवधावणहार तेमाटेछडोएहने ज्ञानिवचनअनुसार
॥३१॥त्रिजिशुद्धिहवेजाखशुं जेछेमुक्तिदातार जावथरीने
सांजले जेथिभवतोपार ॥३२॥ रत्नत्रयीआराधवा करो
सद्गुरुशेव तेविनाएनविमले टालिदुरपुर्वटेव ॥३३॥
ज्ञानदर्शनचारित्रते रत्नत्रयीकहेवाय तेसाधनकरवाच
णिं प्रथममनवशलाय॥३४॥मनवशकरयाविना कारजसि
द्धिनाहोय वचनकायजोगतें भिन्नपदार्थहोय ॥३५॥वचन
जोगमुखथीकहे मनमाओरविचार एतोकपटाईठरी-दंभ
प्रकृतिवार॥३६॥दत्तसहितजेजेकरे तपजपकीरीआअने
कतेहनेनिष्फलकहि सिद्धांतमांहेटेका३७॥कायाथकीक्रीया
करे वंदननमनविवेक तपजपकरेबहूविधथी मनवशनहि
नेका३८॥मनवशकरयाविना कर्मनछूटेकोई उलटोकर्मबंध

होय प्रसनचद्ररखिजोय ॥३९॥ तेकारणमनवशकरी सु
 णोज्ञानविचार ईद्रिपणवशतेहनि भाखुछउनिरधारा॥
 ४०॥ ज्ञानशुद्धीप्रथमकरो जेहथीदर्शनहोय चरणआख्यु
 तेहने ज्ञानिवचनतेसोय॥४१॥ ज्ञानकह्युंत्रणजेदसे बाल
 अनुभवजोय मगनजावत्रिजुकह्यु समजीलंजोसोया॥४२॥
 बालज्ञानमिथ्यामति जेशास्त्रअन्यहोय अथवात्रणअनुजो
 गएम सदेहमाकरशोकोय ॥ ४३ ॥ आत्मविनाजेजेकथा
 वखाणचरचाविचार तेसविबालज्ञानछे मिथ्यामतिआघा
 र ॥४४॥ अनुभवआत्मस्वरूपनो करताविघटेकर्म भवभ्र
 मएतेथिमटे टलेआनादिनो जर्म॥४५॥ स्वस्वजावमांतेरमे
 तजेअनादिनिचाल पुद्गलजावइच्छेनहि जाणिएदुरअवा
 ल॥४६॥ परभावपुद्गललगे बलग्योमिथ्यासग तेथिआत
 मजुजुवो करेज्ञानशुरग ॥४७॥ पूरवकर्मबंधनो सतोपग्र
 ह्योहोय छतिप्रजायप्रगटहोय उदैभावकुजोय॥४८॥ उदे
 कर्मजेआविया जोगवेतेनिशक नवुकर्मबाधेनाहि तेमान
 विहोवेरग॥४९॥ निजस्वजावमांसदारहे तजिरागनेद्वेश
 पूर्वकर्मनेखरेवे एसिद्धातनोरेश ॥५०॥ जाणिएपुद्गलदशा
 मलेनिखरेएह जीवअनंतानिएहछे केमकरीग्रहियेतेह॥५१॥
 आत्मस्वरूपअगाधछे अलखस्वरूपिकेहेवाय ज्ञानिविण
 जाणोनहि एमविचारमनथाय ॥५२॥ भेदज्ञानथिभाविये
 जडधेतनदोफार लक्षणगुणथीजाणिये जिनभिन्नविचार

॥५३॥ आत्मभावन्यारोकरि देखोपुद्गलभाव कालअना
दिनोलग्यो शत्रुरुपस्वभाव॥५४॥तेहिजपुद्गलजातनि व
र्गणादिशेआठ वलगीआत्मस्वरुपने तेथिशक्तिनाठ ॥
५५ ॥ तेमांहिआठमिजाणिए कर्मणवर्गणाजेह चेत
नवगथयोतेहने कर्मकहिजेएह ॥ ५६ ॥ तेमांहिराजा
एकछे मोहनिकर्मसरदार मोहरुपएभर्ममां जोलं
व्योसविससार ॥ ५७ ॥ कइकशुचकइकअशुच एम
करतागयोएकाल पणधर्मपाम्योनहि मिथ्यामोहकि
चाल ॥५८॥ शुभाशुचपुद्गलदशा वेदनिकर्मविचार आ
त्मघातिएकह्या निश्चेतेनिरधार ॥ ५९ ॥ शुभाशुचक
र्मगती निगमव्यवहारचाल तेकारणदूरेकरी निजस्वभा
वनिहाल ॥६०॥ एमपुद्गलदशात्यागसे प्रगटेआत्मरुप
जेदज्ञानविचारीए शुद्धव्यवहारस्वरुप॥६१॥शुध्यात्मअ
नुभवदशा सेहेजस्वभावनिहाल वितरागताप्रगटे एअ
नुभवकिचाल ॥६२॥च्यारनयकुछडके त्रणनयकुग्रहे तो
सिद्धताहोवेतुरत एवभूतेकेहे ॥ ६३ ॥ पक्षप्रमाणादिक
ग्रहि स्यादवादसंयुक्त अनुभवआत्मकोकरो एहिआग
मयुक्त॥६४॥गुणपरजायसंजुक्तते द्रव्यतणोविचार गु
णपरजायसंक्रमणथि चिन्नचिन्नमतिधार॥६५॥ भिन्नअ
चिन्नविचारता गुणठाणुदशमुधार शुद्धध्याननोतेकह्यो
प्रथमपायोउदार ॥ ६६ ॥ एहिजेदज्ञानछे एहिशुधव्यव

हार एहिअनुभवकिजीये अध्यात्मसुखकार ॥ ६७ ॥ ए
 ध्यातांमिथ्याटले टलेसवअज्ञान व्यवहारपणसविट
 ल्यो एभाख्युअनुभवज्ञान ॥ ६८ ॥ एहअनुभवकिजीये
 आत्मकरोअनुप लोहफीटीकचनहोवे ज्युरसवेधकस्वरु
 प ॥ ६९ ॥ तेकारणविजावने तजीकरजोध्यान निजस्वरुपप्र
 गटहोशे एहिअनुभवज्ञान ॥ ७० ॥ जिहालगेपरजाव
 नो त्यागनहोवेचित त्यालगेथिरससारछे साचिजाणोरी
 ता ॥ ७१ ॥ तेकारणपरजावतजी करोमनइंद्रिवश आत्मजा
 वमाथिरहोवो पिवोअनुभवरस ॥ ७२ ॥ विजोनेदएकह्यो
 हवेकहुत्रिजोविचार श्रोतासुणजोथिरथइ मगनजावअ
 धिकार ॥ ७३ ॥ पुद्गलसेन्यारोप्रभूमेरो ज्ञानवानसुखकार
 निरजननिराकारए नहिलेपलगार ॥ ७४ ॥ पुद्गलजावव
 नासिए हुअवनासिधार पुद्गलखेलअनादिना एहजाल
 आचार ॥ ७५ ॥ कालअनादिअमतेथके जन्ममरणजजाल
 लखचोरासिजोनिअम्यो खेल्योनवनवाख्याल ॥ ७६ ॥
 एरुपतोहूनहि हूतोइनशुचिने ज्ञानरुपएआपणो तेथि
 होवेजिन ॥ ७७ ॥ एमस्वरुपविचारीने थाओपरशुउदास
 उदाशिनतातबअहि किधोघरमावासा ॥ ७८ ॥ नेदज्ञानतोत
 जदियो जाणिमिथ्याभाव धर्मक्षमादिकनीमीट्यो प्रगट्यो
 सेहेजस्वजाव ॥ ७९ ॥ नयभेदपणमिटगयो मिटगयोपक्षप्र
 माण स्यादवादपणमटगयो एवुप्रगट्युनाण ॥ ८० ॥ गुणपर

जायन्तिचिन्नता रत्नत्रियवलिचिन्नं जेदभावसबमटगयो
एकत्वजावथयोलिन ॥८१॥ शत्रुजावयाकोनहि नहि
रागओरद्वेष ॥ पुत्रपिताविचारनहि मगनजावपरवेश
॥ ८२ ॥ द्रष्टिगोचरजेहोवे ज्यांदेखुत्यांरुप मुर्तिभाव
तेजहो तेतोरुपिस्वरुप ॥८३॥ तेरुपपुद्गलतणो हूंरुपी
अनुप एनेमारेशीसगाइ एतोछेभवकूपा॥८४॥ असंख्यपं
रदेशिहूंसदा अक्षयरुपकहेवाउ अमुर्तिगुणमाहरो एहि
चितमांलाड॥८५॥ ज्ञानदर्शनचर्णनो साचोदिसुंपुज सु
खअनंतुमाहरु प्रतक्षदेखिहूंज ॥ ८६ ॥ सर्वपरभावन
टालिने निजघेररहेमगन सुमताशुसगाइकरी तुरत
लिधुलगन॥८७॥कालअनादिनिविशरि भुल्योचेतनराय
ममतामांललचाइरह्यो तेथीएदुखियोकेहेवाय ॥ ८८ ॥
हवेतेमुजसांभरि भलियोतेहनोसंग ममताकूमतानाठ
गइ तुनोवाध्योरंग ॥८९॥ ज्ञानअनंततेमाहरु हूंछउज्ञा
नस्वरुप एदशाछेमाह्यरी जाणोभेदअनुप ॥९० ॥ वाको
सुखजेप्रगटयो लोकमांहिनसमाय जाणनवालोजाणे
सहि केणिहोठनआयु ॥९१॥अखंडरुपहेमाहेरो अविना
शिअकलंक नीरविकल्पएरुपमां कोणहोवेएरंका॥९२ ॥
जेदभावसबमटगयो टल्योमनकोखेद आत्मजावेथिरहू
वो प्रगटहूवोअवेद ॥९३॥ नीजअनुभवथीएकहि अध्या
त्मछनुजाण मुनिहूकमएनिजउल्लासथि उत्तमप्रगटयुए

नाण ॥९४॥ ओगणिसेसवछरे ओगणत्रिशअशाडमास
 शुक्लपक्षअष्टमिगुरु रहिसुरतचोमास ॥९५॥ मुनिहूक
 मरचनाकरी अनुचवज्ञानसजोग जेचणेनेआदरे तसजा
 यभवरोग ॥९६॥

॥ इति श्रीअध्यात्मछनुविसमाप्त ॥

श्रीमिथ्यात्वविध्वंसन.

श्रीगुरुभ्यो नमः

॥ ब्रह्मो ॥ वदूंसिद्धस्वरूपने नीजानदवीलाश आपस्व
रूपीआपमां वधेगुणकीराश ॥१॥

संसारनेवीशो सर्वेजीविसिद्धसरखाछे असंख्यातप्रदेशे
करीनिर्मलछे एवीसत्तानाधणीछे परंतुपोतानीसत्तानेदे
खीशकतानथी शामाटेकेमिथ्यात्वेकरीने आत्माछवराइ
गयोछे तेथीकरीनेस्वस्वभावनेछोडीने परचावमांरमेछे
शिष्यवाक्य--स्वामीमिथ्यात्वतेशानेकोहोछो नेमिथ्यात्व
शायकीजाय गुरुवाक्य--हेभद्र मिथ्यात्वनोविस्तारघणोछे
परंतुकिचितकहीदेखाडुछुं तेमिथ्यात्वनावेनेदछे तेनोवि
वरोकरताकेटलाएकवीजापणभेदकेहेवाशे हवेतेमिथ्या
त्वनावेनेदकरीयेछीयेतेनानाम द्रव्यमिथ्यात्व ॥१॥ भांवि
मिथ्यात्व २ द्रव्यमिथ्यात्वनावेनेद एकवेहेवारमिथ्यात्व
१ वीजोनिश्चयमिथ्यात्व २ हवेतेमिथ्यात्वनोस्वरूप संक्षे
पथीदेखाडीयेछीये एटलेमिथ्याकेहेतांजुठीवस्तुनेसाची
करीनेमाने तथासाचीवस्तुनेजुठीकरीनेमानेतेनेमिथ्या
त्वकहिये तेमधेलोकीकदेवकेहेतांहरिहरादीकतेनेदेवक
रीनेमाने अथवापोतानीमतलवेतेनीवाधांआखडीराखे
तथालोकिकगुरुकहेतांब्राह्मणजोगी सन्याशीप्रमुखनेगुं

रुकरीजाणे तेनाचमत्कारदेखीनेतेनेमाने. २ लोकिकधर्म
जेसदावरतदेवुं तथाहोलीजुर्यारिहेवु इत्यादिकमिध्यात्व
नापर्वतथावरतकरे तेनेलोकिकधर्मकहिए. ३ लोकोत्तर
देवजे रिखवादीकजेतीर्थकर तेनाजेतीर्थपरतमातेनेपोता
नासंसारहेतुएमानवा बाधाआखडीराखवीते लोकोत्तरदे
वगतमिध्यात्वकहिये ४. तथालोकोत्तरगुरुमिध्यात्वके
हेतांजे साधुमुनिराजनीशेवाभक्ति आहारपाणी प्रमुख
नीससुरखाराखे मनमाएवुविचारेके महाराजवचनआशि
र्वादेकेहेतोआपणुसारुथाय तथामत्रजंत्रप्रमुखनी आ
शाएकरे ५ तथालोकोत्तरधर्मकेहेताश्रीपाळने नवशांबी
लनीओलीथकीसारुथयु तथागुणमजरीवरदतने पांच
मकरवाथकीसारुथयु इत्यादिकवहूजणनेतपजप धर्मक
रणीथकीसारुथयु तोआपणेपण श्रमुकोतपप्रमुखकरवा
यकीसारुथाय ६ एवमिध्यात्व तेमधेत्रणलोकीकमिध्या
तथात्रणलोकोत्तरमिध्यातठे एमिध्याततेवेहेवारथकीठे
तथाद्रव्यमिध्यातनाघरनाठे तथाद्रव्यमिध्यातनाघरना
नीश्वेमिध्याततेनादशभेदठे देवमिध्यातकेहेतां जेदेववी
रागजेनोरागद्वेशगयो सर्वकर्मथकीरहितथया स्वरुपर
णीलोकालोकजास्कर एवाजेअरिहतपरमात्मा तेनेदेव
रीनजाणे एप्रथममिध्यात्व १ तथाजेदेवपणुनथीपास्या
गद्वेश वीपयकपायनाभरेला एवाजेहरीहराटिकतेने

देवकरीनेमानेतेवीजुमिथ्यात्व. २. तथाजेसाधु आत्मरम
 णीकस्वरूपानुजायी परभावत्यागी स्वप्नावज्ञोगी मंदकषा
 इ करुणासागर ज्ञानउपयोगी एवाजेमुनिराजतेनेसाधुक
 रीनमाने एत्रीजुमिथ्यात्व. ३. जेअसाधुरागद्वेशवीपयकषा
 यनाभरेला आत्मस्वरूपनाअजाण शुभाशुभकर्णीनारागी
 जन्मभावमांरचापचारेहे तेनेसाधुकरीनेमाने एचोथुमिथ्या
 त्व. ४. धर्मजेवस्तुनोस्वभाव तथाजिवदया स्वपरनोजडचेतन
 नोविजाग इत्यादिकजेकेवलीभास्थो धर्मतेनेअधर्ममाने ए
 पांचमुमिथ्यात्व. ५. जेअधर्मजीवदयाप्रमुखनही तथांवस्तुस्व
 रूपजाएयाविना क्रीयाकष्टतपजप प्रमुखनेधर्ममानेतेछ
 ठुमिथ्यात्व. ६. जेजिवस्वरूपचेतनालक्षण चारसंज्ञास
 हिततथाएकंद्रीथीते पंचंद्रीपर्यंत अनेकथानकउपजवानां
 तथावीणसवानांशास्त्रादीकनजाणे नेइत्यादिकस्वरूपने
 जीवनमाने एसातमुमिथ्यात्व. ७. जेअजीवपदार्थजन्मे
 तेनेवणसमजणथी केटलाएकठांमनेविशेजीवकरीनेमाने
 ठे तेआठमुमिथ्यात्व. ८. मुक्तिकेहेतां सरवजन्मभागनोत्या
 गीसर्वकर्मरहीत शुद्धस्वरूपजेवुसत्ताएहतुतेवुजनीर्मलप्र
 गटथयु नेलोकनेअतेसिद्धस्वरूपथइनेबीराजमानथया ते
 नेमुक्तिनमाने तेनवमुमिथ्यात्व. ९. जेअमुक्तिकेहेतां जेसं
 सारना वइभवथकीछुट्यानथी चाकरठाकरपणुज्यारह्युठे
 जन्ममर्णजेनांगयानथी एवाजे वइकुंठ गौलोक यावत

जोतपरजंतनेजेमुक्तिमानेते तेदशमुमिथ्यात्व. १० तेदश
मिथ्यात्वपाचप्रकारेकरीने मानवामात्रावे जेपुर्वेएदशक
ह्यांतेमाहेलाजेबोल जेकुगुरुनाजंलावेला तेप्रतेठांमेनहि
सुगुरुमलेसमजावे तोयपणहठवादबोमेनहि तेतेअभिग्र
हितमिथ्यात्वपेहेलुकहीए. १

हवेतेमध्येकेटलाएकजीवएमजाणेजे सुगुरुकेहेतेपण
ठीकजते तथापुर्वेकुगुरुएसमजावेलुते तेपणठीकजते आ
पणेएकुटमापेसवुनहि आपणेतोसर्वमानवाजोगते एवुजे
विचारते तेनेसुगुरुकुगुरुनीपरीक्षानथइ तथासत्यासत्य
वचननीपरीक्षानथइ तेनेएकेवातनोनीरधारपणनथयोतेने
मन दुध अथवाताशवंसे एकेपामेजाय तेनेअनाअभीग्र
हीतमिथ्यात्वकहीए. २

जेपुर्वेसुगुरुएवताव्या एवाजेदशबोलतेसारीरितेसम
जेलोतेकोइकर्मनाउदेयकिअणरुमृतिथिवचननीकल्यु प
ठीपोतेसमजोकेआवचनतोहुबोलताबोल्पोपरंतुहूबोल्पो
तेवचनपाछुनफरे एवुधारीनेखोटीयुक्तिउकरी तेवचनने
साबितकरे तथाकोइवातउपरममतयतांतेधर्मनेखोटुकरवा
चाहेतेधर्मनेतोमवाचाहे एसर्वेजाणीनेकरवुरहुअथवाकल्प
व्यवहारनीमरजादावास्ते आत्मस्वरुपनेजाणतोथकोशु
द्धमार्गनीखबरवालोजीवजमनीपुष्टिकरे एटलेशुजाशुज
क्रियानीपुष्टिकरे तेनेजमनीपुष्टिकरीकहीए शामाटेकोकि

यात्यांकर्मठेमाटेएसर्वेजन्तुपोषणथयु शामाटेकेइहांकर्म
नुवधारवुथायते एविरितीजाणीने एवाकांममांप्रवर्तेतेने
अज्ञीनिवेशिकमिथ्यात्वकहिए. ३

एजपुर्वेंदशबोलकह्या इत्यादिकबोलोनेविषे शंकापद्मे
जेकोणेजिवदीठो तथामुक्तिअरीहंतएकोणेदीठाते इत्या
दिकसर्वेपरम्पराथीकेहेताआव्या तेमानीएठिए शुजाणी
एकेएवस्तुसाचीठेकेजुठीते अनेशास्त्रनोकांडजरोसोपद्मेन
हि केमकेजेमआस्वामीनारायणकालनजरेथयोतेमांमहाद्दु
खमहाकष्टेकरीघणोद्रव्य राजातथाब्राह्मणने खवरावीने
पोतानोधर्मचलाव्योतेसर्वेआपणेप्रत्यक्षनजरेढीठेलुते ते
नेलोकएनामतवालाजगवांनकरीनेमानेते तथाकुवेरजक्त
हालवर्तमानवेठोजते तेनेपणतेनामतवालाजगवांनकेहे
वानीइच्छाराखेते तेजाणीएठीएके चारेदहामेएनेमुवाप
ठीजगवानठरावशे तेनांकर्तव्यसर्व आपणेप्रत्यक्षनजरे
देखीएठीए एमआगलनाकोइठोंगीथी आधर्मचलाव्यो
होयतोकेमखवरपद्मे अनेशास्त्रउपरजोवाजइएतो हा
जजेउपरनाकह्या तेधर्मवालाएशास्त्रनवांवांधेलाते तेध
णीएपणघणीजुक्तिअनेहलाहलखोटीवारतांनिमांहेलीको
रेनाखीते तेघणीनाविद्यमानना देखवावालानहिहोयत्यारे
केटलालोकोएवुजाणशेके अहोभगवानेआवांआवांकाम
करेलाते नेतेप्रत्यक्षपणे आपणेजोइएठीएके खोटांशास्त्र

बनाव्यांते एमश्रागलनाएतेवाशास्त्रबनाव्यांहोयतोतेनो
शोचरोसोरहे एममनमाशंकाकखाजेनेरेहेतोहोय तेने
संशयोकमिथ्यात्वकहीए. ४

शीष्यवाक्यः-स्वामीतमेशंशयोकमिथ्यात्वकह्युं तेठीकप
एप्रत्यक्षश्रालोकोनांजेशास्त्रश्रनेश्रालोकोनाभगवानश्राप
ऐदेखियेगीये तेमजश्राधर्मसामानेनासनथाय सत्धर्म
शाथकीनासनथाय एतोकांइइहांवेसतुनथीपगीतमेजोराव
रीथीमनावोतोमोटागेकोणजोइश्राव्युकेएटलीवस्तुपुर्वबने
लीठे केएवाढेंगीपुरुषे पीतानेपुजावावास्तेश्रथवा पीता
नीपंडीताइदेखाम्वावास्ते उभुकरपुठे जेमआमाकोरनी
मुर्तीगुगलीलोकोद्वारकांथकीचोरीनेलइश्राव्याठे श्रनेते
नुमंकनामापुराणश्रांमोदनादीनानाथनामेब्राह्मणेबनाव्यु
छे तेधणीयेनाकोरनुमेहेरु तथागामनांजाहामप्रमुखसर्वे
सोनानाकह्यांते तेदीनानाथनटनेमुवानेवरसदशनेश्राश
रेथवाश्राव्या तेधणीएएवांगप्पाप्रत्यक्षमारेलाले तेमबी
जाशास्त्रवालाएपण. गप्पांमारचाहोयतो शीमालुमपमे
माटेएठेकाणेतो शकामोहोटीजरहे तेवातमासदेहनही
गुरुवाक्य'-हेनद्रएवीतनेमाहामोटीशंकाउत्पन्नथइ तोता
हारोसमकीतादीकगुण क्यारह्योप्रत्यक्षनास्तीकपणु ना
सनथायठेमाटे एवीशकानजाइये हवेहुंतने एशंकानो
उत्तरश्रापुतेतुधीरचीत करीनेसाजल नेतारामननीशंका

कंखाहोय अथवाआउत्तरमांशंकाउत्पन्नथाय तेपुढीने
 निश्चलथा जेतनेसर्वथकी धर्मनीशंकापडीतथाशास्त्रनी
 पणशंकापनी माटेतनेशास्त्रनोउत्तरतो हालअमर्थकीदे
 वायनहि परंतुन्यायवादेकरिने जेउत्तरतनेआपीये तितुं
 धार प्रत्यक्षपणेजीवते तेखरोकेनहि वादीयुक्त. जीवकांइ
 दीसतो नथी गुरुवाक्यः-जीववीनावोलवुचालवु तेकोणं
 करेते वादीयुक्तः बोलवानुस्वरुपतेआकाशमारहयुंते अ
 नेचालवुतेजमनोस्वजावते गुरुवाक्य-केजेबोलवानुस्वरु
 पतेआकाशनेविशेकहयु तेआकाशनेविशेतोशब्दनोगुण
 ठेपणअक्षरादीकउच्चारणनथी तथाचालवानोगुण जेतंपु
 द्गलनोस्वजावकह्योतेतोसुक्ष्मपुद्गलमांते परंतुवाहादरजे
 थुलपुद्गल तेमांकांश्चालवानोस्वजावप्रत्यक्षपणेदीसतो
 नथी तेमांप्रत्यक्षचालवानोस्वजावहोयतो घटपटादीक
 चाल्यांजोइये एमाटेएचेतननोजगुणइहांलेवो वादीयु
 क्त-केजोचेतनमहिहोयतेथकी चालतुहोयतोतमाराकेहे
 एथकीवनस्पतीमांजीवते तंतेपणचालीजोइये गुरुवाक्य-
 वनस्पतीनेविशे इद्रीएकजठेतेथीएचालीशकेनहि वादी
 युक्तः केएकद्रीजेकायाते तेथीचालीनशकेतो बीजीचारइं
 द्रीमांतोचालवानो स्वजावतेजनहि तोजीवनुचालवुशा
 नुरहयुं माटेअमेकहीयेगीएके चालवुतेजममांजठेजेमघनी
 आल प्रत्यक्षजडठेतेएनीमेलेचाल्यांकरेते तेमएकायाप

ए पुद्गलचालेते इहाकाइजीवनुकारणतेनही गुरुवाक्य-
जेकाइघनीयालचालेते तेजीवनीवनावेलीकलतेउपरथी
चालेते तेपणजीवनेआठेनेआठेदहाफेसंचाललेवीपण्ठे कुं
चीफेवेंठेचकरप्रमुख लुच्चीपुजीपाठाचढावेते त्यारेचालेते
पणकाइतेनीमेलेचालतीनथी तथातेजेकह्युंकेचार इद्रीवी
जीमाचालवानोगुणतेनहि तेखरुते परतुवीजीइंद्रीउ आव्या
विनाफरशइद्रीथकीचलायनहि केनीगोभेकेजेदूधते तेमा
थीकोइघीकाहामवाचाहाशे तोपणसर्वथानीकलीशकेन
ही पणजोपइशाभारमेलवणपण्ठे तो पठीधीनीकलतेमए
कंद्रीमावीजीइद्रीनीप्राप्तीयायतीज चालवानीगतीआवे
पणतेविना चालवानीगतीआवेनही. वादीयुक्तः-जेमबी
जीइद्रीनामलवाथकितमेंचालवुकस्यु तेवारेएवुभासनथा
यतेकेइद्रीउमाजचालवानोगुणरह्योते पणकाइजीवपण्ठे तो
दीसेतुनथी.

गुरुवाक्य - जीवपणाविनाइद्रीउनुवांधवुकोणकरे मा
टेजेइद्रीउवाधेतेजजीवते वादीयुक्त - जेतमेइद्रीउनावां
धनारानेजीवठरावोते तेतोकेइसभवतो नथी जेत्रसरेणु
प्रमुखउमीउमीनेघरप्रमुख अवांवरजगानेविशेषण्ठे तेर
जपावीस्थुलथायते तेमातोकोइजीवसाख्खवालाकेहेतानथी
तोएइद्रीएककोणेवांधी माटेजमनीकर्ताजमते गुरुवाक्य
तेत्रसरेणुप्रमुखजेखंध तेसरेवेष्टयवीकाय तथावनस्प

तीकायनाते तेप्रथमजीवनावांधेला एकंद्रीतीकायनापुद्ग
 लते जीवनीनावनरूपतीकायप्रमुखथायनही. वादीयुक्तः-
 वनरूपतीप्रमुखनुजेथावुठे तेमाटीपांणीनाजोगथीउत्पत्ती
 थायते एमांकइजीवनुकारणदीसतुनथी. गुरुवाक्यः-जी
 वविनाउगेनही केजुवोप्रत्यक्षजेकइंजाफ्ठे तेजेनामांहेजी
 वहोयतेपाणीनाजोगथीनवपल्लवथाय परंतुतेजव्रक्षनीम्ह
 लीजीवरहीतथइहोय तेनेकोइपल्लवआवेनाहि माटेजीवते
 तेसत्येठे वादीयुक्तः-केतेमालीनापुद्गलयणाखरीगयाहो
 तेथीतेनेपल्लवआवतुनथी जेमवृद्धपुरुषने केकरांनयाय
 तेमएनेपण पल्लवनथीआवतु. गुरुवाक्यः-तेहीनवृद्धपु
 रुपवीर्यहिणथयो तेनेबेकरांनयाय परंतुनहारतोतेपुरु
 षकरे तेम एमालीप्रमुखनेविगेपल्लवतोलाआदे परंतुपाणी
 तोखेंच्युजोइए तोतारीवातखरीधान परंतुपाणीनोरसखें
 चवानीएनीशक्तीनथी. शक्तीतोतीवहोवत्यारेजपानिरे
 वादीयुक्त-जोपाणीनोरसखेंअदक्षीजीवमानोतो ल
 कोनाहाथीप्रमुख अनेकनंतरअवेते तेनेजे
 मुकीयितेठलुपीवेजायते माटेनेनजीवमान्य
 रुवाक्य-एतोपांणीपिइते वननुनरतुनायते
 मांकांइरेहेतुनथी माटेइकलनजठे वादी
 जेरसनो संग्रहतेने वनेजीवमानोने
 तजोरहोय

दहोय तेरसपाचनओछुकरे माटेरसनाग्रहणअग्रहणय
 कीजीवनोनिर्णयनथायशामाटेके पाचभुतमलीने एकथुल
 बंधायते तेपाचेभुतपोतपोतानाकांमकरेते तेमाकाइजीव
 पणुनमनाय गुरुवाक्य--जोपाचभुतपोतपोतानुकांमकरे
 ते तोपृथ्वीआदीक चारथावरनेविशे वायुतत्वशुकांमकरे
 ते वायुतत्वइहाकांइकांमकरतोदिशतोनथी शामाटेके पृ
 थ्वीआदिकथावरनेविशे एकएकतत्वनीमुख्यताते एटले
 पृथ्वीकायनेविशे पृथ्वीतत्वनीमुख्यताते अपकायनेविशे
 जलतत्वनीमुख्यताते अग्नीकायनेविशेअग्नीतत्वनी मु
 ख्यताते वायुकायनेविशे वायुतत्वनिमुख्यताते अनेवनस्प
 तीकायनेविशे पृथ्वीतत्वनिमुख्यताते एपाचयावरमधेअ
 ग्नीकायनेविशे अग्नीतत्वतथापृथ्वीतत्व वेनीमुख्यतादी
 शेछे तथावनस्पतीकायनेविशे चारतत्वनीमुख्यतादीशे
 ते पृथ्वीतत्वतथाजलतत्व तथाअग्नीतत्वतथाआकाश
 तत्वएचारतत्वनीमुख्यताजोयामाआवेते तथावेरद्रीयादी
 कजेत्रसजीवरह्या तेनेविशेपांचेभुतमालुमपन्ते परतुए
 पाचे भुतकांइजीवनथी नेएपाचेभुतजीवकीनारसपाचन
 करवासमर्थनहि तथाचालवापणसमर्थनहि तथाअ
 क्षरउच्चारणकरवाकांइसमर्थनहि एकारणसर्वे जीवही
 यत्यारेजवने वन्दीयुक्त चालबुहालबुसर्वेवायुतत्वनापरी
 बलयकीथायते ज्यासुधीवायुतत्वहोय ताहांसुधीएरसपा

चनादीकसर्वकारजकरे नेवायुतत्वगयाथी. एसर्वतत्वजु
ठापनेते तेप्रत्यक्षजोयामांश्रवेते इहांकोइजीवस्वरूपदीस
तुनथी. गुरुवाक्य--तुंवायुतत्वनेजीवसरखोमानेते एतारी
मोटीभुलते. केमकेअक्षरउच्चारणकरवानीशक्ति वायुनी
होयनहि. तथाशुभाशुभवेदवु तेपणवायुतत्वजाणेनहि के
मकेवायुतत्वथकीस्वासोस्वासलेवायते परतुशुभाशुभमां
एजम शुसमजे तमेतमारामनमाविचारिजुवो वादीयुक्त
शुभाशुभनुजाणवांवालुतोमनते. अथवानवाविचारउठा
ववावालुएमनते. पणकाइजिवतोदीशतोनथी.

गुरुवाक्य:--एजजीवगयापणीजे कलेवरपमेलुतेकेम
कइंशुभाशुभवेदतुनथी इंद्रीजंतोपांचेसावुतते एकवायुत
त्वमांहेथीगयाते. परतुतेनेपठिकांइशुभाशुभकारणतेनहि.
वादीयुक्त --मननोनाशथइगयो माटेकोणवेदे. गुरुवाक्य.
वायुतत्वगयाते पणमनतोतमाराकिधार्थीगयुनथी. वादी
युक्त --मनतेवायुतेकेनहि. जगत्रमांमनपवनकेहेवायते मा
टेमनतोवायुनेगुजगयु गुरुवाक्य.--जोमनथकिशुभाशु
भवेदेते तोपृथ्वीआदीकथावरनेविशे वेद्युजोइए परंतुपृ
थ्वी वनस्पती इत्यादिकजेछे तेकइंशुभाशुभनेवेदतानथी
तोशुएनेतमेएकभुतमानोबोके पांचचतमानोबो कदापित
मेकेहेशोके पृथ्वीआदीकनेएकएकचुतमानिएवीए तोव
नस्पतीकायभुतमातेनहि. वादीयुक्त --वनस्पतिपृथ्वीत

त्वमांगणीएगीए. गुरुवाक्य.-प्रथ्वीतत्वतेतोएरसशायकि
पाचनकरेते तोप्रत्यक्षइहांअग्नीतत्वदीशेते तथातेनांपान
प्रमुखनेमरदीएतोरसनिकलेते तोजलतत्वपणदीशेते त
थाखीलीप्रमुख एनेविशेमारीएतो माहेलीकीरेसमायते
तोआकाशतत्वपणदीशेते एचारतत्ववनस्पतीनेविशेदी
ठामांआवेछेनेवायुतत्वदीठामाआवतोनथीअनेरसनुपाच
नवायुतत्वविनाइहांथायते तोइहांजीवखरोकेनहि अनेजी
जीवनमानोतो पांचभुतइहामेलवीआपो पांचभुतविनाए
तलुवधायनहि एवितारीबोलीते वादीयुक्तः-तमाराशा
स्त्रमांश्वासोश्वास पर्याप्तीतथा श्वासोश्वास प्राणकह्यो
तेतेवायुतत्वजछे. गुरुवाक्त-तुंशास्त्रतोप्रथममानतो
नथी तथापरोक्षवस्तुपणमानतो नथी अनेहवेतनेउत्तरदेवा
नीजगोनमलीत्यारेतेशास्त्रदेखामवामाडयु तोएमपरोक्ष
नेबाजेते त्यारेजिवजकबुलकरनी अनेशास्त्रमांपणजीव
तत्वेलोते एमशास्त्रथीपुर्बिशतो अमारेजवाबदेवानुघणुसु
कजेत्रसेआटेजीवतेसत्यते खोटीकल्पनाशानिकरेते वां
पाचे भुतकाइज्जोतातो जीवभासनथायते परंतुजीवतेके
करवासमर्थनहि रुंइदीठामाआवतोनथी तेथीमनमांशं

रीने जाणवामांश्रवि तेजीवनेविशेआठसांमान्यलक्षणते
 तेनानामकहीएगीए अस्तीत्व १ वस्तुस्त्व २ द्रव्यत्व
 ३ प्रमेयत्व ४ अगुरुलघुत्व ५ परदेशत्व ६ चेतनत्व
 ७ अमुरतीत्व, ८ एआठजीवनासामान्यगुणते तथाठविशे
 पगुणते तेनांनांम ज्ञान १ दर्शन २ चारीत्र ३ वीर्य ४
 चेतनत्व ५ अमुरतीत्व ६ हवेतेनोअर्थसंक्षेपथीदेखामीए
 गीए जीवद्रव्यनागुण तेद्रव्यनेवलगीनेरह्याते तेनोकोइ
 कालेनाशनथाय तेनेअस्तीस्वभावकहीए. वादीयुक्तः—
 जीवद्रव्यतेशं एटलेजीवकेहेतांशुं द्रव्यकेहेतांशु नेगुणके
 हेतांशुंतेनीअमनेसमजपमीनथी तेअमनेप्रथमसमजण
 पामीनेपठीआगलचालो

॥ गुरुवाक्यः--जिवतोजेपुर्वेकह्योते चेतनालक्षणे करीने
 सहितहोयतेनेजिवकहिये अनेखंधजेएकआखोहोयकोइ
 कालेखंननथाय तेनेद्रव्यकहिए अनेगुणजेद्रव्यनेउल
 खावेतेनेगुणकहिये जेमपटवेतेउढवापेहेरवाखपलागेतेथ
 कीउलखीएकेएपटवे तथाघटवेतेजलजरवा खपलागे
 तेगुणवमेकरीने घटउलखाय एटलेएकद्रव्यनोगुणवी
 जाद्रव्यमांमलेनहि जेमघटउढवाखपनलागे पटवेतेजल
 जरवाखपनलागे एटलेतेपोतेपोतानोगुण पोतानाद्रव्य
 नेमलीनेरह्याते तेथकीद्रव्यनीउलखाणथायवे हवेतेद्रव्य
 उप्रकारनाते तेनानाम धर्मास्तीकाय १ ५ स्ती

२ आकाशास्तीकाय ३ पुद्गलास्तीकाय ४ जिवास्तीकाय
 ५ काल ६ एतद्रव्यतेतेमध्येधर्मास्तीकाय १ अधर्मास्ती
 काय २ आकाशास्तीकाय २ काल ४ एच्यारद्रव्यएकएक
 जते अनेजिवद्रव्यएकएवाअनताते नेपुद्गलद्रव्यपरमाणु
 रुपअनताते तथाद्वीपरदेशीनीआटेदेइने अनंतपरदेशी
 खंधएवाद्रव्यउपचारेकरीनेअनताते हवेजेजिवस्वरुपते
 तेकहिण्णिए एटलेएकजिवनाअसख्यातापरदेशेते अन
 तागुणते, नेअनतापरजायते, तेस्वरुपसर्वे, प्रमाणनयथी
 जाणवामांआवे तेप्रमाणनयनावेजेदते एकप्रत्यक्षप्रमाण
 विजोपरोक्षप्रमाण प्रत्यक्षप्रमाणनावेजेद, केवलज्ञानस
 र्वप्रत्यक्षप्रमाणते एप्रथमजेद, १ अवधीज्ञानमनपरज
 वज्ञानएदेशप्रत्यक्षप्रमाण २ हवेपरोक्षप्रमाणकेहेताम
 तीश्रुतज्ञानतेपरोक्षप्रमाणते तेनावेजेद एकद्रव्यार्थक, १
 विजोपर्यायार्थक-२ तेद्रव्यार्थकना, १० जेदतेतथापर
 जायार्थकनाठजेदते तथा एद्रव्यार्थक, तथापर्यायार्थक
 एवेनअमलीने, सातनयपणथायते तेनानाम निगम १
 संग्रह २ व्यवहार ३ रजुसुत्र ४ शब्द ५ संजीरुढ-६ ए
 वंभूत, ७ तथा व्यवहारनयनापक्षथकीउपचारेत्रणउपनय
 पणथायते, तेनानाम सद्भुतव्यवहार, १, असद्भुतव्यव
 हार २ सद्भुतासद्भुतव्यवहार, ३ तेनुस्वरुप आगल
 काहिशु हवेद्रव्यार्थकतादशजेददेखामिण्णिए, हवेशुद्ध

व्यर्थककेहेतां कर्मउपाधीरहितसत्तास्वरूपजोइएतोसर्वे
 तसारीजिवसिद्धरूपते एतेशुद्धआत्माज केहेवायं १ नित्य
 व्यर्थककेहेतां उत्पातवयनेनविचारीएतोशुद्धद्रव्यसत्ता
 विषे जोतांतेनित्यते २ तथाअतिशुद्धद्रव्यार्थककेहेतां
 कल्पनानीअपेक्षानकरवि जेथीगुणपरजायरूपद्रव्यनु
 हांअजिन्नपणुथयु ३ कर्मउपाधिसापेक्ष स्वरूपनुविचा
 वृतेअशुद्धद्रव्यार्थककहिए जेमक्रोधिआत्मा इत्यादिक
 मधरावेते ४ उत्पातवयनीअपेक्षासहितस्वरूपनुजोवृतेअ
 द्रव्यार्थक जेमएकसमयमांउत्पातवय धुआत्माछे ५ मे
 कल्पनानीअपेक्षालेइने स्वरूपनुजोवृ तेअशुद्धद्रव्यार्थ
 छेजेमआत्मानाज्ञानदर्शनादिक गुणछेएवुवोलुव ६ अ
 यद्रव्यार्थककेहेतां गुणपरजायस्वभाविकद्रव्य ७
 द्रव्यादिग्राहिकद्रव्यार्थक जेमस्वद्रव्यादिचतुष्टीकअ
 द्रव्यास्ती ८ परद्रव्यादीग्राहिकद्रव्यार्थक जथापर
 चतुष्टयअपेक्षाएद्रव्यनास्ती ९ परमजावग्राहिक
 व्यर्थकजथाज्ञानस्वरूपआत्मा एटलेअनेकत्वभावचेत
 नाछेतेमध्येज्ञानमुख्यपणेछे सामाटंकेतेस्वपरंप्रकाशी
 छेतेवास्ते १० एटलेद्रव्यार्थकज्ञानद्रव्या
 हवेपर्यायार्थकना छेमेदकादिद्रव्या अनादिनित्यप
 यायकहेतां पुद्गलपरजायनिद्रव्य सादिनित्यपरक
 हेतां सिद्धपरजायनिद्रव्य सुद्धपरजायकेहेत

ठे हवेतेनासातगुणवाकीरह्या तेनुस्वरूपकहूतेशांभल बी
 जोस्वजाववस्तुत्व एवेनामेएटलेवस्तुनो जेस्वजावतेफी
 टीनेबीजीवस्तुनथाय एटलेघटफीटीनेपटनथाय नेपट
 फीटीनेघटनथाय जडपिसामान्यविशेषवस्तुनो स्वजाव
 दिसे जेमएकजिवमुक्तिनेविशे प्राप्तथयो ने एकजीव
 ससारमाछे अथवाजेमएकघटनेविशे घीनरायतेघीनो
 घटकेहेवाय एकघटअसुचीप्रमुखनो तेअसुचीनोकेहेवाय
 एमसामान्यविशेषजणाय परंतुवस्तुधर्मपोतानु छोडीने
 वांजुधर्मनाआदरे एबीजोगुणद्रव्यस्वजावकेहेतांनिजनि
 जपोतपोतानापरदेशनासमुदायेकरि अखंमवर्ततोस्व
 भावठे एटलेजीवसख्यातपरदेशी द्रव्यछेधर्मास्तीकाय
 तथाअधर्मास्तीकाय असख्यातपरदेशीद्रव्यछे आका
 शअनंतपरदेशीद्रव्यठे एचारेअखडद्रव्यछे एचारेद्रव्य
 कोइकालेखमीतथायनहि एद्रव्यत्वस्वभावकहिये शीप्य
 वाक्य-स्वामिपुर्वेठद्रव्यकह्याछेने इहाचारद्रव्यकेमवता
 व्या गुरुवाक्य-जोपुद्गलद्रव्यपरमाणुने कहियेछीयेतो
 परदेशादिकलाधतानथि अनेजोखधनेद्रव्यकहियेछीये
 तोएस्वजाविकद्रव्यछेनहि एविभाविकद्रव्यठे माटेएनाद्र
 व्यनाविचारनीचरचाघणाठेतेइहांजोकरवा बेशियेतोअथ
 गोरवथइजाय माटेएद्रव्यइहांगणाव्योनहि तथाकाल
 द्रव्यठेतेउपचारेठे एकाइवस्तुकशीछेनहि माटेएपणइहां

गण्योनयी तेमाटेचारद्रव्यअखंभीतछे एनेविशेद्रव्यत्व
 स्वभावरह्योछे एनेविशेसत्द्रव्यपणानुलक्षण तादृश्यरु
 पदीसेठे पोतानागुणपरजायनेविशे व्यापीरह्यो उत्पातव
 यध्रुवसंयुक्ततेनेद्रव्यकहिये एटलेएद्रव्यनुलक्षणकह्युए
 श्रीजोगुण. ३ प्रमेयत्वकेहेतां जेस्वपरनीवेहेचणतेनुजे
 प्रमाणतेनेप्रमेयत्वकहिये तथापोतपोतानास्वभावनेवि
 शेप्रणमवुपरजावनोत्यागकरवो तेनेप्रणम्यत्वकहिये ए
 चोथोगुण. ४ अगुरुलघुत्वकेहेतां सुक्ष्मभाववचनगो
 वरनहिप्रतक्षनहि आगमप्रमाणछेते पन्नवणाथकीजा
 एजो ५ प्रदेशत्वकेहेतासुक्ष्मजेजावपरमात्मानास्वीतत
 त्वनुजे हेतुपणतेहनेनहोयते आज्ञासिद्धकरवु केमकेद्र
 व्यअन्यथानहोय प्रदेशस्वभावकेहेतांस्वेत्रनोअविभागत
 नेप्रदेशत्वकहिये. ६ चेतनत्वकेहेताचेतनपणु एटलेचेतन
 नुअनुभववु यदुक्तं—श्लोक ॥ चैतन्यमनुभुतिर्यात् सक्रिया
 रुपमेवच क्रियामनोवच कायेष्व चिंतावर्ततेध्रुवं. ७ एट
 लेचेतनत्वपणुकह्युं ७ अमूर्तीत्वएटलेरुपादिकेकरीर
 हीत. ८ एआठगुणिकरिनेसहीततेनेजीवकहिये इत्यादी
 कबीजापणजीवनी ओलखाणनास्वभावादीकछे तेआग
 लप्रसगेआवशे त्यां केटलाएककेहेवागे एटलेएकीरति
 जीवतुस्वरुपओलखवु शंकाकखाहोयतेकाठीनांखवि.
 तथाजेशास्त्रनीगका तेपण समजवुके सर्व

ज्ञानां वचन अने छद्मस्थना वचन कांड छांना
 रहेनहि एटलेसर्वज्ञनावचनने आत्मस्वरूपनी रमणता
 तथाजिवादिकनवतत्व खटद्रव्य तेपक्षप्रमाणादिकेकरी
 नेजाणवा तथा जेनयनिक्षेपाप्रमाणप्रमुखं जेदवेहेचवा
 तेनयशुद्धव्यवहार कह्योछे गामाटेजेविकल्पेकरीने एस
 र्वज्ञगजालथायछे मुलस्यभावेजोतातो कांडतेर्यादवाद
 पक्षनीखपछेनहि इहातोअनेदज्ञानमुख्यपणेखपलागेछे
 शिष्यवाक्य-स्वामीस्यादवादनी खपनथी त्यारेतोएकात
 वचनथइजाय- गुरुवाक्य-जेस्यादवादवर्णववु तेजव्यव
 हारछे-तथाखटदर्शनसमुचयग्रथनीटीकामाएमजकह्युछे
 ॥उक्तंच॥वादइतिविकल्पा॥तेमाटेएकआत्मस्वरूपनुरमण
 तथाआत्मानीवारतातेजसत्यछे-शिष्यवाक्य-त्यारेएटला
 वधानेदकरवानुशुकारण-गुरुवाक्य-जेएभेदादिकवेहेच
 वाथकीसामानेघणोखुलासोथाय' एटलावास्तेकरीनेजे
 दनुवेहेचवुथायछे माटेएवाशास्त्रजेछे तेसर्वेजाणवा-शि
 ष्यवाक्य-स्वामिजेगणताणुजोगप्रमुखशास्त्रछे तेशाका
 रणेकह्यांहशे-गुरुवाक्य-जेगणताणुजोगछे तेजाणवारु
 पछे तथाधर्मकथानुजोगछे तेपणजाणवारुपछे अनेजेचर
 णकरणानुजोगछे- तेएकआदरवाजोगछे शिष्यवाक्य
 स्वानिएतोपुद्गलनीकरणीछे- तेनेआदरवानु शुकारण
 तेएचरणकरणानुजोग नहिआदरेतोसासन

नीलखाणरेहेशेनहि अनेउलखाणनेहिरहेतो सासननो
उछेदथइजशे एटलावास्तेएचरणकरणानुजोगवांधेलोछे
गाथा ॥ जइजिणजइयंपवजहंतो ॥ माववहारनयमयं
मयह ॥ विवहारपरीवाये ॥ तिथुछेउजउवश ॥ १॥

इत्यादिकवचन जद्रवाहूस्वामिनांपणछे माटेएसास
ननीलखाण , तथासासननेराखवामाटे , एअनुजोगछे
हवेपांचमुअणाजोगमिथ्यात्वकहियेछिये एटलेअणा
जोगकेहेताअजाणपणु एटलेतेनेधर्मनीतथा , वस्तुनीक
शिमालमनथि , तेनेअणाभोगमिथ्यात्वकहिये ५ एटले
द्रव्यमिथ्यात्वना घरनुएनिश्रयमिथ्यात्वथयु , शिष्यवा
क्य - स्वामिव्यवहारमिथ्यात्वना छजेदकह्या , तथानि
श्रयमिथ्यात्वनापंदरजेदकह्यातेमांफेरशोछे :

गुरुवाक्यः--वेहेवारमिथ्यात्वनाछजेदकह्या , तेकरणी
रुपलोकनाजोवामांआवे , माटेएनेवेहेवारकहीए अनेनी
श्रयमिथ्यात्वना १५ भेदतेमनमांधारवासमजवानाठे ए
बाहाजलोकनाजोयामांथोभाआवे माटेएनेनिश्रयमिथ्या
त्वकह्यु , एटलेद्रव्यमिथ्यात्वनुस्वरुपकह्यु - हवेभावमिथ्या
त्वनुस्वरुपकहियेछिये , एटलेभावकेहेता , आत्मानोस्वचा
व जेधर्मधर्मकरे , नेपरजावमांरमे , तेनेजावमिथ्यात्वकहि
ये . शिष्यवाक्यः--स्वामिअमनेखुलासोकरीने समजपा
नो संक्षेपथकिअमारीनजरपोहोचैनहि . गुरुवाक्यः--जे

परजावकेहेता जेजन्नीदशातेनेपरभावकहीए एटलेजन्म
नाजेजेकामठे तेनेधर्मकरीनेमानेछे केहेताजेमनेवचनका
याथकिजेकरणीकरवीतेसर्वे आश्रवछे तेनेसंवरकरीमा
नेकेहेताजे जन्नीक्रीयानावेभेदछे शुभतथाशुच एटले
संसारादिककरणी तेअशुभकरणी तथाशुचनानेकजेद
छे एकंद्रीयादीकनीदया तेनुपालणपोपण एसर्वेपापान
बंधीयापुन्यनेविशेछे जथाजोगतरतमजोगछे तथाजेबि
जीशुचकरणी शघ तीर्थजातराप्रमुखकरवाकराववा ते
पणसर्वेशुचकरणीछेतथाजसवजेजीउपाध्यायेसमकितना
सडसटबोलनीसजायनेविशेएवुकह्युछे जेआठप्रभाविक
साधुनहोयतो तीर्थजातराप्रमुखवालाछेकप्रजाविकछे ए
टले एकइआठप्रजाविकमाछेनहि तथातेने समकितना
पणनेमछेनहि तथाकरणीपणशुभनीजछे पछीतत्वतो
केवलोगम्ये तथाजे वरतनेमप्रमुखते पण शुचकर
णीछे परतुदेशविरती सर्वविरती छठासातमागुण
ठाणानाजावत अमियारमासुधीनाते तथातपवे तेसर्व
पुन्यानुबंधी पुन्यमापणछे तथानिरजरासांपणछे ते
नोविवरोकहियेछिये एटलेपाचमाछठागुणठाणासुधी प
रमादभावछे तीहांसुधीक्रियाआचारपणछे सातमेगुणठा
णैअप्रमादिछे तेमाकाइक्रियाआचारछेनहि तेछठासातमा
॥३३४॥ ॥३३४॥ तेने रजरा एछे तथाशुभाश्रव

पणछे अनेजेनेआत्मउपयोगनथी तेनेएकलोशुभाश्रवछे
 अनेजेसातमा उपरअग्निघोरमासुधी आत्मउपयोगविना
 होयनहि तेनेतोनिर्जराहोय तथापुन्यानुबंधीपुन्यहोय ए
 वनेवानांलाधे माटेएमविचारीजोवु एआश्रवनेधर्मकरी
 माने तेनेभावमिथ्यात्वलागे माटेजेधर्मने धर्मकरीजाणे
 अने आश्रवने आश्रवकरी जाणे एवाजीवतो जेवजाछे
 अनेशुजाश्रवनेधर्मकरीमानवावाला जीवघणादिसेछे ते
 नेभावमिथ्यात्वकहिए तथाअनादि मिथ्यात्वादिकनेद
 गुणस्थानककरमारोहनीटीकाथकीजाणजो तेकारणमा
 टेएजेद्रव्यभाव मिथ्यात्वगयाविना समभावथायनहि ने
 समभावथायविना श्रद्धास्थिरथायनहि श्रद्धाविनासम
 कितहोयनहि समकितविनातपजपकिरीयानएयुकशुबेले
 खामांगणायनहि अनेज्ञानविनातो धर्मतथामुक्तिछेजन
 हि शामाटेके आत्मस्वरूपनाउपयोगविनातो समकित
 केहेवातुनथी उपयोगछे तेतोज्ञानमाछे तेकारणमाटेज्ञा
 ननीखपकरवी शामाटेकेज्ञानछे तेहिजसमकिततथाचा
 रीत्रतथामुक्तिकहिए तेथ्रीजसविजेजीउपाध्याये सवा
 सोगाथानातवनमांकह्युंछे जेज्ञाननोतिक्षणउपयोग तेने
 चारीत्रकहिए तेमाटेज्ञानछे तेहिजचारीत्र तेहिजमुक्तिठे
 उक्तं च सर्वे यो एकतिसा ॥ कोइ क्रुरकष्टसहं तपसांशरी
 रदहं धुम्यपानकरै अथो मुखवहैके झुलेहै ॥ केइ महाव्रत

गहै क्रियामेमगनरहै वहेमुनिजारमे पयारकेसेपूलेहै
 इत्यादिक जीवनकोसर्वथामुगतिनाहि फिरेजगमाहि ज्यो
 वयारकेवघुलेहै जिनकेहियेमेज्ञान तिन्हहिकोनिर्बान
 करमकेकरतारजरममेभुलेहै १ तेकारणमाटेज्ञानछे एहि
 जमुख्यछे माटेज्ञानवकेकरिनेसर्वद्रव्यनुजाणपणुकरिने
 पाचद्रव्य हे जाणिनेछाडवा एकचेतनाज्ञानरुपउपादेजा
 णिनेआदेरवो तेथकीजआत्मानि कर्मथाय माटेआत्मानु
 ज्ञासनकरिनेमाहेव्यापकपणुकरवु नेरमणकरवुं त्यांहा
 जेदपणुनलाववु एटलेआत्मातेजपरमात्माछे एविरिते
 तद्रूपस्वसत्तागवेखिनेशक्तिजावेगुणछे तेव्यक्तिभावमार
 मणकरे तेनेजिवनमुक्तकहिए तेनोआत्माकर्मरुपरजथकि
 निर्मलथाय तेनाअसख्यातापरदेशनिर्मलकरिने सिद्धक्षे
 प्रमाजइनेसिद्धपणेरहे तेनेफरीथीजन्ममरणकरवांनपडे
 अनताकालसदाएसुखमारहे तेविनाकोइमुक्तिचाहेछे जे
 केटलाएकतोएमजाणेछेके तपथकिमुक्तिलेइशु केटलाए
 जाणेछेकेक्रियाथकिमुक्तिलेइशु केटलाएकजाणेछेकेप्र
 भुपुजवाथकिमुक्तिलेइशु पणतेवातमिथ्याछे इहाकोइ
 गहेशे के प्रभुपुजवामा मुक्तिठामठामकहिछे, नेतमेना
 मकहोछो, तेनोउत्तर के मुक्तितोआत्म स्वरुपमाछे
 थाजसविजेजि कृत साभिन्नणसें गाथानातवत्तमां वा
 १. पुपपनठे के अमेप्रभुपासे मुक्तिमागीलेइशु ते

नाउत्तरमाएवुकह्युंछेजे कोणमुलेकरिने प्रभुपासेथीमु
 क्तिवेचाथीलेशो एटलेवोधवीजकांइदिधुआवतुंनथी त
 थाश्रीहरिचंद्रसुरिजिकृत खटदर्शनसमुचय ग्रंथनेविशे
 एवंकह्युंछेके रागद्वेपनांतजवाथकि तथाज्ञानदर्शनचारि
 त्रनाआराधनथकिमुक्तिमले

॥उक्तच॥ जिनेद्रोदेवतातत्र॥ रागद्वेपविवर्जितः॥ हर्त
 मोहमहामल्लः॥केवलज्ञानदर्शनः॥४७॥सुरासुरेंद्रसंपूज्यः॥
 सद्भूतार्थप्रकाशकः॥कृष्ण कर्मक्षयंकृत्वा॥सप्राप्त.परमंप
 दं॥४८॥ जीवां १ जीवौ २ तथापुण्य ३॥पाप ४ माश्रव ५
 संवरौ ६॥ बंधो ७ विनिर्जरा ८ मोक्षौ ९॥नवतत्वानितन्म
 ते॥४९॥ तत्रज्ञानादिधर्मभ्यो ॥ चिन्नाचिन्नोविवर्तिमान्॥
 शुभाशुभकर्मकर्ता ॥ भोक्ताकर्मफलस्यच ॥५०॥ चैतन्य
 लक्षणोजीवो १॥यश्चैतद्विपरीतवान्॥अजीवः २ ससमा
 स्यात्॥पुण्यं ३ सत्कर्मपुद्गलाः ॥ ५१॥पापं ४ तद्विपरीतं
 तु॥मिथ्यात्वाद्यास्तुहेतवः॥ यस्तैर्वैधःसविज्ञेयः॥ आश्रवो
 सां ५ जिनशासने॥५२ ॥ सवर ६ स्तन्निरोधस्तु॥बंधो ७ जी
 वस्यकर्मणः॥अन्योन्यानुगमात्माचा॥यःसंबंधोद्वयोरपि ॥
 ५३॥बद्धस्यकर्मण.साढो॥यस्तुसानिर्जरामंता ८॥आत्यंति
 कोवियोगस्तु॥देहादेर्मोक्ष ९ उच्यते ॥ ५४॥एतानिनवतत्वा
 नि॥यःश्रद्धतेस्थिराशयः॥संन्यक्तज्ञानयोगेना॥ तस्यचारि
 त्रयोग्यता॥५५॥तथाभव्यत्वपाकेना॥यस्यैतच्चितयंभवेत्

सम्यग्ज्ञानक्रियायोगा ज्जायतेमोक्षभाजनं॥५६॥ प्रत्यक्षचपरोक्षंच॥द्वेप्रमाणेतथामते॥अनंतधर्मकवस्तु॥प्रमाणविषयस्त्वह॥५७॥ अपरोक्षतयाऽर्थस्य॥ग्राहकंज्ञानमीदृशं प्रत्यक्षमितरज्ञेयं ॥ परोक्षग्रहणेक्षया॥५८॥

एटलेजीनसासननुमुलकह्यु एटलेजेननादेव केवाछे जीनेद्रो केहेताजीनन्यमसामानकेवली तेमाहेइद्रसमानएवातीर्थकरपरमात्माते देवछे तेरागद्वेपे करीनेवर्जितछे महामोहमळकेहेता मोहराजानेहणीनेकेवलज्ञानकेवलदर्शनपाम्याछे माटेमोहतथारागद्वेशने जीतेतेनि मुक्तिथायपण ते विनाकाइमुक्तिहोयनहि तथासुरासुरइंद्रेपुजीततेशामाटेके सदभुतार्थ केहेताजथारथपरुपकछे तथाकृतकर्मकेहेता पुर्वेशुभाशुभकर्मकरेलां तेनोक्षय करिनेसंप्राप्त केहेतापाम्याछे परमपदकेहेतामुक्तिप्रतेएटले करचाकर्मभोगव्या विनाछुटेनहि अनेशुभाशुभकर्म क्षयकरचाविना मुक्तेजायनहीं . माटे कोइनाथी कोइनी मुक्ति थती नथी तथा मुक्तितोज्ञानने विशे ठे तत्रज्ञानादिधर्मभ्यो केहेताज्ञानदर्शन चारित्र आदे धर्मकह्यु तेधर्म जिन्नाजिन्नकेहेता नेदतथाअभेदएटलेजीवाद्दीनवतत्वनुवर्णववुतेनेदधर्मकहिये तथाआत्मद्रव्यनुजेगुणपरजायसहितकेहेवु तेअभेदधर्मकहिये तथा वचलाश्लोकोमां एनवतत्वनाविवरोठे तेनवेतत्वजीनसा-

सननेमतेकह्यांठे एटलेनवतत्वनीसर्धाकरे तेनेसमकीती
 कहिये तेमद्वेपांचतत्वतजवांकह्यांठे अजीव. १. पुन्य. २
 पाप. ४ आश्रव. ४ बंध. ५ कोइकेहेशेकेपुन्यनेतजवु केम
 कोहोठेतेनेकहिये अमेकेहेतानथीतेउपरलखेला श्लोकने
 विशेषपुन्यनेपुद्गलकहिनेवोलाव्युंछे.

॥उक्तंच॥पुण्यंसत्कर्मपुद्गलाइतिवचनात् एटलेपुन्यठेते
 सतेकेहेतांशुभकर्मनापुद्गलठे पुद्गलतज्याविनातोमुक्तिथाय
 जनहि शामाटेकेएहिजउपरकहेला श्लोकनेविशेकहचुठे
 ॥उक्तंच॥आत्यंतिकोवियोगस्तु॥देहादेर्मोक्षउच्यते॥श्लो
 क ५४ मो टीकाः॥तथेत्युपदर्शने ॥ परिपक्वन्नव्यत्वेनतद
 ज्ञावात्॥अवस्यकमोक्षगंतव्येन॥ पुंसस्त्रियोवाज्ञानदर्शन
 चारित्रत्रयंसपुमान्मोक्षजाजनं ॥ मुक्तिश्चियंभुंक्तेसम्यगि
 ति॥सम्यक्तज्ञानमागमा ऽवबोध क्रियाचरणकरणचरणा
 त्तिका॥तासायोगसंबंधःनकेवलज्ञानदर्शनचारित्रं वामो
 क्षहेतुकिंतुसमुद्धितंत्रय ॥ एटलेएचोपनमाश्लोकनीटीका
 ठे तेनेविशेपुरुषादी वेदनेविशेमुक्तिनीनापाप्मीठे तथाच
 रणसितरी करणसीतरीथकीपण केवलज्ञानकेवलदर्शन
 निनापाप्मीठे माटेपरमेश्वरपुजवामांतो मुक्तिक्थांथकी
 जहोय मुगतितोज्ञानदर्शनचारित्रनेविशे कहिठे तेटीका
 थकीजाणजो इहांकोइकेहेशेकेचारित्रतो पंचमहाग्रतादी
 कवेहेवारजठेकेनहि त

एउपरनाश्लोकनेविशेषचावनमोश्लोकते तेनेविशेषएनव
 तत्वनीसर्वाकरेतेनेसमकीतिकहिये तेहिजसम्यक्तज्ञानते
 नेजोगेरमणतातेनेचारीत्रकह्युते नेसाध्यसाधन जोगजे
 व्यवहारचारीत्र तेनुप्रयोजन तथाफल आकाशनाकु
 शमवत कह्युते तेश्लोकनीटिकाथकिजाणजो जेसमकित
 ज्ञानचारित्रतेजमोक्षते शामाटेकेसम्यक्तज्ञानक्रियायोगा
 केहेतातत्वनीजे सरधाकेहेता जेद्रव्यगुणपरजाय ज्ञा
 नादि रत्नत्रयीनुसतजासन प्रत्यक्षपरोक्षवस्तुनुविचारवु
 तेने ज्ञानकहिए नेसतवस्तुनीसरधाकरवी तेनेसम्यक्त
 कहिए एटलेसरधातेसमकितजाणवु तेज्ञानविचारवुते
 क्रिया एटलेसम्यक्तज्ञानक्रिया योगाजायतेमोक्ष जाजन
 एटलेएवुसमकितज्ञानक्रियाहोय तेमोक्षनुजाजन थाय
 तथाप्रत्यक्षच परोक्षच द्वेपरमाणेतथामते तेप्रमाणनुस्व
 रुपटिकाथकिजाणजो तथाअनतधर्मकवस्तुप्रमाणविषय
 स्त्वह ५७ यस्यटिकायेनकारणेन यदूत्पादव्ययध्रौव्या
 त्मक तत्सत्स्वरूप मिष्यतेतेनकारणेन अनंतधर्मात्मक
 वस्तुप्रमाणगोचर सर्ववस्तुपु उत्पत्त्यादित्रय युक्तास्यैवा
 अनतधर्मतातेनैवपुनरनत धर्मात्मकत्व मुक्तनपौनरुक्त्य
 ५७ एटिकानेविषेउतपादव्यय ध्रुव्यात्मीक तेसततेने
 सतस्वरूपकहिए तेनीजेनेइगते तेनेअनतधर्म आत्मिक
 वस्तुप्रमाणजाणीने- सर्ववस्तुनुउत्पादादिक त्रिययुक्त

श्वेतेने अनंतधर्म आत्मक कहिए तेनी जमुक्ति कहिए तेवि
 नामुक्ति ठेनहि एजिन सासननुसार ठे माटे ए आत्मस्वरुप
 नेविशे भेद अज्ञेदज्ञाननुविचारवु एटलेशुद्धव्यवहारतेने
 दज्ञान ठे नेशुद्धनिश्चयकेहेतां अज्ञेदज्ञान ठे हवे अज्ञेदज्ञान
 केहेतां जेज्ञानदर्शन चारीत्र आत्मानाघरनुठे एमजेवोल
 वुनेव्यवहारथयो एवुजेध्यानतेने भेदभावरह्यो पोतेने पोता
 नागुणमाजुदापणुरह्युं आत्मा एकहतोतेना त्रणजे
 दथया एटले, व्यवहारनयकह्यो जो अज्ञेदज्ञानविचारीने
 जोइये त्यारेतो आत्मा एकजदेखायठे एकजजाणिएठिएते
 नेजविशेरमणकरिए इहां ज्ञानादीकगुणजुदानथी आत्मा
 तेज्ञानादिकगुणं तथाज्ञानादिकगुणते आत्मा जथाद्रष्टांते
 सुवर्णनुचारेपणु स्निग्धपणु पिलागपणु तेकांइसुव
 र्णथकिनोखुनथी तेजसुवर्णठे एविरीते आत्मस्वरुप
 निसरधाकरवी तेने समकितदर्शन कहिए तेजाणवुतेने
 ज्ञान कहिए एनेजविशेथीरथइनेरमणकरवुं तेने चारित्रक
 हिए एजस्वरुपनेउपयोगदेइने जुवेतो सिद्धपरमात्मारु
 पजठे एविरीते जध्यान करतां मुक्तिथाय पणवीजरीते सर्व
 थामुक्तिथायनहि. उक्तंच

दूहाः-- एकदेखीये जानियो ॥ रमिरहिये एकठौर ॥ समल
 विमलनविचारीये ॥ यहसिद्धिनहि और, १
 सबैया. एकतिसा ॥ जाकेपदसोहतमुल्लन अनंतज्ञान

स्तरो जीउंजलमाहीतेल मुखमुखएहीप्रगटहोवो अथ
गुणकीरेल ॥९॥ अक्षयधीतीमेरुतणी तेमएग्रथनीवास
रवीशशीपेरेअवीचलरहो उत्तममुखमेवास ॥१०॥ संवत
वंगणीशतंगणीशमा सुदरआसोमास कृश्वपक्षतिथिसप्त
मीपुरणथयोउलास ॥११॥ शितलकारीसोमवार आमो
वगाममोजार वाचजोभणजोचविजना तेलेशेभवपार ॥
१२॥ एग्रंथरुदियेधरी ध्यानकरशेजेह मुनिहुकमसुखस
पदा पामशेशिववधुगेह. १३ इतीसपुदय

इतिश्रीमिथ्यात्वविध्वंसननामा
अथसपूर्ण

श्रीरागमाला.

श्रीगुरुभ्योनमः

उसकानामदर्वविलासः ॥ याग्रंथमैरागवालाकुतोराम
 हैठरकविजनाकैलीया ठरपंमितजनाकैलियादवीणजोग
 मै चिदानंदलीयाअनुलोकों स्वरुपहैसोग्यातापुरसांका
 बीचारवाजोगहै ॥ प्रथमरागभैरवी ॥ चिदानंदजोरैभाइ
 चिदा० ॥ आकणी. सहेजस्वभावमेंसदाजोरहैवे रागभैरव
 मेगावे वोहीपरीब्रह्मवोहिपरमेश्वर वोहिचिदानंदका
 हावेरेभाइ ॥ चिदा० ॥ उनकिकिरपावमेयेहोवै मेरीइच्छापु
 री रागमालामेकरतहू नहिकोइवातअधुरीरेभाइ ॥ चि
 दा० ॥ ढरवाणुपरजायजहिने येसवरागमेगाउ मुनिहूक
 मचिदानंदमुरति शुद्धस्वरुपमेपाउ ॥ इतिप्रथमपदसंपुर्ण ॥

रागनिचैरवी ॥ चेतनदरवजाणेरी दरवगुणपरजाय
 उनकु लक्षणैतेसमजेरी ॥ नएनिपपतत्वैकुजाणे जेदसंक्त
 करेरी ॥ १ ॥ श्रीजीनवैरनेऐसांजाख्या परजायनेएग्रहेरी ॥
 सुद्धसंकीतउनसेहोवै यावीनचितठरेरी ॥ श्री. २ ॥ चारअनु
 जोग्यमेएकजाख्या ढरवाणुजोगकहेरी ॥ मुनीहूकमएनीश्वे
 अनुजोग रागनीभैवीवोहोरी ॥ श्री. ३ ॥ इतीदुतीयेपदसंपुर्ण ॥
 रागनीबिजास ॥ जीवांदीवस्तुदरवकुभावस्वरुपीतेक
 हियेरे जीदरवैदरवप्रैतेकैतेजाणो बिरोधअपनेमेनालहियेरे

॥जी. १॥ जथारथस्वरुपहैयाका व्यापव्यापकेकहियेरे ल
 व्बणयेहैवस्तुस्वरुपका सचाचीतमेलहीयेरे।जी. २। जीवद
 रवअनंताजाण्य कारजनेदेजाणोरे ॥ भावनेदेतोएकज
 कहिये खेत्रकालनावखाएयोरे ॥जी. ३॥ समुदायएउन
 काभास्या दरवादीचतुष्टीलहियेरे॥मुनीहूकमचिदानंदंन
 जतां रागनीवीभासएकहियेरे॥जी. ४॥ इतित्रीतीयेसपूर्णः॥
 रागनीललता॥दरवप्रैतैसमजेनेजीया प्रदेशप्रदेशेजांणो॥
 स्वैस्वैकारजकारनउनका साम्प्रथरुपवखाणो॥ दरव. १॥
 अनताअविजागपरजायका तीनकेसमुदायरुप॥ ताकोगु
 एकहैहैग्यानि याकोसमजोसवरुप॥दरव. २॥ कारजका
 रणभिन्नतिवै तिहासाम्प्रथरुपलहिए॥ गुणपरजायचिन्न
 भिन्यैये गुणपणअनंताकहिये ॥दरव. ३॥ गुणगुणपरतै
 परजाय अवीजागरुपलहिए॥अनतापणसरखाभास्या
 वरजायआस्तीरुपकहिये॥दरव ४॥ प्रतिकेवस्तुअनंती
 तैथिअनंतगुणजाणो ॥ मुनिहूकमसाम्प्रथपरजायरागनि
 ललतागवाणो॥दरव. ५॥ इतिचतुर्थयसंपूर्ण॥

रागनिपटमंजणी ॥ उठतेरोरुपदेखोचौदानंदराया
 दर्वकेलक्षणजाणो तीनुकानेदकाहाया॥ उतपातवयैद्वय
 जुक्तसंतलगाहाया ॥१॥ दरवास्तिकपरथमनेयनास्या
 परजायेनयैदूजो॥उभयैनयअपिष्याविलंबनजाणो उनसै
 मोहोधुजो ॥२॥ गुणपरजायसहिततेदर्वे जाणगबक्तासा

चो ॥ मुनीहूकमयेपटमंजरी रागनिगायराचो ॥ ३ ॥
इतिपदपंचमोसंपुर्ण॥

रागनीपट ॥ परजायनयविचारतचेतन संतधर्मसोक
हियेरो॥परःअर्थक्रीयाकरेजोदर्वे परजायअपीप्यालाहिये
रो॥१॥परःआपआपणीसक्तीसारु धर्मअपीप्याकहियेरो॥
धर्मअधर्मआकाशजाणो पुद्गलजतेलहियेरो॥२॥ ठाका
लदरवतेनास्यो आपआपकेलप्यालहियेरो॥मुनीहूकमये
दरबस्वभावै रागनिषटयेकहियेरो॥३॥इतिपदठोसंपुर्ण

रागमालकोस॥हेजीयाचेदग्यानयहैकीजै पंचास्तीका
यचितलीजै॥आंकणी॥ठादरवैकालसोभास्या उनकुआ
स्तितनेकीजै ॥ अप्रदेशीसैदातेजाणो उपचारदरवतोलिजै
॥१॥ तेकारैणेअस्तीकायनेनापौ वस्तुविनाकाहाकीजै ॥
नास्तीपणोदरबकोदेखिउपचारैनेपतिजै॥२॥रागमालको
समाहिगायो कालतणोअनावै ॥ मुनिहूकमपंचास्तीका
यको आगैनाखुस्वैभावै॥३॥ इतिपद ७ संपुर्ण॥

रागनीटोमी॥समेजोरेहूग्यानद्रव्यकु खटदरवैकोविचा
र ॥ आंकणी ॥ प्रथमद्रव्यधर्मास्तीनास्यो लोकप्रमाण
अखंढ ॥ एकद्रव्यउनकोएजाणौ जिवपुद्गलकुआणंद ॥
॥गाथा१ ॥ जेजेगतिप्रणमता पुष्टहेतुएजाणो॥असंख्य
परदेशलोकप्रमाणे एहिदर्ववखाणो॥२॥जबजिवमुक्षैजा
वै तिहाकांमनआवै॥ मुनीहूकमयेशुद्धस्वरूप नेटोमीराग

नीगावै ॥३॥ इतिपद८संपूर्ण॥

रागनीआसावरी ॥ सिद्धस्वैरुपप्रणमिजेभाइ ग्यानशु
धारसपिजै ॥आकणी॥ सिद्धअवस्तामेंसाजकारि अधर्मा
स्तिकायकहिजै ॥स्थिरताभावअनंतायाको उपयोगमेंपण
लहिजै ॥गाथा१ ॥जिवपुद्गलस्थिरताभावै पुष्टहेतुएकहिण ॥
असंख्यपरदेशएलोकप्रमाणो दुजोदरबएवहिण ॥२॥आ
सच्छोमआसावैरीगायो शुद्धस्वरुपमैरहिण ॥मुनीहूकमचि
दानंदभजतां शिवरमणिसुखलहिण ॥३॥इतिपद९संपूर्ण॥

रागनीविलावल ॥जियालोकस्वरुपकुजाणो अवगाह
कस्वजावखाणो ॥आकणी ॥पुष्टहेतुसर्वदरबकु आकास्ति
कायकांहांणो ॥ अवगाहानासर्वकु देवैसोयेदोजातजाणो
॥१॥लोकअलोकदोयकहिण वाकोस्वरुपहुंजाखु ॥ जिवा
दीस्वरुपवसेजीहा सोइलोककैहिदाखु ॥२॥असंख्यपरदे
शउकेनाखे अवकहूअलोकविचार ॥ अनतपरदेशउनके
नाखे पणनहिदरबपरचार ॥३॥ अवगाहकशक्तीउनमै
पणलेनेवालानाहि ॥ लोकअलोकउभयेमीलकै येस्वैरुप
हैत्याहि ॥४॥ अनंतपरदेशीदरवैयेतीजो आकास्तिकायते
कहिये ॥मुनिहूकमयेजाजनकाहाणो रागनीविलावल
हिये ॥५॥ इतिपद १०संपूर्ण॥

रागनीकुब ॥ चेतैनक्योतुनाहिबीचारै पुद्गलदरवैकुधा
॥आकणी ॥ अतिशुद्धमैपरमाणुजाण्या नित्यैस्वजाविकजे

हा॥ बरणगंदरस एक एक भांख्या दोय फेर सै कहियै तेह ॥ १ ॥

श्रीसेपंचगुणहिजीनमें सोईपरमाणुजाण ॥ कारणकारज
मीलकेनंनमें पुराणगलनचितत्राण ॥ २ ॥ पुद्गलदरवैया
कौकहिये चोथोरूपीमांन ॥ मुनिदूकमयेरागनी कुकव
अगैपुद्गलवखाण ॥ गाथा ३ ॥ इतिपद ११ संपूर्ण ॥

रागनिगुणकली ॥ जीयापुद्गलस्वरुपतेयेह लोकमें
अनंतातेह ॥ घणुकपंदतेजांण अनंतातेहवखाण ॥ गाथा १ ॥
तणुकपंदपणकहिये औंअसंख्यातीकपंदलहिये ॥ असं
ख्यातीकपणभाख्या अनंताणुकतीहांदाख्या ॥ २ ॥ येसर
बेसवदजाणो येकयेव्याअनंतवैखांणो ॥ येकआकाशपरदे
शैकहिये अनंतापंदतेलहिये ॥ ३ ॥ येमपंचपरकारथीजा
ख्या अचेतनचितमैराख्या ॥ मुनिदूकमकहैतेत्यागो गुन
कलीकुगांणैलाग्यो ॥ ४ ॥ इतिपद १२ संपूर्ण ॥

रागहीमोल ॥ अरेजीयाजाणतुसहैजसुभावकु चेतनाल
क्षणेसहैतदाख्यो ॥ चेतनादोयपरकारकीजाणी ग्यानदर
शैनउपीयोगमेआणीयै ॥ अनतपरजायपरणामिकदरव
ये उनकेदोयप्रकारेवैखांणियै ॥ १ ॥ करत्वादिलंवाहै जीव
कापरचवैतेअशुद्धजानो ॥ शुद्धस्वैजावमैरमैजवचिदघन
शुद्धपरजायकुतेहैमानो ॥ २ ॥ उपीयोगवंततेचेतनाजानी
यै वीन्यउपीयोगजेमैजानो ॥ मुनीदूकमरागहिमोगोवाथकी
शुद्धउपीयोगथीशीवसुखवस्वांनो ॥ इतिपद १३ संपूर्ण ॥

रागसारंग॥ पचास्तीकायकेमानमे नीजरुपपीछाना
 तानमै॥ अरुपीचिदानंदस्वामी जीवएकवखानमै ॥ पं० १ ॥
 ओरचारी आस्तीकायये अजीवदरवतेजाणीयै॥ वाकेपरा
 वर्तननीमीतै कालदर्ववखाणीयै ॥ पं० २ ॥ प्रत्वांप्रत्वेवैके
 कारणमाटे गटोदर्वचितआणीयै येदर्वनेपरदेशनहीछै ते
 थीआस्तीकायनजाणीयै ॥ पं० ३ ॥ व्यवहारनयअपीक्ष्या
 यदर्व समीयेखेत्रदाखीयै ॥ आदितपरीठेदपरीमाणे समी
 येआवैलीवखाणीये ॥ पं० ४ ॥ तेमाटेआस्तीकानहि
 आस्तिकायपचधारीयै॥ मुनिहूकमकहैआगलकहैशुं राग
 नीसारंगविचारीयै॥ इतिपद १४ -- संपूर्ण ॥

रागनीगोम॥ अपनारुपजबहमनीरख्या पंचास्तिका
 यमाहितेपरख्या॥ आकणी ॥ जीवस्वरुपअसखपरदेशी
 लोकपरमाणेपरदेशतेधारो॥ तैमजधर्मअधर्मकहिये प्रतेके
 प्रतेकेपरदेशविचारो॥ १ ॥ लोकअलोकमलीनेकहिये आ
 कास्तिकायएककाहाणो ॥ प्रदेशअनतायेनाकहिये चोथो
 पुद्गलदरवचितआणो॥ २ ॥ येकअनेकप्रमाणुरुपये खधहे
 तुजुगतयीकाहाणो ॥ तेथीदर्वयेहैनेकहिये आस्तिकायत
 णोप्रेमाणो॥ ३ ॥ येमआस्तिकायपाचैजाणी तेमैजीवास्त
 आपणोधावो॥ ओरआस्तिकायचारतजीने मुनिहूकमराग
 नीगोमगावो ॥ ४ ॥ इतिपद १५ संपूर्ण ॥

रागनीशुद्धसार॥ चेतनअपनोधर्मसमारो सामा विशेषनि

हारो॥आंकणी॥येधर्मपंचास्तिकायमै प्रथमसांनकाहाणो॥
 स्वजावलक्षणउनकेचाखे प्रतेकेप्रतेकतेजाणो ॥१॥ दर्व
 गुणपरजायव्यापक परणामीकलक्षणस्वभावो येकपणु
 नेनित्यप्रतीहा अविअवरहितपदध्यावो ॥२॥ कीरीयार
 हितसरबगतजाणो एसांमानधर्मकाहाणो॥पंचास्तिकाय
 माहितेकहीये सदास्वभावचितआणो ॥३॥ वशेपधर्मह
 वेतेकेरोआगेअमेतेकहिशुं ॥ मुनिहूकमशुद्धसारंगावतां
 चितहरखाशुं ॥४॥ इतिपद १६ संपूर्ण॥

रागनीमालसीरी॥ अपनाधर्मधावोआतम बसेसजाव
 चितजावो॥आंकणी॥वेसेसधर्मपंचास्तीकायमे द्रव्यगुण
 परजायजाणो॥व्यापकत्वेस्वरुपतेकहिये गरुगमथीचित
 आणो॥१॥परमाणीकलक्षणस्वजावजे एमअनेकचितधा
 रो॥एकअनेकनेनित्ययअनित्यए नीरअविएवस्वैअवियेव
 विचारो॥२॥संक्रियेपदएहमैजाणो देशगतसर्वगतपरवेस
 ॥बसेपपदारथगुणपरवरती कारणपणहोयबीशेप॥३॥न
 हिंसामानबसेपविठे विशेषसामानविनताही॥दोयधरमस
 दारेहेजीहां आस्तीकायकहियेत्यांही॥४॥मुनीहूकमयेह
 धर्मठे स्यादबादस्वरुपो॥रागनीमालसीरीयेगाइचिदानंद
 अनुपे॥५॥ इतिपद १७ सपुर्ण.

रागनीमुलताइ॥चेतनसामानस्वभावसमजा औरसम
 जासेकौनमजा॥आंकणी॥मुलसामानस्वजावकहियैखट

भेदउनकालीया॥ आस्तीत्वैनेवस्तुत्वैजेह दरवत्वैतीजाकी
या॥१॥ परमेत्वैनेसतत्वैये अगरेलघुबटाथया॥ येसामान
सुभावेकेनेदहै खटविधएरचनाकह्या ॥२॥ सामान्नतेसबै
दरवमेलाधे सरस्वाधर्महोयखरा ॥ मुनीहुकमअर्थआगे
रागनीमुलताइवरा ॥३॥ इतिपद १८ संपूर्ण.

रागमलार॥ आतमआस्तीस्वभावभाखी सुधैधर्मतेदा
खे॥ आकणी॥ वसेसधर्मकेआधारभुतजो सोहीआस्तीत्वैक
हियो॥ गुणपरजायधरियाकु वस्तुत्तरवैभावलहियो॥१॥ अर्थ
क्रोयाकरेसोदर्व अथवाउतपातवैयजाणो॥ उतपतीपरजा
यपुत्रपीताजीम आविरभाववखाणो॥२॥ प्रैसवैसमलक्षण
विरजभुत परजायतीरोभावकहियो॥ भावरुपसक्तीआराधे
दरवत्वचौथोलहियो॥३॥ सपरवविक्ष्यांग्यानप्रमाण नीति
प्रमाणतेकहियो॥ स्वगुणमेप्रणमेजोचेतनसुधपरमेत्वैलहि
यो॥४॥ उतपातवैयदूर्वजुक तेहनेसत्वैतेजाणो॥ हाणवद्वीख
टगुणीजीहावै अगरेलघुवखाणो॥५॥ एसामानस्वभाव
खटनो अर्थसखेपेनाख्यो॥ मुनीहुकमयेरागमलारे नीज
स्वरुपुकहिनेदाख्यो॥६॥ इतिपद १९ संपूर्ण.

॥रागनीमलार ॥ सामानसुभावकेउत्तरभाखु आस्ति
स्वभावकेजाणो॥ अनतनेदयाकेभाखे, पणत्रियदंशवखा
णो॥१॥ सामानसुभावकेउत्तरभाखु आस्तिनास्तीनीतसु
भावै॥ अनितएकसुभावै अनेकभेदअभेदकहिए॥२॥ नव्यै

अजव्यैतेलावो बकैतव्यैअवकतव्यैजाणो॥परमस्वभाव
तेरमोलहिएःउतरसामानैवखाणो॥३॥ उतरसामानैसंब
दरवैमें सरखेभावैलाधे॥मुनीहुकमएमलाररागनी गातां
मनुजोवाधे॥४॥ इतिपद २०संपूर्ण॥

॥रागनीदेशी ॥ आस्तितास्वैनावमे दरवादिचतुष्टि
जाण ॥आंकणी॥ व्यापव्यापकैसवधथी सत्यधिआप्रण
मंता॥मनहेतुअतरंगनी प्रणमतागुणग्रैहेहंत॥ १ ॥ सुधव
स्तुस्वैनावनी शुधप्रणतिजाण॥आस्तिसुभावनैनाखियो
चिदानंदवैखाण ॥ २ ॥ आत्मस्वरुपआस्तिमये भाखो
शुधरुप॥मुनीहुकमदेशिरागनी गात्रस्तुअनुप ॥ ३ ॥
इतिपद २१संपूर्ण॥

॥रागगुजरी॥ नास्तिपणोविचारोदरवैमैसोय सरवव
स्तुमैगवेखिजोयै॥आंकणी॥जीहाआस्तितीहांनास्तीहोय
जीहानास्तितीहाआस्तीजोया॥ दरवादिकचतुष्टिधार आ
पआपणीलहोविचार ॥१॥ दरवादिकचतुष्टिजेह स्वैग्रहै
आस्तीपदतेह॥परदरवादिकचेतननेनहि जेग्रहातेनास्ती
सहि ॥२॥ ग्यानदरशनादिजेगुण दरवखेत्रकालभादथी
सुण॥आरतीनावचेतनमैलयो परचारेनास्तीमैकयो ॥३॥
ऐमस्वरुपसजेजेआप तेहिजसादवादनेयथाप॥मुनीहुक
मएधर्मअनुसार गुजरीरागनीबैमनुहारा॥४॥पद २२संपूर्ण॥
॥रागनीबाहार ॥ अमरतुकरतजाणपणाकीवात

॥ टंक ॥ संदैन्यावत्रसदजावतेजाणो आरपितत्रणारपी
 तविचार॥सपरपरजाएसहि एनंगमनुहार ॥१॥ वसेखप
 णेगविखीयेतो वक्तंव्यत्रवक्तव्यधार॥उन्नैयन्नेदलाधैबै
 येहमै सैमजैतासुखकार ॥ २ ॥ तेहस्वरुपसप्तभंगीमांहि
 नाखुआगैविचार॥ मुनीहूकमएचिदानंदमयै गाइरागनी
 बाहार ॥३॥ इतिपद २३संपूर्ण॥

॥ रागनीसुवा ॥ प्रथमजंगतेआस्तीकेहिए सर्वदरबमे
 धार ॥आकणी॥ दरवगुणपरजायमाहि आस्तीपणोतेजा
 णा॥प्रेतेकैरदरवमेलहिए गुणपरजायैबखाण॥१॥ सटजा
 वैआपआपणो गुणपरजायतेहोय ॥आपआपणादरबमै
 लाधे आस्तीपणोतिहाजोय ॥२॥ अरपीतपणोतेवस्तुनु
 होवै सोइवस्तुधर्म॥एकसमेतेसरवेजासे सोइग्यांनीमर्म
 ॥३॥बढसस्तनेतोअनुक्रमैजासै सरधाएकसमेयीयेहोय॥
 मुनीहूकमएप्रथमजागी रागनीसुवामैजोजोयै ॥ ४ ॥
 इतिपद २४ संपूर्ण॥

रागश्री॥अपनारुपरचैकेदेखी नहीपरगुणस्वभावै॥आ
 कणी॥आपस्वरुपमैलाधैनाही परदरवपरजाय॥गुणलक्ष
 णशुजावतैलाधै तेथीनास्तिपणोथाया॥१॥नास्तिस्वैजाव
 येहैआपको आस्तिपणोतेजाणो॥दोउन्नेदयेजीवकाकाहिये
 इमसबदरबैवखाणो ॥२॥ बीजोभंगयेवखाणो नास्ति
 स्वभावनैजाणो॥मुनिहूकमयेचिदानंदमेय श्रीरागबखाण

॥३॥ इतिपद २५ संपूर्णः

रागनीधनासरी॥क्यांकहूचिदानदघनकी मुखशुंकहीन
जाया॥आकणी॥स्वपरपरजायदोउलाधै सदभावासदजा
॥संत्वासंत्वपणेयेकहिये-अर्पितअणअर्पितलाव ॥१॥ ये
मअनेकजंगतिहांलाधै दोदोभंगतेकहिये॥सकेतसवदनो
रहोउइहां तेथीआस्तिनास्तिनलहिये॥२॥तेथीअवेक्तव्य
वेजास्यो त्रीजोभांगोयेलहिये॥गुणपरजाययेआत्मदरब
नाअनंतजेदतेकहिये॥३॥ तेथीएकसंमनकहैवाये आत्म
स्वजावयेमधावो॥मुनीहूकमयेरागनीधनासरी शुद्धस्वरु
पमेगावो ॥४॥ इतिपद २६ संपूर्णः

रागनीकाफी ॥ अपनारुपनिहाराजबहमने अपनारुप
निहारा॥आंकणी॥ स्वपरजायआस्तिकहीये सोतोसंतका
हावै॥नास्तिपणोठैपरपरजाये सोतोअस्त्वैयावै॥१॥ दोउ
भावयेकसमीये चैतनमांडलहिये॥ तेथीभांगोएचोथोभा
खो मीश्रभावतेकहीये॥२॥ एमस्वरुपआतमकेरो समजे
तेग्धानजाणो॥मुनीहूकमतेबिनअगन्यानी रागनीकाफी
काहाणो ॥३॥ इतिपद २७ संपूर्णः

मुगराइरागनी॥ आतमाआपसरुपजाने बर्चनगोचरत
हीठाणै॥आंकणी॥स्वैपरजायदेशथी सदजावैजाणो॥अन
परजायवशेपथी अनर्पितअसतआणो ॥१॥ एकसमेजुग

वचननहिजाचो॥२॥ जाणापणार्थीआस्तीपणोए एवचने
 अवक्तव्यैजाणो॥ तेथीभागोपाचमोकहिये आस्तिअवक्त
 व्यैवखाणो॥ ३॥ सरवैटरवमेभगयेवै जेमजीवमेजाखो॥
 मुनीहूकमजाणपणोसाचो रागनीसुगराइदाखो॥ ४॥ इ
 तिपद २८ सपूर्ण.

रागनीपर्ज ॥ अपनेरुपमैजागोछंठो नास्तिअवैत्व
 जाण॥ परस्वभावअपनेरुपजे नास्तिभावैचीतठाण ॥१॥
 अजजुगपतइहाकनैभाखु आस्तिनास्तिअवक्तव्यैसोया॥
 येकदेशेस्वैपरजायै अर्पितभावैजोय ॥२॥ अनयेकदेशे
 परजायै अणअर्पितजाववरीयै॥ सदजावअसदजावै स
 त्यअसत्यकरीयै ॥३॥ एसर्वेअवक्तव्यैजाणो जांगोसात
 मोकहीये॥ स्यादआस्तिस्यादनास्ति स्यादअवक्तव्यैलही
 ये॥४॥ येसत्तैभगीवीशेपाविशेपै यहैस्वैरूपकाहाणो ॥ भि
 न्नस्वरुपसत्तन्नगीकेरो रतनाकरअवतार्कायजाणो ॥५॥
 येसत्तभगीसर्वदरवमै नित्यादिकनिवखाणो॥ मुनीहूकम
 स्यादवाटये रागनीपर्जलखाणो॥६॥ इतिपद २९ सपूर्ण

होजीयास्यादवाटवीचार॥टेका॥ सत्तभगीमैमुखपणैये
 भगवीनवीचार॥ स्यादआस्तिस्यादनास्ति स्यादअवक्त
 व्यधार॥१॥ आस्तिपणैआस्तिधर्मठे नास्तिपणैनास्ति
 धर्मा॥जुगपटेउभीयेधर्मठै येस्यादवाटमरमा॥२॥ सामान
 विज्ञेपधर्ममेलोधे गुणपरजायमैजाण ॥ प्रतेकेप्रतेकेसत्त

भंगीजाणो नित्यादीकवखाण ॥३॥ स्यातपदग्रीहीनैकहै
ता-दोगेणनेआवेयेक॥येमस्वरुपस्यादवादनो साचीग्या
नेनीटेक॥४॥येजाणोतेनेसरवेजाणो बीजातोविदाअभ्या
स॥ मुनीहुंकमचिदानदमये रागनीमारेवेणप्रकास ॥५॥
इतिपद३०संपुर्ण॥

रागनीगोप्नी॥स्वजातीमैआस्तिनास्तिपणो तीहांकहिने
दाखो॥आंकणी॥जीवेजीसजातीजाखां पंचवीजातीकहीये
॥ स्वैजोवआस्तिपणोवै परजीवनास्तीलहिये॥१॥ग्यानै
ग्यानआस्तिजावठे दरसनादीनास्तीभावै॥स्वेगीनानते
आस्तीजावठे परगीनानतेनास्तीगावै ॥२॥आस्तिपणोते
नास्तिनेहोवै नास्तिपणोतेआस्तीनैथावै॥आपणोगुणते
परमेनजावै परआपणमेनाआवै॥ ३॥ स्वजातीधर्ममांयै
रहैवै परजीवनीनवीहोवै ॥ एमगुणपरजायादिसरवमै
आस्तिनास्तिजोवै ॥४॥ आस्तिनास्तीसरुपयेजाणो स
जातीमैजाखु मुनीहुंकमयेनीजसुभावमै रागनीगोप्नीये
दाखो॥५॥इतिपद ३२ संपुर्ण.

रागनीपुरवी॥ चेतननित्यसुभावसमजोनेजाइ चेतनः
दोयप्रैकारनित्यसुभावै समजोएहबिचार॥ उप्रैचुतीनीत्यै
तांजाणो परंमपरनित्यैताधारै॥१॥सर्वदरवैमेएहैस्वैजाव
ठे तेहैनादोयैप्रकारै॥ उर्धताप्रचियैप्रथमैजाखो त्रिजकप्रे
चीसारै ॥ २॥ येदरवसभावैनीतै उतपातवैयैदुजोनिते॥

येमअनेकस्वैभाववैदरवमे समजलोहोमीत॥३॥ नित्यैश्च
नित्यैसुजावएमजे सर्वदरवमाहि॥मुनीहुकमतेसाचोग्या
नी रागनीपुरबीगाइ॥४॥ इतिपद ३२ संपूर्ण॥

रागनीऐमैत॥नित्यस्वैजावधीबीधध्यावा दूजेयेप्रकारै
रो॥आकणी॥कुटंस्तनेपरणीमीकयहैसरुपहुदाखु॥परदेसै
येकुटस्तकहिये गुणमैप्रणामिकराखु॥१ चेतनप्रदेशनित्य
कुटस्तै इनुपरवैरतनैनाहि॥परवैरैतनतोगुणपरजायमै
सोपरणामीकनीत्यताकाहाइ २ एजेदतोसरवैदरवैमे स
मजैतैनेजणायो॥मुनीहुकमयेरागनीऐमन गाताहरखन
रायो ३ इतिपद ३३ संपूर्ण॥

रागनीगयानाटा॥ परजायधर्मकुञ्जिन्नञ्जिन्नकर आपो
आपसमारो॥ आकणी॥शेकारीलक्षणेजेहमै तेहनेदर्वैक
हिजे॥दरवैदरवैप्रतीप्रदेशे गुणमैपण कहिजे १ उपादान
कारजकारण प्रणामीकपरैजायै॥व्यापकेपरजायउतपात
कहियै गुणतेदरवत्वैथायै २ शैमियेरैउतपातवैयै सर्वद
रवैमेलहिये ॥ गतिथतीश्रवगाहवरतना मलैबियरणैक
हिये ३ चेतननोउपीयोगगुणवै वस्तुस्वैजावकीकहिये॥उ
तपातवैयैयेसरवेमेलागै गुणादिकमैकहिये ४ कारणका
रजपोतानोकरता एमग्यानतेलहिये॥मुनीहुकमप्रथम
व्याख्या परजायैरागनीनटमैकहिऐ५इतिपद ३४संपूर्ण॥
॥ रागनीवमहंस ॥ तुमतोशुंधर्मआराधो चिदानदकु

साधो हो ॥ टेका ॥ निजदरवपरणा ~~मिका~~ नोहि धर्म
 साधो ॥ १ ॥ तुम ॥ पुर्वपरयजायवकर ~~न~~ उतपादो ॥
 दरवपणोदरवपणैकहिये येहि ~~न~~ तुम ॥ पर
 जायव्याख्याधितियेभाखी ~~न~~ मुनीहूक
 मबहंसरागनी समजेएहनु ~~न~~ संपूर्ण ॥
 ॥ रागकालंगमा ॥ चेतन ~~न~~ दरणामिक
 प्रावर्ति ॥ गुणादिपणेएम ~~न~~ चरती चे ०
 १ ॥ अतितअनागत ~~न~~ हिये ॥ वर्तमा
 नपरजायएकठे एम ~~न~~ वर्तमानपर
 जायअतितमैप्रणमै ~~न~~ अनागतवा
 अतित ~~न~~ अनागतवा

दुकमवलहारीगुरुनी अलीविलावलरागनीकहि ॥ इति
पद ३९ संपूर्ण ॥

रागनीवीलावलसुवा ॥ चेतनअगरुलघुपरजायतेजाणो
॥ चेतन ० ॥ हांणत्रधिखटगुणभाखी सरवैदरवैमेप्रणमै ॥
हाणीतेतोवयैकाहावै व्रधिउतपाततेरमै ॥ चेत ० ॥ १ ॥ व्रधिवै
यैहाणीउतपात अगुरुलघुदरवैतेजाणो ॥ सरवैदरवैमेइम-
जकहिये येमपरजायवखाणो ॥ चेत ० २ ॥ अलोकमेपणअ
गुरुलघुहै नीचसैजावैलहियै ॥ मुनीदुकमयेछटीव्याख्या
सुवावीलावलकेहियै ॥ इतिपद ४० संपूर्ण ॥

रागनीसारंग ॥ वंद्रावनी आस्तिपरजायसांघैथरुपये
येमचीतमेंसमजीयै ॥ आकणी ॥ सरवैदरवैनोआस्तीस्वजा
वै अनंतगुणोतेलहियै ॥ वशेपरुपतेसांघैथपणोछे सांघैथप्रे
जायतेकहियै ॥ १ ॥ प्रैवतिरुपतेनमीतनेदछे तेथीउतपातवै
यैलहियै ॥ पुर्ववशेपपरजायनेवैयै अजिनवैवशेपतेकहियै
॥ २ ॥ स. इमपरजायनोप्रैणमवौजाखु दुवैतेवशेपपरजायै ॥
मुनिदुकतेरागनिजाखि वंद्रावनसारगंथाये ॥ ३ ॥ इतिपद
४१ संपूर्ण ॥

रागनीपिल्लु ॥ चेतननिजशुभावकुजाणे नित्यानित्यका
हाणारे ॥ आंकणी ॥ नित्यैस्वजावजाहानहिलाधे जाहाका
रजनविहोवैरे ॥ कारणपणोपणतिहांनदिसै कारियेशिधिनै
जोवैरे ॥ चेत ० १ ॥ अनित्यैपणानोजाहांअजावछे गायकश

क्तिथाकिरे॥ अथक्रियातेनरकरै गरुगमथिबुधपाकि
 ॥चे०२॥ शरवशुभावपरजायधारो आधारभुतनिजेपे
 लहियेरे॥मुनिहूकमरागनिविलु येअधकारआगैकहिये
 ॥चे०३॥ इतिपद ४२ सपूर्ण॥

रागवरवा॥सुनजियारेतेरेशुजावैकुलैके वसमसतसुभ
 वतेजाणारे आपआपणापेत्रप्रदेशे आधारभुतवखाणो
 सुन०॥१॥सामान्यैजावैयेकसुजावछै वशेषभावैअनेकर
 भावीरे॥येतोपरैवरणतिमैरमवो हवैकहूदरवैसुजावरो॥२॥
 आस्तित्वादिशर्वसुजावते गुणपरजायेकहियेरे॥शर्वेये
 परदेशेजाख्या आपआपणोयेत्रजेदकहियेरे ॥३॥ श
 परदेशतेभिन्नजाख्या पंक्तिरुपतेलहियेरे॥परदेशप्रते
 तरनविहोवे दरवेधेकस्वभावकहियेरे ॥४॥ येमशरैवसु
 वपरजायजेदे दरवमैअनेकतेलाधैरे॥ मुनिहूकमरागि
 वरवो स्वभावजाणोगुणबाधेरे ॥५॥ इतिपद४३सपूर्ण॥

रागनीजजोटी॥जेदग्यानएचिदानटको मेउनकुपीवा
 ॥आकणी॥आपआपणोकारजजेदये सभावैजेदएकहिये
 अगुरुलघुपरजायजेदतेम भेदसजावतेलहिये ॥१॥ ज
 मरअवस्तापलेटे जेदस्वेजावतीहाजाणो॥ अभेदसुभाव
 अहेणकरीने भेदस्वैभावजोनैवखाणो ॥२॥ तोगुणगुण
 सुजावनेमाही शकरेवदोपैलागै॥गुणपरजायनेकार
 कारज लक्षणलक्षैनागै ॥३॥ तेकारैणयेजेदग्यान

सुधपरणैतीयैअहीये ॥ मुनुहुकमयेकारणअभेदनो राग
नीजेजोटीलहीये ॥४॥ इतिपद४४संपूर्ण ॥

रागनीजंगला ॥ अपनारुपप्रणामीकजोइ अतीअनंद
मैपाया ॥ उत्रोतरपरजायत्रैणैमन नीजस्वभावमैआया ॥
गाथा १ ॥ नीजस्वरुपमैदोयजावठै चंव्यैअभंव्यैसुभावै ता
कोवीचारवेवरीदाखु समजुचितमैधावै ॥ २ ॥ उपीयोग
धीरकरीनेधारो बीचारआगेकहीशु ॥ मुनीहुकमयेरागनी
जंगलो शुद्धउपीयोगेलहीशु ॥ ३ ॥ इतिपद ४५ संपूर्ण.

रागनीस्यामकलाण ॥ भव्यैसुभावैतेजाणो ॥ टेक ॥ शुद्ध
स्वरुपवखाणु जावधरमतोजीवस्वरुपनो तीहांजवान
धर्मकहीये ॥ गुणपरजायपरावरतैनजे तथाआस्तिखेलही
यो ॥ १ ॥ जावनवोउतपैनथायजे नवीनपरजायमैपरवरते ॥ पू
रवजावतेनाशकरीने जवैस्वैभावयेमपलटै ॥ २ ॥ पलटैणैशु
जातेभव्यकहीजे तहेमैभवानधरमदाखु ॥ मुनीहुकतेआग
लकहीशु रागनीस्यामकल्याणआखु ॥ इतिपद ४६ संपूर्ण.

रागनीअमनकल्याण ॥ भव्यैतधर्मठैजव्यैशुभावमै ग्या
नीतेहवखाणै ॥ आकणी ॥ गुणपरजायेजेवस्तुनां तेहिजवै
नधर्मकहीजे ॥ नवुथवुसमअइपंथाने उत्तरभेदलहीजे ॥
१ ॥ परवरतैनमैवकितरुपठै जेवरतीनुआस्तिजावै ॥ रुप्रंत
रेजेप्रणमेवु तेभवैनधरमकाहावे ॥ २ ॥ दुग्धनोदाधिपणो
थावु बीकारअंतरेप्रणमेवु ॥ ग्यानमहीजेमगीनेतेफरतो ते

मग्याननुप्रणमैवु ॥३॥ वर्धिहाणीस्वजावै कारजकारण
 लहीये ॥ आवीरजावतीरोजावकीये येमजवानधर्मलहीये
 ॥४॥ इनोअरथगुरुगमतीलीजो हवेकहूआस्तिभाव ॥ मु
 नीहूकमयेभव्येसुजावमै अमनकल्याणरागनीगाव ॥५॥
 इतिपद ४७ संपूर्ण

॥ इति श्रीरागमालासंपूर्ण ॥

चारत्रभावप्रकरणालक्षणा

श्रीगुरुभ्योनमः

प्रणमुसुधानंदने चाखुत्रभावतेचार अवलाथईनेप्रण
म्या सवलाप्रणमेसुखकारा॥१॥

हवेजेचारअज्ञाव अन्यमतविशेषक दर्शनवालाएकह्या
ठे तेपूर्वेजैनपंथितोएपण केटलाएकविचारनेविशेग्रहण
करयाठे तेचारअज्ञावनुस्वरुपकिचित्मात्रहुंकहुछु तेचा
रअज्ञावनानाम प्रागज्ञाव १ परध्वंशज्ञाव २ अत्यंता
ज्ञाव ३ अन्योअन्यज्ञाव ४ हवेअज्ञावकेहेतांशुं जेनहि
ठेवस्तु तेनेअज्ञावकहिएठैए परंतुचेतनस्वरुपसाथे चारे
अज्ञावनोविचारकरवाथिघणोफायदोठे तेमाटेएनुस्वरुप
किचित्मात्र इहांदेखाडुछु हवेपरागभावकेहेतांपूर्वेजे
भावनोअभावहतो तेभावप्रगटथाए तेनेप्रागज्ञावकहि
ए हवेपूर्वेकह्याभावनोअज्ञावहतो अनेशुज्ञावप्रगटथयो
तेनेप्रगभावकहिये तेनोविचारकहुछु आसंसारनिमां
हिलिकोरे भावरुपवस्तुवेप्रकारनिठे एकशुद्धभाव १ वी
जोअशुद्धभाव २ हवेतेअशुद्धज्ञावनाअनेकभेदठे अनेशु
द्धज्ञावनोतोएकजभेदठे एटलेशुद्धभावकेहेतांशुद्धचिदानं
द संकल्पविकल्पपरहित समपरिणामीनिजानंदउपयिओ

ग सस्वरूपमाधीरतांपणु तेनेशुद्धभावकहिये हवेजेअशु
 द्धभावते तेनाअनेकनेदतेकहियेठइए प्रथमसमपरिणा
 मजेकह्यो तेनावेनदतेएकतोशुद्धपरणतिरुपसमपरिणाम
 तेतोसर्वथीजीवनेकल्याणकारिते अनेशुद्धपरणतिसाथेजे
 समपरिणामते तेनाअनेकनेदते तेमधेजेअणिप्रतिपन्नछे
 तेसविकल्पपरिणामछे शामाटेजे एठेकाणेस्वपरनोविचा
 र अथवागुणपरजायनोविचार एसर्वविकल्पसहितछे प
 रंतुघणोजभागएनोनिर्मलछे अनेथोमोजजागमलिनप
 णुछे एकसमकितिथिमाफीनेसातमागुणठाणासुधी जेस
 मभावथायछे तेद्रव्यगुणपरजायनुस्वरूपजाणि सस्वरु
 पनेअोलखी परजावनोत्यागकरिने समपरिणामेरमेछे
 तेमधेपोतपोतानागुणठाणानिहदे जेसमपरिणामछेतेस्व
 जाविकछे अनेतेउपरात जेटलुंरमणतथासमभाव एट
 लोआरारोपितउपचारिछे अहिंथानिर्मलपणुकथचितवेतेम
 धेपणतरतमजोगरह्योछेतेविनासमभावछे तेएकएविजात
 नोपणछे केद्रव्यगुणपरजायनाजेदजाणिनेपणस्वभावप्र
 गटघोनथि अनेसस्वरूपनुग्रहणनथि अनेसमभावथाय
 छेतेमलिनछे तेमिथ्याद्रष्टिछे वलिकएविजातनोपणस
 मजावछेजे स्वस्वरूपतोजाणतानथि तथाद्रव्यगुणपरजा
 यनुपणजाणपणुनथि अनेमटकवरागादिकपामिने ससा
 रथकिविरकजावरेहेछे तेसर्वपणमलिनछे मिथ्याद्रष्टिछे

तेनोआत्माशेषण निर्मलथयोनथि तथाएकएवि जात
नोपणसमजावछे संसारछोमी अथवानछोमी कर्त्तरिभा
वमांरच्यापच्याछे कर्त्तरिकेहेतांजेकर्म जेजेदर्शनवाला
पोतपोतानाक्रीयाकर्म वेहेवारमार्गनावांधेलातेनेधर्ममा
नेछे तेनेकर्त्तरीकर्मकहिए ॥उक्तंचा॥ विहितकर्मजन्योधर्म
निपिधकर्मजनोस्त्वधर्म॥ एटलेविहितकर्मकेहेतांजेकर्म
नुकरवु एटलेक्रियाप्रमुखकरवाथिधर्ममानेछे एवुपणए
कलोकमांधर्मछे पणंतकईधर्मनथि ग्रामाटेजेनिपेधकर्म
केहेतांजेक्रियापरमुखनोनाशकरिनेस्वजावमांजेरमवुतेस
तधर्मछे तथाएवुश्रीविशेष्यावशकमां नयअधिकारेनिग
मनयआरोपितकहिछे तेमधेकारणनेविशेकारजनुआरोप
वु एटलेकारणजेबाह्यवेहेवारनी जेजेकरणिपरमुखछे ते
नेधर्ममानेछे तेकरतानेधर्मिकेहेछे तेकईधर्मिथयोनहि अ
नेकरणितेकईधर्मथायनही ॥उक्तंचा॥ बाह्यक्रियायाधर्म
त्वः धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं ॥ एवुनयचक्रमांपणक
ह्युछे इहांकोईकहेशेके जावकारणमातोईआरोपनथि
तेनोउत्तरजे जावकारणनेविशेतो आपआपणाकारजनो
स्वजावछे त्यांहाकईकर्त्तरिनथि अनेनिगमनयछे तेकई
जावमानथिएतोद्रव्यनयछे अहियांपणआकरतमजावनि
वातछे अकरतमनीवातहोततोस्वजावग्रहणयाय तथाचे
तनमात्रवरणवीतेतोचेतनानावेजेदछे एटलेशुद्धचेतना१

तथा अशुद्धचेतनाश्च अशुद्धचेतनाकेहेतानरनरकादिक चा
 रेगतिनिवातजाणे द्विपसमुद्रआदेदेईने सर्वपरभावनि
 वातजाणेतनेअशुद्धचेतनाकहिए तेमद्वेजेस्वस्वरूपनागुण
 परजायादिकजाणे तेअशुद्धचेतनाछे पणमाहाशुद्धछे जे
 पोतानास्वस्वरूपनेजाणे अनेशुद्धस्वभावनेविपेरमणता
 तेनेविपेथिरपरिणाम एवुजेजाणपणुछेतेनेशुद्धचेतनाकहि
 ए तेनेजधर्मकहिए अनेतेधर्मकेवुठे अविठिन्नकेहेता
 कोईकालेपोतानास्वस्वरूपथिएधर्मजुहुनहिपडेएएकंआ
 त्मस्वरूपनिवृत्तिमात्रएनेजकहिएछे ॥ उक्तच ॥ चेतन
 मात्रवृत्तिधर्मविठिन्नाएवीरितेपरभावमाजेरमणता अने
 धर्मनुमानवु एवुपणएकस्वभावेछे इत्यादिकअशुद्धपरण
 तिरुपेगुभाशुभ कारजकारणना समभावचेतननवलगे
 लाछे तेसर्वेपरभावनाघरनासमभावछे पणशुद्धपरणति
 रुपसमभावनधयोतेथिएसमभावनेपुद्गलिकरीद्वमागएयो
 छे तेपरभावनोनाशथाय तारेशुद्धरुपनिप्राप्तिथाय

तिवचनात् ॥ एटलेपुर्वनाभावनोनाशयतेनेप्रागभाव
कहिए ॥इतिप्रथम ॥१॥

हवेबीजोंपरध्वंशाभावकेहेतांजेकारजनिउत्पत्तिथयाप
हेलां अथवाथयापछि ध्वंशकेहेतांनाशकरवोतेनेपरध्वंशा
भावकहिए एटलेआपणोआत्माअनादिकालनो ससार
नेविपेरखमेते अनेअनंतगुणनोधणिले तेकंडखपआव्युंन
हि अनेरखद्वुंपमेते तेनुकारणएवेजेमोहादिकशत्रुएउत्प
तिथयापेहेलां एटलेसमकितपाम्यांपहेलांथिआत्मानागु
णनोनाशकरतारह्या एटलेगुणप्रगटथावादिधोनाहि अ
नेपरभावमांरमाप्त्या परपोतानुंकरिमान्युंशुभाशुभनेधर्म
करिमान्युंअज्ञाननेज्ञानजाएयुजाननेअज्ञानजाएयुंवस्तुध
र्मनेअधर्मजाएयुंशुद्धपरणतिनेअशुद्धपरणतिजाणिअशुद्ध
परणतिनेशुद्धपरणतिजाणिआरोपिताउपचरितअसदभूत
तेनेधर्मकरिमान्युंअणआरोपितअणउपचरितसदभूततेने
अधर्मजाएयुं एसर्वेसमकितपाम्यापेहेलांनांलक्षणवेशामा
टेजेकेटलाएकतोआजिविकानेअर्थकरताफरेवे केटलाएक
पुजावामनावानेअर्थ केटलाएकपोताना मतादिकनिखेचे
करिने तेसर्वेमिथ्यात्विवे तथासमकितपामिनेवम्युं तेषण
मोहादिशत्रूचमावेवे शामाटेकेसमकितपामिने वेअक्षरनुं
जाणपणुययु अथवाबाइयथकी करणिआदिकसारिकरेते
वारेमिथ्यात्वरूपभूतएनाहृदेमांपेसे तेवारेमतफरिजाएअ

नेगुरुआदिकनेमानेनहिअनेस्वमतिकल्पनाएधर्मउपदेश
 करेजथारोहगुप्तनिन्नवएटलेपठि शास्त्रसिद्धातमानेनहि
 पोतानिमतिकल्पनाएकरि एनुजुगतीएकरिने समजावि
 तेमध्येसाधुनेउपदेशकरवानोअधिकार . अथवासुत्रभण
 वानोअधिकार जेमवेहेवारसुत्रमाकह्योठे तेतलेतेतलेव
 पैथाए तेविनाकरतेपणसुत्रनाउथापकठे तथासावकथइ
 नेजेउपदेशकरतेपण सुत्रसिद्धांतनातथागुरुनापणउथाप
 कठे तथाभगवाननिआज्ञानापणउथापकठे एसपूर्णसर्वे
 प्रकारेथिनिन्नवजठेअनेजमालिप्रमुखजेनिन्नवथयातेतोदे
 शथकिठे अनेग्रहस्थथइनेदेशनादेतेसर्वथकिनिन्नवठे झां
 माटेजेश्रीविरपरमात्माएतोग्रहस्थिनेश्रोताकह्याठे अरथ
 निप्राप्तिगुरुनेप्रश्नपुठवाथिकहिठे पणवांचवाभणवालो
 कोनेसंभलावातेथकिकहिनथि एअधिकारश्रीभगवती
 जीथिजाणजो - तथाश्रीप्रश्नव्याकरणने . विशेषवरद्वारे
 ग्रहस्थितथादेवतानेसाभलवानोअधिकारगुण्योठे पणक
 इसभाभेरीकरविदेशनाओदेवि तेअधि १५१
 होठे तथाश्रीनिसिथसुत्रनेविशे जेसा १५२

खेदकर्तुंते तेकारणजेकरे तेनेनिनवजकहिये तेधणीअनं
 ताचवरखमे तथाएनिदेशनाना सांभलनारपण अनंता
 चवरखमे एश्रीविरपरमात्मानुंजाखेलुते तेसर्वेशास्त्रमांठि
 एणएनेमोहादिकशत्रुए एनाधर्मनोनाशकर्यो हवेजेमो
 हादिकशत्रु समकितपाम्यापठि जेशुद्धपरणतिनो अंशप्र
 गटथयोहतो तेनोनाशकरेते तेनोविचारकिंचिमात्रदेखाडुं
 ठउं एनानिमित्तकारणतो पांचइंद्रिनेमनते अनेउपादान
 कारण रागद्वेशप्रणतिते तेमध्येरागनावेभेदते एकशुभरा
 गते १ विजोअशुचरागते२ शुचरागनावेभेदते एकप्रश
 स्थराग १ विजोअप्रशस्थराग २ तेमध्येसमकिता
 दिक पामवानोजेराग तेपणस्वप्रणतिते तथापिपामवा
 नोरागते अथवापाम्या तेगुणसाचववानोरागते अथवा
 आत्माना केवलादिकगुण प्रगटकरवानोरागते अथवा
 माराआत्मानो मुगतिथायेइत्यादिक सर्वरागतेते स्वप्र
 णतिलिआठे माटेहेनेपरशस्थकहिये अनेरागतेतेकर्मवं
 धहेतुते माटेएनेशुभरागंकहिये तथाअपरस्थशुभराग
 तेज्याआत्मस्वरूपनिरमणतानथि अनेदेवगरुधर्मउपरि
 एरागराखेते अनेगरुआदिकनि चगतिनेविशेलेहेलिन
 रेहे तेधणिनेअपरसस्तशुचरागते शामाटेजेस्वपरणति
 रहितते परसस्तपणुंनथि तथाअशुचरागतेनावेभेदते ए
 कपरसस्त ॥१॥ बीजोअपरस्त ॥२॥ तेमध्येपरसस्तजैध

र्मएवोशब्दनामग्रहणकरिनेःजेकरीआकृष्टतपः जपकरेते
 एसर्वअशुचते हइआकोईकेशेजेधर्मनाएवाकारणतेनेतमो
 अशुचकेमकोहोछो तेनोउत्तरकेएसर्वकारणविखक्रिया ॥
 १॥ गरलकीरिआ ॥२॥ अनुष्ठानअन्योअन्यक्रिया ॥३॥
 एत्रणक्रियानेविशेयायछे अनेएत्रणक्रियानेअशुचजछेए
 क्रियानेकोईशुचलखतानथि एनाविशेषविधारशास्त्रथकि
 जाणजो तथाअप्रशस्तअशुचरागतेवणसमजणे अथवा
 उपियोगरहित परजीवनेवचाववा अथवाढानादिकदेवु
 अथवाससारनासर्वकारणएसर्वअप्रशस्त अशुभरागछे
 माहाविरस्वामिएगोसालानेवचाव्यो तदवतसमजिले
 जो हवेजेद्वेसते तेपणवेप्रकारनोते एकस्वप्रणतिथकि
 कर्मादिकभिन्नद्रव्यनेकाहाभवानो विचारएकएवो पणद्वे
 शछे एसर्वधर्मद्वेश एकप्रकारनोकेहेवाय विजिजेअध
 र्मद्वेशतेससारादिसर्वे कारणमांसमजवो एवाजेकारणम
 लवाथि जेपोतानिशुद्धप्रणतिनोअशुप्रगटथयो तेधर्मथ
 किअष्टकरिनेसंसारमारोले एटलेएआत्मगुणनेनाशकरे
 तेमोहादिशत्रुआत्मगुणनोपरध्वंसजावछेतेजआत्मापोते

एटले एवामोहोटापुरुपनुंवलावुलिवेथके मारिरिद्धीनो
 नाशमोहादिकचोरकरिशकेनहि माटेहुएवासदगुरुनेआ
 धिनथईनेरहुं पुष्टआलवनएवगरबीजोकोईनहिहवेउपा
 दानकारणनेविशे स्वप्रणतिप्रभावमांजावानदेउ तेथिर
 ज्ञावथाउ शुजाशुचकारणकारजथकिमाहाराआत्माने
 उगारुं अनेशुद्धभावेविशेमाहाराआत्मानेजोडुं तोएमो
 हादिकशत्रुओनोनाशथायएरितेपूर्वेपणजेसिद्धिवरघाएध
 णिएजावथिजसिद्धिवरघाठे वर्तमानकालेपणजेनिसिद्धि
 थायठे तेपणएजभावथिथायछे अनागतकालेपणकारज
 सिद्धिएभावथिजथाशे एविनाबीजाप्रकारथीकारजसिद्धि
 ठेनहि एवातनिसंदेहठे एटलेआत्माप्रभावमांरमतोहतो
 तेवारेस्वस्वज्ञावनोध्वंशभावहतो तेजआत्मास्वस्वभाव
 मांप्रणम्यो तेवारेसर्वप्रज्ञावनोध्वंशथयोहवेकोईवस्तुनोए
 नेध्वंशकरवोनथिएटलेएसत्यपरध्वंशाज्ञावकहिदेखाम्यो
 एटलेएबीजोभावकह्यो.

हवेत्रिजोअत्यताज्ञावकहेताअत्यंतअभावछे तेक
 हिएविये तेआत्मानेविशेपरभावनोअज्ञावछे शुद्धनिश्चे
 नयेकरिनेजोईयेतो कर्तरीपणछेनहि अनेशुजाशुचपण
 छेनहि एमुलवस्तुधर्ममां अत्यंतकहेतांघणोघणोकरिने
 एधर्मआत्मानेविशेछेजनहि एटलेएत्रिजोअभावकह्यो.
 हवेचोथोअन्योअन्यअज्ञावकहेतांजे प्रगटपणघटनेवि

अहियाकोईपुन्यनेधर्ममानेते । तेधणीने आत्मस्वरूपस्व
 गुणनो अत्यंतअनावछे अनेहजुपरजावनो अत्यताभावन
 थीकरयो एरीतेस्वधर्मनेविशे परधर्मनेपरधर्मने विशेष्व
 धर्मनोअन्योअन्यअनावछे एअन्योअन्यानावचोथोभे
 दसमजवो एआत्मस्वरूपनेविशेत्रणेभावपरध्वशाटिकअं
 गीकारकरो तोप्रथमनोप्रागभावप्रगटथयो अनेएप्रा
 गभावप्रगटथएजआत्मानोसिद्धिथाय एटलेशुद्धभावते
 जप्रागभावते इतिसुधोअर्थजाणवो ॥

॥दूह॥अनावचारवेणव्या प्रागनावादिजेहावालिजिव
 नेकारणे तत्वप्राप्तितेह॥१॥ आत्मस्वभावअशुद्धजे काल
 अनादिलाध्यो॥तेथिअभावचारेहुता अवलिपरणतिसाध्यो
 ॥२॥हवेशुद्धस्वभावए ज्ञानद्रष्टिएजाग्यो॥च्यारेस्वभावह
 वेसाधिया शुद्धस्वरूपमेलग्यो॥३॥ एरीतेसमजीकरी नि
 जस्वनावमारेशे॥अवलातेसवलाकरी निजस्वरूपमालेशे
 ॥४॥ अनुभवज्ञानथीएरच्यो चउअनावप्रकरण॥शुद्धस्व
 रूपनिखोजथी शुधोअनुभववर्ण॥५॥ एरितेअनुभवसहि
 त वाचशेभणशेजेह॥कारजतेनुसिद्धहोशे तेमानहिसदेह॥
 ६॥ओगणिसेवतरीसमे संवठरेअवधार॥श्रावणउत्तममा
 सए शुक्लद्वादशिसार ॥७॥ जोमिपतिवारचलो सुर
 तशेहेरमोजार॥ओताउत्तमजोगथी चोमासुरह्याउदार॥

८॥सेहजअनुभवरमतांथका एअनुभवचित्तआयो॥तेतुरत
 प्रगटकरथो जव्यजीवहितलायो ॥९॥ हूकमजेमुनिवस्त
 णो माथेचमावीसार॥शास्त्रअनुसारेजाखियो अध्यातम
 गुणउदार ॥१०॥ शुद्धस्वरूपपरकाशियो कीधोअशुद्धनो
 नाश॥परप्रणतिपरभावनो अहिंयांनहिरेहेवास॥१॥ शुद्ध
 भावशुद्धचेदथी शुद्धप्रणतिविशाल॥अभावच्यारेत्यांहाप्र
 गट्या उत्तमलक्षणनिहाल ॥१२॥ एप्रबंधएरचनासवि
 जाणेजाववहूश्रुत॥अल्पबुद्धिसमजेनहि गुरुगमथिरुकंत
 ॥१३॥तेमाटेवहूश्रुतजोई निरुप्रहिनिजानंद॥शेवाकरजो
 तेहनि नेदपामगोआणंद ॥१४॥ आणंदरूपएकआतमा
 वाकीसर्वअसत्या॥तेध्यानेमुक्तिलहे आगेपाम्याअनंत ॥
 १५॥ वलिअनंतापामशे पामेठेवर्तमान॥ नीश्रितउपादा
 नशुद्धग्रहि एजाखुशुधमान ॥१६॥ मुनिहूकमरचनाकरि
 स्वअनुभवधारि॥परअनुभवअलगोटल्यो शुद्धजावनिहा
 लि॥१७॥ओतापणतेवातिया अनुभवगुणनारशिया॥शु
 द्दजावनालालचुतेमुजपासेवशिया॥१८॥पुद्गलनाभिखारि
 जेह तेनुनहिअहियाकामा॥तेअहिंयांआवेनहि तेचउगति
 चटकणठाम ॥१९॥ रागद्वेशरहितए कीधोग्रथवीनाण ॥
 जावेकरिजेवाचशे साजलताप्रगटेनाण ॥२०॥ वहूसुतत
 कंवादसहित स्वपरस्वरूपनेजाणे ॥ नीरुप्रहिभावसदार

हे तेपासेभेदठाणे ॥२१॥ न्यायविनासमजेनहि शुद्धाशुद्ध
स्वरुपा॥तेमाटेगुरुगमकहि लेविशुद्धअनुपा॥२२॥ एउपदे
शहदयेधरि जेकरशेअभ्यास॥मुनीहूकमतेपामशे शीवसु
दरीघरवास ॥२३॥

॥इतिचउभ्रभावप्रकरणसंपूर्ण॥

श्रीअमरतेजमुनिनीसज्ञायः

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ढाल१॥त्रिजुमहाव्रतसांभलो॥एदेशी॥श्रीसंखेश्वरपा
 सजी॥प्रणमीतेहनापाय॥केशुंगतीकर्मतणी॥दूरधरजेश्च
 तराय॥१॥रेचव्यप्राणीसांजलो॥करमनीगतीजेह॥भोग
 व्यावणछुटेनहि॥ज्ञानीभाखेतेह॥रेभ०२॥आंकणी॥
 चवसातमेजेथया॥अमरतेजराजंद॥वैताढपरवतेशो
 जतुं॥विद्याधरनीरंद॥रेभ०॥३॥बहूरीधीयेदिपतो॥
 भुजासेनवलजास॥जशश्रीजार्याजेहनी॥रुपगुणेजे
 खासा॥रेभ०४॥जिनधर्मरुचीसदा॥नहिअन्यायनीलेश॥
 दोगंधीकपरेसुखते॥भोगवतांतेविशेष॥रेच०५॥एवे
 समेएकराजीयो॥वसुपालतेसारा॥भार्याधनश्रीतेहनी॥
 रुपकलाएउदार॥रेभ०६॥वरमुखथीरुपसांजली॥का
 मिथयो नरराय॥कामेबुद्धिहोयनहि॥निरलजतेहकहाय॥
 रेभ०७॥आगेस्वरुपजेहूवुं॥तेसुणजोसहूकोय॥मुनीहूक
 मकहेकामथी॥जेकदीयनहोय॥रेच०८॥ढाल१संपूर्ण॥
 ॥ढाल२॥मायामोसनकीजे॥एदेशी॥हवेअमरतेजनररा
 या॥जेहनंमनडुकामेवाय॥धनश्रीलेवानेजाय॥होलाजका
 मीकांईनविचारे॥१॥आंकणी॥हयगयपायकतेलेतो॥

वेमानरचीतेकेतो ॥ चाल्योपथेहवेवेतो ॥ होलाल ॥ का ०
 ॥२॥ बलहथुकितेलेवे ॥ निजथानकआवेहेवे ॥ जशश्रीआ
 गलतेकेवे ॥ होलाल ॥ का ० ३ ॥ हवेजशश्रीमनचिते ॥ मरेशो
 कलहिएकते ॥ दूखदाईहोशेअते ॥ होलाल ॥ का ० ४ ॥ हवे
 पियुनेसमझावे ॥ वडूउपदेशएणीपेरेलावे ॥ जेमपियुनेद
 नपावे ॥ होलाल ॥ का ० ॥ परनारीनेपापेचरीयो ॥ जईनर
 कसांहितेगरीयो ॥ लोहपुत्रीरदयेचरीयो ॥ होलाल ॥ का ०
 ॥६॥ तेकारणतमेनवकरजो ॥ परनारीसंगपरीहरजो ॥ जो
 सुरंगतिजावानेसरजो ॥ होलाल ॥ का ० ७ ॥ पुरवस्नेहनररा
 य ॥ वेणमान्युप्रीयानुसाय ॥ तेनारीमुर्काचितलाय ॥ हो
 लाल ॥ का ० ८ ॥ खटदनसुधीतेराखी ॥ पछेमुकीतेहनीरपा
 खि ॥ दूखसहेतीतेदाखि ॥ होलाल ॥ का ० ९ ॥ मुनीदूकमनी
 वाणी ॥ सामलताहेजभराणी ॥ आगेरसखाणीकहाणी
 ॥ होलाल ॥ कामिकाईनविचारो ॥ १ ० ॥ ढाल२सपुर्ण ॥

॥ अथढालत्रीजी ॥ वडविचारजो ॥ एदेशी ॥ पावलथी
 हवेजेथयुरे ॥ तेसुणजोअधीकार ॥ वसुपालराजातिहारे ॥
 नारीविजोगविचाररे ॥ भविजीनसांभलो ॥ कर्मतणोगति
 जेहरे ॥ मोहनोआंभलो ॥ आकणी ॥ जोरजबशुनविच
 लेरे ॥ तेहथीथयोनीराश ॥ प्रीतिघणीप्रेमदाथकिरे ॥ खेण
 खेणमुकेनीसासरे ॥ ज ० कर ० मो ० २ ॥ नारीविजोगदूखे
 करीरे ॥ पांभ्योरेमरतुकराय ॥ तेपापअतिआकरुरे ॥ ला

ग्युंविद्याधररायरे ॥ भ० क० मो० ३ ॥ धनश्रीहवेजेगइ
 रे ॥ तेहनेकुणआधार ॥ पीयुपणपरलोकगयोरे ॥ तेहथई
 नीरधाररे ॥ भ० क० मो० ४ ॥ तेहपापजसश्रीने ॥ लाग्युं
 तेनीरधार ॥ अंत्रायकर्मतेवाधीयुरे ॥ दंपतियेअविचाररे ॥
 भ० क० मो० ५ ॥ तेहकर्मफलआगलेरे ॥ चाखीशुअधि
 कार ॥ तेकारणभव्यप्राणीयारे ॥ तजोतुंमेपरनाररे ॥ भ० क०
 मो० ६ ॥ मुनीसंजोगेदपतीरे ॥ पाम्याप्रतिबोध ॥ राजदे
 इनीजपुत्रनेरे ॥ करेआतमनीशोधरे ॥ भ० क० मो० ७ ॥
 चारीत्रलहीप्रमादथीरे ॥ पाम्योउपसमगुणठाण ॥ लोभं
 उदेयेपाछोपम्योरे ॥ रह्योचारीत्रगुणठांणरे ॥ भ० क० मो०
 ८ ॥ तपजपकरीयावहुकररे ॥ ज्ञानआराधीरेसार ॥ अंत्ये
 सलेखणाकररे ॥ आलोहिअतिचाररे ॥ भ० क० मो० ९ ॥
 आयुपपुरुकरीत्यांधकिरे ॥ देवलोकवारमेजाय ॥ आयुसा
 गरवावीसनुरे ॥ सुखभोगवेचीतलायरे ॥ भ० क० मो० १० ॥
 मुनीहूकमकहेआगलेरे ॥ जेहथयांवृतत ॥ जथारथचाखुं
 हवेरे ॥ साभलजोधरीखतरे ॥ भविजिनिसाभलो ॥ कर्मत
 णीगतजेहेरे ॥ मोहनोआंमलो ॥ ११ ॥ इतिढाल ३ समाप्तः ॥
 ॥ अथढालचोथी ॥ कुंवरगजारोनजरेदेखतां ॥ एदशी ॥
 अमरतेजजीवचवीरे ॥ नवमेभवेसुखकाररे ॥ आरजक्षेत्रे
 श्रावककुलेरे ॥ श्रवतारलह्योउदाररे ॥ कर्मतणीगतिसांभ
 लोरे ॥ आंकणी ॥ ११ ॥ पंचवरसनोजब्रहूवोरे ॥ पीतापोतो

कालरो॥रीद्वीसर्वेचुथाइगइरे ॥ एहीजगतिनीचालरो। क०
 ॥२॥ मायेउछेरीमोटोकरघोरे॥ परणाव्योतेबालरो॥ पुत्र
 परीवारतेहनेहूवारे॥ ज्ञानअभ्याससुखकाररे॥ क० ३॥
 धनउपार्जनकारणेरे॥चाल्योदेशातरविचाररे॥ पूर्वअभ्या
 सतेहनेरे॥ चारित्रआप्युउदाररे॥ क० ४॥ मोहतोमीआ
 तमजोमीरे॥ ज्ञानचरणनेसाथरे॥ कायामायासर्वेपरीहरी
 रे॥ जेहनेआतमारिद्विआथरे ॥ क० ५॥ आतमज्ञानेजेर
 म्योरे॥ तेहनेअवरकोणसुखमातरे॥ पुद्गलसंगरुचेनहीरे॥
 जेहनेठेशीवरमणीनीखातरे ॥ क० ६॥ अचनाशीसुखेआ
 तमारे॥ सदाभावेमुनीरायरे॥ अतरआतमखेलतारे॥ ध्या
 नपरमातमलायरे ॥ क० ७॥ नवकलपीविहारनारे॥ क
 रतासदानीर्वाहरे॥ भव्यजीवप्रतिबोधतारे ॥ बहूदेवतस
 साहरे ॥ क० ८॥ एमविचरताआवियारे॥ एकपुरेउदाररे॥
 मुनीहूकमकहेसांभलोरे॥ जेहथीहोयेभवपाररे ॥ क० ९॥
 ॥ इतिढाल ४ संपूर्ण ॥

॥ अथढाल ५ मी ॥ लीलावतकुंवरभलोरे ॥ एदेशी॥
 देवलोकवारमेथीचवि ॥ जसश्रीजीवतेजाणरेभवि ॥ आ
 वितेकुलेउपनी ॥ भाख्युतेसुणोवाणरेजवि॥ कर्मनछूट्यो
 प्राणीयो ॥ आकणी ॥ १॥ श्रावककुलेउपनी ॥ लघुवेथीस
 रधासाररेभवि॥ श्रावककुलेतेदई ॥ परणाविपीतायेउदारे
 जवि ॥ क० २॥ खटवरसजेहवेथया ॥ वीधवाथइतेहबा

लरेभवि ॥ पूरवकरमउदेथकि ॥ इहांनहिबीजोउपचाररे
 भवि ॥ क० ३॥ सरधायीमनथिरकरुं ॥ पालेसीयलउदा
 ररेभवि ॥ तपजपक्रियावउकरे ॥ ज्ञानअभ्यासतेसाररेभ
 वि ॥ क० ४॥ एहवेतेमुनीवरा ॥ प्रणमेहरखेत्रतीचंगरेभ
 वि ॥ ज्ञानअभ्यासकरवाभणी ॥ रुदीयेवाधयोजसरंगरेभ
 वि ॥ क० ५॥ मुनिवरपणतेउपरे ॥ करीक्रीपादीयोज्ञानरे
 भवि ॥ पणपरमादगुणठाणथी ॥ सरागथयोतेजाणरेभवि ॥
 क० ६॥ सासनदेवतेकीकह्यो ॥ पूढयोज्ञानविचाररेभवि ॥
 प्रेमसरागकेमआवड्योनहि ॥ फरजनथीनिरधाररेभवि ॥
 क० ७॥ ज्ञानिनेपूठिआविया ॥ कह्योपूर्वसर्वव्रतंतरेभवि ॥ पूर्व
 स्नेहतवजाणीयो ॥ सरागथयोअतिखंतरेभवि ॥ क० ८॥ मु
 नीवीचरताविजेगया ॥ सरागनगयोतेधाररेभवि ॥ कालदो
 पणतेजाणीयो ॥ वकुसचारित्रविचाररेभवि ॥ क० ९॥ वंदन
 पूजनबाईने ॥ दर्शननोघणोउमेदरेभवि ॥ मुनीहूकमकहे
 तेअंतरायथी ॥ पाम्याठेअतिखेदरेभवि ॥ करमनछुटेप्राणी
 यो ॥ ढाल ५ सपूर्ण ॥

॥ढाल ६॥ कपुरहोवेअतीउजलोरे ॥ एदेशी ॥ सजालो
 कतमेंसांजलोरे ॥ कर्मतणुएफला ॥ पूर्वेअंतरायवांधीयोरे ॥
 तेहतणुएबलरे ॥ नवियणकरम नकरशोकोइ ॥ करमेंछुटेको
 यरेनवियण ॥ क० ॥ आंकणी ॥ १॥ सुखसर्वेअजगारह्यां
 रे ॥ पूर्वभवनोजेहा ॥ आजवतोअंतरायथीरे ॥ दर्शननपांमेते

हरेभवि ॥ क० २ ॥ ज्ञानीमुखथीतेलहचुरे ॥ आगेमलशेए
 ह ॥ देवलोकनरलोकनारे ॥ दीयभवकह्याजेहरेभवियण ॥
 क० ३ ॥ तीर्थकरपदवीलहारे ॥ महावीदेहमोजार ॥ चक्रव
 र्तिपद्वीकहारे ॥ दीयपद्वीतससाररेभवियण ॥ क० ४ ॥ तांहां
 पटराणीतेहोशेरे ॥ एवांज्ञानीनांवेण ॥ धर्मथकीअंतरायजा
 सरे ॥ तेसुणजोसहुवांणरेनवीयण ॥ क० ५ ॥ कर्मखपावी
 केवललहारे ॥ पामशेसीवसुखसार ॥ अमरतेजमुनीरायनो
 रे ॥ एगांयोअधीकाररेनवीयण ॥ क० ६ ॥ किचीतिकर्मथीदु
 खएरे ॥ जोगेवीयुंतेजोय ॥ तेकारणभव्यप्राणीयोरे ॥ नवीकर
 जोअंतरायकोयरेनवीयण ॥ क० ७ ॥ सवतअगणीसदसजेठ
 मारे ॥ वदछठीशुक्रवार ॥ विद्याधरमुनिगाइयोरे ॥ मोरबीगाम
 मोजाररेनवीयण ॥ करमतणी ० ८ ॥ मुनीवरनागुणगावतां
 रे ॥ शुलनबोधीहोयजीव ॥ मुनीहुकमकहेशीवलहारे सुख
 भांगेवेसदीवरेभवियण ॥ कर्मनकरशोकोय ॥ गाथा ० ९ ॥
 ढाल ६ संपूर्ण ॥

॥ इति श्रीअमरतेजमुनिनीसझायसंपूर्ण ॥

तत्त्वसारोद्धारः

श्रीगुरुभ्योनमः

॥ दुहा ॥ श्रवणाशीश्रकलंकतुं नीरंजननीराकार ॥ ह्रवंदु
तेआत्मा नीजश्रनुभवउदार ॥ १ ॥ तत्वतत्वग्रहणकरी
ठवुवचनमनोहार ॥ श्रोतासुणजोकांनदेइ जेथीभवनोपा
र ॥ २ ॥ तत्वसारोद्धारए ग्रंथज्ञानउद्योत ॥ जणतांगणतां
नीपजे नीजआत्मगुणश्वेत ॥ ३ ॥

हवेजापालखीयेछीये-हवेजगत्रनेविशे अनेकपदार
थछे तेसर्वेनुसार वीचारीनेकाढीये त्यारितत्ववेछे जीवत
त्व. १ अजीवतत्व. २ एवेजतत्वछे एवंवीनावीजोकोइ
प्रदारथदीसतोनथी. शिष्यवाक्य-स्वामीपुर्वेअमेतत्वसा
ततथानवसाभल्याछे तेनुंकेम. गुरुवाक्य-हेभद्रएवेतत्व
नासातपणथाय तथा नवपणथाय तेकल्पनाठिपरंतुतने
चेदकरीनेदेखाडुतेसाजल हवेजीवद्रव्यनाचारतत्वछे.
जीवितत्व १ सवरतत्व २ नीरजरातत्व ३ मोक्षतत्व ४
तथाअजीवतत्वनापांचतत्वछे अजीवितत्व १ पुन्यतत्व २
पापतत्व ३ आश्रवतत्व, ४ वधतत्व ॥ एटलेएजीवअजीवम
लीनेनवतत्वथया तथापुन्यपापगणीयेतोसाततत्वथाय.
शिष्य-स्वामीपुन्यपापगणीयेतेशावास्तेनेनागणीये
तेशावास्तेएतत्वछेकेनथी तेसमजावो.

गुरु-जेपुन्यपापवेतत्वछे एआश्रवछे त्यारेएवेतत्व जुदागणीयेतो आश्रवशेनेकहीये जे पुन्यपापनाढलि यांआवेते तेनेजआश्रवकहिये एटलेसातजतत्वछे तथा जेआवेछेतेनेआश्रवगणीनेजेदपापीये त्यारेउदेआवेला जेदलीया तेभोगवीनेखेरवीये तेनेपुन्यपापकहिये एटले तेथीनवेतत्वथाय.

शिष्य-स्वामीएनवेतत्वनोवीवरीकरीनेचतावो.

गुरु-प्रथमअजीवतत्वनीओलखाणकराबुछु अजीव तेकेहेनेकहियेकेजेनेविगेचेतनारुपलक्षणथी तेअजीव नाजघन्यथकीपाचनेदठे नेउतकृष्ठा ५६० जेदठे तेप्रथमजघन्यनापाचभेदओलखावीयेछीये तेनीवीगत-धर्मा स्तीकाय १-अधर्मास्तीकाय २ आकास्तीकाय ३ काल ४ पुद्गलास्तीकाय ५ हवेधर्मास्तीकायतेशुकहिये-धर्मा स्तीकायएकद्रव्यछे तेअरुपीठे चउदराजलोकनाप्रमाणेएद्रव्यएकठे जेटलालोकाकागनाप्रदेश तेटलाप्रदेश छेपणनीराकारछे आकारिकरीरहीतछे तेमाकशीकीरीया नो गुणनथी पणजेजीव पुद्गलचालेछे तेनेसाहाजआपेछे

शिष्य-स्वामीजो एनामाक्रीयानथीतो चालताने साहाज्यकेमआपेते

गुरुवाक्य-हेभद्रसाहाज्यआपवी तेस्वभावीकठे अनेक्रीयाठे तेवीजावीकछे तेवीभावदीशाएनेविशेनथी ते

पोतपोतानास्वजावमांसदायरहेछे जेमजलनोस्वजाववे
तेतरवानोछे तथातेलनोस्वजावदुवाफवानोछे एतेस्वजा
वीककेहेवाय वीभावीकनहीं वीभावीकतेकेनुनाम केजेम
अग्नीछे तेकाष्टादीकनासंजोगथकी साहामीवस्तुनांना
शकरे तेविभाविककहीये.

शिष्य—स्वामीअग्नीमांतोदाहकस्वभावछे एनेविभा
विककेमकोहोछो.

गुरु—दाहकस्वभावछेतेकाष्टादिकवस्तुजोगछे तेनेवा
ले परंतुपथ्थरनेकंडवालवानोस्वजावछेनहीं. पणविभावं
नाजोरथीपथ्थरनेपणवाले तथापांणीछेतेअग्नीनुशस्त्रछे
शामाटेकेपाणीथकि अग्नीनोनाशयाय परंतुविजावना
जोरथीअग्नीपाणीनेपणवाले एटलेविभावतेशु. जंपोता
थकीबीजाअपरनुचलवुं वेमलीनेजेकारजकरवु तेनुनाम
विभावकहीयेअनेविभावतेनेजक्रियाकहीये एटलेतेविभा
वदशातेधर्मास्तीकायमांनथी.शामाटेजेएकथीबीजामलेन
हीं. एटलावास्तेअमेक्रियानीनापामी तथाजेचेतननेचा
लतांसाहाज्यआपेछे तेगाट्टातेकेजेम मातुलांजलनेवि
शेचाल्यांजायछे तेजलनासाहाज्यथकिचालेवे तेमजन्चे
तनधर्मास्तीकायनीसाहाज्यथकीचालेवे. १ तथाअधर्मास्ती
कायबीजोद्रव्यतेपणअरुपीछे तेनेविशेआकारनथी तथा
क्रीयापणनथी तेजडचेतननेथीररेहेवुंहोय तेनेसाहाज्य

आपेछे श्रेष्ठप्रतिकेजेमकोइपुरुपथेचाल्योजायछे अनेते
 धरतीएवीवेजे ज्याहाजाहाडजाझुवेनहीं. अनेत्रिष्मरुतुवे
 एटले जेठमहीनानादाहामवे अनेलुउपणघणीवायछे
 तापपणघणोआकरोछे तेवीवखततेचालतापुरुपने सार
 गमाचालताकोइकजामआव्यु तेजामकेवुछेके महाविस्ता
 रवतजेनीगयाछे एवुजामदेखीनेतेपथीलुउतथातापमाथी
 हीमचोआवतोथकोतेजामहेठलवेसेकेनवेसेअपीतुवेसे एजा
 मनीसाहाज्यथकीतेपथीवेठो तेमजीवअजिवनेथीररेहेवु
 तेअधर्मास्तीकायनीसाहाज्यथकीरेहे. २ हवेत्रीजोआ
 कास्तीकायद्रव्यएकलोकालोकप्रमाणेछे तेपणअरुपीछे
 तेनेविशेषणकशोआकारनथीतथाक्रीयापणकशीछेनहींप
 रतुजमचेतननेअवकाशआपेशेष्टातेकेजेमकाइएचुनेकरी
 नेइटोचणीहोय पगीतेभीतमामागकश्योएहोयनहीं एवी
 साफकरेलीवेतोपण तेनेविशेखीलीमारीएतोमाहीपेसे त
 थाजेमकाटनामोनप्रमुखनेविशे जेटलीखीलीउमारीयेते
 टलीमाहेसमाय परतुतेकाटनुमगलुतेखीलीनामागनुव
 धारेथतुनथी तेजेमएकाटतथाभीतनोस्वजावठे तेजेमखी
 लीनेमारगआपेतेम आकाशद्रव्य जिविपुद्गलनेमारगआ
 पे ३ हवेचोथोद्रव्यजेकाल.

शिष्य--स्वामीपुर्वधर्मास्तीकाय प्रमुखद्रव्यनेआस्ती
 कायकह्यो नेकालद्रव्यनेआस्तिकायकेमनकह्यो एकलो

कालकहिनेबोलाव्यो तेनुशुंकारण.

गुरु-हे देवाणुं प्रीय धर्मास्तिकायप्रमुखजेद्रव्ये तेव
हूपरदेशीछे शामाटेकेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायतथा
जीवास्तीकाय एत्रणद्रव्यश्रशख्यातपरदेशीछेतथाआका
स्तिकायअनंतपरदेशीछे अनेपुद्गलास्तिकायनाखंधअनं
ताछेतेकोइहीपरदेशीछे कोइत्रणपरदेशीछे जावतसख्या
तपरदेशीछे तथाअसख्यातप्रदेशी तथाअनंतप्रदेशीछे त
थाअनंतापरमाणुजुदाछे तेमांपणखंधमलवानीशक्तीर
हीछेमाटेएनेआस्तिकायकह्योअनेकालद्रव्यनेविशेएकस
मयथीवीजेसमयमलेनही.माटेतेनेआस्तिकायकह्योनेही.
शिष्य-स्वामीएकसमेथीवीजेसमेमलेनही त्यारेएने
द्रव्यकेमकहोछो.

गुरु-हेअद्रसर्वशास्त्रनेविशे पंचास्तीकायनीवाख्या
तेअनेद्रव्यठनीवाख्याते पणठोद्रव्यजेकालतेकाइपदार्थ
नथीपणसर्वद्रव्यनेनवानुंजुनुंकरेएटलामाटेतेनेद्रव्यकह्यो
अपरंतुप्रथमसमयनीनाशथाय अनेवीजोसमयआवे माटे
कालद्रव्यनेउपचारेकरीनेद्रव्यकहीयेछीये तेद्रव्यअरुपी
छे आकारपणकइयोएछेनहि क्रीयापणठेनहि नवीवस्तु
नेजुनीकरेएवुं परावर्तन धर्मठे४ हवेपुद्गलास्तिकाय तेने
विशेरुपीपणठे आकारपणछे तथाक्रीयापणछे मलणवी
खरणस्वभावठे५एटलेअजीवनापांचेभेद तेमधेचारभेद

श्रुपीअनेएकरुपी एसर्वेमलीनेपाचनी ओलखाणकरा
वीएसर्वे वेहेवारनयनापक्षछे हवेजे ५६० जेदएनाकही
शु तेअशुद्वेहेवारनयनापक्षठेशामाटेकेकल्पनाकरीनेभे
दउठाववा तेनुनामअशुद्वकहिये अनेवेहेचवुतेवेहेवारए
टलेअशुद्व वेहेवारथयो.

शिष्य—एवाअशुद्वभेदवेहेचवामाशिजिरुठे एवाकल्पी
तजेदकरवानेवस्तुता कइजुदीपमनीनथी तेतोतेपाचमां
नेपाचमाठे तीशावास्तेकल्पीतजेदकरोठो.

गुरु—हेभद्र एतेकह्युतेखरु परतुवालजीवने जेदवेहे
च्याविनासमजणआवेनहि तेवास्तेएजेदवेहेचवापमेठे
जेमकोइपुरुपपोतानाघरना माणसनेकेहेजेदातणलाव
तेवारितेपुरुपढाह्योसमजुहोयतो दातणपाणीनोलांटो रु
माल तमाक प्रमुखजेघस्तोहोयतेसर्वेलावे एटलेतेजाणे
केवधुएजोइशे पणअणसमजुहोय अथवावालकछोकुरु
होय तोतेनेजेटलीवस्तुकहिये तेटलीलावे माटेतेनेसर्वे
वीवरीनेकह्युजोइये तेमजसमजुपुरुपहोयते सखेपेथी

त्रीणि लोक इत्यादीकजेकल्पीये तेदेशकेहेवाय २ तेनाप
 रदेशत्रसंख्यातते जेटलालोकाकाशनाप्रदेशते तेटलाए
 नाते ३ तेद्रव्यथकीएकजद्रव्यते ४ खेत्रथकीलोकाकाश
 प्रमाणेते ५ तेकालथकीअनादीअनंतते एटलेआदीअं
 ल्यनथी ६ ज्ञावथकीवरण गंध रस फरश तथा स्वस्था
 ननथी ७ गुणथकीजीवपुद्गलनेचालता साहाज्यआपे
 ८ तेमजअधरमास्तीकायनेविशेजाणवा परंतुएटलोवि
 शंप केधर्मास्तीकायचालतानेसाहाज्यआपे तेनहिनेथी
 ररेहेतेनेसाहाज्यकरतेगुणआठमोलेवो २ आकास्तीकां
 यनेविशे खधजेछेते लोकालोकप्रमाणे १ देशतेचउदरा
 जलोकप्रमाणे तेनेदेशकहिये कदापीओठोअधिकोकल
 पिये तोपणतेनेदेशकहिये २ परदेशअनंताते ३ द्रव्य
 थकीएकद्रव्यते ४ खेत्रथकीलोकालोकप्रमाणेते ५ का
 ल ६ तथाज्ञावथकिपुर्ववत ७ गुणथकीअवंगाहनागुण
 जद्रुचेतननेमार्गआपे ८-३ चोथोकालद्रव्यना ६ जेदते
 मधेकालद्रव्यविशेखधदेश तेजनहिं शामाटेजेअबतोपदा
 र्थतेसदायएकसमेलाधे १ द्रव्यथकीकालद्रव्यएकते २ खेत्र
 थकीअठीहीपप्रमाणे ३ काल ४ तथाज्ञावथकीपुर्ववत ५ गुण
 थकीनवापुरानावर्तनालक्षण ६ एकालद्रव्यउपचारथकीते
 एटलेअजीवअरुपीद्रव्यनाचारजेदधर्मास्तीकायआदेदइ
 ने कह्यातेसर्वेअरुपीते तेज्ञानीनादीठामांआवे परंतुचर्म

द्रष्टीवालायी देखायनहि एमसदहवु हवेरुपीद्रव्यकहि
 येगीये पुद्रलद्रव्यजेरुपीतेनाजेदकहियेगीये वरण ५ रा
 तो-१ पीलो २ लीलो ३ धोलो ४ कालो ५ गंध रस
 रजीतथादुरजी रस ॥ कन्वो कशायलो खाटो तीखो
 मधुरो फरस ८ टाहाओ १ उनो २ लुखो ३ चोपनो ४
 नारे ५ हलवो ६ वरहट ७ शुकोमल ८ स्वस्थान ५ लावु
 १ गोल २ त्रीखुण ३ चोखुण ४ वलीयानेआकारे ५ हवेपा
 चवरणना १०० भेदथायतेकहियेगीये प्रथमजेरातोवरण
 तेनेविशे सुरभीतथादूरभीवेगधहोय-रसपाचेलीधे फ
 रसआठेलाधे स्वस्थानपाचेलाधे तेनास्वामीकहियेगीये
 रातेवरणेकुसुमगुलाव तथाकमलप्रमुखते तेनेविशेगधशु
 रभीवे फरससकोमलहलकोतथा शीतलते तथास्नीग्ध
 पणुते स्वस्थानगोलते रसमधुरोते एमएकएकवरणमां
 गंधप्रमुख ज्याहाजथाजोगजोइये तेवागणीलेवा एटले
 एरातावरणनेविशे विशभेदथया तेमलीलावरणनाविश
 पीलावरणताविश शामवरणनाविश धोलावरणनाविश
 एटलेएपाचवरणनामलीने १०० थया-एटले

हेविसन्नेदलाधे तेनीविगत-वरण ५ गंध २ फरस ८
 स्वस्थान ५ एटलेविशथया एमपांचरसनाथइनेसोथाय
 तेमजस्वस्थाननाविशेषण २० भेदलाधेतेनीविगतउप
 रप्रमाणोपाचस्वस्थाननाथइने सोभेदथयातेमजगंधनेवि
 शेतेवीसभेदलाधे तेनिविगत वरण ५ रस ५ फरस ८
 स्वस्थान ५ ए २३ सुरजीगधनाने २३ दूरभीगंधनाम
 लिने ४६ थाय हवेफरसनाप्रथम ७ फरसनेविशेप्रतिप
 क्षीउप्तफरसनहोय बाकीना ६ एफरसलाधेवरण ५ रस
 ५ गंध २ स्वस्थान ५ एटलेतेविसथया एकफरसनाते
 विसतेमआठेफरसनेतेविसतेविस गणतां १८४ नेदथया
 एटलेवरणना १०० रसना १०० स्वस्थानना १०० गं
 धना ४६ नेफरसना १८४ सर्वेमलीने ५३० थयाएट
 लेरुपिअजिवद्रव्यना ५३० नेदथयाअनेअरुपिद्रव्यना
 ३० भेदएटलेसर्वेअजिवमलिने ५६० भेदथयाएसर्वेअ
 शुद्धव्यवहारनयनापक्षछे एटलेअजिवतत्वकह्यो हवेआ
 श्रवंतत्वउलखावियेठिये एटलेआश्रवकहेतांजेकर्मनुंआ
 वंथायठे तेनेआश्रवकहियेअनेतेआश्रवशाथकीआवेछे
 अनेतेनोहेतुकोणठे तेनुंकारणदेखामियेठिये हवेएआश्र
 वनेआववानेमुलहेतुच्यारछे उत्तरहेतु ५७ ठेतेमुलहेतु
 नानामिथ्यात १ अत्रत २ कपाय ३ जोग ४ तेमामि
 थ्यातना ५ भेदछेतेमांपहेलुअभीग्रहिमिथ्यात तेकहेने

कहिए जेपुरवेअज्ञानपणानेविशे कोइअज्ञानिनिसगेअ
 थवाअज्ञानिगुरुनाउपदेशथकीजेसाअल्युछे अनेजेवस्तु
 ग्रहणकरीबे । तेछोडेनहि कदापिकोइसुगुरुमले नेघ
 णिरीतेकरीनेसमजावेतोएपणपोतानीहठछोमेनहि । लोह
 वाणियानिपेठे अहियालोहवाणिआनोद्रष्टातलखीयेछीये ।

वंसंतपुरनगरीनेविशे धनदत्त १ धनसार २ धनवल
 म ३ वसुहिण ४ एवेनामेचारवाणीयावसेठे तेवारेनेढोस
 दारीनोहकघणोठेपरतुचारेनीरधनछे एकसमेचारेजेगा
 थइविचारकरघोकेआपणीपासेधननथी धनविनामानपा
 मियेनहि नेसुखपणहोयनहि माटेपरदेशधनकमावाज
 इयेएमविचारीनेचारेजणपरदेशगया आगलजतांएरुदी
 वशनासमाजोगे एकअटवीमाजता रस्तोभुल्यानेउचा
 गमेमारगेजायठे नेआगलजताएक लोढानीखाणआवी
 तेवारेचारेजणेविचारकरघोकेलोढुल्यो -आपणनेखरची
 माखपलागशे एमविचारीचारेजणेलोढुलिधु त्याथकी
 आगलचाल्या त्याकलाइनीखाणआवी तेवारेसाहोमाहे
 कहेवालाग्याके कलाइल्यो लोढुपद्म्युमुको तेवारेअणज
 णेलोढुपद्म्युमुकोकलाइबाधी पणचोथेजेवसुहिणतेणेक
 लाइनलीधी ।त्यारेअणजणाकहेवालाग्याके तुकलाइले
 एटलेआपणेजइमे तोपणतेबोल्योनहि । एमघणीवारक
 ह्युत्यारेतेबोल्यो केतमारीरीतजोइनेहुतोनेचकथयोछुत्या

रेत्रणेजणेपुछ्युकेतु शामाटेएवडुंबोलेने तेवोल्पो केतमेद
 गाखोरआदमीगे तेउकहेतारीसाथे शोडगोकरयो. तेणे
 कहुंकेतमेलोढानासगानथया तेनेत्याथीलावीने अधव
 चनाखीदीधुं तोतमेतेनाजलानथयातो विजानाशुंनलाथं
 शो तेवारेतेउकहेकेएमांकाइजिवनथि केदगोकरयो एम
 घणीरीतेकहुंकेतुंकलाइबांध पणकोइनोसमजाव्योसम
 ज्योनहि त्याथकीआगलचाल्या एटलेत्रांवानीखाणआ
 वी त्यांपणतेसमज्योनहि पुरवनीपेरेलोढुराखीरह्यो ने
 त्रांबुलीधुंनहि तेमजआगलजतारूपानि तथासोनानी
 तथासोलेजातना रत्ननीखाणआवी त्यांपणएणेकोइनुक
 हुंमान्युंनहि त्यारेसोलमीजेमणीरत्ननीखाणछे त्यांने
 शीनेधनसारप्रमुखेकहुंजे अमारेहवेआगलकमावांजवुं
 नथि केमकेजेजोइयेतेधन इहांमल्युजे माटेअमेपाळाघेर
 जइशु वास्तेसमजिनेमणीरत्नले नेलोढुंनाखीदेएटले
 आपणेघेरजइयेतोसरवेसुखीयाथइये परंतुतेवसुहीणेको
 इनुंकहुंमान्युंनहीं उलटाअवगुणवोल्याकरयो वलीतेम
 णेकह्युंके घेरगयापठीतुंमागीशतो अमथीअपाशेनहीं.
 इत्यादिकघणीतिरेहसमजाव्यो पणतेसमज्योनहीं. पछी
 चारजणघेरआठ्या तेमांत्रणजणे मणीरत्नवेचीने करो
 मोसोनइयानो वावसायकरवामांभ्यो. पालखी, मेना,
 घोडा, गामी, चाकर वीगेरे मोटीठकरातकरीनेवेठा ने

वसुहिणतोहता तेवानेतेवारह्या तेवारेगामनालोकतेनेपु
 छेजेतमेचारेमित्रसाथेगयाहता नेत्रणधनवानथया नेतुं
 कइनलाव्योतेशु त्यारेमोघमउत्तरआपेके एत्रणदगाखो
 रछे कुटीलमाणसछे विश्वासकरवाजोगनथी एवोउत्तर
 करे तथीगाममाएवीवारताप्रसिद्धथइके केटलाककेहेठेके
 एनोजागत्रणेजणेआप्योनहीं केटलाककेहेठेके एजकमा
 योहतो तेत्रणेजणेमलीनेवसुहीणनुपानीलीधु एममुखमुं
 खनोखीनोखीवारताप्रवर्ते त्यारेगामनावेदाह्यासर्मजुह
 ता तेणेवसुहीणना सगावाहालानेठपकोटीधोजे तमजे
 वासगाने तेबचारागरीवनुपेलात्रणजणखाइगया तेनीत
 मेमदतकरतानथी एठीकनहीं सारासगाशाकामनाठे ते
 वारेतेमगावाहालाबोलाजे शेठजीतमेअमनेठपकोआ
 प्योतेठीकठे पणअमनेकह्यावगरशीमालमपडे त्यारेतेम
 णेकहयुके एगरीवशुंकेहेवाआवे तमारंबोलावीनेपुछयुंजो
 इये तेवारेतेसगावाहालाजेगाथइने वसुहिणनेबोलावीने
 पुछवालाग्याके ताहारेशीहकीगतथइ तेणेजवापदीधोके
 १. दगाखोर एवाआदमीनीवातकरवामाकाइमालन
 थीसगाएकहयुकेलुच्याप्रमुखजेवाहशे तेवानेअमेपोहोंची
 शु पणतुअमनेवातकहे पणतेवातकेहेनहि घणोआग्रह
 करीनेतेनीपासेवातकेहेवडावी. १५ त्यारेमाहेथीसारएवो
 निकलयोके एणेजेपुर्वेलाहुंजाल्युंहेतुं तेछोडचुनहीं अनेपे

लान् ए जे सारवस्तुदीठितिलीधी. असारदीठितेनाखीदी
धी. एवसांभलीनेजेसगामल्याहता तेवोल्याकेभाडतारा
कर्मनोवांकठे एमनोवाकनथी विनाहकनाहक एमनोवां
कशावास्तेकाहाडेठे जेते लोडुजालीनेहठनमुकीतोतुदुखी
योथयो एमणेतोतनेघणुंसमजाव्यो पणतेनामान्यु एमां
एमनोकांइवांकनथी एटलेजेमते लोहवाणियोदुखियोथ
यो तेमप्रथमअज्ञानपणामाजेवस्तुजाली तेकोइसुगुरुम
लेयीनागेडेतो तेचारगतीसंसारमा अनंताकालरखडेते
नेअभीग्रहीमिथ्यात्वकहिये १

बिजुंअणाभिग्रहिमिथ्यात कहेतांतेनेविशेहठवादनहि
तेमसरधापणस्थिरनहि सर्वेनेदेवजाणे कोणसरागीने
कोणवितरागी तथाकोणदेविदेवला तथासर्वेनेगुरुजाणे
कोणनिग्रंथनेकोणसग्रंथ कोणआरंभी, कोणअणारंभी
एसर्वेनेवादेपुजेपणएनेविशे सारानरतानिखवरनहि गु
णअवगुणनीपरिक्षानहि मुक्तिदायकसुगुरुतेनेपणसर
खागणे सआरंभिकुगुरुकुगतिनादातार तेनेपणसरखा
जाणे एटलेतेनेविशेजाणपणकुणुंएनहियेजमोटुंअज्ञानए
बिजोभेदमिथ्यातनोजाणवो २ त्रिजोअचिनवेशिमिथ्या
त्व तेनेविशेजाणिनेखाटीहठकरवी केमकेकाइप्रथमअ
ज्ञानपणामां सरखावचनानिकलीगयुं पछीसमज्यामां
आव्युके आपणेवचनवोल्यातेमिथ्यावे परतुआपणेवो

ल्यातेकांइपाछुंफरेनहि एमविचारिनेवचनउपर अने
 तुजुक्तिलगाविनेतेनेसाचुकरे कोनीपेठेकेजेमआगुछुं
 चारियोवाला नोखीनोखीसमाचारियो वाधीनेवेठावे
 नेशास्त्रमाप्रतक्ष अक्षरदेरेवेनेमानतानथी अनेपोत
 गवनीसमाचारिनोमुमतमुकतानथि अनेमुखथकीए
 हेछेके एककानोमात्रउथापशे तोअनतससारीथशे ने
 मपदेद्वयारेएकेमानेनहि पोतानीमतलवमाआवेतेमा
 पोतपोतानाघरडाआगलमरीगयाहोय तेनेआडाध
 तेथकीतमेकाइविशेषजाणोठोएमणीकरचुहशेतेसमजी
 करचुहशे तथासिद्धांतनेविशेश्रारंजपरीग्रहजेमओठो
 तेमधर्मकह्योवे पणआकालेतोजेम श्रारंजपरीग्रह
 रेतेमधर्ममानेछे वलीमुखथकीएवुकेहेछेके कानोम
 उथापवाथी जमालीपरमुखसातनीन्नवथया एमकहि
 खाडे अनेपोतेसाबुथांसुत्रउथापे पोतेमनमानविचां
 आपणेमोहोटांनीन्नवठीये तथापरमात्माना मार्गने
 तो समकीत १ ज्ञान २ चारित्र ३ एवस्तुओआत्म
 रुपमात्रे अनेआत्मस्वरुपथी प्रगटथायतो जतेनीमुकर्त
 य शामाटेकेकेवलज्ञान तथामुक्तिएसर्वेशुकलध्यान
 तथासमकितप्रमुखएसर्व आत्मत्वभावमाछे एवुसर्व
 द्वातमादिजेछे परंतुएवापाठकोइसिद्धांतमाजोवामा
 वतानथि जेफलाणातिथगयाथकीमुक्तिधाय तथाफ

णित्थीनोउपवासकरवो तेथकीमुक्तिथाध तथातेतंपनु
 उजमणुकरवं तथागुरुनांनवअंगपुजवां तथापोथीपुजवि
 तथावासन्नखाववां तथाजोगउपधानवहेवां तथातेनिवि
 धिकराववी तेनारुपैयागुरुनेदेवाइत्यादिक हालमांएवहे
 वारघणोदिसेछे नेसुत्रमापाठनथि तेनीपरुपणाकरवी ने
 जेसुत्रनेविशेआत्मस्वरुपथीज मुक्तिकहितेनपरुपे तेने
 अभिनिवेशी मिथ्यात्वकहिये किमकेतेजाणीनेसिद्धांतनी
 रीतेपरुपतानथि पोतानीमतलवनुंपरुपेठे तेनेअज्ञीनिवे
 शीमिथ्यात्वकहिये ३ चोयुसशयकमिथ्यात्व कहेतांजेकेकं
 लीपरमात्मानावचननेविशे शंकाउत्पन्नथाय जेमठछी
 बुद्धिनाधणीजेवालजिवछे तेणेप्रथमअज्ञानी तथाकुगुरु
 नावचनथीसाजलेलीवातोतथाशास्त्र पछीसुगुरुतेनेवतावेछे
 केजाइउएतोआश्रवनातथाश्रारंजना कामतमेकरोछोते
 थकीतमारससारवधगे माटेतमेसवरनिरजरानुकामकरो
 नेउपाधिठेतेटालो जेमतमाराआत्मानुंकारजसिद्धथाय
 तेवारतेनामनमाशंकापेठेके आवचनसाचुकेपुर्वे सांभ
 ल्युंतेवचनसां चुएमशंकारहे पणशास्त्रजोइने निश्चैनकरे
 तेनेसंशयकमिथ्यात्वकहिये ४।

पाचमुअणानोगमिथ्यात्वकेहेतां अजाणपणुजेनेधर्मक
 र्मनीकंशी ओलखाणनथी ससारमारच्योपच्योरेहेछे
 आत्मस्वरुपजाएयुंनहोय त्यांहासुधीअजाणकहिये शा

माटेके सिद्धातमाएवुकहद्युछेके अभेगयाजिवाजीवाइत्या
 दीकपाठवेमाटे जीवअजीवनीआदेदेइनेस्वरुपजाणेप
 ठे जीवस्वरुपनेसदहे अजीवसत्तानेदूरकरे इत्यादीकआ
 त्मस्वरुपनुजाणपणुछेतेने जाणकहियेएवीनानाबीजाजे
 रह्या तेनेअणाओगमिथ्यात्वकहिये ५ एमिथ्यात्वनोअ
 धिकारकह्योतेचोथाकर्म ग्रथथकीजाणजो एमिथ्यात्व
 ज्याहासुधीगयुनथी त्यांहासुधीकोइजीवसमकीतपा
 नहिं एमिथ्यात्वनाकारणथीअनतानवाकर्मउपारजेने आ
 त्मानेजारेकरे एथकीआत्माअनताकाल ससारमापरीत्र
 ह्यणकरे एटलेआश्रवनोप्रथमहेतु कह्यो मुल १ उत्तर
 ५ हवे बीजोहेतुअवरतठे तेना १२ जेद तेनीवीगत प्र
 थ्वीकाथ १ अपकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वन
 स्पतीकाय ५ त्रसकाय ६ फरसेद्री ७ रसेंद्री ८ घ्राणेद्री
 ९ चक्षुइद्री १० श्रोतेद्री ११ मन १२ एवारनेजेणेसवरचा
 नथीनेनेमकरद्योनथीतिथिने एवारेकारणथकी अनंता
 कर्मनुंआववुंथायछे केमकेजेमघरनेवेशे वारगोडांतेछी
 मापुरेनहि त्यासुधिचोरचवारसर्वेआवे नेतेघरमांकाइ
 मालजणगरहेनहि तेमइहाआत्मारुपीअघर तेनेज्ञानद
 रसनरुपीधननेवारअवरतरुपीयाठिमा तेमध्येरागद्वेपरु
 पियाचोरनुआववुंथाय ज्ञानदर्शनरुपिधनठे तेचोरीजाय
 पणएवारठिडाछेतेपुरेतोसुखेरहेवाय एआश्रवनोबिजोहे

तुकह्यो मुल २ उत्तर १७ हवेत्रिजेहितुकपाय १ विजो
 नोकपाय २ हवेतेकपायनाचारभेदछे क्रोध १ मान २
 माया ३ लोभ ४ तेएकएकनाचारचारभेदछे तेमध्येपहे
 लोअनंतानुबंधियोक्रोध केवोछेकेजेमपथ्थरनीसल्याफा
 टिपमी तेफरीयीजेगीनथाय तेमअनतानुबंधियाक्रोधवा
 लोजिव श्रावखापरजंतक्रोधेधमधामोरहे १ तथाअनंता
 नुबंधियोमानकेवोछेकेजेवापथ्थरथंन अनेकउपायकरिये
 तोपणनमेनहि कडकाकडकाथायपणतेनमेनहि तेमअनं
 तानुबंधियामानवालाजिव राज, पाट, देश, धन, सर्वेखुटे
 अनेकलोकसमजावेपणकोइनेनमुपासुआपेनहि २ अनं
 तानुबंधिमायाकेविवेके जेवांवांसनांमुरामांविनिविनथइजा
 यपणपांअराथायनहि तेमअनंतानुबंधिमायावालाजिव
 जिवेत्यांसुधिकपटतजेनहि ३ तथाअनतानुबंधिलोचके
 वोछेकेजेवाकरमजनारंगनुलुगडु बालिनेराखकरीयेतोप
 णलालरहेपणरगतोमेनहि तेमअनंतानुबंधिलोभवालो
 जिव जिवंतपरजंतलोचनतजे ४ तथाविजिचोकमीअप्र
 तियाखानीयाकपायनीकहियेछिये.

अप्रत्याखानीक्रोधकेवोछेके कोइकालीभोमीकानेविशे
 फाटपडेहे तेबारमहिनेवरसादपांणीनवांथाय नेघणांढो
 रंढांकणउपरफरेतेथीगुंदाइनेएकयायतेमएक्रोधवालाजी
 वनेबारमहिनेक्रोधंउतरे. १ तथाअप्रतीखानीमानकेवोछेके

जेवो अस्तीनोथाजो घणीमेहेनते घणिकष्टेकरीने कोइक
 बालवासमर्थथाय तेमएमानवालानेकोइकघणीतरेहथी
 समजावतामानछोडे. २ अप्रतीखानीमायाकेवीछेके जे
 बांधेदानांशींगडापाशराकरवां तेकोइपुरुषकलावालोहो
 य नेघणीकतरेहथी मेहेनतकरेत्यारेपासराथाय तेमएमा
 यावालानेकोइ बहूरीतथीसमजावेतोमायातजे. ३ अप्र
 तीखानीलोचकेवोछेके अज्ञानीलोकनाजोइकुवाछे तेम
 घेघरनीअशुची अपवीत्रएठवाढ प्रमुखमांहेजायछे तेस
 दायकोहीगएलुरेहेते तेनोमाघजेवस्तरनेलागेतोतेधोबी
 थीपणजायनहीं कोइखरोकस्वीमलेतोएमाघनेकाहाभते
 मतेलोचवालाने कोइखरीमेहेनतकरनेतेनेसमजावेतोते
 लोचछोडे तेविनाकाइछोडेनहि. ४ हवेत्रीजीचोकडीप्रत
 खानीकपाय तेमधेप्रत्याखांननोक्रोधकेवोछे केजेवीवेत्
 नेविशेवेजागरुरीये तेकश्येएनीमलेजेगाथायनहिं परंतु
 वेरुतुगएथके त्रीजीरुतुआवेत्यारे तेवारिसामोपवनआवे
 तेरेतउमीनेखाणपुरे तेवारितैरेतीएकमेकथाय तेमएक्रोध
 वालापुरुषनेकोइसमजावेतोमुकीदे जावतचारमासउपर
 रहेनहि १ तथाप्रत्याखानीमानकेवोछेके जेवोलाकमाने
 थाजोकोइपुरुष तेजतापथीमेहेनतकरे तोथोडीमेहेनतर्थ
 वलेतेमतेमानवालाजीवने कोइसारीरीतेसमजावीने केहे
 तोमानमुकीदे अथवाकेटलेदाहाडे स्वभावेपणमुकीदे. २

तथाप्रतीखानीमायाकेवीछे केजेवीगउमुत्रीका जेमवांकी
 वांकीमुतरतीचालेतेनेकोइपुरुपजालीनेउन्नीराखेतोवांका
 इनरहे तेमतेमायावालाजीवने केटलीतरेहसमजावीने
 केहेतो तेपुरुपकपटबोडीदे. ३ तथाप्रत्याखांनीलोचकेहे
 वोठे जेवुंगाडीनुंउजणतेनोडाघजेवखनेलाग्योहोय तोधो
 बीनेत्याहांगयेथकेडाघजाय तेमतेलोभवालाजीवनेकाइ
 थोडीमेहेनतकरीने समजावेतोलोचतजे. ४ तथाचोथी
 चोकडीसंजलनीकहियेछिये तेमधेप्रथमसंजलनोक्रोधके
 वोहोय जेमपाणीमांश्रागललीटातांणताजइये नेपांछले
 लीटीमलतीजाय तेमएसंजलवालाक्रोधनाजीवने क्रोध
 नोधमधमाटथाय पणतुरततेक्रोधउत्तरीजाय तेनोपदर
 दाहाडानोनियमठे एनियमचारेकशायनापराएसमजवा
 १ तथासंजलनोमानकेहेवोहोय जेवानेतरनोथंन जेमवा
 लीयेतेमवले तेमतेमानीपुरुपतेमानश्रावेनेतुरतवलीजा
 य. २ संजलनीमायाकेवीछेके जेमवेलाउगेठे तेवांकावां
 कांचालेछे परंतुएकठेडोजालीनेताणीये एटलेपांशरोतीर
 याय तेमतेमायावालाजीवमनमांकपटकरे पणक्षणएक
 मांकाहाडीनांखे. ३ संजलनोलोचकेवोछेके जेवोहलदी
 नोरंगतडकोलागेनेउडीजाय तेमतेलोचवालाजीवनेलो
 चनोउदयथाय परतुक्षणएकमांवलीजाय. ४ एटलेएक
 पायनचारेचोकडीना सोलजेदसाहित कहिनेदेखाइया

हवेनोकखायनुस्वरूपकहियठिए एनोकखायनानवभेदठे.
 शिष्य--स्वामिनो कखाय एवोशब्दशाथकीमुकवोपमचो
 गुरु--हेनद्र एनेविशे कपायपणुनधि परतुएथकिकपा
 यउत्पनथायमाटेएनेकपायतोनाकहेवाय तेथोनोकखाय
 कह्यापरंतुएकखायनहि पणकखायनाजाइछे हवेप्रथम
 हास्य; एनामेनोकपायठे एटलेहाशीएवुतोविनादिनुनाम
 ठेपरंतुहाशीथकिविखवादथाय एमसरवेनेदमा ससंजि
 जावु १। रतकहेताशातामांनवि तेथकिपणसामानेअथवा
 पोतानेद्वेपादिकारणउत्पन्नथाय २ अरंतएटलेअशाता
 तेथकीप्रतक्षद्वेपभावदिसेठे ३ भय एटलेभयथकीपणद्वे
 पादिकारण उत्पन्नथायठे ४ सोगतेथकिपणद्वेपउत्पन्न
 थाय ५ दुगठतेथकीपणद्वेपथाय ६ पुरुपवेदएतोमहावि
 खवादनुकारणादिसेठे ७ छिवेद ८ तथानपुशकवेद ९
 एत्रणनेदनाउदयथकीप्रतक्षकंकासभापणथायछे एटले
 नवेनोकपायकह्या एटले कखायतथानोकखायमलीने
 २५ नेदथयाएकपायनाकारणथकी अनताकर्मआवेछे
 जायछे। एटलेकखायकह्यो मुल ३ उत्तर ४२ हवेजोगनुं
 स्वरूपकहियेठिये तेनात्रणनेदछे मनजोग १ वचनजो
 ग २ कायजोग ३ तेमध्येमनजोगनाचारनेद सतमन
 जोग १ सतासतमनजोग २ असतमनजोग ३ असता
 सतमनजोग ४ तथावचननापणचारनेद सतवचनजोग

१ सतासतवचनजोग २ असतवचनजोग ३ असतासत
वचनजोग ४ तथाकायजोगनासातचेद उदारीककाय
जोग १ उदारीकमिश्रकायजोग २ विक्रियकायजोग ३
विक्रियमिश्रकायजोग ४ आहारककायजोग ५ आहार
कमिश्रकायजोग ६ तेजसकारमणकायजोग ७ एटले
एजोगनापंढरचेदकह्या एजोगथकीपणअनंताकर्मआवे
ठेएटलेमुलहेतु ४ अनेउत्तरहेतु ५७ एनवांकर्मआववा
नाकारणकह्यां एटलेहेतुकहेतांपकर्मआववानावालेशरी
ढलालठे एमांहेलोएकहोयत्यांसुधिकर्मआवे जेएचारनों
नाशकरेतेनिपासेकर्मनाआवे कोनीपेठेकेएकसरोवरछे
तेसरोवरनीचारेदशथकी पाणिआवेठे तेमांपुर्वनीदशेपां
चगडनालांठे अनेदक्षणीदशेवारगडनालांठे तथापश्ची
मनिदशे २५ गडनालांछेनेउतरनीदिशे १५ गर्जनालां
ठे एटलेपांणीआववानाहेतुएगडनालांछेएगडनालांछेतो
पाणीआविशके जोगडनालां वंधकरियेतोपाणी आवि
शकेनहीं तेमइहांएकजीवारूपसरोवरठे तेनेविशेपाचगड
नालांतोमिथ्यातनांजाणवांवारगडनालांअव्रतनाजाणवा
पचीसगडनालांकपायनांजाणवांतथापंढरगडनालांजोग
नांकह्यांठे एसेर्वमलीने सतावनगडनालांठे एसतावनेग
डनालेथडेने कर्मरुपियांपाणीचाल्यांआवेछे तेथिजीवरुपि
यासरोवरनेस्फाटिकंरत्नरुपजेतलियुंठे तेदेखातुंनथि,अ

नेत्राहासुधीएगडनालांबंधनथाय त्वांहांसुधीकर्मरूपीए
 पांणी आववुंबंधकेमथाय अपितुनजथायएटलेजे, आवे
 छेरुमतेहनेजआश्रवकहिये २ हवेतेहिजआश्रवनेविमं
 आठ्याएवाजेकर्मतेनावेभेद्र एकशुभअनेवीजोअशुभहं
 जेशुभतेथकीशुशुकारजथाय तेकहियेछइये शरीरसार
 वधायरुपसारुहोय २ घांटसारोहोय ३ इद्रियोपांचेप
 वमीहोय ४ गतीसारीदेवतानी तथामनुष्यनीउत्तमंपामे
 ५ धनपामे पुत्रपरिवारपामे राज्यधानोपामे इद्रनीपडं
 पामे तिर्यकरगोत्रवाधे इत्यादीकजेजेकारजरुडु तेस
 नेशुभप्रकतीकहिये तेनेपुननोउदय जाणवो तेथकिउ
 राठुजेटलुविपरितठे तेसर्वेशुभजाणवु तेनेपापनोउदय
 कहिये एटलेकर्मनुआववु तेनेआश्रवकहिये अनेजेवां
 तेकर्मउदेआठ्यां तेनेपुन्यपापकहिये एटलेएसर्वेपुद्र
 दलठे तेआत्मानीघातकर्ताछे एथकिकाइआत्मानुं कल्य
 णथायनहि

शिष्य--हेजगवानतमेपुन्यपाप वेहूसरखागणीनीखेदं
 नाख्या नेएवेमांफरकघणोठे शामाटेकेपुन्यनाउदेथकी
 त्तमगतीनेपामे देवगुरुधरमनीसगतीथाय तीरथजात्रा
 तनियमकरे वेरुपैयासारेमार्गेवावरे तेथकीसासनदीपे
 नेतमेपापनीसाथेकेमगणोछो.

गुरु--हेभद्रतेपुन्यनेअधिकजाएयु नेपापनेन्युनजाणेहं

तेतुंसुखदूखआश्रीनेसमजे परंतुजेटलुंसुखनुंकारणछे ते
 पणअंतेदूखनुंकारणथाय अथवादुखनुंकारणतेअंतेसुख
 नुंकारणथाय परतुएवनेपुद्गलछे एकांइआत्मीकगुणनथी
 शामाटेजेमोटामोटाराजा तथाशेठसाहूकार तथाजावत
 नवथीवेकनादेवसुधी - एसर्वनेअंते चारेगतीसंसारमा
 रखन्वानुंथायठे तेमधेजेसमकीतीजीवछे जावतपांचअनु
 तरवीमाननादेवसुधी तेचारगतिमांरखडेनहीं शामाटेके
 तेएवुंजाणेछेके आसुखसर्वेपुद्गलीकठे संजोगेमल्युंठेबीजो
 गेजशे माटेवीणाशिकिसुखनीमोरठाकोणराखे तेपोताना
 आत्मीकसुखमांमगनठे तेनेकोइनाआशानथी एकफक
 तआत्मीकधर्मनीरणताकरनिरेहेठे , तेनेचारगतिमांर
 खडवुंनहोय अनेजेपुद्गलीकसुखनाजोगीछे तेचारगति
 मांरखडे.

शिप-हेभगवानतमेकह्युंके आत्मीकसुखनाजोगीछे
 तेसाचुपणसुखपाम्या तेपुन्यथीखराकेनहीं माटेपुन्यने
 पाषनीवरावरकेमगणाय.

गुरु-हेभद्रपुन्यथीपाम्यातेठीकपणतेकंइपुन्यमांरच्या
 पच्यानथी तथापुन्यचाहिनेकरवागयानथी केमकेजेमडां
 गरनोवावनारोपरालवास्तेवावतीनथी तेमसमकीतीजी
 वजेजेकामकरे तेआत्मानाधरमवास्तेकरे पणकंइपुन्यवा
 स्तेकरेनहि कदापितदभवमोक्षेनजावुहोयतो शुचगती

बाधे परतुतेशुचनाउदयमासमकीतीराचेतहि तथाजेव
 वगुरुधर्मनीसामग्रीमेलवे एवुजेतेकह्यु पणतेकइएवोनि
 यमनयीके देवगुरुधर्मनीसामग्रीपुन्यथीजमले. शामा
 केदेवगुरुनीसामग्रीमलवीतेनाघणाप्रकारछे जेपापने
 देयीदृढप्रहारीचोर प्रतक्षचारहट्या करीनेजाताजगुरुने
 ल्या नेगुरुनीपासेधर्मपामीचारीत्रलीधुं लेइनेछमास
 धीमहापरीसहसहीने केवलज्ञानउपारजिनेमोक्षेगया
 थादूरगधाश्रावतीचोवोसीमा पद्मनाभतीर्थकरपासेव
 क्षालेइनेसिद्धिवरशे तेनोपणपापनोउदयजोयामाआवे
 तथाश्रीनगवतीजीमा अरजुनमालीदीनएकप्रते छपु
 पनेएकस्त्री एमसातमाणसदीनदीनप्रते मारवावालोते
 एमगवाननीपासे दीक्षालेइनेमुक्षेगयो इत्यादिकवहु
 णानोविचारशास्त्रामाठे तोएथीकाइएवोनियमनाययो
 पुन्यथकीजदेवगुरुनीसामग्रीमले तथाकह्युके तीरथ
 त्राव्रतनियमकरे तेपणपुन्यहोयतोथाय तेवातपणा
 ध्यातछे शामाटेकेस्थावरतीरथनीजात्राएजवुआववुंते
 इधरममानथी केमकेतेनेकोइगुणठाणानीअपेक्षालागेन
 शिष्य-स्वामीचोयागुणठाणानीएकरणीछे अनेतम
 णसम्यक्तद्वारग्रथमा तथामदीरस्वामीनीढालोप्रमुख
 णाशास्त्रोमाजावेजाछो नेतमेइहानाकेमकोहोबो.
 गुरु-हेमानुजाव अमेजेसम्यक्तद्वारप्रमुखने विशेष

व्याधिये तेनुंकारणसामल एकतोकलपवेहेवार आका
लनाघणालोकोनुंमानेलु माटेतथावीजुंकारणके ढुंडीया
लोकोवीलकुलप्रतमाउठावीनेवेठाछे तेआपणापक्षनेमा
नदेखाडवावास्ते तथात्रीजुंकारणएके सासनसारुदीसे
एटलामाटेअमेलावेलाछीये हवेअमेजेचोथागुणठाणानी
कर्णीनीनाकही तेनुकारणसाजल जेलोकोनेसुरीआज
देवनो तथाध्रुपतीप्रमुखनोअधिकारदेखाडीयेछीये परंतु
तेकरणीमाविचारघणोछे आभाटेकेवजेदेवताप्रमुखघणां
देवेपुजादेवपणेउपन्यातेवखतकरीछे पणतेनेजगवानेस
मकीतीकह्यानथी तेतोमिथ्यात्वीछे अनेतेदेवनवाउपने
एटलासर्वेपुजाकरेएवुसुत्रजोतामालुमपनेछे परंतुकंइस
मकीतीमिथ्यात्वीनोनियमरह्योनथी तेमकंइफरीथीपुजा
करवानोअधिकारकोइनेठेनहि. तथाजेतेवरतनियमनुंक
ह्युं तेकांडपुन्यथकीजथाय एवुसंभवतुंनथी. आभाटेकेनंदी
खेणने मामानीसातकन्याउकोइएनाइछियो तेवारेजंपा
पातलेवानेपाहाऊउपरचम्योहतोपरंतुगुरुएजंपापातकर
वानहिढीधो. नेधर्मपमाडीनेचारीत्रदीधुं तथाश्रीअशकु
मारनोजीवएजवथीनवमेजंवे ननांमीका एवेनामेगाथाप
तीनीदीकरीहती. तेमहादुखीखावापीवानुंउभारेहेवानुठे
काणुंनोहोतु तेपणडुंगरउपरजंपापातकरवानेगइहती.
त्याहांगुरुमल्यांने तैधरमपांमिनेपछखांणवहूकरयां इ

त्यादिकघणाजीवपापना उदथकीपणवरतनेमपामेलाठे
 माटेतेपणइहांपुन्यनाउदयनोनियमनथी. तथातेजेकहंके
 बेरुपैयाखरचेवावरेछे तेपणखरचेवावरेतेसाचुछे परंतुपर
 मात्माएसाधुनादानविना बीजेमार्गेपइशोखरचे तेनेकइ
 धर्मकह्युनथी तेकरतांश्राकालनेविशेजेकांइखरचेछे ते
 अजीमाननालीधाथकाघणाखरचेछे अनेजेअजीमांता
 दिकथकीखरचेतेने प्रश्नव्याकरणसुत्रमांमदबुद्धियाकह्या
 ठे जावतनरकगामीसुधीपणकह्याठेमाटेएपुन्यथकीकंइसु
 क्रीतनीपजतुंनथी.

शीष्यवाक्य-स्वामीपुन्यथकी सुक्रीतननीपजे एमके
 मकेवायशामाटेकेतिर्थकरनामकर्मतोपुन्यथकीज बंधायठे
 गुरुवाक्य-हेदेवाणुप्रीय एटलाएटलादृष्टांतेमेतनेसम
 जाव्यो पणतुसमज्योनहिं हजीतारीदृष्टीपुन्यमां बध
 तिरेहेछेअनेपुन्यतेतोजमछे तेजमहोयतेजमनी दृष्टीराखे
 माटेएजमदृष्टीकाहामीनाख केजेमताराश्रात्मानुकल्याण
 थाय अनेतुजाणतोहशेके तीर्थकरगोत्रपुन्यथकी बंधाय
 छे पणएठेकाणानेविशेती करोमोनीकमाणीखोइने को
 मीनीकमाणीहाथमाआवेठे तेनुंकारणकहुं तेहवेतुसाभ
 ल तीर्थकरगोत्रबाधवानाकारणवसिकह्याठे तेमध्येथीए
 कअथवावेअथवात्रण अथवाजावतविसआरावे तेधणी
 मोक्षेतदजवेजाय ज्यारिसरागजावमापमीजाय त्यारेती

र्थंकरगोत्रवांधि जोसरागभावेनप्रणमैतो तदज्ञवमोक्षेजा
 तो अनेअनतासुखभोगवतो तेमुकीनेवेज्वनाजन्ममर्ण
 आदेदेइनेअनतादुखभोगववानोससारवधारंयोतेमांएणे
 शुंधारेनफोकाहोम्यो हवेजेतीर्थंकरगोत्र वांधवानांस्थां
 नंकविसछे तेतुंसांजल तेमांकयुंस्थानकपुन्यढायकछे ए
 तोसर्वेस्थानकधर्मढायकछे पणपोतानीचुलेपुंन्यढायक
 थयु हवेतेथानकनांनामकहियेछीये अरीहंत १ सिद्ध २
 प्रवचन ३ गुरु ४ थीवर ५ बहूश्रुत ६ तप ७ आत्मा
 नुंवळलपणुं ८ ज्ञानभणवुं ९ दर्शन १० विनय ११
 आवशक १२ चारित्र १३ उपसमचारित्र १४ सर्वेअ
 तीचारटालवा १५ वीयावछ १६ समाधीवंतरहेवुं १७
 गुरुनुंकारंजकरवुं १८ अपुर्वज्ञानजणवुं १९ प्रवचनपरजा
 वनाकरवी २० एविसेस्थानकज्ञाताजमांकह्याबे तथाहा
 लनापरंवरतनमांतो थानकवीजीरीतेछे तेलखीयेबीरे
 अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन ३ आचारज ४ थीवर ५
 उपाध्याय ६ साधु ७ ज्ञान ८ दर्शन ९ विनय १० चा
 रित्र ११ ब्रह्मचर्य १२ क्रीया १३ तप १४ गोयमश
 १५ जीणाणं १६ चारित्र १७ नांणश १८ सुअसं १९
 तीथयस २० एजविसथानकबे तेसर्वेनीशेवाजकतीपुजा
 बहूमानजेकरवु तेसर्वेनीरंजरामांछे केमकेएविसबोलचा
 रप्रकारमाआंवांगयांछे तेचारनांनाम ज्ञान १ दर्शन २

चारित्र ३ वायं ४ प्रवचन १ ज्ञान २ सुश्रस ३ नाण
 स ४ एचारतोज्ञाननाभेदते १ दर्शनएवीजोभेद २ श्री
 हंत १ सिद्ध २ आचारज ३ उपाध्याय ४ थीवर ५ सा
 धु ६ वीनय ७ चारीत्र ८ ब्रह्मचरज ९ क्रीया १० गो
 यमज्ञ ११ जीणेश १२ चारित्र १३ तीर्थ १४ एचउद
 बोलतोचारित्रपदमांछे तेमध्येजीणेशबोलछे तेकेटलाए
 कपनीतज्ञानमध्येगणछे केटलाकचारित्रमाकहेछे तत्वज्ञा
 नीगम्यछे ३ तपएचोथोनेदते एटलेएचारेनेदमांविसे
 थानकसमाइगयानेएचारने चगवंतेमोक्षतामार्गजकह्या
 छे तेकाइआश्रवथायनहि. एतोनिर्जराहेतुछे माटेतीर्थक
 रनामकर्मबांधवुतेआश्रवछे तेएवांथानकशेवीने जेधणी
 आश्रवउपार्जे तेधणीएरत्ननाखीदेइनेकोमीवाधी गामा
 टेजेमहानीर्जरानाकारणहता तेनेछोमीनेसरागजावमापे
 ठा तेथीतेणेएतीर्थकरनामकर्मरुप आश्रवउपार्जीतदभव
 नीमुक्तिगमावी अनेजन्ममरणवधारचो तेमाटेअमेकहि
 येछियेकेपुन्यमाकाइमालनथी अनेजेपुन्यपापते तेवेआ
 ठकर्मनीप्रकृतीठे तेमा १२० एकसोनेवीसप्रकृतीठे तेमां
 पुन्यनी ४२ अनेपापनी ८२ तेमध्येप्रथमपुन्यनीप्रकृती
 कहियेठिये ज्ञातावेदनी १ उचगोत्र २ मनुपनीगती ३
 मनुपनीआनपुरवी ४ देवतानीगती ५ देवतानीआनपु
 रवी ६ पचेद्रीनीजात ७ उदारीकशरीर ८ वीक्रीयशरी

१ आहारकशरीर १० तेजशशरीर ११ कारमणशरीर १२ उदारीकशरीर १३ वीक्रियशरीर १४ आहारकशरीर १५ वजररीखवनाराचसंघेण १६ समचोरसस्वस्थान १७ शुभवरण १८ शुभगंधः १९ शुभरस २० शुभफरस २१ अगुरुलघुनामकर्म २२ पराघातनामकर्म २३ उस्वासनामकर्म २४ आतापनामकर्म २५ उद्योतनामकर्म २६ शुभवीहायोगती २७ नीरमाणनामकर्म २८ देवतानुंआवखु २९ मनुपनुंआवखु ३० त्रीजंचनुंआवखु ३१ तीर्थकरनामकर्म ३२ त्रसपणुं ३३ वाधरपणुं ३४ परजाप्तापणु ३५ प्रत्येकपणु ३६ शुभनामकर्म ३७ शुभंगनामकर्म ३८ सुस्वरनामकर्म ४० आदिनामकर्म ४१ जसनामकर्म ४२ एपुन्यनाभेदकह्या.

हवेपापनाभेदलखीयेछिये. मतीज्ञानावरणी १ श्रुतज्ञानावरणी २ अंधीज्ञानावरणी ३ मनपरजवज्ञानावरणी ४ केवलज्ञानावरणी ५ दानाअंतराय ६ लाजाअंतराय ७ जोगाअंतराय ८ उपभोगाअंतराय ९ वीरजअंतराय १० चक्षुदर्शनावरणी ११ अचक्षुदर्शनावरणी १२ अवधीदर्शनावरणी १३ केवलदर्शनावरणी १४ निद्रा १५ निद्रानिद्रा १६ प्रचला १७ प्रचलाप्रचला १८ थीणदी. १९ अशातवेदनी २० नीचगोत्र २१ मिथ्यात्व २२ नरकनीगिती २३ नरकनीआनपुरवी २४ नरकनु

आवखुर ५ कृपाय २५ पुर्वेकह्यातेसमजजो ५० त्रीजचनीग
 तो ५१ त्रीजचनीआनपुरवी ५२ एकंद्रीनीजात ५३ वैरंद्रीनी
 जात ५४ तेरद्रीनीजात ५५ चत्रद्रीनीजात ५६ अशुभवि
 हायोगती ५७ उपघातनामकर्म ५८ अशुचवरण ५९
 अशुचगध ६० अशुभरस ६१ अशुभफरस ६२ रीखव
 नाराचसघेण ६३ नाराचसघेण ६४ अर्धनाराठ ६५ के
 लीकासघेण ६६ ठेवटुसघेण ६७ नीगरोधस्वस्थान ६८
 ६८ सादीस्वस्थान ६९ वामनस्वस्थान ७० कुवजस्व
 स्थान ७१ कुंडकस्वस्थान ७२ थावरनामकर्म ७३ सु
 क्ष्मनामकर्म ७४ अत्रजाप्तोनामकर्म ७५ साधारणनाम
 कर्म ७६ अक्षरनामकर्म ८८ अशुभनामकर्म ७८ दुरजा
 ग्यनामकर्म ७९ दुस्वरनामकर्म ८० अनादीनामकर्म
 ८१ अजसनामकर्म ८२ इतिपापतत्त्वनाभेदएटलेएबेम
 लीने १२४ थया तेमध्येवरणादिक ४ पुन्यतथापापवेमा
 गणायठे माटे १२० प्रकृतीथइ तेमध्येतीर्थकरगोत्रपणना
 मकर्ममांआवीगयु अनेअरीहततोकर्महणे तेनेअरीहंत
 कह्याठेपणकाइकर्मबाधे तेनेअरीहंतकह्यानथीअनेएकर्म
 नुंज्याहाआववुंतेनेआश्रवकहीयेशुचकर्मआवेतेनेशुभआ
 श्रवकहिये तथाअशुचकर्मआवेतेनेअशुचआश्रवकहिये
 एटलेएबनेआश्रवजछे माटेतिर्यकरनामकर्मबांधवु ते
 पणआश्रवमाठे अनेआश्रवठे तेसदायतजवाजोगठे एट

लामाटेएपुन्यपापेवंनेनिखेधां माटेसमजुपुरुपनेपुन्यपाप
 एकेवंठवाजोगनथी शादृष्टातेकेजेमएकलीममानेविशे लि
 वोलीनोकलियोछे ५ तेकडवोठेअनेलिंवोलीनोरसकांइमि
 ठाअसहितवे परंतुवेमांडुर्गंधते माटेसमजुपुरुप खातान
 थितेमपुन्यअथवापाप एवंनेआश्रवजठे तेज्ञानिपुरुपने
 आदरवाजोगनहोय एटलेपुन्यपापनुंस्वरुपककहयु हवे
 वधतत्वउलखावियेठिये तेनाचारभेदते प्रकृतिबंध १
 थितिबंध २ रसवध ३ प्रदेशवध ४ तेनेलाम्वानेदृष्टां
 तेकहियेछिये परदेशवेतेलोटेनेठेकाणेठे रसवेतेधीनेठेका
 णेछे प्रकृतिवेतेखाडतथागोलनेठेकाणेछे स्थितिछेतेते
 निमरजादाछे मरजादाकहेतां आलाडुआटलाकालसु
 धिरहेशे हवेगोलनोलाडुहोयतोवायुहरताहोय खांडतथा
 साकरनोलाडुहोयतोगरमिहरताहोय तेमअहियाजेवि
 जेविप्रकृतिनोबंधतेवितेवि शुभाशुभप्रकृति उदयआवेत
 थाजेरसछेतेनुकारण एवुठेकेरसवधतोहांयतो लाम्वोन
 भावे तेनाधारभेदते एकठाणियो १ वेठाणियो २ त्रण
 ठाणियो ३ चारठाणियो ४ हवेठाणकहेताशुकहियेके
 जेमजेलिमडानोरसछे तेरवभावेतोकम्वोठेज पणतेरस
 पाचशेरलेइनेउकालिये तेचारशेररहे त्यारेउतारीयेत्या
 रेतेनीकडवाशघणिवधे तेजरसत्रणशेर रहेत्यारेउतारीये
 तोकडवाशअत्यंतवधतीजाय नेशेरवेरहेत्यारे उतारीये

त्वारेतेथिपणघणिवधे तथाशेरएकरहेनेउतारीयेत्यारेक
 डवाशघणिवधीजायतेरसनीपासेपणजवायनहि तेमअ
 हियाएकठाणियारसनाजेकर्मछेतेनुतोडवुसुलभपडे अने
 जेवेठाणियारसनाकर्मछे तेतोडवादूर्लभपडे तेथकीपण
 ञणठाणियारसनाजेकर्मठे तेवेदवांअतिदूर्लभपडे तेथकी
 चउठाणियारसनाजेकर्मठे तेवेदवामहा दूर्लचयइपडे
 अहियारसपलीछेदादिकविचार एकठाणियाथीचउठा
 णियासुधिअनंताभेदछे तेनोविस्तारकर्मग्रथनीटिकाथकी
 जाणजोहवेजेलाडवामालोटएकशेरछेअनेधीअडधोपाशे
 रठे तेलाडवानेभागताकाइवारलागेनहि लाडवोवांधतां
 वेराइजाय तेमकेटलाएककर्मतोआवेठे तेमजायछेतथा
 जेलाडवामापाशेरघीठे तेलाडवोवलेपरंतु हाथअराडता
 जजागे तेमकेटलाएककर्मसहेजस्वजावधीअथवासहेज
 कपृथकीक्षयथाय तथाजेलाडवामांअडधोशेरघीछे तेने
 हाथिकरिनेज्यारेजागियेत्यारेभागे तेमएवाजेकर्मछेतेवा
 हाजतपादिककपृथकी अथवाअल्पज्ञानंध्यानथकीक्षय
 थायतथाजेलाडवामाशेरपोणोघीठे तेलाडवोजागतांक
 ठणपडे तेमतेवाजेकर्मछेतेसरवथाज्ञानंध्यानविना अथ
 वाअग्नेजोगव्याविनाजायनहि तथाजेलाडवामाशेरेशेर
 धीपमेळुछे तेलाडवोभागवोतोबहूजकठणथइपडे तेमते
 वीजातनाजेकर्मतेनेखरिशुकलध्यानरुपणी अगनिलागे

तोजबले अथवाअंगेजोगवेतेदहामेजजाय.

शिष्य--स्वामितमेपुर्वेकहयुंहतु केतपजपक्रियाआश्रव
माछेअनेइहांअगेरीयाघीना लाडुनादृष्टातमाकर्मनेनरिज
रादेखडावीतेनुंकेम.

गुरु--हेअद्रअमेजेनीरजराकहि तेनुंकारणसांभल के
त्यांअल्पज्ञानध्यानकहयुंते तेतीआत्मउपयोगहोयतेने
होय अनेज्यांहाआत्मअपियोगते तेनांसर्वेकारजनीरज
रामांकह्याते तेअपेक्षाएकह्युंछे बीजेप्रकारेवलीजेसर्वेजी
वपुर्वकृतकर्मपोतेभोगवीने खेरवेठेने अकामनरिजरावा
ला अज्ञानपणे तपकष्टकरिनेपुर्वकर्मने ठेदेनेनवांकर्मवां
धे तेथ्रीभगवतीजीमांकह्युंछे माटेअपेक्षालेइनेकहयुंछे
परंतुकंडआदरवाजोगनथी पुर्वेजेआश्रवमांकहयुंते तेस
त्यते हवेजेकर्मनुंवांधवुं तेनीवर्गणाकेटलीथायछे अनेके
टलांकर्मभेगांथयेथीलेवाजोगथायछे तेनीविचारकहिये
ठीये तेनीविगतः-वर्गणाआठछे तेनांनाम उदारिक
१ विक्रीय २ आहारक ३ तेजस ४ चाप्या ५ स्वासो
स्वास ६ मन ७ कारमण ८ हवेतेवरगणानुं मानकहि
येछिये जेटलाछुटाप्रमाणुआछे तेअनंताते तेगणवानहिं
जेवेप्रमाणुआभेलाथायतेने द्वीपरदेशीखंधकहिये जेना
त्रणपरमाणुआ भेलाथायतेने तणुकखंधकहिये एमएक
वधतेप्रमाणुए संज्ञापणते प्रमाणेनामनीकहेवी जेवारे

नवप्रमाणुवाजेगाथाये संखातप्रदेशीखंधकहिये तेजाव
 तत्रठाणुंआकं उपराउपरिचडे तेनुंनामसीहरपलीकांके
 हेवाय एटलाप्रमाणुआभेगाथाय तेनेसख्यातप्रदेशीखं
 धकहिये एटलेजघन्यसख्यातीखध नवप्रदेशीजाणवो
 उतकष्टोसंख्यातीखंध सीहरपलीकाप्रदेशीखधजाणवो
 मध्यस्थसख्यातीखध तेनासख्यातीनेदजाणवा जेउतक
 ष्टोसख्यातीखधछेतेमाहे एकप्रमाणुओबीजोचलेतेवारे
 असंख्यातीखधकहिये तेजावतअनतामांएकउणोहोय
 त्याहासुधीअसंख्यातप्रदेशीखंधकहिये एटलेअसख्यात
 प्रदेशीखध मध्यस्थनाअसख्याताजेदढेतथाअसख्याता
 नानवनेदपणकरेलाढे तेश्रीविशेपावइयकग्रथथकीजोजो
 तथातेमाहे एकप्रदेशभलेथके अनतप्रदेशीखधकहिये
 ते अनतप्रदेशी खधना जघन्यथकी उतकष्टासुधी
 जाताना वचेजेरह्यामध्यस्थ तेनाअनंताजेदढे तथा
 नव नेदपणअनंतानाकरेलाछे तेपणविशेपावइयकथकी
 जाणजो तथाससारनीमाहेलीकोरे अनवीजीवअनंताढे
 तेचोथेअनंतेढे तेथकीअनतगुणाप्रदेशमलीने खधवंधा
 णो तेखधअनतप्रदेशी मध्यस्थमांगणाय एवोजेखंधतो
 यपण जीवनेलेवाजोगनथाय शामाटेकेअतीशे शुक्ष्मछे
 माटेजीवग्रहीज्ञकेनहि तेज्यारेबादरनी वर्गणामाहोय
 त्यागेन्दारिकवर्गणामा लेवाजोगथाय एटलेएखधपण

उदारिकवर्गणानोजाणवो तेथकीअनंतगुणप्रदेशमली
 ने जैखधथाय तेवीक्रीअनेलेवाजोगथाय शामाटेकेउदा
 रिक करतांविक्रीअनी वरगणासुक्ष्मते २ तेथकीअनतगु
 णीआहारकनीवर्गणा एमअनुक्रमे एकएकथकीअनंत
 गुणीकरता सातमीमनोवर्गणा अनंतगुणीथइजाय तेम
 नोवर्गणाकरतां अनंतगुणीकारमणवर्गणा आठमीठे
 हवेतेवर्गणामां चारवर्गणासुक्ष्मते नेचारवर्गणावाद
 रते तेमांप्रथमवादरनीवर्गणानानाम गणावियेछीये उ
 दारीक १ वीक्रीअ २ आहारक ३ तेजश ४ सुक्ष्मनां
 म भाषा १ स्वासोस्वास २ मन ३ कार्मण ४ हवेते
 बादर शुक्ष्मनो फेरछे तेजणावियेछीये एटलेबादरवर्ग
 णामां विस २० गुणछे अनेसुक्ष्मवर्गणामा १६ गुणहो
 य बादरना २० गुणते वरण ५ गंध २ रस ५ फेरसट
 ए २० विस सुक्ष्मना १६ गुणते वरण ५ गंध २ रस ५
 फेरस ४ एसोल एविरितेजे वर्गणाओकर्मनीआवी जी
 वनेमलेते तेनोबंधपनेतेने बंधतत्वकहिये तेनोविस्तारवि
 चार कंमपेनीग्रंथनी टीकाथकीजाणजो एटलेएसर्वेअजी
 वतत्वछे शामाटेकेअजीवना पांचनेदपुर्वेकरचाठे तेमध्ये
 पुद्गलास्तीकायरुपी द्रव्यएककह्योछे नेबाकीनाचारअरु
 पीअजीवनेकंइनपुतानथी अनेएकपुद्गलद्रव्यजीवनेने
 छे त्यारेतेपुद्गलनेजीवनेआवीनेमलवुं तेनेआश्रवकह्यो।

तेमाशुभपुद्गलआवेतने शुभआश्रवकहिये तेनेलोकमा. प्र
 सिद्धपणेपुन्यएवुनामठे अशुभआवे तेनेअशुभआश्रवक
 हिये तेनेलोकमाप्रसिद्धपापएवुनामछे तेजीवसाथेतेकर्मने
 बंधाववु तेनेबंधकहिये तेजेकर्मनोवयजीवसाथेथवो ते
 निस्थीतिनुं मानकहियेछीये ज्ञानावरणीनी त्रीसकोमा
 कोमासागरोपमनी स्थीतिछेतथामोहनीकर्मनी सीतेरको
 माकोमासागरोपमनी स्थीतिछे तथादर्शनावरणी तथावे
 दनीनेत्रीशकोमाकोडसागरोपमनीस्थीतिठे तथाआयु
 कर्मनीतेत्रीस सागरोपमनीस्थीतिठे तथातेत्रीसलाख
 तेत्रीसहजारत्रणसेनेतेत्रीस एटलापुरव तथातेवीसलाख
 करोडअने बावनहजारकरोड वरसनिस्थीति उतकष्टीठे
 अनेनामकर्म तथागोत्रकर्म एवेनिविसकोमाकोडीसागरो
 पमनीस्थीतिठे तथाअंतरायकर्मनीत्रीसकोडाकोमासागरो
 पमनीस्थीतिठे इत्यादिकअजीवद्रव्यनोविचार जगवतीप्र
 मुखनेविशेषकीजाणजोएटलेएजीवनापांचेतत्वकह्या हवे
 जीवतत्वनोविचारकहियेगीये जीवकेहेताजेहेनाविशेषेत
 नारूपलक्षणठे तेनाबलक्षणठे तेनानाम ज्ञान१ दर्शन२
 चारित्र३विर्य४ तप५उपयोग६ एबलक्षणसहितसर्वेजी
 वठे कोणसिद्धअथवाससारी एटलेर्जावनीसत्ताजोतासि
 द्धतथाससारी एकजरूपठे तोयपणअशुद्धवेहेवारनयनो
 पक्षलेइनेजीवना जेदकहूछुं तेजीवना ५६३ जेदठे ते

चारगतिनामलीने प्रथमत्रीजंचनीगतिना ४८ चेदछे.
 नरकनीगतिना १४ भेद देवतानीगतिना २९८ चेदछे
 मनुष्यनीगतिना ३०३ चेद एसर्वेमलीने ५६३ चेदथ
 या तेप्रथमत्रीजंचनीगतिना ४८ चेद विवरिनेकहियेठा
 ये प्रथ्वीकायसुक्ष्मनेवादर एटलेसुक्ष्मकेहेतां चरमचक्षु
 एदीठामानाआवे एतोज्ञानीनादीठामाआवे पणएसुक्ष्म
 चउदराजलोकमां व्यापीनेरह्याछे तेजेमप्रथ्वीकायना
 सुक्ष्मकह्या तेमपांचेस्थावरनासमजजो वादर प्रथ्वीका
 यजे आधरती तथापाहाडपरवत सोनु रुपु प्रमुखतेस
 र्वे वादरप्रथ्वीकहिये एसुक्ष्मवादरवे प्रथ्वीना प्रजाप्ता
 नेअप्रजाप्तागणीये एटले चारचेदथया शिष्यवाक्यः--
 प्रजाप्ता अप्रजाप्ता एटलेशु. गुरुवाक्यः--हेअद्रजीवमा
 अप्रजाप्ता तथाप्राणनेधारणकरे तेनानामनोविवरासहि
 तकहूँ तेसांभल प्रथमप्रजाप्तीनानाम आहारप्रजाप्ती
 १ सरीरप्रजाप्ती २ इद्रीप्रजाप्ती ३ सासारेवास
 प्रजाप्ती ४ भापाप्रजाप्ती ५ मनप्रजाप्ती ६ एछप्रजा
 प्ती हवेतेनो अर्थआहारप्रजाप्ती केहेताजेगतिने विशे
 थीचवीनेआव्यो तेजसमेपोतपोतानी गतिमांजइनेउप
 जे कटापिवक्रगतिहोयतो वेएसमे तथात्रणसमे तथा
 चौथेसमेजइनेउपजे तेनुंकारणआकाशनी श्रेणीनाविजा
 गनुछेतेवहूसुतना मुखथकीधारीलेजो हवेज्यांसुधीरस्ता

मांछे त्यामुधी आहारपामेनाहि जेवारेपोतपोतानीगति
 माजइनेउपजे तेजसमेआहारले. १ तेआहारलेइने श
 रीरपणेप्रणमावे एटलेइहाएकअंतरमहूर्ते शरीरप्रजा
 ष्ठीवीजीथाय एमजसमेसमेआहारकरीने शरीरनीपुष्टी
 करता इद्रीप्रगटकरे त्याहापणएकमहूर्तथाय तेने
 इद्रीप्रजाप्तीकहीए३ पछीअंतरमहूर्ते स्वासोस्वासप्रजा
 ष्ठीवधाय एटलेस्वासउचोलेइनीचोमुकवो तेनेस्वासो
 स्वासप्रजाप्तीकहीए४ त्यारपछीअंतरमहूर्ते नापाप्रजा
 ष्ठीथाय एटलेभापानुउचारणथाय५ त्यारपछीअंतरमहूर्
 ते मनप्रजाप्तीथाय एटलेमनथकीविचारवु तेनेमनप्रजा
 ष्ठीकहीए६ एछएप्रजाप्तीमलीने एकअंतरमहूर्तकहीए
 शिष्यवाक्य -केछएमाअंतरमहूर्ते२नोआंतरोकह्योने
 छनुंमलीनेपण अंतरमहूर्तकह्यु तेनुंशुकारण
 गुरुवाक्य -महूर्तएवोशब्दबेघडीनोछे तेमांथकीउणु
 तेनेअंतरमहूर्तकहीए जयणाथकी नवसमानाकालने प
 णअंतरमहूर्तकहीए उत्कृष्टवेघडीसमेउणु तेनेपणअंतर
 महूर्तकहीए एटलेमध्यअंतरमहूर्तना असंख्यातानेदवे
 तेमाटेपेहेलाअंतरमहूर्तजे प्रजाप्तीनावाधवाना एकएक
 जेकह्यु तेसवैजघन्यथकी तथामध्यस्थलीजीए तथाप
 छाडीगएमलीने एकजेकह्युतेउत्कृष्टकहीए. हवेएप्रजा
 ष्ठी जेनेजेटलीछे तेकहीएछीए एकद्रीकेहेता पाचेथावर

ने प्रथमनीचारप्रजाप्तीहोय वेरंद्रीतथातेरंद्री तथाचोरं
द्री तथाअसेनीआपंचंद्री एटलानेपांचप्रजाप्तीहोय तथा
सेनीआपंचंद्रीने छप्रजाप्तीहोय-हवेप्राणढसनांनाम.श्रो
तइंद्री:१ चक्षुइंद्री:२ घ्राणइंद्री:३ रसइंद्री:४ फरसइंद्री:
५ मनवल:६ वचनवल:७ कायवल:८ स्वासोस्वास:९
आवखु:१०

शिष्यवाक्य --स्वासोस्वास प्रजाप्तीमांगयोहतो ने
प्राणमांकेमगणोछो.

गुरुवाक्य:-तिहांस्वासोस्वास प्रजाप्तीवांधवा आशरे
गणीहती अनेइहांचोगववा आसरितकहिछे जेमकोइपु
रुप आवीरीतेकरी लाखरुपैयाकमाणो नेतेधणीएआवी
रीतेकरी लाखरुपैयाचोगव्या तेजेमकमाव्यानो नेभोग
व्यानोजेमफेरठे तेमइहांप्रजाप्तीप्राणनो फेरसमजवो ए
कंद्रीनाचारप्राण फरसइंद्री:१ कायवल:२ स्वासोरवा
स:३ आवखु:४ वेरंद्रीनेठप्राण फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२
वचनवल:३ कायवल:४ स्वासोस्वास:५ आवखु:६ ते
रंद्रीनेसातप्राण. फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२ घ्राणइंद्री:३ व
चनवल:४ कायवल:५ स्वासोस्वास:६ नेआवखु:७ चो
रंद्रीनेआठप्राण फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२ घ्राणइंद्री:३ चक्षु
इंद्री:४ वचनवल:५ कायवल:६ स्वासोस्वास:७ नेआवखु
८ समुर्बेपंचंद्रीनेनवप्राण फरसइंद्री:१ रसइंद्री:२ घ्राणइं

द्री३ चक्षुइद्री४ श्रोतइद्री५ वचनवल६ कायवल७ स्वा
 सोस्वास८ आवसु९ सेनीआपचद्रीनेदसत्राण ५इद्री
 मनवल६ चचनवल७ कायवल८ स्वासोस्वास९ नेआ
 वसु१० हवेजेअप्रजाप्तावे तेनावेभेद करणअप्रजाप्ता१
 लविधअप्रजाप्ता२ एटलेकरणअप्रजाप्तोकहेता ज्यासु
 धीतीजीइद्री प्रजाप्तीपुरीनथडहोय त्यांसुधीकरणअप्र
 जाप्तीकहीए नेजेनेइद्रीप्रजाप्तीपुरीथइ तेनेकरणप्रजा
 प्तोकहीए अनेलविधअप्रजाप्तोकहेता चारतथापाचतथा
 छ जेनेजेटली प्रजाप्तीलाधीवे तेनेतेटलीमाअधुरीहोय
 तेनेलविधअप्रजाप्तोकहीए अनेगतीनी मरजाटप्रमाणे
 जेनेजेटलीहती तेटलीप्रजाप्तीपुरीथइ तेनेलविधप्रजा
 प्तोकहीए जेकरणअप्रजाप्तोकह्यो तेजीवइद्रीप्रजाप्ती वा
 ध्यावगर कोइजिवमरेजनही जेजीवमरे तेकरणप्रजाप्ती
 पुरीकरघापछी जेअप्रजाप्तोमरे तेलविधअप्रजाप्तोकहे
 ता चारवालाने चारमाथीउणी तथापांचवालाने पाचथ
 कीउणी तथाछवालाने छथकीउणीहोय नेजेमरेतेनेल
 विधअप्रजाप्तोकहीए तथाज्यासुधीजेने जेटलीप्रजाप्तीवे
 तेबाधीनधीरह्यो त्यासुधीपणतेने अप्रजाप्तोकहीए जेने
 जेटलीप्रजाप्तीछे तेटलीबाधीरह्यो तेनेप्रजाप्तोकहीए

शिष्यवाक्यः--केस्वामीमने पूर्वेकवचनमा शकारही
 वे केतमोएवीगलेद्रिनेविपे वचनवलकह्युं तेवेरंद्रितथा

तेरंद्रिनेविपेकांशशब्दपणुजणातुंनथी.

गुरुवाक्यः—हेचन्द्र बेरद्रितथा तेरंद्रिमांवचनवलक
ह्यु तेसत्यठे परतुतनेसांचल्यामानाआवे तेथीतनेशंका
पड्ये परतुजेनेरसइंद्रिथइ तेनेवचनवलहोयज तथातने
प्रत्यक्षप्रमाणथीवतावुछुके शंखला जलो एल प्रमुखए
जीवसर्वेबेरंद्रिठे तथा कीमी मंकीमी कानखजुरा प्रमुख
एजीवतेरद्रिठे तथा चमरा चमरी वींठी प्रमुखजीवचो
रंद्रिठे तेमध्ये चमरा चमरीतोप्रत्यक्षबोले तेसांचलायठे
बेरंद्रितथातेरंद्रिनीशक्तिजापानीमंदठे तेथीसांचलवामां
नहिआवे शेंद्रष्टातेके जेमकोडगर्जनेविपेआवीनेउपन्योजे
जीव तेजन्मअवस्थापेहेलां तेनेवचनवलनीशक्तिठेतोज
न्मीनेतरतबोलेठे जोपुर्वेशकिनहोततो अहिआंपाधरी
शक्तिआवतनहि अनेतेनेवचनवलगर्जमांआव्यो त्यांए
कअंतर मुहूर्तमावधाणुठे परंतुनवमहीनासुधी उचारण
नीशक्तिनाआवी तेमइहावेरंद्रिआदिकजीवने वचनवल
नीशक्तिठे परंतुउचारणकरवारुपशक्तिनथी हवेजेप्राथ्वि
कायनाजेसुक्ष्म तथावाटर तथाप्रजाप्ता तथाअप्रजाप्ता
४ तथाअपकायकेहेतापाणी तेनावाटर ५ तथासुक्ष्म ६
वाटरकेहेता नदी तलाव प्रमुख सुक्ष्मतेचौदराजलोक
व्यापीप्रजाप्ता ७ अप्रजाप्ता ८ तथातेउकायकेहेतांजेअ
ग्निकायतेनावाटर ९ तथासुक्ष्म १० वाटरअग्निजेकाष्ठा

दिकनीअढीद्वीपनेविपेसुक्ष्म अग्निकायकेहेतां चौदराज
 लोकव्यापीप्रजाप्ता ११ अप्रजाप्ता १२ वायुकायकेहेता
 जेवायरोवायछेतेवादर १३ तथासुक्ष्म १४ प्रजाप्ता १५
 अप्रजाप्ता १६ तथावनस्पतिकायतेनावेनेदप्रतेक १ सा
 धारण २ प्रतेककेहेताएकशरीरेएकजीवहोय तेनेप्रतेक
 कहिए एटलेआवा लींवाडा प्रमुखझाडवेलगुच्छाप्रमुख
 नेविपेथडनो तथाडाला तथाखचा तथापानफलफुलएक
 एकोजीवहोयतेमध्ये फुलनीजेटलीपांखडी तेटलाजीव
 गणवा तेनोविस्तारपनवणासुत्रथीजाणजो तेप्रतेकवन
 स्पतिनाप्रजाप्ता १७ अप्रजाप्ता १८

हवेसाधारणवनस्पतिना वेनेद वादरतथासुक्ष्मवाद
 रजे बत्रीशअनंतकाय एटलेजेमकंदप्रमुखसर्व जाणवा
 तेमाएकशरीरेअनंताजीव रह्याबिते दृष्टीगोचर दीठामा
 आवेमाटेतेनेवादरकहिये तेनुंनाम वादरनीगोदपणकहि
 ये तेनाप्रजाप्ता १९ ने अप्रजाप्ता २० हवेसुक्ष्मसाया
 रणवनस्पतीनो विचार कहियेहिये तेनुनामसुक्ष्मनीगो
 दपणकहिये तेचौदराजलोकमा व्यापीने रहेलछेतेनुसरु
 पर्कीचीतमात्र कहियेछीये एकआगलनेमानआकाशनु
 ग्रहणकरिये तेटलाआकाशना असख्याताजागकरिये
 तेमाहेला एकजागनेविशे असख्याता आकाशप्रदेशछे
 तेमाहेलो एकआकाशप्रदेशे एकगोलोछे एकगोलामाअ

संख्यातीनीगोदढे एकनीगोदमा' अनताजीवछे तेजीव
नांमानकेटलाठि केअततिकालनासमयगयाअनागतका
लनाजेटलासमयआवशे तेथकीअनंतगुणाजीव एकनी
गोदमांठेएटलेअतीतअनागतकालनासमयनोकांइपार
पामीयेनहिं तेपणअनंताछे तेथकीपणअनंताजीविकनी
गोदमाछे तेकोइकाले तेनीगोदनापारपामिये नहि.

शिष्यवाक्य-केस्वामीतेनीगोदखालीकेमनथायसदायका
लमोक्षनोमार्गतो चालतोठे माटेएनीगोदकोइकालेपण
खालीथइगइजोइये कांइनवाजीवतोउत्पन्नथताजनथी
अनेजेजीवमाहेथीगया तेपाछाआवतानथी तोघणाजी
वछेतेघणेकाले खालीथशे जेमएकबाजरीनोकोठारचरे
लोठेतेमधेनविबाजरी चरशुंनहि अनेशांणेथीकाडवामां
डीशुतो तेकोठारखालीथशेकेनहि अपीतुथायज अथवा
मोटुंएकसरोवरपाणीएचरेलुंठे अनेनवीआवकआववानुं
बधकर्युंठेने तेमांथीमाणस तथाजानवरेपीवामांभ्युं तेखा
लीथायकेनहिं अपीतुखालीथायज .तेमएनीगोदनाजीव
घणेकाले खुट्याजोइये.

गुरुवाक्य--हेचद्रजेअनागतकालना समयतेथकी तथा
अतीतकालना समेथकीअनंतघणाजीविकनीगोदमांठे
एटलेसमेसमे अकेकोजाय तोपणखालीनथाय तथा वे
तथा त्रए तन समेमुगतीजा

नीगोदखालीथायनहि अनेअकेकेसमेराशबधी अकेको
 तोमोक्षेजायनहि केमकेवचेब्रेहकालपडे अथवाएकस
 मे एकसोनेआठमोक्षेजाय एथकीअधीकतोमोक्षेजवानो
 अधिकारठेजनहि अनेएटलामोक्षेजायतो छमासरुधी
 कोइमोक्षेजायनहि एवोब्रेहकालकह्योठे तेथीएकनीगोदप
 णखालीथायनही तथाजेकोठारतथासरोवरनुद्रष्टांतदीधुं
 तेइहाजुक्तनथी इहाहुद्रष्टातदेउतेसाभल जेमसमुद्रनुपा
 णी वनप्रतेलाखोकरोडो माणसजानवर चरेढोलेवावरे
 तोहेपणसमुद्रनुपाणी कोइदीनओछश्रवानछे ? तेमएनी

जेटलासमयथाय एटलाफेरातेत्रिगसागरोपमनेऽव
 खेसातमिनरनेकविशोएकजिवउपजे तेनुदु खसर्वेभेगुक
 रियेतेथकिअनंतघणुदूखएकसमे निगोढनां जिवनेछेइ
 त्यादिक विस्तारसर्वेपनवणा तथाजगवतिथकिजाण
 जो.एटलेएसाधारण वनरूपतिनावेभेद सुक्ष्म १९
 वाढर २० प्रजाप्ता २१ नेअप्रजाप्ता २२ एटलेएएकं
 द्रिनावाविशजेदथया हवेविगलंद्रिना ६ भेददेखाडेछे
 वेरंद्रि १ तेरद्रि २ चौरंद्रि ३ एत्रणेनाप्रजाप्तानेअप्र
 जाप्ताएटलेए छ जेदथया एटलेएकद्रिमुधां २८ भेद
 थयाहवेत्रिजंचपंचद्रिना विशभेदकहियेठिये तेमध्येप्रथ
 मवेभेद २ गरभज १ समुरछम २ तेमध्येगरभजना
 पांचजेद जलचर १ थलचर २ खेचर ३ उरपरी ४
 भुजपरी ५ जलचरकहेतांमछकछादिक थलचरकहेतां
 पारेवुतथासमली परमुख उरपरीकहेतांसरपपरमुखभु
 जपरीकहेतां नोलियाठपरमुख एपाचेनाप्रजाप्ता तथा
 अप्रजाप्ता एदशजेदगरभजनाकह्या गरभजकहेतांमा
 तापितानाजोगथिपेढाथाय तेनेगरभज कहियेतेथकिवि
 परितमातापितानाजोगविनामाटीपाणिप्रमुखथकि उत्प
 न्नाथायतेने समुरछमकहिये तेसमुरठमनापणदशजेदजे
 मगरभजनाकह्या तेमजाणवाएटलेत्रिजंचपंचद्रिनाविश
 जेदथया पुर्वनामाहेघालिये एटले ४८ भेदथयाएटले

त्रिजंघनीएकगतिकहेवाणि हवेनारकीना १४ जेदतेक
 हियेछिये तेनारकीनानाम घमा १ वैशा २ सेला ३
 अजना ४ रीठा ५ मघा ६ माघवति ७ एसातनरकना
 प्रजातातथाअप्रजातामलिने १४. जेदथया नरकत्रिजं
 चवनेगतिमलिने ६२ भेदथया हवेदेवताना १९८ जेद
 कहियेछिये तेनानामभुवनपति १ व्यतर २ ज्योतसी ३
 वैमानिक ४ तेमध्येप्रथमभुवनपतिनानाम कहियेछिये
 असुरकुमार १ नागकुमार २ सोवनकुमार ३ अग्नि
 कुमार ४ देवकुमार ५ उदधीकुमार ६ दिशाकुमार ७
 वायुकुमार ८ विद्युतकुमार ९ स्तनितकुमार १० तथा
 परमाधामी १५ अंब १ अंबरिख २ शाम ३ सबत

शिष्यवाक्य--स्वामिएपरमाधामी देवनीचारजातिमा
 कइजातिनाछे

गुरुवाक्य--भुवनपतिनिदशनिकायमाहेली प्रथमज
 असुरकुमारनीकायनाछे हवेएभुवनपतिना २५ जेदथ
 याहवेव्यतरतथा वाणव्यतरनासोलजेदकहियेछियेतेना
 नाम अणपनि १ पणपनि २ रखिवाद ३ चुतवाद ४
 कइनिकाय ५ कोहडनी ६ महाकडनी ७ पनबति ८
 जक्ष ९ पिसाच १० भुत ११ राखस १२ किन्नर १३
 किमपुरुष १४ गधर्व १५ शाम १६ एशोलेव्यतरनी
 कायहवेत्रिजचजंबकदेवनादश १० भेदकहियेछियेतेनां

नाम अणजंबक १ वथजंबक २ वेणजंबक ३-विशिया
जंबक ४ फरजंबक ५ अघ्याप्तजंबक ६ विभुतिजंबक ७.
एटलेएत्रीजंचजंबकनां दशनामकह्यां एजेदवंतरनी
काथमाहेजाणवा एटलेभुवनपती तथाव्यंतरमलीनेएका
वन ५१ जेदथया हवेजोतिपनादशजेदकहिएछिए चंद्र
मा १ सुरज २ ग्रह ३ नक्षत्र ४ तारा ५ एपांचअढीद्वी
पमांहेछे तेचलछे नेअढीद्वीपवहारलातेपाचस्थिरठे एट
लेजोतिपवेएमलीने दशजेदथया एटलेभुवनपतीतथावं
तर तथाजोतसीमलीने ६१ एकसठजेदथया हवेकल्प
वासीतथाकल्पातीतएवेना ३८ जेदकहिएछीए तेमध्ये
कल्पवासीदेवना ३ जेदठे कुलविखीआ १ देवलोक २
नेलोकांतिक ३ एत्रणभेदतेमध्ये प्रथमकुलविखियांक
हियेछिये प्रथमत्रणपल्योपमनाश्रावखानो सुधर्मकल्प
निनिचेरहेठे १ विजोत्रणसागरोपमनाश्रावखानोधणी
त्रिजादेवलोकनीनिचेरहेठे २ तथात्रिजोतेरसागरोपम
नाश्रावखानोधणी छठाकल्पनीनिचेरहेछे ३ एटलेकुल
विखियाकह्या हवेवारदेवलोकनानाम कहियेछिये सुधर्म
देवलोक १ इशानदेवलोक २ सनतकुमारदेवलोक ३
माहेंद्रदेवलोक ४ ब्रह्मदेवलोक ५ ललितंगदेवलोक ६ म
हाशुकरदेवलोक ७ सहेसारदेवलोक ८ अनंतदेवलोक ९
प्राणांतदेवलोक १० श्राणदेवलोक ११ अचुतदेवलोक

१२ एटलेएदेवलोकंनानामकह्याहवेनवलोकातिकनाना
 मसारस्वत१ माइच२ वनहि३ वरुणा ४ गदतोआख५
 तरुशियाअ६ अविद्यावाह७ अगिवा८ रिठाय९ एटले
 लोकांतिककह्या एटलेकुलविखियां३ देवलोक१२ लोकां
 तिक९ एत्रणमलिनेचोविशनेदथया

शिष्यवाक्य-जगवानकुलविखियातेशुकहिये.

गुरुवाक्य-हेभद्रजेममनुपलोकनेविशे चमालजंगिया
 प्रमुखजातिछे तेमदेवलोकनेविशेकुलविखियानीजातिछे
 जेकोइअहियाचारित्रधर्मयकितथाआत्मधर्मथकिभ्रष्टथइ
 नेपोतानो मतचलावेतथापुजावानेअर्थेकष्टक्रियाघणातिप
 जपविशेखेकरेमतजुदोपाडेतेधणीकष्टथकिपुन्यउपाराजिने
 कुलविखियोदेवयायपरंतुआत्मधर्मनोघातकमाटेनिचोदे
 वताथायजेमजमालिकुलविखियोथयोतेमजाणवु तथाजे
 लोकातिकवे तेपाचमादेवलोकनेविशे नवक्रश्रराजिछेते
 नेविशेक्रश्रराजिप्रतेविमानछे तेनवेविमानने विशेजेजे
 उत्पन्नथयातेदेवनेलोकातिकदेवकहियेतेसर्वेभविहोयहवे
 कल्पातिततेनावेजेद ग्रिवेकतथाअनुतरविमान तेमध्ये
 प्रथमग्रिवेककहियेछिये सुदर्शन१ सुप्रतिवध२ मनोरमां
 ३ सर्वतोचद्र ४ विशाल ५ सुमसंद ६ सुमनस७ प्रतिकर
 ८ आदित९ एनवेगरिवेकनानामकह्या.

हवेअनुतरवीमाननानामकहिएठिए विजय१ विजीअत

२ जयत ३ अपराजीत ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एटलेएसर्वे
 मलीने कल्पातितनाचौदनेदथयातथाकल्पवासीना २४
 नेदसर्वमलीने विमानीकना ३८ नेदथया पूर्वलीत्रणेनी
 कायनादेवना ६१ नेदमांहेनाखीए तेवारेचरिनीकायम
 ली नवाणुनेदथया ९९ तेनवाणुंप्रजाप्तानेनवाणुंप्रजा
 प्ता २९८ नेददेवगतिनाथया पूर्वनीवेगतिना ६२ नेद
 माहेंघालीए एटलेत्रणगतिनामलीने २६० नेदथयाह
 वेमनुष्यनीगतिना नेदकहिएठिए तेमनुष्यने उपजवानां
 १०१ एकसोएकक्षेत्रवे तेनात्रणभेद कर्मजुमीनां १५क्षेत्र
 अकर्मभुमीनां ३०क्षेत्रछे अंतरद्विपनां ५६क्षेत्रवे हवेजेक
 र्मभुमीतेशुंकहीए केज्यांअसी १ मसी २कसी ३ एनोवेहे
 वारछे एटलेअसीकेहेतां जेसहस्त्रादिकनुंवांधवु मसीके
 हेताजे कागलप्रमुखनुंलखवुं कसीकेहेताखेतीकर्म इत्या
 दिकज्यां संसारवेहेवारप्रवर्ते तेनेकर्मभुमीकहीए ज्यांए
 पुर्वेकह्यो तेवेहेवारनहोय तेनेअकर्मभुमीकहीए.

शिष्यवाक्य :- स्वामी अंतरद्विपमां वेहेवारतोनथी तो
 एपणअकर्मभुमीमां केमनगणाय छासीएअकर्मभुमी क
 हीहोततोशुहतुं केइहांजुटापाप्त्या.

गुरुवाक्य :- हेनद्रआपीसनालीसक्षेत्र पृथ्वीउपरछेने
 एछपनक्षेत्रजेठेतेसमुद्रमांअधरवे माटेएनेअंतरद्विपकही
 एछीए तेनोविवरोसंक्षेपथकी आगलकहीशुं

ननइए त्पारैसातमौद्विप घणदतनामेआवे ते९००जो
 न लांबोपोहोलोठे तेसर्वेनीपरधी त्रणगुणीजाजेरीजाण
 वो जेमतेइशानकोणनी दाढाउपरसातद्विपकह्या तेमहेम
 यतपर्वतनी अग्नीकोणनीदाढाउपरे सातद्विपजाणवां ते
 नानामअभासी१ गजकरण२मेढमुख३ गजमुख४सीह
 करण५ मेघमुख६लुसटदत७ एसातेद्विपनोविचार वा
 कीपुर्ववतजाणवो तथाहेमवतपर्वतनीपश्चिमदिशांनासमु
 द्रमाहे नैरुतकोणनीदाढाउपरे जेसातद्विपछे तेनानामक
 हीएछीए वैखाणी१गौकरण२ गोमुख३सीहमुख४ अ
 करण५वीदुतमुखकरण नीगुढदत७ बाकीसर्वपुर्ववत त
 थातेहीज हेमवतपर्वतनीदाढा पश्चिनासमुद्रेवाव्यकुणे
 तेउपरसातद्विपठे तेनानामलागुलीक१ सकुलीकरण२
 गोमुख३वाधरमुख४ करणपरवारण५ वीदुदत६सुधदं
 त७ एसातद्विप हेमवतपर्वतनी पश्चिमदिशानी वाव्य
 कोणनीदाढाउपरे एटलेहेमवतपर्वतनी चारदाढाउपरे
 सर्वमलीने२८द्विपथाय तेमसखरीपर्वतनी पुर्वपश्चिमनी
 चारदाढाउपरे एनेएजनामना२८द्विपठे एटलेएवेमलीने
 उपनद्विपथया तेनेअतरद्विपकहीए एटलेएसर्वमलीने म
 नुपनेउपजवाना १०१क्षेत्रथया नेएकसोनेएकक्षेत्रना म
 नुपनागर्जजनावेभेद प्रजाप्ता१अप्रजाप्ता एटले२०२ने
 दथया तथा१०१असेनियामनुप अप्रजाप्ताजमरे माटेते

नो एकजनेदलाधे एटले ३० ३भेद मनुपनाथया ने २६०
 पुर्वत्रणगतीकहीतेना एचारगतीमलीने सर्वेनेद ५६ ३थ
 या एटले एअशुद्वव्यवहारथकी जीवनानेददेखाड्या ह
 वेजीवत्वपणानो चावदेखाडेछे एटलेजीवत्वते चेतनाल
 क्षणकहीए एटलेचारसंज्ञा सर्वेजीवनेविशेलाधेतेनांना
 म आहारसंज्ञा १ जयसंज्ञा २ मीथुनसंज्ञा ३ परिग्रहसं
 ज्ञा ४ एचारसंज्ञाथकि रहितकोइसंसारी जीवहोयनहि

शिष्यवाक्यः--हे प्रभु एकद्रीनेविशेसंज्ञाचारक्यांदीसेबे.

गुरुवाक्य--हे चद्रउपयोग देइनेजुवेतो एकद्रीमाप

एचारसंज्ञालाधे जेमवनस्पतीबे तेपांणीमुलथकी लेइने
 सीखाएपोहोचामेते तोएप्रत्यक्षआहारलीधोकेनहि तथा
 जयसंज्ञालजालुजाफनेविशेछेकेकोइपुरुपहाथअरामेतेसं
 कोचाइनेनमीजायतथामीथुनसंज्ञाखजुरीपरमुखनेविशेबे
 जेनरनोगेरचढेत्यारेखजुरीफलेत्यासुधीखजुरीफलेनहित
 थापरीग्रसंज्ञाजेकाकमीप्रमुखनावेलापोतानाफलनेपोतेढा
 कीनेरहेबेतथारातापुत्रामियानांमुलज्यांधरतीमांनीधानहो
 यत्यांवांटाइनेरहे तेमएकद्रीनेविशे पाचेथावरने एचार
 संज्ञाहोयज वादरद्रष्टी गोचरकोइकनुंआवे शायकीकेए
 थावरठे तेनुकरतव पोतानीज्ञानबुद्धीथकी समज्यामांआ
 वेपणएचारसंज्ञाविना कोइसंसारीजीवठेनहि.

शिष्यवाक्य--स्वामीसीद्धने विशे एचारसंज्ञापामी

येकेनही.

गुरुवाक्य-सीद्धनेविशे एसंज्ञानहोय शामाटेकेसीद्ध
वेते आत्मस्वरूपीछे सज्ञावेतेपुद्गलीकवे.

शिष्यवाक्य-भगवतीजीमा चारसंज्ञाआत्मीककहीवे
नेतमे पुद्गलीककेमकोहोछो

गुरुवाक्य-जेआत्मीकसज्ञाकहिछे तेवेहेवारवचनशा
माटेके तेठेकाणेआत्माने कर्मसहितमान्योवे माटेएठेका
णेआत्मीककहि पणआत्मीकठेनहि.

शिष्यवाक्य-स्वामी कोइठेकाणेपुद्गलीककहिवे

गुरुवाक्य-केएहीजभगवतीजीनेविशे तथापनवणाप्र
मुखवणाशास्त्रमां सज्ञाने पुद्गलीककहिछे तथासज्ञा
ओ १६ कहिछे तेमध्येक्रोधादीक संज्ञामांगणवेमाटेस
वेपुद्गलीकछे एटलेसज्ञासंसारजीवनेहोयसीद्धपरमात्मा
नेनहोय एटलेएवीसज्ञासहितहोय तेनेजीवजाणवी ह
वेतेसंसारी जीवनुआवखु लखीयेछीये प्रथ्वीकायनुं
२२००० बावीसहजारवर्षनुआवखु अपकायनुं७०००
सातहजारवर्षनुआवखु तेउकायनुत्रणअहोरातरीनुं वा
युकायनुं ३००० त्रणहजारवर्षनुआवखुं वनरूपतीकाय
नुं १०००० दसहजारवर्षनुआवखुं थावरपांचेनुंआवखु
जाणवुं हवेतरसनुआवखुकहियेछीये वेरद्रीनुं १२ वर्ष
नुं आवखुंतेरंद्रीनुं ४९ दीवसनुचोरद्रीनुं ६ महीनानुं

तथात्रीजंचपंचंद्रीजलचरनुं पुरवकोडनुजाणवुं 'स्वेचरपं
 खीनोपल्योपमनो असंख्यातो जगजाणवो 'तथाथलचर
 त्रिजंचनुत्रणपल्योपमनुंआवखुंजाणवुं तथाउरपरीसर्पनुं
 पुर्वकोडनुजाणवुं भुजपरीसर्पनुंकोडपुर्वनुजाणवुं 'सर्वेनें
 जघन्य अंतरमहूर्तजाणवुं. हवेजलचरछमुरठमनुपुर्वको
 डनुआवखुं थलचरसमुरछमनु ८४००० चोराशिहजा
 रवर्षनु स्वेचरसमुरछमनु ७२००० चहोतिरहजारवर्षनु
 उरपरीसमुरठमनु ५३००० तेपनहजारवर्षनु भुजपरी
 समुरछमनु ४२००० वेतालीसहजारवर्षनुजाणवु हवे
 सातनर्कनुआवखुंकहियेबिये. पहेलीनर्कनु एकसागरो
 पमनुआवखुंजाणवुं. नेविजिनर्केत्रणसागरोपमनुआवखुं
 जाणवु त्रिजिनर्केसातसागरोपमनुआवखुंजाणवु चोथी
 नर्केदशसागरोपमनुआवखुजाणवुं 'नेपांचमीनर्के 'सतर
 १७ सागरोपमनुआवखुजाणवुं छठिनर्केबावीशसागरो
 पमनुआवखुजाणवुं सातमीनर्के ३३ 'तेत्रिशसागरोपम
 नुआवखुंजाणवु पहेलीनर्के 'जघन्य. १०००० दशहजार
 वर्षनुआवखुपहेलीनु जेउतकष्ट 'तेविजिनुजघन्य 'एमजा
 वतठठिनुउतकष्ट तेसातमीनुजघन्य 'तथासातमीनर्केअ
 पेठाणनर्कावाशे जघन्य, तथा 'उतकष्ट ३३ सागरोपम
 नु, तथाहवेभुवनपतिनुआवखुंकहियेबिये. असुरकुमार
 नीनिकायमा दक्षणादिशाना चमरीइद्रनु १५

मनुः श्रावसु तेनिदेवीनुसाडीत्रणपलोपमनुश्रावसु उतर
 दिशानावलीद्वंद्वनु एकसागरोपमज्ञाजेरुश्रावसु तेनिदे
 विनुसोमीचारपल्योपमनुश्रावसु तथानागकुमार प्रमुखे
 नवेनीकायनीदक्षणेऽपिनु १॥ दोढपल्योपमनु श्रावसु
 तथाउतरदिशानानवेनिकायनु वेपल्योपममाठेरुश्रावसु
 तेवेश्रेणिनादेवगनानु श्रावसु तेनीनिकायनादेवथीश्ररध
 नुश्रावसुजाणवु तथासर्वभुवनपतिनुजघन्यथी १००००
 दशहजारवर्षनुश्रावसुजाणवु हवेव्यतरनीनिकायनुउतक
 ष्टं एकपल्योपमनुश्रावसुजाणवुने जघन्य १०००० दश
 हजारवर्षनुश्रावसुजाणवुतेनिदेवीनुश्ररधापल्योपमनुजा
 णवु चंद्रमानु एकपल्योपमने १००००० एकलाखवर्षनु
 श्रावसु सुरजनु एक एकपल्योपमने १००० एकहजारवर्ष
 नुश्रावसुग्रहनु एकपल्योपमनु नक्षत्रनु ०॥ अडधापल्यो
 पमनु तारानु ०॥ पापल्योपमनुश्रावसु तेनिदेवीयांनुसर्व
 सर्वनादेवथकी ०॥ अडधुजघन्यथकीसर्वेने पल्योपमतो
 आठमोभाग हवेविमानिकनुश्रावसु कहियेछिये सुधर्म
 देवलोकेजघन्य ११ एकपल्योपमनु उतकष्ट बेसागरोपमनु
 श्रावसु तेनिदेवीनुसातपल्योपमनु श्रावसु त्या अपरग्र
 हितादेवीवृत्ते तेनु ५० पचाशपल्योपमनु श्रावसु तथा
 इशानदेवलोके बेसागरोपमनुज्ञाज्ञेरानु तथातेनिदेवीनु ९
 नवपल्योपमनु त्याअपरग्रहितादेवीवृत्ते तेनु ५५ पचावन

पल्योपमनुश्रावखुबे . सनतकुमारदेवलोके सातसागरोप
 मनुश्रावखु देवंगनाहवेश्रहियाथकीछेनहि जघन्य श्राव
 खुनिचलादेवलोके उतकष्टहोयतेउपलेदेवलोकेजाणवुं
 एटलेश्रहियावेसागरोपमनुश्रावखुंछे तेमसर्वेदेवलोकेस
 मजवुं चोथेदेवलोकेसातसागरोपमझाझेरांतु श्रावखुजा
 णवुं पाचमेदेवलोकेदशसागरोपमनु श्रावखुजाणवुं ठठे
 देवलोकेचौदसागरोपमनु श्रावखुंजाणवुं सातमेदेवलो
 केसत्तर सागरोपमनुश्रावखुजाणवु श्राठमेदेवलोकेश्रढा
 रसागरोपमनु नवमे १९ सागरोपमनुश्रावखुं दशमे
 २० सागरोपमनुश्रावखुं श्रैगियारमे २१ सागरोपम
 नुश्रावखु वारमेदेवलोके २२ सागरोपमनुश्रावखुं हवे
 नवश्रहिवेकेप्रथम नर्कमध्येहेठनीश्रहिवेकनु २३ तेविश
 सागरोपमनुश्रावखुं विजि २ श्रिवेके २४ चोवीशसा
 गरोपमनुश्रावखुं ३ त्रिजिश्रहिवेकनु २५ पचीससाग
 रोपमनुश्रावखु हवेमध्यनर्कनापहेलीश्रहिवेकनु २६ सा
 गरोपमनुश्रावखुं विजिश्रहिवेकनु २७ सतावीशसागरो
 पमनुश्रावखु त्रीजीश्रैवेकनु श्रठावीससागरोपमनुश्रा
 वखु हवेउपरलीनरकतापहेलीश्रैवेकनु २९ सागरोप
 मनुश्रावखुं विजिश्रैवेकनु ३० सागरोपमनुश्रावखुं
 त्रिजिश्रैवेकनु ३१ एकत्रीससागरोपमनुश्रावखुं हवेपां
 चअनुतरविमाननुश्रावखुंकहियेबिये तेमध्येचारअनुतर

विमाननुश्रावखुजघन्यथी ३१, एकत्रिंशसागरापमनुउ
 तकष्टु ३३ तेत्रिंशसागरोपमनुश्रावखुछे तथासरवार्धसि
 धविमानेजघन्य तथाउतकष्टु ३३ तेत्रिंशसागरोपमनु
 श्रावखुंजाणवु एटलेएदेवनुश्रावखुकह्युं
 हवेमनुप्यनुश्रावखुकहियेछीये देवकुरु तथाउत्तरकुरु
 नाजुगलीयानुश्रावखु ३३ त्रणपल्योपमनु हठीवर्षे तथा
 रमणीकवासना जुगलीयानु २ त्वेपल्योपमनुं श्रावखुठे
 हेसवंत तथाअरणकवास खेतरनाजुगलीश्रानु १ एकप
 ल्योपमनुंश्रावखु अतरद्वीपनाजुगलीश्रानुपल्योपमनाश्र
 संख्याताजागनुंठे हवेकर्मभुमीनामनुप्यनुंश्रावखु एकक्रो
 डपुर्वनुंठे तेमाहावीदेहखेतरमांजाणवु तथापाचमेश्रारेभ
 रतएरेवरतखेतरने विशेषे ११०१ एकसोनेदसवरसनुश्रा
 वखुजाणवु १ तथा ठेठे श्रारे २०० वरसनु श्रावखु
 जाणवु तथाश्रसेनीश्रामनुप्यनुं अतरमहूरतनुं श्राव
 खुजाणवु गरजजतथाश्रसेनीश्रामनुप्यनुं जघन्य
 थकीअतरमहुर्तनुश्रावखुजाणवु एटलेमनुप्यनुंश्रावखुक
 ह्युं तथासर्वजीवनुश्रावखुकह्युं शुद्धेनिश्चयनये विचा
 रीनेजोइयेतो चेतनजेवासिद्वपरमात्मातेवोजचेतनठे चे
 तनसत्तानेविशे जप्तसत्ताजुढीछे माटे चितनचेतनना
 रुपमांजठे
 शिष्यवाक्य-हेभगवान् चेतनपोतानाज रुपमांठेतो

चारगतीसंसारमां परीभ्रमणकरवुं जन्ममरणानांदुखसे
हेवातेवुं केमथायवे.

गुरुवाक्य—हेमानुंभावजेधणीयेप्रोतानिचेतननी भुलेज
डनेपोतानो मान्योछे त्यांसुधीदूखीछे पणपोते पोताना
स्वरूपनेविशो भासनकरेपवीव्यापकपणुकरे पछीरमण
करेतंतेनेकांश्ये दुखहोयनहीअत्रद्रष्टांतजेमकोइपुरुपमा
हाडाह्यो विचीक्षणने तेजपुरुषेमदाराप्राप्तकरयु तेनाक्रे
फथी गफलतीथयो तेवारते असुधीजग्यानेविशोपडेअने
पवीत्राइपणुमाने रस्तामांपदेने घरमानेपरंतु तेजव्रिनो
जेवारकेफउतरे तेवारतेअसुघीनेअसुचीमाने रस्तानेर
स्तामानेपोतेपोताना घरमांजइनेवेसे प्रथमकेफमाअशु
चीने शुखमांतीनेपड्योहतो तैभ्रमणावधीए मटीजाय
तेमआचेतन अज्ञाननाजोरथकी मिथ्यारुपभ्रमजालमां
पड्योछे तेधणीसर्वपुद्गलनुं करतवतेनेआत्माजाणे तेथ
कीकरिनेचारगतीसंसारमांरखववानुंथाय जन्ममरणादि
कदुखसहेजेवारे ज्ञानचासनथाय तेवारिजडनुंकरतव स
र्वस्वोटुंजाणे पोतेमांहीप्रवेशकरेनही तथाबीजेद्रष्टातेजे
मफटकरत्ननो एकथंनवे तेथंभनेएकदीशायेलालपत्रवां
धीयेएकदिशेशांमवांधीयेजेवारेलालपत्रवांध्याहोय तेवा
रेफटकलालदीशे शांमफटकवांध्युहोयतेवारि फटकइयां
सदीशे अपीतुंफटकती शांमिनथीनेलालेनथी फटकतो

निर्मलस्वप्नावेजवे। तेमत्रा आत्मारोग द्वेषरुपजे लाल
 श्यामरुपपत्रछे तेथीलोकमासारोनबलोकेहेवायवे पण
 आत्मामूलस्वप्नावे। जोइयेत्यारे। तेनेकांशरागद्वेषनेही
 रागद्वेषतो जडहे आत्मांतो नीराकार नीरजनवे आत्मा
 नेविशेतो। ज्ञान दर्शन चारित्र रद्दुठे एवीरिते जे आत्माने
 ओलखीने जेरमाणकरे ने जेशक्तिभावेसंतानेविशे अनंती
 रिद्धीरहीवे तेव्यक्तिभावकेहेतासर्व प्रगटकरे तेनुंकल्या
 णथायएटले एजीवतत्वकह्यो-१ हवेसवरतत्वकेहीयेछियेए
 टलेसवरकेहेता। आवताकर्मनेरोकया तेनेसवरकहिये ते
 संवरनात्रणभेदछे मनसंवर १ वचनसंवर २ कायसंवर ३
 कायसवरकेहेताजेथकी। आश्रवआवे एवांकामकायाएक
 रीनेकरे। तथावचनसवरकेहेता जेवोलवाथकी आश्रव
 आवेतेवु वचननबोले तथामनसंवरकेहेता जेमनथकीआ
 श्रवआवे एवुमननरमाडे एसंवरतेसर्व वेहेवारठेनिश्रय
 थकीआत्मा पोतानास्वरुपमारहेतेने सवरकहिये।

शिष्यवाक्य-स्वामीअमेतोपुर्वे सवरना ५७ बोलसां
 जल्याछे तेतमेकइकह्यानही अनेतमेतोआत्मानो सवर
 कह्योतेतो अमेपुर्वेसाजलेलुनथी।

गुरुवाक्य-हेजडसतावनबोलजेते सवरनासांजल्या
 वे तेमधेकेटलाएकबोलतोवेहेवारठे कोइकबोलनीश्रयठे
 तेमधे जेवेहेवारसवरछे तेथकीकोइजीवनी मुक्तिथा

एतन्ही एतो अंतेपण आश्रवजथाय अनेजेनिश्रयसंवर
छेतेथकीज धर्मयाय अनेमुकेपण तेथीजजाय.

शिष्यवाक्यः—स्वामी तेनो एटलोवधोफेरकेमते तेनीस
मजपामो.

गुणवाक्यः—हे चंद्र एसतावनवोलनीरतिते तेहुंतनेकहुं
तेतुंसांजल प्रथमसतावननामते तेकहि एछीए ड्यांमु
मती १ चापामुमती २ एखणासुमती ३ आदाननीखेपणा
सुमती ४ परीठावणीयामुमती ५ मनगुप्ती ६ वचनगुप्ती ७
कायगुप्ती ८ क्षुधापरिसह ९ त्रिपापरिसह १० गितप
रिसह ११ उश्रपरिसह १२ डंसपरिसह १३ अचेलप
रिसह १४ अरतिपरिसह १५ स्त्रीपरिसह १६ विहार
परिसह १७ नीखेडपरिसह १८ सज्यापरिसह १९ आ
क्रोसपरिसह २० वधपरिसह २१ जाचनापरिसह २२
अलाजपरिसह २३ रोगपरिसह २४ त्रणफासपरिसह
२५ मलपरिसह २६ सतकारपरिसह २७ परिज्ञापरि
सह २८ अज्ञानपरिसह २९ समकीतपरिसह ३० क्षमा
३१ मार्दव ३२ आर्जव ३३ मुत्ती ३४ तप ३५ संजम
३६ सत्य ३७ सोच ३८ अकंचन ३९ ब्रह्मचर्य ४०
अनित्यजावना ४१ अगरणजावना ४२ संसारजावना
४३ एकत्वजावना ४४ अन्यत्वजावना ४५ अगुचीभा
वना ४६ आय ४७ संवरजावना

भावना ४९ लोकजावना ५० बोधदुर्लभजावना ५१ घ
 र्मभावना ५२ सामायकेचारीत्र ५३ बेदोपस्थापनीय
 चारीत्र ५४ परीहारवीशुद्धचारीत्र - ५५ सुक्ष्मसंपरा
 यचारीत्र ५६ जथास्वायकचारीत्र ५७ एसतावर्नबोलसं
 वरनांठे तेमध्येघणाबोलवेहेवारदीसेछे - केमकेप्रथमजपां
 चजेसुमतीठे तेआत्मग्राहीनथी शामाटेजेप्रथमइरीआसु
 मतीजेसाधुनेधुसराप्रमाणेकेहेता सामात्रणहाथद्रष्टीश
 खीनेचालवु - तेपरजीवनीदयाआश्रीनेछे - तथापोतानाप
 डवाआखडवा आश्रीनेछे - तेवीसुमतीज्ञानविना घणा
 जीवपालेठे तथाभापासुमतीजेछे - तेवचनथकी कोइजी
 वनेबाधापीडाथाय एवुवचननबोलवु - तेपणपरजविआ
 श्रीनेठे - तथापोतानुमानराखवाआश्रीनेछे - तथात्रिजी
 एखणासुमतीछे - तेपणएकंद्रिआदिक - जीवनेरखोपा
 आश्रीनेठे - शामाटेजेगोचरीनाजे - दोपटालवा तेमुख्य
 तापणे - अपकाय - तथाअग्निकाय - तथाविनरूपतिका
 य प्रमुखजीवनुरखोपुठे तथाचोथोआदानसुमती तेजण
 शजावलेवीमेखवी - तेपुजीप्रमार्जिनेखेवी - तथामुकवीतेप
 णपरजीवनीदयाआसरीनेठे तथापाचमीपरीठावणीआ
 सुमतीकेहेता जेआहारपाणीविस्रपात्रलघुनीतवडीनीतेप्र
 मुखजेजेपरठवु तेसर्वेजग्यापुजीपरमार्जिनेपरठववु तेप
 णपरजीवनीदयाआसरीनेठे - तथामनगुप्तीकेहेता मनने

आर्तरुद्रध्यानमांजावानदेवं, जातांनेरोकवु तथावचन
 गुप्तीजे वचनविनाकोरणेउचारणनकरवु अनेजेउचारण
 तेषणकोडजीवनेबाधापीडाथाय, एवंनकरवु तथाकायगु
 प्तीकेहेता जेकायाएकरीने जेजीवनीहिसाप्रमुखनिपजे
 तेकामनकरवां एटलेएंपंचसुमती, तथात्रणगुप्तीएआठ
 प्रवचनमांतीकहेवाय तेजमालीप्रमुखघणा जिवेपाली
 पणकांडतेजिवनीकारजसिद्धिथइनेहि अनेअगवानेएने
 निन्नवमांगया तेप्रतक्ष सिद्धांतबोलेछे माटेएनेतेव्यव
 हारजजाणवो एनेविशे कांडआत्मानिकारज सीद्धिदि
 सतीनथी.

शिष्यवाक्य--स्वामीजोएनेविशे आत्मानिकारजसि
 द्धिनथीतोसिद्धांतनेविशेठेकाणेठेकाणेअष्टप्रवचनमातानी
 वारताकेमलाव्यावे. नेएवादेखीनेतेनेसाधुजाणे तेनेमि
 थ्यात्वलागे.

गुरुवाक्य--हेभद्र एकल्पव्यवहारछे एथकीवाल
 जिवधर्मपामे नेसाधुनेगुणबाहाजथकी देखीनेसाधु
 माने माटेएनेकांड मिथ्यात्वलागेनहि- एटलेसाधुआ
 वकनीउलखाणपणएथकीथाय तथासाधुनोव्यवहारघ
 णोसारोदिसे तथापरजिवनीदयापणरहे तेकारणमाटे
 सिद्धांतमांएवारतालावेलाछे तेकरतांसिद्धांतनीमांहेली
 कोरेव्यवहारनीपुष्टिघणीकछे आमाटेकेत्यांत्रणनयनीवा

रतारहीछे निगम १ सग्रह २ व्यवहार ३ चारनय
 नीवारता सिद्धांतमाधीकहाडीनांखीछे तेअधिकारसम्य
 कद्वारग्रथकी जाणजो पणतेअष्टप्रवचनमातांनेविशे
 आत्मस्वरूपतीरमणतानथी अनेज्यांआत्मस्वरूपतीरम
 णतानेहित्याकाइधर्मनहि अनेजोआत्मस्वरूपतीरमणता
 विनाअष्टप्रवचनमातामा धर्महेततो जमालीप्रमुखते
 निन्नवनकहेता माटेआत्मस्वरूपतीरमणतार्थकीधर्मत
 थामुक्तिछे पणतेवित्तानथी.
 हवे वाविसपरीसहनी समजपाडु तेसांजल प्रथ
 मजेक्षुधापरीसह कहेताजे क्षुधा वेदवीएथकिकांइआ
 त्मानुकल्याण जासणथतुनथी शामाटेजे त्रिजचपंच
 द्रि घोडा-ढोरा प्रमुखवट्ट क्षुधावेठे पणकाइतेनुको
 रजथतुनथी नेक्षुधावेठ्याथी कारज्जथायतो तेजजिवनु
 कारजथाय तथातुपापरीसहकहेताजे जलनीपियास
 जोगववीतेनेविशे काइआत्मकारजनथि शामाटेकेजो
 एथकीकारजथायतो वपेआप्रमुखजानवर सोक्षेगया
 जोइये तथाउष्णपरीसह कहेताजेतापसेहेवोतेथकीपण
 काइमुक्तिथायनहि केमकेवलदुघोडारोइ खन्नरप्रमुख
 जनावरसदाय तडकेजरहेते पणएतापथकीपणकाइते
 निसिद्धिथइनहि तथासीतपरीसहकहेताजेटाहाडसेहेवी
 तेपण सर्वपंखीतथाढोरतथानिलप्रमुखघणामनुष्यतेप

णसितसहेछेपणतेनुकांशः, कारजसिद्धिथतुनथी तोविजा
 नुक्रयांथकोथाय तथासपरीसहकहेताजे मंस, मछर, चां
 चड, मांकरण, इत्यादिक, परीसहंसेहेवोतेपरीसहथकी
 कारजसिद्धिहोयतो सर्वज्ञानवरतथापंखीने विशेषथकी
 थायते नेमनुष्यनेसामान्यप्रकारेते एपरीसहथकीजोमु
 क्तिथतीहोयतोप्रथम, ज्ञानवरादिकनी सिद्धिथवीजोइए
 पछीमनुष्यनी, सिद्धिथायपरंतुसनास्वरुपउलस्याविना
 कोइदिनमुक्तिथवानीनथी, तथाअचेलपरीसह, कहेतांव
 स्रादिकनराखवुं तेनावेजेद, डिगंवरनेमतेबिलकुलनरा
 खवुश्वेतांवरनापक्षना, वेजेद सिद्धांतनोतथाआवशकनो
 सिद्धांततापक्षथकीजोता, कोइसाधुवस्त्रराखे, तथाप्रश्न
 व्याकरणसुत्रनेमते, ब्रह्माएराखेएवुंजासेते, परंतु, विजा
 सुत्रना मतथकी, भासणतथी, थतु, तथा, आचारंगजि
 वालाएवुकहेछेके, कोइसाधुथीसीतपरीसहनखमायतो
 एकतथावेतथात्रणपवेडीराखे, पछीसीतकालगयाथीउ
 सरावेअथवाकोइनउसरावे, तथाकल्पसुत्रनीटिकाप्रमुख
 नेविशेआर्जरक्षितनामाजुगप्रधाने, पोतानापितासोमल
 नामाब्राह्मणनेदिक्षादिधी, तेवारतेनेसर्वधर्मसाचुजास्युं
 पणचलोटी, कहाड्योनुहोतो, शथीके लज्जापरीसह
 न, जिताणो, तेथकीतोयपणश्री आर्जरक्षितजुगप्रधाने
 बहुमहेनते जुकियेकरीनेकढाव्यो तोतेजीतांवस्त्रजापण

यतुनयी आवशकनेमतेहाथवेनोकटको वैकुणीवचेदात्री
 नेचाले इत्यादिकविचारछे। एसर्वेनेअचेलकंजकहिये.
 तेअचेलक परीसहथकी मुक्तीथाय। तेपणकाइसंजवंतु
 नयी शामाटेजेजानवर मात्रतोसर्वे अचेलकठे तथाम
 नुप्यनेविशें वाघरीप्रमुखघणालोको तुछवस्त्रनाधारीछे
 तेमनाअंगपणपुरां ढकातानयी तोतेनीमुक्ती प्रथमथयी
 जोइयेपणतेकाइथतीनयी मुक्तीतोपोतानाआत्मस्वरूप
 थकीछे तथाअरतीपरिसहकेहेता अशाताएटलेशरीरा
 दीकनेअथवामननेमान अपमानप्रमुखआदेदेइने अशा
 ताउत्पन्नथाय एअशातापरिसहसेहेवोतेठीकछे समभावे
 रेहेवायतो आत्मीककारजछे जोआत्माओलखेतो नही
 तोएपणनेहेवारछे केमकेएवाघणाजीव मानअपमानस
 मजावेगणेछे तेजोगीवेरागी तथाओछीसंमजवालाजीव
 तेपणसर्वैरामभावेरेहेछे परतुतेमांकाइकारजसीद्धीथायन
 ही जोआत्मस्वरूपनेओलखनितेनेपुद्गलीकभावजाणीने
 समजावरेहेतोतेनुकारजसीद्धीथाय तथास्त्रीपरिसहकेहे
 तास्त्रीयादीकनाआवजावदेखीनेमनेचपलथायतेपरिसह
 सेहेवोपरतुते परिसहसेहेवाथकीतोकारजनिसीद्धिबिनाहि
 शामाटेके साखीसन्याशी परमहंसपरमुखघणाएजोग
 नेसाचवेछे तथाघोडापरमुखजानवरपणपरवर्गारह्याथकी
 पालेछे तथाकेटलाक मनुप्यनेअणमलते सचवायछे तथा

मलतेपणधणाधर्मवाला साचवेठेपणतेनुकांड कारजसी
द्विथायनहि.

शिष्यवाक्य--केस्वामीतेतो जैननुधर्मपाम्यावगरमोक्ष
जतानथीपणजैननुधर्मपामेतेमांक्षेजायकेनहि.

गुरुवाक्य--केजैननाधर्मनाने अन्यमतनाएधर्ममांशो
फेरछेएवरततो सर्वेनेसरखुपालवानुछे माटेएवरतआश
रिने कांडजैनमाने अन्यधर्ममांकशोफेरठेनेहि परतुजै
ननोएफेरछेकेजे खटद्रव्यनीओलखाण तेमध्येथीपांचद्र
व्यनोत्याग एकआत्मधर्मनुआढरबुं तेनागुणप्रजाय सं
हितओलखाण करवीतेनेभेदज्ञानकहिये तेजअज्ञेदज्ञा
नपणोथाय तोमुक्तेजायमाटेज्ञानमाज मुगतीरहिछेतथा
विहारपरिसह केहेताजेचालबुं तेनोश्रमतथागामगाम
जायगानवीगातवी तथाआहारपांणीसर्वे वीहारमाउत्प
न्नथायतेपरिसह शेहेवाथाकीकोइकहेगेके मुक्तीथायते
वातपणसंभवेनेहि शोमाटेजेआजीवीकाथकीलोकोघणा
गामोगामफेरछे नेपरिसहसेहेछे तथाअन्यमतीनानेख
धारीपणसर्वे एमजपरिसहसेहेछे तथाघोडाप्रमुखवीहां
रनापरिसहसेहेछे पणतेनुकांडकारजसीद्विथंतुनथी तथा
नीखेदपरिसहकेहेताजे लोकोनुअपमानकरे नेपरिसहसे
हेवोतेथकीपणकोइ केहेशेकेआत्माकर्मरहितथाय तेवात
समवे तिसामाटेजे नी लोकोघर नेतलो

कोतेनेघणुनीभ्रछेतथास्वाननेघरघरथीमारीनेलोकोकाढी
मुकेछे तोएपरिसहथकीकारजसीदीथाततोएटलानेथवी
जोइये परतुकारजसीदीतोएकआत्मज्ञाननेविशेछे तथा
सज्यापरिसहकेहेताभुमीतथापाटत्रमुखनी जोगवाइसा
रीमलीअथवानवलीमलीतोतेपरिसहसेहेवो तेपरिसहथ
कीपणकाइकारजथतुदीसेनहिकेसेकेजेवणा, लोकोवीसम
जग्यानेविशेपणरेहेछेतथाजनावरपणविसमजग्यानेविशे,
वेसेसुवेछेतेथी काइतेनुकारजथायनहि तथाआक्रोसपरि
सहकेहेताकोइआक्रोसकरिवचनकेहे, अथवामरमनांवच
नकेहेतेपरिसहसेहेवोतेनोविचार, पुर्वेनखेदपरिसहमाक
ह्योछेतेथकीजाणजो तथावधपरिसहकेहेता काइताडेछेदे,
भेदेतेपरिसहसेहेवो परतुकाइतेपरिसहथकीपणकारज,
सीद्वियायनहि, शामाटेजे, त्रिजंचनीगतिनेविषेएकएक
नाछेदनचेदनघुणाकरेछे, तथामनुष्यपणतेजीवोनेछेदन
चेदनकरेछे, तथामनुष्यमनुष्यतेपणछेदतभेदनकरेवे, त
थावाघरीथोरीप्रमुखनीचजातिनेतामनातरजनाघणीथा,
यछे तथाउचलोकोमापणथायवे, तेप्रत्यक्षजोवामाआवेवे
पणकाइतेनीकारजसीद्विथतीनथी.

- शिष्यवाक्य - स्वामी-तेलोकेछेदनचेदनखमेवे तेनेका
इसमताप्रणामनथी नेसाधुलोकोतो समताथकीपरिसह
सेहेतेमाटे तेलोकोनुंकारजसीद्विनथाय, नेसाधुलोकोनु

कारजसीद्धिथाय.

गुरुवाक्यः—हेन्द्र समताकांश्चैकप्रकारनीनथी शामा
 टेजे कारणकारणजुक्तसमतावे एकतोसमताकेतां सामोपु
 रुपबोल्यो तेनासामुनबोले तेवारेपोतानामनमाविचारै
 के बन्नेसरखाबनशु भाटेपोतानीमोटमराखवानेनबोले
 तेपणसमताकहिण तथाबीजेभेदसामोपुरुपबोल्यो तेपो
 तानीसमजमांजनहि केवलमुखपणेजेकहे तेनीहातेपण
 समताकेहेवांय तथात्रीजेभेदे राजाप्रमुखनासामुंबोलवा
 नीपोतानीप्राप्तिनथी त्यांपणसमताराखवीपमे नाराखे
 तोउलटुंविशेषपेदाथाय तेनेपणसमताकहिण तथाचोथो
 भेदसामानाबोल्याप्रमुखपेटमांराखे मुखथकीकेहेनहि
 लोकमांघणासमतावानजणाय परंतुजेवारेपोतानांश्रव
 सरआवे त्यारेतेएवेरले तेपणएकसमता तथापांचमोभे
 दजेज्ञानमांसमजेनहि अनेमटकवेरागथकी पापनोभय
 राखीनेसमताराखे तेपणएकसमताइत्यादिक बहुप्रका
 रसमतानाछे पणतेथकीकाइकारजसरेनहि जेवारेआत्म
 स्वरूपनी ओलखाणथइहोय नेपुंद्गलनाबंधउदेउदीरणा
 नाजावसमजतोहोय पछीआत्माथकी एवोविचारथायके
 एआत्मानाबाधेजां कर्मपुर्वेताउदेआव्यांछे तेजोगव्या
 विताछुटेनहि नेसामापुरुपने एवोजकर्मनोउदेछेके उल
 टाकर्मथीकणाबांधेते एमपदानतन्म्वरूपविचारतारागद्वेप

नउठे तेवारिश्रात्मस्वरूपमांस्थीरथायतेनेसमभावकहि ए
 नेतेनुनामसमेतातेथकी अनताकर्मनिर्जरे माटेएसमताते
 समतामांगणाय बाकीसमताउतेवस्तुताएजोतांअसमता
 जछे तेमाटेवधपरिसहथकीकांडमुक्तिनहि मुक्तितोपोता
 नास्वरूपरमणमावे तथाजाचनापरिमहकेहेताजेघरघर
 निक्षामागवी तेएकमोटोपरिसहते तेपरीसहनुसहन
 करवु, परतुतेथकी काइकारजसरेनहि केमकेघणाभि
 क्षुलोको तथासारामाणसं श्राजिविकार्थी हिणथये
 थकेलज्जामुकी नीक्षावर्तीकरेते तथाअनदर्शणनाजेख
 धारीपणसर्वेजाचनावर्तीएज श्राजिविकाछे तेथकीपण
 कारजसीद्धियायनहि अनेजोकामथतुहोयतोते पहेलुथ
 वुजोइए तथाअलाभपरीसह कहेताजाचनाकरतापणव
 स्तुपाम्यानहि तेनेअलाजपरीसहकहिये तेपरीसहपण
 सर्वेजाचकलोको तथाभिक्षुलोकोसर्वेअणमलवार्थीसंतो
 पकरीनेवेसेते तथाग्रहस्तीपणएकएकनेघेर वस्तुजांचवा
 जायनेनंमलेतोसतोपराखे तथाजनावरपण घासटाणो
 मलेतोचलेनमलेतोसतोपराखीनेवेसेते एमसर्वेजिवनी
 एजनितीछे कदापीकोइजिवउत्पातीयाहोय, तेहायवरा
 थकरेपणतेकाइपरीसहथकीकांगज सीद्धियायनहि तथा
 रोगपरिसहकेहेता शरीरमारोगश्रावी उत्पन्नथएथके प
 रिसहसेहे परतुतेपरिसहसर्वेजिवसेहेते कोणमनुष्य वा

कोणजानवर तथाओसम्भवेसम्भसाधने पणकरवांकह्यावे
 तेसाधुकरेवे नेतेदुखनोनिरवाह समताराखीनेकरवो ते
 सर्वेनिर्वाहकरेवे कोइउत्पातीउंहोय तेहायवरायकरेपरं
 तुरोगनुआवखुंआवीरह्यावगरं रोगजायनहि माटेएपं
 रीसहसहेवाथकीकांइमुक्तिकहेवायनहितथातणफासपरी
 सहकहेतां माजप्रमुखघासना संथारानाफरसकठणछे
 तेमुनीनिर्वाहसमताथीकरेपरंतुतेपरीसहसेहेवाथकीमुक्ति
 मलेतेतोसंजवेनहि शामाटेजेकोलीभिलप्रमुख घासमां
 जपऊचारह्यावे तथाजानवरपणघासमां वेसेउठेतेतथा
 खेतीवालालोकाशियालोआवेयके परालनाढगलामांज
 वेशीरहेवे माटेएपरीसहतोपराए घणाजिवनासहेवामां
 आवेछे पणतेनुकोइनुकारजथयुं एवंकोइनासांजल्यामां
 आव्युंनथी तथामलपरीसहकहेतांजे शरीरेमेंलतथापर
 सेवोवलेतेपरीसहसहेवो तोतेपरीसहबंधिवानलोकोरा
 जद्वारेछे जेने केदथउंन्यांथी मांडिने ज्यांसुधिकेदमां
 रहेत्यांसुधिहजामततथा नाहावुंतथालुगंभांधोवां एसर्वे
 बंधछेतोते लोकोनेएपरीसहवरानोदिसेछे माटेजोए
 परीसहथकीकारजसिद्धीथाय तोतेलोकोनीथविजोइये
 परंतुआत्मस्वरूपउलख्याविना कारजसिद्धिनेनहि तथा
 सत्कारपरीसहकहेतां सनमानपामवाथकी मनमांअजि
 माननकरेतेपरीसहपणकपटी तथालोचिपुरुपजलिरीते

सहेतथागफलतमनुष्यपणसहे तथाजनावरमात्रनेपण
 एपरिसहते माटेमानपामवायकी अभिमाननथयु तेथकी
 काइअविनाशीसुखमलेनहिअविनाशीसुखतोआत्मानिमे
 लथयेमले तथापरिज्ञापरीसह कहेताजेज्ञाननु विशेष
 पणेजाणवुंथाय तेनोमदनकरवो एपरिसहजोनसहेतोके
 वलनपामेपरतुधर्मथकी अष्टनथायसमकिततेनुजायन
 हिकटापितेथकी अतिशेमदथइजायंतो आकरुकर्मउपा
 रजेपरंतुसमकितनजाय जेममहारुसमहातुस नामामु
 निपुर्वेज्ञाननोमदघणोकरचो तेथकीआचवनेविशेतेज्ञान
 नुआवरणउडेआव्यु तेथिअगिघारअगजएयाहतातेनु
 लिगयापरतुसमकित तथाचारित्रकाइगयुनहि जेएजच
 वनेविशेछे,तेकर्मनाउडेनोक्षयकरीने- केवलज्ञानपामिने
 मोक्षेगया तेमएज्ञाननामदकरवांथी- ज्ञाननुआवरणब
 धायमाटेज्ञाननो मदनकरवो तेज्ञाननविनेदछे व्यवहार
 ज्ञानतथानिश्चयज्ञान व्यवहारज्ञानते वैदक जोतिप रा
 ज्यनीति शृंगारशास्त्र, कलाशास्त्र, अन्यमतिनाशास्त्रएस-
 र्वेव्यवहारछे, तथाजैनशास्त्रनाचारभेदछे ४ तेमध्येगण
 ताणुजोगकहेताजेद्विपदेवलोकप्रमुखजे लावा, पहोला
 परद्विप आदेदेइनेमानवाधवु तेसर्वेगणताणुजोगकाहिये
 तथाधर्मकथानुजोगकहेता जेनेविशेधर्म करवाथकीपा
 म्यातेनिकयानुकहेवि तेधर्मकथानुजोग तथाचरणकरणा

नुजोगकहेतां जेचरणशितरीना ७० वोलपंचमहाव्रत
 आदेदेडनेतथाकरणशितरीना ७० वोलपलेहणं प्रमुखआ
 देदेइने एनोजेविचारएजचरणं शितरीकरणशितरीनुंजेकहे
 वुंसांनलवुतेने चरणकरणानुंजोगकहिये तेत्रणेजोगव्यं
 वहारते त्रणेपुन्यप्रकृतिनाहेतुवे तथाचोथोद्रव्याणुंजोगके
 हेता जेद्रव्यगुणनेपरजायनोविचार नयनीक्षेपांसहित
 स्यादवाद्जाणवुं तेकेहेवुंसांनलवुं तेनेशुद्रव्यवहारकहि
 ये पणआत्मानोउपियोगमांहेरमतोहोयतो नहितो पूर्व
 नाव्यवहारमांगणीये अनेतेजद्रव्यगुणपरजाय अभेदप
 णेग्रहिनेरमणताकरे तेनेनिश्चयज्ञानकहिये माटेएज्ञान
 जेनिश्चय ज्ञाननोसमजुतेनेमदश्रावेनहि कदापिकोइक
 र्भनाउदथेकीमदश्रावेतो संज्ञालीलेवो तेधणीनाआत्म
 नीसिद्धिथाय तेनि सदेहजाणवुं तथासमकितपरिसह
 केहेताजे समकितमामुझावुनहि शामाटेजेसमकितने ते
 अभ्यंतरआत्मानरिमणतामाठे नेकदापिसमनवामांवरु
 वरनआवे तोपणसदेहणापाकीराखवी पणमुझावुंनहि
 एटलेसमकितकेहेतांश्रद्धानुंनामछे तेव्यवहारश्रद्धादेवगु
 रुधर्भनेकहिये परंतुनिश्चयश्रद्धातो खटद्रव्य नवतत्व न
 यनिक्षेपाप्रमुखेकरिने आत्मउपियोगसहित जेजाण
 णुतेनेनिश्चयश्रद्धाकहिए अथवातेनुंजाणपणं तेनेनह
 तो नवतत्व

परिसहकह्या.

शिष्यवाक्य -- हे भगवंत तमेकेटला एकपरिसहनी मा हे लीकोरे अन्यमतिनो तथाग्रहस्थिनो तथाजिष्णुनो तथा जानवरनोद्रष्टांतदेइने तेपरिसहमेमुक्तिनीनापाडी परंतु तेजीवतोअज्ञानते तेअज्ञानपणेजेकरे तेनीमुक्तिशानीहोय तथापरिसहपरवशपणेसहे तेनीमुक्तिशानीहोयपणजे पोतानेवशपणे ससारनासुखछोमीनेसाधुपणुलीधुं ने जाणीनेपरिसहसहे तेनीमुक्तिकेमनहोय एअमारामनमां मोटीशकाछे.

गुरुवाक्य -- तेजेकह्युं केसंसारमुकिनेनिकल्या तेनेपरिसहथीमुक्तिजोइये तेवातएमनथी जोपरिसहथकीमुक्तिहोय अनेसंसारमुकवाथकीमुक्तिहोयतो जमालीए राजधानीगोडीनेदिक्षालीधी अनेपरिसहपण जावजीवसुधीमनुष्यना तथादेवना तथात्रिजंचनाउचनातेसह्या परंतुअनतसंसारीथया पणमुक्तिथइनहि.

शिष्यवाक्य -- स्वामीएतो वचननाउथापकथया माटे ससाररखम्या परतुआपणेतोकोइहमणाउथापकतोछेज नहि माटेतेनोपरिसहधर्ममाकेमनगवेरुयो.

गुरुवाक्य -- हेअद्र तरणानाचोरने शुलीनोहुकमथाय त्यारेजेकरोमोधननोचोर तेनेसोदमदेवाय तोतेनोदंडतो हवेकाइसंभवतोनथी शाथीके तरणासाटेशुलीथइ नेशु

लीथीअधीकदडतोवीजोकांडिसभवतोनीथी तेमइहाजमा
 लीतोएकमात्रानोचोरठे केमकेजंगवानेकहयुंकेकरेमाणेक
 रुंएटलेकरवामांभयुं तेनेकरयुंकहिये नेजमालीनुकेहेवुएठे
 के करुमाणेकरु एटलेकामपूरुथइरहे त्वारेकरयुंकहियेए
 टलुएकमात्रावचनफेरठ्युं तेथकीअनंतोसंसार वधीगयो
 तोअहियांतोहालनासमाने विशेषतोसर्वसुत्र उथाप्यात्रे
 केमकेमोढेथकीतो एवुकहेछेकेकानोमात्र उथापवोनहि
 एनोविस्तारसिद्धांतसारोद्वारथकीजाणजो हालनेसमे
 अहिंजपरवरतनठे तेघणुकआवश्यकनीटिकाथकीठे परं
 तुसुत्रनेमलतुकोइकवचनठे तेसमजुहोयते विचारीजो
 जोप्रत्यक्षसुत्रने उथापीनेआवसकनीटिका मानीएछिए
 तथाहालनातवनसजायमानिनेपण सुत्रनेउथापीनाखि
 एठिए तेनेहवेशोडंडठरे अनंतोसंसारतो जमालिनेक
 ह्योनेअहियांतोकांडिकउथापवानु लख्युरहेतुनथी माटेते
 पुरुपमातेंज्ञानिपणुशुजाएयुं माटेएपणपरीसहसहेतेसर्वे
 अजाणजछेजेमअन्यदर्शननाजेखधारीपरीसहसहेठेतेम
 एपणसहेछेए२२ वाविशपरीसहठे तेशाता अशाताना
 पक्षमांछे माटेएवाविशपरीसह सहेवाथकी कांडमुक्ति
 थायनहि नेतेनेकांडमंवरकहेवायनहि गामाटेजेदाहाज
 द्रष्टिव्यवहारवाला तेनेसवरमानेपरंतु निश्चयथकीवि
 चारीजोतांआश्रवज्जे ज्यांआत्मस्वरूपनी रमणतातेने

निश्चयसवरकहिये एटले जेणेआत्मानीरमणताहोयनेप
 रीसहसहेतेथकीमुक्तिथइतोएकाइ परीसहनाजोरथीमु
 क्तिपांम्योनहि एतोज्ञाननाजोरथकीमुक्तिपांम्यो आहियां
 कौडविरस्वामीनोद्रष्टातदेशे जेवणांपरीसहसह्या तेनुकेम
 ति नोउत्तरजे एमनेकर्मउदघणाहता तोघणांपरीसहथया
 परतुतेथकी केवलज्ञानतोपांम्यानथी तेतोशुकलव्याने
 नोविजोपायो एकत्वभावज्ञानविचारता केवलज्ञानपा
 म्यामाटेआहियापरीसहनुपरीवल जाणवुंनहि जोपरीस
 हथकीकेवलज्ञानहोयतो धनोकाकंडीतया मेवकुमारप्र
 मुखघणासाधुयेपरीसहसह्या पणकांइकेवलज्ञानपांम्यान
 हि तयाश्रीमल्लिनाथस्वामी दिक्षालेइने तरतकेवलज्ञान
 पांम्याल्याकाइपरीसहथयोनथी माटेमुक्तितोज्ञानध्यानमा
 ठेतेकाइविजिवस्तुमाठेनहि एवातमासंदेहराखवोनहि.
 हवेदशविधजती धर्मकहियेठिये तेमध्येप्रथम क्षमाध
 र्मक्षमाकहेतासमपरीणाम एटलेजडनुधर्मतेउपररागद्वेष
 नराखे आत्मस्वरुपमारमे तेनेक्षमाधर्मतेआत्मीककहि
 येतेपिनानीजेसमताछे तेपुर्वेकहिवाविशपरीसहनाअधि
 कारनेविशेतेप्रमाणेजाणवी.
 हवेबीजुमादेव धर्मकेहेता मदअहकारनोत्याग तेपणपु
 र्वेकहेलुजछे तोपणइहाजरादेखाडीएछीएके आठप्रका
 रनोमदछे तेमध्येप्रथमकुलमदकेहेता जेपोतानोपक्षतेएवुं

विचारेके अमेआवाकुलनाछीये तेनेमदकहिये, परंतुतेम
दनकरे तेथीकाइआत्मानोधर्मप्रगटनथाय आमाटेकेएने
विशेकाइआत्मरमणताछेनहि एतो लोकमांनिरमानीपुरु
पकेहेवाय कदापिजोआत्मस्वरुपनीरमणताहोयतो एवं
विचारेके तारुकुलएकेछेनहि अनेकुलतेचारगतिनेविपे
लाये अनेतेचारगतिमां तुंएकेकुलमाउपन्याविनारह्योन
थी माटेइहांकीयुंकुलतारुगणीये एमाकोइतारुकुलनथी
एमांएकआत्मीकधर्मतेतारुवे तंतुंसांजल एटलेतेनेउचनी
चमध्यमकोइविचारवानोतेधणीनेनरह्योतेनेकुलमंडतज्यो
कहियेतेनेधर्मकहियेतथावीजोजातिमदकेहेता मातानोप
क्ष एटलेमांतानुकुल तेपोतानीजातकेहेवाय तेनोविचार
पणसर्वेकुलनीपरेजाणवो तथात्रीजोमदइश्वरेकहिए तेइ
श्वरमदकेहेतां ठकराइनोमद न्यांपणजेएवंविचारेजे आ
राग्यरीद्वीतिछे नेनथी एवंविचारीनेमदनकरे एकांइधर्म
मांनथी एपणसंसारव्यवहारमांछे, हवेजेपुरुपएवुविचारे
जेअनंतोकालथया संसारमांजटकतोराराजा इश्वरप्रमुख
थयोतथातेश्रीनोदासपणथयोमाटेएईश्वरपणुंतेतुंनही एतो
पुन्यनीप्रकृतिनाजोरथीपान्योछेनेतेपुन्यतेजडछेनेतुंनोचे
तनछे तेएजडनीठकराइथी तारीकांइकारजसिद्धियइन
हि ज्यारेनुंतारीआत्मशक्तियेकरीने भक्तिंनोठाकोर थइ

दिकनेविशे कपटकरैतोअनताकर्मउपारजे तोजेधणीध
 मिंपुरुपकहेवाय तेनेदजनहिराखवो. एटलेदजनसहितपु
 रुपनुकरेलुजेधर्मलेखेआवेनहि दंजनसमानजगतमावि
 जुपापनथी सर्वधर्मनोनाशकरताएदभठे माटेदंभनराखे
 तेनेआर्जवधर्मकाहिये ३ हवेचोथोमुत्तिधर्मकहेतानिलो
 नपणुएटलेआहारपाणीवस्त्रपात्रप्रमुखनो लोभनहिरा
 खेअनेलोअराखेतोसाधुगुणरहेनहि एसर्वेव्यवहारपरंतु
 आत्माथकीएवोविचारउठेजे अहोचेतनतारे शुभाशुभ
 कारजनकरवु शामाटेकेसर्वेपुद्गलीकवस्तुठे एमविचाराने
 शुभकारजनोनिखेदकरे एटलेपुन्यनाकाम करेनहि पु
 न्यनिवछापणकरेनहि जेधणीपुन्यनीवछाकरे तेनेसाधु
 पणुलीधुपणएसंसारीजछे तेवारेकोइकहेशेजे साधुथइने
 पुन्यनीवछाकोणकरेछे तेनेकाहियेजे तिर्थजात्रावरतनेम
 तथावाह्यतपथाव्यवहारचारित्र तथाव्यवहारक्रियाइ
 त्यादिकनेविशे जेरच्यापच्यारहेठे तेसर्वेपुन्यनाइछकठे
 नेतेनेआश्रवीकाहिये.

शिष्यवाक्य—स्वामीजे परीग्रहप्रमुखराखेठेतकरतातो
 एसाधुसाराठे.

गुरुवाक्य—परीग्रहराखेतेनेसाधुकहे तेनेमिथ्यातला
 गेशामाटेकेवितरागनामारगमातोनिग्रथ प्रवचनकहेवा
 यछे अनेजेस्थानकेनिग्रथपणुनथी त्यांसाधुपणुपणनथी

तेनेकोइसाधुकहेशे अथवासाधुजाणिने वस्त्रपात्रआहा
रपाणिउसडवासडअंयवारोगीप्रमुखजाणिने जेएनिअ
नुंकपापणकरशे तेअनंताअवरखण्णो तेआवश्यकनिर्जुग
तीप्रमुखघणामुत्रमांठे तेजोइलेजोमाटेएअसंजतीनुंउठु
देवुनहि अनेजेनिग्रथथइने साधुनामधरावेठे नेआत्म
स्वरुपनेउलखतानथीअनेव्यवहारमांरच्यापच्यारहेठेने
लोकोने देवलोकादिकरिद्धिदेखाडीने बालजिवोनेव्य
वहारमांनाखेछे तेपोतेपणअज्ञानिठे नेतेनेपणअज्ञानप्र
वरतावेठे पोतानोपणसंसारवधारेछे नेसामानोपणसंसा
रवधरावीआपेठे तेपुन्यनीवंछाकरवीनहि एटलेव्यवहा
रनिपणपुष्टिकरवीनहि एकआत्मधर्मनीपुष्टि करवीजेथ
कीआत्माकर्मथकीछुटेतेवाशुद्धव्यवहारनी तथानिश्चय
निपरुपणाकरीसामानेसमजाववोपणअशुद्धव्यवहारतथा
कल्पव्यवहारमांसामानेनाखवोनहि शामाटेजेअशुद्धव्य
वहारतोअनादिकालनोचेतनकरतोअवेठे एटलेपुन्य
पापनीकरणीसंदायचेतननेठे तेथिकांइआत्मानुंकारजथा
यनहि तथाकल्पव्यवहारनेविशेविखवाढ घणोरह्यो शा
माटेजेबहुजनक्रतग्रथटिकाप्रमुखघणा तेनुंमंतुएकेनुंम
लतुअविनहि तथासिद्धांतनोपणएकरीतनो बाधोदिस
तोतथीतेपणअनेकरीतो जुंदीजुदीदिसेछे तथाआजने
काले तवनसझायरास चारित्रप्रमुखघणानोखानोखाज

एनाकरेलाठे तेथिकरीने आजनालोकोएकल्पव्यवहार
 मांपड्याथका महाकर्मउपारजेठे लोकनेविशेषरमीनाम
 धरावेठेअनेपोतपोतानामतनोममतकदाग्रहगेमृतानथिते
 थिपोतेपणअनताकर्मउपारजेठेनेसामानेपणअनताकर्मव
 धनोकारणीकथायठे माटेकल्पव्यवहार तथाअशुद्धव्यव
 हारनेविशेषरवरतववुनहि फकतएकरागद्वेषप्रमुखमद
 थइजायअनेआत्मस्वरूपनी उलखाणथतीजायएवोउपदे
 शकरवो तेथीश्रोतानुपणकल्याणथाय नेव्यक्तानेपणअ
 मलेखेआवेतेमपोतानेपण शुद्धव्यवहार तथानिश्रयमा
 रमणकरवु तेथीपोतेपुन्यनोग्राहिनथाय फकतएकपोता
 नीआत्मानी मुक्तिरूपकारजनोकरताथाय एविरितीसम
 जिनेजेचाळवुंतेनेचोथुमुत्तिधर्मकाहिये ४

हवेपाचमुतपधर्म केहेताजेतपकरवोते वेप्रकारेठेतेनो
 वीचारआगळनीर्जरातेत्वमां कहीशुं५ हवेछठो संजमध
 र्मसजमकेहेताजेआतमाने संवरभावमाराखवां एटलेष्ट
 ध्वीकायप्रमुखजीव अजीवनोजे संजमकेहेतां हणवान
 हीतथाजुठुवोलवुनही तथाचोरीकरवीनही तथामैथुनसे
 ववुनही तथापरीग्रहराखवीनही तथा पाचईंद्रीनेसवरवी
 तथाचारेकखांयनेटाळवुं तथात्रणदडथीवीरमवुइत्यादीक
 संजमनासतरसतर प्रकारघणैपकारे थायछेपरनुएसरवे
 वेहेवारनयमाठे शामाटेजेएकामतोअभवीतथा अगनानी

पणकरेछेमाटेएसंजमथी आत्मानुंसारनथी हवेजेआत्मा
 नुंसाररूपसंजमछे तेकहीयेछीये जेआत्माना गुणनहए
 वाशाामाटेजे एगुणनीमुख्यतानहोय त्यांसुधी मुक्तिनी
 आशानहीथायकदापीकोइकेहेशेके आत्मानागुणनेकोए
 हएवेतेनेकहीएकेजेपरभावमां धर्ममानीनेवेठावे तेआत्मा
 नागुणनाहएतावे तेपरभावकेहेतांपरजे जडतेनाकरतव
 नेधर्मजाणैछे तोजडतोजडनाधर्मनो करतावेपण कांइ
 आतमीकधर्मनो करतानथी एटलेजेटलावाह्य वेहेवा
 रपुन्यपापनीकरणीतथा वेहेवारसवरतथा वेहेवारनीर्ज
 राएसर्वजडनी करणीछेतेजडनीकरणीं ज्यांसुधीमांहेरहे
 त्यासुधीआत्मानुं रमणसुखेथायनही अनेआत्मरमण
 थयावगरधर्मकोइ दीनथायनही तेमाटेनीजस्वरूपनीरम
 णताकरवीने श्रीभगवतीजीनां॥आयासंजमे॥एवोपाठवे
 माटेआत्माछे तेजसंजमछे तथासतधरम सातमुंसतकहे
 तांजेजुठुनबोलवुंते जुठुछत्रकारिकरीने बोलायठेक्रोध१
 मान२ माया३ लोभ४ हास्य५ जय६ एठप्रकारिकरीनेजे
 मृखावचनकेहेवु तेनोत्यागते वेहेवारसतथयुं हवेनी
 श्रयओळखावीयेगीये नीश्रेसत्तनावेभेद आज्ञासत १
 वस्तुसत २ प्रथमआज्ञा सतकहियेगीये आज्ञाकेहेतां
 जेश्रीवीतरागपरमात्माए आज्ञाफरमावी तेप्रमाणेपरुप
 णाकरवीतेप्रमाणेजवचननुंउच्चारणकरवुंतेवीनाजेकरेतेने

केएश्रसंजतीवरतवालानयी एटलेश्रवरतीछे तोएपएस
 तपरुपकठे एवुकहेछेतेमहामरखावादिते शामाटेजेपोतेकु
 मार्गेचालेनेसामानिसुमार्गत्रतावे एवाततोभापणमांश्रावे
 नहिश्रनेतेधणीसमार्गवतावेतो. तेनेधनमलेक्यांयकीश्रने
 ज्याधननुंउपारजवुठेत्यामरखावादतोप्रत्यक्षठे श्रनेपरमा
 त्मानुएजवचतछेजेनिग्रथविनाविजानुंवचनश्रनर्थकारीहो
 य उक्तंच -- श्रीज्ञातातथा भगवतीप्रमुख वदूमुत्रनेविशे
 जेपाठछेतेलखीयेठीये॥समणसभगवहोमाहावीरस श्रते
 एधमसोचा निसमहठतुठाएः समणजगवमाहावीर ती
 खुतोश्रायाहण पयाहणकरीएकरीए. वदीश्रनमसीश्रएव
 वीश्रासीसदहामीणभते. नीगथपावीएण सदहेमाणेपती
 श्रमाणे रोएमाणेफासेमाणे श्रभुठीओचीणजंते नीगथ
 पावीएण एवमएभतेश्रवीतहमएइछींश्रमेचं. पडीइठीध
 मयइछींश्रंपडीइगीयंमय सेसाश्रोश्रनथमुवाश्रो॥इत्यादि
 कपाठ घणासुत्रनेविशेछे माटेनीग्रथनुंवचनसदहवु ते
 नोश्रर्थहवेसमणोजगवतकेहेता श्रमणजगवतश्री माहा
 वीरस्वामीनीपासे. जेजेपुरुपेधर्मसाभल्यो तेतेपुरुपनेहर
 खसतोपघणोउपन्यो रुडेनेविपेआणंदेघणोथयो तेणेउ
 ठीनेजगवतने श्रणप्रदक्षणादेइने. वादीनमस्कारकरीने
 विनयसहितवेहाथजोडीने एवुंकेहेकेसदहूछुंभगवंत एट
 लेजगवतपदश्रागल एपदमांसर्वेठेकाणेजोडवो हवेसद

हूं केहेतांजेमनेसरधावेठी एकनीग्रथनावचनउपरे तेनी
 ग्रथनावचननीप्रतीजछे तेजवचनमनेरुच्युं तेजवचनहूंका
 याएकरीनेफरसुं एजनीग्रथनांवचनकरवानेवास्ते उभो
 थयोछुं तेनीग्रथप्रवचननिश्चेछे एकोइकालेजुठुंनाथाय ए
 वचनअनंतइष्टकेहेतांवल्लभछे एहीजवचनवारंवारंहूएनेइ
 छुछु एहीजवचनइछुपहीछु अवरजेनीग्रथविनानांजेवच
 नते अनर्थनुंमुलछे तेहूनसदहूं जावतहूएनेइछुपहीछुनही
 इत्यादीकपाठेशाधु अथवाश्रावकनाअधीकारछे त्यांए
 लांब्याछे माटेत्यातोनीग्रथवीनानुवचनस्वपलाग्युंनही
 अनेअनर्थनुंमुलकह्युं अनेतमेतेनेसत्यपरुपकवतावोछो
 तेतमनेमोटुंअज्ञानदिसेछे शामाटेजेभगवाननी आज्ञाथ
 कीउपराठुंछे अनेजेप्रमाणेभगवाननीआज्ञाछे तेप्रमाणे
 वचनबोले तेनेआज्ञासत्यकहिये वस्तूसत्यकेहेतां जेद्र
 व्यगुणनेपरजाय जेजेनाछेतेतेमांकहे तेनेवस्तूसत्य
 कहिये तेनात्रणजेदछे द्रव्य १ गुण २ परजाय ३ हवे
 द्रव्यकेहेताजेआत्मद्रव्य अरुपीनिराकार तेनेकोइरुपी
 अथवामुरतिमाने तेनेवस्तुअसत्यथाय तथाआत्मानागु
 णजेज्ञान दर्शन चारीत्रप्रमुखछे तेथकीउपरांठापुन्य
 आश्रवथकीउत्पन्नथया लायकी चतुराइ प्रमुख तथाव्य
 वहारसंवरक्रिया तपप्रमुखंतथातेथकीउपरांठापापआश्र
 वनागुणतेजआत्मानाकरीनेमाने तेनेवस्तुअसत्यकहिये

केमकेतेजडनागुणआत्मामाछेनहीनेपुन्यपापआश्रवएतो
जडवेनेआत्माचितनछे माटेवेउनागुण भीन्नभीन्नजुदाजु
दाछेएवीरीतेमाने तेनेवस्तुसत्यकेहेवायतथा आत्मानाप
रजायजेखटगुणानी हानीब्रह्मीतथा अणअवगाहअव्या
घाघआदेदेईनेअनतापरजायछेतेथकीउपराठाजेवरणग
धरसफरसस्वस्थानजे आत्मानापरायमाणे अर्थवा
नरनरकादीकगतीजेपरजायमाणे तेपणवस्तुअसत्यवे

शिष्यवाक्य --स्वामीनरनरकादीक गतीतोसरवे
परजायमाणेते तमेअसत्यधर्ममांकेमकही.

गुरुवाक्य --हेभद्रजे नरनरकादीकगती तेजीवना
परजायमांगणीयेठीये एतेकर्मपरजाय आश्रीनेछेनेकर्मप
रजायवे तेजडछे माटेएअसत्यजछे स्वभावपरजायजेग
णवातेसत्यवेएटले सत्यधर्मकह्युं ७ हवेआठमुसोचधर्मक
हीयेछीये एटलेसोचकेहेताजेपवीत्रपणु तेपवीत्रपणुकेट
लाएकएम केहेछेजेजलतथा माटीतथादररुतथाअग्नी
प्रमुखथीपवीत्रथाय एवुकेहेतेअज्ञानीछे शामाटेकाईज
लप्रमुखथी पवीत्रथायनही एतोशरीरनेवाह्यथकीपवी
त्रकरतेपण अणसमजुनेमते पणसमजुनेमते थायनही
त्याकोइकहेशेके बहाजथकीपवीत्र केमनथाय तेतोधीवा
प्रमुखथकीथायछे तेनेकहीयेके जोएनाथकीपवीत्र थंतुहो
यतोकोईपुरुपनुमोहोहु एठुछेतेपुरुपनेमाटी प्रमुखमोढा

मांघसावीने पाणीनासोवसे कोगळाकरावीये पठितेघणी
 नामोढानोकोगलो बीजापाणीनाभाजनमां नंखावीयेते
 पांणीबीजा भाजननुंकोईपीये तेवारेकहेकेनपीयेएवुवोले
 त्वारेकहीयेकेशुंशुद्धयुं तेएटलाएटलापाणीना कोगळा
 कराव्यातथामाटीप्रमुखेकरीनेघसाव्युं तोयपणतेनामोढा
 नो कोगलोएठोनोएठोरह्यो त्वारेतमाराजशास्त्रनेवीपे
 पांचप्रकारनो सोचकह्योठे.

एकतोसत्यबोलेतेनेपवीत्रकह्योठे तथासर्वजीवनी
 दयापालेतेनेपवित्रकह्योछे तथापाचइंद्रीने जेपोतानेवश
 राखेतेनेपवित्रकह्योछे तथाक्षमासहीततपकरे तेनेपवित्र
 कह्योछेनेपांचमुजलपवित्रकह्युंठेमाटेजलथकीकांइपवित्र
 थायनहीतथाचारएसत्यवचनप्रमुखकह्यातेपणवेहेवारूप
 वित्रछे एकाइनिश्रेपवित्रकेहेवायनही तथाकोइकेहेशेके
 भगवाननुंनामलेइये एटलेमुखपवित्रथाय तथासनमांजग
 वाननुंस्मरणकरीये एटलेमनपवित्रथाय तथाकायायेक
 रीनेजगवाननीशेवाज्जिकरीये एटलेकायापवित्रथाय
 तेपणवेहेवारछे तेकांइनिश्रेनथी एघणीनेकांइपवित्रकेहे
 वायनही हवेपवित्रपणानीओलखाण करावीयेछीये जे
 कायाथकीपवित्रकोनेकहीये जेशुभाशुज्जआश्रवनुंकामक
 रेनही तेनेकायापवित्रकहीये तथावचनथकीपोतानेआश्र
 वल

तेइजीवनेवाधापीमाउपले एतत्तत्तत्तत्तो

ले तथा मनपवित्रकेहेता जेमननेविशे आहटदूहटध्यांनध्या
 यनही सदाय एकआत्मस्वरूपनोउपयोग तथाद्रव्यगुण
 प्रजायनीरमणता परनावत्यागी स्वनावभोगी एवीरीते
 जेमननेविशे ध्यानप्रवरतेतेनेनिश्चेसोचकहीये एटलेसो
 चधर्मदेखाण्यु हवेनवमुअकचनधर्मकेहेता जेसोनु १ रुपु
 २ तथात्राबु ३ तथाकलाइ ४ तथाजसत ५ तथासीसु
 ६ तथालोढु ७ तथामाणिक ८ तथाहीरा ९ तथापानुं
 १० मणी ११ तथापुखराज १२ तथालसणीया १३
 तथामोती १४ तथापरवालु १५ परमुख अनेकवस्तुतेप
 रीग्रहकहीये तेवस्तुनोजेनेत्यागतेनेअकचनधर्मकहीयेते
 सर्वेहेवारठे निश्चेयकीकोइवस्तुपर स्नेहनहीराखे स
 चीत अचीत मीश्रपदार्थ तेसचीतकेहेतांनरनारीउपरस्ने
 हनहीराखवो अचीतकेहेतां धनधान्यपात्रप्रमुखवस्तुउ
 परस्नेहनराखे मीश्रकेहेता गामनगरउपर स्नेहनराख
 वोएटलेस्नेहलता तेअभ्यतरठे तेस्नेहलतानो जेनेक्ष
 यउपसमथाय तेनेरागदेशनोक्षयउपसमथयोकहीये नेजे
 नेक्षयथाय तेनेरागदेशनोक्षयथयोकहीये एमजेनोरागद्वे
 शगयो तेनेअभ्यतरअकचनीकहीये तेनेनीग्रथपणक
 हीये एटलेअकचनधर्मनवसुंरुह्यु हवेदसमुब्रह्मचर्यधर्म
 कहीयेगीयेतेनानवप्रकारठे तेनीवीगत मन १ वचन २
 काया ३ हवेमनथकीपोतेमैथुनशेवेनही तथासेवावेपणन

हीतथासेवतानेचलोजाणेनही तथावचनथकीमैथुनसेवेन
 ही सेवरावेनही सेवतानेचलोजाणेनही तथाकायाथकी
 मैथुनसेवेनही तथाकोइपासेसेवरावेनही तथाकोइसेवतो
 होयतेनेचलोजाणेनही एमएनवप्रकारेब्रह्मचर्यपालेतथा
 बीजेप्रकारेपणनवजेदछे तथानववाकसहीतपणपालवुं ते
 ने ब्रह्मचर्यव्रतकहीये एटलेदसवीधजतीधर्म पणकहयुं
 हवेबारभावनानो अर्थलखीयेगीये एटलेजावनाछे ते
 जावरुपजछे शामाटेकेएनेविशे कशीवेहेवारथकीवस्तुक
 रवांनानथी एसर्वेआत्मथकीविचारवानुछे तेआत्मानेघणुं
 हीतकारीछे हवेप्रथमजावनाअनीत्यएवेनामे तेनोअर्थ
 कहीयेछीयेः

हवेजेपुरुपआत्माथीहोय तेनोएवोजावआत्माथकीउ
 ठेनेवारे एवुस्वरुपविचारिकेअहो ससारअनित्यठे एमां
 काइपदार्थरहेवानुनथि जेवोमाजनीअणी उपरपाणिनो
 विंदुवोकेटलीवारटके तेवोअथिरसंसारजाणवो तथाजे
 वोइंद्रधनुपचोमासामा आकाशेथायठे तेनोरंगकेटली
 वारटकवांनो तेवोआसंसारअनित्यजाणवो एटलेआस
 र्वेजेसंजोगसंसारनेविशेमल्योछे तेकांडरहेवानोनथित
 थाकरतव्यवस्तुजेटलीछे एटलीसर्वविनाशीकठे जेमवि
 जलिनोझकारथइने नाशथाय तेमएवस्तुसर्वनोनाशथ
 वानीठे जेमइंद्रजालथकी कांकरानोरुपिठकरे परतुएरु

पितृकाइकामलागेनंहि तेमआससारनुसुख एकांकराना
 रुपिआवरावरते एकांसदारहेनहि अथवाजेमस्वप्राने
 विशेशुचवाअशुचदेखे परंतुअहियांकाइशुच अथवाअ
 शुचनथि एतोजाग्योनथीत्यामुधिएवुठे जाग्योएटलेका
 इठेनहि एटलेतेस्वप्रानिवातउपरथी मनमाकाइहरखशी
 कथायनहि तेमससारनासुखदुखउपरथी हरखशोककर
 वोनहि एपणअनित्यपदार्थठे तथाजोवनपणअनित्यछेए
 पणच्यारदहाडानोचटकोकहेवाय जेमठार एटलेझाक
 लनोतरेपृथिवउपर केटलीवाररहे सुरजनउग्योत्यांसु
 धितेमएजोवनपणत्यासुधिरहेवानुं एपणझाझादिवशट
 केनहि तथाकोइरांकमाणससाथिस्नेहकरथी तेरांकवचा
 रीआपणुशंकारजकरवानोहतो तेमएजोवनथकीपणकां
 इसारुकारजतिपजेनहि माटेहेचेतनतुं ताहाराआत्मामा
 रमणताकर शामाटेकेएअनित्यपदार्थ एजोवनतेपामिने
 मदनकरवो तथाधनसपदाराज्वरिद्धि एसर्वेपणकारमा
 छे एतोजेवोएकसमुद्रनोकलालचनेनेक्षयथाय तेमएधन
 ठकराइआवेनेजायजेमचारुदततथावनपालत्रमुखनाद्रष्टा
 तजोजेजेएकभवभाकेटलीवारपाम्यानेक्षयथयोएवोएअ
 नित्यपदार्थछे एकोईनेत्यास्थीरथईनेरहीनथीजेवोसध्या
 नोरगतेसरखोएकपामेत्यारेवनेपरंतुएजरंगसध्यानोक्षण
 एकमाक्षयथईनेअधारुघोरथाय तेमएधनसपदाक्षणएक

मांवीणसीपणजाय एनोकांइजरुसोथायनहीजुओमुजजे
 वीराजातेनेपणअंतेभीखमागवीपडी अनेसुलीयेअपाणा
 तोएरीद्वीतोएयीठे तथाआजकोई शरीरनुरूप रंगघाटघ
 णोसुंदरसारीदीसे परंतुएनेपणकांईवीणसतां वारलागे
 नही केमकेजडनोस्वप्नावसडणपडणवीध्वंपणछे माटेए
 वाशरीरउपरमुरछानराखवी जोसनंतकुमारनामांचक्र
 व्रतीतेनुरूप सक्रीइंद्रेपण वखाण्युंनेदेवता जोवाआव्या
 तेसमेखेळजरिकाया हतीतोपणदेखीने भेचकथईगयाते
 हीजजेवखत सणगारकरी सजामांवेठोतेवारते रुपनर
 ह्युंतेदेवतानाकेहेणथकी तंबोलथुंकीजोयुं नेमांहेजीवडा
 दीठातेजवखत तेचक्रवरती अनीतसंसारजाणीदीक्षाले
 ईचालीनीकल्यो अथवाजेमकरितधर राजासुरजनुंय
 हणदेखीनेसंसारनेअनीत्यजाएयो तथाजेमकरकडुराजा
 बळदनेजरायेपीडयोदेखीनेकाया परमुखसर्वेअनीत्यजा
 णोतेमएसर्वेअनीत्यपदार्थउपरहेचेतन तारेकदीमुरछान
 राखवी तथामनुष्यनुं आवखुपणअथीरठे जेवोपाणीनो
 परपोटो क्षणएकमांनाशपामे तेममनुषनु आवखुपणस
 मंजवुंजेवोहाथीनो कानचपळतेवुं अथीरआवखुजाणवुं व
 लीवीचारिजोके अहोसंसारनेवीशे तीरथंकरकेवलीगण
 धरचक्रवरती वासुदेववलदेव ईंद्रदेवताआदीदेईने मोटा
 मोटाप्राक्रमीपुरुष तेपणकोईइहां अमरथईने रह्यानही

एसर्वेनाआवखा आवीगया एवुआवखुअनीत्य जाणीने
 तथाधनजोवन कायापुत्रपरिवारसर्वसजोरातथाकरतम
 वस्तुएसर्वेअनीत्यवे माटेतेउपरेममतानकरवीएकनीत्यप
 दार्थपोतानोआत्मा अचनासीज्ञानदर्शनचारीत्रनो युज
 तेनुअहोनीश स्मरणकरवुएथकीअवीचलसुखमजे ज
 न्ममरणनाफेराटले एवीरीतेपेहेली जावनाचेतनभावे १

हवेवीजीअशरणजावनाकाहियेगीये एटलेअशरणकेहे
 तांकोइशरणेराखवासमर्थनथी त्याआत्मानेएवीरीते भा
 वनाजाववीजोइये आआवखुंतोअस्थीर जेमहथेलीमाज
 लकेटलीवाररहे तेमएआवखुपणजाजीवाररहेनहि, नेस
 मेसमेआवखुंघटतुंजायछे डाह्योपुरुपहोय तेविचारीनेजु
 वै जेजेटलावर्पगया एटलातोमुवां एटले मुवाकेहेताजे
 फरीपाठनाआवे तेनेमुवांकहिये तेजुअजेवालअवस्थाने
 विपेजेवरणादिकहतु तेतरुणावस्थामानथी तथाजेबा
 लअवस्थानाजावहता तेतरुणअवस्थामानथी तथाजेत
 रुणअवस्थामावरणादिकहता तेवृद्धअवस्थामानथी त
 रुणअवस्थानाभाव तेपणवृद्धअवस्थामानथी तोजेआ
 गलगइ अवस्थानाजेजाव तेसर्वेमरीगयां एकाइहवेपा
 छांआवेनहि अनेजेरह्युआवखुवाकी तेपणसमेसमेघटतुं
 जायछे माटेहेचेतनतुचेतं केमकेकोइपुरुपजोदशगाउगा
 मतरेजायछे तोपणसाथेसवलराखेछे तोतारेतोलांबीवा

टेजावुंछे अने बीजीजग्यामांते संवलमलवानुनथी.

शिष्यवाक्यः—स्वामीतमेतो आश्रवग्रहणकरोगे जे संवललेवुतेतो पुन्य आश्रवठे.

गुरुवाक्यः—हे जद्र अमे आश्रव नथी के हेताने पुन्यरुपमा तुवधावतानथी परंतु अमे जे कहयुं जे संवल बांध ते ज्ञान दर्शन चारी त्रनुं आराधन करे तेरी द्दितने आगल चालशे अने एज सुखदाता छे जो आश्रव ग्रहण करवानुके हेता होततो पूर्व एवुतेके हेता के बीजीजग्योये ज्ञातुं नहि मले ते ज्ञातुं ती देवतामां तथा त्रीजं चमां पणठे.

शिष्यवाक्य—के जेतमे देवता त्रीजं चने विषे पुन्यनुंकार एदेखा म्युं तो शंत्यां ज्ञान दर्शन चारी त्रनुं आराधन नथी.

गुरुवाक्य—देवताने विषेतो समकित सुधी छे अधीक आराधन ठे नहि तथा त्रीजं चने विषे देश वरती पणाना अगी आरधत आराध्यानो अधिकार ठे परंतु हाल कालमांतो कोइ एक अक्षर नो पण आराधक देखातोनथी कदापि कोइ कहे शेके अढी द्वीप बहारहशे तेवाततो सर्वथा खोटी ठे अढी द्वीप बहार चारी त्रधर्म छे नहि कदापि कोइ के हे शेके तिर्थ करके वली विचरे त्यां हशेतो तेवातनी अमथी नातो कहेवाती नथी परंतु डाह्या पुरुपने विचारवाजे वीवात छे केमके जो एक खेतरमां सोकलशीदाणानिपजे तो जो डेला खेतरवालाने पाशेर पणानिपज्या जोइये परंतु जो म्लेखेतरमांतो एकदाणोनिय

जतोदीठोनहि माटेढाह्याहोय तेविज्ञारीजोजो एटलेते
 स्थानकनेविपेकांडज्ञान दर्शन चारीत्र एत्रणपदनुआरा
 धननथी अनेसर्वत्रतीचारीत्रधर्मतोमनुष्यनेविशेछेवीजी
 जंग्योएछेनहि तेमाटेअमोएकहयुके वीजीजंग्योएछेनहि
 माटेएसवलइहाजमलगे माटेजेमभाथुवधाय तेमवाधी
 लेजो तुपरमाढकरीगतो आवखूतोसमेसमेचाल्युजायछे
 अनेकालतोकोइनेछोमनारोनथी जेमवकरानेवाघपकमी
 नेलेइजाय नेवकरुवागरडापाडतुजरहे तेमइहांकालले
 डजशे तेवखततुजथीकाइसधावानुनथी अनेकांडएवोजो
 रावरनथीके तनेकालपासेथीछोमावे एकशरणफकतपो
 तानाआत्मानुछे.

शिष्यवाक्य-शरणतोअमोये च्यारसांजल्यांवे तेमध्ये
 आत्मानुशरणसाभल्युनथी

गुरुवाक्य-च्यारशरणातेसांजल्या तेतुसांभलजेप्रथ
 मअरीहतनुशरणकहियेठिये तेअरीहततोशुद्धद्रव्यार्थ
 कनयेजोतातो आत्माएजअर्गहंतछे कदापिकोइकहेशे
 केअरीहततोजेकेवलिययातेनेकहिये तेनेकहेवुके तेकहि
 एवातठिकठे परतुएवभुतनयेकेवलि अरीहतठे तेशरण
 करवाजोगछे परतुतेकाइअहिया आफोआवीनेहाथआपे
 नहि नेजन्मजरामरणना फेराटलेनहि एतोआपणोज
 आत्माआत्मस्वरुपनेविशेजरमशे अनेपोतानाकर्मरुपश

द्रुनोक्षयकरंशेतेवारेपोतेजकेवलज्ञानपामिनेअरीहंतथशे
 माटेएआत्मानुं समरणेतेसत्यछे नेजेकेवलीअरीहंतवि
 चरताछेतेनुंशरणं तेव्यवहारछे तथाविजुसिद्धेनुंशरणते
 पणठिकेजेछे व्यवहारछेशामाटेकेतेमने फरिथीजन्मले
 वोनथीतारेएअहियाआविने आपणेनेशीरीतेतारशेतथा
 मेशरिनीगोमेएवाबोल आपणामांनथी जेजगदाननीअ
 कललीलाछे तेएमनीइच्छाथशेत्यारेताणीलेशे तेतोरीत
 जैननीठिनहि तथाकोइकहेशेके तनानतारीआणं एपाठे
 तेनुकेमतेनेकहियेकेएपाठछे तेउपमावातठे पणकांइतार
 वासमर्थनथी तथाशास्त्रेएवंपणकहद्युठे जेअरीहंतभव्य
 जिवनेतारवासमर्थनथी मार्गदेखाडवानाकुशलठेतोअरी
 हतसमर्थनहि तोसिद्धतोसमर्थशेनाहोय एजपरतुसिद्धप
 दतुआत्मानेसमज अतिशुद्धव्यार्थकनयेकरीने मुलस
 तास्वरुपआवरणना अभावथीजाइगतो तारोआत्मासि
 द्दपरमात्माठे तोतेजशरणथकीताहारुकल्याणथशे तथा
 त्रिजुसांधुनुंजेशरणं तेसाधुजैनशुद्धमार्गना चालवावा
 लाएटलेआचारजउपाध्यायसर्वसांधुमां आव्यातेशुद्ध
 मार्गवालातेनुंशरणजेकरीये तेपणपूर्ववतव्यवहारछेअ
 हियांकोइकहेशेकेएतो उपदेशनादातारछे तेसमकित
 ज्ञानचारित्रपमामे तेनेव्यवहारकेमकह्यो तेनेकहियेकेस
 मकितज्ञानचारीत्रपमाडे तेकांइवहारथीआवतुंनथीतेतो

आत्मामाथीप्रगटथायछे परंतुएवाउपदेशनादातारशुद्ध
 मार्गनादेखाफनारामाटे तेनोउपगारघणोमोहोदोछेकदा
 पिश्रसंख्याताभवसुधी तेनीशेवाभक्तिकरीये तोएपणगण
 वंशीगणनथइये परंतुउपदेशतोतेसर्वेनेदेवे पणतेनिमित्त
 कारणरुपछेपणउपादान कारणरुपगुरुतोआत्मतेजोपो
 तेसवलोप्रणमे तथाधर्मनोखपीहोय तेनेउपदेशगुणला
 गेपणजेकांडमिथ्यातनाचरेला बोहोलसंसारी तथाक्र
 श्मपक्षीयातेवाजिवोनेकांडउपदेश लागेनहि जेमजमा
 लीनेजगवततथागौतमप्रमुख साधुपणघणासमजावना
 रामल्यातोपणतेकाइसमज्योनहि तोउपदेशनादेनारनुंशु
 वलेतथाअनदरशनीप्रमुख घणाजिवजगवंतपासेआवि
 नेप्रश्नपुछ्याने प्रश्ननाउत्तरजगवंतेदिधा पणकांडतेणे
 मान्यानहि तोजगवतथकीतितरद्यानहि तेआधिकारश्री
 भगवतीथकीजाणजो माटेपोतानोआत्मा सवलोप्रणमे
 नेपोतानुधर्मप्रगटकरवाचाहे तेधणीधर्मपामे आत्मातेज
 साधुछेतेजगवतीजिमाकह्युंछेमाटेतेनुजसमर्णकरवु
 हवेचोधुजेकेवळी नाखीतधर्मनुंशरणकहेताजे केवळीए
 नाख्युजे देशवरती १ सर्ववरती २ तथाबीजेप्रकारेप
 णवेजेदकह्याछे श्रुतधर्म तथाचारीत्रधर्म तेनुजशरणकर
 वुतेवेहेवारछे माटेकेवळीएनाख्युंएवंजेधर्मजेवस्तुनोस्वा
 त्ततेनुंजशरणकरवु तेनिश्रेछेएटलेवीतराग भाखीतजे

धर्म तेऽत्रात्मस्वरूपनी रमणतापरजावनो त्यागतेहीजश
रणतेसत्यछे एटलेऽसंसारनीमाहेलीकोरे पोतानाज्ञान
ध्यानविनाकोइराखवासमर्थनथी एटलेजन्मजरामरणना
फेराबीजाथकीटलेनही जेमश्रीगौतमस्वामी भगवान
श्री वीरस्वामीनुनाम तथाशेवाभक्तिअहोनिशकरताहता
नेजेवारेभगवानश्रीमहावीरनुनीरवाणथयुतेवारेस्वपरनी
रमणताथइनेभगवतथकी पोतानोऽत्रात्मापोतेजुदोदीठो
तेवारेरागद्वेश मुकीनेस्वसत्तामांप्रवेशथयो एटलेशुकल
ध्यानपणऽत्राव्युं तेथीकेवलज्ञानपांम्याअनेमोक्षपणगया
नेजोभगवानवीरस्वामी २ करताहोततोत्रणकालमांप
णमुक्तिथातनही माटेशरणतेपोतानाऽत्रात्मानुं तेहीजस
त्यठे बाकीसर्वेव्यवहारछे तेमाटेहेचेतनपोतानाज्ञानद
र्शनचारित्रनी रमणताकरवीतेथकी संसारनोपारपामी
श अनेजोतुनहीकरेतोऽसंसारमां तनेकोइराखवासम
र्थनथी अनेतुजेऽसंसारनी मोहजालमांगुथाणोछेतेमो
हजालमीथ्याखोटीठे एसर्वेऽत्रालपपालफोकटनोठे अंसं
सारनीमायासर्वेजुठीजाणवी तेअमेसंक्षेपथीकहीयेछीये
मातातथापिता तथास्त्री तथापुत्र तथाजाइ तथाजावन्स
गांवहालाकुटंबपरीवार एसर्वेस्वार्थनुंसगुछे एमांकोइता
रुनथी अनेरोगादिकऽत्रावीने उपनेथकेअथवाऽत्रावखुंऽत्रा
वेथकेतेकोइसगांवाहालां छोडाववानेसमर्थनथी रोगको

इथीलैवायनही तथाकालथकीपणराखवाकोइसमर्थनथी
 अनेवेदनापोतेभांगवे नेमारुमारुकरतोजाय तेवारेनरका
 दीकगतीनामहादु खभोगववापडे अनेजेपापकरिनेपैसो
 जेकमाणातेकेमलाहोयतेजोगवे माटेपापजेवाध्युहोयते
 जोगववुपडे एसज्जननीपणकारमीसगाइछे एकाइआ
 आपणादू खनोविजागीनथाय.

तथापीजोने प्रत्यक्षपणेजे दुवारकाजेवीनगरीकश्र
 जेवोवासुदेव बलचद्रजेवोवलदेव अनेजगवान नेमना
 थजेवातीरथकर तेनेमाथेघणीतोयपण जेवखतधीपा
 यनदेवेदुवारकानोटाहकर्योतेवारे कोइथीरखाणुंनही अ
 नेसर्वनगरीनोक्षयथइगयो अनेक्रश्रवलभद्र बेजाइमा
 तापीतानिलेडनीकलवामाहचुतोयपणलेडनीकलायुनहीते
 पणएनगरीजेगाक्षयथइगयांती कोनुशरणकरवुकेजोवासु
 देववलदेव सरखामहाजोदा तेथकीपणेपोताना मावीत्र
 नेरखाणानही नेमहाकगालभीक्षुवतवन्नेजाइचालीनिक
 ल्या उपनकुलक्रोमज्जदवनापरीवारनोधणी तेनेपणएश्र
 वस्थाथइ तेसर्वपोतानाकृतकर्मपोतानेनेडेछे जुवकैकोइ
 नुशरणइहाखपजाग्युनहि अनेतसजेटलुंतोतेचारशरण
 करवामासमजताहशे गामाटेकेज्यांश्रीजगवाननेमनाथ
 स्वामीनोविहारघणाफेराथयोछे तथातेक्षेत्रेसाधुसाधवी
 नोविहारपणघणोछे माटेतेणेशुअरीहताटिकशरणनहि

कस्यांहोय परतुकोऽधीरखाणांनहितथारोहिणी देवकी
 प्रमुखेतोतिथकरगोत्रवांधेलांछे तोतेनेशुंसमजनहिपडी
 होय परंतुपोतानांवाधेलांजिकर्मतेपोतेजन्नोगये एकोइथ
 कीदूरथायनहि एवुजाणीनेआत्मधर्मनीखपकरवी तथा
 नवनंदप्राफलीपुरमांथया तेनेनवडुगरीतधननीसमुद्रमां
 करावी तेधनत्यांरह्यु नेपोतानेकालखाइगयो माटेधना
 दिकवस्तुकोइशरणभुतथायनहि तथासज्जोमनामाआठ
 मोचक्रवर्तिछखडनोजोक्ता जेनीपासेपचीशहजार देवता
 शेवामांहता तोयपणसर्वेसेनापरिवारसहित समुद्रमां
 डुब्यो पणकोइराखीशक्युनहि आवखुंआवीरह्यु त्यारे
 देवपणनाशीगया माटेआसंसारएवोशरणरहितछे माटे
 तेसंसारनेविपे मुरछाराखवीनहि शामाटेकेजन्मजराम
 रणसदायवासेलागीरहेलाछे तेकोइनेठोमतांनथी तोत
 नेकेमठोमीदेशे तेमाटेतुंतारास्वचाविक धर्मनेविपेस्थिर
 थापरभावेदुरकर जेमताराआत्मानुकारजसरे एजएक
 शरणभुतठे बीजोकोइसंसारमां शरणेराखनारनथी २
 हवेत्रीजीसंसारभावंनाकहियेछिये एटलेमंमारनुंरुप
 केवुछे तेसर्वेविचार्युजोडये प्रत्यक्षएवधीवरतुकारमीदी
 सेतेकेजुठे आसंसारनेविपेआपणोजेचेतन अनंतोकालय
 यापरिभ्रमणकरेतेतेसर्वकर्मनेवशरह्योथको एटलेकर्मकेयां
 जोरावरछेके नलाभलामुनीनेपण

१०० गुणठाणे

थोपाठानास्वीश्रापेते नैनितनवासंसारमारुपग्रहणकरावे
 छे एटलेविविधप्रकारनुनाहकजीवपासेकरावेते माटेश्रा
 वीमनुष्यनोभव सुगुरुनीजोगयाइपामीने जोकांइधर्मनी
 समजतनेपडीहोय अनेजोधर्मनोखपहोय अनेअनेकवि
 धनाटकेसंसारमांकरचा तेथकीथाक्योहोयतोतुंआत्मस्व
 रुपनीखपकरहवेतेपुर्वेनाटककर्तुं तेजवनोसंक्षेपदेखाडिये
 छियेप्रथमतोअव्यवहारराशी नीगोदमाहतोतेकोडअकाम
 निर्जरांनाजोरथीव्यवहारराशीमाआव्योतोयपणअनंती
 वारसुक्ष्मनीगोदमांगयो तथावादरनीगोदमांपण अनंती
 वारगयोतेमजप्रत्येकनीगतीनेविशेषण पृथिवीकायसुक्ष्म
 तथावादरे अपकायसुक्ष्मतथावादर इत्यादिकचारेगती
 नेविशे अनताकालथयांतुंनटकेछे एवीगतीकोइनथीकेतुं
 तेगतीनेविशेनगयो तथाएवोवरणगंधरस फरसरुपश
 व्द स्वस्थानतुनपास्यो एवकोइदिसतुनथी सर्वेपुद्गल
 नाप्रमाणुतुपामीचूक्योबे तथाचौदराजलोकनेविशे एवो
 कोइआकाशप्रदेशनथीजे तुफलाणाआकाशप्रदेशे ज
 न्मतथामरण कर्याविनावाकीरह्यो तेमाटेअनताअनंता
 पुद्गलपरावरतनथया शुभाशुभआगेभोगवतां तथाज
 न्ममरणादिक दू खसेहेताथकागया तोएपणतनेहजूकां
 इ ससारनोअपलागतोनथी तोएजोतांअहोचेतन तारु
 घणुकठोरपण्णेअनेकोणएसंसारमासुखीयोथयोजेणेएस

सारछोड्योतेसुखीआथया जुठथावचापुत्रमहारिद्विनो
 धणीबत्रिशस्त्रेउजेनेछे, तेभगवाननेमनाथस्वामिनी दे
 शनासांभलीनेसंसारखोटोजाएयो, नेसंसारथकीविरक्त
 भावथयो तेसंसारगोडीचारित्रलिधुं पोतानाआत्मानुंशुक
 लध्यानधाइतेकेवलज्ञानपामिने मोक्षेगयातेसुखीयाथ
 यातथाश्रनाथीमुनीसंसारथकीरोगनुकारण पामिनेविर
 क्तथयात्यारपठीश्रेणिकराजामल्या तेवारैघणुकसंसारनुं
 सुखआपवानुंदेखाम्युंतोयपण तेपासमांपड्यानहिनेसा
 मुश्रेणीकराजानेसमकितपमाड्यु तेधणीसुखीयाथयाव
 लीएसंसारनेविशेजे सगावहालाठे, तेनोपणनेमनधीजे
 एनुएजसगपणरहे' एकएकजिवसाथेश्रनंतांसगपणथयां
 तेसिद्धांतमाकहयुठे तथाविवरासहितजोवुंहोयतोनुवन
 ज्ञानुकेवलीनाचरीत्रमाजोजो, तथाजसोधरतथाजसोध
 रनीमातातथाजसोधरनीस्त्री, तथाजसोधरनाठेकरानांस
 गपणअन्योअन्यययां, तेजसोधरनाचरीत्रथकी जाणजो
 तथाश्रीरिखनदेवस्वामीने, श्रीश्रांसकुमारनां नवभवनां
 सगपणजुदीजुदीरितथीथयां तेसर्वेश्रीरिखनदेवस्वामी
 नाचरीत्रथकीजाणजो, इत्यादिकघणाशास्त्रनेविशे घणा
 जिवोनाअधिकारमांसगपणनोनेम रहेतोनी वहुविप
 रीतसगपणथायछे, तेमाटेएवाश्रसारसंसारनुंस्वरुपवि
 चारीनेजेमएसंसारथकीछटवानो तिसारुकरनो तेसंगपण

थकीछुटवामा एकज्ञानदरशनचारित्रएजसुकारीवे तेपो
 तानाआत्मामांजठे तेनेप्रगटकरवु तेशाथकीथायकेजोसु
 गुरुस्वपरसमयनाजाण आत्मज्ञानीएवापुरुपनी शेवा
 करीनेतेनीपासेअध्यात्मग्रंथ तथाद्रव्यानूजोगनाग्रंथसां
 भलेतेसाजलवाथकीतमने ज्ञानप्रगटशेनेज्ञानयकीविज्ञा
 नप्रगटठो जावतमुक्तिमलशे संसारनोठेहआवशेसर्वकर्म
 नीनाशथशे अनतसुखनाविभागीथशो एविरीतेसंसार
 जावनाजाववीएत्रिजिजावना.

हवेचोथीभावनाएकत्वकेहेतां एकाकिपणेछे एटलेआ
 संसारनेविपेपुर्वेकह्या जेजवातरगतिआडिकनेविपेकर्या
 पणत्याएकाकीत्यांकोइजीवनोसहचारीहतोनहि जीवए
 कलोसुखदुखसर्वजवनेविपे भोगवेछे तेमाटेहेचेतनअनं
 तोकालएवोएकाकीपणेथयो तोयपणहजीतुममताठाम
 तोनथी हजीतुजाणेछेके सर्वसंसारमांवस्तुठे तेमारीजठे
 एटलेधनधानपुत्रकलत्र सज्जनसबंधीतुमारुमारुकरीर
 ह्याठे पणतेकोइतारुनथी तारोतोतुंहेचेतनएकजठे अने
 जोप्रत्यक्षपणेएसर्वससारीमल्या तेसर्वस्वार्थीयांछे स्वा
 र्थपुरोथाय त्यासुधीएसर्वेसगाजाणवां स्वार्थपुरोनेहियां
 यतोएजदुश्मनजाणवा अनेतहारुअहियांकोणछे तुज
 मोत्यारेपणएकलोहतो तेवारेकांइसगांवहोलां तथाधन
 मालसाथेलेइनेआव्यानहोतो तथाजइशतेवारेकांइसाथे

लेइनेजवानोनथी तेसर्वेसगांवहालांधनमाल अहियांप
 ड्युरहेशेनेतारेएकलानेजवानुंठे माटेखोटीममताशावा
 स्तेकरेठे तेकरतांप्रत्यक्षविचारीनेजो जेमोटा मोटाचक्रव
 र्तीलेपणगेनीनेगया एटलेब्रह्मदत्तनामा चक्रवर्तीठखंमना
 राज्यनोचोक्ता चौदरत्ननवनिधान चोसटहजारअंतेउ
 रेइइत्यादिकसर्वचक्रवर्तीनीरिद्धिनेविशे अत्यंतमुरछीतह
 तोनेचित्रमुनिये घणोउपदेशकरचोहतो एपणतेणोमान्यु
 नहिउलटोतेनेसंसारमां नाखवानोउद्यमकरचो पणते
 तोआत्मज्ञानीपुरुष तेसंसारनेप्रत्यक्षजुठोजाणेठेतेसंसा
 रमांकेमपणेअनेब्रह्मदत्तने उपदेशनलाग्योतेवारेमुनीवि
 हारकरीनेगया अनेतेब्रह्मदत्तचक्रवर्ती संसारनासुखनो
 अत्यंतरागीतेजन्ममां आंधलोथयो नेअंतेमरीनेसातमी
 नकेगयोपणकोइरीद्धिपरीवारकोइसाथेगयोनहितथाराव
 णलंकाधिपतित्रणखंडनुराजजेनेघेर - महाअभिमान
 नोभरेलोएवोजेकोइपुरुष तेपणअंतरणसंग्रामनेविशेम
 राणोअनेमरीने नकेगयोपणएरीद्धिपरीवारकशुएखपला
 ग्युंनहि माटेएवोसंसारअस्थिरछे नेआपणुकोइनथीआप
 णोतोएकचेतनठे बाकीसर्वेस्वार्थनुंठे जेमएकत्रक्षउपरसां
 जपडेहजारोजनावरजेगांथाय अथवाकेटलाएकमांहेमा
 लाकरीनेरहेताहोय पणजेवारेएत्रक्षनेमाथे आपटाआ
 वीनेपणेएटले...गे अथवाकोइकापवाआवे तेवारेसर्वे

जानवरमुकीनेनासीजाय एमजश्र.संसारनेविशे जिवने
 स्वार्थहोय त्यासुधिसर्वसगुठे पणआपटाआवीपमेतेवा
 रेकोइजलुनथाय तथाआवखुआवीरहे तेवारेकोइराखे
 नहि माटेआपणेएकलाआव्यानेएकलाजवु तेससार
 उपरखोटीममताशावास्तेकरवी जेमूनमीराजापोतनाग
 रीरनेदाहज्वररोगउपन्यो । तेवारेस्त्रीउवावनाचदनघस
 तितेचुफानोखमखडाटघणोयतो शामाटेके एकहजाररा
 णीहती तेसर्वेघसतीतेपरधाननाकहेणयी श्रकेकीचुफीरा
 खीतेयीराजानेसुखउपज्यु पछीपरधाननाकहेणयीराजा
 नेमालमथयुकेराणीए श्रकेकीचुफीराखीठे तेथीखलभरा
 टनयीमाटेएकाकीमा सुखवरतीछे एमविचारीमनसाथेए
 वोनिश्रयकरयोकेजोमने रोगमटेतोहूएकाकीविचरुते
 मजप्रजातेरोगमटयोनेचारीत्रलेइ । । पा । ।
 ल्यो सर्वपरिवारफिकोथइने उभोरह्यो तेवारेगामंम

काग्रपणुमुक्तिने विजामाकेमजलेछे तेदारैचोथाप्रत्येक
 बोधेत्रिजाप्रत्येकबोधनेकहयुं तुवलीएनामाकेमपेसेतेतु
 तारास्वभावमारम्य तेदारैचारेत्रत्येकबोध एकत्वजावमां
 रमणकरवालाग्या तेथीकेवलज्ञानपाम्या तेअधिकारप्र
 त्येकबोधनाचरीत्रप्रमुखघण्टेकाणछे

‡ एमएकत्वजावआत्मस्वरुपविचारवु इहांगुणपरजाय
 पणजुदानपाम्वा गुणपरजायते तेद्रव्यमांजछेअनेगुण
 परजायद्रव्यविनाशानाहोय अनेगुणपरजायविनाद्रव्य
 पणनहोय तेद्रष्टातेकरीनेउलखावीयेछीये जेघटनेघटनो
 गुणजलधारणपणुं तेकांइजुदूनथीज्याघटछे त्याजलधार
 णकरशेज ज्यांजलधारणत्याघटछेज माटेएद्रव्यनेद्रव्य
 नोगुणतेभेगोजते त्यांघटनेघटनापरजायजेरक्ततत्वादी
 कतेपणकांइजुदानथी ज्याघटछेत्यांवरणछे नेवरणछेत्यां
 घटते तेमजद्रव्यनेविशे द्रव्यनोपरजायजुदानथीएटले
 आत्मातेद्रव्यज्ञानादिक तेगुण तेकांइआत्माथकीज्ञाना
 दिकगुणजुदानथी नेजोज्ञानादिकगुणजुदा कहियेतोआ
 त्माशानेकहिये माटेआत्माएज्ञानादिकगुण नेज्ञानादिक
 गुणतेआत्मा तथाआत्मानेआत्मानांगुणपरजायजुदान
 थी माटेगुणपरजायसहितआत्माजेमपटनेपटनुंश्वेतप
 णुतथाआधाराआधेपणुतेकांइजुदुनथी एत्रणमलिनेएक
 वस्तुथाय कदापीत्रणमांथीएकेनहोयतो एवस्तुपणनहो

यत्रहियाउपनयजोडियेछिये जेमपटतेआत्मानेठामेने
 आधारआवेपणुते ज्ञानादिकगुणनेठामे नेश्वेतादिकतेप
 रजायनेठामे तेजेमत्रणमलीनेएकएक वस्त्रथयुं तेमत्र
 हियांपणगुणपरजायसहितआत्माथाय एवीरीतेविचार
 एकत्वभावनीकरवो तेकेवलज्ञानदातारठे शामाटेकेए
 शुद्धध्याननाविजापायानुलक्षणठे एटलेशुद्धध्याननेप
 हेंलेपायेतोनेदज्ञानतथानेदाभेदज्ञानछे तेथकीएकलामो
 हनी कर्मनोनाशथाय पणकेवलज्ञाननपामे नेशुकल
 ध्याननोविजो जेपायो एकत्वभावठे नेअनेदज्ञानठे तेथ
 की त्रणकर्मनोनाशथाय ज्ञानावरणीदर्शनावरणीअंत
 रायएत्रणकर्मनो क्षयथयायीकेवलज्ञान केवलदर्शनप्र
 गटे एवोएकत्वभावनानेविशेमाजरह्योठे माटेएकत्वभाव
 नासंदायनिरतरभाववी एभावनाभावतांथकांअनंताक
 र्मनिर्जरेअनेमृक्तिढुकडीआवे एवातमांशकाराखवीनहि
 एचोथीभावनाकहि हवेपाचमीभावनाकहियेठिये.

तेअनित्यभावनाठे एटलेअनित्यकेहेता सगावाहालां
 सज्जननोजेस्नेहतेसर्वेअनित्यठे अनेएस्नेहनाराखवाथ
 कीजीवभवसमुद्रनेविपेडुवेठे अनेअनंताजन्ममरणकरेछे
 अनेअनतुदुखभोगवेठे एमविचारीने सगांवहालासज्ज
 नउपरथीस्नेहभावतजवो केमकेएममतारुपमाकणी स
 र्वेनेखाइगइछे नेआपणनेपणअनंतोकेकालथयांरोलेछे मा

टेएममताडाकणीनेघेरथकीकहाप्त्वी अनेजेसज्जनसंबंधी
 मल्यांछे तैस्वार्थनांसगाठे पणतारुएमांकोइठेनहि तुं
 पणएमांकोइनोनथी सर्वसंजोगेमली विजोगेजाशे जे
 मपथीजननोमेलोकेहेतां जेमकोइकधर्मसलानेविपे रस्ते
 जतारात्रत्यांरह्यां बीजांपणदेशदेशनांपंथीआवीनेउतर्यां
 छे तेनीसाथेप्रीतिबंधाणी तेप्रजातनोकालंथयो त्यारे
 सर्वसर्वेनेमार्गेचालीनिकल्यां हवेएप्रीतिनोनिरवाहक्यां
 करशे तेमआजीवइहांथकी परलोकगयेथके एसगांवहा
 लानोस्नेहनोनिरवाहक्यांकरशे माटेसर्वेअनित्यपदार्थ
 छे अथवाजेमतिर्थनेविशे शंघप्रमुखमलेछे पछीतेमाकेट
 लाएकजीवपुन्यउपारजे नेकेटलाएकजीवपापउपारजे ए
 मनफोटोटोलेइनेसहूसहूनेमार्गेपाछाजायतेमआमनुष्य
 नवरूपित्तिर्थ तेनेविपेआजीवरूपित्तसंघमल्योछे तेमां
 कोइकजीवतोवस्तुधर्मपामीनेज्ञानध्यानकरे करीनेसर्व
 कर्मखपावीनेमोक्षजाय अथवाकोइकजीव पुन्यउपार्जिने
 देवादिक्शुभगतीमांजाय अथवाकोइकजीवपापउपार्जि
 नेनर्कादिकगतिमांजाय पणकोइस्थिरजावतो अहियांर
 हेवानोछेजनहि अनेजेसज्जनसंबंधी जोस्वार्थतेनोपुरोन
 थायतो तुरतछेहदाखे जेमपरदेशीराजाने सुरीकंतारा
 णीएझरेदेइनेमारीनांख्यो तेअधिकाररायपसेणीथीजो
 जोतथाब्रह्मदत्तचक्रव्रतीनीमाताचुलणीजेस्वार्थपोतानोन

सरतोदीठो त्यारेलाखनामेहेलकरावीने दीकरावहूनेमां
हेलीकोरमुवाप्त्या नेतेमेहेलसलगावीटीघो पठीतेब्रह्म
दत्तनुआवखुहतु तोसलंगमांथडने जीवतोनिकल्यो परं
तुमातानोस्नेहपणएटलोजछे माटेसंसारअनित्यठे तथा
जुवोश्रेणीकराजापोतानोपुत्रकोणीकनोअंगुठो छमाससु
धीमीहोडामाराखीने, लोहीपरुचुस्यु अनेकोणीकनीमा
ताचेलणाने एपुत्रजीवतोरारखवोजनहिहतो। पणश्रेणीके
जीरावरे तेपुत्रनेउछेरयो तेजपुत्रेपितानेकष्टपजरमाघा
ल्यो नेदीनप्रतेपाचसेपाचसेकोरडामारे जुवोएसंसारनुं
सगपणएवुअनित्यछे, एसर्वेस्वार्थनुसगुठेतथामरुदेवामा
ताजेवारे रीखवदेवस्वामी दिक्षालेइने जालीनिकल्या
त्याथीमाडीनेएकहजारवर्षसुधी मारोरीखव २ करीने
आखेआधलाथया तेसर्वेस्नेहनाफलजाणवा जेवारेजग
वंतकेवलज्ञानपाम्या तेवारेभरतवादवागयो तेवारेमा
तानेपणसाथेतेझीगया तेहाथीनीखधेवेठाथकाजजगवंत
नीरिद्विसंपदादेखीने स्नेहटुटीगयो विचार्युजेहूरीखवरी
सवकरता आधलीथइनेरीखवतो आटलीरिद्विजोगवे
छे नेमातानेसंभारतोनथी तोकेनोरीखवनेकेनीमातासहू
सहूनाआत्मानुसरीखछेएमअनित्यभावनाजावतांथकाअ
तघडकेवलीथइनेमोक्षेगया तेफलतेअनित्यभावनानुतथा
श्रीगौतमस्वामीत्रीशवर्षसुधी, माहावीरस्वामीनीसेवा

मांरह्या अनेनगवानउपर घणोस्नेहरह्यो तेथीकरीनेके
 ब्रलज्ञानपाम्यानहि तथाक्षपकश्रेणीपणआवीनहि जेवा
 रेनगवाननिरवाणथथा तेवारेएवीभावनाथइजे केनावि
 रनेकेनाकुविर, विरनाआत्मानुकारजकरीनेगया अनेतुं
 फोगटविरविरपोकारेछे तेमातारुशुबल्यु तुंताराआत्मा
 नुंकारजकर एमअनित्यजावनाजावताथका केवलज्ञान
 पाम्या एमवीजानेपणअनित्यजावनाभाववी तेथकीआ
 त्मानुकारजथाय एटलेएपांचमीभावनाकहि.

हवेछष्टीभावनाअसुची नामेकहियेछिये एटलेअसुचीके
 हेताअपवित्रवस्तुनेविचारवी एटलेतेअपवित्रपणुंशाथकी
 पामेठे तेकहियेछिये जेजीवमोहनेवशपडयोथकोकर्मवांधे
 तेथकीमनवशपणनरहे अनेमनवशनरहे तेवारेमनजोगथ
 किकर्मघणांवाधे तथामनवशनहोयतोइंद्रिउपणजोरघणुं
 दाखवे अनेइंद्रिउनापरिवलथीकरीनेजिवप्रमादमांपडेने
 प्रमादमापडयो एटलेतेनेज्ञानध्यानतोहोयजनहि तेनेतो
 इंद्रिउनापोपणनोजविचारअहोनिगरहे तेथीजिवअनंतां
 कर्मअशुनउपारजे अथवाकटापिकोडशुभउपारजे परंतु
 अतेएकर्मबंधकहिये तेकर्मनाजोरथीकरीने जिवनरका
 टिकगतिनेविपेजइनेउपजे तोत्यांतोरुधीरमासनोकरद
 मथइनेरह्योछे तेसदायछेदनभेदनठे त्याअसुचीनुंशुकेहे
 वु अथवामनुष्यअथवात्रिजं चनीगतिनेविशेआवे तोत्यां.

नेजाणवी नपुशकनेछसेनेएशीनाडीहोय.

हवेशरीरमा धातुप्रमुखनुंप्रमाणछे तेकहीएछीये शरीरमध्येरुधीरनोएकहामोहोयनेमासनोअमधोहामोहोयअनेमाथानोभेजोएकपायोहोय लघुनितएरुहाडोहोयवडीनीतएरुपाथोहोय पीतनोएककलवहोय कफतोएककलवहोय सलेखमनोएकरुलवहोय वीर्यनोअडधकलवहोय एप्रमाणेवरावरशरीरमासर्वेवस्तुरेहे त्यासुवीशरीरमारोगादीकनथाय अधिकनुंन्यथाय तेवाररोगनीउत्ततिथाय तथापुरुपनेपांचकोठाशरीरमाहोय. स्त्रीनेठकोठाहोय एटलेएककोठागरभधरवानोअधिकहोय पुरुशनेनवद्वारसदायवेहेछे स्त्रीनेवारद्वारवहेछे तेनांनाम कान २ चक्षु २ वमीनित १ नासीका २ मुख १ लघुनीत १ एपुरुपनेनवद्वारजाणवा स्त्रीनेएथकी त्रणद्वारअधिकतेनानाम स्तन २ प्रसवयोनी१ एत्रणअधिकहोय एरीतेवारद्वारस्त्रीनेवेहे सदायपुरुपस्त्रीनेवह्याजकरेवे. तथाजेपुरुपनेपाचसेपेसीमासनीकहीते तेमध्येथीत्रीसठ्ठीस्त्रीनेहोयतथानपुशकनेवीसगणीहोय एटलेमनुशेनाशरीरनेविपेमासमेलादीकजेअरेलुछे तेमहाअपावित्रछे केमके माहेपरुछे लघुनीतवमीनीतप्रमुखभर्युछे माहादूर्गछानुस्थानकठेमांटेएवुअशुचिनुंस्थानकआशरीरेअपावित्रनोकोथलो तेतुंजाणतोतथी अनेजवानीनामदमाछाक्यो

थकोचंदनअत्ररकुसम चुरणप्रमुखेपोतानाशरीरनेविलेप
नप्रमुखसुगंधेअरयोरेहेछे नेलोकोनीदूर्गछनाघणीकरेअ
तेतनेआगलकरमंधणांजोगववांपडशो माटेपुरवनाजेक
हेलाबोलगरअतथाशरीरप्रमुखनातेसंचारीने दूर्गछना
कोइतीकरवीनही अनेआत्मासाथेएवोविचारकरवो हेचे
तनएपुदगलनोस्वभावसडणपणवीदवंसणठे एनावर
एनेरसफरसनेपलटवानोस्वभावहोछे एनापरजायनी
एजस्थीतिछेमाटेतुंपुदगलनाधरममां प्रवेशकरीशतने
राआत्मीकधर्मनेविपेप्रवेशकरताराधर्मनेविपेकना
अपवित्रठेनही तुतोसदायपवित्रठेमाटेपोतानुं
चारित्रनाउपयोगनेमुकवुंतहीएवीठडीअसुची
हवे सातमी आश्रवजावना कहीयेछे
श्रवकेवोछे के आश्रवरुपीएकसरोवरठे
रुपसरोवरजाणवुं तेमध्येइंद्रीतथामनरुप
रह्योछे तथाविषयनाकलोलव्यांवणाथइरुप
युपाणीभरेलुठे तेकायारुपआश्रवसंश्रवठे
नालांठितेपाचगडनालानांनाम - जिवीहिसा १ कुटुंबोलवुं
२ चोरी ३ मैथुन ४ परीग्रह ५ हवेअथैवमथुननेनि
हिसानेत्रसतथास्थावरजिवनी हिंसासंनिमित्त
संसारनिमित्ते करवीतेनेहिंसासंनिमित्त
हेशेकेधर्मनिमित्ते कांइहिसाथाय

तेनेकहियेकेप्रश्रव्याकरणसुत्रनेविशे धर्मनिमित्तजेहि
 साकरेतेनेमहामद्वुद्धियानेमहादृष्टप्रणामीकह्याछेतथाद
 शविकालिकसुत्रनेविशे जैणाएधर्मकह्याछे इत्यादिकसर्वे
 सुत्रनेविशे जैणाविनाधर्मथायनहि अनेजेधमाधमकरी
 नेधर्मधर्मपोकारेठे नेजिवहिसाकरेठे तेजिवशास्त्रजोता
 महामाठागतीनाछे अनेबहोलससारीदिठामांआवेछेअ
 नेअनंतोससारतेरखमज्ञे एवापरमात्मानां वचनछेतथा
 जेधननालोभियकाजेपुजाप्रतिष्ठा सनात्रवरत पचखाण
 करावेछेतथातेनोउपदेशकरेठे तेसर्वेपत्थरनीनावसरखा
 जाणवातेमातेबुढेठे नेविजानेवोलेछे एवचाराअज्ञान
 जिवपेटअरवावास्ते धर्मतथापापनीतथा आश्रवसंवरनी
 कशीउलखाणराखतानथी अनेकटापिकोइये त्रेशास्त्रवां
 चेलबितेतेनेपोतानास्वार्थआगल कांडसुजपन्तीनथीते
 थीपोतेपणबुढेनेआगलनानेपणबुडांनेएवुश्रीपरमात्मानु
 वचनठेमाटेज्याज्याजिवनीहिसात्यांत्यासर्वेठेकाणेआश्रव
 जकहिये शामाटेकेअगवतेअवरतवारकह्याछेतेमाछएका
 यनुंअवरतहश्याजछे त्याकाइएचुनथीकह्युंकेधर्मकारणेहं
 साकरेतेपापमानगणवीजेकोइजाणनिसेमिलखाशेतेनेप
 णझेरचडशेनेअजाणेखाशेतेनेपणझेरचडशेमाटेसंसारअ
 र्थेअपवाधर्मअर्थेजेधणीहिंसाकरशेतेनेमहाआंकराकर्मबं
 धाशेजावतनकादिकगतिनेविशेजशेएवुकोइजिवेकह्युंनथी

ज तथासर्वआश्रवणमुल तथासर्वदुखनोदातार एवो
 आरभपरीग्रहथकीसदायअलगुंरहेवु अतेपणतेआर
 परीग्रहआपणीहारेआवेनहि एथकीआपणेअनताजव
 खणुपणे माटेएपाचेआश्रवतेथकीसदायवेगलोरहे ना
 तोएजतनेससारमाअनताजव जन्ममरणकरावशे तथ
 वीजेप्रकारेअठारपापस्थानक तेपणआश्रवजछे तेथ
 पणसदायवेगलुरहेवु तेनानाम हसादिक ५ पूर्वेकह
 तेतथाक्रोधछठो एटलेक्रोधछे तेपणआश्रवरुपजठे
 वखतजिवक्रोधनेविशे आवीजायठे तेवखतकाइकृत
 कृत्यविचारतोनी तथामान तेपणजिवअभिमान
 लीधोथको नकरवानांकारजकरे तथामायाकपट
 नरेलोजीवशुनकरे तेसर्वकारजसेवे तेनोकोइविश्वा
 पणनकरे तथालोचतेतोसर्वथकीमहानिष्टछे लोचि
 एसनेकोइसगुवहालु हेतुकोइहोयनहि अनेनकरवा
 कारज तेसर्वएलोचिमाणसकरे पोतेदुखीयाय नेवी
 नेपणदुखीकरे तथारागतेस्नेहनोलीधोथको कोइव
 बोलवानोपणविचारनहोय तथाकोइकामकरवानो प
 विचारनहोय कोइनीलाजशरमपणनरहे एरागसोना
 वेनीसरखोछेतथाद्वेपतेद्वेपनाभरथोथकोपोतानुंकारज
 वगाडे नेसामानुकारजपणवगाडे केवोकेलीढानिवेडी
 वोवे तथाकलेशजेसामासाथेउभोकरवो अनेसतापथी

डीएकछेटेखसेनहि पोतेकलेशमात्ररचारहे नेसामानेक
लेशउपजवि तथाअभ्यास्यानएटले पराडखोटीवातो
जाणीअजाणीकरवी तथाखोटांआलकोइनेमाथेदेवां.

हेवेपरिसुनकेहेतां पराइचानीठखावी अथवाकोइहेतु
जाणिनेमर्मनीवात आपणनेकहीहोय तेप्रसिद्धकरवीत
थाकोडनीमर्मनीवातजाण्यामांआवीहोयतो फजेतोकर
वी तथापरीपरीवादकेहेतां परनाअवरणवादबोलवाको
इनागुणग्रहणकरवामां समजेनही ज्यांत्यांसर्वनाअव
गुणग्रहणकरवामांसमजे पंदरमुपापस्थानरत अरत
एटलेसुखआवेथके सातावेदवी एटलेपोतानासुखमांम
गनथइगयो पारकुंदुखजाणेनही दुखआवेथकेहायवरा
घघणोकरे संतोशराखेनही तथासत्तरमुं मायामोसकेहे
तांजेकपटसहित जुठुबोलवुजेमआगेतो विपहतुंअनेव
लीतेनेवधार्युं एटलेतेनाझेरनुशुंकेहेवुं तेमपेहेलुंजुठुंबोल
वुतेतोमाहापापछे नेवलीदंजसहितबोलवुं एटलेतेनापा
पमांशुंकेहेवुं तथाअठारमुंमीथ्यात्वसल्यएअठारपापस्था
नथकी हेचेतनसदायवेगलोरहे एथकीजसर्वपापनीक्रि
यालागेठे नेपापनीवासीएप्रकृतिनाउपरंजननाकरवा
वालाएअठारपापस्थानकजछे नेएअठारपापस्थानक
ज्यांसुधीमांहेंथीगयांनथी त्यांसुधीजीवनेसंसारथोरजा
वजठे त्यांसुधीसंसारघट्योनथी एवातनिश्चैजठे तथाते

अद्वारपापस्थानमा सत्तरपापस्थानथोडासंसारनाधणी
 छे अने एकमीथ्यातपापस्थानकअनतसंसारनोधणीठै मा
 टेएवुजाणीनेहेचेतनएथकीतुसढायअलगारेहे तथापाचइं
 द्रीनाआश्रवणे तेपणतजवाकेश्रोतइद्रीना ३ वीपयठेते
 पणतजवा जोनहीतजितोएथकीजडनुंपोपणथशे नेआ
 त्मानुघातथशे तेमपाचइद्रीनाविपयसमजवातेश्रोतइद्री
 नापरवशपणार्थी मरगनोजीवथायठे तथाचक्षुइद्रीनापर
 वशपणार्थकीपतगीआनाप्राणजायठे तथारसइद्रीनापरव
 शपणार्थीमांछलानाप्राणजायठे तथाघ्राणइद्रीनापरवश
 पणार्थीभमरानोजीवजायठे तथाफरसइद्रीनाविपयथकी
 गजनोनाशथायठे तथाएपाचइद्रीमध्येअकेकीइद्रीजेनी
 वशनर्था तेनाजीवजायठे तीजेनीपाचेइद्रीमोकलीहोय
 तेतोसुखक्याथकीदेखे माटेहेचेतनएपाचेइद्रीरुपजेससा
 रनादूततेनेछुटामुकीगतोएतनेसुखकेमआववादेशे नेतने
 ससारमारोजवशेमाटे तुएपाचेदूतनेपकर्मनेकेदकर एट
 लेतंसुखीयोथइशइत्पाटीक जेजेकारणथकीआश्रवनुंआ
 ववुथायठे तेतेकारणनेतुवधकरजेमतारोआत्मानोरनथा
 य अनेजोतुआश्रवनेवधनहीकरेतोताराआत्मानेतरवानी
 वखतकोदकालेनथीमाटेआश्रववधकरीएवीजावनाजाववी
 तथाआठमीजेसवरजावना एटलेपूर्वसातमीआश्रव
 जावनानेविपेजेअधिकारकह्यो तेनेरुंधवानोविचारतेनेसं

वरकहिये तथा मनवचनकायानाजोग संवरवाते सर्वे व्य
वहारसंवरछे तथा जे परजावनो त्यागने स्वजावने विपेर म
एकरवुं एटले ज्ञानदर्शनचारीत्रमां रमणकरवुं तेने संवरक
हिये ॥ तथानवमीनिरजराभावना एटले धर्मध्यानशुद्ध
ध्याननुंध्यावुं तथा गुरुपासे लागेलादोपनुं प्राश्रितलेवुंत
थाविने वियावचगुरुवादिकनीकरवी इत्यादिकजावना
भाववीतेने निरजरातत्वकहिये ॥ दशमीलोकस्वरूपजावना
लोककहेतांचौदराजलोक तेनो आकारकहिये छिये पुरुष
आकारकहेतांपुरुषवेपगपहोलाकरीने उचोरहे हाथवेके
मेआपेतेवा आकारे लोकठे तथा विजे प्रकारे वलोणा आका
रकहिये तेकहेताजे मस्त्रीवलोवाने उभिरहे अने माखणउ
परलाववा झडकालेछे तेवखतजेवो एनो आकारहोय ते
आकारे लोकठे तथा त्रिजे प्रकारे एकसरावलु निचे उंधुवा
लीएते उपरसरावलानुसपटकरीने उपरमुकीयेपणनिचे
नुंकांडकमोटुमुकीएने उपरनावेसरखानेनाहानांमुकीएते
आकारे लोकठे ते लोकनात्रणनेदछे उर्धतथा अधो तथा
तरिठोलोकठे तेजे पुरुपाकारनेविशे जेना जिनीजग्याथ
कीनिचुतेने अधोलोककहिये तेसातराजथी कांडकझाझुठे
तथासातराजमाठेरोनाजिथकीउपरनाभागठे तेने उरध
लोककहिये तथाजेना जिनीजग्यानो जागठे तेने त्रिछो
लोककहिये हवेतेत्रणेलोकनुं किंचीतस्वरूपदेखाभियेछि

येजेअघोलो रुनेविशे सातपृथ्वीछे तेमध्येपहेलीपृथ्वीर
 तनप्रभाएवेनामेछे तेनोएकलाखने एसीहजारजोजननो
 पिंमतेतेमेरुपर्वतनासभुतलापृथ्वीनाभागयकीगणवोहवे
 जेएकलाखएसीहजारजोजननोपडते तेमध्येएकहजार
 जोजननिधेमुकीये तेएकहजारजोजनउपरमुकीये तेना
 मध्यमाएकलाखनेअठोतेरहजार जोजननोपहरह्योतेमा
 हेतेरजागकरीये तेमातेरनर्कनापाथमाछे तेनावचलाआ
 तराअगीयाररह्या तेमध्येदशआतरामा भुवनपतिनीद
 शनिकायोतेनेएकआतरुखालीते तथाहजारजोजनजेउप
 रनुरह्यु तेमध्येसोजोजनउपरमुकीए तथासोजोजनहेठ
 लमुकीएमध्येआठसेजोजनरह्यु तेमध्येआठव्यतरनीनि
 कायोते तथाउपरनासोजोजननेदशजोजनउपरमुकीएत
 थादशजोजननिधेमकीए मध्यनाएसीजोजनमाआठजा
 तनावाणव्यंतरनोरैहवासबेतेभुवनपतितथाव्यतरनेरत्न
 मयजग्याउठे हवेजेनर्करत्नप्रजातेनात्रणजागकरीए ते
 मध्येप्रथमनोजागरत्ननोते तेरत्ननाजागनीमाहेलीकोर
 सोलकहरत्ननासोलजातनाते बीजाभागोमांरत्ननाजा
 गनथी तथातेरपाथडेथइनेत्रीसलाखनर्कवासछे तेनर्क
 पृथ्वीनेनिचेत्रणवलयिछे एकघनोदधी १ घनवा २ त
 नवा ३ एत्रणवलीयानेश्रावरिकरीनेएपृथ्वीरहीते तेनी
 निचेएकराजआकाशछे त्यांगयेथकेबीजीनर्कपृथ्वीआवे

तेनेविशेश्रगीयारपाथडाछे ते पृथ्विकांकरासरखीजाणवी
 त्यांथकी एकराजगयेथकेत्रीजीपृथ्विवालुकप्रभाएवेनामे
 श्रावेतेनेविशेनवपाथडाछे ते पृथ्विवेलुसरखीछेत्यांथकीए
 कसजचौथीपृथ्विपंकप्रभाएवंनामेश्रावेत्यांसातपाथडाछे
 ते पृथ्विपंककेहेतांकादवजेवीछे त्यांथकी एकराज पांचमी
 पृथ्विधुमप्रभाएवेनामेश्रावे त्यांपाचपाथडाछे नेधुंवा
 णासरखीपृथ्विछे त्यांथकी एकराजछठीपृथ्वितमप्रभाना
 मेश्रावे तमकेहेतांश्रंधकाररुपछे त्यांत्रणपाथडाछे त्यां
 थकी एकराजजाजेरी सातमीपृथ्वितमतमाएवेनामेश्रावे
 त्यांश्रंधकारश्रत्यंतघणोजतदरुपछे त्यां एकजपाथडाछे
 तेमध्येपांचनरकावासछे तेनांनामकहियेछिये काल १
 माहाकाल २ रोलुं ३ माहारोलु ४ श्रपेठा ५ कालादी
 कचारपाथडाचारदसीनेविपेठे ते श्रसंख्याताजोजननाठे
 ते श्रपेठाणनामिनरकावासमध्यनो एकलाखजोजनलांबी
 पोहोलीठे तेनीवेदनाघणीश्राकरीछे त्यांथकी एकराजग
 येथकेश्रलोकश्रावे हवेतेसातेपृथ्वीनुंपोहोलाप्रणु कहीये
 छीये पेहेलीपृथ्वीएकराजलांबीपोहोलीछे बीजीनरकपृ
 थ्वीवेराजलांबीपोहोलीठे त्रीजीनरकपृथ्वीत्रणराजलां
 पोहोलीठेतेमएकएकराजवधतेवधतेछठीठराजतेथकीसा
 तमीनरकपृथ्वीसातराजलांबीपोहोलीठे हवेतेसातेनरक
 नीवेदनानुस्वरुपकहीयेछीये प्रथमनीत्रणनरकनेविपेपर

साधामीकृतवेदनाछे तथाखेत्रवेदनापणवे तथाचोथी
 पांचमीवेनरकनेविषे माहोमीहेवीक्रियकरीने लढीमरेवे
 एकएकनेवेदनाकरेछे तथाखेत्रवेदनापणवे तथाछेष्टीसा
 तमीवेनरकनेविषे । खेत्रवेदनाएकलीजवे परंतुपेहेलीन
 रकनेविषेअनतीवेदनाछे तैयकीबीजीनरकनेविषेअनंत
 गुणीवेदनाछे एमअनुक्रमेएकएकथकीअनंतगणीविधती
 वेदनाजावतछेटीकरतासातमीनरकपृथ्वीनेविषेअनतग
 णीवेदनाछे तथातेसातेनरकमाहेमाहाअंधकारछे त्यांको
 ईचंद्रमासूरजप्रमुखअजवालुंकरताबेनेही ।
 शिष्यवाक्य-अतरेसातेनरकपृथ्वीसाअधारुकहुंत्यारे
 भुवनपतीव्यतरमापणअधारुवे ।
 गुरुवाक्य-भुवनपतीव्यतरनेविषेहेवांनाजेरेहेवासते
 सर्वैरतनमंयछेतेथीमाहाउद्योतकारेबेत्यांकाइअंधकारछे
 नहीअनेतेनारेहेवासनाजेभुवन तेजबुद्धीपजेवडाछे, जाव
 तअढीद्वीपजेवमाबेतथाव्यतरनाभुवनतेभरंतक्षेत्रजेवमाछे
 जावतजबुद्धीपजेवडाबे तेमाहाउद्योतमंयछे घटारामठा
 राममाहातेजनोपुंजमुकेबेइत्यादिकः । एनोविस्तारंजीवा
 निगमथकीजाणजो ।
 शिष्यवाक्य - केस्वामि ; आतरेआतरेभुवनपतिनेविशे
 महाउद्योतमहासुखवे । लोनकंनापाथडानेविशे ; अधारु
 नेमहादुखतेशु तेपणपृथ्वितोरत्ननीबे अथवासोलकंभर

लनापूर्वतमेकह्याजतेः ॥ १ ॥
 गुरुवाक्यः--हेभद्रजेदेवनाजेरहेवासनाजेउद्योत तथाः
 सुखतेसर्वपुन्यं नाजेरथीभोगवेठेतथानर्कवालानेअंधकार
 तथादूखतेसर्वपापनांजेरथीछे, जेमकोइएकघरनेविशेहे
 ठेउप्ररतेनाउपरएमअतेकलोकवसेवे तेसर्वेनेसुखदूखतो
 पोतानांपुन्यपापनाउदेप्रमाणेमलेछे, तथाजग्यानीजेशी
 चातेपणपुन्यपापप्रमाणेवे तथातेजेकह्यु, जेरत्ननीपृथ्वि
 तथारत्ननाकडतेनुएमछेके, ज्यानरियानोरेवासछे, त्यां
 तोउपरखरपृथ्विसमज्यामाआवेछे, साटेत्यांउद्योतनथी,
 तेनोविस्तारपनवणां, तथाजीवाभिगमथकीजाणजो, हवे
 त्रिछांलोकतो, अधिकारंकहियेछिये, त्यांप्रथमजंबुद्वीपए
 कलाखजोजनलावोपहोलोछे, तेसर्वद्वीपसमुद्रएनेवीठी
 नेरह्याछे तेनामध्यभागनेविशेनेरुपर्वतवे, तेएकलाखजो
 जननोउचोछे, दशहजारजोजनलावोपहोलोवे, तेनीपूर्व
 पश्चिमसहाविदेहनीसोलसोलवजेवे, विमलीनेवत्रिशवजे
 वे, देवकुरुउत्तरकुरुआदेदेइने, छक्षेत्रजुगलीयानावे, तथा
 अरतअइस्वरतक्षेत्रवे, तेकर्मभुमिनाछे, तेसर्वेउत्तरदक्षिणे
 वे, तेसर्वेक्षेत्रथकीमेरुउत्तरदिशामाछे, तथाछपनअतरद्वी
 पछे, तेसर्वेद्वीपोनेफरतीजगतिवे, तथाजंबुद्वीपनेजगतिनो
 कोटवे तेनेचारंदरवाजाछे, तथाउत्तरकुरुनेविशे सुदर्शन
 नामाजबुव्रक्षवे इत्यादिकविचार, सर्वजंबुद्वीपपनतीथकी

जाणवो तेनेफरतो लवणसमुद्र जाणवो तेवेलाखजो जन
 नो जाणवो तेमापता लकलसाठे तेमध्येथकीपाणी उछ
 लेते तेनीभरती उटथायते तेनुपाणी खारुछे तेनेपणफ
 रतीजगतिछे तेनीपरधीसोललाखजो जनमाठेरीछे तेनी
 फरतो धातकीखडछे तेनेविशेजंबुद्वीपकरता बमणांक्षेत्र
 तथाबमणीरीतसर्वेजाणवी एटलोविशेष जेत्यानाबे एमेरु
 चोरासीहजारजो जनउचाते तथाबेइखुकालपर्वतछे तथा
 धावडीनुब्रक्षछेतथाफरतीजगतिबेवाकीसर्वेजंबुद्वीपनीरीते
 जाणवु. तेद्वीपचारलाखजो जनपोहोलोछेते नीपरधी एकता
 लीसलाखजो जनझाझेरीछे तेनेफरतो कालोदधीनामसमु
 द्रछे तेनुपाणीकालेवरणेछे नेपाणीसरखुपाणीमीठुछेतेने
 पणफरतीजगतीछे आठलाखजो जनपोहोलोछे तेनीपर
 धीएकाणुलाखजो जनझाझेरीछे तेनेफरतो पुखरवरनामा
 द्वीपछे तेनामध्यभागनेविषे मानुखोतरपर्वतवलीयाकारे
 पड्योते तेनीमाहेलीकोरेअग्धोजेद्वीप तेमध्येसर्वधातकी
 खंडनीपेरेसमजीलेवू परतूखेतरधातकीखंडनाकरताएब
 मणोमोठोते एअदीद्वीपनीमाहेलीकोरेमनूप्यनोरेहेवास
 वे तथामनूप्यनुंजन्ममरणपणएअदीद्वीपनीमाहेलीकोरे
 वेतथातीर्थकरकेवलीगणधरआचारजउपाध्यायसाधूतेध
 र्मदेवतातथादेवाधीदेवतेअदीद्वीपनीमाहेलीकोरेजठेतथा
 अदीद्वीपनीचाहारनीकोरेदेवतात्रीजचनोरेहेवासछे तेए

क एकद्वीपथकीसमुद्रबमणोएमअनुक्रमेश्रसंख्याताद्वीपस
मुद्रमुकताथकाछेल्लोसभुरमणनामाद्वीपश्रावे ते पाराज
पोहोलोबे तेथकीसंभुरमणनामासमुद्रबमणोपोहोलोछेए
टलेअडधाराजमांछे तथाअढीद्वीपनेविपे जेचंद्रमासुर्यग्र
हनक्षेत्रतारासदायफर्याकरेठेतेथीदिवसरात्रनुमानबंधाय
ठे तेथीसमयखेतरकहीयेछीये तथाअढीद्वीपवाहारजेचंद्र
मासुरजग्रहक्षत्रताराठेसर्वस्थीरजावठे ज्यांसुरजछेत्यांस
दायदिवसरेहेठे चंद्रमाठेत्यासदायरात्ररेहेठे तथाचंद्रमा
सुरजनंपचासहजारजोजननुंआतरुरेहेठे एटलेश्रेणीबंध
रेहेठे एमअसंख्याताद्वीपसमुद्रनुंजाणवु.

शिष्यवाक्य—स्वामीतेअसख्याताकेटलाहशे.

गुरुवाक्य—अढीसागरोपमनाजेटलासमयतटलाएद्वी
पसमुद्रठेतेनोविस्तारअधिकारजिवाग्निगमथकीजाणजो
एटलेतरिछालोकनोअधिकारकह्यो. हवेउरधलोकनोक
हियेठिये त्यांपहेलुदेवलोक सुधर्मनामाठे त्यांबत्रीशला
खधेमानठे सर्वैरतमयछे तेथकीउत्तरनीदशे बरोबरइ
शानदेवलोकछे तेनेविशेश्रठाविशलाखवेमानछे तेनाइं
द्रनुनामदेवलोकनेनामेसमजिलेवुसर्वैनेविशेतेवेदेवलोक
लगडीनेआकारेछे तेनाउपरेसनंतकुमारनामा देवलोक
दक्षणादिशाएठे तेनेविशेबांरलाखविमानठे तेनेविशेदेव
गनानुंउपजवुंहोयनहि तथाआगलनादेवलीकमांपणउ

वहारथकीतपक्रिया कष्टचारीत्रपालेछे तेजिवनेहजुसुधी
समकितपणप्रगट्युनथीनेमिथ्याद्रष्टीतेकोइभवीछेअने
कोइअभवीछे तेसर्वेएवाव्यवहारकष्टकी नवग्रीविक
सुधीजायपण कांइतेनाआत्मानुकल्याणथायनहि तेज
वतोअनंतोकाजसंसारमारखडवाना जाणवा माटेतेने
व्यवहारचारित्रीयाकहिये तथानिश्चेचारित्रीया पाचअ
नुतरविमानतथासिधपणजाय हवतेचउदरराजलोकउंच
पणेवे तेमध्येएकराजलावापहोलापणे चउदरराजसुधीति
नेत्रशनाडीकहिये परतुसिधसलाएगएथके पिस्तालीस
लाखजोजनलांवीपहोलीछे एजत्रसनाडीनेविशेजत्रसे
जिववे वाकीसर्वेलोकनेविशे पांचथावरभरेलाछे तेमाटे
हेचेतनएजलोकनेविशे कोइआकाशपरदेश तेज-ममर
णकरयाविनावोम्यानथी.

शिष्यवाक्य—सर्वलोककहेतां सिद्धपणभेगाआव्यातो
शुसिधनाभेगाविजाजिववे.

गुरुवाक्य—सिधनाभेगापाचेस्थावरसुक्ष्मतयावादरवा
युकायल्यावे तेमध्येचारस्थावरतोअसंख्याताछेअनेसुक्ष्म
वनस्पतितेनीगोदकहिये तेजिवअनताछे.

शिष्यवाक्य—तेजीवसिद्धक्षेत्रमारहावे तेनेकाइसिद्ध
नासुखनोभागआवतोहशे अथवाकाइसिद्धनाजीवनेए
बाधापीडाकरताहशे

गुरुवाक्य--सिद्धनासुखनो जागएनेआवेनही तेमकांड
 एसिद्धनाजीवनेवाधापीडाकरेनही जथाद्रष्टांत जेमचंद्र
 मानुंअजवालुठे तेअजवालानुंसुखकांडवेआंखेअंधछेतेने
 होयनही तेमतेअधकांडचंद्रमानांअजवालानेवाधापीडा
 करीशकतो नथी तेमतेजीवरह्याठे तेआपआपणाकरमने
 वशहूखपीडामारेहेठे तेअधरुपजाणवा तेनेसिद्धनासुख
 नो जागकथायकीहोय तथासिद्धजीवनीराकारपोताना
 स्वरुपरमणीछि तेनेएवाधापीडाकरवासमर्थकेमथाय ते
 अजवालारुपठे हेचेतनएवोजेकोडलोक तेनेविशेतुंअनत
 कालपरीब्रह्मणाकरेठे तोहवेतुएवुंलोकनुंस्वरुपजाणीनेह
 जुतुएलोकथीअलगोथवाकेमइच्छतोनथीजोतुसमज्योही
 यतोएलोकथीउटाशथइने पोतानास्वपरुनीउलखाणकर
 एजतनेश्रेयकारीठे एथीजतारीमुक्तीठे एवीरीतेलोकस्व
 रुपनावनाजाववी.

हवेअगीयारमी बोधदूलभभावना कहेतांबोधवीजनुं
 पांमवुं तेघणमुडकलठेतेकाइसर्वगतीनेविशि पामवुंथतुन
 धीतेठेकाणावतावीयेछीये जेपाचरुथावरसुक्ष्मवादरनेवि
 पेतोअव्यक्तवपणुंछे तथाविगलेद्रीनेविशिपणअव्यक्तव
 जेवुजंठे जेनेविपेमनतथाश्रोतइंद्रीठेजनही तोधर्मनुंसां
 भलवुअनेविचारवुंशायकीकरे तथात्रीजंचपंचंद्रीनेविपेछ
 मुर्धममांतोधर्मठेजनही तथागर्जजनेशास्त्रवालालखेठेके

समकीतमुलश्रगीध. रत्रतहोय तेहशंतारेकेहेताहजे परं-
 तुहालनासमानेविपेतोकाइडीठामांआवतु नथी अनेतेजी
 वनेतोठेदननेदन मारकुट भुखतरश ताहाफनफको एमदू
 खसहेताजडीनजायछे तथानारकीनेविपेतोगुरुनीजोग
 वाइठेजनही तोएजीवधर्मशानुपामे तथाएजीवछेदननेद
 ननामाहाआकरादूख वेठनाथकांविचरेछे समयमात्रनुसु
 खतोठेनही तोधर्मशाथकीपामे तथादेवगतोनेविपेपणचा
 रीत्रधर्मनीशास्त्रपणनापाडेठे तथाश्रुतधर्महशेपणकोइठे
 वनेहशे परतुघणादेवतापोतानाविपयसुखमांजभवहारी
 जायठे तथाजेअकर्मभुमीतथाअतरद्वीपनामनुपनेतोधर्म
 ठेजनही तथाजेकर्मभुमीनाक्षेत्र एकसोसीतेरविजयठेते
 अकेकीविजयमा वत्रीसवत्रीसहजारदेशठे तेमध्येएकत्री
 सहजारनवसेमामीचुवोत्तरदेशतोअनारजठे तेमांकोइजी
 वधर्मपामे नाकेहेवायनही परतुवोहोलताएतोनाजपामे
 तथाजेसामीपचविस देशआरजछे तेमापणवाघरीनील
 कोली प्रमुखजीवअनारजघणावसेठे अनेआरजजीवंतो
 घणाथोमाठे तेनेपणसुगुरुनीजोगवाइघणीमूइकेलठे शा
 माटेकेपृथ्वीउपरपाखइधर्मघणुप्रवर्तेछेअनेजीनधर्मथोडू
 प्रवर्तेठे तेजीनधर्मनेविपे पणपाखडीभेखधारीघणादीसे
 ठेजेआरंभपरीग्रहमाडुव्यापम्याठे अनेजेवीतरागजाखी
 तवस्तुधर्मनीउलखाणकरावनाराएवाजे सुगुरुतेतोकाइ

कटीसेछे अहीयाकोइककेहेशेकेएकवीसहजारवरससुधी
 नगवाननुंधर्मचालशे तेअमथकीचालशेएवुंकेहेशे तेमा
 हामीथ्यात्वीठे नेनगवाननामारगनाचोरछे गामाटेजेन
 गदानेआरंभपरीग्रहवालानेसाधुकह्यानथी तोतेथकीध
 र्मशानुरेहे धर्मतोसाधुमुनीराजथकीजरहेहेशे.

शिष्यवाक्य—स्वामीतमेप्रथमजे क्रियाव्यवहारपाले
 आरंभपरीग्रहथकीवेगलारहे तेनेतोतमेसाधुपणानीना
 पाडीहतीतोहवे कयासाधुमुनीराजथकीधर्मरहेशे.

गुरुवाक्य—हेभद्रअमेजेनापामी तेज्ञानहिणजेखोटोक्रि
 याआडंवरकरीनेचाले तेनीअमेनापाडीहती तेथ्रीसुम
 तीग्रंथनेविशे सिधसेनदेवाकरएवुकहीगयाठे तथाश्रीन
 गवतीजिनेविशे शुधर्मास्वामीएमकहीगयाछे कहयुंछेजे
 गितार्थहोयनेनेसाधुकहिये अथवातेगितार्थनाकहेणप्रमा
 णंविचरेतेनेसाधुकहिये तेविनानाजेटलाविचरेठे तेधणी
 कष्टक्रियातपलुखागपणुराखंठे तोयपणतेनेसाधुकहियेन
 हिएथ्रीविरनामुखनावचनछे तेवारेकोइकहेशेजेआजने
 कालेवेअक्षरनाजाणपणितपणुधरावता एवाजेखधारीप
 णछे तेनेसाधुकहियेकेनाकहिये तेनोउत्तरजेएवावेअक्षर
 नाजाणथइने जेआरंभपरीग्रहथकीअलगानथया तेने
 महामिथ्यात्वीकहिये नेमहाअज्ञानीकहिये तेनुंनएयुसर्व
 धुलमागयुंतेकांडलेखेआव्युंनहि तेथ्रीउतराधेनजिना

अगीयारमावहू अतनामा अभ्ययननेविशे एवंकह्युंछे तथा
 श्रीआचारगजिमा तेनीसाथेजावतठलेजवासुधीनीता
 पानीठे तथाश्रीआवशकनीरजुक्तिनेविशे श्रीजद्रवाहूसा
 मिएएवंकहयुंछे केजे एनेवादेतेअनंताजव 'ससारमास्व
 डेतथाश्रीजगवतीजिना आठमासतकनेविशे एनेजेआ
 हारपाणीआपेतेअनंताजवरखडे तेमजश्रावकनाप्रतीक
 मणानेविशे एनेआहारपाणीआपे तेनीआलीयणगुरुपा
 सेमागीछे एमजावतघणाशास्त्रनेविशे एनेनिशेध्याठमाटे
 एनेसाधुनकहिये तथाप्रत्यक्षपणेसमजोके जेपुरुपपैते
 कुवोजाणेठे तेधणीकांडचालतीकुवामांपडीजाय जेनजा
 णेतेपडे जाणेतेपमेनेहि तेमजेपुरुपनेज्ञाननुंजाणपणुंही
 यतोतेपुरुपअवरतनेकेमशेवे माटेएशेववावालापुरुपपा
 सेज्ञानछे तेपणअज्ञानठे तेवाजेनेखधारीपाखमीतेनाजा
 रूयाधर्ममार्गउपरचालेतेनेपणकांडधर्मपाम्योकाहियेनेहि
 तेअधिकारश्रीमहानिसीथसुत्रने चोथेअध्ययने नागील
 सोमलनोअधिकारछे तेजोजोमाटेसुगुरुविनाधर्महोयन
 हितेसुगुरु तेवहूश्रुतज्ञानीपुरुप आरभपरीग्रहथकीवेग
 लाहोयतेनेगुसुरुकहिये तेसुगुरुसदायकालसर्वक्षेत्रेना
 होयएतोकोइकक्षेत्रेकोइक अवसरेमले तेचोथेआरेपण
 कोइकअवसरेमलता तेअधिकारमहानिसीथमुत्रथकी
 जाणजो एवाकदापीकोइअवसरे 'सुगुरुनुंमलवुंथायती

स्यांतेरकाठीयाआवीनेनमे तेथकीगुरुदरशनकरीशकेन
हि तोवाणीसांभलवीतोकर्याथकीकटापीकोडजिवजवरो
थइने तेरकाठीआने दुरकरीनेगुरुपासेजायतोपणशण
गरादिकरसकथानालोलपीथका धर्मपामीशकेनहि अ
थवाकेटलाकजिववेठाथकाउघे अथवाकेटलाकजिवक
थामांचारप्रकारनीवारतालेइवेसे तेथकीधर्मसांजलेजन
हि एमकरतांएसर्वकारणने दूरकरीनेधर्मसांजलवावेसे
तोपुर्वेकुगुरुस्वदर्शनना अथवाअनदर्शनना तेणेजेभर
मावेलाठेनेथीतेनेसुगुरुनुंवचनरुचेनहिजथाद्रष्टाते एकन
गरनेविशे राजामहाज्जक्तिवान अनेपमीतनावचननोलो
लपीअनेस्वभावेज्ज्हीकहतोतेजेजेपडीतलोकआवे तेने
बडेआडंवरथीहाथीउपर वेसाडीनेघेरतेडीलावितेनेपांच
रात्रीराखीशेवाज्जक्तिकरीधर्मतेनीपासेसांभलीने तेनेपांच
रुपैयानोमालडेइने भलीरीतेविदायकरीआवे एमजेजे
पंडितआवितेनेएमकरे तेमाएकब्राह्मणपंडितआठ्योतेस्व
जावेकपटीठे तेमनमाएवुंविचारतोहूवोजेआराजाबहूभ
क्तिवाननेबहूदानेश्वराठे तोएराजामहारेवशरहेतोघणु
सारुतोहूजोएनेविलोमुकीनेघेरजइशतोएराजाज्ज्हीकठे
तेबिजानेवशथशेएमविचारीत्यांथकीजायनहि एमकरतां
केटलांकवर्षवहिगयां तेवारेमनमांविचार्युंकेआपणेग्रह
स्तीठरचातेघेरगयाविनातोचालेनहि माटेहवेघेरतोजबु

पणराजाआपणेवशरहेएवुकरीनेजवु एवुविचारीराजापा
 सेआज्ञामागीतेवारैराजाएकहयुकेसुखेथकीपधारो हूंतम
 नेशक्तिसारुविदायगिरीकरु तेवारैब्राह्मणेएवातकबुलक
 रीराजाघेविदायगिरीकरी तेवारैतेपडितराजाप्रतेकहतो
 हवोजेतुप्रणोज्जरीकठे अनेघणोदानेश्वरीठे पणतनेहजु
 पंफितनीपरीक्षानथी पणहूतनेशास्त्रमाकोइकरीतनाअर्थ
 छेतेदेखाडुपणताहारापेटमारहेतो कोइपासेकहेतोतेदेखा
 डवाजेवुनथी तेवारैराजाबोल्योजेआवडीवधीसर्वराजनी
 वारतामाहारापेटमारहेठे तोशास्त्रनीवारताहूकोइनेकेम
 कहीशमाटेमनेक्रपाकरीनेदेखाओ तेवारैपडितनामुकरग
 योकेएवाततनेकहेवायनहिअनेतजथकीजिरवायपणनहि
 एमकहीनेराजानेघणोमोहचडाव्यो तेवारैराजाघणोआ
 ग्रहकरीनेवलग्योतेवारैतेपमिते घणोवढीवस्तकरीनेरा
 जानेगीतानोपाठदेखाडयो तेमध्येएकशब्दनोअर्थपूर्वेजे
 थतोहतोअनेशब्दनोअर्थपणएजहतो तेकहीनेदेखाडयो
 अनेपछीकहयुकेआअर्थतोअमारेसर्वलोकनेसमजाववानो
 ठे पणपमितलोकनासमज्यामाएशब्दनोअर्थएवोछेकेसीं
 केवेठीदेवीचणाचवेएवोअर्थपडितोनाजाणवामाछेविजा
 नाजाएवामानथीअनेपडितविजानेजणावतापणनथी प
 णतारीघणीभक्तिजाणीनेमेतनेएअर्थकह्योछे पणतुकोइ
 नीपासेकहीशनहिअनेएशब्दनोएजअर्थकरेतेनेपमितजा

एजेविजानेपमितजाणीशनहि.

तेपडीतएवसलघालीनेपोतानेधरगयो त्यारपछीजेजे
 पंढीतआवेतेनेराजावहूआम्रबरथीलावीने तेगीतानापा
 ठनाशब्दनोअर्थकरावे तेएनेपुर्वेपेलोपंढीतसलघालीने
 गयो तेअर्थतोकोइथकीथायनहो त्यारेतेपडीतोनेनीजरं
 ठीअपमानकरिनेकाढे तेवातदेशमांप्रसिद्धथइजेराजापुर्वे
 पडीतोनुवहुमानपुजाकरता नेहमणांतोसर्वपंढीतोनेनीभ
 रंवेतेवातकाश्मीरमाएकपंढीतसर्वोपरीशास्त्रनाजाणसर
 स्वतीनोउपाशक तेणेसाजलीनेएवोविचारथयोजे हूंजड
 नेराजानेठेकाणेपाडु तेवारैरातनेसमेसरस्वतीएआवीने
 तेपंढीतनेएवुकह्युजे एनेआगलपंढीतसलदेइगयोते ते
 शब्दनाअर्थमातेवातकइहेनहीतोतेशब्दनाअर्थतुंक्यांयकी
 करीश केसीकेवेठीदेवीचणाचावे माटेनुपणजडनेअपमा
 नपामाश तेवारैतेपडीतेदेवीनेकहयु एजकारणजेजेजे
 हेतेवारैदेवीएकहयुएजकारणछे तेवारैपडीनेकहयुएवेमे
 वांतजाणीवे तोठेकाणपाडीनेआवीश तेवारैनेअर्थने
 गरेआव्यो तेपंढीतवडोनामीचोदेशचावांछे तेअर्थगनाव
 नेआम्ररकरिनेलाव्यो नेतेगीतानोपाठशास्त्रनेइडाआ
 गलधर्योतेवारैमुलअर्थहतीतेकर्योतेवारैराजाबंल्योकेवी
 जोकाइअर्थएतोहशंतेवारैपंढीतबाल्यांहाडे तेवारैपंढीतेए
 वीरीतेसातआठअर्थएशब्दनाकरघातोपणुगजानुंन

इरीइयुनही तेवारेपडीतवोल्योके ॥ १०० ॥ नाअने
 पणंऐनोमुलअर्थएकछे तेतोअमेपडीतलोककोइ
 तानथी ॥ १०१ ॥ जाय तेआ करिनेवला०० जे
 मनेजरुरदेखाडवोपडशे चालोहूंएकातआवु
 एकातजइ कोइनेकेहेवुनही ॥ १०२ ॥ दोवस्तकर
 जे सीकेवैठोदेवीचणाचावे ॥ १०३ ॥ राज १०० ॥ शुशोः
 नेकेहेवालाग्योजेपुर्वेफलाणास्वामीआव्याहता
 र्थकर्योहते ॥ केनमेआजएअर्थकर्यो तेवारेपडीते
 जणएअर्थजाणतानथी ॥ १०४ ॥ तेपडीतहो तेज
 पछीपडीतमनमाविचारवालाग्योजे ॥ १०५ ॥ सुखो
 सलघालीगयो तेअर्थपडीतक्याथकीलावे ॥
 काहाडवोएमविचारिराजानेव्याकरण ॥ १०६ ॥
 कौमोदीसुधीभणाव्यु छी ॥ १०७ ॥ तानान जने राज
 करावामाड्यो तेव ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ तेवारे
 कल्पित रहतोते ॥ ११० ॥ तेवारेपडीतेक
 तुन ॥ १११ ॥ ११२ ॥ तमेमाहे ॥ ११३ ॥ तेवारे
 जेहूकाचोछुतेतमेकोहोठोतेसत्यवे ॥ ११४ ॥ हूं
 थशेएममाहोमाहेविवाद्घणोथयो ॥ ११५ ॥
 जअर्थसत्यवे ते ॥ ११६ ॥ आटलावध ॥ ११७ ॥ तुन
 तेवारेराजावोल्योजे स्व ॥ ११८ ॥ सुखोमनेस
 नशुजाणु नेहवेतोतमेमने ॥ ११९ ॥ ॥

मुतिपुद्गलछे नेदेवावालोतेपणपुद्गलछे एसर्वकायाथकीज
थायतथापुजाजेकरवीतेपणकायाथकीथाय. तेमवरतनेम
तपंप्रमुखसर्वेकायाथकी निपजेठे तेकांडश्रआत्माथकी नि
पजतुनथी.

शिष्यवाक्य--कायाथकीनिपजेठेपणकांडश्रआत्मानाउप
योगविनानिपजेठे.

गुरुवाक्य--जेतेश्रआत्मानोउपयोगमान्यो. तेतारीमोटी
भुल्यछेशामाटेजेश्रहिंयांतोमननाप्रणामभेगाजलीनेका
रजकरेठे.

शिष्यवाक्य--मननीनेश्रआत्मानीजुदीकेमखबरपद्मेशुंजा
णीथिकेएमननाप्रणामछे केश्रआत्मानोउपयोगछेश्रमेवेउंने
एकजजाणीएगीए.

गुरुवाक्य--श्रहोचद्रहजिसुधीतनेमनश्रआत्मानीजुदीख
बरपद्मीनथी तोतुधर्मनीवारताशानीपुठेठेनेतुंधर्मसुंपाम्यो
जेजन्चेतननोविभागयोनहित्यांसुधिसमकितक्यांछेश्र
नेसंमकितविनाधर्मनाहोयं श्रनेधर्मविनामुक्तिशानीमले
माटेतुंपहेलीजडचेतननोविभागनीसमजकर.

शिष्यवाक्य--स्वामीक्रपाकरीनेमनेजेदज्ञानदेखाइजे
धीहुंश्रआत्मानुंश्रनेमनेनुंस्वरूपजुदुजुदुजाणु.

गुरुवाक्य--हेदेवाणुप्रियनिद्रावीकथा प्रमादतजिनेए
कायहचित्तथइनेतुसांजल जेश्रआत्माछेतेउपयोगग्राहीठेश्र

नेमनवे तेप्रणामग्राहीति शास्त्रमाएवुकह्युच्छेके क्रियाएक
 मप्रणामेवध अनेउपयोगेधर्म एटलेक्रियाछेतेकर्मनीखेच
 नारीति अनेप्रणामछेतेकर्मनोवधपाप्तावे भाटेएवेउतज
 वाजीगछे नेएकउपयोगछे तेथकीधर्मनिपजेतेउपयोगजे
 छेतेस्वरूपनेविशे जेरमणताकरवी तेनेउपयोगकहियेअ
 नेजेपरज्ञावमापेसवु तेनेप्रणामकहिये एवीरीतेउपयोग
 नीनेप्रणामनीवेचणजाएवी.

हवेजेपुद्गलनोस्वभावतेपुद्गलनुधर्मकर्ताछे तेथकीकाइ
 आत्मानुधर्मथायनहि शामाटेकेपुर्वेजेदयाप्रमुखभेदक
 ह्यातेसर्वेपुद्गलथकीथाय त्यारेतेपुद्गलीकधर्मकहिये अने
 सर्वेधर्मवालापोतपोतानीपुष्टिकरेछे तेमनिश्रेमाएजन्म
 मनीपुष्टिकरेठे जेएपुरवलाजेदकह्या तेथकीशुयायतेशुभ
 कर्मउपारजे तोशुभकर्मतेपणजडछे अनेअशुभकर्मतेपण
 जडछेतोएणेजडेजडनावशनोवधारोकरयो पणकाइआ
 त्मगुणनोवधारोएथकीथायनहि आत्मगुणनोवधारोतो
 पोतानाउपयोगमारह्याथकीजथायपणपुद्गलनाकामोमा
 आत्मानोउपयोगहोयनहितेनेधर्मीकेमकहिये.

शिष्यवाक्य—जा २७१११

तमेनापाडोछोपणतेरमागुणतः

नोउपयोगनथी शाद्रष्टातेकेजेम कोइपुरुपनेराजाएमार
 वाकहाडयोतेपुरुपनेलाभवोखावाआपेठे तेनेकांइलाभ
 वोखातालाडवामांएनुंचितवे तेनुंचिततोलाडवामांनथी
 शामाटेकेतेनेतोमारवानोमहोटीजयछे तेमजेज्ञानीपुरुप
 छेतेपुद्गलनांकामोकरेठे पणतेजेमपेलोपुरुपलाडवोखाय
 तेवारीतेकरेठे पेटमांसमजेकेएकांइमहारुनथी पणपुद्गल
 नुधर्मउदेआव्युंतेरोक्युरहेनहि तेभोगवीनेखेरवेपणपोते
 भेगोभलेनहि पोतेपोतानाआत्मानाउपयोगमांजरहे जे
 मकोइस्त्रीनेपरायाठोकरानेधवराववाने महिनोठरावीने
 लाव्याछे पणतेनाचितनोआणदपोतानाछोकरानेधवडा
 ववामाठे अनेपानोपणपोतानाछोकरानेदेखीनेआवेनेते
 छोकरानेजेधवमावे तेमनमाविचारेजेपेलानोमहीनोखाइ
 येछीये तेधवराव्यावगरचालेनहि परंतुतेमांकाइचितनो
 आणदपणनावे तेमकाइपानोपणनावे तेमअहियांज्ञानी
 पुरुपनेसमजवोकेपुद्गलनाकामोमां जेगोनाभले हवेजेपु
 द्गलीकधर्मनाप्रणामउठावीने आत्मीकधर्मनोउपयोगक
 रवो तेज्ञानदर्शनचारीत्ररत्नत्रीयनुसाधवु अनेतेनास्वरु
 पनेविशे रमवुंतेनेधर्मजावनाकहिये नेमाजेव्यवहारधर्म
 नीभावनाजाववी तेथकीशुचआश्रवनउपारजवुंथायतेथ
 कीआत्माशुचकर्मबांधे आत्माजरेथायपणकांइआत्मा
 नुकारजसिधथायनहि अनेनिश्वेस्वरुपनीजेभावनाभाव

वीतिथकीजावसंवरथाय अनेआत्मानेनवांकर्मआवतारो
केअनेतेनाआत्मानुंकारजसिद्धथाय एवातमासदेहराखवो
नहिएटलेजावनाउवारेकहि

हवेपाचचारीत्रकहियेछिये प्रथमसमाधिकचारीत्रकहेतां
जेस्वसमाधिऐटलेआत्मस्वरूपने विशेषमणता तेनेस्वस
माधिकहिये

शिष्यवाक्य--समाधीतोघणीकरीतथाजोगनुसाधनथा
यत्यारेसमाधीतोथायठे अनेतमेतोआत्मानिरमणतानेस
माधिकहोगे.

गुरुवाक्य--जेजोगसाधनथकीसमाधीचढावठे अनेखट
चक्रनुसाधनकरेठे अनेरुचककुंजकप्रमुखसाधीतथासुर
स्वासरुधीनेसमाधीचढाववी तेनेहठसमाधिकहिये तेमा
मेहेनतएककरोरुपैयानीछे अनेप्राप्तीएककोडीनीछेक
दापिकोइकहेशेकेतमेनथीमानता तथाएवुकहोगे तेनेक
हियेकेभाइअमारेतोएवातनोरागद्वेषछेजनहि अनेअमा
रेमतेपणअमेकहेतानथी उमियास्वामीक्रतुगुणस्थानक
करमारीहयंथछे तेनीटिकानेविशेएनोविस्तारघणोठे ते
जोशोतोतमनेसमजपडशे माटेसहेजसमाधीनुसाधनक
रवुंसहेजतोआत्मानुंस्वरूपजछे तेनीजेस्वभावेरमणता
थायतनेसहेजसमाधिकहिये एवाजेसमाधीवततेनेसामा
यककहिये तेसमायकनावेभेद सर्वविरतीसमायकतेसा

धुतेसदायएवीसमाधीमाजरमणताकरे नेदेशविरतीसमा
यकंकहेताश्रावकतेनेसमाधीमानिरंतररहीनाशके शामा
टेकेगृहस्थीतेथीनिरंतररमणताथायनहि तथागुणठाणुप
णपाचमुतेथीतेप्रमाणेसमाधीहोय तेनेसमायकचारीत्रक
हिये तथाबिजुबेदोपस्थापननामाचारीत्रकहियेछियेजेपु
र्वेकहीजेसमाधीतेथकीभ्रष्टथाय शार्थीकेपुर्व क्रतकर्मना
जोरथकीप्रणामनीयाराफरे तेथीकरिनेआश्रवजावमाजि
वजांयतेवारेसमाधीगुणनरहे त्यारेसमायकचारीत्रपण
नारह्यु तेपाछोपोतानाआत्मानोउपयोगदेइनेपुर्वकृतक
र्मनेछेदीने पाठोचारीत्रस्थापनकरेएटलेज्ञानदर्शननेविषे
अखरमणकरेतेनेबेदोस्थापनचारीत्रकहिये-

हवेत्रीजुपरिहारविशुद्धचारित्रकहियेछिये एटलेअशु
द्धनोपरिहार तेतोआत्माविशुद्धथाय एटलेअशुद्धजेराग
द्वेषनाप्रणामनेघटाडवुं उपाधीनेघटाडवु अनेपोतानास्व
रुपनुंनिर्मलपणंकरवु तेनिर्मलशार्थकीथाय केभेदज्ञान
प्रथमप्रगटे त्यारेआत्मानिर्मलथाय एटलेभेदज्ञानतेशु
कहिये जडचेतननीवेहेचणतेनेभेदज्ञानकहिये तेसक्षेपथ
कीदेखाडियोछिये जेरुपीसाकाररागद्वेष क्रोधमानमाया
लोचकामविकारइत्यादिक जेवस्तुछे तेसर्वेजडनाघरनी
छे तथाज्ञानदर्शनचारित्रविरजआदिदेइनेजेवस्तुछे तेस
र्वेचेतननाघरनीछे एमसमजीनेजडनीवस्तुनेदूरकरे. ने

आत्मानिवस्तुपोतानीजाणीने तेनेविषेरमणताकरे एट
 लेजडनोपरिहारआत्मानुविशुद्धतापणुं तेनुनामपरिहार
 विशुद्धचारित्रकहिये तथाचोथुं सुक्ष्मसंपरायचारित्रतेश्रे
 णीगतेठे एटलेजेजीवश्रेणीआरांहे तेश्रेणीविप्रकारनीछे
 एकउपसमश्रेणी बीजीक्षपकश्रेणी उपसमश्रेणीनोकर
 नारीजीवपाठापडे अनेक्षपकश्रेणीनोकरनारी जीवपाठा
 नापडे आद्रष्टातेकेजेमचुलानी तथाबीजिजग्योयेअग्निठे
 तेअग्निनेएकपुरुषतो राखप्रमुखनाखीनेदावे तेकोइना
 जीवामानाआवे केअहिंयांअग्निठेएवीकरे अनेएकपुरुष
 पाणीनाखीनेतेअग्निनोक्षयकरे तेवेमांकोनीअग्निप्रगटथा
 य केजेधणीयेपाणीनाखीनेअग्निनोक्षयकस्थोछे तेनेकाइ
 अग्निप्रगटथवानीछेनहि अनेजेधणीये राखनांखीनेदा
 बीछे तेनेएअग्निप्रगटथाशेज तेद्रष्टातेअहिंयावेश्रेणीनु
 स्वरूपजाणवु जेजिवआठमुंअपूर्ण करणनामागुणठाणे
 जाय त्याथीश्रेणीविधाय ज्यांसुधीसातमागुणठाणामाहो
 य त्यासुधीकाइश्रेणीप्राप्तिथायनहि हवेजेआठमानेविशे
 श्रेणीछे तेश्रेणीकहेतांमुक्तिपुरनेविषे जवानोरस्ताते त्यां
 थीवेरस्ताठे एकजमणो अनेएकमावो तेजमणोरस्तेचडे
 तोतेधणीतेनगरेपहोचे तथामावेरस्तेचडे तेरस्तातोरान
 नाठे तेकेटलीकजोयसुधीचाले पगीआगलतोमार्गवेनहि
 तेवारेपाछुफरीनेमुलठेकाणेआववुपडे एटलेअहिंयांजेज

मणोरस्तोतेक्षपकश्रेणीकहिये डाबोरस्तोतेउपसमश्रेणी
 कहिये जेधणीउपसमश्रेणीयेचडेतेधणी कखायतथामि
 थ्यातनेदावतोचाल्योजाय नेजेक्षपकश्रेणीयेचडे तेमि
 श्वातप्रमुखनोक्षयकरतोचाल्योजायतेक्षयनोकरनारोजा
 वतकेवलपामीमांक्षेजाय अनेजेदावतोचाल्योजाय तेश्र
 गीयारमेगुणठाणासुधीजाय पणआगलरस्तोछे नहि
 मांटेतेनेपाछुफरवंपमे अयवाजोआवखुंआविरह्युंहोयतो
 कालप्राप्तथाय हवेजेपाछोवले तेशाद्रष्टातेकेजेमकोइपं
 खीनेपगेदोरीवांधीनेउराडेछे तंपखीजेटलीदोरीहोय ए
 टलीभोंधउडे पणतेथकीआगलजवायनहि अनेतेदोरी
 वालोदोरीखेचे एटलेठकाणेआववुपमे तेमउपसमश्रेणी
 वालानेमोहनीकर्मनोनाशथयीनथी एतोउपसमावेलीछे
 तेप्रकृतिपाछीप्रगटथइने तेजिवनेअगियारमेगुणठाणीथी
 पाछोखेचेएमजाणवुं हवेतेवेश्रेणीनेविषेसुक्ष्मसंपरायचा
 रित्रछे तेनुंस्वरुपकिंचितदेखाभियेछिये हवेतेआठमेगुण
 ठाणेगयोथकोप्रथमहाशरतअरंतभयशोकदूगंछा एख
 टकनेखपावे तथाउपसमावे तैवारपछीनेवमेगुणठाणेसं
 जलनी क्रोध मान माया पुरुपवेद स्त्रीवेद नपुंशकवेद
 खपावे तथाउपसमावे तैवारदेशमेगुणठाणेएकसंजलनी
 लोचरहे पणतेलोचधन्यधान्यादिक जन्वस्तुनोनहोय
 अत्यंतसुक्ष्मपोतानास्वरुपप्रप्तनोहोय तथाअगियारमे

गुणठाणे तेलोन्नतपसमीगयोहोय अथवापोतानास्वरूप
नीप्राप्तियवानोविचारमनमाथाय जेमाराआत्मानीमुक्ति
करुएवोलोन्नथायतोपाठोअगियारमेथीपडीने दशमेअवि
शीष्यवाक्यः--स्वांमीएकोइपरभावमातोपेठोनथी.
पोतानाआत्मानीमुक्तिताकताउलटोपाठोपड्योएशु.

गुरुवाक्य -हेनद्रइहां आत्मानीमुक्ती वीचारीते
साचीवात पणएनुनामपणलोचकेहेवायअनेलोचनेते
जडवेअनेजडवेते आत्मानागुणनोघातकरतावे माटेएट
लोएलोच समजुनेनजोइये.

शीष्यवाक्य--स्वामी-आत्मानीमुक्तीत्या-नवीचारेतो
त्याशुवीचारताहशे.

गुरुवाक्य--हेदेवाणुप्रियत्यापोतानीपरनीकशीखवर
नथीत्यातोद्रव्यगुणपरजायभीन्नभीन्ननोखाकरेतथागुणछे
तेपरजायमासंक्रमावे अथवाद्रव्यमासक्रमावे अथवा
गुणपरजायवनेद्रव्यमासक्रमावे एवीरीतित्यांभेदज्ञानत
थाजेदाजेदज्ञानवे तेपोतानास्वरूप रमणजछे तेनेसुक्ष्म
सप्रायचारीत्रकहीए हवेपाचमुजथा क्षायकचारीत्रकही
एगीये॥ एटलेजथाक्षायककहेताजथारथक्षयकयोते जेणे
मोहनीकरमनो एटलेपुरवेसुक्ष्म सपरायचारीत्रनेवीशे
दसमेगुणठाणेसुक्ष्मनो जेलोभरह्योहतो तेलोभनोक्ष
यकरयोएटलेसंपुरणमोहनीकर्मनोक्षयथयो तेवारेतेजिव

क्षीणमोहीथयो हवेतेजिवनामननाप्रणामनोकलोलचमे
 नहिशामाटेजेनदिरारुपमोहनीनोजेकेफहतो तेकेफना
 जोरथीअनेकतुरंगउठताहता तेनोहनीकर्मनोक्षयथयोए
 टलेधेलगामाहेथीगइ तेवारितेनोआत्माथीरजावथयोजेम
 सरोवरनुपाणीवायुबंधथयेथके थीरजावरहेतेमएआत्मा
 नोउपयोगथीरभावथयोएटलेजथार्थचारीत्रथयु एटलेक्षा
 र्यककहेतांमोहनीनोक्षयकहिये थीरजावकहेताचारीत्रक
 हिये तेजथार्थकहेता जेवुंसत्तागतनेविशेवस्तुपणेहतुतेवुं
 जप्रगटपणेथयुं तेवारितेनेएकत्वजावथयो जेमजलनीजे
 सितलताअनेजलरसनोस्वाद अनेजलएत्रणेएकजछेर
 सस्वादनेसितलतापणुतेकांइजलथकीजुदूनथी तेमजगु
 णपरजायसहिततेजद्रव्यबे कटापीकोइअहियांकहेशेके
 पाणीतोउनुंपणहोय तेनेकहियेकेविभावथकीपाणीमांड
 णतापेसेबे पणस्वभावथकीनथी जेअग्नीनाजोगथी
 पाणीउण्णथाय पणअग्निथकीअलगुकरीये अनेधमीवे
 थापएटलेसितपणुथाय तेमआपणोआत्माकखायादिक
 नाजोगथकी कांभी क्रोधी मानी लोभी अनेकनामधरा
 वेबेपणतेमोहनीकर्मनोनाशथयो तेवारिस्वजाविकनीरवि
 कल्पनिरउपाधीथीरप्रणामेजहोय एवंएनेदज्ञानत्यांप्र
 गटेत्यांकांइआत्माअने आत्मानागुणपरजायजुदानथीए
 टलेध्याताधेयध्यान, एकत्वपणेभजे एटलेधेपदार्थपरमा

गुणठाणे तेलोन्नतपसमीगयोहोय अथवापोतानास्वरूप
नीप्राप्तिथवानोविचारमनमाथाय जेमाराआत्मानीमुक्ति
करुएवोलोन्नथायतोपाठेअगियारमेथीपडीनेदशमेआवे

ः शीष्यवाक्यः--स्वामीएकोइपरभावमांतोपेठोनथी

पोतानाआत्मानीमुक्तिताकताउलटोपाठेपड्योएशु

गुरुवाक्य--हेअद्रइहा आत्मानीमुक्ती वीचारीते
साचीवात, एएएनुनामपणलोन्नकेहेवायअनेलोन्नठेते
जडठेअनेजडठेते आत्मानागुणनोघातकरतावे माटेएट
लोएलोन्न समजुनेनजोइये

ः शीष्यवाक्य--स्वामी आत्मानीमुक्तीत्यां नवीचारेतो
त्याशुवीचारताहशे

गुरुवाक्यः--हेदेवाणुप्रियत्यापोतानीपरनीकशीखबर
नथीत्यातोद्रव्यगुणपरजायभीन्नभीन्ननोखाकरेतथांगुणछे
तेपरजायमासक्रमावे अथवाद्रव्यमासक्रमावे अथवा
गुणपरजायवनेद्रव्यमासक्रमावे-एवीरीतित्याभेदज्ञानत
थाभेदाज्ञेदज्ञानठे तेपोतानास्वरूप रमणजछे तेनेसुक्ष्म
सप्रायचारीत्रकहीए हवेपाचमुजथा क्षायकचारीत्रकही
एवीये॥ एटलेजथाक्षायककहेताजथारथक्षयकयोठे जेणे
मोहनीकरमनो एटलेपुरवेसुक्ष्म सपरायचारी
दसमेगुणठाणेसुक्ष्मनो जेलोभरह्योहतो तेलो
यकरयोएटलेसपुरणमोहनीकर्मनोक्षयथयो ते

पारणुपगेवेउपवास पगेपारणु पगेत्रणउपवासपठीआ
 ठठठपगेएकउपवासथीमानीनेसोलउपवाससुधीचडे प
 गीचोत्रीसछठकरे पाछासोलउपवासथी एकउपवाससु
 धीउतरेपाछाआठठठकरे पछीअठमथीएकउपवाससुधी
 उतरेएटले एकपरवाणीथाय तेएकवरसत्रणमासत्रावीस
 दिवशेएकपरवाडीपुरीथाय एवीचारपरवाणीकरवीतेबि
 जिपरवाणीयेत्याविगेनावारे त्रिजिपरवाणीयेपात्रनेलेप
 लागेएवीवस्तुनावारे चौथीपरवाणीयेआवेलकरे एवी
 रीतेएरत्नावलीतप पांचवरसएकमासनेअठवीसदिवशे
 एतपपुरीथाय तेएकपरवाडीयेअठासीपारणाआवे एम
 चारपरवाणीयेथइने त्रणसेनेवावनपारणाआवे तेनोजंत्र

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०

द्वये कनकावली तप कहीये छीये ते पुरवेजे रत्नावलीतप तेज प्रमा
 णेकरवानो फकन फरक एटलोकेंजे आठ आठ ठठक्यावे तेअठम
 स्वा.अनेचोत्रीस ठठक्याते तअठमकरवा तेनीएक परवाडीये वरस
 एक मास ५ पांच अने दिवस २२ बार चार परवाडीये यइने वर
 ५ पांच मास एनव दीन अराड तेनोजंत्र

इवे खुडपडीमा तप कहीयेछीये प्रथम एक उपवास करवो पछीवे

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

पठीत्रणपछीचारपठीपांचपठीत्रणपछीचारपठीपांच
पठीएकपछीवे पठीपांचपठी एकवेत्रणचार पछीवे
त्रणचारपांचएक पठी चारपांचएकवेत्रणएनीएक
परवाडीये तपोदीन ७५ पारणां दीन २५ चार परवाडी थइने

वरस एकने मास एक दीन १० एतपपुरोथाय पारणां पुरववत.

हये महाभद्रपडीमा कहीयेछीये ते प्रथम पांच उपवास करवा पठीठ

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

पठीसात पठीआठ पछीनवपछीसात आठनवपाचछप
छीनवपछीपांच एमअनुक्रमे उपवास करवाते नोजत्र
एम महाभद्रपडीमानात पोदीन १०५ पारणां दीन २५
सरवेमजीने मास छत्रने दीन वीस एक परवाडीये जाण

वोचार परवाडीये थइने वरस बेमास बेदीन २० थाय एतजे एतपपुराण
थाय पारणानी रीत पुरववत.

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

हवे अतिभद्रपडीमा कहीयेछीये प्रथम एक
उपवास करवो पछीवे पछीत्रणपछीचारपछीपांच
पछीछपछीसातपछीचारपछीपांचपछीछपछी
सातपछीएकवेत्रणपछीसातपछी एकवेत्रणचा
रपांचछ पछीत्रण एमअनुक्रमे उपवास करवा अ

तिभद्रपडीमा तपोदीन १९६ पारणा दीन ४९ सरवेमजीने आठमहीनले
पांचद्विस एक परवाडीना जाणवा चार परवाडीयो थइने वरस बेमास
आठदीन २० वीसे एतपपुरोथाय पारणां पुरववत

हवे अतिशुद्ध पडीमा कहीयेछीये. प्रथम एक उपवास करवो
पछीवे पछीत्रणपछीचार पछी पांच पछी छ पछीसात पछीआ
ठपछीनवपछी पांचपछी छ पछीसात आठनव एकवेत्रणचार
पछीनवपछीएक पछीवे त्रणचार पांच छ सात आठ पछी

१	२	३	४	५	६	७	८	९
५	६	७	८	९	१	२	३	४
९	१	२	३	४	५	६	७	८
४	५	६	७	८	९	१	२	३
८	९	१	२	३	४	५	६	७
३	४	५	६	७	८	९	१	२
७	८	९	१	२	३	४	५	६
२	३	४	५	६	७	८	९	१
६	७	८	९	१	२	३	४	५

चार पांच छ सात आठ नव एकले
 त्रण एम अनुक्रमे उपवास करया
 साथेना जंत्रमां वताव्या प्रमाणेश्र
 तिगुधपडीमा तपदीन ४३५ पार-
 णादीन ६१ सरवमजीने वरसरा
 कमास चारदीन ६ एकपरवाडी
 थाय चारपरवाडीये मजीने वरस
 पांचमास चारदीन चोवीस एतप
 पुराणथाय. पारणा पूर्वे कहाप्रमाणे

इये महागुधभद्रपडीमा कहीये छीये प्रथम एक उपवास पछीचे उ ४५५

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५
११	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४
१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८	९
५	६	७	८	९	१०	११	१	२	३	४
९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७	८
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१	२
८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६	७
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१
७	८	९	१०	११	१	२	३	४	५	६

पछी त्रण पछी चार पछी पाच पछी
 छ पची सात पची आठ पची नव पची
 दस पची अग्नीयार पची तसात आ
 वनवदस अग्नीयार एकवे त्रण चा
 रमाच पछी अग्नीयार पछी एकवे
 त्रण एम अनुक्रमे उपवास जंत्रमां
 वताव्या प्रमाणे करया अतिमहा
 गुधपडीमाना तपदीन ७२६ पार
 णादीन १२१ सरवमजीने वरस

वे मास चारदीन ७ प्रथम परवाडी थाय चार परवाडी थइने वर
 सनवमास ४ चारने दीयस २६ एतप पुराणथाय पारणा पूरव प्रमाणे
 अथ करम घाती सपलस्वीये छीये प्रथम छठ आठ कर-
 या पारणे वेसए करवु. एम आठि ठठ सजग करवा आंतरा र
 हीत गणए नमो नाणस गणवु नोकार वाली २० वीस गणयी

वारवर्षनोसलेखणात्पकहियेठियेतेप्रथमचारवर्षसुधी
 विगेनोत्यागकरवो विजाचारवर्षनेविशे उपवासआदिदे
 इनेविचित्रप्रकारनोअठमसुधीतपकरवो तेवारपछीएक
 वर्षएकान्तरेउपवासकरवा नेपारणेआंबेलकरवु तेपगीमां
 स ६ अठमअठमनोतपकरवो तेवारपगीमांस ६ अठम
 उपरनोविकटजक्ततपकरवो तेवारपछीवर्षएकआंबेलनो
 तपकरवो तेवारपछीवर्षएकआंबेलआदिदेइने मासखम
 णसुधीशक्तिसारुतपकरवो एवीरीतनोवारवर्षनोसलेख
 णात्पजाणवो तथाजवमधपडीमाएकमासनोतपतेनी
 विगतजेप्रथमशुक्लपक्षनेपद्मेथकीमांडवो तेप्रथमतपेदां
 तीएकआहारनीतथा दांतीएकपाणीनी विजेदिनेदांतीव
 वेआहारपाणीनीएमजावतपुनेमनेदिने पंदरदांतीआहा
 रअनेपदरदांतीपाणीनी पाछुक्रश्वपक्षमांपडवेनेदिनेचउद
 दांतीआहारनी तथाचउदपाणीनी एमजावतउंगणत्रिश
 मेदिवशेएकदांतीआहारनी तथाएकपाणीनीत्रिशमेदिव
 शेउपवासकरवो तनुनामजवमधपडीमाकहिये तथाव
 जरमधपडीमाएकमासनीहोय तेपणप्रथमशुक्लपक्षनीए
 कमथीमांनवो तेप्रथमदिवशेदांतीपंदरआहारनी तथादां
 तीपंदरपाणीनी विजेदिनेउददांतीआहारनीनेचउद
 तीपाणीनी एमजावतपुनेमनेदिवशेएकदांती
 नेएकदांतीपाणीनीतथावदने प्रथमनादिवशेए

हारनी तथा एकपाणीनी वद २ वेदाती आहारनी ने वेदाती
 पाणीनी एमजावत अमावास्याये पदरदाती आहार अने
 पंदरदाती पाणीनी तेने वजरमधपडीमा कहिये इत्यादि
 कतपसिद्धातेने विगेवीजापणकह्याते तथा हालमानवाक
 ल्पीततपघणाथायठे एसवेने इतरकहेता थोडाकालनो अ
 णसणतपकहिये तथा जावजिव अणसणतप तेनावेभेद
 एकपादो उपगमण अणसण अने एकमतपचखाण अणस
 णहवेपादो उपगमण अणसणनावेभेद एकसीह अनी प्रमु
 खनो उपसगंथाय तोपणत्याथी डगेनहि विजा एवा उपस
 गं वनाजेमवृक्षनी डालकापेली पडी होय - तेमहालेचालेन
 ही जतपचखाण अणसणनावेभेद एकसीहादीक उपसगं
 उपनाथका जतपचखाणकरे वीजो ज्ञातपाणीविना उपस
 गं पचखे एवेभेद एटले अणसणतपकह्यो हवे अणोदरीत
 पकहीयेगीये तेनावेभेद एकद्रव्य अणोदरी एकभाव अण
 दरी द्रव्य अणोदरीनावेभेद एक उपगण अणोदरी वीज
 भातपाणीनी अणोदरी उपगण अणोदरीनावेभेद एव
 पातरुकाष्ट अथवामाटीनुराखवु तेपात्र अणोदरीकहीयेह
 वेभातपाणीनी अणोदरीना अनेकभेद आठकवल आहार
 नाकरे तेने अल्प आहारीकहीये कवलकेहेतांकुकडाना
 डाप्रमाणेकोली होय वारकवलजे आहारकरे तेने
 अडया अणोदरीकहीये तथा चौवीसकोलीया आहार

करे तेने चोथाजागनी अणोदरीकहीये एमजावत
 एकत्रीसकवलनोआहारकरे तेने पणअणोदरी कहीये
 शामाटेकेवत्रीसकवलनुपुरुपने आहारनुप्रमाणतेथीए
 कत्रीसवालोअणोदरीमाछे तेथीस्त्रीनेअठावीसकवलमु
 परीमाणछे तेनेसतावीससुधीअणोदरीकहीयेतेथीजावत
 आठकवलथीतेएकत्रीसकवलसुधी अणोदरीनो तपकही
 ये अनेवत्रीसकवलपुरालेतेने परमाणुप्रेतअहारकही
 ये अथवातेमांथीकाइएकगीख अथवाएकग्रासउणोलेते
 नेपणपरमाणुप्रेतकहीये पणएकगीखेउणोरहे त्यांसुधी
 तेसाधुपेटन्नरोनाकहीये एटलेजातपाणीनीअणोदरीक
 हीतथाद्रव्यअणोदरीकही.

हवेभावअणोदरीकहियेछिये तेनाअनेकभेदछे अल्प
 क्रोध अल्पमान अल्पमाया अल्पलोचन अल्पज्ञान
 अल्पबोलवु अल्पकलहइत्यादिक एभावअणोदरीकहि
 ये एटलेअणोदरीतपकज्ञो. हवेत्रीजोत्रतीसंक्षेपतपकहि
 येठिये जेगोचरीनाअनेकभेदछे द्रव्यथकीअभिग्रहकरे
 क्षेत्रथकी कालथकी जावथकी अभिग्रहकरे एटलेद्रव्य
 थकी जेफलाणोद्रव्यमलशेतोलेइशुं तथाक्षेत्रथकी जेआ
 गाममा अथवाफलाणांगाममा अथवाफलाणीपोलमां
 अथवाफलाणामेहेलामामंलशेतोलेइशुं कालथकीअभि
 ग्रहफलाणीवैलायेमलशेतोजलेइशुं भावथकीअभिग्रहजे

स्त्रियथवापुरुषवाकुवारीकाप्रमुख आवीरीतेआपशेतोले
 इशु अथवाजाजनमाहेधीउपाडेलुहशेतोजलेइशु अथवा
 नाजनमांथीबीजाभाजनमाघालेलुहशेतोजलेइशु अथ
 वाआपणेकाजेउपाडीने बीजाजाजनमाघाल्युंहशेतोलेइ
 शु अथवाअनेरेजाजनेघालेलीवस्तु आपणेकाजेउपाडे
 लीहशेतोलेइशु अथवाअनेरानेपीरसेलुंहशेतोआपशेतोले
 इशु अथवावस्त्रनेविशे ठोकला ठोकली खाखरा प्रमुख
 मोकलाकरेलाहशे अनेतेमांथीलेइजाजनमांघालताह
 शे तेआपशेतोलेइशु अथवाकोइनेत्याथीलावेलुं तेआप
 शेतोलेइशु अथवाकोइनाजाणामापीरस्युछे तेनेवधारेप
 ड्यु तेआपशेतोलेइशु अथवातेपाछुलेइने बीजाठामने
 विशेघाल्युठे तेआपशेतोलेइशु अथवानिदानेस्तुतिभेली
 थायतेवुजेरसवतिअनेपाणीखारुएवोजोगमलशेतोलेइशु
 उशरीयुहेहेताएनेपीरस्युतेलेइशु अथवानिदनीकआहार
 लेइशु अथवालोकनेवखाणवाजेथो प्रीयकारीमोदकपर
 मुखआहारतेमलशेतोलेइशु अथवाकटुकआहारपरंतु
 वेगुणकारीतेमलशेतोलेइशु इत्यादीकआहारनोतरैतरै
 हनोअनीग्रहकरे तथाहवेदातारनोअनीग्रहकहीयेठीये
 खरमेहाथेदेतोलेइशु अथवाअणखरमेहाथेदेशेतोलेइशु
 अथवाजेद्रव्येहाथखरड्योठे तेद्रव्यआपशेतोलेइशु अथ
 वावस्त्रादीकअनेकप्रकारना अहीयाअनीग्रहकेहेवा अथ

वाकोइथीक्षुधावेदनीनखमातीहोपतोशीतउष्णजेवोमल
 शे एवोलेइशु अथवागोचरीएमोनपणेविचरशु अथवा
 पोतानीद्रुटीएदीठो आहारदातारआपशेतोलेइशु अथ
 वाअण्णदीठोआपशेतोलेइशु अथवादातारेजेआहारनंपु
 छयु तेजआहारआपशेतोलेइशु अथवाजीक्षाएजेवोमल
 शेतेवोलेइशु अथवाघणुअनस्तवनाकरीआपशे तोलेइ
 शुं अथवाअज्ञातघरनीभीक्षालेइशु अथवाग्रहस्तीएमो
 होआगललावीनेमुक्युतेजलेइशु अथवामानसहीतजेआ
 हारग्रहणकरवाजोग तेआहारमलशेतोलेइशुअथवाशुद्ध
 निर्दोषमलशेतोलेइशुअथवादातीनीसंख्यायेआहारलेइ
 शुं इत्यादीकत्रतीसंखेपतपनाभेदजाणवाएटलेत्रतीसंखे
 पतपकह्यो हवेरसचाहुचोथोतपतेनाअनेकभेदछे' एटले
 घीप्रमुखझरतेथके एवीवगेनोत्यागकरे अरसकेहेताअ
 डद चएया वाल इत्यादीकनोआहारलेइशु अथवाआंवे
 लकरीशु अथवाओसामणमाहेलाशीतनीकलेतेनेजवाव
 रीशुं अथवाहींगपरमुखेवघारेलुहशे तांतेआहारनहीक
 रीये अथवाजुनुंधानखाणपरमुखतेनोआहारकरीशुं अथ
 वाअतआहारकेहेतां उखलारवलाजिलीहशेतोलेइशुअ
 थवापतआहारकेहेतांटाढोपरमुखआहारलेइशु अथवांलु
 खोआहारलेइशु तेसर्वरसनोत्यागतेनेरसचाहुतपकह्यो
 हवेकायकेशतपकहीयेछीये तेनाअनेकभेदछे काउसग

तत्त्वसारोद्धार

करीनेउभुरेहेवु अथवाकाउसगकरीनेउचारहीनेहाजव
 नही अथवाउकम्प्रासनेवेसवुअथवावारपडीमापरमुख
 साधुनीवेहेवी अथवावीरासनेवेसवु अथवापलाठीवा
 लीनेवेसवु अथवावकरशियालनीपेरेवेसवु अथवाडाड
 नीपेरेसुवु अथवाताहाफतापवेनीआतापनालेवी अथव
 वस्रउपगरणनराखवु अथवाशरीरेखाजनखणवी मुख
 थुकपरठवुनही गलेउतारीजवुशरीरनुजेसुसुरस्वारीमवे
 शनखपरमुखनसमारवा अथवागणगारनकरवो एका
 कलेशतपकह्यो हवेप्रतीसलीनतातपकहीयंछीये तेनाच
 रभेदछे इद्रीप्रतीसलीनता १ कखायप्रतीसलीनता २
 जोगप्रतीसलीनता ३ वीवक्तप्रतीसलीनता ४ हवेइद्र
 प्रतीसलीनतानापाचभेद श्रोतइद्रीकहेता काननावीश
 नेविपेपरवरतवु तेनेरुधवुएटलेरुडामाठाशब्दकाननेवि
 आवीपड्यातेउपररागद्वेशनकरवोतेनेश्रोतइद्रीसलीनत
 कहियेअथवाचक्षुइद्रीसलीनताकेहेताजेरुपरुडामाठांदि
 वा तेनेविपेचक्षुनुपरवरतवुरुधवु एटलेनेत्रनोविशयजे
 चवरणनारुपनेविपेछे तेरुपनेविपेरागद्वेशनाकरवोहवेश
 हणइद्रीसलीनताकहीयेछीये एटलेनासीकातेनेगधनेव
 पेपरवतवु तेथकीरुधवुएटले सुरभीगधदुरभीगंधनास
 कानेआवीप्राप्तथाय तेनोद्वेशनकरवो हवेरसइद्रीसली
 ताकहीयेछीयेएटलेजीभनोस्वजावतेरसनेश्रृणकज्जानं

वे तेनेविपेपरवर्तवु तेनेरुधवुएटले पाचप्रकारनारसनी
 ग्रहणकरताजीभठे तेजेजेरसआवीनेप्राप्तथाय तेशुच
 अथवाअशुचहोय तोपणद्वेशरागनकरवो हवेफरसइंद्री
 सलीनताकहीयेछीये एशरीरनेफरसनेविपे परवर्तवानो
 स्वप्नावछे तेनेरुधवातेआठप्रकारनाफरसठेतेनेविशेश
 रीरनोविषयछेतेफरसआठेप्रकारनारुडाअथवामाठाआ
 वीप्राप्तथायतेनेविपेरागद्वेशनाकरवोएटलेइंद्रीसलीनता
 तपकह्यो हवेकसायपडीसलीनतातपकहीयेछीये तेनाचा
 रप्रकार क्रोधजेरीसनाउदयेकरीउपजवुतेनेरुधवुअथवा
 क्रोधआवीनेप्राप्तथयोछे तेनेनिश्फलकरवो सामानावच
 नादीकहोयतेसहीजवा अथवामानजेउदयआवतानेरुध
 वु अथवाजेउदयआवीप्राप्तथयो एवोजेअग्निमानतेनेनि
 श्फलकरवो तथामायाकेहेताकपटतेनेउदयआवतानेरुंध
 वु अथवाआवीप्राप्तथाय तेनेनिश्फलकरवु तथालोभकेहे
 ताइगवठा रुपतेउदेआवतानेरुंधवु अथवालोचनोउदे
 आवीप्राप्तथाय तेनेनिश्फलकरवुएटलेकसायप्रतीसली
 नतातपकह्यो हवेजोगप्रतीसलीनतातपकहीयेछीयेतेना
 त्रणभेदठे एकमननोजेवेपार जेपरजुजवो तेनेबहूप्रकारे
 करीनेपणसंवरवो तथावीजोवचनंसलीनताकेहेतां जेअ
 नेकप्रकारिनांवचनपर जुंजवातेनेसवरवु तथात्रिजोकाय
 जोगकहेताजेकायानोवेपार आश्रवथकीरोकवो हवेम

ननोजेवेपारतेनुसंवरवुं एटलेमाठुजेमनतेनेरुंधवुं जला
मननीउदारणाकरवी तेनेमनप्रतीसलीनताकहिये तथा
वचनजोगनावेपारनुंरुंधवुं एटलेमाठांजेवचनतनुं रुंधवु
जलाजेवचनतेनीउदारणाकरवी एटलेवचनजोगनीप्र
तीसलीनताकहिये हवेजेकायजोग एटलेकायानोवेपार
संवरवोएटले समाधीसहीतवर्तवु एटलेहाथअनेपग
काचवानीगोडेगोठवीराखे इद्रीयोपाचेगोपवीराखवीश
रीरनाअगोपांगतेनेकायजोगप्रतीसलीनताकहिये एट
लेजोगसलीनताकह्यो हवेविवक्तसलीनताकहियेछियेए
टलेउपाश्रीये स्त्री पशु नपुपक प्रमुखनहोय तेउपा
शरिरहेवुं तथापाटवाजोठपाटलाप्रमुख तेपणस्त्रीयादि
कनहोयनेशेववुं भोगववु वलीउत्तमवनवाभीतथाउदान
अथवामोटावृक्षनीहेठे तथादेवकुलनेविशे तथाघणाज
एवेसताउठताहोय तेवीसजानेविशे तथापाणीभरताहो
यंतथापीताहोयत्यातथाघणाकिरीयाणालेवेकरथतोहोय
त्यास्त्रीमनुपनीपणहोय तथागायभेशनपुशकएथकीरही
तएवीजेवस्तीहोय एवाउपाशरानेविशे पराशुतएटले
अचीतनिरदोशत्यापाटपाटलावाजोठ तथाअठीगणमु
कवानुंपाटीयु तथासंथारोगानप्रमुखधासनो अथवाउद
ननोइत्यादिकवस्तीपासेमागीलेइनेविचरे तेनेप्रतीसली
नताकहिये एटलेएछेएवहाजतपकह्या एटलेएवहाजत

पथकीकर्मतोनाशथायनहि कोइकहेगेनांशनथायत्यारे
शास्त्रवालेगावास्तेकह्या तेनोउत्तरजेशास्त्रवालेकह्यातेने
व्यवहारचलववो अनेपोतानादगननीनोखीउलखाएक
राववो प्रथमतोएजकारण बीजुएकेएवातपथकी सासन
नीशोभाघणीबंधेसासनसारुलागे त्रिजुएकेतेधणीनीवा
हाजयकीइद्रीयोविजाविकारमानपेसे इत्यादिक कारण
जाणवापरंतुएनेविशे कांडआत्मउपयोग एवोशब्दतोछे
जतहि अनेचारीत्रनामआत्मानुठे तोजेवस्तुचारीत्रवेतो
तेवस्तुतोएमाठेनहि आतोएकक्रियारुपछे तोक्रियानेवि
शेतोकोइनुमनस्थीररहेनेकोइनुंनारहे जोस्थीररहेतोएप
रमादगुणठाणानीक्रियाठे काइअपरमादीजावतोएमांछे
नहि अनेअपरमादीजावनेविशेतो क्रियाहोयजतहिते
विचारीजुवो हवेजेएवीक्रियाकरेतेथकीकांडमुक्तितोमलेन
हिकेमकेमुक्तिनुप्रथमकारण जेदज्ञानठे तेचोथागुणठाणा
थीमाडीनेआठमागुणठाणासुधीचाले तथानवमुदसमुगु
णठाणुठे त्यांजेदाभेदज्ञानठे नेवारमेगुणठाणेअभेदज्ञान
छेएटलागुणठाणांकहेतां आठमागुणठाणाथीवारमागुण
ठाणासुधीवचननुंउचारणपणछेनहि तथामनद्रव्यगुणप
रजायआत्मउपयोगनाजेगुजरहे तेविनाजोविजिजगाये
जायतोतेगुणठाणारहेनहि पागेठेसातमेगुणठाणेजाय
जावतमिध्यातमांपणजाय तथाअधेधीज्ञानी मनपरजव

ज्ञानीकोइसाधुहोय तेसाधुपणश्रवधीमनपरजवज्ञाननो
 उपयोगदेतां एगुणठाणापामेनहि तेगुणठाणाश्रुतज्ञान
 श्रवलबीछे तेवारमेगुणठाणेअनेदज्ञानते त्याघातीकर्म
 नोक्षयकरीनेतेरमेगुणठाणेकेवलज्ञानपामे तेतोबहोरनी
 क्रियातथाबहारनातपमाकाइछेनहि तेवारैकोइकहेशेके
 आजकाइतेवस्तुछेनहि माटेवहाजक्रियानेतप तेजप्रधान
 छेतेनेकहियेकेवहाजक्रियानेवहाजतपप्रधानछे तेठीकछे
 पणतमेआत्मधर्मनाद्वेशीमाटितमने हजुसमकितगुणठा
 एपणआव्युनथी माटेतमेखुशीपमेतेमकरो पणएकेवुगेके
 जेमलाकडानापुतलाने वरवनावीनेजानलेइनेजाय तेने
 कोइकन्यापरणावेनहि अनेएजानैयालाजखोइनेघेरआ
 वेतेमतमेपणआत्मज्ञानहिणवहाजक्रियानाआमंवरीमाटे
 अनंतोसंसाररखमशी अनेतमाराउपदेशनासानलवा
 वालातेपणअनंतोसंसाररखमशी तेवारैतेवोटयाजेतमेव
 हूकठोरवचनबोलोछो अनेअमेतोवहूपंमितनावचनकह्यां
 छेतेउपरचालीयेगीये माटेअमेशामाटेरखमीये तेनोउत्तर
 जेतमेपडितोनाकहेणउपरथीचालोछो तेकाइपंमितआत्म
 ज्ञानीनाएवावचननाहोय शामाटेकेसमकितवनाआश्रव
 मानाखवाछे नेआश्रवनोवधारोकरवो एवचनपडितनाक
 हेवायनहि पडितहोयतेतोआत्मानुस्वरुपग्रहीनेसंवरजा
 वनीपरुपणाकरे तेनेपडितकहिये तेअधिकारघणाशास्त्र

मांठे नेशास्त्रनांनाम अमेपूर्वेऽधिष्ठांछे तेथकीजाणजो.
 त्यारतेवोल्याजे तेशास्त्रनावांधनारपडीतखरा नेवी
 जाशास्त्रनावांधनारा पंडीततेशुंखोटा तेनोउत्तरजेतेकह्युं
 तेपंडीतखोटा तोएप्रतक्षखोटाजछे शामाटेकेआचारदी
 नकरग्रथनेविशे एवुकह्युछेके ग्रहस्तीनाछोकराने परणां
 ववानेसाधुजाय एवावचननाकेनाराने पडीतकेमकंहीये
 प्रत्यक्षतेमणेपोतानी नेपोतानापरिवारनीआजीवीकावा
 धीछे तथाजेतपमां उजमणांकरवानाग्रंथवांध्या तोते
 नेपुछीयेके पूर्वकह्यातेतपसुत्रमांछे तेनांतोउजमणांकांइ
 छेनही अनेतमेजेनवातपउत्पन्नकर्या तेतपसुत्रमांतोछेन
 ही नेतेनांउजमणातमेवाध्यां तेतमारीआजीवीका चला
 ववासारुवाध्यां केशावास्तेवाध्यां तथाश्रावकनेउपधान
 नुकहोगे अनेतेनाएवाप्रकरणपणवतावोगेजे श्रावकनो
 नोकारपणउपधानवह्यावगरखपलागेनही तेतमेकयासु
 त्रमाथी लावीनेदेखाडोगे जेउपाशकदशांगनेविशे आणं
 दजीआदि दसश्रावकनोअधिकारछे तेणेतुरतधर्मसाज
 की समकीतमुळवारव्रतउचर्यां नेअगियारपडीमाश्राव
 कनीवहीपणउपधानवह्यांतोदीसतांनथी एमजेजेसुत्रमां
 श्रावकनोअधिकारहोय त्यांजोजोतथातमेकहोछोके सा
 धुनेजोगवह्याविनासुत्रवचायनहि तोभगवतीजिनेविशे
 खंधकतापसतुरतदिक्षालेइने द्वादशअगीजण्याइत्यादि

कजेटलासुत्रमांश्रावंकनाअधिकारठे तेसर्वेदिकाउलेइने
 कोइअगीयारअगजण्या कोडद्वादशअगीभण्या तथाअनु
 तरउवाइनेविशे धनाकाकडीएनवमहीनाचारीत्रपाल्युते
 मध्येमासएकतासथारानोगयो आठमासचारीत्ररह्युतेमा
 अगीयारअगजण्यातोतेणेजोगकयेदहाडेवह्या एरुजग
 वतीजिनाजोगमा ठमहीनाजोइये , तोमाडलीप्रातथाआ
 चारीतथादशअंगना जोगवहेताएनेकेटलावरसजोइयेते
 विचारीनेजवावदेजो एटलेएग्रथनावाधनाराये पोतानी
 आजिवीकावाधीठे पणकाइधर्ममार्गवाध्योनथी, तथाआ
 धविधीप्रमुखग्रंथोनेविशे वडोनीतलघुनीत दातणनाहा
 वाखावा प्रमुखनाआचारवांध्या तेनेतेशुधर्मकहिये केते
 नेतेशुंपापकहिये एवाग्रथनावाधनारानेकहोपंमितशीरी
 तेकहिये नेतेनेपडितकहेतेनेपणअज्ञानीकहिये.

शिष्यवाक्य—स्वामिसुत्रनेविशेपणतमेपुर्वेकह्यातेतपक
 हेलाछे तेधर्ममांखराकेनहि.

गुरुवाक्य—हेभद्रएतोत्याजवहाजतपकह्याछे ; वहाज
 कहेताबहारथीकायानेतपावे तेनेवहाजतपकहिये अभ्य
 तरतपतेकर्मनेवाजे तेनेकहिये माटेवहाजछेएव्यबहार
 ठेमाटेत्याजधर्ममागवेरुयानथी.

शिशवाक्य—धर्ममागवेरुयानथी तोइहाकेहेचानीजरु
 रशीहती.

गुरुवाक्य - नगवानेतोसातेनयवताव्याछे - परंतुधर्म
 तोत्रणनयमांजवताव्योछे तथासुत्रकारेजेतपवाहाजनुं
 मान्वधार्युछे तेसुत्रकारनावचनमांतो घणीवातोनीगंका
 जछे प्रथमतोजसवीजेजीउपाध्याये नवाणुबोलतोत्रण
 मलता काहाडीजमुकेलाछे तथासिद्दांतनामालीक जी
 नचद्रगणीखमाश्रमण दसपुरवधरहता तेनेतथासीधसे
 नदेवाकरने जेचरचाओथइ तेचरचामांपण जिनभद्रगणी
 खमाश्रमणना उत्तरमांकशुठेकाणुदीसतुंनथी तेशिवाये
 पणघणाबोल सिद्दांतनात्रणमलता कल्पितजाशणथा
 यछे परंतुआपणेसिद्दांतनोआधारठे तेथीतेआधारउपर
 चालवानुंवे वादीउत्तर - तमनेसिद्दांतकल्पितभापणथयां
 तोतमेगावास्तेखोटुंजाणीनेमानोछो तेनोउत्तर संखसू
 त्तोकांइखोटांजापणथतांनथी अनेजेजेबोलखोटाजाप
 णथायछे तेअमेसदहतानथी अमारेकांइताहारीपठेहठ
 वादिछेनही जेअमाराघरडाकहीगयातेखरुं एवुगधापुंछ
 तोतमनेसोप्युवे.

शिशवाक्य - स्वामीवाहाजतपतोव्यवहारमांगयो ए
 मातोकाइआत्मानुकारजथवानुंछेनही माटेअमउपरक
 पाकरीने अभ्यंतरतपत्रोलखावो तेमअमेकरिये जेमअ
 माराआत्मानुकारजसिद्धथाय.

गुरुवाक्य - अभ्यंतरतपनाछजेदठेतेकहीयेछीयेप्राश्र्यी

त १ वीनय २ वीयावच ३ सजाय ४ ध्यान ५ काउ
 सग ६ एमध्येप्रथमप्राश्रितनादसनेदठे तेकहीयेछीये
 जेपोतानेलागुजेपाप तेगुरुपासेआवीनेआलोववुंकेहेतां
 केहेवु तेथकीशुद्धथाय तथापडकमवुंतथामीछामीदूकमंदे
 वुतथाआलोववुनेमीछामीदूकडदेवुं वेएकरवातथाअशुद्ध
 जावनुटालवु तेणेशुद्धथायअथवातपनुंदेवुतेथीशुद्धथायत
 थाचारीत्रनीप्रजायनुछेदवु तेथीशुद्धथायतथाफरीथकीचा
 रीत्रदेवुंतेथीशुद्धथाय जेथकीअतीचारलागेतेथकीवेगला
 राखे एदसप्रकारेगुरुपासेप्राश्रितले गुरुजेवुपापदेखेते
 वीआलोयणआपे पणद्रव्यक्षेत्रकालजावजोइनेआपे ए
 टलेआलोयणआपवानामुखंत्यारगुरुठे माटेगुरुनीनजर
 प्रोचेतेवीआलोयणआपे एटलेप्राश्रिततपकह्यो हवेवी
 जोवीनयंतपकहीयेछीये तेनासातभेद ज्ञाननोवीनय १
 दरसननोवीनय २ चारीत्रनोवीनय ३ मननोवीनय ४
 वचननोवीनय ५ कायानोवीनय ६ लोकविनय ७ तेम
 ध्येज्ञाननोवीनयपाचप्रकारनोछे मतीज्ञाननोवीनयकर
 वो तेमतीज्ञाननागुणवरणकरवा १ श्रुतज्ञाननोवीनय
 करवोतेश्रुतज्ञाननागुणग्रामकरवा २ अवधीज्ञानजेमर
 जादाप्रमाणेरुपीद्रव्यनुदेखवु तेनागुणग्रामकरवा ३ म
 नपरजवज्ञानजेअढीद्वीपसज्ञी पंचइद्रीनामननाजावजा
 एतेनोवीनयकरवो एटलेतेनागुणग्रामकरवा ४ केवलज्ञा

नंजंरुपीअरुपीलोकालोकसर्वनाज्ञावजाणेदेखेतेसर्वनोवि
नयकरवोतेतेनागुणग्रामकरवा एटलेज्ञाननोविनयकह्यो
हवेदूरसननोविनयकहीयेछीये एटलेदूरसनकेहेतां सम
कीततेनावेचेद एकससुरखा केहेतांजेगुरुनीसेवाभक्ती
करवी नेवीजोचेदजेआसातनाटालवी हवेजेगुरुनीसेवा
भक्तीकरवी तेनाअनेकभेदकह्याछे तंकहीयेछीये गुरुआ
वेथकेसर्वठामनेविपेउभूथवू सर्वथावेसीरेहेवूनहीगुरुज्यां
वेसवानीअथवासवानीमरजीकरे त्यांतुरतआसनलेइने
जवुंअनेआसननांखीआपवुं गुरुनेआसनआपवुं गुरुनेस
नमानदेवुं एटलेस्तवनाकरवी गुरुनेवस्त्रादीकनीनीमत्र
णाकरवी गुरुनेद्वादसवादणेंवांदवा गुरुपासेहाथजोडीने
आगलउभुरेहेवुगुरुआवताहोयतोसामुजवुं आवीनेरह्या
होयतेनीशेवाभक्तीकरवी गुरुविहारकरताहोयतोपोचाम
वाजवुं आहारप्रमुखनेविपेतेडवाजवुं एटलेएससुरखावि
नयकह्यो हवेआसातनाविनयकहीयेछीये तेना ४५ भेद
कह्याठे अरीहतपरमात्मांनीआशातनाटालवी अरीहतनुं
परुपेलुजेधर्मतेनीआशातनाटालवीएटलेधर्मतेवस्तुस्वभा
विकस्यादवादसहीततेनेधर्मअरीहंतनुंनाखेलुकहीयेतथा
आचारजनीआशातनाटालवीतेआचारजछत्रीसेगुणेकरी
सहीत पचद्रीनीवेगाथाथकीजाणजो उपाध्यायनीआशा
तनाटालवी तेपचीसेगुणेकरीविरोजमान तेनेउपाध्याय

कहीये थीवरनीआशातनाटालवी तेथीवरत्रणप्रकारना
 श्रुतथीवरवदूश्रुतनीआशातनाटालवी वीसवरसउपरां
 तचारित्रनीपरजायथइहोयतेनेकहीये. तथासाठवरसउप
 रातंसाधुहोय तेनेवयथीवरकहीये. हवेकुलनीआशातना
 टालवी एटलेचंद्रादिककुल सिद्धांतमाचालेलाछे. तेनी
 आशातनाटालवी गणकेहेतांगछनीआशातनाटालवी ते
 गछश्रीसीद्धातमांकियाछेतेनी संघनीआशातनाटालवी
 संघकेहेताजेसाधुसमुदाय क्रियापक्षीक्रियानोरगीकर
 नारो. तेनीआशातनाटालवी सजोगीएटलेसरखीसमां
 चारीनांसाधुहोय तेनीआशातनाटालवी मतीज्ञानश्रुत
 ज्ञान श्रवधिज्ञानमेनेपरजवज्ञान. अनेकेवलज्ञान. एपांच
 ज्ञाननीआशातनाटालवी एपदरजेदनीचक्तिवदूमानक
 रेवा एवत्रीसनेद अनेए पंदरेगुणनागुणनी वरणवता
 करीनेवाहेरदिपाववु. एटलेएपीस्तालीसभेदथया एआ
 शातनाटालवारुपवीनयतथादरशनवीनयकह्यो.

हवेचारित्रविनयकहीयेछीये तेनापाचप्रकार सामाय
 कचारित्रशुद्धउपयोगेआदरवु१ छेटोउपस्थापनरुडीरी
 तेपालवु२ परिहारविशुद्धचारित्र रुडीरीतेपालवुतेविन
 य३ सुक्ष्मसंप्रायंचारित्रपालवुं४. जथाक्षायकचारित्रपा
 लवु५ एपांचेनुस्वरुप पुर्वेसंवरद्वारमांकह्युं७ एटलेचारि
 त्रविनयकह्यो. हवेमनविनयलखियेठिये. तेनावेजेद. एक

प्रशस्थमनविनय१- अने एकप्रशस्थमतविनय२ हवे
 अप्रशस्थमनेकेहेतां मननाअभिप्रायजेमाठा कायकादि
 क्रियानाविचारउठे, तेपोतानेपणदुखदाइ नेपरनेपणदु
 खदाइ एवंमाठुंमनप्रवरते तेनेअप्रशस्थमनविनयकहि
 ये तेथकीउपराठुजे स्वगुणपरजायनीरमणता पोताना
 स्वरूपनुध्यावु आत्मानेउधरवानोविचार तेनेप्रशस्थम
 नविनयकहिये एटलेमनविनयकह्यो हवेवचनविनयक
 हियेठिये तेवचननापणवेजेद एकप्रशस्थवचन अने
 बीजुप्रशस्थवचन अप्रशस्थवचनकेहेता जेवचनमाठानी
 कले एकद्रियादिकजीवनेउपद्रवथाय पोतानेकायकादि
 कक्रियालागे सामानेनेपोतानेवेउने उपद्रवनुंजेकारणथ
 यु आश्रवआवेतेवुंवचनजेबोलवुं, तेनेअप्रशस्थवचनवि
 नयकहिये, हवेप्रशस्थवचनविनयकहियेछिये प्रशस्थके
 हेताभलुजेवचनबोलवु, जेकोइजीवनेवाधापीडानथाय
 पोतानेपणनवाकर्मनआवे जुनाकर्मनुंनिरजरवुथाय पर
 नेतथापोतानेसुखदाइएवुंजे अध्यात्मस्वरूप तथाद्रव्य
 गुणपरजायनीचरचा तेनेप्रशस्थवचनविनयकहिये, एट
 लेवचनविनयकह्यो हवेकायविनयकहियेछिये तेनावेप्र
 कार एकप्रशस्थकायविनय अनेबीजोप्रशस्थकायवि
 नय, हवेअप्रशस्थकायविनयकेहेतां विनाउपयोगेकाया
 नेप्रवरतावची तेनासातजेठे उपयोगविनाजेजावुंअथ

वाआववुकरे अथवाउभुरेहेवुंअथवावेसवु अथवासुइरेहे
 वुअथवाखाडप्रमुखकुटीनेजावु तथापांचइद्रीनुप्रवरताव
 वु तेनेअप्रशस्थकायविनयकहिये हवेप्रशस्थकायविन
 यएटले पुर्वेअप्रशस्थकह्या तेथकीउपराठाचलाजे आ
 णासहितउपयोगसहितप्रवरतवु तेनेप्रशस्थकायविनय
 कहिये एटलेएकायविनयकह्यो हवेलोकविनयकहियेछि
 ये एटलेलोकसंबधीउपचारतेनेविनयकहिये तेनासातभे
 दछेतेकहियेछिये गुरुनासमीपनेविशेसदायप्रवरतवु १
 अथवापारकागुरुनाअभिप्रायेवरतवुं तेज्ञानादिकलेवाने
 अर्थे२ जातपाणीआणीदेवु३ एनीएवीबुधीथायजेहुंएने
 नणावु त्यारपणीविनयकरवी ४ आर्तउपनेतेनाआर्तनी
 चिंताकरवी ५ देशकालनुजाणथावु६ सर्वअर्थप्रयोजनं
 नेविशेसावधानरेहेवु तेथकीउपराठुनाथवुं७ तेनेलोकउ
 पचारविनयकहिये एटलेएविनयतपकह्यो.

हवेवयावच्छतपकहीयेछीये तेनादसप्रकारछेआचारज
 एटलेपचाचारनेपालनारतेनीवयावच्छकरवी१ उपाध्या
 यजीद्वादसअग्नीनाजाण तेनीवयावच्छकरवी२ साधुनी
 वयावच्छकरवी३ नवदिकितशीप्यनीवयावच्छकरवी४ रो
 गीनीवयावच्छकरवी ५ तपसीनीवयावच्छकरवी६ धीवर
 नीवयावच्छकरवी ७ साधमीकपोतानीसरखीसमाचारी
 नासाधुहोयतेनीवयावच्छकरवी८ कुलनीजेचंद्रादीकतेनी

वयावच्छकरवी ९ गणएटलेगछनीवयावच्छकरवी १० ए
 टलेवयावच्छनपकह्यो ३ हवेसजायतपचोथोकहीयेछीये
 तेनापांचनेदछे गुरुवाचकपासेवाचनाएटलेजणवु १ प्र
 श्ननीशंकाउपजेतेपुछीनेनिश्रयकरवो २ पुर्वेभएयाहोय
 तेसंनारीवालवुं ३ शास्त्रशब्दनाअर्थएकएकनीअपेक्षा
 येविचारीजोवा ४ अनेधर्मकथाकेहेताधर्मनीचर्चावार्ताक
 रवी ५ एटलेएसजायतपकह्यो ४ हवेध्यानतपकहीयेगीं
 ये तेनाचारभेद आर्तध्यान १ रुद्रध्यान २ धर्मध्यान ३
 शुक्लध्यान ४ हवेआर्तध्याननाचारपाया आर्तकेहेतां
 मननिजेचिता तेनेआर्तध्यानकहीये मननेनगमेतेवाश
 व्दरुपरसगंधफरसादिक जेजेपदार्थमल्यातेनोएवोविचा
 रकरेजेआक्यारेअहींआंथकटिले तेनावीजोगनुंजेचींतव
 वु तेनेअनीष्टसंजोगनामेपायो कहीये १ हवेइष्टविजोग
 नामेवीजोपायो एटलेजलाशब्दरुपरसगंधफरसपुत्रक
 लत्रसगासंबंधीपोतानामननेगमेतेवांमलेलांठे तेनोविचा
 रजेएनोविजोगनथायअथवानथीमल्या तेनेमलवानोवि
 चारइत्यादिकजेविचारतेनवीजोपायो कहीये २ हवेत्रीजोरो
 गआतसपायो रोगादिकउपनेतेनीचिंताकरेजे क्यारेमट
 शेक्यारेजशे अथवानवोरोगनथायतेनोविचारकरवो ए
 त्रीजोपायो ३ हवेचोथोपायो अगामीककालनीचिंताजे
 कालआपणेअमुककरेशुं अथवाआवतीसालअमुककरी

शु अथवा आसाल आपणेठीकहतु हवे आवतीसालेशु यशे
 इत्यादिकचितववु तेने अगामीककालनीचिताकहीये एट
 ले आर्तध्याननाचारपायाकह्या हवेते आर्तध्याननाचा
 रलक्षणकहीयेछीये कडणीयाकेहेता मोटेशब्देकरैरुढन
 विलापकरे १ सोयणीयाकेहेतासोचनादिनपणुहोय २
 तपणीयाकेहेता आरुख्यमांयी आसुझरे ३ वलवणीयाकेहेता
 मुखथकी चारवार एवोशब्दकरेकेहेदेव हेप्रभुहवेकेमथशे
 एचारे आर्तध्याननालक्षणकह्याहवेरुद्रध्यानकहीयेछीयेरु
 द्रकेहेतामाहा आकरादुष्टपरणाम तेनाचारपाया हंशानुं
 वधी एटलेजीवहसाचितववी मनथकी आरंभसमारज
 फोजनगरगामलुटवांजागवा मेहेलमदीरकराववा लेप
 वाथेपवा एसर्वनेहशानुवधीरुद्रध्यानकहीये १ त्रीजोपा
 योमरखानुवधीरुद्रध्यान एटलेमनमाएवाविचारकरेजेफ
 लाणानिआवीरीतेकहीनेममजावीशुंअमुकने आमकहीनेस
 मजावीशुइत्यादिकमनथकीसरखाबोलवानोविचारकरेते
 नेमरखानुवधीरुद्रध्यानकहीये २ हवेचोरानुवधीरुद्रध्या
 नमनथकीचोरीकरवानोविचारकरवो अथवाकोइपासेचो
 रीकराववानोविचारकरवो अथवाचोरनेसबुरआपवानो
 विचारकरे एसर्वचोरानुवधीरुद्रध्यानकहीये ३ चोथोपा
 योपरिग्रहरक्षानुवधीरुद्रध्यान जेपरिग्रहमेजववानोवि
 चार तथामजोपरिग्रहतेनेरखोपुकरवानोविचार तेसारु

गीरवटी प्रमुखराखवी अयंवापरिग्रहनाक्षयकारीपुरुषो
 नेहणवा बदीखानेनाखवानखाववाइत्यादिकजेमनथीवि
 चारे तेनेपरिग्रहरक्षानुबधीरुद्रध्यानकहिये ४ एरुद्रध्या
 नकह्युं हवेरुद्रध्याननाचारंलक्षणकहियेठिये उष्णदोश
 बंधीकेहेता प्रायेहशामंरखाअदत मीथुनपरिग्रहनेविशे
 प्रवरतवु १ शेषदूदोपायकेहेता जेहशां प्रमुखनेविशेबहु
 प्रवरतवु २ अणादोशकेहेतां अज्ञानथकीहंगादिकनेवि
 शेप्रवरतवुनेधर्ममानवु ३ आमंरणांतदोशकेहेतां जेमं
 णांतलगेकोइपापनोपश्चांतापनकरे एटलेएरुद्रध्यानना
 चारलक्षणकह्यां

हवे धर्मध्यान कहिये ठिये एटलेधर्मकेहेतां जे
 वस्तुधर्मनुपामवु आत्माथकी कर्मनुनीरजरवु तेनेध
 मकहियेतेनाचारजेदठे आज्ञावीचयधर्मध्यानकेहेतां जे
 परमात्मानांशोआज्ञाछेतेविचारवु परमात्मानांशोआ
 ज्ञाछेके ज्याजीवनीहंगात्वाधर्मछेनही जेअज्ञानीदयापा
 लेतेपणकाइधर्ममाछेनही धर्मतोज्ञाननेविशेरह्योछे ज्ञा
 नतेआत्मानेविशेरह्युंठे त्यारेआत्मानोजेस्वभावतेजधर्मइ
 त्यादिकपरमात्मानां आज्ञानुस्वरुपविचारवुंतेपेहेलोपा
 यो हवेवीजोपायोअपायवीचीय अपायकेहेतांआत्माते
 नोजेविचार जेआत्माकेवांछे केजेवोफटकरत्ननिर्मलछे
 तेवोआत्मानिर्मलठे नेजेआकर्मरुपमेलेतेपुद्गलठे तेहेचे

तनतुनहितुतो एकस्वरूपीये अनेकछेतेतोपुद्गलछे तुतो
 तनअव्यावायछे एटलेतनेकशीवाधार्पीडाठिनहि व
 पीनाजेछतेपुद्गलनेवेतेतुनही तुअनतज्ञानमयवे जेश्
 नछेतेपुद्गलछे तुअनतदरशनमयवे अदरशनवेतेपुद्ग
 तुअनतचारित्रमयवे अचारित्रतेपुद्गलछे नेतुअनंतवी
 मयवे अशक्तीवानतेपुद्गलछे तुअरागीठेनेरागतेजडछे
 अद्वेशीछे द्वेशतेपुद्गलछे तुअक्रियछेतुअमानीछे तुअ
 अलोनीअवेदीअछेदीअभेदीअकचनीअवरणीठेतुअ
 अगंधअफरसतुअप्राणीछितेअजोनीअजरअमरठेइत्य
 कआत्मानास्वरूपनाअनंतगुणछेअनेसामोप्रतीपक्षी
 डतेनाअनंताजेदोशतेविचारतेनेअपायवीचयधर्मध्या
 हिये हवेवीपाकवीचयधर्मध्यानकेहेताजेवीचीत्रप्रका
 शुभाशुभकर्मनाजेउदेभोगववा तेनुंजेस्वरूपवीचारवु
 लेआठकर्मनीएकसोअठावनप्रकृती तेनोधंधउदयउ
 णानेसतातेनास्वरूपनोजे विचारतथाएकसोचोवीस
 तीपुन्यपापतीतेनोविचारते सर्वपुद्गलनोआगजाणी
 डवानोविचारतेथकी आत्मानेठोडाववातेविचार तेस
 पाकवीचयधर्मध्यानकहीये हवेचोथुस्वरथानवीचय
 ध्यानकेहेता चौदराजलोकतथाउर्ध्वअधो त्रीछोलोव
 विचारतेसर्वस्थानके हेचेतनतुजन्ममरणकरीचुक्ष्यो
 काइताराजवनोअतआव्योनही माटेततारास्वरूपनी

खाणकरके ताराजन्ममरणमटेइत्यादिकजेविचारतेनेस्व
स्थानवीचयधर्मध्यानकहीये हवेतेधर्मध्यांननाचारलक्ष
णकहीयेछीये एकतोअगवंतनीआज्ञानीरुचीहोय १ वि
नाउपदेशेपोतानास्वभावथकीजरुचीप्रगटथायनेसमकी
तपामे २ गुरुउपदेशथकीरुचीप्रगटे ३ अनेशास्त्रनाअ
र्थविचारवानीरुची ४ एचारलक्षणकह्यां हवेचारधर्मध्यां
ननांआलवनकहीयेछीये गुरुसमीपेवाचनालेवी १ गुरु
पासेपाछंगणीवालवुं २ गुरुपासेशब्दअर्थनुंमेलववुं ३ गु
रुपासेधर्मकथानुंकेहेवुं ४ एचारधर्मध्याननांअलवनजा
एवां हवेधर्मध्याननिर्णयकरवारुपाविचारणातेनाचारभेद
कहीयेछीये प्रणातीपातादीकआश्रवद्वारनुंउपजवुं तेनां
जेउपायविचारीनेदूरकरवा १ आससारनेविपेजेशुना
शुचकारणमेलववा तेनोविचारकरीतेपणदूरकरवा २
अनतीसंसारनीजेसमताजेश्रेणी तेनाअनतपणानुंचीत
ववुं ३ वस्तुनापरणामक्षणक्षणपरावर्तनथांयठे एटलेप्र
जांयनुंपलटवुसमेसमेछेज तेनुस्वरुपाविचारवु ४ एटले
धर्मध्यांननीचारअनुपेक्षाकही तेधर्मध्यांनकह्यो.

हवेशुद्धध्यानकहीयेगीयेशुद्धकेहेतांनिर्मलसुद्धआत्मानुजे
ध्यांन तेनेशुद्धध्यानकहीये तेनापायाचारप्रथक्तवितर्क १
एकत्ववितर्क २ सुक्ष्मकीरीयाप्रतीपाती ३ उगीनकीरीया
नीवृत्ति ४ हवेप्रथक्तवितर्ककेहेतां जेप्रथक्तप्रथक्तजुदा

जुदाद्रव्यगुणप्रजायनाविनर्ककेहेतां विचारवृत्तेपेहेलोपा
 योते तैसक्षेपमात्रद्रव्यगुणप्रजायनोविचारकहीयेतीये
 हवद्रव्यतेकोनेकहीये जेनुरुपत्रणकालमावदलायनही
 एटलेजुतभविष्यने वर्तमानएत्रणकालकहीये अनेगुण
 प्रजायनुपरावर्तनपणथाय, उदपातवधुएत्रणलक्षणक
 रीनेसहातहोयतेनेद्रव्यकहीये अनेउत्पातनेवयएप्रजाय
 नेविपेहोयअनेध्रुवतापणुतेद्रव्यनेविपेहोयअनेगुणप्रजाय
 तेद्रव्यनेविशेलाये एटलेद्रव्यतेतेप्रजायनीगोडेकोडकाले
 पलटेनही तेनेद्रव्यकहीयेतेस्वजावीकद्रव्य जेमजीवने
 विपेज्ञानादिकजे गुणतथाअव्यावाधादिकप्रजायरह्याते
 तथापुद्गलनेविशेवरणादिकजेपरजाय तयामलवावीखर
 वादिकगुणरह्याते जेममघतीकाद्रव्यनेविशे जेआधारा
 आधेप्रमुखगुण तथारक्तादिकपरजायरह्याते तेमपटद्र
 व्यनेविशे ततुपरजायकहिये एटलेपटनाश्रवयवनीअपे
 क्षायेकारिनेपरजायकेहेवाय इहाकोडकेहेशेकेतमे अपेक्षा
 येद्रव्यपरजायकोहोछो पणकाइस्वजावीकपणेनहीतेने
 कहिये जेपुद्गलस्कधमाहेद्रव्यपरजायतेअपेक्षायेजथाय
 शामाटेजेपुद्गलनास्कधनुजेमलवु त्यारेएकस्कधद्रव्यथा
 य अनेपाछातेवलीवेराइपणजाय नेस्वजावीकद्रव्यहो
 यतेवेरायनही अनेद्रव्यएकनावेथायनही माटेइहाअपे
 क्षीतद्रव्यकेहेवाय कदापीकोडकेहेशेके त्यारेपरमाणुद्र

र्थे॥ हवेस्वजावीकिकहेतांद्रव्यजावी एटलेद्रव्यतेगुणकहि
 ये एटलेजीवनोउपयोगगुण पुद्गलनोग्रहणगुण धर्मास्ती
 कायनोगतिहीत्वगुणश्रधर्मास्तीकायनोस्थितित्वगुण आ
 कास्तीकायनोश्रवगाहनाहीत्वगुण हवेकर्मजावीतेद्रव्य
 नाजेपरजायकहिये एटलेजीवनेनरनरकादिक परजाय
 पुद्गलनेवरणगंधादिकनुंपरावर्तवु तेपरजायकहिये तेद्र
 व्यादिकनात्रणलक्षणवे चिन्न १ अचिन्न २ चिन्नाभिन्न
 ३ हवेजेचिन्नकेहेतापरदेशनाश्रवीभागथीत्रीवीधछे ए
 उपचारेजाणवुएटलेलक्षणादिकथीअभिन्नवे अनेएकएक
 मात्रणत्रणभेदश्रावे तेथीत्रणलक्षणबांध्यां तथात्रणलक्ष
 णउत्पातवयनेध्रुवरुपवे एवोपदार्थएकजएजिनवचननुंप्रमा
 णवे एटलेएद्रव्यगुणपरजायनुचिन्नपणु खुलासेदेखामी
 चेछीये एकमणीरत्ननीमालावे तेमालानुंजेकोइतेजरक्त
 त्वादिपणु तेथीमालाअलगीवे तथातेमणीरत्नथकीपण
 अलगीवे तेमजएद्रव्यशक्तिगुणपरजाय व्यक्तवथीअल
 गाछे तथापिएत्रणेएकप्रदेशसवधेवलग्यावे जेमणीरत्न
 छे तेपरजायजाणवा तेस्तत्त्वादिकतेजतेगुणजाणवा ने
 मालातेद्रव्यकहिये एमद्रष्टातेश्रहियासमजवु आत्माते
 द्रव्यज्ञानादिकतेगुण अव्यावाधादिकतेपरजाय तेशक्ति
 तथागुणनीव्यक्तवताकरिये तेवारेतेद्रव्यथकीभिन्नछे त
 थापिमुलस्वरुपेजोताएकप्रदेशसंबंधेवलगीरह्यावेतेमअ

संख्यातप्रदेशोपजाणवा एटलेएपरोक्षवस्तुते तथाघटा
दिनोद्रष्टातदेइनेप्रत्यक्षदेखान्दियेछिये.

हवेजेघटादीकद्रव्य प्रत्यक्षप्रमाणेसामान्यविशेशरूप
तेनुंअनुभवीयेछिये तेसामान्यउपयोगजोता मृतिकादी
सामान्यजासेते अनेविशेशउपयोगेघटादीविशेशजासेते
एटलेसामान्यमांतेद्रव्यरूपजाणवुंअनेविशेशतेगुणप्रजा
यरूपजाणवुं हवेसामान्यनेद्रव्यकह्यो तेसामान्यवेप्रकां
रनोते तेदेखान्दियेछिये उर्धतासामान्यअनेत्रीर्यगसामा
न्यतेमध्येउर्धतासामान्य तेद्रव्यनशक्तिकहीयेतथापेहे
लाअथवापढीजेगुणनुविशेशनुंजेकरवु तेसर्वमाहेएकरु
पशक्तिरेहे जेमकंचननेकुंडलादिकसर्वघाटनेविशेषतेरेहे
एटलेपोतानीशक्तिसरखीराखे एटलेकंचननाअनेकघाट
निपजे वलींतघाटभागीनेबीजाघाटवनेएटलेजेमतेघाट
नुंफरवुयायछे तेमकइकंचननुंफरवुंयायनही तेकंचनना
पिंडनुंकुशलतापणानुंकारणकेटलुंकेप्रजायमाहेसेहेचारी
पणरेहे अनेजोएकुडलादिकप्रजायनेविशे जोअनुगत
कुंडलादिद्रव्यपणुं नमानीयेतेवारेसर्वेविपेगरूपथाय अ
नेविशेशरूपयतांक्षणेकवादी बोधनोमतआवे अथवासर्व
द्रव्यमाहेएकजद्रव्यआवे.तेमाटेकुंडलादीद्रव्य तेमांसा
मान्यपणसुवर्णादीद्रव्य अनुभववामांआवेछे तेप्राप्तउ
र्धतासामान्यमानवा एटलेकुंडलादीद्रव्य थोडाप्रजा

यनेव्यापीछे अनेकचनादीद्रव्यघणाप्रजायनेव्यापीछेए
 नरनरकादीद्रव्यनुंपणविशेषपणेसमजवु एसर्वेनीगर्मन
 यनोमतछे अनेशुद्धसंग्रहनयनेनतेतोएकजद्रव्यआवे ते
 वारेअद्वैतवादीनोमतआवे ज्यारेनीन्नद्रव्यमांनीन्नपरदे
 शीकहीये अनेविशेषमाद्रव्यनीशक्तिएकरूपएकाकारछे
 तेनेत्रीजगसामान्यकहीये तेदेखाडोपेगीये जेमतेकुडल
 द्रव्यपीतानुंकुडलताद्रव्यपणुराखेछे हवेअहीयाकोइए
 केहेशेके कुडलादीकनुनीन्नव्यक्तवताकरी तेकुडलादीए
 कसामान्यमाछे तेमसोवर्णपिडादीकनुकुशलतातेपणमा
 मान्यतोत्रीजगसामान्यने उरधतासामान्यमाशोफरक
 तेनेकहीयेजे काइसर्वथकीनेदहोयनेही देशथकीभेदहोय
 एटलामाटेज्यादेशनेदजोयामाआवे अनेद्रव्यप्रजायनी
 एकाकारप्रतीतउपजे तेनेत्रीजगसामान्यकहीयेअनेज्या
 कालभेदजोयामाआवेआवताकालनीपरतीतउपजे तेनेउ
 रधतासामान्यकहीये अहीयाकोइमतवालाडीगवरादिक
 एवुवोलेछेजे खटद्रव्यनीमांहेलीकारे एककालद्रव्यना
 प्रजायकेहेवा तेउर्वतापरचीयेछीये अनेकालविनापाच
 द्रव्यनेपोतपीतानाअवयवनीसंघातेमलीरह्यातेनेत्रीजग
 परचीयेते एतेनेमतेत्रीजगपरचीयेनोआधार कुडलादि
 कत्रीजगसामान्यथाय तेवारेपरमाणुरुपअपरचीयेप्रज
 यनोआधारनीन्नद्रव्यजोइयेपरतुत्रीजगपरचीयेनोविचा

रवद्रुखुलासेयी : ङीगवराणुसारीदेवआगमनामाग्रथने
 विशेछे हवेउर्धतासामान्यशक्तिना वेजेददेखाफियेछिये
 सर्वेद्रव्यपोतपोतानागुणपरजाधनीशक्तिमात्रजोइये ते
 नेओघशक्तिकहिये अनेजेकारजनिपजवानेतुरतथायते
 वुंदेखिये तेकारजनीअपेक्षाजेइनेजोतातेनेसमुचीतशक्तिं
 कहिये एटलेसमुचीतकेहेता वेहेवारजोगछे इहांद्रष्टां
 तदेखाफियेछिये पत्थरनेविशे धातुरहेली एवीजेकांकं
 रियोतेने विशेकचनकहियेते केहेवायनही शामाटेके
 एवातलोकनीरुचीमांआवे नही शामाटेकेलोककेहेशेके
 पत्थरमांकचनक्यांथकीआव्युं पणजोद्रष्टीदेइनेजोइयेतो
 एपथरमाहेनुतोकाकरीमांपणकचनआव्युपणतेनेओघश
 क्तिकहिये अनेजेकांकरीमाकचनकहिये एसर्वेनेरुचीमां
 आवे कांकरीउंकलेनेतरतकचननीकले माटेतेनेसमुची
 तशक्तिकहिये तथावीजेद्रष्टातेजेमघासनेविशेधीकहिये
 तेओघशक्तिछे एघासगायप्रमुखचरेछे तेथीदूधदेछेतेदू
 धमांवीनीशक्तिआवी तेघासनाप्रजावथकी एमअनुमा
 नथीद्रष्टांतदेइनेजोइयेतो समज्यामाआवेपण तेकेहेवाय
 नही शामाटेकेलोकनेरुचीनाआवे अनेदूधमाजेधीकही
 येतेसर्वेलोकनीरुचीमांआवे तेसमुचीतशक्तिकहिये एट
 लेनीकटजेकारजआवेथकं तेनाकारणनेसमुचीतशक्तिक
 हीये अनेपरंपराकारणकेहेतां घणुंदूरकारणरह्यु माटेते

नेत्रंशक्तिकहीयेतेवेनुअत्रकारणताअनेप्रयोजनताएबे
 बीजानामपणछेतेजाणवु एआत्मद्रव्यमाटेएवेशक्तिखो
 लावीयेछीये जेमजेजव्यप्राणीजीवनेपुर्वे अनंतापुद्गलप
 रावरतनवीत्यातेदाहाडेपणत्रंघपणेसामान्यधर्मनीशक्ति
 हती अनेजोपुर्वेनहोती तोछेलेपुद्गलपरावरतेशक्तिक्यां
 थीआवे बतीप्रजायविनासामर्थप्रजायथायनही माटेएपु
 र्वनीअवस्थातेनेत्रंघशक्तिकहीयेअनेठेलापुद्गलपरावरते
 धर्मनीसमुचीतशक्तिकहीये एटलेआगलनाजेपुद्गलपरा
 वरतनविशे जीवनेवालअवस्थाकेहेवायछे अनेठेलुपुद्गल
 परावर्तनवाकीरह्युं त्यांथीतेमोक्षजायत्यासुधीजोवनअव
 स्थाकहीये एविचारहरीभद्रसुरीकृतजोगनीवीशीविशेक
 ह्योछे एमएकएककारजनेविशे त्रंघसमुचीतरुपअनेकश
 क्तिएकद्रव्यनीपामीये तेसर्वेव्यवहारनयेकरीतेछेएटले
 व्यवहारनयेकारणकारजनेद नानाप्रकारनामनायठे प
 णनिश्चैनयथीतोद्रव्यनांकारजकारणअनेक परतुशक्ति
 स्वभावजोता एकरुपजहृदयमांजापणथायठे अनेजोए
 मनाहोयतो स्वभावनोनेदपमे स्वभावनोनेदपम्योत्यारे
 द्रव्यनोनेदपडेमाटेदेशकालादिकनीअपेक्षायेकरीनेएका
 नेककारणस्वभावमानतांकांडदोशनथी केमकेकालंतरनी
 अपेक्षायेठे एटलेजेकारणमाटेस्वभावनु अतरच्युतपणुठे
 जतेणैकरीनेकाइतेनुनीफलपणुनहोय त्यांशुद्धनिश्चयन

यनेमतेतोकारणकारजमीथ्यावे एटलेकारजकारणकल्प
नावे कल्पनायेकरीनेरहीतजेद्रव्यतेनेकहीये तेशुद्धथीर
तारूपते तेनेद्रव्यजाणवोएमएशक्तिरुप द्रव्यकेहेतास
त्तानीशक्तिग्रहणकरिनेकह्यो.

हवेव्यक्तीरुपकहियेछिये एटलेव्यक्तीकहेतांजेप्रगटप
एजेगुणपरजायथया तेप्रत्येदेखाडीयेछिये तेगुणपरजा
यव्यक्तीपणोवहूभेदेएटले अनेकप्रकारनाछे पोतपोता
नीजातीस्वभाव स्वभावीककर्मभावीकल्पनाकृतआपआ
पणावस्तुस्वभावमांवर्तेछे वलीकोइकशास्त्रवाला तथा
मिगंबरवालातेशक्तीरुपगुणमानेछे केमकेतेएवुंकहेछेके
द्रव्यपरजायनुंकारणतेद्रव्यजछे तेमगुणपरजायनुंकार
णगुणछे तेद्रव्यपरजाय द्रव्यअनथाभाव जेमनरनर्का
दिगतीअथवा जेमद्विपरदेशत्रणपरदेशी आदिकजेखंध
तेनोगुणपरजायगुणनो अन्यथाभावछे अथवाजेममती
श्रुतादिविशेशअथवा भावस्तस्यादवादविशेशकेवल
ज्ञानछेएमद्रव्यगुणनीजातीसास्वतीछे अनेपरजायथीअ
सास्वतीछे एमएमनाकहेवामांआवे एवाततेकांइभापण
मांवरावरआवतीनथी. एपणएककल्पनापोतानीछेअथ
वातेवाशास्त्रोनीछे, तथापीजुगतीएमलेनहि शामाटेकेसु
मतीअथनेविशे गुणपरजायनेजुदोकह्योनथी तेप्रत्यक्षए
अथमांजोयामांआवेते उक्तंचसुमतीअर्थे-परीगमणंप

ज्जातं अणोऽणकरणे गुणतीतुल्लथा तद्विणुन्ती भण्डः
पञ्चवणत्रदेशणाजह्मा. १

जेमकर्मजावीपणानुपरजायनुलक्षणछे तेमअनेकरीतिं
करवुंतेपणसर्वेपरजायनालक्षणछे पणद्रव्यतोएकजठेअ
नेज्ञानदर्शनादिकजेनेदकरेठे तेपरजायजठे पणगुणना
कहिये शामाटेकेपरमात्मानादेशनातेविशेतोद्रव्यपरजा
यनीदेशनाछे पणद्रव्यगुणनीदेशनानथी एगाथानोएज
अर्थछे त्यारेकोइतर्ककरशेकेगुणठे तेपरजायधीजुढानथी
एवुज्यारेतेमेकहेशेतोद्रव्यगुणपरजाय, एत्रणनामशावा
स्तेकहोछो तेनोउत्तरजेएतोवविक्षाठे तेतोनेदनयनीक
ल्पनातेथकीकहेवायठे परंतुधीने धीनीधाराएकाइनोखी
नथीबोलवामाधीनेधीनीधाराबोलायखरुपणएकजतेमज
स्वभावीनेकर्मजावीकहिने गुणपरजायभिन्नभिन्नसमजा
ववामाआवेपरतुमुलरवजावेतोएकजठे अनेएभेदसर्वेउप
चरीतठे, तेमाटेतेनेशक्तिकेमकहियेपरमार्थजोतांजुढाप
णुदिसतुनथी शामाटेकेउपचरीतस्त्रीकांइहावजावकरेन
हितेमउपचरीतेगुणशक्तीपणनधरे तेमाटेजेगुणपरजा
यधीभिन्नमानेछे तेनेदोपणदेखाडियेछिये केजोद्रव्यपर
जाययंकीगुणएवोपदार्थजुढोहोततो, त्रिजिनयपणकही
जोइयेपणसुत्रनेविशेतोवेजनयकहिठे द्रव्यार्थअलेपरजा
यार्थ जोगुणपदार्थ नोखाहोततोगुणार्थनयजरुरकेहेतां

ते उक्तं च सुमती ग्रंथे ॥ दोडण्णया न गवया दवड्डीय
पजवठीयाणीययो ॥ जइ पुण्णुणीवीहूणी गुणठियण्णो
विजुजंतो ॥१॥ जंच पुण्णजगवयाते सुते सुमुते सुगोयमाइ
ए ॥ पजवशणाणीयया वागरीयाते णं पजाया ॥२॥

रुपादीकने गुणकहीये ते सुत्रे कंडकद्दुनथी शास्त्रमां
तो एवाशब्दने के वनपजवा गंधपजवा रसपजवा खास
पजवा इत्यादीकपरजायशब्द बीजव्याछे अने जे एक
गुणोकाळो जावत अनंत गुणोकाळो इत्यादीक जे ठाम ठाम
शब्द छे ते तो गणीत शास्त्रनाछे एटले एपरजायनी सामा
न्यवीशेशनी गणतरी आशरीठे पणते वचनकांडे गुणास्ती
कने अवीखयेवांची नथी उक्तं च सुमती ग्रंथमध्ये ॥२॥ गु
णसदमंतरेणावित एणुपजवविशेषशंखाण ॥ सीझइणवरं
संख्याण सथद्धमोणयगुणोती ॥१॥ जंपइजंपती अत्यसि
मये एगगुणोदशगुणो अनंतगुणोरुवाइपरीणामा जणइत
महाविशेषो ॥२॥ जहदशसुदशगुणं मीय एगं मीदशतणं
शमतवेव ॥ अहीयं मीविगुणसदेतहेवयेयंपीदठव ॥३॥

एगगुणपरजायथी परमार्थद्रष्टीनिन्न नथीतोतेद्रव्यनी
पेरेशक्तीरुप गुणकेमकेहेवाय परजायनादळनेगुणानी
शक्तीरुपकोहोछो तेनेवीशेमोहोदुंदोषण्णआविते तेनेदोष
णदेखाडीयेछीये केजो गुणपरजायनुंदळकहीये तोउपा
दानकारणपणतेजथाय त्यारेद्रव्यशानेकहीशुं नेद्रव्यनुं

कामज्यारेगुणैकर्युं त्यारेद्रव्यनुं कारणशुरह्युं अनेगुणनेप
 परजायएवपदार्थं ज्यारेकहीशुत्यारे त्रीजोपदार्थनठयोति
 वारेकेहेशोकेअमेकहीयेगीयेकेद्रव्य परजायनेगुणपरजाय
 नुंकारजभिन्नछे तेमाटेद्रव्यगुणरूपकारणजुदुकलपीयेते
 नोउत्तरकेएवातकाइसजवतीनथी शामाटेकेकारजमाटेका
 रणशब्दनोप्रवेशते तेणेएकारणनेदकारजनो पणनेद
 धायअनेकारजभेदययो तेवारेतो प्रवेशपणधाय तेनेका
 रणभेदधाय एअन्योअन्याश्रीयनामेदोपणउपजे तेमाटे
 गुणपरजायजेकहीये तेगुणपरणमवानो हेतुभेदकलप
 नारूपतेथीजकेवलसभवे पणपरमार्थेनही अनेजेद्रव्यगु
 णपरजाय एअणनामजेकहीये तेपणभेदउपचारनयेकरी
 नेसमजवाएवीरीते द्रव्यएकगुणपरजायअनेकठे परतु
 माहेमाहेपरस्पर भेदवीचारवो एमज आधाराधेयप्रमुख
 भावेकहेतास्वभाव तेहीजमनमाहीवीचारवो.

हवेतेहिजस्वरूपविवरीने देखाडियेछिये घटादिकजे
 द्रव्यतेआधाररूपदिसेछे जेमाटेएघटरूपादिकतेथकीजे
 णायवे एटलेगुणपरजायरूपरसादिक आधियपणेद्रव्य
 उपररह्याछेएमआधाराधीयभावएवीरीतेद्रव्यथीगुणपर
 जायनेनेदठे तथारूपादिकगुणपरजाय एकइद्रिगोचरक
 हेतावीपयछे एटलेजेमरूपचक्षुइद्रिजजाणे अनेरसजी
 भइद्रिजाणेइत्यादि अनेघटादिद्रव्यठे तेवेइद्रिगोचरछे

एटलेचक्षुइंद्रियकीदिठामाआवे अनेस्पर्शइंद्रियकीपणज
 णाय एटलेएनेविशेएवेइद्रिनोविपयठे तथान्यायकमत
 नाअनुमारथी विचारिनेजोइयेतो त्रिजिइद्रिनोपणविप
 यठे एटलेघ्राणइंद्रियेकरीने पणद्रव्यप्रत्यक्षठे गंधवति
 पृथ्विइतिवचनात् इत्यादिकविचारतांज्ञाननेविशेभ्रांतप
 णुंथायतेमाटेएकअनेकइद्रिग्राह्यपणेद्रव्यथकीगुणपरजा
 यनेनेदजाणवो गुणपरजायनेमांहोमाहेनेदतेस्वजावि
 कपणकहिये कर्मजाविपणकहिये एवेकल्पनाथकीजाण
 वा तथासंज्ञाकेहेतांनामतेथकीपण भेदद्रव्यनाम गुणना
 म प्रजायनाम एसरूयागणनादिकभेदती द्रव्यजोइये
 तोछछे अनेगुणअनेकठे प्रजायपणअनेकठे एमनेद
 ज्ञाननुंविचारवु एटलेद्रव्यथकीगुणप्रजायनोखाकरवा
 कोइठेकाणेगुणथीप्रजायनोखाकरवा कोइठेकाणेप्रजा
 द्रव्यमासमाववा कोइठेकाणेप्रजाय गुणमासमाववा को
 इठेकाणे गुणप्रजायएवेद्रव्यमासमाववा एवीरीतेध्यान
 करवुतेनेशुक्लध्याननो पेहेलोषाथोकहीये पणएटलो
 वीशेशछेके आद्रव्यनाविचारनेवीशे अन्यमतनीअपेक्षा
 आतथाअन्यशास्त्रनी अपेक्षाउनांखठिते त्यांध्यानमांन
 होय ध्याननेवीशेतो स्वआत्मद्रव्यगुण प्रजायनोजवी
 चारहोयएटले प्रथमपायोशुक्लध्याननोकह्यो.

१ हवेवीजोपायोएकत्ववितर्ककहियेठीये एकत्वकेहेतां

केद्रव्यनेविशेगुणप्रजायनोअभेदजसवधत्ते नेजोद्रव्यने
 विशेगुणप्रजायनोसमवायनमानीये तोसबंधभिन्नकल्पि
 ये .तेवारेअन्यअवस्थादोपणथाय जेमाटेगुणगुणीथीअ
 ल्गोसमवायसबंधकह्यो तोतेउपरद्रष्टांतकहियेछिये प
 टनेपटनुंडजलतापणुतेकइजुदुठेनहि पटतेद्रव्यछे अनेउ
 जलतापणुं तेगुणप्रजायाटिकठे माटेएकत्वजछे अनेक
 दापिगुणप्रजायनोसमवायद्रव्यमांनहिमानो तोतेगुण
 प्रजायनेकोइबीजोसमवायपणजोइये . तोतेउजलतापट
 द्रव्यनेनथीवलगीतोएनोसमवायकोएद्रव्यसाथेठे तेतो
 कांइबीजाद्रव्यसाथेदीसतुनथी माटेगुणप्रजायतेपोता
 नाद्रव्यमांछे तेकांइजुदानथी अनेकदापीअन्यद्रव्यनीसा
 थेसमवायमेलववाजइयेतो वलीअन्यअन्यनेमेलवाय ए
 मकरताकंइएकठेकाणेरुथीरवेसेनही अनेजोसमवायनुं
 स्वरुपसंबंधअभिन्नपणेमानेतो गुणगुणनुस्वरुपसबंधअ
 भिन्नमानताशुवगडेछेजेफोक्रटनवोसंबंधउजोकरवोनवी
 कंठपनाकरवीएमाशुहाथमाआवेछे . तथाजोअभेदनहीमा
 नोतोतमनेमोटुवाधकआवशे तेपूर्वसोनुहतुतेजकुफलथयुं
 छेतथाजेपूर्वमृतीकाहती तेजकोठलाप्रमुखआकारबंधा
 णोछेअथवाजेघटप्रथमरक्तवरणहतोतेजशामथयो एवंस
 र्वलोकनेअनुभवशुद्धवेहेवारनघटे जोअभेदस्वभावद्रव्या
 दीकत्रणेनेनहोयतोबीजुवाधकपणदेखाडीयेछीयेकेखंधक

हीये तथाश्रवयवनेदेशकहीये एमश्रवयवनोजोभेदमानी
 येतो वमणोन्नारखधमाथयोजोइये शामाटेके एकखंधनो
 नारवीजोश्रवयवनोन्नार एमवमणोभारभेदमानताथयो
 जोइये जेमके एकलाडुतेशेरनोछे तेलाडुतेद्रव्यते अने ए
 नोजेवातपीतहरवादीकगुण तथाश्वेतादीकप्रजाय एम
 ज्यारैलाडुथकीगुणप्रजायजुदामानीये त्यारेशेरन्नारतो
 लाडुनोहतो तथागुणनोपणपाशेरन्नारजोइये तथाप्रजा
 यनोपणशेरभारजोइये तेवारेशेरनोलाडुतेत्रणशेरजोइये
 तेतोवातसजवेनहीत्यारे एगुणप्रजायतेद्रव्यते एमसमज
 वुं पणजुदुनसमजवुं अथवानवान्यायक एमकेहेठेकेश्रवयव
 नाभारथकी श्रवयवीनोभारअत्यंतश्रोठोते तेनेमतेद्वीपर
 देशादीकखधमाहेकंडएउतकष्टोन्नारनथयोजोइये पणते
 मीथ्याछे शामाटेजेद्वीपरदेशीखध एकलापरमाणुनीअपे
 क्षायेंश्रवयवीते अनेपरमाणुतेश्रवयवछे त्यारेपरमाणु
 रताद्वीपरदेशीमाठोभारजोइये ने एकपरमाणुपरदेशक
 रताद्वीपरदेशीखधवमणोते तेठोकेमथवानो अथवाएक
 परमाणुमाहे उत्कटुभारैपणुमानीयेतो रूपादीकविशेष
 णेप्रणम्याजोइयेतो द्वीपरदेशीमाहेकेमनमान्याजोइये ए
 माटेअभेदनयनांबवमानीयेतो परदेशनोभारतेतेहजखंध
 नाभारपणैप्रणमे जेमतंतुरुपपटरुपपणैप्रणमे जेम एकशे
 रततुनोपटवणे तेपटपणै एकशेरनीथाय तेवारैगुरुपणानो

दोषनलागे त्यांकोइकेहेशेके तमेएकजद्रव्यएकत्वपणे
 मानोछो अनेजेदमानतानथी तोकोइमेलातप्रमुखआवा
 सछे तेनेविशेकांष्टपत्थरलोढु माटीचुनोइत्यादिकनाप्रजा
 यमलीनेएकजवनघरथायठे तेनेएकद्रव्यकोहोछोएकघर
 इत्यादीकलोकवेहेवारमाटे एकद्रव्यकांइमनायनही शा
 माटेकेएकद्रव्यमां द्रव्यगुणप्रजायनोअभेदहोयतो कहीं
 येपणअहीयांतोद्रव्यघणाठे माटेएकद्रव्यनमनाय पापा
 ण काष्टइत्यादीक द्रव्यनोखानोखाठे माटेनमनाय जेए
 कजद्रव्यहोय तेनागुणप्रजायतेअभेदमागणाय जेघटने
 घटनीजलधारणगुण रक्ततत्त्वादीकप्रजायतेअनेदछेते
 कांइघटथकीजुदानथी तेमजआत्मद्रव्यतेजआत्मगुणतेज
 आत्मप्रजायएवोव्यवहारअनादिसिद्धठे जेजिवद्रव्यअ
 जिवद्रव्यइत्यादिकजेव्यवस्थासहितजेव्यवहारथायछेते
 गुणप्रजायनाअनेदर्थीनिपजे ज्ञानादिकगुणप्रजायथीअ
 भिन्नद्रव्यतेजिवधर्म मलणविखरणादिकगुणप्रजायथी
 अभिनतेअजिवद्रव्य नहितोद्रव्यसामान्यथीविशेशसं
 ज्ञाथाय तेमाटेसामान्यकांइरहेनहि अनेद्रव्यगुणएवोश
 द्दपणरहेनहि अनेजेद्रव्यगुणप्रजाय एत्रणनामछे एत्र
 णेनामस्वजातीछे अनेएकत्वपणेप्रणमेछे तेमाटेएत्रणेनेए
 कजप्रकारेकहिये तेमआत्मगुणप्रजायनेएमजाणवुं अ
 नेजोद्रव्यगुणप्रजायने अनेदतापणुनथी तोकारणका

रजनेपणञ्जेदतापणुनाहोय त्वारिमृत्तिकाटिकारणथी
 घटादिककारणकेमनिपजे कारजमाटेकारजनीशक्तिहो
 यतो जकारजनिपजे तेविनासर्वथाकारजनिपजेनहि कार
 णमाहेअवतीवस्तुनीप्रणतीननिपजे जेमससानेसिंघना
 थाघशामाटेकेससानेविशे सिंघपणानीशक्तिरहीनधीअ
 थवाविजेद्रटातेएजघटवेलुकानोकानवनावेपणवेलुकामां
 घटपणानीशक्तिनथी एशक्तितोमृत्तिकामांजछे माटे स
 त्तामाजे शक्तिहोय तेजगुणप्रजायमांव्यक्तीपणेप्रगट
 थाय वास्तेजेकारजमाटे कारणनीसत्तामानिये त्वारेअ
 जेदपणुसहेजजआवे अहिघाकोइकहेशेजेकारजउपन्या
 पहेलांजोसत्तायेकारजकारणनेविशे रह्युंते तोप्रथमजका
 रजकेमनथीदेखातु तेनोउत्तर कारजनथीउपन्युंत्यासुधी
 कारणमाहेकारजनीशक्तिद्रव्यरुपे तेरोभावनीठे तेणेक
 रीनेकारजजणातुनथी पणसामग्रीमलेत्वारेगुणप्रजाय
 नीव्यक्तथीआविरजावथायवे तेणेकरीकारजदिसेछेए
 टलेतेरोजावतथाआवीरजावएवे दरशनादरशनजणाव
 वारुपकारजनापरजायविशेकजाणवा तेणेकरीआवीरजा
 वनेसत्यअसत्यविकल्पदोपणनहोय शामाटेकेअनुभवने
 अनुसारेपरजायविकल्पते अहियान्यायकमतवालाएवु
 कहेछेकेअतितकालविशे जेघटादिकअवताठे तेनुंजेमज्ञा
 नहोयतेपणअवतुठे तेमघटादिककारजअवताजमृत्तिका

दिदलथकीसामग्रीमलेनिपजशेएअछतानुंज्ञानहोयतोअ
 बतानी उत्पतीकेमनहोय एटलेघटनुकारणदंडादिकअमे
 कहियेछिये त्यांलाघवपणुठे तमारमेतेघटाचीव्यक्तनुदं
 डादिककारणकहेवुत्यांगोरवहोय विजुअनीव्यक्तीनुंका
 रणचक्षुप्रमुखठे पणुदंडादिकनथी तेमाटेजेदपक्षजद्रव्य
 घटाचीव्यक्तनुंकारणदंडाभावपणजेघट चक्षुजावेगोरव
 नथी एमजेबोलतादोपलागे अठतानीउत्पतीएवुंकहेवुते
 पणमिथ्यावारताठे अनेभुतकालनेविशे पणवटादिक
 पदार्थअछतानथी परजायार्थथीनथी पणद्रव्यार्थथीनि
 त्यजठे अनेनिशटघटपणमृतिकारुपठे तेतोसर्वथाअस
 त्यमार्गठे तेनभकुशमवतथाय जेएवुंवालेछेकेसर्वथाअछ
 तापदार्थनुंसर्वज्ञानमाहेभापणछे एवुंकहेठेतेनेमोटोदोष
 आवेठे तेदेखाभियेठिये केजोज्ञाननेस्वजावेजअठतोअर्थ
 अतीतघटप्रमुखनोचासे एवुंमानीयेतोसर्वसंसारज्ञानना
 कारजठे एटलेवहाजआकार अनादिअविद्यावासनाए
 अठताचासेठे जेमस्वप्नमाहेअठतापदार्थभासेठे एमवहा
 जआकाररहीतशुद्धज्ञान तेबोधनेजहोय एटलेजेपुर्वेक
 ह्यांएवांवचनजेबोलवाथकी एजोगाचारनामात्रिजोबोध
 तेनोपक्षयाय तेमाटेअठतानुंज्ञाननहोय तोकोइकहेशेके
 तमनेकेमजाणवामांआव्युं केअतीतकालेघटहतो तेनोउ
 त्तरजेअतीतघटहमणांपणजाणीयेठियेशामाटेजेद्रव्यथीठ

ताञ्जतीतघटनेविशेषवर्तमान गयाकालरूपप्रजायथी हम
 णांपणञ्जतीतघटजाएयोजायछे अथवानीगमनयनेमते
 अतीतकालनेविशे वर्तमानतानोआरोपकरीयेछिये तेस
 र्वथाअछतीवस्तुनंज्ञाननथाय एटलेधर्मजेअतीतगयाका
 लनेविशेजेअठतेकालेघटनहितो अभावकालेभासेठेअथ
 वाधर्मअतीतघटअछतेकालेभासेठे एमतुजनेचीतमाहेशु
 चासेछे तेसर्वेअतीतअनागतवर्तमानकालेनिर्भेपणेभासे
 ठे एद्रष्टातजोतातोससासिघपणजाएयुंजायएमनथी शा
 माटेकेअछताअर्थनोबोधनहोय निश्चेएकारणकारजनो
 अनेदछेजतेद्रष्टातेकरीने द्रव्यगुणप्रजायनोपणअनेदछे
 ज्ञानादिकगुणप्रजायेकरीने आत्मापणअनेदछे एवीरीति
 एकत्वभावथाय परंतुसमासेवातआवीतेथीवेयेनयनास्वा
 मीदेखाडियेछिये एटलेभेदनयनोस्वामी तेन्यायकठेअने
 अभेदनयनोस्वामी तेसखठेअनेजिनमतवालाअनेदतथाअ
 नेदवेहुनयनास्वामीठे एटलेएकेनयनापक्षपातीनथीस्या
 दवादपक्षनाअधिकारीछे उक्तंच अन्योअन्यपक्षप्रतिप
 क्षभावात् व्यथापरमसरिण प्रवाद नयानशोपानविशे
 पमीथ नपक्षपातीसमयस्तथाने १ यएवदोपाकिलनित्य
 वादे विनासीवादेविशमस्तएव परस्परंसीपुकंठकेपु जय
 त्यधृष्यजिनसासनते २॥ माटेजिनस्यादवादपक्षीछे हवे
 एवोजेएकत्वभावतेशुद्धध्याननोविजोपायो वारमेगुणठा

ऐहोय एटले एकत्ववीतर्कविजोपायो कह्यो तथा सुक्ष्मक्रिं
या प्रतिपाती त्रिजोपायो तथा उच्छीनक्रियावृत्तिचोथोपायो
एकेवलपास्यापठीमोक्षजवानाश्रवसरनाछे एटले एध्यां
नतपकह्यो ५

हवेकायोतसर्गछट्टोतपकहिये छिये एटले कायाप्रमुखउंस
राववुंतेनेकायोतसर्गकहिये एटले उपाधीनुउंसराववुतथाक
खायनुउंसराववुं तथा दूरध्याननुउंसराववुं तथा कायानुं
उंसराववु अने आत्मस्वरूपने विगेरमवु - तेनेकायोतसर्ग
तपकहिये एछ प्रकारे अभ्यतरकहेतां आत्मानिमाहेली
कोरेरह्यां जे कर्मतेनेवालवाने समर्थ तेने अभ्यंतरतपकहि
ये एटले लोक एनेतपस्वीनाजाणेपण समजुहोयतेतो एनेत
पस्वीजाणे अने कर्मथीगेमाववासमर्थ एहिजतपछे माटेत
पतो एनेकहिये एटले निर्जरानुस्वरूपकह्यु ८

हवेमोक्षतत्वकहिये छिये एटले मोक्षकहेताजे कर्मथकी
जिवनेमुकाववुं.

शिष्यवाक्य—स्वामीतमेजे निर्जराकही ते कर्मथकी निर्ज
रवुतेमुकाववुंजकह्युहनु अने अर्हीवलीमोक्षतत्वजुदोक
होगेतेमाशुचिन्नपणछे-

गुरुवाक्य—हे भद्र निर्जरातेदेशथकी कर्मनुछांमवुंछे अने
सर्वथकी कर्मनुमुकाववुं तेनेमुक्ति कहिये अने निर्जरातोनि
गोदियाजिवनेपणछे अने मुक्तितोगर्जजपंचंद्रीमनुप्यचा

रीत्रीयानेचौदमेगुणठाणेठे

शिष्यवाक्य--स्वामीतमेनिर्जरानावारजेदकह्या तेमां
कयाभेदनेविशे निगोदीयानेनिर्जराठेजेतमोवतावोद्यो

गुरुवाक्य--निर्जरानावेजेदठे एकसकामनिर्जराविजि
अकामनिर्जरातेअकामनिर्जरानोभेदनिगोदीयाथीमाभी
नेमनुष्यसुधीठे एटलेअकामकहेताजेनेज्ञानदर्शनचारी
अनीउलखाणनथी पणठेदनजेदनाटिकदुखसहीनेजेकर्म
नुछुटवु तेनेअकामनिर्जराकहिये जेममनुष्यतथात्रिजंघ
पचद्रीघणाकठोरकर्मकरीनेनेकजाय त्यानर्कनाछेदनभे
दनखमीनेकर्मनिर्जरे तथामनुष्यत्रिजचसमकितविनाना
जिवतपक्रियाकष्टप्रमुखसहीने शुभकर्मबाधीनेदेवतामां
जायतेदेवतासंबधीयासुखजोगवीनेकर्मछुटे तेबन्नेअ
कामनिर्जराकहिये तथाजेजिवसमकितादिगुणपाम्योअ
नेज्ञानदर्शनचारीअनावलथकी कर्मनिर्जरेतेनेसकामनि
र्जराकहिये तेविचारश्रीभगवतीजिनेविशे बालमरणत
पपमितमरणानाअधिकारथकीसमजजो हवेजेसर्वकर्मथ
शरहीतथाय तेनेमुक्तिकहिये एटलेजिवनाअसख्यातप्र
शठेनेअकेके प्रदेशेअनताकर्मवलग्याछे तेथकीछुटेतेने
क्तिकहिये

शिष्यवाक्य--स्वामी जिवतोएकद्रव्यअखंमठे. तोप्रदे
प्रदेशेमाहीजेदीनेपेसीगयाकेशीरीते एकर्मवलग्यांठे.

गुरुवाक्य--हे भद्रजिवते ते अखडछे ते जिवथकी जिवनां प्रदेशनो खानपने परंतु ए प्रदेशना आकारनुं फरवुछे तेथी प्रदेश अके कानी अणपणवधायतथा लोकाकाशने पुरवोहो यत्यारे जेटला आकाश प्रदेश लोकाकाशनाते ते टले प्रदेशे आत्मानो अके कप्रदेशवे ही अपाय माटे ए प्रदेश आत्माना एवीरी ते चिन्नचिन्नथाय पणद्रव्यथकी जुदोनपडे हवे एजे कर्मवलग्यांते चेतनने ते खीरनीररुपवल्गीरह्यांछे ते थाजे मकचन प्रमुखधातुने अग्निमांघालेथी अग्निने धातु एकमेक थइरहेछे ते म आत्मासाथे कर्मवलगीरह्यांछे ते कर्म सर्व छुटे तेने मुक्ति कहिये ते सिद्धनापंदरचेदछे.

शिष्यवाक्य--स्वामी मुक्तिना अधिकारने विशेष सिद्धनुंशुं कांमछे.

गुरुवाक्य--मुक्ति कहिये अथवा सिद्ध कहिये एवने एक जनामते अने मुक्ति कहेवानुं कारणके टलुके अहियां कर्म थकी मुकावुतेनुं नाम मुक्ति तोजे कर्म थकी मुकाणो एजजिव सिद्ध अहियां काइ विजो अर्थछे जनहि.

शिष्यवाक्य--स्वामी सिद्धतो लोकने अंत होय.

गुरुवाक्य--सिद्धतो कर्म थकी मुकाणो एजसिद्ध पणतेने रहेवानुं थानक लोकने अंतते पणत्यां कांइ वधाउने सिद्धसम जवानहि त्यांतो सिद्धजिवपणते अने संसारी जिवपणछे माटे अही कर्म थकी मुकाणो तेने सिद्ध कहिये हवे तेनापंदर.

नैदतेदेखाडयिष्ठिये तिर्यकरसिद्ध १ तिर्यकरविनाना
 सिद्ध २ तिर्यसिद्ध ३ अतीर्थसिद्ध ४ ग्रहस्तोलिगेसि
 द्द ५ अन्यलिगेसिद्ध ६ स्वलिगेसिद्ध ७ स्त्रीलिगेसिद्ध ८
 नपुशकलिगेसिद्ध ९ पुरुपलिगेसिद्ध १० प्रत्येकबोध
 सिद्ध ११ स्वयबोधसिद्ध १२ बुधबोधसिद्ध १३ एक
 सिद्ध १४ अनेकसिद्ध १५ हवेतिर्यकरसिद्धतेमहावीर
 स्वामीप्रमुखजेतिर्यकरमोक्षेगया तेनेतिर्यकरसिद्धकहि
 ये १ तिर्यकरविनानासिद्ध एटलेजेगौतमादिगणधरसि
 ध्यातेनेअजनसिद्धकहिये २ तिर्यसिद्धएटलेजेजगवाननुं
 तिर्यप्रवर्त्यापठीजे एटलेजेरिखवदेवस्वामीयेप्रथमतिर्य
 प्रवर्ताव्युं त्यारपछीजेमोक्षेगया तेनेतिर्यसिद्धकहिये एट
 लेतिर्यकहेता जेसाधुसाववीश्रावकश्रावीका एच्यारप्र
 कारनुतिर्यकहियेएसाधुप्रमुखनेजंगमतिर्यनेभगवानेएम
 नेजतिर्यकह्याछे तेतिर्ययाप्यापहेलाजेमोक्षेगयातेनेअती
 र्थसिद्धकहिये तेमरुदेव्यामाताप्रमुखएचोथोजेद ४ ग्रह
 स्तीलिगेकहेताससारपणामारह्योथको कर्मखपावीमोक्ष
 जायतेनेग्रहस्तीलिगेसिद्धकहिये .

शिष्यवाक्य--स्वामी चारीत्रविनातोमुक्तिनीनापाडो
 गे तोग्रहस्तीपणामाकेममोक्षेगया.

गुरुवाक्य--चारीत्रविनामुक्तिहोयनहि पणचारीत्रनाबे
 प्रकारेएकनिश्चेविजेव्यवहारजेव्यवहारचारीत्रछेतेसंसा

रनोत्यांगकरवोतथापंचमहाव्रतउचरवाइत्यादिकसर्वेएव्य
 वहारचारीत्रछे तेनेविपेकाडमुक्तिछेनहि तेतोअभवीप
 एआदरेते अनेमुकिततोनिश्चेचारीत्रमाते तेनिश्चेचारीत्र
 तेआत्मरमणनेविपेरह्युते तेज्ञानध्यानथीकरिनेहेठलना
 गुणठांणानिछांमतोजायअनेउपरनागुणठांणानेआदरतो
 जायएमअनुक्रमेचउदमेगुणठाणेतडेनेमोक्षेपणजायएस
 र्वेआत्मान्नीरमणताज्ञानध्यानरुपउपयोगतेमाछे एकाडं
 वहारनाव्यवहारचारीत्रमामुक्तिनथी माटेग्रहस्तीनेजा
 वचारीत्रआवेतोमोक्षेजाय

शिष्यवाक्यः--कोइग्रहस्तीमोक्षेगयाकेएकेहेणीजछे.

गुरुवाक्य--मोक्षेगयाछेकेहेणीखोटीहोयनही प्रत्यक्ष
 मरुदेव्याग्रहस्तावासेजमोक्षेगयाछे एणेक्यांसाधुपणु
 लीधुछे एटलेग्रहस्तीलीगेसिद्ध ५ अन्यलींगेसिद्धएटले
 जैनसासननालीगधारणविना अन्यदर्शनीनाजेखवाला
 मोक्षेजाय तेनेअन्यलींगेसिद्धकहीये.

शिष्यवाक्य --स्वामीजैनसासनविना बीजानेतोमुक्ति
 छेनही अन्यदर्शननेविपे परीव्राजकनीपाचमादेवलोक
 सुधीनीगतीछे अनेआजीवीकामतीनेवारमादेवलोकसु
 धीनीगतीछे बीजासर्वनीतेथीनीचिगतीछे अनेवारमादे
 वलोकउपरतो एकजैनदर्शनवालानीजगतीछे अनेतमे
 तोअहीअन्यदर्शननीमुक्तिकोहोछो तेनुंकेम.

गुरुवाक्य - हे जज्ञते जे प्रश्न कर्युं ते ठीक पण तारी नजर वरावर पोहोची नही शामाटे के तेना ते ज धर्म मारच्या पच्या रहे तेनी एटला सुधी गती छे अने जेने अतर माजे न जाव आ वे तेनी काइ ए गती न थी

शिष्यवाक्य - स्वामी जो जे न जाव आवितो एठकाय नो कु टो के म करे अने ठकाय नी हशा तो गइ जन थी तो साध पणु क्या थंकी आव्यु

गुरुवाक्य - उकाय नो कु टो वे हे वार थकी न मट्यो ते देखी ने तु स्वरुप हशाने पाप माने छे ते काइ ज्ञाना नि पुरुप खातर माग णतान थी शामाटे के मुक्ति नु कारण ते तो ज्ञान तथा स्वभावने विपे छे अने स्वरुप दया जे छे ते तो अज्ञानने विपे तथा पर जा वने विपे छे.

शिष्यवाक्य - जो पर जावने विपे तथा अज्ञानने विपे छे तो महाव्रत उचरवानु शुकारण वे.

गुरुवाक्य - जे जीव समकी तपामीने सातमे गुण ठाणे ग या अने व्यवहार चारी जे तेने ए गुण करता छे साद्रष्टांते के जे मकोइ पुरुप जमवावे ठो अने सर्व जात नीर सोइ जाणामा आवी छे अने ते र सोइ जमतानी वखतमा जो अथाणु आवे तो वेक वलवधता जावे पण र सोइ जाणामा पीरशी न थी अ ने अथाणु एकलुं जाणामा आवे तें थी काइ मुख भागे न ही मा टे समजुने पण जीव दया प्रमुख रुढी रीते पालवी ए जीव दया

ज्ञाननेवहूगुणकर्ताठि जेमकोइवरपरणवानेजाय अने पोशाकसारोनहोयतो लोकमांकशोभापामेतथापोतानामनथी पणवहूखोटुंलागे अनेपोशाकप्रमुखसामग्रीसारीहोयतो पोतानामनथीपणसारुलागे अनेलोकमांपणसारुदीसे जदपीकन्यातोवरनेवरवानीठि कंइपोशाकनेवरवानीनथी तेमअहीयांपणजीवदयाछे तेपोशाकतथाअथाणारुपंसमजवु माटेसमजुनेएगुणकर्ताठि अनेअन्यलीं गवालाजेमोक्षेजाय तेकंइजैनदर्शननाशास्त्रनाभोमीयानथी तेतोएकज्ञाननापरीवलथकी आत्मस्वरुपनीरमणताकरीनेकर्मखपावेछे जोएमनाहोयतोअनारजलोकअनारजनामुलकमारह्याथकाअनंतामोक्षेगयाठि तेशाथकी मोक्षेगया त्यांकांइजैननोउपदेशछेनही परंतुएकज्ञाननापरीवलथकी आत्मस्वरुपनीओलखाणथइ तेथीस्वरुपरमणीथइनेकर्मखपावेनेमोक्षेजाय तेआगेअनंतागयाहमणांजायछे अनेआगेअनंताजशे एवातमाशंकाराखवीनही स्वलींगतथाअन्यलींगनेविपेमुक्ति तथाधर्मपेठुंनथीधर्मतथामुक्तितोएकआत्मस्वरुपमाछे एटलेअन्यलींगेसिद्धकह्या ६ हवेस्वलींगेसिद्ध एटलेजैनदर्सननोलींगएटलेसाधुवेशेसिद्धवरयाते ७ पुरुपलींगेसिद्धतेपुरुपलींगेसिध्यातेगौतमादीकप्रमुख ८ स्त्रीलींगेसिद्धतेचंदनवाला प्रमुख ९ नपुशकलींगेसिद्ध तेजातेनपुशकधर्मनपामेकृत्री

मनपुशकसिद्ध १० बुधबोधीसिद्धकेहेताजेगुरुनाउपदेश
 थकीप्रतीबोधपामीनेजेसिध्याते ११ प्रत्येकबोधकेहेताजे
 प्रतीकारणएटले काइकारणदेखीनेप्रतीबोधपाम्या जेम
 करकंडुरीख्वेनेजराकुलजाणीनेप्रतीबोधपाम्यातथानमि
 राजाएकचूमीथकी प्रतीबोधपाम्या इत्यादिकप्रतीबोधपा
 म्यातेनेप्रत्येकबोधकहीये १२ हवेस्वयबोधकेहेताजेस्वयं
 मेवपोतानीमेळे प्रतिबोधपामी चारीत्रलेइमोक्षेगयातेने
 स्वयबोधसिद्धकहीये

शिष्यवाक्य -स्वामीप्रत्येकबोधमानिस्वयंबोधमांशोफेरठे
 गुरुवाक्य -प्रत्येकबोधपरकारणवडे प्रतीबोधपामेछे
 अनेस्वयंबोधतेनेपरपोतानोनियमनथी शामाटकेमरघा
 पुत्रसाधुनेदेखीनेजातीस्मरणपामीप्रतिबोधपाम्या तेमज
 भगुप्रोहिततथाभगुप्रोहितनापुत्र आदेदेइनेवजिव ते
 मध्यवेनेजातीस्मरणचारएकएकनाकारणथी तथाअनाथी
 मुनीरोगआकुलथकी तथाकपीलकेवलीनिक्षानाकारण
 थीइत्यादिकस्वयबोधनोकेइएकप्रकारनोनियमनथीतयां
 पिप्रत्येकबोधअनेस्वयबोध एनोअनभावएकसरखोछेप
 रंतुशास्त्रकारेजेदजुडोलरूयोठे तेश्रीपन्नवणासुत्रनीटिका
 नेविपेएवुकह्युठे केस्वयबोधपोतानेज्ञानजाणपणुहोयतो
 पोतेपोतानीमेलेविचरे कोइनाजेगोनविचरे कदापिपोता
 नेजाणपणुआछुहोयतो कोइसाधुनासिंघामामा जेगोरही

नेक्रियाआचारशिखेपछीपोतानीखुशीहोयतो जेगोविचरे
 याजुदो विचरे अहियांकदापीकोइकदेशके स्वयंबोधने
 चेलाचेलीपरवारनहोय तेकहेवावालाअज्ञानिछे शामा
 टेकेकपीलकेवलोयेसातसेभिलोनेदिक्षाआपीछेइत्यादिक
 शास्त्रमांजुवेतो चेलाचेलीपरवारकह्याछे तथाभगवती
 जिनेविपेएवुंकह्युंछेकेस्वयंबोधना साधुतथासाधवीतथा
 श्रावकतथाश्रावीका इत्यादिकपाठघणासुत्रमांछेपणजे
 नेअज्ञानरुपीयांपडलआडांफरयाहोय तेघणीनादेखे ते
 मांकांइशास्त्रनोदोपनाजाणवो एटलेस्वयंबोधनोअधि
 कारकह्यो १३ तथाएकसिद्धतेमहावीरस्वामीप्रमुख१४
 अनेकसिद्धतेरीखवदेवप्रमुख १५ एमपंदरेजेदेकर्मथकी
 मुकाइनेसिद्धिपढनेवरया तेनेमुकिततत्वकहिये एटलेएन
 वतत्वसंक्षेपथीदेखाडया तेनवतत्वनुसारतत्वएकछेतेसर्व
 माहेआत्मतत्वएजसारठे अनेवीजोजेअजिवतत्वतेगोरु
 वाजोगछे एमएवेतत्वनुंस्वरुपउलखीने हे ज्ञे उपादे
 एअणस्वरुपमाहे हे तेछाडवाजोगवस्तुनेगाडवी ज्ञे कहेता
 जाणवाजोगवस्तुनेजाणवी उपादे कहेताआदरवाजोग
 वस्तुनेआदरवी एटलेजिवाजिवपदार्थजाणवानेतेजाणी
 नेअजिवपदार्थनोत्यागकरवो अनेजिवपदार्थआत्मस्वरुप
 तेनुंआदरवुं एवीरीतेतत्वंनीसारजाणी रागद्वेषविखयक
 खायत्यागीनेपोतानास्वरुपनेविपे थिरभावेरमणताक

रवी एटलेसर्वधर्मनुं तथासर्वशास्त्रनुंसारएहिजते.

॥ दुहा ॥ एग्रथपुरणनयो पुरणनयोत्राणद ॥ गुण
निधीगुणआगलो प्रगट्योचिदानद ॥ १ ॥ चितघनंआ
नंदनी भास्योएहविचार ॥ तत्ववेतेमाचाखीया जडचेत
नएधार ॥ २ ॥ तेनातत्वनवकह्या विवरीनेविचार ॥ त
त्वएकतेमाकह्यो उध्वीतभावउदार ॥ ३ ॥ रत्नागरसमए
हंछे ॥ भरीयोगहेरगजीर बहूवस्तुवहूपदतणो वहोरीन
रीयोनिरा ॥ ४ ॥ कल्पवृक्षसमजाणजो वगीतपुरणहारा ॥ सर्व
ग्रथसीरताजए उत्तमएहविचारा ॥ ५ ॥ एहग्रथजेवांचशे न
एशेजेमहाभाग ॥ आत्मानिर्मलतेहनो अनुभवसाथेजाग
॥ ६ ॥ अनुभवएहमादाखीयो आत्मकेरोसार व्यक्तापुरुप
तेपिये अथवाश्रोतासार ॥ ७ ॥ अनुभवजगचितामणी अ
नुभववठीतपुरा ॥ अनुभवथीकर्मसवीटले थायेतेशुरविर
॥ ८ ॥ गुणअनतअनुभवतणा कहेतानावेपार ॥ एहथीशि
वसपतिमले एहिजसुखदातार ॥ ९ ॥ समकिनपणअनुभव
विषे चारीत्रपणएह्या ॥ अनुभवथीकेवललहे एमानहिस
देहा ॥ १० ॥ एमअनतागुणकह्या अनुभवज्ञाननासार ॥ ज्ञा
तालेजोपरखीने एहग्रथनेधार ॥ ११ ॥ अनुभवविणजेजेक
था अथग्रकरणहोया ॥ तेतेसहूनिष्फलकह्या हंसविणकाया
जोया ॥ १२ ॥ तजेकबुद्धिएहथी भजेसबुद्धिसार ॥ पढतांए
हग्रथने भेदज्ञानमनोहार ॥ १३ ॥ तेमअभेदज्ञानठे नयनि

श्रयव्यवहार॥आत्मज्ञानीसुखलहे पामेजवनोपार१४॥
 कल्पव्यवहारउठेदीयो उछेद्योपरजाव॥ वादवीवाटएमां
 नही नहीपरगुणगाव॥१५॥ गायोगुणएकआतमा भाव
 अध्यात्मसाथा॥ तेमद्रव्याणुजोगसही जेहछेनीजआथा॥
 १६॥सत्तारवरुपवर्णनकह्यो शक्तिव्यक्तितेमजाण॥इत्या
 दिवहूभेदथी गुणपर्जायचित्तआण॥१७॥सुलजबोधीजी
 वहंशो तेसदहशेएह ॥ अल्पकालेतेशीवलहे तेमांनहीसं
 देह ॥१८॥ बाहेरज्ञानीवापडा तेअज्ञानीकेहेवाय॥ तेने
 रुचीनवीहोवे देखतांमतीमुझाय ॥१९॥ अन्ननीरुचीनवी
 होवे जीयुंज्वरकेजोर ॥ त्युंकर्मकेउदे अथनरुचेजोर ॥२०
 ॥ जावेजवज्वरतेहने अन्नपररुचीथाय ॥ त्युंमीथ्यात
 उदेमटे अथएचित्तसुहाय ॥ २१ ॥ समकीतस्वरुपनेपा
 मवा पामवानीजस्वभाव ॥ तोएअथनेआदरो जेमदूरम
 तीदुरजाय ॥२२॥ पक्षीजेअग्रंथना ताकोस्थीरविश्राम॥
 वेगेतेनरपामशे शिवरमणीनोठाम ॥२३॥ उपराठाएअ
 यथी रह्याजेनरतेह ॥ तेससारमांअटकशे बोहोलससा
 रीएह ॥२४॥ कामकुंभकल्पवेलजे तेमपारसपाशाण॥वं
 गीतपुरणअनेकछे एकजवकेजाण ॥२५॥ अतेपरजवदुं
 खदीये धनथीसुगतीनहोय ॥ दूखदाइससारमां धनक
 ह्युंछेसोय ॥२६॥ इहाअथथीसंपजे आजवपरभवसुख ॥
 अधिपतितीनलोकको सेहेजेथायेमुख ॥२७॥ अंथएहगु

एज्ञानवे करेघटउद्योत ॥ स्वपरवस्तुप्रकाशनो जेनीश्र
 नंतीजोत ॥२८॥ तेकारणनव्यप्राणिया करजोज्ञानश्र
 भ्यास ॥ एग्रथआधारजो तेथीसुखनीराश ॥२९॥ श्रोता
 व्यकासुखलहे प्रगटेआत्मरुप ॥ सेहेजेशिवरमणीवरे
 तेमुदेभवकुपा॥३०॥ एग्रथअविचलरहो जेमरह्यागेशिवा
 मुरगीरीपरतेमरहो ननपेरेसटीव ॥३१॥ एग्रथविस्त
 रीसही भुलोकमाएह ॥ मुखमुखएहीजग्रथने विरुयात
 शेजोतेह ॥३२॥ सवतत्रोगणीत्रोगणीसमे श्रावणदूजो
 रास ॥ क्रश्रपक्षसप्तमीसही पुरणथइआशा॥३३॥ भ्रगु
 ररेभाखीयो साथेसघउमेद ॥रीइयादलतेसर्वनां टल्या
 र्विनोखेद ॥३४॥ मुनीहुकममोटमने रच्योग्रथाविशाल
 पमटायोतनको प्रगटयोअनुचवलाल ॥३५॥ अमृत
 सपीवोभलो ज्ञानसुधारसत्राज ॥ दुखदोहगदुरेगया
 रयोआत्मकाज॥३६॥ धन्यदाहाडोतेआजनो सफल
 डोतेआज ॥ वगीतकाजपुरुथयु पाम्योअनुचवराज ॥
 ३७॥ बहूशास्त्रनीशाखथी बहूग्रथनाभाव ॥ मुनीहुक
 एभाखीयो पाम्योआत्मलाव ॥३८॥

॥इतिश्रीतत्त्वसारोद्धारग्रथसंपूर्ण॥

अनुभवप्रकाश ग्रंथ

श्रीगुरुभ्योनमः

अंतरअनुभवकेप्रकाशताजेअनुभवतेनोबोधथाय एवो
आग्रथछेएटले आग्रथनेविशेअनुभवनोविचारकहूछुं
शामाटेजे मुक्तिमार्गसाधननाअनेकमार्गछे पणअनुभव
वविनाकोइजीवनीमुफतीथायनही मुख्यराजमार्गतोए
जछे बीजाजेमार्गछेतेसर्वेछिडियोछे तेपणठिंडियोअनु
भवनीहृदसुधीतोपोचतीजनथी तोआगलशानीजचाले
अनेअनुभवठेतेकेवोछे साक्षातरत्नचिंतामणीजेवोठे जेम
रत्नचिंतामणीमनोवंबितपुरे तेपणएकअनुवनेवणासीक
सुखनोदातारछे अनेअनुभवठेतेतो अविनासीसुखनो
दातारठे शामाटेजेअनुवनेविपेतो आत्मअनुभवकरवा
थी संतोपरुपीजेसुखउत्पन्नथाय तेमुखथकीतोकेहेवाय
नहि जेनेकेवलीतथाअनुवनीजाणे केमकेएसुखनेपडखे
कोइबीजांसुखनीउपमादेवाजोगठेनहि तोप्रत्यक्षजोतां
अनुभवठे तेतोचितामणीरत्नठेअनेपरअवेसर्वकर्मथकीमु
कावीने शुद्धस्वरूपनिरंजननीराकारथइ पोतानाशुद्धस्व
भावनेथीरतापणुपामीने सिद्धक्षेत्रमाविराजमानथको
अनंतोकालरहे एटलेएनेजनमजरामरणानांदुखटलेमाटे
अनुभवएजचितामणीरत्नठेएजसत्यछेपेलुचिंतामणीरत्न

हेतेतोपुढगलीकछे तेतोजीवनेघणो काजरखडावनारठे
अनेआतोमोक्षदातारठे अहीयाकोइकेजेचंतामणिरत्न
भववधारनारठे तोएनीउपमाकेमदीधी

तेनोउत्तरजे संसारनीमाहेलीकोरएथीवीजीवस्तुउत्तम
जोवामाआवतीनथी माटेएनीउपमादीधी माटेउपमाते
कंडवरावरगणवीनही हवेजेअनुभवठे तेमहाअमृतरस
ठेंएटलेअमृतकेहेताशु केजेनेखाधेफरीथी मरवुनपडेते
नेअमृतकहीये अहीयांअजाणलोक घणीजगायेवत
लावेछेपणतेसरवेअसतछे केमकेइद्रादीक सर्वेनेजनमम
रणरह्याठे माटेत्याकइअमृतरसठेनहि अमृतरसतो
एकअनुभवज्ञानमाजठे जेनेपीधेथकी जनमवुमरवुपमेन
हि इत्यादिकघणीउपमाजेसारमासारहोय तेअनुभवज्ञा
नमाजलागुपडेठे पणवीजानेसारी उपमालागुपन्तीनथी
शामाटेजेमुक्तिसाधननेविषे तप जप क्रिया कष्टपूजा
शेवादानादिक एसर्वेमिथ्याभावठे एथकीपणमुक्तित्रण
कार्लमाथायनहि मुक्तिनोमार्गतो एअनुभवज्ञानजठे ए
टलेअनुभवछेते शुद्धस्वरुपनापगथीयाठे अनेशुद्धस्वरुप
तेमुक्तीनोदरवाजोठे तेकारणमाटेधर्मअर्थीजीवोनेआत्म
अनुभवरुपपगथीये पगथीयेचडवुंतोकोइवरवतेशुद्धस्वरु
परुपदरवाजामापिसाशे तोमुक्तिना सुखपणपामशी अने
एअनुभवविना बीजेआडेअवलेपगथीयेचमशी तोधर्मको-

इद्विनपामवानानथी मुक्तिनांसुखतमनेमलशेनहि चारग
तीसंसारमारखडशो माटेआत्मअनुभव करोकेतमारुक
ल्याणथायएहमारो हेतुउपदेगठे इतिपीठिका

हवेअनुभवपदार्थठे-एटलेअनुभवकेतां- जेवीचार
ण तेनेअनुभवकहिये तेनावेभेदठे एकशुद्धः १ बी
जोअशुद्ध २ हवेजेअशुद्धअनुभवठे तेनावेभेदठे एकशुद्ध
१ बीजोअशुभ २ तेमध्येअशुभनावेभेदछे एकक्रत्रिम
एकसेजथी हवेजेक्रत्रिमअशुभअनुभवठे तेसंसारनीमां
माहेलीकोरे अशुभकृतवनोजेटलोविचार तथाकेटलाक
मांधर्मतथापुन्यकहेछे जीवादिकसंसांप्रमुखसर्वेजावरह्या
ठे तथारागद्वेशमोहविषय कखायादिक उत्पन्नकरवांतेने
लोकीकनेविषे धर्मतथापुन्यकेटलाएककाममांमानेछे ए
सर्वेक्रत्रिमअशुभअनुभवजाणवो हवेजेसेहेजअशुभअनु
भवतेनोविचारकहुंछु एटलेजीवमात्रअनादिकालनाअ
ज्ञानीठेअने मिथ्या १ अवृत्त २ कखाय ३ जोग ४ प्र
मुखनेविषेकारणविनारमणताकरीरह्योछे - तेवैसंगक्रि
यारुपठे तेअनंताकर्मनवांअशुभवार्थठे एजवीचारणाते
नेस्वभाविकअशुभअनुभवकहिये एवीजोभेद २ हवेजेशु
भक्रत्रिमअनुभव तेनोवीचारकहुंछु एटलेशुभकेहेतांजेरु
मापुदगलनुमेलववुं अशुभकेहेताजे साठापुदगलनुमेल
ववुंसाठापुदगलतेपापरुपरुडापुदगलतेपुन्यरुप हवेअर्ही

यांशुभजेऋत्रिम तेपुन्यरुपछेतेअहीया शुंविचारकरेतेकहु
छुहंशा मृखा अदत मैथुनने परिग्रह इत्यादिकतजवा
नोजेविचार तेनेविषेएकाग्रचित्ततलालीनपणुंतेनेअनुभव
कहियेतेऋत्रिमअनुभवथयो पणकइस्वजावथकीक्षयडप
सप्तजावआवेनही तोएथीकइआत्मानुं कल्याणथयुंनहि
विशेशपुन्यबंधपणथायनहि एसामान्यप्रकारेशुभऋत्रिम
अनुभवकहियेछीये पणएथीकइआगल कारजसिद्धिनथी
हवेजेआगलअक्रतम स्वजाविकजेशुभ अनुभवतेनाअ
नेकभेदछे कोइकतोवेहेवारसमकीतनीविचारकरे कोइदे
शवीर्ती कोइकसर्ववीर्तीपणानोविचारकरे पणतेशुद्धनथी
शामाटेजेतेतेथानकनी प्रकतीयोनोनाशथयोनथी माटेते
अशुद्धजते

शिष्यवाक्य -स्वामी एनेस्वजाविकतोकेहीछो अने
अशुद्धकेमकहोछो तेनोउत्तरजेस्वभाविककहियेछियेतेनु
कारणसांजल-जेएनेस्वजावेजससारउपरथीरागादिकम
दपडयोवे अनेभवन्नथीकरिनेउद्वेगपणुछे तेथीस्वभा
वेजशुभरमणतारहेछेतेमध्येकोइकजिवजथाप्रवर्तिकरणे
गयो अनेकोइकनगयो एमाटेएनेस्वजाविकशुभकहिये
पणशुद्धतोएनार्थीघणुंदुरछे अनेएशुभअनुभवथीपुन्यकि
चित्तसारउपार्जेमाटेएनेस्वभाविकशुभअनुभवकहिये ह
वेजेशुद्धअनुभवनुस्वरूपकहुछुंके एश्रोताजनो एकाग्रचि

तथइनेधारजो एथीतमाराआत्मानुंकल्याणथशो हवेशुद्ध
अनुभवतेविचित्रप्रकारनोठे परंतुसमुदायेतेनावेभेद २
एककृतमशुद्धअनुभव १ बीजोक्रत्रिमशुद्धअनुभव हवे
जेक्रत्रिमशुद्धअनुभवते तेआत्मानेदेवतत्वकरीविचारे अ
थवाद्रव्यगुणप्रजायनोविचारकरे अथवाज्ञानदर्शनचारी
त्रनोविचारकरे तेनेक्रत्रिमशुद्धअनुभवकहिये.

शिष्यवाक्य -स्वामिएतोप्रथम अशुद्धवालाने घेरवि
चारहतोज तोअहियांविशेषशुंथयु तेशुद्धशाथकिकहोठो
॥ तेनोउत्तर ॥ हवेगुरुजीमाहाराज शिष्यनेसमजावेठे
देवाणुप्रियत्यातो सम्यकगुणप्रगटथयो माटेएनेशुद्धक
हियेठियेएटलेजेनेसम्यकगुणप्रगटयो तेनेज्ञानीकहिये
जेनेसम्यकगुणनप्रगटयोतेनेअज्ञानीकहिये अज्ञानतेअ
शुद्धनेज्ञानतेशुद्ध तेमाटेतेनेशुद्धअनुभवकहियेछिये.

शिष्यवाक्य -स्वामिसम्यकजावतेशुं ॥तेनोउत्तर॥ जे
सम्यककहेताजेजलेप्रकारेआत्मस्वरुपनुंजाणवुतेनेसम्य
कजावकहिये हवेतेसम्यकजावनुंजेप्रगटवुं तेनावेभेदछे
एकव्यवहारथकी १ बीजानिश्रेयकी त्याव्यवहारथकी
जेदेवअरिहंत १ गुरुसुसाधुनिग्रथशुद्धपरुपक शुद्ध
जावमारमणतावाला २ धर्मजेकेवलीजाखीत. खट
द्रव्य पंचास्तिकाय तैमध्येथीएकआत्मद्रव्यजिवास्ति
काय तेआदरवाजोगछे बाकीधर्मास्ति १ अधर्मास्ति

२ आकारित ३ एत्रणद्रव्यजाणवाजोगठे पुद्गलास्ति
 कच्छांडवाजोगएत्रणेतत्त्व ३ साचाकरिनेजाणे तेनेसदहे
 तेनेव्यवहारसमकितकहिये एंव्यवहारसमकित एकेका
 जीवनेअनतीवारआवे पणएथकीकांडजीवनुकल्याणथा
 यनहि नेजन्ममरणनाफेराटलेनहि माटेएव्यवहारसम
 कितपणजाणवाजोगठे

हवेनिश्रेसम्यकजावकहूछुं जेनिश्रेकहेताआवीवस्तु
 पाछीनफरे तेनेनिश्रेकहिये अहियाकोइकहेजेनिश्रेस
 मकिततोआव्युंपाछुजायछे ॥ तेनोउत्तर ॥जेएनीसत्ताये
 कंइमिथ्यातफरीवलयुंनथी जेमकोइबीजनेघणुमृतिकानुं
 दलचनीजाय त्वारेतेविजजणायनहि पणजेवारेतेमृति
 कानुंदलधोवाइजाय तेवारेएजबीजउगीनेमोटुझामथाय
 तेमअहियांजेगंठीनेदकरेलोवे तेगांठयफरीथी रागद्वेप
 नीवधातीनथीअनेजेप्रदेशेजेमिथ्यातफरीवलयुतेमिथ्यात
 ज्यारेत्यारेपणनाशपामे शामाटेजेअर्धपुद्गलपरावर्तनउ
 परतोरहेवानुठेनहि अनेपुर्वजेबीजवावेळुछे समकितरुं
 पतेसमकितरुपाविजनेकरणपणकरवानथी अनेगंठीभेद
 पणकरवानथी तुरतएवृक्षयइनेमोक्षरुपीयाफेळनीप्राप्ती
 थाय माटेएसत्तायेसमकितछे माटेविकेमीततेथीकइसमं
 कितगयुंनहि एमसमजवुंकेनिश्रेवस्तुपाम्या तेजाय
 नहि हवेजेनिश्रेजेसम्यकजावतेनुंपामवुंतेनावेजेदछेएक

तोसम्यकज्ञान १ विजुसम्यकदर्शन २ तैवंनेवानांक्षयउप
समभावमारह्याछेअनेक्षयउपसमभावतेतेतोस्वजावीकठे
तेखेउपसमचारकर्मनोथायठे ज्ञानावरणी १ दर्शनावर
णी २ मोहनी ३ अतराय ४ एच्यारक्षयउपसमीककर्मछे
बाकीच्यारकर्मरह्यांतेतोउदिकजावेठे । अनेतेभवपर्यतठे
पणगुणठाणानीरीतमानथी । अनेआजेच्यारकर्मठे तेउ
दिकजावतोठेज पणगुणस्थानकनी हठप्रमाणेक्षयउप
समथतोजाय तेमध्येचोथेगुणठाणेदर्शनआसरीउपसम
तथाक्षयउपसमतथाक्षायकत्रणेभावलाधे तथाआठमेनव
मेदेशमेगुणठाणेचारीत्रआसरीउपसमजाव तथाक्षायक
भाववेलाधेठेतथाअगियारमेगुणठाणेचारीत्रआगरीएक
जोउपसमजावजलाधेछे उपरातक्षायकभावलाधेछेतथा
ज्ञानतथापांचलब्धीनेविषे । चोथागुणठाणाथीमामीनेवा
रमागुणठाणासुधी क्षयउपसमलाधेछे उपरांतआएक
जावठे माटेअहियाप्रथमगुणनुंकर्ताविशेशेकरीने क्षयउ
पसमजठे तेमाटेप्रथमजजेज्ञाननोरुवजाविकक्षयउपसम
भावथायतोपोतानाआत्मस्वरूपनेजाणे । अनेपरभावनी
त्यागकरे एभावपूर्वनोतोतेजावअहियांप्रगटकरे । तेदर्श
ननुंपणअपूर्वकारणकहिये । एजजेवारेपोतानास्वरूपनुंज
थार्यजाणपणअज्ञेथायतेवारे समकितदर्शनपणप्राप्तिया
यएटलेअहियां । मिथ्यातमोहीनीतथाचारीत्रमोहीनीनो

क्षयउपसमथाय
 हवेतेजेज्ञानावरणीकर्मनाक्षयउपसमनुकह्यु तेनावि
 चित्रप्रकारे परंतुवेभेदश्रवण्यसमजवाजोश्ये एकक्षय
 उपसमअज्ञाननेजजेठेबीजोक्षयोपसमज्ञाननेजजेछे . जे
 क्षयउपसमअज्ञाननेभजेछे तेनाअनेकजेदछे . तेना
 समुदायेत्रणभेदकरियेछिये मतीअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २
 विभगअज्ञान ३ तेमध्येनीगोठथीतेपांचथावरमुधी तेने
 विपेवेअज्ञानछे . मतीअज्ञाननेश्रुतअज्ञान तेनाअनंता
 प्रजाय . अवक्तव्यजावेछतीप्रजायेछे . अनेतेद्रव्यनुसाम्भ
 थपणुतथाक्वचित्प्रजायहजुसाम्भथपणुव्यक्तवजावेवादर
 थावरमाजणायछे पणसुक्ष्मनेविपेतोकेवलअव्यक्तव्यजा
 वजभासनथायछे अनेजेवनेअज्ञानकह्यातेतोवादरमा त
 थासुक्ष्ममाअवक्तव्यभावेजभासनथायछे तथा चेरद्री तेरं
 द्री चोरद्री एत्रणनेज वीग्लेद्रीकहियेछिये तेनेविपेवक्त
 व्यपणुछे शामाटेकेसुखदु . खनेवेदेछे तेनेविपेपणमतीअ
 ज्ञाननेसुतअज्ञाननो क्षयउपसमछे इहाकोइकेहेगेजेम
 तीअज्ञाननेसुतअज्ञानपणसिद्धातमाकह्याछे . तेनोउत्त
 रकेएवातसिद्धातमाकहिंछंतेसत्यछे शामाटेकेएकउपज
 तीवखत अप्रजाप्तअवस्थामालाधे . शामाटेकेजेकोइक
 जीव सास्वादनगुणठाणेरह्योथकोमरणपामेवे अनेवी
 ग्लेद्रीमाउपजेवे तेजीवनेउपजतीवखतलाधे . पणकाइ

सर्वजीवआशरीनेकह्युंनथी माटेएगतीआशरीनेतो मती
 अज्ञाननेसूतअज्ञानएवेनो क्षयउपसमलाधेछे तथाअ
 सेनियापंचद्रीनेमतीअज्ञाननेसूतअज्ञान एवेनोजक्षय
 उपसमलाधेछे तथासेनियापंचद्रीनेत्रणक्षयउपसमलाधे
 मतीअज्ञानश्रूतअज्ञानने विभंगअज्ञान तेमध्येविचंग
 अज्ञानछे तेनारकीनेतथादेवनेचवंप्रत्येछे अनेत्रीजचुंत
 थामनुपपंचद्रीएवेनेगुणप्रत्येछे तेपणत्रणेअज्ञाननाअ
 नतानेदठे इहांकोइकेहेशेके अवधीनाअसख्याता तथा
 मतीश्रूतनासंख्यातानेदठे तेनोउत्तरकेसंख्यातातथाअ
 संख्याताभेदकह्यातेतोउपजवाआशरीठे पणएज्ञाननावि
 पेनाअनंताभेदछेएअज्ञाननाक्षयउपसमनोसंक्षेपेविचारक
 ह्यो हवेज्ञाननाक्षयउपसमनोविचारकहुछु पणतेज्ञाननोवि
 चारतोविस्तारेंते तेकेहेतांतोग्रंथगोरवथइजायनेअहियां
 तोअनुभवनोविचार केहेवोछेमाटेअनुभवजेटलोसक्षेपेक
 हिशु हवेजेअनुभवकरवातेतोसस्वरुपनो करवा फायदो
 तीतेमांजछेपरस्वरुपनाअनुभवमाकइ फायदोठेनही हवै
 त्यास्वस्वरुपनु जाणवु तेपरस्वरुपनुजाण्याविनास्वस्व
 रुपओलखायनही अहीयांकोइकेहेशेजे परस्वरुपनुजा
 णवानुशंकांमछे एकआत्मानोअनुभव करीयतेनेकहीयेके
 चाइतारुवोलवुंकाची समजनुधाम्मछे शामाटेजेआत्माछे
 तेतोअरुपांछे अनेरुपीनेविपेदवाणावे हवेतुंअरुपनिगी

रीतिजाणीगनेतेनो, अनुभवशीरीतेकरीश माटेद्रव्यनाल
 क्षणओलखवांजोइये लक्षणवडेकरीनेसर्वेजुदापमे, पछी
 तेगाहीथीआपणोद्रव्यछे तेआपणेग्रहीलइयेनेवाकीनाद्र
 व्यछेनेनेपड्यामुकीये अनेआपणेआपणा आत्मानोएवे
 अनुभव करीये तेमाटेप्रथमसर्वद्रव्यने जाणवाजोइयेअने
 तेनालक्षणगुणप्रजाय सर्वेजाणवाजोइये - त्यारेसतअ
 नुभवथाय तेमाटेप्रथमद्रव्यनानामकहुछुं, धर्मास्तीकाय
 १-अधर्मास्तीकाय २ आकास्तीकाय ३ पुद्गलास्तीका
 य ४ जिवास्तीकाय ५ नेठ्ठोकालद्रव्य - ६ हवेतेनुलक्ष
 णउत्पातवयनेध्रुवे तेउपजवुनेवणसवु, तेप्रजायनयनी
 अपेक्षायेवे अनेध्रुवतापणुतेद्रव्यार्थकनयनीअपेक्षायेवेए
 जेकडउत्पातनेवयसजुक्तएसतलक्षणद्रव्यनावे
 हवेतेजेप्रजायनोजेसमुदायेतेनेगुणकहियेबिये एटले
 एकएकद्रव्यमाअनतागुणरह्यावे नेएकएकगुणमाअनंता
 प्रजायरह्यावे इत्यादिकअनेकविचारवेपणगुणप्रजायवत
 तेद्रव्य हवेजेअर्थक्रियाकरे तेनेद्रव्यकह्याछे त्यातोपोत
 पोतानोअर्थसाधेतेनेद्रव्यकहिये तेमधेधर्मास्तिकाय चल
 णसाह्यनेअधर्मास्तिकायथारसाह्यकरे आकाशअवगाह
 नाआपे अनेकालवर्तनापणुकरे एसर्वेआपआपणीक्रीया
 करेछेअनेपुद्गलास्तिकवे तेपणमल्लवुनेवीखरवुपुरणथव
 नेवेराइजवुं एपणपोतपोतानीशक्तीये पोतपोतानीअर्थ

क्रीयाकरेतेपणुआपणो जेचेतनएज महाअज्ञानमांपड्यो
 थकोपोतानी अर्थक्रीयाछोडीने परक्रियाकरेतेएमोटुदूःख
 थायेशामाटेके तुंतोचेतनालक्षणते तेतुंतारोधर्मछोडीने
 परधर्मेकेमपेसेछे पणतुंगुकरे तनेअनादिकास्तनुअज्ञान
 सगीछे एकइनवुंनथी तेअवकव्यचावमापणतनेहतु तेव
 कव्यचावमापणतेअज्ञानरह्यु तेथीपरनोकीधोसंग तेवा
 रेतनेमोहेआपुअंग तेवारतेनेविशेषेवाध्योरंग तेवारथयो
 स्वधर्मतोन्नग हवेतोतनेसदगुरुयेषणी कृपाकरिनेधर्म
 मार्गदेखाडयो अनेसर्वेअनुभवकरवालायककरथो माटे
 तुंआत्मअनुभवकर आत्मस्वरूपकेवुछेकेशुद्धद्रव्यार्थकन
 येजोइये तोशुद्धचिदानदमयमुर्ति परमानंदमयसाक्षात
 तुपरमात्माते एनिश्चेनयनुवचनते शामाटेकेअहीयाअनु
 भवकरवोरहेनहि केमकेउच्चारणकरवुंवधथयुं तेवारेगुण
 गुणीनेदपणकरीशकायनहि तेवारेएकजाणवामात्रअनु
 भवरह्यो एनयतोपूर्णनेघरेछे अनेआपणेतोअधुराति
 ये केमकेसिद्धथयानथी साधकअवस्थाते माटेआपणने
 तोव्यवहारनयप्रधानछे केमकेजेअनुभवकरवो तेगुण
 गुणीनानेदकरवापडे गुणप्रजायनोविचारकरवोपमेतेस
 र्वेव्यवहारनयथायछेमाटेअधुरानेव्यवहारनयवलवानछे
 अंतेतोएव्यवहारनयमिथ्याछे हवेजेअनुभवकरवोतेप्रजा
 यनेविपेकरवानेते हवेतेप्रजायआत्माने विपेकेटलाकसा

मान्यथकीठेकेटलाकविशेषयकठितेकिंचितनामथकीजणा
 वुंछु मुलसामान्यस्वभावना ६ ठ भेद अस्तित्व १ वस्तु
 त्व २ द्रव्यत्व ३ प्रमेयत्व ४ सतत्व ५ अगुरुलघुत्व
 ६ एतयेमूलसामान्यस्वभावकह्यातेमध्येआस्तिसामान्य
 स्वभावनाउत्तरसामान्यस्वभाव १ ३तेरकह्यावे तेनांनाम
 अस्तित्वभाव १ नास्तित्वभाव २ नित्यस्वभाव ३ अ
 नित्यस्वभाव ४ एकस्वभाव ५ अनेकस्वभाव ६ जेद
 स्वभाव ७ अजेदस्वभाव ८ भव्यस्वभाव ९ अभव्यस्व
 भाव १० वक्तव्यस्वभाव ११ अवक्तव्यस्वभाव १२ प
 रमस्वभाव १३ इतिउत्तरसामान्यस्वभाव हवेविशेषस्व
 भावकहूछुं विशेषकहेतांकोइद्रव्यमांलाधे नेकोइद्रव्यमां
 नलाधे तेना २५ भेदवे परिणामिकता १ कर्तृता २ ज्ञा
 यकता ३ ग्राहकता ४ जोकृता ५ रक्षणता ६ व्याप्या
 व्यापकता ७ आधाराधेयता ८ जन्यजनकता ९ अ
 गुरुलघुता १० विभुतकारणता ११ कारकता १२ प्रभु
 ता १३ जावुकता १४ अभावुकता १५ स्वकार्यता
 १६ सप्रदेशता १७ गतिस्वभावता १८ स्थितिस्वभावता
 १९ अवगाहकस्वभावता २० अखमता २१ अचलता
 २२ असंगता २३ अक्रियता २४ सक्रियता २५ एप
 चीसेविशेषस्वभावजाणवा हवेसामान्यप्रजायतेद् छवे
 तेद्रव्यप्रजायजाणवा तेद्रव्यव्यजनप्रजाय १ गुणप्रजा

य २ गुणव्यजनप्रजाय ३ स्वभावप्रजाय ४ अगुरुल
घुप्रजाय ५ विज्ञावप्रजाय ६ एतसामान्यप्रजायकहिये
तथाअगियारसामान्यस्वभावकह्याछे तथाअविशेषस्वचा
वकह्याठे तथादशसामान्यलक्षणकह्याठेतयासोलविशेष
लक्षणकह्यांछ इत्यादिकद्रव्यप्रजायेसमजवावास्तेअने
कभेदकह्याठेतेअनुभवमांविचारकरतासर्वेकत्रिमअनुभव
थाय पणस्वभाविकअनुभवएमनथीअनेकत्रिमानुभवनी
हद चोथागुणठाणार्थीमांडीनेसातमागुणठाणासुधीनीठे
अनेस्वभाविकअनुभवठे तेआठमार्थीतेदशमागुणठाणा
सुधीनीठे नेआठमागुणठाणार्थीहेठलवालानेकिंचितभा
गठे तेपणचोथार्थीतेसातमासुधीनेतरतमजोगजाणवो ए
टलेएशूद्वक्रत्रिमअनुभवकह्यो.

हवेशुद्धअक्रत्रिमअनुभवतेस्वभावीककहिये तेअनुभवनी
वार्ताकहेवानेतोहूसमर्थनथी परंतुकिचित्जागद्रष्टातेस
मजवामारीशक्तिप्रमाणेकहूछुं तेस्वभावीकअनुभवतो
फ्यारेप्रगटे ज्यारेविज्ञावीकअनुभवतोनाशथाय त्यारे
स्वभाविकअनुभवप्रगटे शेट्टातेजेमकोइजाजनमांदुर्ग
धवस्तुभरीनेभाजनमादुर्गधनीवासनावेठीठे तेदुर्गधनी
वासनागयात्रिनाएजाजननेसुगंधवासीयेतोसुगंधवासी
तथायनहि माटेअहियांआत्माने विभावनोसंगनछुटेत्यां
सुधीस्वभाविकअनुभवकेमकरीनेथाय अहियांकोइकहे

शेकेविज्ञानोनाशथशे त्वारेतोएवितरागथशे त्वारेपठे
 हेनेशेनोअनुभवकरवोठे तेनोउत्तर जेनेज्ञानावर्णीनोक्ष
 यउपसमथयोछे अनेज्ञानभावप्रगट्योछे तेपुरुंपनेजेट
 लोलेटलोविभावनाअशनोनाशथाय तेटलोतेटलोस्व
 चावीकअनुभवप्रगटे नेसपूर्णविज्ञानोनाशथाय तोजा
 एवारुपअनुभवप्रगटे करवारुपअनुभवत्यांनहि हवेजे
 अशेप्रगटे तेनेविवरोकरीनेदेखाडुछु तेप्रथमद्रष्टांकहूछु
 तेसमजजो केजेमसुरजठे तेसपूर्णवादलायेकरीनेघेरी
 लीधोअनेएनातापतडकानोनाशथइगयो अनेअजवांलु
 पणउछुथइगयु अथकारविशेषेवाप्योछे तेमध्येथीएकवा
 दलुखसेतेटलोअजवासवये अनेअथकारनोनाशथायतेम
 अहियाजीवद्रव्यनेअनादिकालनो मिथ्यात्वीअज्ञानरुप
 वादलाफरीवल्याहता तेमध्येथी कोइकजिवेकाललब्ध
 पामीसदगुरुनासमागमथी कोइनेस्वस्वभावथीत्रणकर्ण
 करीने समकितरुपरीद्विपाम्यो त्यामिथ्याततथाअनंतु
 बंधीचोकडीनोक्षयउपसमादिथयो त्वारेएप्रकृतियोनाप्र
 देशहता तेआत्मानाप्रदेशथकीअलगाटल्या त्वारेआ
 त्मानाप्रदेशनोअजवासजेटलोखुलोथया एटलीस्वभा
 वीकरमणताथाय एटलेजेअशेखुल्योएटलोस्वचावीकअ
 नुभवज्ञाननोथयो एमसातिमागुणठाणांसुधीलइये शामा
 एजेअहियासुधी मोहनुजोरघणुछे त्यासुधीअंशेविज्ञाव

नोनाशथायज्जनेसेणीगतेमोहनंजारनरमपमीगयु त्यारे
 विभावरहो तेजावतदशमानेअते विभावनोनेमोहनोसर्वे
 नोनाशथायछे त्यांशुद्धस्वजाविकअनुभवकरवामांआवेछे
 पणअहियांक्रत्रिमनथी जेआअथवाद्रव्यगुणप्रजाय इ
 त्यादिकनोविचारअहियांकरवोनथी अनेस्वभावोक्रमुण
 गुणीभेदअथवागुणप्रजायभेद अथवासंकरमरणएपोता
 नेस्वभावेजविचारमाचालयोआवे पणपोतेजाणेनहि के
 हुंआविचारमांछुं एवोतदरुपएकाकारपणप्रणमलोएजे
 अनुभवतेनेस्वजाविकअनुभवकहिये तेनावेप्रकारछे एक
 समल १ विजोविमल २ एटलेजेक्षपकसेणीवालानोजे
 अनुभवते तेनिर्मलतेअनेउपसमसेणीवालानोजेअनुभव
 वछेतेसमलते शामाटेजेउपसमसेणीवालानोएसर्वमोहनी
 कर्मनीप्रकृतियोनेउपसमावनाकहेतादावतोजायते तेथ
 णीअगीधारमेगुणठाणेजाय एउपसमवितरागकहेवाय
 पणआत्मप्रदेशथी मोहनीकर्मनोनाशथयोनहि अनेपो
 तानी विभावदशाजेअशुद्धप्रणती तेनोपणनाशथयोनहि
 सत्तायेएसर्वरह्यांछे माटेजेस्थानकविपेएधणीनोकालआ
 वीपहोच्योतोएचोथेगुणठाणेजाय एटलेअगियारमानोउ
 ठ्योचोथेगुणठाणेआवे त्यारेमोहनीकर्मनीप्रकृती ७ सा
 तप्रकृती विनावधीप्रकृतियोनो उदथइजाय पणएका
 वतारंवि सर्वाथिसिद्धेजाय अनेजेनोएगुणठाणेकालनजि

कनहिहोयतोप्रकृतीउदेशथइनेपाछोपडे तोतेजिवजावत
निगोटसुधीपणजाय कोइकजिवतद्भवमोक्षे पणजाय
कोइकजिवउपसमसेणीकरेतोएकजवमावेवारकरेअनेआ
खीजवस्थितिमापाचवारकरे माटेएस्वजाविकअनुभवए
उपसमसेणीवालानोसमलकहेतामलसहीतवे.

ह्वेजेवीमलस्वजाविक अनुभवछेतेतो मोहनीकर्मनोना
शकरतोचाल्योआवेछे तेदसमानेश्रते संपूर्णमोहनीकर्म
नोनाशकरेअहीया अशुद्धपरणतीनो तथाविजावनोपण
नाशथयोतेवारे शुद्धस्वजावजेवोसत्तायेहतो एवोजजाण
पणारुपअनुभवथाय एटलेएवारमेगूणठाणे क्षापकभाव
नोवीतरागथयोअहीयागूणगुणीजेदुहतोतेगयोनेएकजा
वथइनेप्रणम्योअहिशुद्धनीश्रेनयजाणवारुपअनुभवथयो
एटलेएअनुभवछे तेमनोवाञ्छितदातारछे अनेहवेजन्मम
रणकरवोपमेनही माटेएवाएवाअनुभवनीखपकरोएजव्य
जीवोशामाटेजे एशुद्धस्वजावरुपीआदस्वाजामापेठो ए
एरक्षणनीअंदर केवलज्ञानपामीनेमोक्षेजायकोइकनेआ
वखुवधारेहोयतो आवखुजोगवीने मोक्षेजायपणफरीथी
तोहवेकोइनेजन्ममरणकरवुनथी एसदायेसीदमावीरा
जमानअनंतुसुख जोगवतांविचारशेतेमाटेएजव्यजीवोशु
द्धस्वभावनोअनुभवकरो एजहमारोहेतुउपदेशछे.

॥दूह॥ शुद्धस्वभावएवर्णव्यो शुद्धअनुभवजोग॥अशु

द्वस्वप्नावदुरेणले ऽल्योमोहनीरोग ॥१॥ शुद्धअनुभवप्रत्य
 क्षते शुद्धज्ञानएजाणो ॥ शुद्धस्वरुपनुदेखवुं नीश्चेचितज
 आणो ॥२॥ एअनुभवमुजचीतवश्यो जेममधुकरनेकम
 ल ॥ एथीसवीसुखपामीये होयआत्मनरिमल ॥३॥ निर
 धननेमनदेवरीध जेमवलजलागे ॥ तेमज्ञानीनेअनुभव
 शुद्धचित्तलागे ॥४॥ एजावमेवर्णव्यो स्वपरहेतकारी ॥
 ताराचंद्रनीजाचना तेमेटीलधारी ॥५॥ एहग्रथरचनाक
 री बहून्यायसाथे ॥ हेतुजुकीपणठेघणी नीजरिद्धिहा
 थे ॥६॥ ज्ञानीकुंएग्रथठे अनुचवीकुरसलीन ॥ ग्रथहाथ
 गुंछोडेनही अमरीतघटघटपीन ॥७॥ अज्ञानीसमजेन
 ही एहशब्दविवार ॥ तेमांमुजकीइदोशनही क्षयउपस
 मविचारा ॥८॥ संवत १९३३शमें प्रथमजेष्टकश्रपक्ष ॥ च
 तुर्थागुरुवार एपूरणथयोदक्ष ॥९॥ हूकममुनीनोमानजो
 बहूश्रुतनीसुप्रहीजोइ ॥ तेपासेग्रथदेखजो अर्थपांमशो
 सोइ ॥१०॥ एहअर्थपास्याथकी पामशोअनुभवसार ॥
 मुनीहूकमतेप्राप्ती सीववधुघरधार ॥११॥ सीववधुसेसु
 खभोगवो जोकरोअनुभवएह ॥ हूकममुनीनोमाथेलइ पां
 मोरिद्धितेह ॥१२॥ मुनीहूकमअनुभवग्रहे सुधानंदस्व
 रुप ॥ शुद्धधीरताप्रगटसे पामेशीवस्वरुप ॥१३॥

॥ इतिअनुभवप्रकाशग्रंथसंपूर्णः ॥

अथश्रीआत्मचिंतामणी.



श्रीगुरुभ्योनमः

॥ ढोहा ॥ हूवंदुनीजआत्मा पुर्णानंदस्वामी ॥

अनुभवजोगेतेग्रहो निजअतरजामी ॥१॥

अत्रज्ञापारिख्यते ॥ हवेएआत्मचितामणीनामाग्रथ
 केवोठेकेसाक्षातमुक्तिनोमार्गएजठे अनेएनेजमुक्तिकही
 येछीये एटलेजेनेआत्मज्ञानप्रगटथयुछे एनोरसजेणेजा
 एयोछे तेनेमाहासंतोपरुपीमोटुंसुखप्राप्तथयुं एवापुरुषो
 कंइराजानेपणलेखामागणतानथीपणहवेएआत्मशास्त्रनो
 जेरसतेनोद्रष्टांतकहीसमजावुंछु एटलेजेस्त्रीनाअधरविव
 नोजेरसतेनोजेस्वादजवानपुरुषनेसुखप्रगटथायतेरसतो
 विदूमात्रपणनथी एवोआआत्मज्ञानरुपीशास्त्रनोजेस्वा
 दतेतोसमुद्ररुपछे हवेजेप्राणीअध्यात्मशास्त्रनेविपे अथ
 वानिश्रेनीवार्तानेविपेनथीसमजतां तेमांपरावर्तननथी
 नेपंडीताइनोगर्वधरेछे जेअमेपंडीतछीये तेपुरुषकेवुकरे
 केजेमकोइपांगलोपुरुषकल्पवृक्षनुं फललेवानेहाथउंचो
 करेतेनेकल्पवृक्षनुंफलहाथमांआवे अपीतुनजआवे तेम
 एपंमीताइनोअग्निमानफोंगटराखेछे हवेएआत्मज्ञानछे
 तेतोकर्मरुपीयावननेवालीनेचुत्वाकरे नेतुरतसिद्धिप्रदआ

पे एटलेवेदतथाविजाशास्त्र अध्यात्मशास्त्रविनाना तेतो
 वधोयेआत्मानेच्छेकरवानोठेनेआत्मज्ञानविनाजेटलाशा
 स्त्रभणोवाचो अथवातेनुजाणपणुकरो तेसर्वफोकठेजेम
 विधवास्त्रीनुतरुणपणुफोकठेतेमजुठुजाणवुजेणेआत्मज्ञा
 ननागास्त्रजोयांश्रनेतेनुजाणपणुययुतेनुसर्वलेखेछेअनेज्ञा
 ननोरसतोआत्मज्ञानीजपामे एटलेथोडूपणंभणंतरअणी
 नेएकआत्मानुजाणपणुकरेतेनूलेखेछे तेविनाअनेकशास्त्र
 नोअभ्यासकरेतेथीकइएने ज्ञाननारसनीप्राप्तीनथाय जे
 मखरउपरवावनाचदनभर्यु तेथीकइएखरनेवावनाचदन
 नोस्वादनथी एतोभारवहीजाणेछे एनोरसस्वादतोजेभा
 ग्यवानपूरुपहोयतेजोगवेछे माटेआत्मज्ञाननोअभ्यास
 करवो बीजोसर्वआलपंपालखटपटोठेतेटालवो जेथकी
 आंपणांजन्ममरणछूटे तेकामनआदरवू हवेआजग्रंथ
 करीयेगीये तेवालजीवनाहीतनेअर्थकरीयेछीयेएटलेआ
 त्मज्ञानरहीत तेनेवालकहीये तेनाउपकारनेअर्थकरुंछू
 तथाजोगेश्वरपूरुप तथाआत्मज्ञानीपूरुपोनेआग्रथघणो
 प्रितिनूकारणथाशे केमकेएनेविपेअनुभवज्ञाननोरसतेने
 स्वादेकरीमाहाप्रितिनूस्थानकथशे जेमभोगीपूरुपोनेस्त्री
 नागीतवल्लभछे अथवाजैमसगीतबंधनाटकवल्लभछे तेम
 आग्रंथवल्लभलागे हवेएग्रथजैजाणपूरुपोठे तेनेवल्लभ
 छे एटलेलोभीनरने जेमचीतामणीरत्नपारसपापाणका

मकूभसोवर्णफूरसाप्रमूख जेमतेनेवल्लभछे अनेतेमातागू
 णएवडोछेनही तेतोपूद्गलीकवस्तूठे एकभवनोसखाइछे
 वलीकंडइएथकीजन्मजरामरणता फेराटलेनहीव्याधीश
 रीरनीमटेनहि अनेपरभवमाठीगतीआपे अनेआजेग्रथठे
 तेतोआभवने विपेतोसतोपसुखमोटुआपे नेसंतोपसुख
 मांसर्वसुखसमाइगया एनामहोडाआगलइद्रचंद्रनागेंद्र
 कोइगणतीनानथी. ॥ उक्तचगाथा ॥ इद्रचंद्रपदरोगजा
 णों ॥ जेणेनिजशुद्धसत्ताधनपठाणों ॥ नअंनआपेनअंनचो
 रे ॥ कोणजगदीनकोणजगजोरे ॥ १ ॥ एवंएग्रथनुंमहा
 त्मजाणीने एग्रथनोअभ्यासकरवो.

हवेग्रथनोप्रारंभकरीयेबिये अहोभव्यजिवो सर्व
 कारंजवोमीने एकआत्मज्ञाननेविपेउद्यमकरो एआत्म
 ज्ञानछे तेआत्मीरुसुखनुंदातारछे नेविजाकारणठे तेपु
 द्गलीकसुखनादातारछे तेथकीकाइमुक्तिथायनहि नेआथ
 कीजन्ममरणताफेराटले . अनेवितरागनामार्गनेविपेख
 टद्रव्यभाखेलाछे तेमध्येपाचद्रव्यछांडवा एकआत्मद्रव्य
 आंदरवाजोगकह्योवेतोअहियांविजुवहारनुंजाणपणुछेअ
 थवाआदरवठे एसर्वेपुद्गलीकजावठे माटेअवश्यछाडवा
 जोगठे अहियाकोइकहेशेके पगथीयेपगथीयेचडायकांड
 एकेहारेमेमीउपरजवायनहि माटेशुजाशुभकारजनेविपे
 उद्यमराखवो तथाद्विपसमुद्रदेवलोकादिकनुंजाणपणुभ

गवंतेशावास्तेकह्यु माटेतेजाणेतनेपंडितकहिये तेनेज्ञानी
पणकहिये तेनोउत्तर.

हवेजेपावडीयेपावडीयेतमेचडवुकह्यु तेखरुं पणमुक्ति
नापावमियांतोज्ञानध्यानते अनेशुजाशुजपावमियातेतो
पुद्गलीकते नेपावमियेचमताउतरतातो अनंतोकालआगे
पणवहिगयो तेथकीकांड्रआपणाआत्मानुंकल्याणथयुन
हिनेहजिएनाएजपावडियानेझालीनेवेशीरहीशुंत्यारेआ
पणीमुक्तिकेदाहाडोधवानी अनेएवाजेपावडियानेविपेरा
गराखीरह्यावे तेजिवनेमुक्तिघणीदूरभापणथायछे अने
जेनेपावडियाचडवानीखपहोय नेमालउपरजवुंहोयतेध
णीतोपावडियोछोफतोजाय नेउपरलेपावमियेचडतोजा
यतेधणीतोमालउपरसुखेसुखेपोचे पणप्रथमपगथियेज
अटकीनेवेठो अनेमहोमथिएवुंकहेशेजेभाइपगथियेपग
थियेचडाशे नेउपरनेपगथियेतोचडतोछेनहि तेकाइमेडी
उपरजायनहि तेमअहियांजेजन्मपरजंतथकीजशुजाशु
जपगथियुंझालीनेवेठोतेमुवासुधीधर्मनेपगथियेचडतोछे
नहि अनेमहोमथीकहेछेके पगथियेपगथियेचमाशेतध
णीनिकाइमुक्तिथायनहि एतोएकवचनबोलवानुंठुपक
ड्युछे एधामधुमनोरगीशुभाशुभमारच्योपच्योवालजि
वनैरिश्ते पणएथीकाइपोतानाआत्मानुंकल्याणथायन
हि माटेहेभव्यजिवोएपगर्थासुअनादिकालनुंझालेलुंएथ

कीअनंताजन्ममरणकर्या एथकीसंसारनो-पारआव्यो
 नहिमाटेजोआत्मानुहेतवंतोतो एपगथियानेढोडो नेजा
 नध्यांनरुपीपगथियेचडो समभावरुपदोरडुझालो अ
 धवशायरुपवेगेकरिने चमवामांनो तोमोक्षरुपिमेडीमां
 जइनेवेसाय तथाएजाणपणुछे तेमांकांइनिश्चेनहिंए
 तोव्यवहारथकीजाणवानुंछे तेमांकांइआत्मानुंकल्याणुछे
 नहि एजाणवाथकीमुक्तिपांमिये एवाअक्षरतोकांइशा
 स्त्रमांसितानथी तथाएवस्तुकोइध्यांनमांलावेलानथीए
 मकरतांकदापिस्वस्थानविचयधर्मध्यांनमांगणीये तोतेप
 णपुद्दीकसुखनोढातारुछे तेथकीकांइमुक्तिथायनहिएसर्वे
 व्यवहारअनुजोगमांगणेलाछेनिश्चेअनुजोगतोएकद्रव्या
 णुजोगछे तेमध्येपणपांचद्रव्यनेछोडीएकआत्मद्रव्यनेआ
 दरवोतेथकीजमुक्तिथाय माटेप्रथमआत्मस्वरुपनीउल
 खाणकरवी नेपतीतेस्वरुपनेविपोचितवनाकरवीतेनुनाम
 आत्मचिंतामणीकहिये तेनेध्यांनपणकहिये तेनेज्ञानपण
 कहिये तेथकीआत्मानिश कर्माथय माटेआत्मानुंध्यान
 छेएमोटुंस्वरुपछे.

॥ उक्तंच ॥ आत्मध्यानफलंध्याना॥मात्मज्ञानंचमुक्तिदां॥
 आत्मज्ञानायतन्नित्यं॥ यत्न कार्योमहात्मना॥१॥

अर्थ-हवेआत्मध्यानतेआत्मानुंध्यानतेनुफलपणतेध्यां
 नजछेनेआत्मज्ञाननहोयत्यारेमुक्तिआपे माटेज्ञानएजज

गतमामहोटुते तेमाटेमहोटापुरुषोपंडितज्ञानीहोय तेने
तोआत्मज्ञाननोजउद्यमकरवो एजजुक्तवे.

॥श्लोक॥ज्ञातेह्यात्मनिनोभूयो॥ज्ञातव्यमवशिष्यते॥

अज्ञानंपुनरेतस्मिन् ॥ ज्ञानमन्यन्निरर्थकं ॥२॥

अर्थ--जेणेपोतानोआत्माजाएयो नेपोतानास्वरूपनीउ
लखाएथइ तेधणीनेविजुकाइजाणवानीफरीथीजरुते
जेनेहि'एगोजाणेसवेजाणेइतिवचनात्'माटेजेणेएकआ
त्माजाएयोतेणेसंबंजाएयुंछे. अनेजेनेपोतानाआत्मानुंजा
णपणुनथीथयुं नेविजाअनेकशास्त्रनीरीत्योजाणेछे तेसंबं
निष्फलवे फोगटकायछेशकरेवे एमांकांइएनाआत्माने
गुणथयोनहि माटेजेआत्मातेहिजपरमात्माठे. अहिया
विजोकोइपरमात्माछेनहि एनुंजध्यानकरवुं एथीजमु
क्तियाय

॥उक्तचंगाथा॥एहिजअप्पासोपरमप्पा॥कमविशेषइजायो
जप्पा॥इसमेदेवजुसोपरमप्पा॥जावहूंतुभेअपोअप्पा॥१॥

अर्थ--अहोभव्यजिवोतमोसमजो तमनेमाहाहेतका
रीछे एहिजअप्पासोपरमप्पाकहेताआपणोआत्माजेआ
शरीरनेविपेरह्योछे तेहिजसाक्षातपरमात्माठे. निश्रथकी
शुद्धपरीब्रह्मएनेजजाणवो एपुर्वअनादिकर्मनासंजोगथ
कीशुभाशुभक्रियानेविपे पडयोथकोजन्ममरणकरेवे पण
एशरीरमारह्योजेचेतनएहिजदेवछे नेएहिजपरमेश्वरछे

माटेगुनाशुनक्रियानोव्यागकरीने पोतानाआत्मानुध्यां
नकरो नेतमेएनुंजसमर्णकरोसाक्षातरणतारणआजएपो
तपोतानोआत्माजठे माटेएवंपोतानाआत्मानुंस्वरुपतेनी
चुलेपरनीजेशेवाआदरोठो नेपरनीआशाराखोठो नेजा
णोठोकेकोइकअमनेतारशे एतमारुमोटुअज्ञानपणुछेएअ
ज्ञानभावठोडीने पोतानास्वरुपनुंध्यांनकरो एथीतमारु
कारजथशे अनेकारजजेसर्वेरहयुं तेज्ञाननेविपेछे नेज्ञान
छेतेआत्माठे माटेपोतानाआत्मानुजसमर्णकरवु.

॥श्लोका॥ नवानामपीतत्वाना॥ज्ञानमात्मप्रसिद्धयो॥

येनाजिवादयोभावा. ॥ स्वभेदप्रतियोगिनः ॥

नवानामपीतत्वाना कहेताजेएनव तत्वकह्यांठेतेनांनां
मजीवतत्व १ अजीवतत्व २ पुन्यतत्व ३ पापतत्व ४
आश्रवतत्व ५ सवरतत्व ६ नीरजरातत्व ७ वधतत्व ८
मोक्षतत्व ९ एनवतत्वछे तेमध्ये एकजीवतत्व तेतत्वठे
वाकीसर्वअतत्वछे : केमकेसंवरनरिजरा नेमोक्षएतोआ
त्मानागुणठे अजीवपुन्यपापआश्रवंधएसर्वेअजीवठेते
आत्मानाजाएवामांआवे ज्ञानमात्माप्रसिद्धए केहेतांजे
ज्ञानरुपआत्मातेजमोटोछे तेवीनासर्वेकाचुछे शामाटेके
अजीवादीकजावजे सर्वेरह्यातेसर्वे आत्मज्ञानमांसमाय
छेआत्मज्ञाननेवीपेजे आदरवाजोगहोयतेआदरे छांडवा
जोगहोयतेछांडेअनेजाणवाजोगहोयतेजाणे.

॥ उक्तचगाथा ॥ नयजंगपमाणेहि ॥ जोअप्पासाश्र
वाअज्ञावेणं ॥ जाणईमोपस्वरुवं॥समदिठीयोसोनेउ॥२॥
अर्थ-नयजंगपमाणेही केहेतांनयेकरीने जागेकरीनेप्र
माणेकरीने जेअपाशाअवाअज्ञावणेकेहेतां जेआपणा
आत्मानेएटलेनयेकरीनेजाणवो तथासतजगीचोभगी
आदेदेइजागेकरीनेजाणवो अथवाप्रत्यक्षादिकप्रमाणेक
रिनेजाणवोइत्यादिकस्यादवादमार्गेकरीने जेनेआत्मानुं
जाणपणुथयुठेतथामोक्षनुंस्वरुपजेणेजाण्युठेतेनेसमद्रष्टि
कहिये तेनेममकितज्ञानपणकहिये तेनीजमुक्तिथायपण
तेविनाजेक्रियाआचारउतकष्टापाले छजिवनीदयापाले
तेधीकाइतेनाआत्मानुकल्याणथायनहि.

॥ उक्तचगाथा ॥ विरयासावजाउं॥कपायहिणामहव्व
यथरावि॥समदिठिविहूणा॥कपाविमुपंनपावंति॥१॥

अर्थ-विरयासावजाउंकेहेतां जेजिवविरयासावदथकी
कहेताजेप्रणातिपातजिवहिशासनोत्यागकरो तथासर्वथ
किमृखावादनोत्यागकरोतथासर्वथकीअदतादाननोत्या
गकरो तथासर्वथकीस्त्रीआदिकनोत्यागकरो तथासर्व
थकीपरीग्रहनोत्यागकरो एटलेएपाचे आश्रवनोत्याग
करो तथापाचेइद्रियोवगकरो तथामनादिकगुप्तित्रैणपा
लेएकायाथकी तथावचनथकी तथामनथकी सर्वसावदं
कर्मनोत्यागकरो कपायहिणामाहावियधाराविकहेतांक

पायकहेता जेक्रोध मान माया लोभ रागद्वेषइत्यादि
 कंकपायनोनाशययो जोआमासजपरिणामआवेअथवा
 कोइकंपंचमहाव्रतधारणकरी जनकल्पीतुलव्रतपालेअथ
 वाशुधर्मास्वामीसरखुचारीत्रपाले तोपणशुंकांइएजिवनी
 मुक्तियाय अपीतुकोइकालेनजथाय शामाटेकेएजिवनी
 समद्रष्टिथइनहि एटलेसमद्रष्टिकहेताजेपरजावउपररा
 गेनथीतेमद्वेपेनथी नेपोतानास्वरूपनेविपेथिरभावेरह्या
 छेएवोज्ञावमाहिप्राप्तथयोनहि तेथीमुक्तिनपामे केमकेमु
 क्तिततोआत्मदशामांछे तेजावएनेआव्योनहि नेपरभावं
 माहेथीगयोनहि तेथीतेजिवनुंकल्याणकांइथायनहिएंचा
 रगतिससारमापरीभ्रमणकरेजपणकारजसिद्धियायनहि

॥श्लोक॥ श्रुतोह्यात्मपराज्ञेदो॥ नुभूत संस्तुतोपिच ॥

निसर्गादुपदेशाद्वा ॥ वेत्तिज्ञेदंतुकश्चन ॥ ४ ॥

हवेकारजसिद्धियावानुकारणकहीयेगीयेके जेनेस्वकेहे
 तापोतानाआत्मस्वरूपअनेपरकेहेता जेपुद्गलादीकपाच
 द्रव्यतेवनेनो जेनेजेदपडेलोवे अनेभेदरवरूपजेनासम
 ज्यामांआव्युं नेपरजेपुद्गलादीक पाचद्रव्यनेनोखापानी
 पोतानाआत्मस्वरूपनोअनुभवकरे एनेजविपेरमणकरेए
 कोइकजीवनेपोतानेसेहेज स्वजावेप्रगटथाय कोइकजी
 वनेगुरुनाउपदेशथकीथाय एवीरीतेभेदजाणीआत्माने
 जुदोकरिनेअनुभवकरे तेवारैएकत्ववीतर्क वीजोपायोप्रा

सथाय कोइकजगायेप्रथक्तवीतर्कप्रगटथाय तेपायाने
 विपेआत्मज्ञानहितकारीथाय अन्यथाजेवाचवाभणवा
 जाणवा तेसर्वेफोगटजाणवा तेमीथ्याट्टिपरह्योतेनेवि
 टंवनारूपीकष्टछे त्यातोएकजआत्मस्वभावपणेरह्योतेत्या
 तोआत्मज्ञानदर्शनचारित्ररूपकह्युंते तेकाइआत्माथकी
 जुदूजाणवुनही तेतोलोळिभुतथइनेरेहेलुछे तेउपरद्रष्टां
 तकहीयेछीये जेमरत्ननीमालानेरत्ननीकाती एवेयेनीश
 किकंडजुदीनथी तेमएज्ञानदर्शनचारित्रतेलक्षणकंडआ
 त्माथकीजुदूजाणवुनही आत्माअनेआत्मानुंलक्षणज्ञाना
 दीकजेजेदकेहेवोते व्यवहारनयेठेएछठीविचिनेन्याये
 करीमानीयेपणनिश्चेथीतोइहांकशीयेजेदनथी एउपरद
 ष्टातकहीयेठीये जेमघटअनेघटनुजेरुपाटिकजेवण तेघट
 थकीचिन्नमानीयेतेकल्पनाछे पणकइघटनेघटनुंरुपजुदू
 नथी घटविनावर्णशानेआधारेरह्यु अनेघटपणरुपाटीवि
 नादृष्टीगोचरमाशानोआवे एभिन्नमानवोतेव्यवहारनय
 नीकल्पनाछे निश्चेथीतोएकजछे तेमआत्मानेआत्मानागु
 णादीकतेपणकइजुदानथी परमार्थविचारीनेजोइयेतोएक
 जठे एवोजेशुद्धनयेकरीआत्मस्वरुपछे तेनिश्चेकरीनेअनु
 चववामाआवेठे एटलेरमणकरवामाआवेछे अनेव्यवहा
 रनयेकरीपरजेकायादिकद्रव्यश्रीलखायछे तेगाडवाजो
 गजाणवामाआवेठे एवीरीतेनयपक्षपणविचारीजोवोतथा

वस्तुतानोभावजोतांतोगुणनेगुणीनुंअभेदस्वरुपठेअनेजो
 नेदस्वरुपमानीयेतोविरोधआवे केमकेमृतीकानेमृतीका
 मांघटादीथवानोगुण अथवामलवावीखरवानोगुणजुदो
 मानीयेतोमृतीकाविना मलेविखरेकोण तथाघटादीरुप
 शानांथाय माटेइहांभिन्नमानतांमोटुदोपणठे तेमजआ
 त्मानेआत्मानागुणतेकांइजुदाठेजनही अनेजोजुदामान
 वाजइये तेवारेज्ञानादीकगुणजुदोनेआत्माजुदोएमथायते
 वारेज्ञानविनातोआत्माठेजनही तेवारेजडथायछेतथाज्ञा
 नादीकगुणते आत्मावनाशानेआधारेरेहे तेवारेएआत्मा
 तथाज्ञानादीकगुणसर्वनिष्फलठे एकल्पनाससासिंगवत्
 ठरीमाटेअहीयांमोटोविरोधआवे तेकारणमाटेआत्माने
 आत्मानागुणएकत्वनावेसंलग्नरह्याठे अनेचेतनएवोजे
 शब्दतेसामान्यपदठे शामाटेकेएमांसर्वआत्मानुएकठाप
 णुथयुं निश्चेथीतोकर्मजनित्यजेवस्तुतेनेदनेपामे तेविटंठ
 नारुपछे पणतेपोतानुस्वरुपतजीनेजुदानजाणवाअनेव्य
 धहारनयवालोएमजुदामानेठेतेकहीयेछीये तेजीवनासमु
 दायनोतरेहतरहथी भेदकल्पेएकद्रीआदिकगतीआश्रीत
 थाकपायादिक आश्रीतथागुणस्थानादीकआश्रीतथावय
 आश्रीतथावर्णादिकआश्री अनेकप्रकारेनेदकल्पनाकरे
 मांहोमाहेविचीत्रपणुंजणावेछे एसवेंवेहेवारनयजाणवी
 अनेएवार्तानिश्चयनयनीसमजवालो जीवतोमानतोनथी

तनासमजवामातोएवुठेके जेजेजीवनीअवस्थाप्राप्तयाप
 छे शुभ वा अशुभ तेतोनामकर्मनी प्रकृतिनास्वभावथ
 कीछे अथवा अन्यकर्मसातमाहेली हरकोइनीप्रकृतिना
 स्वभावथीथायछे पण काइते आत्मानास्वभावथी थतु
 नथी आत्मातोनिर्विकल्पीछे अरुपीछे एनेविपेतो एक
 जाणवानोजस्वभावछे बीजीरीते कोइस्वभावलाधतोन
 थी अनेजेजन्मजरादिक प्रणतीजेछेतेतोसर्वकर्मनेवशछे
 तेकइआत्मानावेनही आत्मातोअविकारीछे अनेकर्मना
 स्वभावतेकइआत्मानास्वभावमासजवतानथी अहीया
 तोकेवलएकस्वस्वभावलाधेते अनेजन्मजरादिकएतोक
 र्मप्रकृतीजछे नेकर्मजनीतजेभावतेआत्मानेविपेजेआरोपे
 छे तेनेज्ञानथकीभ्रष्टजाणवा तेचारेगतीसत्ताररूपसमुद्र
 महाजयकरतेमध्येजमशे एटलेजेउपाधीनाजेदथकीप्रग
 ट्योजेजेदतेतोमुरखप्राणीहोयतेमाने जेमफटकरत्ननी
 माहेलीकोरेअनेकपदार्थभापणथाय तेनेफटककरीमानेते
 मुरखजाणवो पणतेएमनथीसमजतोकेफटकजुडुछेअने
 तेपदार्थजुडावेएवीजेनीभरतनपोचीतेअज्ञानकहीयेतेमअ
 हीयाआत्मानेविपे पणकृतकर्मभेदएमानेछे पणएमनथी
 जाणतोकेएतोजडनुंकामुठे एवुनसमजेतेनेअज्ञानीकहीये
 अनेपोतानाजें व्यवहारनापक्षयकी कर्मजीनतजेउपाधी
 तेनथी एवुमानेतेआत्मविरुपवाटीजाणवो केएकक्षेत्रमा

लस्युनथीतेविना शास्त्रचाहेतेवांवांचोउपदेशकरोपणते
नेज्ञानीकहेवायनहि.

हवेएवानिश्रेतीवातनाजाणपणाविनांनाजेप्राणिरह्या
तेनेउनमादनाजरेलाजाणवा तेममतवडेकरीनेआत्माने
अनेकप्रकारेमानेठे पणजेमअनवययी एकस्वरुपआस्ती
पणानेअनुभवियेठिये एटलेसर्वेआत्मानुसरखापणुठेवि
दमानजापणपणुठे तेमाटेआत्माएकजकहिये, अहियां
काइदोपछेनहि जेव्यवहारनयथी सत्यअसत्यरुपजेचा
डियोठे तेनेगोपविये एटलेतेनीगवेखणाकरवीनहि अहि
यांतोएकशुद्धनयरुपियो जेमित्रठे तेतोएकत्वपणेरत्नत्री
यदेखांठेतेअगीकारकरिये तथानरनर्कादिकजेगतीरु
पप्रजायेकरिने जेउपजवुंवणसवुछे तेजुदुठेमाटेतेप्रजाये
करीने सदायेअनवययेजशुद्धे एटलेएपर्जायादिकमां
फरवाथकीकाइआत्मस्वरुपपोतानातत्वभावएकत्वपणा
प्रतेगडतो नथीतेउपरद्रष्टातकहियेठिये जंथाकहेतांजेम
सोवर्णस्वरुपएकठे हवेतेसोवर्णांना उतपातवेनेवीपेअने
कघाटपरवर्तेठे कुडळकंठी बाजुवेढइत्यादीक पर्यायनुप
रवर्तनपणुठेपण कंडसोवरणपणानु पलटणनथीएघाट
नेवीपिभिन्नजावछे तेमआत्माएकजछे अनेनरनरकादीक
गतीतेभिन्नजावठे पणआत्मानोस्वप्नावतो एकजरुपछेअं
जेजेगतीआदीक पर्जायतेतोकरमना पर्जायछे पणशुद्ध

स्वरूपसाक्षात्निश्चयनये आत्मपर्जायने विषे कर्मक्रिया
 स्वभावछेनहि एटले आत्माने विषे एकर्मपर्यायवेनहि
 आत्मातो अजस्वचा विकछे अथवा जे कर्मना जे प्रमाणवाते
 काइसर्गादिकसुखरूपचा विकनथी एतो शुचाशुचपरवर्त
 नने विषे कदापीकोइकप्रमाणवाउज्वल शुभनाजोग
 धीसर्गादिकसुखअथवा धनपुत्रकलत्रादिक सुखने देखी
 नेकोइएशुचपुद्गलने सारामाने छे तेमोटुअज्ञानपणुतेनुवे
 केमकेएप्रमाणनुपरवर्तनतो नवेतत्वमारह्युछे अत्रद्रष्टात
 कहिये छिये केजेमकोइकशुचद्रव्यरुफोरगलेइने चित्रामण
 कोइयेकाहुं तेजितजागने विपेशीजे पणकांइजितचारते
 नउपाडे एपणएककारमीशोचरुपछे तेनेसत्यकरीनेमा
 नीये माटेकांइएभिंतनुंकामचित्रामणकरेनहि एपणप्रपंच
 जाणवा अथवा जेमस्वप्नामाहेदिठु जेराज्यअथवा धनइ
 त्यादिकवस्तुपणते जाग्यापछी देखायनहि नेखपमाआवे
 नहि तेमआव्यवहारमार्गनाअनुसारने विषे स्पष्टपणेदी
 ठामाआवेवेधनपुत्रकलत्रादिकपणतेनिश्चयथीज्ञानद्रष्टीवि
 चारीने जोइयेतो एवस्तुयेजुदीवे नेआत्मायेजुदीवे अथवा
 जन्मातरपरियतरहेवानो काइनेमछेनहि एपणअथीरप
 दार्थछे तथाकदापीसर्गादिकसुखशास्त्रथकीस्पष्टजणाय
 छेपणपुनरपीजन्मथयो त्यांतोतेकाइसुखजणातुनथी ने
 सांजरतुपणनथी माटेएसर्वखोटीकल्पनाछे शामाटेकेए

कारणकेवुठे केजेमग्रिप्परितुनेविपे मध्यानसमेमरघट
 श्नाकहेता खारनीजोमिनेविपे जेमखारइगोछे तेदीठा
 माएवुंआवेकेजाणेसर्वपाणीपाणीजरघुठे तेप्रमाणेआस
 जोगथीउपनीजेस्पष्टविकार एमंसर्गजेमल्यो । तेसर्वेनो
 श्रतेनाशजठे एवस्तुसाचीनथी माटेव्यवहारनाकर्तव्य
 माकशोयेसाचोपदार्थभापणथतीनथी तथाजेमगधर्वना
 नगरवडेआकाशघणोशोभायमानदिसे पणतेक्षणकमांस
 र्वेठकाणथइजाय त्यारेआकाशहतोएवोथइरहे तेमआ
 व्यवहारनयनावलथकी सर्गादिकसजोगमले तेनोविला
 सपणकदापीपामे तोपणशुंएस्वप्नापरायछे तेकारणमाटे
 एकजजेशुद्धनयेकरीनेग्रहेलोजे एकत्वभावएटले एकत्व
 पणेकरीनेजआत्मानेविपेज पांमवुथायठे अनेएवस्तुवा
 जेकाइसपूर्णमलतीनथी बीजेजेरहितेश्रश्याहिनेसर्वक
 रजकरेछे जेमकोइपुरुषएकतादूलनोदाणोलेइने एवुक
 हेकेमारीपासेपणतोदुलठे पणतेतादूलथीकोइसामानेप
 णजमाडीशकेनहि अनेपोतानापणभुखभागेनहि तेमए
 श्रश्याहिने कल्पनाजेकरवी तेथीकाइकारजसिद्धियाय
 नहि जेनेसपूर्णआत्मस्वरुपनुजाणपणथयु तेपूर्णवादीक
 हेवाय तेनेकाइअशकल्पनामारुचीआवतीनथी तथासु
 त्रमध्येपणएगोआयाएवोपाठछे तोतेनोपणआशयएहिज
 कह्योते तेकारणमाटे प्रत्यक्षएकजोतीरुप झलझलाटमां

नएकआत्मस्वरूप तेजसत्यवे एमशुद्धनयवालापणकेहे
 ताहूवा अनेजेपरपंचनासंचेकरिनिजेसंकलेशकरवो तेतो
 सर्वदुखनुजकारणवे एटलेज्यांमाहामायारूप मोटोफद
 रह्योत्यांमारुतारु कल्पनाघणीरही त्यांकडकारजसिद्धि
 वेनही प्रगटसिद्धिपोतानाआत्मस्वरूपमा जेहुंपोतेजआ
 त्माछुहुंपोतेजभगवान्छुं एवीरितेप्रसन्नधवुं एवीरितेशुद्ध
 रूपपोतानोप्रकाशकरवो एनिश्चयनयवाळानो एजमत
 वे अनेव्यवहारनयवालोछे तेनोमततोफोगटकल्पनारूप
 जोवामांआवेवे तेकहायेछीयेकेशरीरने नेआत्मानेएकत्व
 पणुंकरिनेमानेवे अथवाकोइकप्रकारे आत्मानेरूपीपणुंकरि
 नेमानेवे शामाटेजेशरीरादीकनी याधीव्याधीनाका
 रणनेमेलवीनेकेहेवे एसर्ववेहेवारनयनीधेलछावे निश्चय
 यवाळोतोएवस्तुने कबुलनथीकरतो जेकारणमाटेसा
 क्षातअरूपीआत्मपदार्थछे असख्यातप्रदेशेनीरमल तोते
 नेअंशेकरिनेपण रूपीपणुकेमपामीये अपीतुनजपामीये
 जेमकोइअग्नीने केहेशेकेशतिलथइ तोतेवातकेममनाय
 अग्नीशीतलकोइकालिथायजनही एतोअग्नीनाजीवग
 रापछीजेदलप्रथ्वीकायनाभागनुरह्युं तेशीतलवे पणते
 एटलीसरतनपोची तेथीतिणेअग्नीशीतलकही अथवा
 गेइकेहेशेकेघृतउष्णथयुं पणएमनथीजाणतोके घृततो
 तिलजवेएतोअग्नीनोसंजोगमलवाथकीअग्नीनाप्रदेश

घृतमापेठावेतेउष्णते पणएकक्षणैकअतरे अग्नीनाप्रदेश
 वलीजायतेवारे घृतशतिलजलाधे तेमआपुढगलजेरु
 पीपदार्थतेनासंजोगमां आवीनेशररिजेवांध्युं तेनेआत्मा
 ठरावेछे अनेतेआत्मानेरुपीकेहेछे तेमोटीतेजीवनेभ्रमणा
 जेपेठेलीठे एमसमजवु शामाटेजेरुप रसगवस्पर्श स्व
 स्थानइत्यादीक वस्तुएआत्मानाघरमानर्था वाहारनुंजे
 करवुंकराववुअथवाशब्दादीकजेउचारणकरवुंएवुदेखीनेते
 नेरुपीपणुमानेछे पणतेकांइआत्मानीवस्तुनर्था आत्मातो
 केवोठे। केतेकांइनजरेदेखवामाआवतोनर्था मनथकीपण
 कांइग्रहेणथतोनर्था वचनथकीपण अगोचररुपछे अनेए
 आत्मावीजीवस्तुने प्रकाशकरीशकेनही एतोपोताना
 स्वरुपमांजप्रकाशकरेछे तेवोआत्मस्वरुप तेनेरुपीकेमंक
 रीनेकेहेवाय एसाक्षातआत्मस्वरुप चीदानंदमयसंत्यस्व
 स्वरुपठेतैनुस्वरुपवीचारीनेजोइयेत्यारेसुक्ष्ममासुक्ष्मछेने
 उतकंठामाउतकठोपणछेएवीअन्यदरशननेवीपेपणपुछा
 थयेलीछेकेशुआत्मा मुर्तीपणानेफरसेकेनफरसेतेनाएअन
 मतीवालायेएवोउत्तरआपेजोठेकेशरीरनेवीपेइद्रीयोछेतेमो
 टीछेइद्रीयोथकीमनघणुंमोटुठेमनथकीबुद्धीघणीमोटीठेनेबु
 द्विथकीआत्माघणोमोटोठेअहीयांएकखेदकरीनेउत्तरकेहे
 छेजेवीकललोकोकेहेतां जेअज्ञानलोकोअमुर्तीआत्माछे
 तेनेमुर्तीपणानी भ्रमणाराखीरहावे। तेथीजेज्ञानीपुरुषो

छेतेने एकमोटुअचंवाभूत मालुमपडे आलोकोनीशीमुर
खाडछेजेमाटेजीव आत्मानेमुर्तीनी मतीवेदनाप्रगटपणे
छेएमजोमानीये तोपुदगलनेपणवेदनाथइजोइये पणअ
हीयांतोजेवेदनाठे तेतोआत्माने अशुद्धपणेशक्तीप्रणमेली
तेनाअनुभवथकीथायछे कमकेजे ईद्विद्वारेकरीनेजेअज्ञां
नपणुतेपोतानीमेलेज, पोतेप्रणमेछे तेनापरभावथकीइष्ट
पणुंवाअनीष्टपणानो वीपेशफर्सद्वारेकरीनेवेदनाप्रणमेछे
अहीयांएवेदनानोमालेकआत्मउपयोगपणनथी पणकं
इअहीयापुदगलदशा मालकनथीअहीयां एकअज्ञानद
शाएटलेआत्मानो अवलोउपयोगमालकछे एटलेएवी
पाककारपांमीनेआ वेदनाप्रणामनेभजेठे एटलोअहीयां
कल्पनाथकी आत्मानोभागमालुमपडेठे तेमाटेअहीयां
मुर्तीपणुजेमानवुते नीमातमात्रथयुं एटलेअनवीयकेहेतां
सहेचारपिणथयुं केनीगोडेकेजेम घटनेदंडचक्रतदवत्प
णअहियाकांइआत्मारुपीथायनहि कमकेआत्माठेतेतो
ज्ञानमयचेतनारुपबोधछे अनेजेजीवकर्मनाअधीष्टितप
णानेविषेरक्तछे तेणेकरिनेतेजीवने तेकर्मफलनामावेद
नाछेतेवीपदेशिपाम्यांछे तेकारणमाटेजेआत्माछे एतोअ
मुर्तिजठेचेतनपणाने कोइकालेओलधेनही तेकारणमाटे
जेआशरीरादिकजे पुदगलमुर्ती स्वभावीकछेतेनीसाथेर
ह्योनेआत्माते कांइमुर्तिथायनही शाकारणमाटेकेदेहनी

साथेआत्माकाइ एकत्वपणुपामतोनी.

एप्रकारेकर्मवर्गणाना तथा मनोवर्गणाना तथावच
नवर्गणानाजेआत्मानेसमिपेएपुद्गलप्रवर्तेंछे तेएकत्व
संगतेप्रवर्तेंछे तेकीया तत्तधनादिकनाजेपुद्गलतेतोदूर
जवे तथामनवचननाजेपुद्गलतेपणुआत्माथकी जुदाजमा
नवा जामाटेजेपुद्गलनोगुणतो मुर्तिमानछे नेश्वात्मातो
ज्ञानगुणवालोछे तेकारणमाटेपुद्गलथीआत्मद्रव्यसदाय
जुदाजवे जेमधर्मास्तीकायनोगुणगतीहेतत्वछे तेमआ
त्मानोगुणज्ञानमयवे तेकारणमाटे धर्मास्तीकायथकीप
णुआत्माजुदावे एवंजपरमेश्वरनुवचनछे तथाअधर्मा
स्तीकायद्रव्यनोगुणते थीरसाहेकारीवे तेगुणपणुकाइ
आत्मानोनथी आत्मातोज्ञानमयजवे तेकारणमाटेएअ
धर्मास्तीकायद्रव्यथकी आत्मद्रव्यभिन्नकह्योवे एवसर्व
ज्ञयेकहयुवे तथाआकाशद्रव्यनोगुण श्रवगाहनाहेतत्ववे
तेथकीपणुआत्मगुणजुदाजछे तेकारणमाटेआकाशद्रव्य
थकीआत्मद्रव्यभिन्नकह्योछे एवातिर्यकरनावचनछे तेका
रणमाटेआत्मातोज्ञानगुणेकरीनेज सिद्धछे तथाकालव
रतनारुपछे तोतेथकीपणुआत्माजुदाजछे एवीरीतेपाचि
अजिवद्रव्यथकी आत्मानुजुडापणुसावतठरयुं प्रगटएभे
दकरीनेजुवेतोसमजपडे अनेदेशथकीअजिवपणुआत्माव
वेछेतेनुंकारणकहियोविये केमकेजेप्राणीने शुद्धस्वभावनी

प्राप्तीनथेइ शुद्धज्ञानपणनजाएयु अनेशुद्धस्वरूपनीरमण
 तापणनआवी त्यारेतेशुद्धकारणथकीठेठेरह्योतेवारेतेनुंस
 र्वअज्ञानदशारूपथयु एटलेतेनुज्ञानपणमेलुरहयु तेनाअ
 धवशायकरतकरावतमारह्या । तेनेवाहाजपुद्गलनुपरावर्त
 नरहयु तेजिवनेअजिवजकह्याठे एवीरीतेशास्त्रमाछेजअ
 नेसमजुपुरुपनेतो एवीरीतेजाणवानुठेके इन्द्रिवलसासो
 श्वासनेआउखुएचारेछे तेनेद्रव्यप्राणकहिये तेतोआत्मा
 थकीचित्रठे अनेजेपर्यायजेरह्या । तेपणपुद्गलनेआश्रीने
 रहेलाछे तेपणआत्मस्वरूपथकीतो जुदाजछे केमकेआत्मा
 नेकाइएप्राणपर्यायवने काइजिववुंनथी शामाटेकेएप
 र्यायकेवाछेके काइज्ञानरूपनथी तथाधिरजरूपनथी तथा
 नित्यसासवतानथी वलीथिरजावनथी एटलाकारणथकी
 तोएरहीतठे माटेएनेविपेशुआत्मानेमलतापणुठे नेआ
 त्मजिसदीवजथकीजिवेछे तेतोप्रकृतीरुपजे पोतानीस
 क्तिसदायसदायसाश्वतीछे तेशक्तिवडेकरीने आत्मासदी
 वजिवेते एशुद्धद्रव्यार्थकनयनोपक्षजाणवो अहियाए
 कअचरजकारीवारताठे तेकहियेठिये केअहोजेजिवप्रा
 णेकरीनेजिवतो नथी नेप्राणविनाजिवजिवेछे तोएअचवा
 निजवारताठे जेमचित्रकारीनु चरीत्रसांभलिकोनेहरखन
 आवेअपीतुआवेज तेमएवातशुद्धनयमीकोणनग्रहे सर्वग्र
 हेठे वलितेआत्माकेवाछे केपुन्यरुपतेपणआत्मानहिअ

नेपापरुपतेपणआत्मानहि पुन्यतथापापवेयेपुद्गलरुपते
 जेवालकालेजेशरीरतेउपादानं चावेकरीनेकल्पेते एटले
 जेमवालालिलाकहेता बालकछोकरांधुलनीक्रिडाकरेछे
 तेनेसत्यकरीमानेछे तेमएवालजिवज्ञानरहित पुन्यपाप
 नाकामनेआदरवु गडवुसत्यकरीमानेतेपणपुन्यछेतेशुन
 कर्मते नेपापछेतेअशुनकर्मछे - त्यांकोइकहेशेकेपुन्यछेते
 आदरवाजोगते पापछेतेछांडवाजोगते तेनेशिक्षाकरेतेके
 शुकाइशुन कर्मते तेथकीजिवशुंससारमापडेते केनथीपड
 तोमाटेएथकीपणससारमा रखडवुजपडे एतोकेवुठेकेएक
 लोढानीवेडीते - नेएकसोनानीवेडीछे एवन्नेवेडीयो बधि
 खानाछे वन्नेयेपरवशते नेवन्नेयेदूखदाइछे विचारीनेजो
 इयेतोफलभेदकाइजणातो नथी वन्नेवेदनीकर्मरुपतेएक
 सुखनुफलछे नेएकदुखनुफलछे एवन्नेनुफलप्रगटजोइये
 तोपुन्यपापमध्येकाइभेदछेनहि जेकारणमाटेपुन्यथकीसु
 खविलशे एपुन्यफलछे तेनाजेफलतेआगलदूसरुपप्रग
 टेव्यारेएमसमजवु केएपुन्यफलथकीपापप्राप्तथयुत्या
 रेएपुन्यतेपापनुदातारठरथु नेएपापकर्मनोजेवारेउदथ
 योतेवारेदुखनीप्राप्तिथाय माटेतेमातोमुरखहोय तेसाता
 करीमाने प्रणामथकीविचारीनेजोइयेतोमहातापकारीछे
 केमकेपडितजनएवुकहेतेजे संस्कारथकीउलटागुणनोवि
 रोधकरताएपुन्यछे अनेवलीतेपुन्यथकीनिपन्युजेसुखते

सुखनेभोगवता पापकरीनेदूखनेपामेठे तेउतराधेनजि
निकथानेविपेएवुंकहयुंछे जेममोटोबोकडो तेनेखानपान
सारीपेठेमलेतेथकी शरीरपुष्टथाय पोतेपणमनथीखुश
थायपणघरेपरोणोआवे तेवखतएनोवधकरे तेवारेदुखी
थाय तेमजएराजातथा इंद्रादिकतेनापणसुखमाशरीरपु
ष्टथायछे तेवोकमावतजाणवुं प्रणामेजोताएपुंन्यठे तेदुख
नुकारणजठे अथवाजेमजलोठे तेलोहिपिताथकांघणुसु
खमानेछे पणतेनेदोहिनेलोहिकाढीले तेवारेमहादूखनी
प्राप्तिथायछे तेमएपुंन्यनाउदेंथकी पांम्योजेसुखतेभोग
वतांघणीखुशीमानेठे पणतेसुखभोगवताउपाज्युंजेपाप
कर्म तेथीमहादुखनिप्राप्तिथाय माटेपुंन्यपापवन्नेत
जवालायकठे ज्ञानिपुरुपतोएकेआदरवाजोगकहेतानथी
आदरवाजोगतो एकआत्मस्वरूपजछे अनेविपेभोगनिज
ब्रह्मातेतोप्राणिने अंतेपणमाठिदशानेपमाडे जेमअ
ग्निनुवलवलतुपाणिपिवे जलनीतृपाक्यांथकीठिपे तेम
जेठेकाणेइंद्रियोनिउतकंठा घणिरहेतो एसदायमननेवि
पेवलिरहेलोछे त्यांसुखक्यांथकीहोय तथाज्यांद्विपघणो
रहेतेवोथको घरमासुखेवेठोहोय तोयपणतेसुखनाअनु
भवनाकालनेविपे द्वेपरुपियातापेकरीनेमनदूखवेदे केम
के एकखभाउपरथी विजेखभेभारआरोपणकरिये -
तेविचारीनेजोतांकांइ चारउतर्योनिहितेमज इंद्रियोनाआ

एदयकीकाइ आत्मानेसुखप्रगट्युनहि अतेदुखनुंदूख
 रहुएटलेसुखदुखने मोहएत्रणेगुणवतीरुपछे पणआत्मा
 नेतोविरोधीजछे पणपोतपोतानागुणमा गुणनीवृतीछेए
 टलेदुखरुपीजेवनतेनेतो ओलधीशकेनहि अनेआससा
 रनुजेसुखअथवा दुखतेकोनाजेवुछेके जेममोहोदोनाग
 माहाक्रोधिहोयअनेतेणे पोतानीफणाटोप-विस्तार्योहोय
 तेसरखोएसंसारनोविलोसवे माटेविवेकीपुरुपनेतोएमहा
 जयनोजहेतुवे एवीरितेफलनीअपेक्षा चीचारिनेजोतापु
 न्यपापनुएकत्वपणुंजठरेछेजेमुरखनमाने तेनेअज्ञानदशा
 ठरीतेघणोससारपरीत्रमणकरशेअने, जेएवस्तुएवीरिते
 संमजीनेअंगिकारकरे तेघणीजेवसमुद्रतरेएमाकाइंसदेह
 ठेनहीएटलेपुन्यतथापापएवनेएकदुखरुपजछेअनेसदाय
 कालआत्माथकीभीनछेअनेआत्मगुणनाविरोधीछे मा
 टेअवश्येतजवाजीगवेशुद्धनीश्रयथकी- विचारिनेजोता
 शुद्धआत्मासदायसत्यरुपचिदानंदमयेछे एतोचोथीद
 शाजाणवाजोगछे तेवगरुपवित्र एवोआचरणवशिशेशो
 जेवे जेमवृपाकाले मेघवरशीरह्यापछीजेमवादलानोना
 शथायत्यारंपठी सुरजनीजेशोनाकातिदीसेतेमएआ
 त्मानीसोनादिसे जेमजगत्तनाजीवने इद्रियोनुसुखवृत्ती
 नुनानाप्रकारनुयायवेअनेसमान्यप्रकारेजेचिदानदरुपछे
 तेतोसर्वदशामहिसरखुसुखदेखेछे तेनेकाइवंधतुंछेजे

नहीजेमतणखेकरीने अग्निदिपेनही अथवाएथकिकांइ
 तापपणलागेनहि तेमजेअनुभवसहित आत्माछेतेनेपरा
 भवथकीकशुयेथतुनथी जेपरवशतायेजेम सुखरुपनोसा
 क्षिजेआत्मानथी तेनेअचीमानअहंकारपणनथी तेविना
 जसुखनुजापणथायछे शामाटेकेविवेकदशा जेनेप्रगटप
 णेथइतेनेसुद्धभापणथयुठे तेनेतोसर्वस्थानकनेविपेसुख
 जदिठामाआवेठे तेकारणमाटशुद्ध निश्चैनयथकीएकचि
 दानंदजावनो आत्मानोकाछे अशुद्धनिश्चयनयथकीक
 रयांजेकर्मशुजाशुच तेथकीउपन्युंजेसुखदुखतेनो भोक्ता
 आत्माठे जेकर्मनाफलनोभोगदारिसर्गनिआदेदेइनेठेते
 व्यवहारथकीप्रवर्तनछे,एसर्वेनिगमादिकनयनीअवस्था
 एविरितनीजजावनाठे शुद्धजावनोकरता जेआत्मातेतोशु
 द्दनयथकीजपांमिये एसामर्थाइविजीजगायेनथी जेसमे
 शुद्धपरिणामवर्तेठे तेसमसामर्थ्यविरजनिवृत्तिने आश्रीने
 शुद्धजावनोकरताजएनयवालोमानेठे उपद्रव्यअतराया
 दिकरहितसामर्थ्यपणुतेनेविपे दुष्टजावनोनाशथयेथके
 शुद्धस्वभावप्रगटकरवाने आत्माप्रवर्ते अनेज्यांरागद्वे
 पकलेपेकरिनेचितवाशेलुजेनुठे तंजिवतोसंसारिजकहेवा
 यअनेजेरागद्वेपमोहथकीमुकाणाछे तेनोतोमोक्षजकहिये
 जेमननोपरिणामशंकलिंठे रागद्वेपेवापेलाठे तेनेआत्मा
 नकहिये आत्मानुंरुपतोअन्यवडेनथीपोतानासत्वार्थपणे

जत्रविकारीजते हवेअहियांशब्दनयवालो सुतज्ञानना
 उपयोगवंतनेआत्माकहेछे एनयनोविचारछे माटेअहि
 यांन्यायग्रथमहोटा तेथकिनयनोविचार थोफोककहि
 शु' त्यानयोवेछे एकद्रव्यार्थक विजिपर्यायार्थक तेमध्ये
 द्रव्यार्थककोनेकहिये विजिनयतेनयथकीभिन्नपडे एवो
 विषयजेनोतेनेद्रव्यार्थककहिये तेनाचारजेदछे निगम १
 संग्रह २ व्यवहार ३ रजुसुत्र ४ एजेदते तथापर्याया
 र्थकनात्रणभेदछे शब्द १ सभिरुढ २ एवभुत ३ एभेद
 ते तथाविकल्पेकरीनेरजुसुत्रनयपण पर्यायार्थमाकह्योछे
 एविकल्परूपनयछे हवेनिगमनयनात्रणजेदछे आरोप १
 अंश २ संकल्प ३ एभेदभाख्याते तथाअहियांचोथो
 जेदउपचारपणकहेते तेशुकेनथीएकगमोअभिप्रायकहेते
 एटले निगमनयकहेवाय अनेकआश्रियेछे तेनिगमना
 चारभेदते तेमध्येआरोपनिगमनाचारजेदते द्रव्यारोप १
 गुणारोप २ कालारोप ३ कारणादिआरोप ४ त्यागु
 णादिकनेविषे द्रव्यपणमानवु तेद्रव्यारोप जेमवर्तमा
 नापरिणाम तेपचास्तीकायनेविषेप्रणमनधर्मते तेहेनेका
 लद्रव्यकहिबोलवो एभिन्नद्रव्यरूपपंडछेनहि पणद्रव्य
 कहेवोतेआरोपधर्मकहोठा अथवाद्व्यनेविषे गुणनोआ
 रोपकरवो जेमज्ञानगुणछे इत्यादिकआत्मानागुणकहेवा
 तोएज्ञानतेजआत्माकह्योते इत्यादिकगुणनोआरोपकह्यो

ठे.२ तथाकालआरोप जेमश्रीविरनिरवाणथया घणोका
लवित्योपणआजदिवालीने विरनुंनिरवाणठे इत्यादिक
वचनबोलवुं एवर्तमानमांअतितनोआरोपकरथो अथवा
आजश्रीपदमनाथप्रचनुनिरवाणछे एवर्तमाननेविपे अ
नागत्यनुंआरोपछे एमअतितनेविपेपणवेभेदथाय तथा
अनागतनेविपेपण वेजेदथाय एविरितेकालारोपनेविपे
ठभेदजाणवा ३ हवेकारणनेविपे कारजनोआरोपकरवो
त्यांकारणरोपकहिये तेकारणनाचारभेदठे तेकहियेछिये
उपादानकारण १ निमित्तकारण २असाधारणकारण३
अपेक्षाकारण ४ एचारकारणठे तेमध्येजेउपादानका
रणप्रथमकह्युं तेआत्मानाज्ञानादिकगुणनुआराधन स्व
भावग्राहि विभावत्यागि स्वसत्ताअविलंबन इत्यादिक
पोतानास्वभावनेविपे थीरभावेरमणताकरवी तेउपादा
नकारणकहिये१ हवेबीजुनीमीतकारणतेनावेजेद शुद्ध१
अशुद्ध२जेगुरुशुद्धमार्गनादेखाडनारा आत्मस्वरुपनीओ
लखाणकरावे परभावतोत्यागकरावे तेजगुरुमोक्षनादा
तारकहिये परमउपगारीस्वपरनीओलखाणनावताव
नार तरणतारणझाहाजसमान तेनीजेसेवाभक्तीकरवी
एशुद्धनीमीतकहिये तथाअशुद्धनीमीतजे बाह्यकष्टक्रिया
तपादिककरे तेद्रव्यथकीसाध्यसाधनसापेक्षछे तेबाह्य
जीवनेधर्मनीमीतकारणछे तेनेव्यवहारथकीधर्मकहिये

पणकारणनेविपेकर्त्तापणानोआरोपथयो२ एमआरोप
 नाअनेकप्रकारकह्याछे अगनीगमतोव्यवहारादिककार
 णनेविपे सर्वठेकाणेव्यापीनेजरह्योछे तथासकल्पनीग
 मनावेजेदछे एकस्वप्रमाणरुपजेवीर्ज चेतनानोनवोनवो
 क्षयउपसमथायतेलेवो अथवाकारजतरेनवोनवोकारज
 नोउपयोगथायएवेजेदछे हवेजेअशनीगमपुर्वेकह्यो ते
 नावेजेदसंक्षेपथकीकहुंछु एकचिन्नास१ वीजोअचिन्नास
 २ तेचिन्नासकेहेताजे पुद्गलनास्कधजुदाजुदाकलपायछे
 नेछेपणजूदाजूदा शामाटेकेएनामामलवावीखरवानोध
 र्मरह्योछे तथाअभीनासकेहेताजे आत्मानाप्रदेशतथागु
 णअचिन्नछे एकोइकालेजूदाथायनही तेमजधर्मास्तीका
 य तथाअधर्मास्तीकाय तथाआकास्तीकायपणजाणवा
 एटलेनिगमनयकह्यो१ हवेसग्रहनयकहियेविये सामा
 न्यपणेमुलद्रव्यव्याक जेनीतत्वादिकसत्तापणेरह्याजेध
 र्म तेनेसग्रहकरतेसग्रहनयकहिये तेसग्रहनयनावेजेद
 छे सामान्यसग्रह१ विपेशसग्रह२ त्यासामान्यसग्रहनावे
 भेदछे एकमुलसामान्यसग्रह१ तथाउत्तरसामान्यसग्र
 ह२ मुलसामान्यसग्रहनाछभेदछे तेआगलअस्तीतत्वा
 दिस्वभावकहिशुत्याकेहेवाशे तथाउत्तरसामान्यननावे
 भेदछे एकजातीसामान्य१ वीजोसमुदायसामान्य२ जा
 तीसामान्यकेहेता मनुपजातीतथात्रीजंचजातीतथादेव

जाती एजातीसामान्यछे तथासमुदायसामान्य जेमआ
 बानासमुहनेविपे अथवाआबानावननेविपे एटलेसर्वेआं
 बाग्रहणथयाएसमुदायवचनठे अथवामनुपसमुदायनेवि
 पे मनुपसर्वेग्रहणथाय एसर्वेसमुदायसामान्यजाणवुं ए
 टले एउत्तरसामान्यजेछे तेचक्षुदर्शनतथाअचक्षुदर्शन
 ग्राहीछे अनेमुलसामान्यजेछे तेतोअवधीदर्शनथजिअ
 हेवायठे शावास्तेकेइहामुलवस्तुनुजाणवुछेतेप्रत्यक्षज्ञान
 दर्शनविनाग्रहणथायनहि अनेजेपरोक्षवालाजाणेछे ते
 सदगुरुनाकेहेणथकीजजाणेछे अथवावीजेप्रकारे एसंग्र
 हनयनावेजेदछे सामान्यसंग्रह १विपेशसंग्रह २ त्यांद्रव्य
 एवोशब्दकेहेवोतेसामान्यसंग्रहछे शामाटेकेद्रव्यकेहेतां
 छयेद्रव्यआवीगया माटेएनेसामान्यसंग्रहकहिये तथा
 विपेशसंग्रहकेहेता जीवद्रव्यअजीवद्रव्य एमजीवथीअ
 जीवजूदापाडवा एमरुपीथीअरुपीजूदापाम्वा एविपेश
 थयो एकएकद्रव्यनेवीजाद्रव्यथकीजूदोपाडीएकद्रव्यपो
 तानीजातीनोसंग्रहकरीवोले तेनेविपेशसंग्रहनयकहिये
 तथाएविपेशसंग्रहनयनोविस्तारघणोछे तथाविपेशावि
 पेशग्रथनेविपे एसंग्रहनयनाचारजेदकह्याठि तेगाथानो
 अभिप्रायसामान्यथकीदेखाडुंछु संग्रहणकेहेतां एकठो
 एकवचनमध्ये एकअध्यवसायउपयोगमांसमकालेग्रहे
 वो सामान्यरुपपणेसर्ववस्तुनो आकरोमनग्रहणकरवो

तेसग्रहकहियेअथवासर्वभेदसामान्यपणेग्रहियेजेणतेणते
 सग्रहकहियेअथवासग्रहीतपंडितसमुदायअर्थग्रहेषापजे
 णेवचनेतेसग्रहेवचनकहिये तेनाचारभेद सग्रहीतसंग्रह
 १पंडीतसंग्रह२ अनुगमसंग्रह३वीत्रीकसंग्रह४ सामान्य
 पणेवेहेचणवीनाजेगृहणथाय एवीजेउपयोगअथवावच
 न अथवाएवीजेधर्म कौडवस्तुनेविपेतेसग्रहकहिये१ अ
 नेएकजातेमाटेएकपणुमानीये एकमध्येसर्वगृहणथायते
 पंडीतसग्रहकहिये जेमएगेआयाएगेपुगला इत्यादिव
 स्तुअनतीठेपणजातीएकठे माटेएकवचनमागृहणथायछे
 तेनेपंडीतसग्रहवीजोनेदकह्यो२ तथासर्ववक्तीजेअनेकजी
 वरुप अनेवक्ताछेतेसर्वमापामिये तेनेअनुगतसंग्रहकहि
 ये सत्तचित्तमयोआत्मा एटलेसर्वजीवतथासर्वप्रदेश त
 थासर्वगुणतेजीवनाचेतनालक्षणकहिये एनेअनुगमसग्र
 हकहिये ३ तथाजेनेताकेहेवेतेथीइतरनो सर्वसग्रहपणे
 ज्ञानथाय एवीत्रीकसग्रहकहिये जेमजीवठेत्यारेजीवन
 हीहतेअजीवकहिये एटलेकौडजीवठेएवुठ्यु एवीत्रीकव
 चनेअथवाउपयोगेजीवनोगृहणथायठे तेनेवीत्रीकसग्रह
 कहिये४ अथवावेनेदसग्रहकेहेवायठे एकतोमाहासत्ता
 रुप१ बीजोआवतरसत्तारुप२ एरीतेसंग्रहनंस्वरुपकह्युं
 एटलेत्रणभुवनमाएवीवस्तुकोइठेनही जेसग्रहनयनागृ
 हणमांआवेनही अर्थात्सर्ववस्तुसग्रहनयनागृहणमाआ

वेदे ॥ उक्तच ॥ सदितिभिणीएणजम्हा ॥ सव्वगणुपव्व
 तएवुद्धी ॥ तीसव्वसत्तमतं ॥ नत्तीतदतरकिचि ॥ १ ॥ इति
 संगृहणनयकह्यो २ हवेव्यवहारनयकहियेछिये जेपुर्वेसंगृ
 हनयेजेवस्तुगृहणकरी तेनेजेदंतरकरीनेवेहेचवु तेनेव्य
 वहारनयकहिये जेमद्रव्यकह्योतेसामान्यकह्यो तेमध्येवे
 हेचणकरिये त्यारिद्रव्यनावेभेदथाय एकरुपी १ बीजोअ
 रुपी २ अरुपीनावेभेद एकचेतन १ बीजोअचेतन २ इत्या
 दिकजेभेदवेहेचवा तेसर्वेव्यवहारनधनोपक्षजाणवो अथ
 वाव्यवहारकेहेतां प्रवर्तनतेनेव्यवहारनयकहियेछिये ते
 नावेभेदछे शुद्धव्यवहार १ अशुद्धव्यवहार २ तेशुद्धव्यव
 हारनावेजेद वस्तुगतव्यवहारकेहेतां जेसर्वद्रव्यनोस्व
 रुपरुपशुद्धप्रवर्तीहोय जेमधर्मास्तीकायनीचलणसहाय
 ता अधर्मास्तीकायनीस्थीरसहायता जीवनीज्ञायकता
 इत्यादिकवस्तुगतव्यवहारछे तेनात्रणभेदछे द्रव्यव्यव
 हार १ गुणव्यवहार २ स्वभावव्यवहार ३ बीजोसाधनव्य
 वहारनावेजेद उत्सर्गसाधन १ अपवादसाधन २ जेउत्स
 र्गसाधनते द्रव्यनुउत्सर्गनीपजाववामाटे रत्नत्रीयनी
 शुद्धताकरवी तेगुणस्थानेश्रेणीआरोहणरुपथावु हवेजेअ
 शुद्धव्यवहारनावेजेदजे क्षेत्रअवस्थाने अजेदरह्याजेगु
 णज्ञानादिकजेदकेहेवा असदभुतव्यवहारकेहेतां अमुको
 क्रोधी मानी विपद्इत्यादिक अथवादेवतामनुपइत्यादी

कथयवादेवतापणु तेहेतुपणोप्रणमे ग्राहाजेदेवगतीवीषा
 कीकर्मतेनेअहोरुपप्रचावठे पणजथार्थज्ञानविनाजेदज्ञा
 नमुनजीवएकररीमानेठे तेअशुद्धव्यवहारकहीये तेवली
 अशुद्धव्यवहारनावेजेदएकसंकलेसीतअशुद्धव्यवहारजे
 शरीरमाहारु हुशरीरइत्यादिकअसदभुतव्यवहार तथा
 अससलेपीतकेहेता पुत्रधनाटीएमाहारु एकेहेवुतेअसं
 सलेपीतएअशुद्धव्यवहारनावेजेद माहाजाप्यमाकह्याछे
 हवेजेव्यवहारनावेजेदमुलठे एकवेंचणरुपव्यवहार १
 बीजोप्रवृत्तिव्यवहार तथाप्रवृत्ति एकवस्तुप्रवर्तन १ सा
 धनप्रवृत्ति २ लौकिकप्रवृत्ति हवेसाधनप्रवृत्तिनावेजेद
 एकलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति जेअरीहंतनीआज्ञापेशुद्धसा
 धनमार्गेएहलोकसंसार पुद्गलभोगासंसाजसासंसादिर
 हीत जेरत्नत्रीयनीप्रणती परचावत्यागसहीतनेसाध
 नाप्रवृत्ति तथाजेस्यादवाढविना मिथ्याजीमानसहितकु
 प्रवचनकसाधनाप्रवृत्तिक अथवालोकव्यवहारपरोवाये
 वचनेजेलोकनोस्वस्वदेशअनुकुलप्रवर्ते तेलोकव्यवहार
 कहीये एटलेआपआपणेस्वार्थनोमार्गचलववोअथवाआ
 पआपणास्वार्थनो उपदेशतेमार्गमाजेप्रवर्तेअथवाप्रवर्ता
 वेतेसर्वेलोकव्यवहारनयनाभेदजाणवा तथाद्वादशानय
 चक्रमध्येएकएकनयनासोसोनेदकह्याछेतेशास्त्ररहस्यना
 जाणजीवहोय तेनेएग्रथकीजाणवा एविचारधारवाथी

खुलामोघणोथशे एटलेएव्यवहारनयकह्यो ३ हवेरजु
सुत्रनयकहीयेठीये रजुसरजजेसुतकहेतावोधते रजु
सुत्रकहीये रजुशब्देअवक्रपणुंछे एटलेसमोभावहोयते
सुतहोयतेने रजुसुत्रकहीयेअथवा रजुअवक्रपणवेस्तु
पदार्थनेसत्यकरीजाणे तेनेरजुसुत्रकहीये तेवस्तुनुवक्रप
णुकेमजणायतेकहीयेछीये सप्रतेवर्तमानपणेउपन्योवर्त
मानकालवस्तु तेरजुकहीये अनेजेअतीतअनागततेर
जुसुत्रनीअपेक्षायेश्चतोछे एटलेअतीततोवणशगियोअ
नागततोआव्योनथी तेवारेअतीतअनागतएवेछे तेअव
स्तुवे अनेजेवर्तमानपर्यायवरते तेवस्तुपणुंसत्यछे पूर्व
कालपढातकाललेइवस्तुकहेवी तेनिगमनयेआरोपणरु
पठेत्याकोइपुछशेजे संसारीजीवकर्मसहितनेसिद्धसमान
कहेछे तेअनागतकालेसिद्धथाशे तेमाटेकहेछे तेनेतमेअ
नागतनेअवस्तुकेमकहोणे तेनोउत्तर.

हेचव्यएअनागतजावी माटेकहेतानथी एतोवर्तमान
सर्वगुणनीछतीपर्याय आत्मप्रदेशेवे जोठतीपर्यायन
होयतोसामर्थ्यपर्यायक्याथकीथाय माटेएवर्तमानमाव
स्तुवेजपणआवरणेकरिने ढकाइगयोवे तेथीप्रवर्तननथी
तेमाटेतिरोभावपणामाटे संग्रहनयकहिये पणवस्तुमाते
सर्वसकलज्ञानादिकगुणुंछतावर्तेछे तेमाटेसिद्धकहियोवे
ये अनेजेवस्तुतेनामादिकपर्यायसहितजेवर्तेवे माटेनामा

दिकनिक्षेपातेसर्वरजुसुत्रनाभेदछे एटलेनामादिकत्रणानि ।
क्षेपाद्रव्य अनेभावएवेव्याख्याकारणकारज जावनीवहे
चणकरेतेमाटेवे पणवस्तुमासहेजचारनिक्षेपातेभावधर्म
जठे तथापोतपोतानुकारजकरताजछे एरजुसुत्र तथावी
जांथुलरजुसुत्रएक्षणवर्तमानकालनो एकसमयतेनेसुक्ष्म
रजुसुत्रकहिये अनेबहूकालीरजुसुत्रएपणकालापेक्षाजा
वेछे तथाएजावनयेछे तथाएनेजोगाविलंबीपणतेवहाज
तेतेद्रव्यमध्येगणैवे एरजुसुत्रनयकह्यो ४ हवेशब्दनयनुं
स्वरूपकहियेछिये सप्रतीकहेताबोलावे तेनेशब्दकहिये
अथवासपीयेबोलावियेवस्तुपणैतेशब्दकहिये तेशब्दते
वाचअर्थहेनेग्रहेतेप्रधानपणै जेनयेतेपणशब्दकहिये जे
मकरतकतेजेकर्यो तेनोहेतुजेधर्मवस्तुमाहोय तेबोलावि
येएटलेशब्दनंकारणतो वस्तुनुंधर्मथयुं जोजलाहरणध
र्मछेतेनेघटकहियेछिये एमअहियांपणशब्देवाचअर्थग्रहे
तेनयेपणशब्दकहेवाय जथाजेमरजुसुत्रनयने वर्तमान
कालनुधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनय तेपणवर्तमाननेजइ
ष्टवे जेकारणेपेटेपरथु पहोलो बुधन गोलसकोचीतउद
रकलीत युक्तजलाहरण क्रियानेसामर्थप्रसिद्धघटरूप
भावघटमाजघटेछे पणशेषनामथापनाद्रव्यरूपत्रणघट
नयेघटनमानेघटशब्दनाअर्थनेतंसकेननेजघटकहेघटधा
तुतेचेष्टावाचीउते तेकारणमाटे शब्दनयतेचेष्टाकरतानेजघ

टकहे एटलेरजुसुत्रनयच्यारेनक्षेपासंजुक्तछे पणघटमा
 नेअनेशब्दनय तेजावघटनेघटमाने एटलोविशेषपणोठे।
 शब्दनाअर्थनीज्यांउत्पत्तिहोय तेनेतेवस्तुकहे एटलेरजु
 सुत्रनयेसामान्यघटगवेरुयो अनेशब्दनयेसदजावजेअ
 स्तीधर्म असदजावजेनास्तीधर्म तेसंजुक्तवस्तुनेवस्तुपणु
 कहे एटलेवस्तुनेशब्देबोलावतां सातभांगेबोलाववो
 एटलेएसप्तजंगीजेटला तेशब्दनयनाभेदजाणे तेसप्तभं
 गीनुंस्वरुपबोधदीनकरथकीजाणवुं एशब्दादिकनय व
 स्तुनापर्यायनेअवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनो आहकछे
 तेमाटेजावनिक्षेपेएनयमुख्यठेअनेधुरनीचारनयमांनामा
 दिकत्रणानिक्षेपामुख्यछे एटलेएशब्दनयनुंस्वरुपकह्युं ५
 हवेसंज्ञीरुढनयनीव्याख्याकहिधेछिये पुर्वेशब्दनयक
 ह्यातेनेमतेइंद्रशकरपुरंदरइत्यादिसर्वेनामभेदछेएकपर्या
 यवंतनेदेखिइंद्रसर्वनामकहे उक्तच विशेषावश्यके एक
 समिनपी॥इंद्रादिकेवस्तुनीआचित॥इदनसरकनपुरणंदी
 यो॥अरथाघटंतेतदधसेनसक्रादि॥बहूपरजायमपी॥ तद्व
 वस्तुशब्दनयोमन्यते॥संभीरुढवस्तुनेवमस्यती॥इतिनयो
 रचेद॥ एकपर्यायप्रगटपणेशेपपर्यायने अणप्रगटवेतेंट
 लासर्वनामबोलावे पणसंभीरुढतेनबोलावे .एटलोश
 ब्दनयतथा संभीरुढनयनोनेदछे तेमाटेहवेसंभीरुढनय
 कहेछे जेसंज्ञाघटकुंभादिकामध्ये जेसंज्ञानोवाचअर्थदि

दिकनिक्षेपाते सर्वरजुसुत्रनाभेदछे एटलेनामादिकत्रणनि
क्षेपाद्रव्य अनेभावएवेव्याख्याकारणकारज चावनीवहे
चणकरेतेमाटेवे पणवस्तुमासहेजचारनिक्षेपातेभावधर्म
जवे तथापोतपोतानुंकारजकरताजछे एरजुसुत्र तथावी
जांथुलरजुसुत्रएक्षणवर्तमानकालनो एकसमयतेनेसुक्ष्म
रजुसुत्रकहिये अनेवहूकांलीरजुसुत्रएपणकालापेक्षाजा
वेछे तथाएचावनयेछे तथाएनेजोगाविलंबीपणेतेवहाज
बेतेद्रव्यमध्येगणेवे एरजुसुत्रनयकह्यो ४ हवेशब्दनयनुं
स्वरूपकहियेछिये सप्रतीकहेतावोलावे तेनेशब्दकहिये
अथवासपीयेवोलावियेवस्तुपणेतेशब्दकहिये तेशब्दते
वाचअर्थहेनेग्रहेतेप्रधानपणे जेनयेतेपणशब्दकहिये जे
मकरतकतेजेकर्यो तेनोहेतुजेधर्मवस्तुमाहोय तेवोलावि
येएटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनुंधर्मयु जोजलाहरणध
र्मछेतेनेघटकहियेछिये एमअहियापणशब्देवाचअर्थग्रहे
तेनयेपणशब्दकहेवाय जथाजेमरजुसुत्रनयने वर्तमान
कालनुधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनय तेपणवर्तमाननेजइ
ष्टवे जेकारणेपेटेपरथु पहोलो बुधन गोलसकोचीतउद
रकलीत युक्तजलाहरण क्रियानेसामर्थप्रसिद्धघटरूप
नावघटमाजघटेछे पणशेपनामथापनाद्रव्यरूपत्रणघट
येघटनमानेघटशब्दनाअर्थनेतंसकेतनेजघटकहेघटधा
तेचेष्टावाचीवे तेकारणमाटे शब्दनयतेचेष्टाकरतानेजघ

हे एटलेरजुसुत्रनयच्यारेनक्षेपासंजुक्तछे पणघटमा
 अनेशब्दनय तेजावघटनेघटमाने एटलोविशेषपणोबि
 षटनाअर्थनीज्यांउत्पत्तिहोय तेनेतेवस्तुकहे एटलेरजु
 नयेसामान्यघटगवेख्यो अनेशब्दनयेसदजावजेअ
 धर्म असदजावजेनास्तीधर्म तेसंजुक्तवस्तुनेवस्तुपणु
 एटलेवस्तुनेशब्देवोलावतां सातभागवोलाववो
 लेएसप्तचंगीजेटला तेशब्दनयनाभेदजाणे तेसप्तभं
 सुंस्वरुपबोधदीनकरथकीजाणवुं एशब्दादिकनय व
 नापर्यायनेअवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनो आहकछे
 टिजावनिक्षेपेनयमुख्यठेअनेघुरनीचारनयमांनामा
 अणनिक्षेपामुख्यछे एटलेएशब्दनयनुंस्वरुपकह्युं ५
 संजीरुढनयनीव्याख्याकाहियेछिये पुर्वेजेशब्दनयक
 निमतेइंद्रशकरपुरंदरइत्यादिसर्वेनामभेदछेएकपर्या
 निदेखिइंद्रसर्वनामकहे उक्तच विशेषावश्यके एक
 नपी॥इंद्रादिकेवस्तुनीआचिता॥इदनसरकनपुरांंदी
 अरथाघटंतेतदधसेनसक्रादि॥बद्रूपरजायमपी॥ तद्व
 शब्दनयोमन्यते॥संभीरुढवस्तुनेवमस्यती॥इतिनयो
 ॥ एकपर्यायप्रगटपणेशेपपर्यायने अणप्रगटवेतेंट
 र्वनामवोलावे पणसंभीरुढतेनवोलावे .एटलोश
 पतथा संभीरुढनयनोनेदछे तेमाटेहवेसंभीरुढनय
 जेसंज्ञाघटकुंभादिकामध्ये जेसंज्ञानोवाचअर्थदि

दिकनिक्षेपाते सर्वरजुसुत्रनाभेदछे एटलेनामादिकत्रणनि
 क्षेपाद्रव्य अनेभावएवेव्याख्याकारणकारज जावनीवहें
 चणकरतेमाटेवे पणवस्तुमांसहेजचारनिक्षेपातेभावधर्म
 जठे तथापोतपोतानुंकारजकरताजछे एरजुसुत्र तथावी
 जांधुलरजुसुत्रएक्षणवर्तमानकालनो एकसमयतेनेसुक्ष्म
 रजुसुत्रकहिये अनेबहूकाजीरजुसुत्रएपणकालापेक्षाजा
 वेछे तथाएजावनयेछे तथाएनेजोगाविलवीपणतेवहाज
 ठेतेद्रव्यमध्येगणवे एरजुसुत्रनयकह्यो ४ ह्वेशब्दनयनुं
 स्वरूपकहियेछिये सप्रतीकहेतांबोलावे तेनेशब्दकहिये
 अथवासपीयेबोलावियेवस्तुपणेशब्दकहिये तेशब्दते
 वाचअर्थहेनेग्रहेतेप्रधानपणे जेनयेतेपणशब्दकहिये जे
 मकरतकतेजेकर्या तेनोहेतुजेधर्मवस्तुमाहोय तेबोलावि
 येएटलेशब्दनुकारणतो वस्तुनुधर्मथयु जोजलाहरणध
 र्मछेतेनेघटकहियेछिये एमअहियापणशब्देवाचअर्थग्रहे
 तेनयेपणशब्दकहेवाय जथाजेमरजुसुत्रनयने वर्तमान
 कालनुंधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनय तेपणवर्तमाननेजइ
 ष्टवे जेकारणपेटेपरथु पहीजो बुधन गोलसकोचीतउद
 रकलीत युक्तजलाहरण क्रियानेसामर्थप्रसिद्धघटरूप
 भावघटमाजघटेछे पणशेपनामथापनाद्रव्यरूपत्रणघट
 नयेघटनमानेघटशब्दनाअर्थनेतंसकेतनेजघटकहेघटधा
 तुतेचैष्टावाचीठे तेकारणमाटे शब्दनयतेचैष्टाकरतानेजघ

टकहे एटलेरजुसुत्रनयच्यारेनक्षेपासंजुक्तछे पणघटमा
 नेअनेशब्दनय तेजावघटनेघटमाने एटलोविशेषपणोठे
 शब्दनाअर्थनीज्याउत्पत्तिहोय तेनेतेवस्तुकहे एटलेरजु
 सुत्रनयेसामान्यघटगवेख्यो अनेशब्दनयेसदजावजेअ
 स्तीधर्म असदजावजेनास्तीधर्म तेसंजुक्तवस्तुनेवस्तुपणु
 कहे एटलेवस्तुनेशब्देवोलावतां सातभांगिवोलाववो
 एटलेएसप्तचंगीजेटला तेशब्दनयनाभेदजाणे तेसप्तभं
 गीनुंस्वरुपवोधदीनकरथकीजाणवुं एशब्दादिकनय व
 स्तुनापर्यायनेअवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनो आहकछे
 तेमाटेजावनिक्षेपेएनयमुख्यठेअनेधुरनीचारनयमांनामा
 दिकत्रणानिक्षेपामुख्यछे एटलेएशब्दनयनुंस्वरुपकह्युं ५
 हवेसंजीरुढनयनीव्याख्याकहियेछिये पुर्वजेशब्दनयक
 ह्यातेनेमतेइंद्रशंकरपुरंदरइत्यादिसर्वेनामभेदछेएकपर्या
 यवतनेदेखिइंद्रसर्वनामकहे उक्तच विशेषावश्यके एक
 समिनपी॥इंद्रादिकेवस्तुनीआचिता॥इदनसरकनपुरणदी
 यो॥अरथाघटतेतदधसेनसक्रादि॥बहूपरजायमपी॥ तद्व
 वस्तुशब्दनयोमन्यते॥सभीरुढवस्तुनेवमस्यती॥इतिनयो
 रनेदा॥ एकपर्यायप्रगटपणेशेपपर्यायने अणप्रगटवेतेट
 लांसर्वनामवोलावे पणसंभीरुढतेनवोलावे .एटलोश
 व्दनयतथा संभीरुढनयनोनेदछे तेमाटेहवेसंभीरुढनय
 कहेछे जेसंज्ञाघटकुंभादिकामध्ये जेसंज्ञानोवाचअर्थदि

सेतेजसज्ञाकहे संज्ञांतरार्थनेविषे प्रमुखछे तेसभीरुठ
 नयकहिये जो एकसज्ञामध्ये जेसर्वमत्रमानियेतोसर्वश
 करथाय ध्यारेपर्यायनोभेदपणोरहेनहि अनेजेप्रजाअ
 तरहोवेतेतोभेदपणोजहोवे तेमाटेप्रजाअंतरनोभेदपणो
 जरह्योवे तेमाटेलींगाढीभेदनेसापेक्षपणे वस्तुनेभेदपणो
 जमानवो एसभीरुठनयवखाएयो एनयपणभेदज्ञाननी
 मुख्यताछे एटजेसभीरुठनयकह्यो ६ हवेएवभुतनयक
 हियेठिये एवकहेता जेमघट एशब्दचेष्टाव्यापी इत्यादि
 करुपेशब्दनोअर्थकह्योवे एरीतेजपरवर्ते तेघटादिकअर्थ
 तेएवकहेताएमहिजवर्ते विदमानपणेजेशब्दनअर्थनेला
 विनेवर्ते तेशब्दनोवाचनथी अनेशब्दार्थपणुजेमानपामि
 चेतेवस्तुतेरुपनहि शब्दार्थमाहेथी एकपर्यायपणउछो
 होवेतोएवभुतनयतेनेकहे एमाटेशब्दनयथी तथासजी
 रुठनयथीएवच्युतविपेशांतरवे एएवभुतनयेस्त्रिनेमाथेच
 ड्यो पाणीआणवानीक्रियानोनिमित्तमार्गे आवतापणेनी
 चेष्टाकरतोघटमाने पणघरनेखुणेरह्यो तेनेघटनमाने
 केमकेचेष्टानेअणकरवामाटे जेक्रियावतथकोहोय तेनेव
 स्तुकहे विजानेनकहे तेअर्थकह्यो जेलक्षणकह्या तेरुपेवि
 शेपथीएजेचेष्टाघटशब्दवाचेप्रसिद्धवे इयोसितस्त्रिनेमाथे
 पाणीलावतोतेघट तथास्थानकेरह्यो अथवात्रणक्रिया
 करतानेतेएवंभतनयघटनकहे एशब्देअर्थ तथाअर्थेस

वदनेवापेठे अहियातोरहस्यएजछे जेस्त्रिनेमाथेचमयोचै
 एवतअर्थतेघटशब्देबोलावे तेथकीअनथातेनेनबोलावे.
 जेससामान्यकेवलीने सभीरुढनयेअरीहंतकहे जेज्ञाना
 ढिकगुणसामान्यछे पणएवंभुतनयेसमोवसरणादि अ
 तिश्यसंपदासहित केवलीइद्राढिकपुजता युक्तनेजअ
 रीहतकहे वाचवाचकनीपूर्णतानेकहे एस्वरुपेएवंभुतनय
 जाणवो एसातेनयनाविशेषावश्यकनेअनुसारे भेदकह्या
 तेभेद१२छेतेनोवीवरोनिगमना १० संग्रहना १२ व्यव
 हारना १४ रजुसुत्रना ६ शब्दनयना ७ संजीरुढनय
 ना २ एवभुतनयना १ जेदएवंसर्वमलीने५२जेदकह्या
 वलीनयचक्रमध्ये सातसेजेदपणकह्याठे तेपणजाणवा
 तथाअठवीसभेदपणकेटलेकठेकाणेकहे जाछे तथास्याद
 वादरत्नाकरमानयनुस्वरुपकहयुंछेतेरीतेअहियाकहिनेदे
 खाप्तियेछिये नयतेकहेतासुतज्ञानरुपप्रमाणेपमाडे जेण
 वीपयकीधोजेपदार्थनोअशतेथीइतरकहेतावीजोअंशतेथी
 उदासिनपणे तेनेजपडीवजवावालानोअभिप्रायविशेषेते
 नयकहिये एटलेवस्तुनाअशनेग्रहेअनेवाकीपदार्थथीउ
 दासिनपणुतेनयकहिये अनेएकअंशनेमुख्यपणेकरी वी
 जाअशनेउथापे तेनेनियाभासकहिये तेनयनावेजेदछे
 एकद्रव्यार्थक वीजोपर्यायार्थक त्यांद्रव्यार्थकनाचारभेद
 निगम १ संग्रह २ व्यवहार ३ रजुसुत्र ४ एचारजेद

वे कोइकरजुसुत्रनयनेभावनयकरीगृहेते तेनयेद्रव्यार्थक
नात्रणजेदथाय.

हवेनीगमनयनु स्वरूपकेहेते धर्मनोप्रधानतथागुणप
णेअथवाधर्मने प्रधानअथवागुणपणे तेधर्मथीएवेनाप्र
धानतथागुणपणे जेगवेख्योएटले धर्मनीप्रधानतातेवारे
पर्यायनीप्रधानताथाय तथाधर्मनोप्रधानपणो तेवारेद्र
व्यनोप्रधानपणो तथागुणपणु तथाधर्मनोप्रधानगुणप
णो तेजेद्रव्यपर्यायनोगुणप्रधानपणो एरीतेजेगवेखणा
रूपज्ञाननोउपियोग तेनेनिगमनयजाणवो तेनावोधनेनि
गमवोधकहिये हवेएनाउदाहरणकरेछे सतरहेताठतांप
णेचेतनकहेताजाणपणु एवेधर्ममध्येएकधर्मनोपक्षमुख्य
गणे बीजानेगुणपणेकरीनेगवेखे एरीतेनिगमनयजाण
वो अहियाचेतननामेव्यजनप्रजाय तेप्रधानपणेगणे जे
कारणेचेतनपणोविशेषगुणवे अनेसत्त्वनामाव्यजनप्रजा
यवे तेसकलद्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेनेगुणपणेलेखवे ए
प्रथमनिगमनेटकह्यो . तथावलीवस्तुपर्यायचद्रव्यएधर्म
नोनिगमछे अहियापर्यायएवद्रव्यएमवस्तुवे अहियाद्र
व्यनुप्रधानपणुवस्तुपर्यायवत अहियावस्तुनुगुणपणुप
र्यायनुमुख्यपणु अहियाउजधेगोचरपणामाटेएनिगमवे
जेदलक्षणमेकसुंवी विपयाशक्त इतितुधर्मधर्मनोरीति
अहियाविपयाशक्तजेव्याख्या जेधर्मनीमुख्यतानाविपे

कपणाथीसुखलक्षणधर्मनुं प्रधानतातेविशेषपणेकरीनेध
 र्मधर्मीनेआलवनेसंगमठारे एटलेवर्मतथाधर्मीछे नेआ
 लवेएवेगृहेतासंपुर्णवस्तुनुं गृहणथयुंतेवारेएज्ञाननेप्रमा
 णकह्यो त्यांउत्तरद्रव्यपर्याय वमीएवनेप्रधान एणेअ
 नुभवतोजे ज्ञानतेप्रमाणथाय अहिंयावेपक्षनेविपेगुण
 तावीजानीमुख्यतालेइनेज्ञानथायछे तेमाटेनयेकही त
 थावलीसुक्ष्मनिगोदीजिवसिद्धसमासत्तावतछे अथवाअ
 जोगीजनतेससारीएअंशानिगमठे.

हवेनीगमाभाष्यकेहेठे वस्तुमांधर्मअनेकठे तेएकाते
 एकवीजाने सापेक्षपणेनमाने एकधर्मनेमानेवजाध
 र्मनेनमानेतेनीगमाभाष्य कहीयेएदुरनयजाणवो जेकार
 णेअन्यनयनेगवेखेनही तेसर्वेदुरनयजाणवो जेमआत्मा
 नेविपेसत्त्वतथाचैतन एवनेधर्मजीन्निछे तेणेचैतन्यपणुमाने
 सत्त्वपणुनमाने एनीगमभाष्यकहीये एटलेनीगमनयक
 ह्यो १ सामान्यमात्र समस्ताविशेषरहीत सत्त्वद्रव्यत्वा
 दिकनेग्रहेवानोठे स्वभावजेनो सकेहेतापंड्यपणेविशेष
 राशीनेग्रहेपणवक्तव्यपणे नग्रहेएसग्रहकहीये एजा
 वनाछेएटलेस्वजातीना दिठाजेडष्टअर्थतेने निरोधकरी
 नेविशेषधर्मने एकरूपपणेजेग्रहेवो तेसग्रहनयकहीये
 तेनावेचेद एकपरसंग्रह वीजोअपरसंग्रह त्यांपरसंग्र
 हनेअर्थलखीयेछीये॥ असेपविशेषदासीनां भजमानंसु

धद्रव्य मनमात्रमभीमनमान्य परमग्रह इति॥समस्तवि
 शेपधर्मपणानेनजतो एटलेविशेषपणानेअणग्रहेता शु
 द्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेमाने तेपरसग्रहकहिये जथाद्रव्यए
 परसग्रह विश्वएकसत्यपणामाटेएमकहेवे तापणानोएक
 पणानोज्ञानथायछेएटलेसर्वपदार्थनोएकएनेग्रहणवे अने
 जेसत्तानोअधेतश्रीकरेद्रव्यतरभेदमानेसकलविशेषनेना
 केहेताजेगृहणकरे तेपरसग्रहाज्ञाशकहिये एटलेअर्ध्वी
 त्ववादीदर्शनजेवेदातीतथाशंखदर्शन एवनेसंग्रहाज्ञाउय
 ठे जेमाटेदीसताजेदधर्म तथाद्रव्यंतरनमाने तेमाटेमंग्र
 हाज्ञाशकहिये जिनतोविशेषसहीतसामान्यनेगृहे तेमाटे
 सग्रहनयकहिये हवेअपरसग्रहनस्वरूपकहियेठिये द्रव्य
 त्वादीन अतरसामान्यनीमीत्वातवानजेदजेदेसुगजनीम
 लीकाम चलमवमानअप्रसग्रह एटलेद्रव्यजेजिवअजि
 वादिकजेआवतरसामान्यनेमानतो अनेजिवनेविपेपरती
 जिवनोजेदव्य अचव्यसमकीतिमिथ्यात्वी नरनरकादि
 जेजेदतेनेगजमलीकाकेहेता मस्ताइयेनगवेस्व्योतेअप्रसं
 गृहकहिये अनेद्रव्यनेसामान्यपणुमाने पणस्वद्रव्यनेप्र
 णमीकतादिकधर्मनमाने तेअपरसग्रहाभायकहिये एट
 लेएसग्रहनयनोस्वरूपकह्यो २

हवेव्यवहारनयनुस्वरूपकहियेछिये जेसग्रहनयेग्रह्या
 सत्त्वादिकधर्मपदार्थ तेनेजेगुणभेदेवहेचे भिन्नभिन्नगवेखे

तथाजेपदार्थ तेनीजेगुणप्रवृत्ति तेनेमनुष्यपणेगवेखेए
 व्यवहारनयकहिये जेमद्रव्य ठाजिव १ पुद्गल २ धर्मा
 स्ती ३ अयर्मास्ती ४ आकास्ती ५ काल ६ तथापर्या
 यवेप्रकारना कर्मभावी १ स्वभावी २ तथाद्रव्यवेप्रका
 रना एकरुपी विजोअरुपी तेअरुपीनावेचेद एकचेतन
 विजोअचेनत तेचेतननावेभेद एकसिद्ध विजासंसारी
 तेससारीनावेचेद एकअजोगी विजासजोगी तेसजोगी
 नावेचेद एकसजोगीकेवलीतेरमागुणठाणाना विजास
 जोगीसंसारी तेसजोगीससारीनावेचेद एकक्षिणमोहि
 तारमागुणठाणाना विजाउपसंतमोहि तेउपसंतमोहिना
 वेचेद एकअकखाइ विजासकखाइ अकखाइउपसंतमो
 हिअगियारमागुणठाणानाविजासकखाइ तेसकखाइ
 नावेभेद एकसुक्ष्मकखाइ तेदशमागुणठाणाना विजावा
 दरकखाइ तेवादरकखाइनावेभेद अवेदीनेसवेदी अवेदी
 तेनवमागुणठाणानाविजासवेदी तेसवेदीनावेभेद एक
 श्रेणीप्रतिपन तेआठमागुणठाणानाविजाश्रेणीरहित ते
 श्रेणीरहितनावेचेद अप्रमादी तेसातमागुणठाणानावी
 जाप्रमादीतेप्रमादीनावेचेद सर्ववर्ति तेठहागुणठाणाना
 विजादेशवर्ति तेदेशवर्तिनावेभेद एकदेशवर्ति तेआवक
 तेपाचमागुणठाणानाविजाअवर्ति तेअवर्तिनावेभेद एकस
 मकित्तीतेचोथागुणठाणानाविजामिथ्यात्वीतेमिथ्यात्वीना

वेत्तेद एकजव्यविजाञ्जव्य तेजव्यनावेभेद एकग्रथीभे
दी विजाग्रंथीञ्जेदी इत्यादिकगतीप्रमुखचेतननाञ्जेक
जेदथाय तथाञ्चेतनञ्जरूपीनाच्यारजेद धर्मास्ती १ अथ
र्मास्ती २ आकास्ती ३ काल ४ तेनापणखधादिकजेदे
अनेकजेदथाय तथारूपीद्रव्यकहेता पुद्गल तेनावेजेद
खधतथाप्रमाण तेनापणखधादिकभेदकरता अनेकजेद
थाय इत्यादिककारजजेदे तेनेभेदमाने तेनेव्यवहारनय
जाणवो. हवेकर्मजावीपर्यायनावेजेद एकक्रियारूपवीजोअ
क्रियारूप एमवहेचणसामर्थादिकगुणजेदेपदे तेसर्वव्यव
हारनयजाणवो जेपमार्थविनाद्रव्यपर्यायनाविभागकरे
तेव्यवहारभासजाणवो जेकल्पनायेकरीने जेदवहेंचेतेदु
रनयजाणवो एच्यारवाकमतने व्यवहारनयदूरनयछे
शामाटेजेच्यारवाकमतवालानुं कहेवुएवुतेके जिवतोलो
कमाप्रत्यक्षद्रष्टीगोचरआवतोतथी तेमाटेजिवजगतमाळे
नहि जेआजगतमासर्वरूपमनुष्यादींते तेसर्वपचभुतनुपु
तलुछे पणकाइजिवछेनहि एवीखोटीकल्पनाकरीनेलो
कोनेकुमार्गेपाडेछे पुन्यपापपरलोक सर्वउथापेछे माटेते
मतवालाने व्यवहारनयदूरनयकहीये एटलेव्यवहारन
यनुस्वरूपकह्युं.

हवेरजुसुत्रादिकच्यारनयनु स्वरूपकहिषेछिये प्रथमर
जुसुत्रकहेता सरलअतितअनागतने अणगवेखतावर्तमा

नसमयेवर्ततो जेपर्यायमात्रप्रधानपणेसुतकहेतागवेखे
 तेरजुसुत्रनयकहिये जेज्ञाननेउपयोगे वर्ततानेज्ञानीकहे
 दर्शननोउपयोगवर्तताने दर्शनीकहिये कखायनोउपयो
 गवर्तताजिवनेकखाइकहिये समतानेउपयोगेवर्ततात्तेस
 मायककहिये अहियाकोइपुछशेजे एमकरतारजुसुत्रत
 थाशब्दनयएवन्नेनयो एकथइजायछे तेनोउत्तरकहेछेजे
 विशेषावश्यकग्रथमाकह्युंठेके कारणरजुसुत्र एटलेज्ञान
 नाकारणपणेवर्ततोरजुसुत्रग्रहेछे अनेज्यारेजाणपणारुप
 कारजपणेथाय त्यारेशब्दनयकहिये एफेरछे वर्तमान
 कालनेपणनग्रहे तेनेरजुसुत्रज्ञासकहीये अनेगताजावअ
 छताकहे अथवाविप्रीतकहे अथवाजिवनेअजिवकहे अ
 जिवनेजिवकहे इत्यागतकहेतांबोधदर्शननोएमतछे शा
 माटेजेछतोसदावर्ततोजिवपदार्थ तेनेपर्यायपलटणनी
 हारेद्रव्यनुपलटणकरावेछे शामाटेकेसमेसमे पर्यायनो
 विनाशथायछे तेथानके तेदर्शनवालाद्रव्यनोविनाशमा
 नेछे तेकारणमाटे एदर्शनवालानेनिआज्ञासजाणवाएट
 लेरजुसुत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहियेछिये एकपर्यायनेप्रगटदिसवेअन्य
 जे तेशब्दवाचकपर्यायनेतिरोभावे अणप्रगटवेपणतेप
 र्यायनेग्रहे तेशब्दनयकहिये अथवाकालादिनेदेत्रणका
 ल वचनत्रण लिगनेभेदे शब्दनेभेदतेपडेतेनेदअर्थनेकहे

तेशब्दनयकहिये जलाहरणादि सामर्थ्यनेघटकहे अने
 कहेतांकुभादिकवचन पर्यायजेटलाछे तेटलानोअर्थवर्त
 तोनदिसेपणतेनामकहीबोलावे तेकारजसामर्थवतनेग्र
 हेतेशब्दनयकहिये पणमाटिनापिडनेघटनकहे सग्रहनी
 गमवालाकहे तेनयवालासत्ताजोगताअशनाग्राहकवे
 तथातत्वार्थटिकामध्येशब्दवसयीअर्थ पनीवजवतोशब्दे
 बोलातोहोयजेअर्थ तेवस्तुमाधर्मपणे प्रगटदिसेतेनेतेव
 स्तुमाने एनयशब्दअनुजाइअर्थ प्रणमतीजेवस्तुनेवस्तु
 कहेवे काललीगादिभेदेअर्थनोभेदवे तेनेदनेतेधर्मवस्तु
 माने तेशब्दनयकहिये अनेतेअर्थविनातेवस्तुमध्येतेप
 णोवर्ततोदिसतोनी तेनेवस्तुपणेमामर्थकरे तेशब्दभा
 सकहिये एटलेशब्दनयकह्यो ५

हवेसन्निरुढनयकहियेठिये एकपदार्थनेअवलबीनेजे
 टलासरखानाम तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानीरू
 क्तिव्युत्पत्तिनिन्नहोयतेअर्थनेसकहेतासम्यकप्रकारेआरो
 हतोएटलेएटलासर्वे अर्थसजुक्तजेतेसन्निरुढनयकहिये
 जेमइद्राद्रीधातुपरमेश्वरनेअर्थवेतेपरमेश्वर्यवतनेइद्रकहि
 येतथाशकनकहेतानवनवी सयुक्तनेशक्रकहिये पुरके०द
 इतनेदलेके०विडारंतेपुरदरसचीतेनोपतीकहेता स्वामीते
 सचिपतीकहिये एटलासर्वधर्मतेइद्रजेदेवलोकनोधणीठि
 तेनेएनामेबोलावेछे विजानामादिकइद्रनेएनामनकहेए

टलेजेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वेनेचिन्न
भिन्नअर्थकहे पणकारजअर्थनजाणे तेसभिरुढाभासक
हिये एटलेएसन्निरुढनयकह्यो.

हवेएवभुतनयकहियेछिये शब्दनीपट्टतिनोनीमीतभुत
जेक्रियाते विसिष्टसंजुक्तजेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेने
पोचतोजेएटलेतेकारणकारजधर्मसहित तेएवंभुतनयक
हिये तथाइश्वरीअसहिततेइंद्र शक्ररूपसिंहासनेवेसे ते
शक्रशचीनीसंगेवेठो तेसचीपतिएटलेजेशब्दना जेटला
पर्यायनेसर्वतेमांपोहोचताजाव तेनामकहिनेवोलावे जे
पर्यायपोहोचताजावने तेनामकहिनेवोलावेजेपर्यायपो
होचतो नदिसे तेपर्यायनीनाकहे एकपर्यायउणामुधीसं
नीरुढनयकहिये सकलवचनपर्यायनेपोहोचे तेवारेएवं
भुतनयकहिये जेपदार्थनामभेदनोभेददेखीपदार्थनीची
न्नताकहे तेनयाजासकहिये नामभेदनेवस्तुताचीन्न
हाथी घोडा हरणी जेमचिन्नछे एमभिन्नपणुमाने तेएवं
भुतनयनोदुरनयकहिये घटथीजेमपटचिन्न अर्थचिन्नमा
टे तेमइंद्रपणाथीपुरंदरपणोचिन्नमाने तेदूरनयजाणवो
एटलेघटथीजेमपटचिन्नअर्थभिन्नमाटीठे पणकइंद्रपणा
थीपुरंदरपणोचिन्नठेनहि तेनेभिन्नमाने तेदूरनयजाणवो
एटलेएवभुतनयकह्यो ७ एटलेसातेनयनीव्याख्याकही
अद्य

। चारनयतेअविशुद्धे शामाटेजेपदार्थ

जेद्रव्यसामान्यकेहेवानोअधिकारीते कयांएकअर्थनयए
 वुनामउेअर्थशब्दद्रव्यलेवो तथाशब्दादिकत्रणनयते ते
 शुद्धनयतेजेकारणेशब्दनाअर्थनीएनेमुख्यताते धुरलाचा
 रनयनेदपणेवेहेचवानेवतेते शब्दादिकनेदजेर्लांगादिके
 अनेदवेहेचणेअभेदकहे अनेचिन्नवचनेभिन्नार्थकहिमाने
 संच्चीरुढनयचिन्नशब्देतेवस्तुपर्यायमाने पणशब्दनाप
 र्यायमाने एवभुतनयचिन्नगोचरपर्यायभिन्नचिन्नमाने घ
 टनेचेष्टाकरतोघटकहे पणखुणेपद्म्योघटनकहे चीत्रामण
 करताउपियोगवतनेचीत्रकारकहे तथासुताजमतानेचक्र
 कारनकहे तेउपियोगरहितते तेमाटेएनयतोशब्दनेतथा
 अर्थनेअनेदपणुमानेते तेअर्थशून्यशब्दनेप्रमाणनथी श
 व्दनेप्रधानअरधद्रव्यने गोपणेवर्तताशब्दादिककह्याछे
 एसातनयनेविपेनिगमतेसामान्यते विशेषेनयमानेते ने
 सग्रहनयतेसामान्यनेमानेछे व्यवहारनयतेविशेषनेमाने
 अनेद्रव्यार्थाअविलंबीते नेरजुसुत्रविशेषग्राहकछे एचा
 रनयदुरलाद्रव्यार्थकनयमाते नेशब्दादिकत्रणनयप्रजा
 यार्थकनयमाते विशेषालंबीभावते तथाशब्दादिकनयते
 त्रणनिक्षेपानेअवस्तुमानेते

अत्रनिक्षेपानो विचारसक्षेपथकी लखीयेछिये
 श्री विशेषावश्यकनी भाष्यमध्येकह्युंते तेक
 हियेछिये चत्वारोवथूपजवीया एवचनते तेमाटेस्वपर्याय

कहिये शामाटेजेवस्तुनासेहेजनाजेचारानिक्षेपाठे तेवस्तु
 माजछे तेवस्तुनास्वपर्यायठे तथाश्रीअनुजोगद्वारसुत्र
 मध्येकह्युठे जेज्यांजेवस्तुनानिक्षेपाजेटलाजाणीये आप
 णीबुद्धिशक्तिज्यासुधीपीचेत्यासुधीतेटलाजनिक्षेपाकरिये
 कंटाचितवधतानिक्षेपाभापणमानाअवेअथवाआपणीबु
 द्दिशक्तियटलीनफेलायतोयपणचारानिक्षेपाअवश्यकरवा
 हवेतेचारनिक्षेपानानामकहियेछिये नामनिक्षेपो १
 स्थापनानिक्षेपो २ द्रव्यनिक्षेपो ३ भावनिक्षेपो ४ त्या
 नामनिक्षेपानावेभेदठे एकसहेजनाम एकसकेतीकनाम
 सहेजनामतेचेतनजिव आत्माइत्यादिक एनामकोइना
 करेलांठेनाहि एनामज्यांजशे त्यांजेगुनेजेगुजठे एनाम
 नोनाशकदापीकालेथवानोनथी माटेएसतनामछे विजुसं
 केतिकनामते देवदत्तप्रमुख एटलेलोकनीवाधेलीसंज्ञाजे
 एनुनामदेवदत्त अथवाएनुनामधर्मचद इत्यादिकंएलो
 कसज्ञायेनामपाडेलाठे तेअसत्यकल्पनाठे शामाटेकेतेना
 मप्रमाणेगुणहोय अथवानहोय वलीतेनामकाइआगल
 चालेनाहि तेमआभवमापणएनुएनामरहे एवोनिश्चय
 नाहि एविजोनेद एटलेनामनिक्षेपोकह्यो.

हवेथापनानिक्षेपोकहियेछिये तेनावेभेदठे एकसहेज
 थापना १ विजोआरोगीतथापना हवेसहेजथापनानावे
 नेद एकसहेजस्वजावीकथापना १ एकसहेजविजावीक

थापना हवेसहेजस्वभाविकथापनातेआत्मानाअसख्या
 तप्रदेशरुपअवगाहनाथापना पुद्गलनोप्रमाणुरुपइत्यादि
 कस्वरुपअवगाहनाये सहिततेमहेजस्वभाविकथापना
 कहीये तेभागोअनादीअनतछे हवेविजोभागोजेसहेज
 विजावीकथापनाकहेता आपआपणाशरीरनीअवगाह
 नातेविजाविकथापनाते अहियाकोइकहेगेके शरीरविभा
 विक तेनेतमेसहेजपदकेममेलवोछो तेनोउत्तरजे एसहेज
 जेजिवनोस्वभावससारीपणेवर्ते त्यासुधीशरीरनोवाधना
 रोतेछे अशग्रहीनेअमेसहेजपदजोड्योछे एनिगमनय
 नोपक्षठे पणरजुसुत्रनयेतो एवीजावीकथापनाकहेवाय
 अहियासहेजपदलागुथायनहि पणएशरीरथापनासादी
 सतजागेते तेशरीरते तेविजाविकते नेमाहेचेतनरह्योतेस
 हेजस्वभावीकछे माटेएनेमहेजविजावीकभागोकहियेते
 नुकाइदोपणठेनहि

हवेजेआरोपितथापना तेचेतनरहितशरीरथकीभिन्न
 हरकोइवस्तुनेविषे हरकोइनामनीथापनाकरवी तेथाप
 नाकृतमकहेवाय एआरोपणथकीथायछे तेअसतकल्प
 नाछे पणवालाजिवनेसमजाववारुपछे तेश्रीअनुजोगद्वा
 रमादशप्रकारनीथापनाकहीछे कष्टकर्म चितकर्म इत्या
 दिकछे तेमध्येपाचआकारसहितछे पाचआकाररहितछे
 आकारसहित तेकाष्टनोघोडो हाथीप्रमुखअनेकछे ते

आकारसहितथापनाकहिये अथवाजेमअन्यलोकदेवदेवी
 नेकाष्टनाफलामुकेते तेआकाररहितथापनाछे एसोरठडे
 गप्रसिद्धछे अथवाजेमसारंगरामजेने मोहो माथुकगुछे
 नहि गोललांवात्रिखुणोजेवोमले तेवोथापेछे तेनुनाम
 आरोपजाथापनाकहिये एटलेवीजोथापनानिक्षेपोकह्यो
 हवेद्रव्यनिक्षेपोकहियेछिये तेद्रव्यनिक्षेपानावेभेद आ
 गमद्रव्यनिक्षेपो नीआगमद्रव्यनिक्षेपो आगमद्रव्यनिक्षे
 पोकेहेतांजेपुरुपनेस्वस्वरुपनुं परस्वरुपनुंजाणपणुछेपणह
 मणातेनोउपियोगनथी हवेनोआगमकेहेतां जेतेवस्तुमा
 गुणसर्वेछे पणहमणातेवर्ततानथी तेनात्रणभेद जेपुर्वेश
 रीरहतुं पणहमणामरणपाम्युं जेमश्रीरीखवदेवस्वामिनुं
 शरीरजेमजबुद्धीपपन्नतिमारुप लक्षण गुण वखाएया तेम
 आपणेकहियेछिये वलीभव्यशरीरकेहेता हमणातेगुणम
 यनथी पणगुणमयेथाय जेमपद्मनाभतिर्थकरनुशरीरव
 खाणीयेतदवत् तथाद्रव्यातिरककेहेता जेणेगुणेवर्तेते प
 णहमणातेउपियोगवस्तुतानथी जेमरमणीकेहेतां स्त्री
 महाचतुरविचक्षण पोतानास्वामिसाथेक्रिडाकरवानीव
 खतेरमणिकेहेवाय तेवेसमेकोइकअपरचिंताउत्पन्नथंइ
 तेवारे रमणिपणानोउपियोगगयो तेवारेतेद्रव्यमाणिके
 हेवाय तदवत् अणउवियोगोदवो एटलेएअनुजोगद्वार
 सुत्रनुंवचनठे माटेउपियोगरहित तेनेद्रव्यनिक्षेपोकहिये

एटलेद्रव्यनिक्षेपोकह्यो ३

हवेभावनिक्षेपोकहियेछिये तेभावनिक्षेपानावेजेदछे ए
कआगमीक विजोनोआगमीक हवेआगमीककहेता जेआ
गमशास्त्रनोजाण वलीतेनाजउपियोगमाप्रवर्तेछे १ हने
नोआगमीकजावनिक्षेपोकहेता जेरुपेआत्मातदवतजआ
त्मानेउपियोगेप्रवर्तेछे अथवाजानितेज्ञाननेजउपियोगेप्र
वर्तेछे दर्शनितेदर्शननेउपयोगेप्रवर्तेछे एमजेजेगुणतेगुण
उपियोगसहितप्रवर्ततदरुपहोय तेभावनिक्षेपोकहिये
एटलेअनुजोगद्वारमाकह्युछे उबीउगोचावो एटलेउपियो
गतेजजावछे एटलेजावनिक्षेपोकह्यो ४

एजेचारनिक्षेपाकह्या तेमध्येत्रणनिक्षेपाधुरनाजेबेतेका
रणरुपछे अनेजावनिक्षेपोतोकारजरुपछे एटलेकारजवि
नाकारणनिष्फलछे जेमचक्रदडदोरो कुंभकार माटिनापं
डविनाघटथायनहि माटेएकारजविनानिष्फल जोमाटी
नोपंडहोयतो एकारणखपलागे तेमजावनिक्षेपाविनाधु
रनात्रणेनिक्षेपानिष्फलछे अनेभावनिक्षेपोनिपजताप्रथ
मनात्रणेनिक्षेपाप्रमाणे नहितरअप्रमाणे धुरनात्रणे
निक्षेपाद्रव्यनयमाछे एकभावनिक्षेपो तेजावनयमाछेमा
टेजावनयअणनिपजताद्रव्यादि प्रवर्तीतेनिष्फलछे तेश्री
आचारगजिनीटीकामध्येकह्युछे तेलोकविजयनामाअ
ध्ययननीटीकामध्येते तेलखियेछिये

फलमेवगुणफलगुण फलंचक्रियायाचवती सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रक्रियायास्त्वैकान्तिकनाबाधमुखारूपसिद्धिगुणो॥वाप्पतेएतद्दूक्तंभवतीसम्यग्दर्शनादिके॥वेक्रियासिद्धिफलगुण॥नफलवन्यपरानुंसंसारीकसुखफलाभ्यासएवफलाध्यारोपानीफलेइत्यर्थ॥

एटलेज्ञानदर्शनचारीत्रनी प्रणमनविनाजेक्रियाकरवी तेसर्वेफोकते अथवाजेथकीसंसारीसुखप्राप्तथाय एटले देवताइंद्रचक्रवर्ती वासुदेवराजाशेठसाहूकार पुत्रकलत्रादीसुखनिपजे एवीजेक्रियातेसर्वेनिष्फलछे एवीरीतेएपाठछे एटलेभावनिक्षेपानाकारणविनात्रणेनिक्षेपानिष्फलछे एटलेसंक्षेपमात्रनिक्षेपानोविचारकह्यो माटेअहियांशब्दनयतेत्रणेनिक्षेपाने अवस्तुजमानेछे एकभावनिक्षेपानेजवस्तुमानेछे तिनहं सदनियाणं अनथुएअनुजोगद्वारनुवचनछे तथाएकएकनयनासोसोनेदथायठे एमसातनयमलीनेसातसेनयनाजेदथायठे एअनुजोगद्वारथकी अधिकारकह्यो

हवेपुर्वकहेता पुठलो नयतेनोविषयघणोजाणवो अने तेथीलपल्योनयतेपरीमीतविषयछे एटलेथोडोविषयछेसत्तामात्रनोग्राहकसग्रहनयठे एटलेबतीसत्तानेसंग्रहनयग्रहेअनेनिगमतेगताभाव अथवासंकल्पपणु अथवाअवताभावसर्वग्रहे अथवासामान्यविशेषवन्नेग्रहे एटलेएनग्रनु

कोऽप्रमाणत्वेनहि अनेव्यवहारनयशक्तिविशेषनेजग्रहे
 तेमाटेसंग्रहनयथी व्यवहारनयनोविषयथोडोठे तथारजु
 सुत्रनयवर्तमानविशेषधर्मनोग्राहकछे अनेव्यवहारतर
 कालीकविषयनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहारवहूविषयठेअने
 व्यवहारथीरजुसुत्रअल्पविषयछे नेरजुसुत्रनयवर्तमान
 कालीशब्दनयकालादी वचनलिगथीवहेचताअर्थनेग्रहे
 अनेरजुसुत्रवचनलिगने चिन्नपाडतो नथी तेमाटेरजुसु
 त्रनयथीशब्दनयअल्पविषयठे अनेशब्दनयथीसर्वपर्या
 यनेएकग्रहे अनेसभिरुढते जेधर्मवक्ततेवाचकपर्यायने
 ग्रहेतेमाटे शब्दनयथी सभिरुढनयनो अल्पविषयछे
 तथासञ्जिरुढ तेपर्यायनेवधोयेकालगवेखेठे अनेएवभुत
 नयप्रतीसमीयेक्रियाजेठे भिनार्थपणेमानतोअल्पविषय
 ठेतेमाटे एवभुतअल्पविषयइजाणथी एनयवचनछे तेपोता
 नानयनेस्वरुपेअस्तीपणुछे अनेपरनयस्वरुपेनास्तीप
 णुठे एमसर्वनयनीविधी प्रतीवधेकरीने सप्तभंगीउपजेप
 णनयनी सप्तभंगीनउपजाववी एपुरवाआचारजियोये
 निखेदिछे

तथारत्नाकरावतारीकाया विकलादेशस्वभावा दिन
 यसप्तभंगीस्वश मात्रपरुपकत्वात् सकलादेशस्वभा
 वानुं प्रमाणसप्तभंगीसपूर्ण वस्तुस्वरुप परुपकत्वात्
 एवचनछे.

एटलेजथाजोग्यपणेएनयअधिकारकह्यो हवेपुर्वउत्तर
सामान्यसग्रहनाछभेदकह्यानहोतातेकहियेछिये एटले
एमुलसामान्यताठजेद तेसर्वद्रव्यमाव्यापिकपणेरह्याछे
तेनानाम आस्तित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३ परमेयत्व
४ सत्व ५ अगुरुलघुत्वं ६ एवढमुलस्वभावसर्वद्रव्यम
ध्येप्रणामिकपणेप्रणमेछे एधर्मनेकोइनोसाहायनथी ते
केहेता सर्वद्रव्यनेविपेउत्तरसामान्यस्वभावनीतत्व अनि
त्वादिक तथाविशेषस्वभावप्रणामिकत्वादिक तेनोआ
धारभुतधर्म तेधर्मनेसामान्यस्वभावकहिये आस्तित्वरु
पकहेवे तिर्यकरदेवे तथागणधरेजेगुणपर्यायआधारवंत
तेवस्तुपणेकहिये अर्थजेद्रव्यतेनीजक्रियाजथाधर्मास्ति
कायनीचलणसाहायक्रिया अधर्मास्तिकायनीस्थिरमा
हायक्रिया आकाशद्रव्यनीअवगाहनाक्रिया जिवनीउपि
योगलक्षणक्रियापुद्गलनीमलवाविखरवानीक्रियाएक्रिया
नोकारीपणो अर्थक्रियाजेपर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया
नोअधिकारीधर्म तेद्रव्यपणोकह्योछे तथावलीलक्षणांत
रकहेवे उतपादपर्यायनोजनकप्रसवशक्तिआवीरजावल
क्षणजेशक्ति तेनोवयभुतपर्यायनोतीरोजावथयो अथ
वाअभावथयो रुपजेशक्तिनोजेआधारभुतधर्मतेद्रव्यक
हिये स्वतेपोतेआत्मपरजेपुद्गलादिक धर्मास्तिकायादिक
अ नेज । ए ॥ तेनेज्ञानीकहिये तेज्ञाननापाच

भेदो तेजानुपियोगमात्रावे एवीजेशक्ति तेनेप्रणमीये
 पणुक्कहिये तेप्रणमीयेपणोसर्वद्रव्यनोमुलधर्मते तेप्रमाणे
 मेव्यजेवस्तुतेप्रणमीयपणोकहियेतेसर्वद्रव्यपर्यायप्रणमी
 येछे अनेआत्मानोज्ञानगुणतेमाप्रमाणपणोप्रणमीयेपणो
 एवेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोपोतेजकरेछे दर्शनगुणनो
 प्रमाणज्ञानगुणकरेछे एकारणेदर्शनगुणतेअविशेषछे सा
 व्येवडे जेसाव्येवहोय तेअविशेषजहोय जेविशेषतेज्ञान
 जाणीये दर्शनगुणतेसामान्यद्रव्यनाग्राहकते पणप्रमा
 णनास्वव्येवह्या त्याज्ञानजगृहेछे तेनुंकारणजेदर्शनउपि
 योगवक्तपडतोअर्थी तेनेप्रमाणमागवेख्योनथी.

हवेप्रमाणनाजेदलखियेछिये मुलप्रमाणनावेजेद प्र
 त्यक्ष १ परोक्ष २

स्पष्ट पत्यक्ष परोक्ष मन्यवत् इतिस्याद्वाढरत्नाकरवा
 क्यात्

एटलेउतपादकेहेताउपजवुवयकेहेतांविणसवुधुकेहेता
 नित्यपणो वस्तुमाएकसमेएत्रणोगुणसदायसाथेप्रणमेछे
 एवीजेप्रणमनतेसत्यपणोकहिये सत्यपणानोआवतेसत्य
 पणोकहिये.

हवेखटगुणीहाणीवृद्धिकहियेछिये अनंतजागहाणी १
 असंख्यातभागहाणी २ संख्यातभागहाणी ३ संख्यात
 गुणीहाणी ४ असंख्यातगुणीहाणी ५ अनंतगुणीहा

णी एतप्रकारनीहाणी.

हवेछप्रकारनीवृद्धिकहियेछिये अंतजागवृद्धि १
 अमख्यातजागवृद्धि २ संख्यातजागवृद्धि ३ सख्या
 तगुणीवृद्धि ४ असख्यातगुणीवृद्धि ५ अनंतगुणीवृ
 द्धि ६ एटलेएहाणीवृद्धि सर्वद्रव्यनेसर्वप्रदेशेछे एनु
 नामअगुरुलघुरवजावकहेवाय एअगुरुलघुपर्यायप्रणमे
 तेएकप्रदेशे वा अनेकप्रदेशेकोइसमे अनंतजागहाणीपि
 एप्रणमेठे कोइसमेअनंतजागवृद्धिपणेप्रणमेछे एववारे
 प्रकारेप्रणमेछे तेअगुरुलघुपर्यायनीप्रणमनशक्ति तेअ
 गुरुलघुत्वंकहिये एटलेअगुरुलघुनोभावजाणवो तत्वार्थ
 नीटिकानेविपे पंचमेअध्याये अलोकाकाशनोअधिकारठे
 त्याकहयुछे एठयेस्वभावसर्वद्रव्यनेविपेप्रणमेठे एछद्र
 व्यनोमुलस्वभावठे छद्रव्यतोप्रदेशनुभिन्नपणुअगुरुल
 घुनेभेदपणेथायछे तेमाटेएमुलसामान्यस्वभावछे एद्र
 व्यादिकधर्मछे एनो प्रणमनतेप्रजास्तीधर्मठे तथासा
 मान्यस्वजाववस्तुमाअनंतारह्याठे तथाअनेकातजयपता
 काग्रथने विपे सामान्य स्वजाव तेरकह्याठे तथा शा
 स्त्रने विपे विशेषस्वभावपणुअनेक प्रकारना कह्याठे
 अनेकग्रंथने विपेकह्याछे तथावारतीकसमुचयग्रंथअहि
 रीचद्रसुरीकृतमाप्रमाणस्वजावकह्याछे जिवनेजाणवाप
 णानीशक्तिआपआपणीतिज्ञानलक्षणजिवनुकहिये एव

चनउतराधेनजिमावेतथाअवश्यकनीर्जुक्तिनेविपे जिवने
 ग्राहकशक्तिकहीछे एटलेकर्ता जोक्तापणुपणजिवमावे
 उक्तच कर्तासएवजोक्ताइतिवचनात् लक्षणता १
 व्यापकता २ आधाराधेयता ३ जिन्व्यजनकता ४ एत
 त्वार्थटीकामध्येकह्याछे तथाअगुरु १ लघुता २ विभुता
 ३ कारणता ४ कारजता ५ कारकता ६ एशक्तियो
 नीव्याख्याविशेषावश्यकग्रथमध्येछेजाउकतथाअजाउक
 शक्तिनाग्रथश्रीहरिभद्रसुरीकृतभाउकं प्रकरणएमध्ये
 एमकेटलोकशक्तियोजेनतरक अनेकातजयपताका तथा
 सुमतिप्रमुखग्रथनेविपेछे तथाउर्ध्वप्रचयेशक्ति १ तरीज
 गप्रचीयेशक्ति २ उर्ध्वशक्ति ३ समुचीतशक्ति ४ एसु
 मतीग्रथनेविपेछे इत्यादिकअनेकशक्ति तथाअनेकरुप
 जेआत्माना तथाअनेकस्वभाव तथाअनेकलक्षण तथा
 अनेकगुणजेआत्मानाकह्यावे तेग्रथादिकशास्त्रजोयांथी
 समज्यामाआवे अथवावहूश्रुतनीसेवाकरे तेनामुखथकी
 सामलीनेसमज्यामाआवेतेकारणमाटेजेनेआत्मस्वरूपस
 मजवानीखपहोय नेधर्मरुचीहोय तेग्रथजोवानीखपकर
 जो नेवहूश्रुतनीसेवाकरजो एटलेजेज्ञानाउपियांगीहोय
 स्वस्वभावनीरमणतावालोहोय मंदकखाइहोय परभाव
 त्यागीहोय एवागुणवानगुरुहोय तेनीसेवाकरजो तोत
 मारुकारजथसे एटलेएनयअधिकारकह्यो एटलेअहि

याशब्दनयवालोसुतज्ञानवतउपयोगीने आत्मामानेछे
 माटेअहियासमजवानुएके शब्दादिकत्रणेनयमाधर्मर
 ह्युठे अनेत्यांतोआत्मानागुणजेमजेमप्रगटथाय तेमतेम
 उपरलीनयवालोतेनेआत्मामाने माटेआत्मानोस्वस्वचा
 वशुद्वउपयोगपणेग्रहणकरवो तेजधर्मठे एटलेअहियां
 ज्ञानगुणविसीष्टठे तेज्ञानस्वरूपसमजवावास्ते अहियां
 प्रमाणवतावीयेठिये तेप्रमाणनुस्वरूपकहियेछियेसकल न
 यनुस्वरूपतथासप्तजगीनुंस्वरूप तथा निक्षेपानुंस्वरूपत
 थापक्षनुंस्वरूपइत्यादिक जेजेप्रकारशास्त्रमाकह्याछे तेते
 रूपनेग्रहेतोसर्वधर्मनोजाण तेनेज्ञानकहिये तेज्ञानतेजप्र
 माणकहिये तेप्रमाणनाकरताआत्माठे तेनेजपरमात्मा
 कहिये तेप्रत्यक्षादिप्रमाण तेचेतनस्वरूपमांप्रणमेलाछे
 णामीतभवानधर्मथी उत्पादवयपणेप्रणमवु तेमाटेप्र
 णामीकठे एद्रव्यस्वभावछे एटलेआत्मापोतानास्वभाव
 राजप्रणमे तेनेसहेजआत्माकहिये परचावमांप्रणमेतेने
 वेभावीकआत्माकहिये.

हेवेसहेजआत्मातेपोतानास्वरूपपरमण अरुपीमुर्ति नि
 जन निराकार अनतज्ञानादिकगुणमय सदायरमणता
 स्वउपयोगी एवीरीतेजेवर्ते तेनेजिवत्वमुक्तकहिये एटले
 तेजिवमोक्षेत्रवश्यजाय तेमुक्तिनुंस्वरुपाकिचीतलखिये
 ठिये जेआचौदराजलोकठे तेनाउपरनोचौदमोराजलोक

तेनेछेडेसर्वार्थसिद्धनामाविमान तेविमाननीधजाथकीवा
 रजोजनउपरजइये त्यासिद्धसलाफटकरत्नमयछे तेम
 ध्येआठजोजनजामीठे ठेमेउतरतीउतरतीमाखीनीपाख
 जेवीरहीछेजेवुअमधाकोठनुआकारतेआकारेठे अथवाजे
 वोआठमनोचद्रमातेसरखेआकारेठे उपरपीसतालीसला
 खजोजनलावीपुर्वपश्चिमेछे दक्षिणउत्तरेपीस्तालीसला
 खजोजनथीत्रणगणीझाझेरीप्रधीपणेठे उपरनुतलीयुव
 पुमरखुंसमरमणिकछेजेवुवाघचरमखीलेलुसरखुहोय ते
 सरखुंछे अथवाजेवोजलनोआगउपरनोसरखोहोयअथ
 वाजेवुमादलनुपडुसरखुंहोय अथवाकाचसरखोहोय ए
 वीरीतेउपरनोभागसमोरमणिकछे घणुनिर्मलठे तेतलाथ
 कीएकजोजनउडीदआंगलनामापनु एटलेउचेअलोकछे
 तेजोजननातेविसजागनिचेनामुकीये त्यारेचोवीसमोभा
 गउपरलोरह्यो तेचोवीसमाजागध्येसिद्धपरमात्माठेतेअ
 लोकनेअडीनेरह्याछे शामाटेकेचोवीसमाभागे त्रणसेते
 त्रीसधनुपनेवत्रीसआगलनोछे अनेपाचसेधनुपनीकाया
 वालाउभाउआमोक्षजाय तेत्रिजाभागनीअवगाहनापी
 लारनाजागनीघटे त्यारेवेजागनीअवगाहनाघनरुपरहे
 तेअवगाहनायेसिद्धीवरे त्यारेतेवेभागनीअवगाहनाना
 त्रणसेतेत्रीसधनुपनेवत्रीसआगलरहे तेअवगाहनावा
 लोतेवीसजागउपरना आकाशप्रदेशनेचरणअवगाहना

फरसेनेमस्तकनी अवगाहनाउपरअलोकनेफरसे एटले
एचोवीसमोजागसर्वेसिद्धक्षेत्रछे

हवेत्यासिद्धीवरे तेनाशरीरनुमानकहियेछिये उतकष्टो
पांचसेंधनुपनीकायानोमानवालोसिद्धेजघन्यवेहाथनीका
यानामानवालोसिद्धे मध्यस्थअवगाहनावेहाथथीमांडी
नेजावतपांचसेंधनुपथीउणीएकप्रदेशहोय त्यासुधीमध्य
स्थअवगाहनाकहियेतेअवगाहनावालासिद्धेतेनेमध्यस्थ
अवगाहनाकहिये.

हवेएसिद्धक्षेत्रमांकेवीरीतेअवगाहनायोरहीठे तेकहि
येछिये जेअहियांउभांथकांमोक्षगयो तेनीअवगाहनासि
द्धमापणउभीछे वेठांगयोतेनीवेठीठे सुतांगयोतेनीसुती
ठेकोइचतोसुतो तथाकोइउधोसुतो तथाकोइपाशाचेरसु
तो तेनीतेवीजअवगाहनाठे अथवाकोइविकटाटिकआस
नेहोय अथवाकोइविप्रीतआसनेहोय तेनीतेवीजअवगा
हनात्यांहोय अथवाकोइखोडो पागलो कांइखोडवालो
होयतोतेनीतेवीजअवगाहनाहोय तेसर्वेउपरअलोकने
अडीनेरहे उंचेनीचीअवगाहना तेनिचलाजागमांरहेप
णउपरनाजागमांनहोय अहियांकोइप्रश्नकरशेकेज्यारे
अवगाहनातमेमानोठे त्यारेरुपघाटसेवसाव्रुतथायछे ते
नोउत्तरजे कांइपुद्गलन्यांछेनहि केरुपघाटथाय एतोएक
आत्मानाप्रदेश निरावणीजेअहिनाशरीरनी अवगाहना

हती तेआत्मानाप्रदेश तेप्रमाणेविस्तारिहता पणआश
 रीरमध्ये एकजागनीपोलारठे तेपोलारनोचागघटाडीने
 घनपणेकरी तेनेअवगाहनाकहियेठिये पणअहियांकाइ
 रूपपणुठेनहि एतोअरूपी अमुर्तिजछे नेजोकदापीरुपक
 हियेतोमोटोविरोधआवे शामाटेकेखटद्रव्यमा एकरूपीप
 दार्थतीपुद्गलठे नेपुद्गलमातोमलवाविखरवानोस्वभावर
 होछे तेस्वभावपणपाठेसिद्धनेविपे लेवोपडे त्यारेमली
 नेविखरवुशावितथयु त्यारेसिद्धपणेथीपाछुसंसारमाआ
 ववुथाय त्यारेसिद्धपणुनिष्फलथयु माटेएमोटोविरोध
 आवे अथवाज्यारुपरहे त्यावर्णादिकपर्यायपणहोयत्यारे
 तेपर्यायनीतोममेसमेहाणीथइजोइये त्यारेतोसिद्धनीप
 णसमेसमेक्षिणताथाय एपणमोटोविरोधआवे अहिया
 कोइप्रश्नकरशेजे सिद्धातमाएवुकह्युठे दवठीयाए सासी
 याए पजवठीयाए असासीयाए माटेपर्यायथकीक्षिण
 थाय तेपर्यायतोअसाश्वताठे तेमाकाइढोपणुठेनहि तेनो
 उत्तरजे सिद्धपरमात्मानेपर्यायथकी असाश्वताकहेवा.
 तेअपीक्षायकीछे पणकाइस्वभावथकीछेनहिअनेजोकदा
 पीस्वभावथकीकहियेतो महाविरोधआवे शामाटजेसि
 द्धानाज्ञानदर्शनादिकजेपर्याय तेनोशुकाइनाशथाय अथ
 वाशुकाइउठुवतुथाय कदापीजोनाशकहियेतो आत्मभा
 वनोनाशथाय नेजडभावथइजाय त्यारेतोनास्तीकपणु

आवेअथवा उंछुवतुकहियेतो शुएमनेकर्मपाठांवलग्या
 केमकेआवर्णविनातोज्ञानादिकगुण उंगवत्ताथायनहिक
 दापी अहियांकोइतर्ककरगेके ज्ञानादिकतोगुणछे तेने
 तमेपर्यायमांकेमकहोछो तेनोउत्तर केसिद्धांतमातोएने
 पर्यायकह्याठे ज्ञाननपजवाए दर्शनपजवाए इत्यादिक
 पाठठेमाटेज्ञानदर्शनादीकने पर्यायकहाने बोलाव्याछेअ
 नेजेद्रव्यगुणपर्याय कहियेछीये तेभेदज्ञाननीअपीक्षा
 लेइने वालजिवनेसमजवावास्तेठे शामाटेकेसीद्धातत
 थासुमतीप्रमुखग्रंथनेविपे नयोवेकह्याठे द्रव्यार्थकतथा
 पर्यायार्थक पणकाइगुणार्थकनयकह्योनथी माटेपदार्थवे
 जछेएकद्रव्य नेवीजोपर्याय त्रिजोपदार्थठेनहि गुणपदा
 र्थजोत्रिजोहोततोगुणार्थक नयकहेतापणएगुण तेतोद्र
 व्यपर्यायनुंउलखाणकरावारुपजुदोकहियेठिये पणएनुज
 नामपर्यायछे माटेअहियाज्ञानादिक जेपर्यायतेनीहानी
 वृद्धिथायनहि कदापीअहियाकोइकहेगेके खटगुणीहा
 णवृद्धिलागेठे तेनोउत्तरजे एपरअपीक्षावडेठे शामाटे
 जेजेजेज्ञेपदार्थजाणवादेखवामाआवेठे तेज्ञेपदार्थनोनाश
 अथवाउत्पत्ती अथवाहानीवृद्धिथाय तेथीज्ञानादिकगु
 णनीहानीवृद्धिनाशकहेवायठे तेपरअपीक्षायंठे पणकाइ
 पोतानुज्ञानदर्शन उंछुंवतुंथतुनथी जेटलुछेएटलुनेएटलुं
 जरहे माटेजेपर्यायअसाश्वताकह्या तेपरअपीक्षायेजाण

वाअनेएजेवर्णादिकपर्याय तेतोसडणपडणस्वभावनाथ
 णीछे तोतेपर्यायकाइमिद्वनेविपेछेनहि तेतोससारीनेवि
 पेरह्याठे माटेअहियारूपीपणुमानता महाविरोधआवेअ
 थवावलीविजेप्रकारेपणविरोधआवेछेतेसाभलोतेकहूछु-
 हवेजेसिद्धछे तेअनादिअनंतजागेठे एटलेएमसिद्धनी
 आद्यनथी केफलाणेदहामेंसिद्धथया तेमअंतपणनथी के
 अमुकेंदहाडेसिद्धससारनेविपेआवशे माटेअनादिकेहेतां
 आगेअनताअनंतपुद्गलपरावर्तनवहीगया नेअकेकापुद्ग
 लपरावर्तनमाअनंता कालचक्रवहिगयां एमआगलना
 कालनुंकोइरीतनुंप्रमाणबंधायनहि नेएककालचक्रनाचे
 जेद अवसर्पणी १ उसर्पणी २ तेअकेकानेदेअकेकीचो
 वीशीगणाय तेएकचोवीशीनादशकोडाकोमसागरोपमव
 र्पजायठे तेमापाचभरथ नेपांचअइरवर्ते एककोडाकोड
 सागरोपममामुक्तिकहिठे पणपांचमहाविदेहमांतोसदा
 यकालनिरतरमुक्तिते अनेआदशक्षेत्रथइनेतोएकमाहा
 विदेहनीविजयजेटलुतोछेनहिअनेत्यांमाहाविदेहमातोस
 टायमुक्तिचालतीठे तोएवीरतिमोक्षेजातांआगेअनंताअ
 नतकालवहिगयोतेथीअनताअनतजिवमोक्षगया नेमोक्ष
 क्षेत्रतोएपिसतालिसलाखजोजनमाठे तेकेमकरीनेमाय
 ज्यांरुपकहिये त्यातोपुद्गलादिकथयुंज त्यातोसंकडाश
 थाय नेतेजिवमुक्तिमामायनहि माटेएपणएकमोटोवि

रोधश्रावे माटेएश्रवगाहनाकहि तेअरुपिठे केहेवामात्र
छे शामाटेकेएकश्रवगाहनाजोसावुतरुपहोय त्यांविजि
श्रवगाहनापेशीशकेनहि अनेअहिंयातो ज्यांसिद्धपरमा
त्मानी एकश्रवगाहनाठे त्यांअनंतासिद्ध भगवाननी
श्रवगाहनाठे कोइआडी कोइउर्नी कोइवेठी कोइसुती
इत्यादिकरुपेरहीछे तेआकाशवत्ठे एकजाणपणारुपल
क्षणतेचेतनागुणठे तेथीसिद्धभगवानकहेवायठे पणत्या
कांइरुपादिकपदार्थएमनेविपेठेनहि एतोअरुपिपदार्थछे
हवेसिद्धनाजेगुणलक्षणठे तेकहियेछिये एटलेसिद्धप
रमात्माअरागीछे एटलेरागकेहेतांजे प्रेमदशातेथीरहि
त तेनावेचेद एकप्रशस्तराग १ विजोअप्रशस्तराग २
प्रशस्तकेहेता जेदेवगुरुधर्मसंबंधीराग नेअप्रशस्तकेहे
ता संसारादिकराग तेवंनेथकिरहितठे तथाअद्वेपीछे
तेनापणवेभेद प्रशस्त १ विजोअप्रशस्त प्रशस्तकेहेता
देवगुरुधर्मउपरखेदकरतोदेखी तेनाउपरद्वेपश्रावे अप्र
शस्तकेहेतां पोतानासंसारादिक कारजपणामाखेदकर
तोदेखी तेनाउपरद्वेपश्रावे एवाद्वेपथकिरहितछे अज्ञान
पणाथकिरहितठे तथामोहदशाजेमारुमारुकरवुं तेथंकि
रहितठेतथाआश्रवपणाथकिरहितठे एटलेआश्रवकेहेतां
जेनवाकर्मखेचीने आत्मसत्तामासंग्रहकरवो तेथकिरहि
तठेतथाअनंतुज्ञानछे अहीयांकोइं प्रश्नकरशेकेज्ञानतोए

कजछे नेतमेअनतुकेमकोहोछो तेनोउत्तर जेज्ञेपदार्थअ
नताठेतैप्रतेजाणैवे माटेअनतुज्ञानकहिये तथालोकअलो
करुपीअरुपीसर्वपदार्थनेजाणै देखेवे तेअलोकपणअन
तोछेतथापुद्गलप्रमाणु तथापुद्गलीकखंधतेपणअनताठेए
वाअनतपदार्थनेजाणै माटेअनतुज्ञानकहियेछिये

अिष्यवाक्य--स्वामीएतोपरअपीक्षावडे करीनेअनतु
ज्ञानठरंछे पणस्वभावीकज्ञानतोठरतुनथी जेमकोइएक
चादरनेविपेराइअमुखवस्तु नोगासडोवाधीलाठ्यो तेराइ
नादाणाअनेकछे तेथीएचादरपणअनेकठरेछे पणचादर
जोतातोएकजछे जेममनुष्यएकज तेअनेकपदार्थनेजाणै
देखेछे तेथीतेमनुष्यनाकाइमनपणअनेकनथया नेआ
रुयोपणअनेकनथइ तेमसिद्धपरमात्मानुज्ञान तेएकजठ
रेछे तेनोउत्तरजे आत्मानाअसख्याताप्रदेशछे नेप्रदेशे
प्रदेशेअनतुज्ञानवे तेपरअनुजाइपणेछे स्वअनुजाइपणे
सर्वप्रदेशेजाणवुवे तेजाणवानोस्वभावजोताएकजछेपण
परअपीक्षावडेकरीने अनतप्रकारनुजाणवुरहचु तेथी
अनतुज्ञानकहिये तेसर्वेउपमावाचछे माटेअनतुज्ञानज
कहेवु एटलेसिद्धपरमात्माअनंतज्ञानीठे तथासिद्धपरमा
त्माअनतदर्शनीछे एटलेअनतपदार्थनेदेखवेकरीनेअनंत
दर्शनीकहिये तेमर्वेपुर्ववतजाणवु अहियाकोइकहेशेकेचो
थुज्ञानजेमनपरजवतेनेदर्शनठेनहि तोकेवलज्ञाननेदर्श

नक्यांथकीथयुं तेनोउत्तरजे मनपरजवज्ञानछे तेविशेष
 उपयोगीछे शामाटेकेएएरुअवधीज्ञाननाभेदछे जेअवधी
 ज्ञानछे तेसर्वेपुद्गलोकभावरुपीपदार्थसपुर्णनेजाणेदेखेअ
 लोकविशेलोकलोकजेवमाअसंख्याता खांफवांजाणेदेखे
 अनेमनपरजवज्ञानतो अढीद्विपप्रमाणे मनोवर्गणानापु
 द्गलद्रव्यनेजाणे माटेअवधीज्ञानकरता मनपरजवज्ञान
 नोविषयअत्यंतअल्पछे अनेतेनेविशेषणरुपीपदार्थनुजाण
 बुद्धेखबुंठनेएनेविषेणरुपीपदार्थनुजाणवुठे तथाअवधी
 ज्ञानीपणमननापर्यायनेजाणेदेखेछे एअधिकारनगवती
 जिमाठे ज्यावेदेवताविमानीकेभगवानने मनथकीवांच्या
 पुण्याप्रश्नपुछ्यां नगवानेपणमनथकी उत्तरदीधा एवी
 रीतनो अधिकारठेतथाप्रत्यक्षपणेजेमनुष्यनीपासेदेवनुं
 आववुथायछे तेमनुष्यमनथकीदेवनेसमरेछे अथवामनथ
 कीकोइवातपुठे तेनोउत्तरदेवआपेछे माटेएमजाणवामां
 आवेठेके मनोवर्गणानाप्रदेशदेवनाजोयामांसारीरीतेआ
 वेछे एवातप्रत्यक्षमापणनापणथायठे तथासिधातमापण
 लेखठे तेथीएमजाणीयेछिये केअवधीज्ञानसर्वरुपीपदा
 र्थनोविषयछेतेमध्येथीमनोवर्गणानोअल्पविषयमनपरज
 वज्ञानथीनामसंज्ञाकहिने जुढोनेदपाफ्यांठे तेथीतेनेदश
 नगएधुंनथीपठीतत्वतोज्ञानीगमठे माटेसिद्धपरमात्मानेजे
 तेसामान्यउपयोगीछे अनेविशेषउपयोगी

तो ज्ञानछे एजिन जद्रगणीक्षमाश्रमणनेमतेउ तयासिद्ध
 सेनदेवाकरनेमतेतोभिन्नउपयोगमान्योनथी त्यातोएक
 समेवनेउपयोगकह्याछे तथासिद्धपरमात्मा अनंतचारी
 ज्ञानाणीछे एटलेचारीत्रकहेता जेज्ञानदर्शननेविपेथीर
 भावतेनेचारीत्रकहिये अहियाव्यवहारचारीत्रगवेखवुन
 हि व्यवहारचारीत्रतोपुद्गलीकजावछे एटलेव्यवहारक
 हेताजेपचमहात्रतादिकवहाजथकी पालवुपलाववुतेसंवे
 पुद्गलीकभावछे तेनेविपेकाइआत्मानुकल्याणवेनहि एपु
 द्गलीकभावनाशथयेजमुक्तिमले माटेअहियानिश्रय
 चारीत्रलेवु तेनिश्रयचारीत्रतेआत्मानोथिरजावजाणवो
 तेजचारीत्रसिद्धपरमात्मानेवे

वलीसिद्धभगवानने अनतुविर्यकह्युंछे विर्यहेहेताजे
 आत्मानीशक्ति ज्ञानदर्शननेविपे स्थिरतापणेविस्तरेली
 जठे अहियापुद्गलविर्यजाणवुनहि एटलेपुद्गलीकविर्य
 थकिसिद्धजगवानरहितछे अनतमुखमयकेहेताजे ज्या
 याधिकेहेताजेमननी चिन्ता व्याधिकेहेताजेशरीरनारी
 गादिक तथाक्षुधावेदनी तथासातजयप्रमुखअनेकरितना
 ससारमादुखछे तेदुखथकिरहितययातेजसुख वलिसि
 द्जगवानअनततपनाश्रणीवे तेसदायकालज्ञानदर्शनमा
 रमणतारुपठे तथाअनतउपयोगीछे एटलेज्ञानदर्शननी
 उपयोगअनताज्ञेपदार्थनेविपे प्रवृत्तिरह्योछे तथाशुद्ध

ठे अज्ञानभावप्रमुखशुद्धतागच्छे माटेशुद्धकहिये त
 थाबुधकहिये एटलेबुधकेहेताजेक्षायकभावे ज्ञानदर्शन
 प्रगटलुछे तथाअवनासिकहिये एटलेअवनासिकेहेता
 हवेकोइकालेसिद्धक्षेत्रथकिनाशथवानोछेनहि अजकहि
 ये अजकेहेताजे हवेकोइकालेजन्मलेवोठेनहि अनेत्याप
 णकाइजन्मलीधोठेनहि जेवाअहिथीअसंख्यातप्रदेशनि
 मलथडनेगया तेवाजत्यांप्रगटपणेस्थिरभावेरह्याठे त
 थाअनादिते एटलेआद्यजेनीठेजनहि तथासिद्धअनंतठे ए
 टलेएकएवाअनताठे तथाअक्षयछे एटलेकोइकालेसि
 द्दपणानोक्षयथवानोछेजनहि तथाअक्षरछे एटलेकोइका
 लेसिद्धपणामांथीखरवानाठेनहि तथाकोइप्रदेशपणख
 रीपडेनहि तथाकोइगुणपर्यायपणखरेनहि माटेअक्षरक
 हिये तथाअणअक्षरठे एटलेअकारादिकअक्षर तेमाएरु
 पआवेनहि एटलेअक्षरादिकथकिरहितठे त्यांकोइकहेशे
 के सिद्धअथवामुक्तिजेकेहेशो तेतोअक्षरसहितठे नेतमे
 अणअक्षरकेमकहोछो तेनोउत्तरजेसिद्धअथवामुक्तिइत्या
 दिककहिनेबोलाववुं तेतोअहियाससारीनेउचारणकरवा
 नीसंज्ञाछे पणत्यानुंतोरुपबंधायनहि अनेत्याकाइनामा
 दिकठेनहि माटेअणअक्षरजकहिये तथाअकलठे ए
 टलेएकोइनाकळवामाआवेनहि एकज्ञानिजएनेजाणे वी
 जानाजाणानआवे तथाअचलठे एटलेएकप्रदेशआ

कीरहितमाटेअवधकहिये तथाअणउदयकहियेएटलेक
 र्मकाइछेनहि माटेउदयशानोहोय तेथीअणउदयकहिये
 तथाअणउदारीककहिये एटलेकर्मविनाकाइउदारीणाक
 रवीहोयनहि तथाअजोगीकहिये एटलेमनजोग १ वच
 नजोग २ कायजोग ३ एत्रणेजोगना १५ भेदवेतेसर्वे
 जोगथकीरहितवे माटेअजोगीकहिये तथाअजोगीकहि
 येएटलेपांचद्रिना तेवीशविपय तेमाहेलोएकेविपयत्या
 ठेनहि तथाइद्रियोपणत्याठेनहि तथामननोभोगपणछे
 नहितेथीरूपीपदार्थत्याकोइठेनहि तेथीअजोगीकहियेत
 थाअरोगीकहिये रोगजेवातपितकफप्रमुखतेशरीरहोय
 तेनेथायत्यांतोकाइ शरीरछेनहि माटेअरोगीकहिये तथा
 अजेदीकहियेएटलेजेअसख्यातप्रदेशरुपआत्मानोजेघन
 ठेतेनेकोइजालाप्रमुखेजेदेकहेताविधे एटलेछिद्रपाडवुठ
 र्युतेकाइपडेनहि सदायअभेदीठे तथाअछेदीकहेताजे
 घनमार्थीकोइकडकोजुदोपामयेचाहे तेकाइकोइकालेप
 ढेनहि तथाअवेदीकहेताजे पुरुषवेद १ स्त्रिवेद २ नपु
 षवेद ३ तेत्रणेवेदेकरीनेरहीतछे तथाअखेदीकहेताजेजे
 कारजकरता थाकलागेतेनेखेदकहिये तेमाहेलुत्याकाइ
 कारजकरबुकराववुठेनहितेथीअखेदीकहियेतथाअकखाई
 कहिये कखायकहेताजेक्रोधादिक तेनाचारभेद क्रोधक
 हेतांजेतप्तपरिणाममानकहेताजेअभिमान तेनेजगत्रमद

कहेते तेनाआठजेदवे जातमद १ कुलमद २ बलमद ३
रुपमद ४ धनमद ५ इश्वरीयमद ६ ज्ञानमद ७ तप
मद ८ इत्यादीकअनेकजेदएमदअहंकारनावे तथामाया
कहेताजेकपटस्वअर्थकरे परअर्थकरे तथास्वजावेपणक
पटमाजरम्यकरे लोभकहेताजेतृप्ना धननी राजनी पु
त्रनी स्त्रिनी जसकीर्तिनी आभवनी परभवनी एसर्वेनेतृ
प्नाकहिये एक्रोधादिकचारेनेकखायकहिये एवाचारेक
खायथकीरहित तेनेअकखाइकहिये एटलेएसिद्धभगवा
नअखाइजछे तथाअसखाइकहेता जेसिद्धभगवान
सखाइकहेता कोइनीसाहाजकरेनहि एटलेजेमुक्तिग
यातेनीकोइजिवआशाराखे जेमहारुकारजकरे तेसर्वमि
ध्यावे सिधजगवानअहियाआवेपणनहि नेकोइनुंकारज
करेपणनहि त्यावेठापणकोइनुंकारजकरेनहि एतोपोता
नास्वभावमास्थीरभादेछे माटेएमनेअसखाइकहिये अथ
वाविजोअर्थजेअसखाइकहेता एविजाकोइनीसाहाजेसि
धरह्यानथी अनेकोइनीसाहाजथकीसिद्धथयानथी एतो
पोतानीआत्मशक्तियेजसिद्धथयाछे नेपोतानीआत्मश
क्तियेजस्थीरजावेसिधनेविपरह्याछेअहियाकोइनीसाहा
जखपलागतीनथीकोइनीसाहाजथकीपूर्वेसिद्धथयानथी
हमणापणकोइनीसाहाजथकी कोइसिद्धथतानथी आवते
कालेपणकोइनीसाहाजथकीसिद्धथवानानथी अहियातो

एकश्राद्धशक्तिस्वपलागेते माटेअसखाइजकहिये वली
 अलेसीठे एटलेलेइयाकहेता क्रश्लेइया १ निललेइया
 २ कापांतलेइया ३ तेजुलेइया ४ पद्मलइया ५ शुक्कलेइया
 ६ एछेलेइयाय फीरहिते माटेअलेसीकहिये तथाअग
 रीरीकहेता उदारीक १ विक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४
 कारमण ५ एपाचेशरीरेकरनेरहित माटेअशरीरीकहि
 येतथाअणाहारीकहेता कवलहारकहेता जेकोलियोवा
 लीनेमुखमांधरे १ रोमाहारकहेता रोमरोमथकीप्रण
 मे २ उनाहारकहेता मर्जावासप्रमुखजाणवानुं इत्यादि
 कआहारेकरनेरहित तेनेअणाहारीकहिये तथाअव्या
 बाधकहेता जेबाधापीमारहित तथाअणअवगाहकहेता
 जेअवगाहनाजेशरीरनीमंसारमानोखीनोखीठे तेसक्षेप
 थीकहियेछिये प्रथवीआदिकचार थावरनीआगलनेअसं
 र्यातमेभागेछे वनरूपनिनीहजारजोजननीठे बेरद्रीनी
 चारजोजननी तेरद्रीनीत्रणगाउनी चौरद्रीनीचारगाउनी
 त्रिजचपंचद्रीनीआगलतोअसख्यातमोभाग उतकष्टीहि
 जारजोजननी नारकीनीपाचसेधनुपनी देवतानीसातहा
 थनी मनुष्यनीत्रणगाउनी एवीचारपनवणासुत्रथकीजो
 इलेजोड्थादिकअवगाहनायेकरिरहित तेनेनिरअवगा
 हनाकहियेअहियाकोइकहेशेकेसिद्धनीअवगाहनाजघन्य
 वत्रिशआगलनीउतकष्टी त्रणसेतेत्रिशधनुपनेवत्रिशआं

गलनीठे नेतमेअणअवगाहिकेमकहोछो तेनोउत्तर जे
 त्याकाइपुद्गलीकअवगाहनठेनहि नेत्यांजेछेतेनोआत्मी
 कअवगाहनाठे तेएकअवगाहनात्यांअनंतीअवगाहनाउ
 रहिठे माटेएअवगाहनातोकहेवामात्ररहीठे नेपुद्गलीकअ
 वगाहनामांएकमांवीजिसमाधनहि अहियांकोइकहेशेजे
 मनुष्यतथाजनावरनाशरीरनेविपेकीडाप्रमुखपडेछे माटे
 विजिअवगाहनाउ समायकेनहि तेनोउत्तर जेमनुष्यत
 थाजनावरनेविपेकीडापडेछे तेतोअल्पशरीरीठे नेरोगा
 दिककारणेपडेछे माटेकांइमनुष्यमांमनुष्यपदतांनथी ने
 जनावरजनावरमापडतांनथीनेस्त्रिआदिकगर्जधरेठे तेतो
 गर्जनोकोठोन्यारोजछे गर्भस्थीतिपुरीथये प्रसवथायमा
 टेएअवगाहनामाअवगाहनाकहेवायनहि माटेएतोस्थी
 तियाजावछे माटेअहियापुद्गलीकजावमा विजिअवगाह
 नासमातीनथी नेसिद्धजगवाननेतोएक सिद्धनीअवगाह
 नात्यांअनंतासिद्धनीअवगाहनारहीछे माटेएअवगाहना
 गणायनहि तेथीसिद्धजगवानअणअवगाहीछे तथावली
 अगुरुलघुकहेता खटगुणीहाणवृधिअथवाहलवोचारे ए
 सर्वव्यवहारनयेकरीने सिद्धजगवाननेकहियेछिये शामा
 टेकेस्वअपीक्षायेठेनहि परअपीक्षायेलाधेतेविचारसर्वसु
 मतीग्रथकीजाणजों तथाअप्रणामीकहेता कोइगतिआ
 दिकविशेप्रणमवानोस्वजावठेनहि माटेअप्रणामीक्रि २

तथाअतिंद्रियकहेता श्रोतडंद्रि १ चक्षुश्द्रि २ घ्राणइंद्रि
 ३ रसइंद्रि ४ फरसइंद्रि ५ एडंद्रिघोयेकरीनेरहिततेने
 अतिंद्रियकहिये तथाअप्राणीकहेतां पाचजेइद्रिपूर्वकहीते
 मनोबल १ वचनबल २ कायबल ३ स्वासोस्वास ४ नेआव
 खु ५ एदशप्राणथकीरहिततेनेअप्राणीकहिये तथासिद्धन
 गवाननेनोप्रजाप्तीकहिये एटलेप्रजाप्तीकेहेतां आहार
 प्रजाप्ती १ शरीरप्रजाप्ती २ इद्रिप्रजाप्ती ३ स्वासोस्वास
 प्रजाप्ती ४ नापाप्रजाप्ती ५ मनप्रजाप्ती ६ एठप्रजाप्तीथ
 कीरहिततेनेनोप्रजाप्तीकहियेतथाअयोनीकेहेतांमनुपत्री
 जचनीआवलीपत्रतथाकाचवादिआकारेयोनी तथादेव
 तानारकीनीउतपातयोनी समुच्छमनीअनेकजातनीयोनी
 तेयोनीमाजेनेप्राप्तनथीथावु तेनेअयोनीकहिये तथाअ
 ससारीकेहेता संसारजेदेवतामनुप त्रीजचनारकीएच
 रगतीसंसारथकीरहित तेनेअससारीकहिये तथाअप
 केहेतामसारस्वरुपथकीनोखा तथाअपरंपारकेहेताजेने
 पारनपामीये अव्यापीकेहेता ससारादिकनेविषेव्या
 नहि अकपकहेताजेवायु प्रमुखेकपेनहि अविरोधीकहे
 कोडजिवसायेविरोधछेनहि अनाश्रवकहेताजेशुभाशु
 पुन्यपापठेनहि अहिशाप्रमुखपणआश्रवछेनहि तथा
 ढारेपापरुथानथकीरहीतयथाठे तैयीअनाश्रवकहिये अ
 गीकहेता कोडपुद्गलादिकनोसगठेनहि अनाकारकहे

परीमदलप्रमुखस्वस्थानएकेउनेहि इत्यादिकअनंतगुणे
 करीविराजमानएवेलक्षणेसहित तेनेसिद्धपरमात्माकहि
 येहवेअहिंथकीसिद्धजेथाय तेकेवीरितेथाय जेचौदमागुण
 ठाणाभेअंतेउठिन्नक्रियाप्रतिपातोध्यानकरतोसइलेसीक
 रणकरीनेसिद्धेएटलेपुर्वेआठगुणआत्माना तेआठकर्म
 दाबेलाछे तेथकीछुटेतेनुंनाममुक्तिकहिये तेआठगुणना
 नामकहियेछिये ज्ञानगुणतेज्ञानावर्णिकर्मदाव्योबे १ द
 र्शनगुणतेदर्शनावर्णिकर्मदाव्योछे २ अव्यावाधगुणतेवे
 दनीकर्मदाव्योछे ३ जावचारीत्रक्षायकभावनुंतेगुणमोह
 नीकर्मदाव्योछे ४ अचनाशीगुणतेआयुकर्मदाव्योछे ५
 अरुपीगुणतेनामकर्मदाव्योछे ६ अगुरुलघुगुणतेगोत्र
 कर्मदाव्योछे ७ विर्यादिकगुणतेअंतरायकर्मदाव्योछे ८
 तेआठकर्मआठगुणदाव्याबे तेआठकर्मनेद्रव्यकर्मकहि
 येतथारागद्वेषतेजावकर्मकहिये तेकर्मथकीछुटेतेनेमुक्ति
 कहिये तेजिवकर्मथकीमुक्काइनेसिद्धक्षेत्रमांसिद्धीवरे.

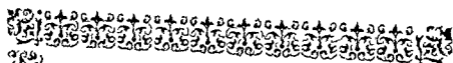
शिष्यवाक्य--केस्वामी एजिवकर्मथकीमुकाणोत्यारेके
 नाजोरथकीनिद्धसुधीजाय केमकेअहियातोजिवनेगती
 आदिकनेविषे आनपुरवीछे तेखेंचीजायते अनेअहिया
 तोकोइप्रेरकठेनहि नेप्रेरकविनासातराजउचोकेमकरीने
 चडे तेनोउत्तर केपुर्वप्रयोगकहेता जेअनादीकालनो
 एजप्रयोगजवाआववानोते तेथकीकरीनेजाय तथा बी

जे प्रकारे गती प्रणमन कहेता जे ते गती माजवुठे जथाकुला
 लचक्रधत एटले कुभारनोचाकरो प्रथम फेरवीने पठीदंडप
 डतो मुके तोयपण तेचाकरो तेनीमेले फरघाजकरे तेमजिव
 ससारगती आदिक थकी छुटोछे तोयपण गती प्रणमननेली
 धेचाल्यो जाय तथात्रिजे प्रकारे बधन वेदकहेता जे बधन थ
 कीछे दाणो जेम एरडानुची ज एरडानुफलफाटेके एरडानु
 बिजडे चुचाले तेम अहिया कर्मबंध थकी छुट्यो एवो आत्मा
 उंचोचाल्यो जाय तथाचो ये प्रकारे असगक्रिया कहेता जे
 म अग्निनो धुमानोछे ते धायुरहित सखाव उंचोचाल्यो ज
 जाय तेमजिवने अनादिका जनी असगक्रिया ये उर्धगती
 जवळजठे तेथी उंचोचाल्यो जाय एरीते सिद्धगती मांजाय
 शिष्यवाक्य--स्वामी चौदमुगुण ठाणु अक्रियछे तोचौद
 मेगुण ठाणुथी एवीक्रियाके मकरे के मातराज उंचो जाय ते
 नोउत्तर जे सिद्धतो अक्रियजठे परंतु पूर्ण प्रेरणाये जाय तेजे
 मतुवडुठे तेनी उपरवहू घतिका प्रमुखनो लेपदे इने दहाने
 तली घेनाखिये तो एलेप बोवाइ जाय त्यारे तुंबडुपाणीनी उ
 परज आवे एतुवडानो स्वभावठे तेम आत्मा कर्मनालेप थ

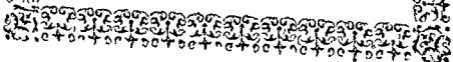
नगयो तेनोत्तर जेअलोकनेविपे धर्मास्तीकायतेनहि
त्यारेत्यांचालताने साहाजकोणआपे माटेप्रेरककोइनहि
तेथीनगयो अथवाकोइकहेशेके त्यारेनिचोकेमनपड्यो
तेनोत्तर जेजारेहोयतेनिचुंआवे नेएतोआत्माकर्मरुप
भारथीरहितथयो एटलेहलकोथयो तेनिचोशाथकीआ
वे अथवाकोइकहेशेके त्याडाजोमणोत्रीछो आघोपा
छोकेमनजाय तेनोत्तर जेएतोचेतनअकपछे तेकांइवा
युथकीहालेचालेनहि अथवाकोइप्रेरणाकरतापणनेनहि
जेकर्महोततोप्रेरणाकरत अथवाअचलछे एटलेपोताना
आकाशप्रदेशजेफरसेलाठे त्याथकीचालीनेआघोपाछो
जायनहि आमाटेकेसिद्धभगवानअक्रियछे माटेक्रियाव
नाएवधुकारणवनेनहि नेअहियातोक्रियानोनाशकरीने
सिद्धीवरचाछे माटेएकामनवने अथवाकोइकहेशेकेसिद्ध
नेकर्मकेमनलागे तेनोत्तर जेकर्मतोअज्ञानजोगथी
लागेठे अनोसिद्धभगवानेतोअज्ञानजोगनाक्षयकरयाठे ते
थीकरीनेकर्मकोइलागेनहि एटलेएवुंजेसिद्धक्षेत्रतेनेविपे
आत्मासिद्धपदनेपामे अनेएवाजसिद्धपरमात्मानागुणक
ह्यातेवाजसर्वनाआत्मानाछे तेआत्मीकगुणनुंस्मर्णध्यान
जेकरेतेपोतेसिद्धपरमात्माथायएवातमासदेहराखवोनही
॥ दुहा ॥ सुक्ष्मबोधविणजिवने नहिआत्मअनुभव॥ते
कारणएवरंणव्यो सुणीलेजोतमेभव्या॥१॥आत्मचिंताव

रणवी वरणव्योसुक्ष्मबोध॥ हेज्ञेनेउपादेय एत्रणेनोक
 रीशोध॥२॥ शुभाशुभदशावरणवी त्यागविकहिनिरधार॥
 शुद्धभावतेआदरो निजस्वरुपसुखकार॥३॥ जेदज्ञानअ
 हिनावरणव्यो जडचेतनविभाग॥ गुणपर्यायतेमजाणि
 ये द्रव्यसघातेजाग॥ ४ ॥ नयोसातेवरणवी बहूग्रथअनु
 सार॥ दोषप्रकारएहमाकह्या समजोचतुरविचार॥ ५ ॥

वञ्चरे तेविसकारतगमास ॥ शुक्लत्रयोदशीजाणिये चोम
 वारसुखवास॥१६॥एहग्रंथपुरणहूवो संघनेअतिआनंद॥
 मुजमनपणआणंदघणो प्रगट्योसुखनोकंद॥१७॥मोदी
 कपुरमोटकु बहुश्रावकनोवास॥ तेहतणेआग्रहेकरीकिधु
 अहियाचोमास॥१८॥श्रोताव्यक्ताबहुवसे श्रावकमुन्यप
 वित॥तेहतणेआग्रहेकरी किधोग्रथएनित॥ १९ ॥हूकम
 माथेचढावियो जिनवरकेरोसार॥तेहनांवचनअनुसारथी
 नारुणोएहविचार॥२०॥हूकममुनीनोमानशे आदरशेए
 ग्रथ ॥ सुखशाश्वतापामशे होशेशिववधुकंथ॥ २१ ॥



॥ इति श्रीआत्मचितामणीसपुर्ण॥



श्री चिदानंद बत्रीशी.

नाथकेसेपरघररमणसोहायो एअचरिजमोयेआयो
 ॥नाथ० १॥ मिथ्याअव्रतकपायेकरीने जोगअशुद्धमि
 लायो॥बंधउदेउदिरणाकरीने श्रद्धाशुद्धनपायो॥ना०१॥
 अवलीप्रणतीरागद्वेपनि वलीअचरणमनलीयो ॥ तेथी
 परघररमणकरीने निजस्वरुपनपायो ॥ना० २॥ बहूवि
 धमरणअनंतकरीने त्रसथावरभमायो ॥ अबश्रद्धाआग
 मसुलहीने हूकमनिजघरआयो ॥ना० ३॥ पदपेहेलुसंपू
 र्ण ॥१॥ नाथकेसेनिजघररमणसोहायो एअचरीज
 मनभायो॥नाथ०॥सदबुधमीत्रमलयोजवआई तेहनेस्वरु
 पसूणायो ॥ तववृतंतमूलथीतेजाणी चीतचमत्कारपायो
 ॥ना० १॥ निद्रापरमाददुरकरीने आपसुआपजगायो ॥
 निजज्ञानदशालीधीसंभारी तवमिथ्यातदुरेजायो ॥ना०
 २॥ ओलीप्रणतिसोसवथईप्रणमी श्रद्धासेहेजसोहायो॥
 तमहूकमशुशीवसूखलहिये सेहेजेनिजघरपायो ॥नाथ०
 ३॥पद२ संपूर्ण॥ तुहीहेतुहमारोअनूजव ॥चाल॥ अबधू
 एहीज्ञानहमारो जासुअनुभवहेप्यारो ॥अबधु०॥ वस्तु
 गतेरह्योजेधर्म सोहीधर्महमारो ॥ ओरकाजबोडीकरीरे
 उनमेखेलेप्यारो ॥अ० १॥ बहिरअंतरनेवलीपर्म आत्म
 परनितीतीन ॥ देहादीककोभरमरह्योजीहां सोबहीरा

२ ॥ परमापेसतसूखनहीपावत जेहथीवहुजजाल ॥ आ
 पसंभालतदीसेवीरला मुनीहूकमकहेतेधार ॥चेतन० ३
 संपूर्ण ॥ ॥ पद ७ रागवेलावल ॥ कयासुवेतुजागवाव
 रा जमताक्युंकहावेरे ॥ चेतनकहावतधरतउमेद तोसर
 दाशुद्धसोहावेरे ॥क्या० १॥ पंचज्ञानखटद्रव्यकुजाणे गु
 णपर्यायेमनआणेरे ॥ स्यादवादद्रष्टिसुदेखत नयनिक्षेप
 प्रमाणेरे ॥क्या०२॥ पक्षप्रमाणखटकारकउनमा एमअ
 नैकजंगतुरंगरे ॥ मुनीहूकमकहेजेएजाणत सोहीसरदा
 सुरंगरे ॥क्या०३॥ पद७ संपूर्ण ॥

॥पद ८ ॥ रागविलास ॥ आजगइतिसमोवसरणमां
 ॥राग॥ चेतनकयातुंपरसंजारे निजद्रव्यकुंसजालोरे॥आं
 कणी॥ निजघरवहेसोसजातिजाणो अनंतगुणेतेचरीयो
 रे ॥ स्यादवादद्रष्टितेजोता संभुरमणतेदरीयोरे ॥ चेतन
 क्या० २ ॥ द्रव्यजावनिश्रेव्यवहारो एमअनेकभेदज्यां
 हुतरे ॥ मुनिहूकमकहेजेएजाणत तेजहेपरमपदसतरे॥
 चेतन० ३॥पद८संपूर्ण॥ ॥ पद ९ ॥ रागजेरव ॥आ
 जतोवधाइ ॥ एचाल ॥ चेतनकयातुकरेपरआशा गोडीदे
 एहवीपासारे ॥ चे० ॥ परआशासेपुद्गलपेसत देखतलो
 कतमासा ॥ निजधणीकानामनजाणत एहीवडाउदासा
 ॥ चे० १ ॥ विजातितुंक्यारेविचारत एहीपुद्गलपासा ॥
 निजस्वरुपरमताचेतनमां सेहेजेहोतखुलासा॥ चे० २ ॥

निजघणीकेपासेरहीके उरसुकहाकरनावाता ॥ मनउ
 लासप्रगट्योजेअनुभव सोतो नहिरहेछाता ॥ चेतन०३
 चिदानंदकीमोजमर्चाजव उरकीकुनकरेश्राशा ॥ मुनिहू
 कमकहेनिजघर आपहिचिदानंदकरतुहेवासा ॥चे०४ ॥
 पद९ सपूर्ण ॥ ॥पद१०मु ॥ रागप्रजाति ॥ चेतनक्या
 तुंपरमेपेसे अल्पकालजाणतहेआपको ॥उरसुखकुणले
 शे ॥चे० १ ॥ जोचितेतोकरलेसजाइ प्राश्रितआलोयण
 पेली ॥ पर्छीसझायध्यानतेकरिये काउसगरसेसेहेली
 ॥ चे० २ ॥ जोचितेतोएणीविधकरले उरसेनहिहेतुजका
 ज ॥ मूनिहूकमकहेतेजनपामत सेहेजेशिवसुखराजरे ॥
 चे०३॥पद१०संपूर्ण॥पद११मु॥दूहो॥ एहीगुरुएहीचेला
 एहीदेवनकादेव ॥ उरकाजगेमीकरी कीजेउनकीसेवा॥१
 ॥ रागआशावरी ॥ अबधुक्यातुंअनुभवपुछे निजचिदा
 नंदनहिवुजे ॥ अ० ॥ चिदानंदकीवातनजाणत उरकीक
 रतहेआशा ॥ उरतेरेकुंक्यावतलावुं एहीबडाहेपासा ॥
 अ० १ ॥ निजघटमेचिदानंदकीसे सर्वगुणेतैजरीयो ॥
 भेदज्ञानकीकरेविविक्षा सेहेजेभवजलतररीयो ॥ अ०२॥
 क्षयउपसमवडानहिजेहकु पणजोएहनेजजशे ॥ मूनिहू
 कमकहेतेहनेरे सेहेजेभवजलतरशे॥अ०३॥पद११सपूर्ण
 ॥ पद १२ मु ॥ वादलसेसुरजकुडंकत ॥ राग ॥ हरेइहा
 ॥ १० ॥ सोचवपारनपावे ॥ ह० ॥ सवहिआ

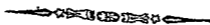
हारकिशातापुच्छे मोहेवसमनजेहनुं॥निजचिदानंदअंतर
 खेले तिहांआहारनचिनुं ॥ह० १॥ वाहाजआहारतेपुद्गल
 लेवे सोतोपुद्गलउपासी ॥ अंतरआहारचेतनलेवे सजा
 यध्यानमनवाशी ॥अ० २॥ याविधआहारविवीक्षाकरे
 जेलेशेएआहार ॥ मुनिहूकमकहेतेहनेरे सेजेनवजलपा
 रा॥अ० ३॥पद १२सपुर्ण॥ पद १३ मुं ॥ वाढलसेंसुरजकुं
 ढकत ज्युकर्मचेतनकुरे ॥ तेमतरियाजोगकुंखप्त उरलो
 केध्यानमनकुरे॥१॥ उरलोकनसेध्याननहोवे ध्यानएकांते
 कहियुरे ॥ ध्यानतणिजोकरेरेविवीक्षा तोभेगीमतकरस
 इयुरे ॥ वा० २ ॥ कविपणएकातरहिने करेकवितारुडी
 रे ॥ मुनिहूकमकहेसुणोभाइसंतो एमतनहिछेकुडीरे ॥
 वा० ३॥पद १३सपुर्ण॥ ॥ पद १४मुं ॥ रागगोडी॥चेत
 नक्यातुंमनदोडावे एसुदुरगतिपावे ॥चे०॥ एमनछेपु
 द्गलकाघरको सोहिविजातीजाणो॥विजातीकोसंगकरण
 सु कालअनादिगमाणो ॥चे० १ ॥ तोपणतेरेकुलाजन
 आवत हजिमननसमारो ॥ अवसुचुफ्योफेरहिचेतन ज
 इसंसारभमारो ॥ चे० २ ॥ तेमाटेमनवशकरराखो ज्युं
 शीवसुखफलचाखो ॥ मुनिहूकमकहेसुणोभाइसंतो ए
 उपदेशमेदाखो॥चे० ३॥पद १४संपुर्ण॥ ॥ पद १५मु ॥
 ॥ रागगोडि॥चेतनक्यातुमनदोडावे जेहसुंअप्पानपावे॥
 ॥चे०॥ द्रव्यगुणपर्यायिकुजाणत भेदाभेदसवध ॥ नयन

खेपप्रमाणतुजाणत वलिस्वादादसबंध ॥ चे०
 पक्षखटकारकादिकसोजाणे निजबुद्धिनेअनुसारि ॥
 पणध्यानकरिसकेनाहिरे तोमनकेमनवारि ॥ चे० २ ॥
 शथीचिदानदप्रगटे निजघटमेहोयदिवो ॥ मुनिहूक
 सुणोजाइसतो एहिअमृतकरीपीयो ॥ चे० ३ ॥ १५ सं
 ॥ पद १६ मु ॥ रागकेरवो ॥ पीयाविनकेसेरहूमें
 लाएकंजडीनार ॥ पियातुमजिसदिनगयाविदेसे
 वरनहिपाये ॥ पी० १ ॥ जुरतजुरतवहूकालवितो
 नहिरतकोइ ॥ पी० २ ॥ सखिहमारीहांसिकरति
 तुमकेमनकेलाय ॥ पी० ३ ॥ अबतुमनामसमरा
 मोये त्तियाफीटफीटजाय ॥ पी० ४ ॥ सासरी
 साजनकिधि पिउपणमनसुभुलाये ॥ पी० ५ ॥
 कमकहेधीरजराखे अबतेरेकुबोलाये ॥ पी० ६ ॥
 ॥ पद १७ मु ॥ पीउसेमेकेसेकरुरे उरघरमेजेज
 एकलनीमेघरमेरहेति तरुएअवस्थापाय ॥ पी०
 रीरेटेखीठीदरदेखे ॥ रखेकुलमेकलकलगाय ॥ पी०
 मोयेकद्रपकामेपीनी ॥ विनअग्निनतनमेंढाह्य ॥ प
 रुपरगचतुराइतेखोइ ॥ उरसुवातकेमथाय ॥ पी
 सुणोसखीएअरजहमारी ॥ जइमोयेपीउकुजनाय ॥
 मुनिहूकमसुजाइकहूरो ॥ चेतनघरअणाय ॥ पी० ६ ॥
 ॥ पद १८ मु ॥ जोवनमातीरागजेजेवती सुणए

अथसिद्धनीडालो

॥ पंटरनेदेसिद्धथयातेनी ॥ ढालपहेली ॥ पाडवपां
 चमोक्षेगया ॥ एदेशी ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे सांचलजो
 चितलाइरे ॥ समज्याथीसुखउपजे पन्नवणासुत्रमांहीरे
 ॥ १ ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे ॥ एत्रांकणी ॥ जिवसंसारी
 सिद्धिया टालीरागनेद्वेपरे ॥ आश्रवत्रादिकारणतजी
 पामीगुरुउपदेशरे ॥ वि० २ ॥ मोहमच्छरदूरेकरी चा
 रित्रपाचमुपामेरे ॥ केवलपामीअजोगीथया सिलेसीक
 रणतेठामेरे ॥ वि० ३ ॥ ध्यानशुकलचउनेदथी पूर्णहो
 यतेठामेरे ॥ एकसमेस्थितितेगया पूर्णसिद्धतेपामेरे ॥ वि०
 ४ ॥ तेसिद्धवहूविधजाणीये पणपचदशनेदभाखुरे ॥ स्व
 रुपतेनुंदाखशु नामकहिनेदाखुरे ॥ वि० ५ ॥ तिर्थअतिर्थ
 तिर्थकरु अतिर्थकरस्वयंत्रगबोधभाख्यारे ॥ प्रत्येकवो
 धबुद्धवोहिकह्या त्रणलिंगेसिद्धदाख्यारे ॥ वि० ६ ॥ स्व
 लिंगअणलिंगग्रहिलिंगे एकअनेकतेजाणोरे ॥ एपदरे
 भेदजाखीया सिद्धतणाचित्तआणोरे ॥ वि० ७ ॥ तेनुंस्व
 रुपआगेभाखशुं श्रोतासुणजोदइकानरे ॥ मुनिहूकमस्व
 रुपसिद्धनुं जाणताहोयवहूमानरे ॥ वि० ८ ॥ ढालपहेली
 संपूर्ण ॥ ढालबीजी ॥ आजतोवधाइराजानाभीकेदरवा
 ररे ॥ एदेशी ॥ तिर्थसिद्धनेपूजियेरे भावधरीनेसाचोरे

कखाईसुदरजाणो गेरीगजिरधार ॥ सेनपरायुंओलंगे
 नहि एसोगुणउदार ॥३॥ शानिरनेपदएमतेपामि रम
 तोसमतासंग ॥ मुनिहूकमकहेचीदानंदमय दिनदिनश्च
 धिकसोरग ॥४॥ पद१लु सपूर्ण ॥ पद २॥ रागसोरठ ॥
 समजावमंदिरमावेठो स्वभावमडपसार ॥ अनुभवमित्र
 तिहामल्योछे सुधानदविचार ॥स०१॥ अशुद्धप्रणतिदु
 रनिवारी नहिसकलेष्टजगार ॥ अर्धविसायशुद्धदिसे ए
 सेनतणोपरिवार ॥स०२॥ रीपुसेनतिहांनविपेसे एअनुं
 भवनोपसाय ॥ मुनिहूकमसमताशुरमतां टालिपरउपा
 य ॥स०३॥पद२जु सपूर्ण॥पद३॥ रागकानडो ॥ समता
 सगेरमणकरता नाखीकुमतातोडी ॥ सुमतिसाथेसगा
 ईकीधी मोहरायेमदमोडि ॥ स० १ ॥ ज्ञानानदश्रामं
 तकीनो अनुभवसेनापतिसार ॥ दरशणादिकसरदारते
 मोटा फोजतणोनहिपारा ॥स०२॥हूदूरेरेह्यामोहथरथरक
 पे रागद्वेपपरिवार ॥ अहियांजोरचालेनहिवाको करेश्र
 नेकउपचार ॥स०३॥ श्रामंतसेनापतिएकामिजलस स्वा
 मिनुराजसमालु ॥ हुंपणदोयनेवशथईवेठो ध्यानवाप्ती
 मांमालु ॥स०४॥ अवनयनंहिमुजकिचितमात्र सुधानद
 रुपपायो ॥ मुनिहूकमसुमताघेरआयो जोतनगारोवजा
 यो ॥स०५॥ पद३जु सपूर्ण॥



अथसिद्धनीटालो

॥ पंढरनेदेसिद्धथयातेनी ॥ ढालपहेली ॥ पांडवपां
 चमोक्षेगया ॥ एदेशी ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे सांचलजो
 चितलाइरे ॥ समज्याथीसुखउपजे पन्नवणासुत्रसांहीरे
 ॥ १ ॥ विरजिनेश्वरउपदेशे ॥ एत्रांकणी ॥ जिवसंसारी
 सिद्धिया टालीरागनेद्वेपरे ॥ आश्रवत्राडिकारणंतजी
 पामीगुरुउपदेशरे ॥ वि० २ ॥ मोहमचरदूरेकरी चा
 रित्रपाचमुंपामेरे ॥ केवलपामीत्रजोगीथया सिलेसीक
 रणतेठामेरे ॥ वि० ३ ॥ ध्यानशुकलचउनेटथी पूर्णहो
 यतेठामेरे ॥ एकसमेस्थितितेगया पूर्णसिद्धतेपामेरे ॥ वि०
 ४ ॥ तेसिद्धवहूविधजाणीये पणपंचदशनेदभाखुरे ॥ म्व
 रुपतेनुंदाखशु नामकहिनेदाखुरे ॥ वि० ५ ॥ तिर्थअतिर्य
 तिर्थकरु अतिर्थकरस्वयंत्रंगबोधभाख्यारे ॥ प्रत्येकबो
 धबुद्धबोहिकह्या त्रणलिंगेसिद्धदाख्यारे ॥ वि० ६ ॥ स्व
 लिंगत्रणलिंगग्रहिलिंगे एकअनेकतेजाणारे ॥ एपंदरे
 भेटनाखीया सिद्धतणाचित्तत्राणारे ॥ वि० ७ ॥ नेनुंत्त्र
 रुपत्रागेभाखशुं श्रोतासुणजोडडकानरे ॥ मुनिदूकमन्त्र
 रुपसिद्धनुं जाणताहोयवहूमानरे ॥ वि० ८ ॥ ढालपहेली
 संपूर्ण ॥ ढालबीजी ॥ आजतोवधाडगजानामाकेदरे
 ररे ॥ एदेशी ॥ तिर्थसिद्धनेपूजियरे भावयरीने

॥ तोसिद्धिपदपामीये जाणीहीरोजाचोरे ॥ तिर्थ० १ ॥ ए
 आकणी ॥ तिर्थचतुरविधसंगकह्योए थापनाकीधीसार
 रे ॥ तिर्थकरेउपदेशीनेए तेतिर्थसुखकाररे ॥ ति० २ ॥
 ससारसागरअनित्यजाणी नित्यचेतनाधारोरे ॥ एति.
 र्थजेनरसेवे तेषामेजवपारोरे ॥ ति० ३ ॥ जीवाजीवपदा
 र्थजाणी शुद्धपरुपकदेखीरे ॥ परमगुरुनीसेवाकीजे त्या
 सिद्धपदलेखीरे ॥ ति० ४ ॥ वचनतेनुनिराधारछे अवर
 आशरोनलेवेरे ॥ ज्ञानदर्शनचरणकेरो एकआशरोहोर्व
 रे ॥ ति० ५ ॥ स्वस्वजावेतेनररमता तजीपरभावनेतुर
 रे ॥ निजसत्ताएरिद्विदेखी पाम्याआणदपुररे ॥ ति० ६
 ॥ तेतिर्थसिद्धकोणछे गणवरप्रमुखजाणोरे ॥ साधुसाध
 वीश्रावकआवीका जेसिद्धातेचित्तआणोरे ॥ ति० ७ ॥
 तिर्थप्रवर्ततापहेला जेकोइमोक्षेजायरे ॥ त्याकोइतिर्थ
 करने वारेनकहेवायरे ॥ ति० ८ ॥ मरुदेवाप्रमुखजेसि
 द्धा तेअतिर्थसिद्धकहियेरे ॥ अश्रवासुवधीप्रमुखवारे ति
 र्थविछेदतेसहीयेरे ॥ ति० ९ ॥ आगलतिर्थप्रवर्तनपेला जे
 सिध्यातेजाणोरे ॥ जातिस्मरणादिकरणपामी जेसिध्याते
 चीतआणोरे ॥ ति० १० ॥ तेसर्वेनेअतिर्थकहिये सिध्या
 तेथीसिद्धरे ॥ मुनीहूकमतेपदनेनमता पामीयेअनुभवरि
 द्दरे ॥ ति० ११ ॥ ढालवीजिसपूर्ण ॥

॥ ढालवीजी ॥ रुडुनेरलीआमणसुरतगामजो ॥

ज्यादीठीरेमेमुरतसंभवतणीरे ॥ एदेशी ॥ तिर्यंकर
 हवेसिद्धनाखुविचारजो जेतिर्यंकरथइनेमोक्षेगया॥त्रण
 नानसयुक्तगर्जत्रावेजो पूर्वगतीप्रमाणेज्ञानीकह्या ॥१॥
 जन्मसमेहरीप्रमुखउठवकर्ताजो तेमदिक्षासमेपणतेजा
 णीये ॥ विणनमस्कारेलहेचारीत्रसारजो मनपरजवना
 णतेचीतत्राणीये ॥२॥ लइदिक्षाप्रभुशिक्षानर्वात्रापेजो
 केवलज्ञानउपन्यापाखीजाणीये ॥ केवलनाणप्रगटेप्रभु
 नज्यारेजो दरणणकेवलतारेचितत्राणीये ॥३॥ आवे
 इंद्रचोसठमीलेत्यारेजो तेमत्रसंख्यकोडदेवनीकही॥समो
 सरणनीरचनानीत्रावखाणजो परखदावारेमीलेतेवेगेस
 ही ॥४॥ जन्मत्रतिसेचारप्रभुनेहूताजो तेमत्रगीत्रारेहवे
 प्रभुनेथया ॥ कर्मनाशथीएजाणोविचारजो तेमउगणीसे
 देवकरतकह्या ॥५॥ एचोत्रीसेत्रतिसेवतजगवंतजो तरप
 दीत्रापिनेशघतेथापीयो ॥ द्रव्यखटमेत्रीपदीकहेवायजो
 उत्पातवयनेध्रुवभाखीत्रापीया॥६॥ नीत्यत्रनीत्येनेएकत्र
 नेकतेजाणजो सतत्रसतनेवकावक्ततेकहो ॥ जेदत्रजेदने
 जव्यत्रजव्यतेजोयजो आस्तीनास्तीप्रमुखशतजगीलइ
 ॥७॥नयनिक्षेपनेपरमाणवलिदोयजो॥खटकारकजाख्या
 रेप्रभुमुखथी ॥चउभंगी॥ त्रिजंगीसप्तजगीजाणोजो एम
 बहुसभंगीसमजोतेमेसुखथी ॥८॥ प्रतेकेप्रतेकेद्रव्यपरते
 तेहोवेजो 'स्यावाढमतेजाख्योतेश्रीजिनवरो॥इत्यादिकव

हुनेदतणोविचारजो गरुगमधीतेकारजसरे ॥९॥ पद
 वयनेटालीशेवोअरुजो जेआत्मगुणज्ञानेजरो ॥ अविन
 शीअकलरुजेहनुरुपजो एमअनेकथलथीसतावरां१
 इत्यादिकधर्मथापीपातासिद्धजो तेतिर्थकरसिद्धरीतज
 णीथे। मुनिदूकमकंडपुजेतेनापायजो गुणअनंताएमतेचि
 तमाआणीये॥११॥इतीढालत्रीजिसंपूर्ण॥

॥ ढाल ४ थी ॥ ढालोतेमुखनोमारु ॥ एढेगी ॥ अति
 र्थकरसिद्धजेह केवलीअवरछेतेहरे ॥ अरीहंतसुखकारं
 आत्मघातीजेह कर्मचारहएवातेतेहरे॥अरी०१॥ज्ञानगुण
 नेहणता ज्ञानावरणीनेगणतारे ॥अरी०॥ दर्शनगुणजे
 दावे दर्शनकरवानेश्रावेरे ॥अरी०२॥ तेदर्शनावरणीह
 णीयो गुणवीजोत्याजणीयोरे॥अरी०॥स्थीरतागुणतेजा
 णो ॥ समकीतादिकतेचित्ताणोरे ॥अरी०३॥ तेहनेजे
 कोइरोके मांहमायामलधोकेरे ॥अरी०॥ तेहनेजेणेहणी
 यो जथांस्वापकचारीत्रजणीयोरे ॥अरी०४॥ विद्व
 सार दानादिकलवधीधाररे ॥अरी०॥ अ
 काढु गुणचोथोतेगुणवाधुरे ॥अरी० ५॥ आर
 तेआप पुरणथयोहवेजापरे॥अरी०॥ वस्तुत्व
 णअनतातेशीरनाम्यारे ॥अरी० ६॥ अ
 नी दइरागद्वेपनेसोटांनीरे ॥अरी०॥ पाम
 य पछेअजोगीपदपायरे ॥अरी०७॥ प्रक

प्रकृतितेरजणीने ॥अरी० ॥ सलेशीकरणतेकरता प्रकृ
तितेरहणतारे ॥ अरी०८ ॥ भागदोयतेमंडी पोलारनो
नागएकछंडीरे ॥अरी०॥ घनलेइसिद्धपोंता तेअक्षयपद्मी
होतारे ॥अरी०९॥ अतिर्थकरसिद्धएह भेदचोथोजाणो
तेहरे ॥अरी०॥मुनिहूकमनीतपुजे ज्ञावअंतरमाहिवुजेरे
अरीहंतसुखकारी ॥ १० ॥इतिढालचोथीसंपुर्ण ॥

॥ ढाल ५ मी देगीधनराधोलानी ॥ स्वयवुधमुनीवि
णवुरे जेपाम्याआपेवोधअनुभवतेरसिया बोधलेइमुगते
गयारे करीआत्मनोशोधअनुभवतेरसिया ॥१॥ श्रीओप्र
गटयाजेहमुनीगुण पम्याअनुभवतेह ॥मु० ॥ सेजस्वना
वसुखकार ॥अनुभव० ॥ तेस्वयवुधमुनीवरुरे विणका
रणतेपाम्या ॥अनुभव० ॥ कारणढीठावीणतेसेजे सेजस्व
रुपतेनाम्या ॥अ०२॥ जातीसमरणाढिकपामी बोधबीज
तेलेइ ॥अ० ॥ तेस्वयवोधदोयभेदठेरे वीवरीनेतेकहि
ये ॥अ०३॥ तीर्थकरजेजेहूआ तेस्वयंगवुधजाणो ॥अ० ॥
पूर्वअभ्यासेबोधलेइने शीवपोताचीतआणो ॥अ०४॥अ
वरस्वयवुधबीजेनेटे विणतीर्थकरकहिये ॥अ० ॥ जेप्र
तीबोधसेजथीपामी चारित्रगुणग्रहिये ॥अ०५॥ नहिउ
पदेशकोइगुरुकेरो तेमनहिकारणकोय ॥अ० ॥ आपआ
पणासेजस्वभावे बोधबीजतेहोय ॥अ०६॥ तेस्वयंबोध
दोयप्रकारे जाखुतासविचार ॥अ० ॥ जेनेश्रुतपूर्वअभ्या

सीत जोइआखेउपसमधारा॥अ०७॥ तेमहानीपुणमहावु
 द्विवंतो पूर्वजवअभ्यासी ॥अ०॥ तेश्रुतनेपरभावे चारित्र
 गुणआहीवासी॥अ०८॥ तेहनेलिगदेवताआपे बोलता
 एअमदीसे ॥अ०॥ अथवासुगुरुपासजइने वेपलेइमन
 हीसे ॥अ०९॥ तेस्वयवुद्धस्वइच्छये एकाकीविचरता
 ॥अ०॥ जोसामर्थिहोयपोतानी तोगुणअनुजववरता
 ॥अ०१०॥ जोसामर्थिनहोयएकाकी विचरवासमरथ
 ॥अ०॥तोकोइगुरुपासेगच्छमाही लहेसुत्रनेअथा॥अ०११॥
 जोइसुगुरुतेगच्छमेरहेवे जेपूर्वसुतनाअभ्यासी॥अ०॥मुनि
 हूकमएनिश्चेजाणो आगेजेठप्रकाशी अनुजवतेरसीया
 ॥१२॥इतिढालपाचमीसंपुर्ण॥

॥ढाल ६ ठी ॥देशीएकविसानी ॥ तेस्वयंबोधरे पूर्व
 सुतअभ्यासीजे ॥ तेगच्छमाहेरेनहिकोइकालेरहेवाशीजे
 गुरुपासेरेसुत्रअर्थधारेनहि ॥ स्ववीरजेरेपोतेविहारकरे
 सही ॥ टुटक ॥ स्ववीरजेपोतेविहारकरता आत्मजावेजे
 रहे ॥ रागद्वेषमोहत्यागी निजस्वजावतेएमग्रहे ॥१॥ ते
 स्वयंबोधनारेचिन्हचारजाखुहवे॥तमेशुणजोरेभावधरीने
 चीतसवे बोध॥१॥उपधीरे॥२॥सुतने॥३॥बलीलिंगये॥४॥
 एधारेनेरेअर्थजथारथकहूये ॥टुटका॥कहूविचारतेचउकेरो
 बोधस्वभावेलहे कारणनेउपदेशपाखे स्वयंबोधतेएमग्रहे
 ॥ सुतपूर्वजवनुरे पूर्वधरतेहनेकहा ॥ तिर्थकरनेरे

अथवाअवरनेतेवह्यां॥जघन्यथीअंगेरे ॥ अगीआरतेजा
 णीये॥उतकृष्टेरे॥चउदपुर्वचीतआणीये॥टुटक॥ चउदपुर्वते
 ज्जीतआणी सुतअभ्यासतेकह्यो ॥ हवेउपधीविचारकहीशुं
 पन्नवणावरतीयेलह्यो ॥३॥ उपगरणवाररे स्वयंबोधेभा
 खीआ पात्रानारेसातकहिनेदास्कीया॥कलपकनारे त्रण
 उपगरणतेजाणीये उगोमोपतीरे एवारेवखाणीये॥टुटक॥
 एवारेउपगरणभाख्या स्वयबोधनेजाणजो॥हवेलिगपर
 माणजाखु पुर्वेकह्युंतेचीतआणजो ॥४॥ एवरतीरेअनुसा
 रेजोताथकाजातीसमर्णरेगुणथकीएकहीशक्या॥तेविनारे
 स्वयबोधहोवेनहि उत्तराधेनेरे अध्यनआठमेसही॥टुटक॥
 अध्ययनआठमे कपीलकेवली॥विणजातीसमर्णलही बो
 धविजतेसुखपाम्याचारित्ररगेग्रहि॥५॥अध्ययनविसमेरे
 उत्तराधेनमांकह्युं मुनीअनार्थीरे जातीस्मर्णविणलह्युंका
 रणजेरे निजवेदनावपुतणी॥ तेथीपाम्यारेबोधविजएची
 तजणी॥टुटक॥बोधविजतेएमपाम्या कपीललाजथकीव
 ली कारणनेजातीस्मर्ण दौयजिन्नतेएममली॥६॥ तेमठा
 णगेरे स्वयंबोधभाख्यासही॥ नहिजातीस्मर्णरे एमअ
 नेकशास्त्रवही ॥ एस्वयंबोधनारे भेदघणाशास्त्रेजह्या॥ते
 आराधिरे जिवअनतेसिद्धलह्या॥टुटक॥जिवअनंतासिद्ध
 पोता.तेहनाचरणकमलनमु ॥ मुनीहूकमएकाग्रहचीते
 स्वयंबोधजावेरमु ॥७॥ ॥ इतिढाल६ठीसंपुर्ण ॥ ढाल

७ मी ॥ हजियांमुनीतोविभाडगीरीजइवंदीये ॥ एदेशी ॥
 नवियांप्रत्येकबोधमुनीवदियेजेसिध्याआगेअनेक ॥ ज्ञानी
 मोराए नवीयाप्रत्येकबोधमुनिवदिये ॥ एआंकणी ॥
 प्रत्येकबोधमुनीतेकह्या जेपामीकारणनेक ॥ ज्ञानीमोराए
 ॥ नवी० १ ॥ भवीयास्वयबोधप्रत्येकबोधमा फरकछेभा
 खुतेह ॥ ज्ञा० नवीया चारेप्रकारेतेकह्यो बोधउपधी
 सुतएह ॥ ज्ञानीमोराए न० २ ॥ नवी० लिगप्रवरतनचोथो
 कह्यो एचारेप्रकारेभिन्न ॥ ज्ञानीमोराए ॥ जेजेविशेषदो
 यमाहीते ॥ भाख्युठेवचनतेभिन्न ॥ ज्ञानीमोराए० ३ ॥
 नवीयांवाह्यकारणकोइपामीने लहेप्रतीबोधसार ॥ ज्ञानी
 मोराए ॥ रिपभजराकुलदेखीने करकुडुपाम्योउदार
 ॥ ज्ञानी० ४ ॥ चुडीथकीनमीराजियो इत्यादिकएचार
 ॥ ज्ञानी० ॥ आचोवीसीमाभाखिया जातीरुमर्णविचार
 ॥ ज्ञानी० ५ ॥ तेएकाकीयेविचरे निश्चैवनतेसार ॥ ज्ञानी० ॥
 बोधहोवेहवेतेहने जघन्यथीअगअगियार ॥ ज्ञानी० ६ ॥
 उतकृष्टेनेजाणिये दसपुर्वतेधारज्ञानी ॥ पुर्वसुतनजनाक
 हि एभाख्योसुतविचार ॥ ज्ञानी० ७ ॥ उपधीविचारहवेजा
 खंशु तेसुणोधरीकान ॥ ज्ञानी० ॥ सातपात्रानाकह्या यो
 गीमोपतिभान ॥ ज्ञानी० ८ ॥ एनवउपगरणजाणिये हवे
 कहीलिगविचारा ॥ ज्ञानी० ॥ लिगआपेदेवते अथवालिग
 हे ॥ ॥ ज्ञानी० ९ ॥ स्वयंबोधप्रत्येकबोधमा ए

न्नाख्योच्चित्रविचार ॥ ज्ञानी० ॥ प्रत्येकबोधमुनिराजने
 एचारप्रकारेधार ॥ज्ञानी०१०॥ वनविपेएकमदिरा ना
 भिसुतनुंजाण ॥ज्ञानी०॥ चउमुखचउपरमेसरु चारदू
 वारवखाण ॥ज्ञानी०११ ॥ चउमुखथीचउआवियः प्रत्ये
 कबोधमुनीराज ॥ज्ञानी० ॥ देखीकचनखरपाप्रते कार
 णलेइयेसाज ॥ज्ञानी०१२॥ एकत्वनावचारेथया स्वस्व
 रुपसुखकार ॥ज्ञानी० ॥ घातिकर्मनेतेहणी केवलनाणउ
 दार ॥ ज्ञानी०१३ ॥ लडअजोगसिद्धिवरघा तेचारेमुनी
 राज ॥ ज्ञानी० ॥ मुनीदूकचरणतेहना शेवताआत्मकाज
 ज्ञानीमोराए न० ॥ १४॥ इतिढालसातमीसंपुर्ण॥

॥ ढाल ८ मी ॥ आवीरुडीभगतिमेपहेलांनजाणी
 ॥ एदेगी ॥ सुगुरुचरणशेवनथकीए बोधविजपामी॥बुध
 वोहितेहनेकह्या थयाशिवगामी॥सु०१ ॥ एआकणी ॥
 गुरुउपदेशवदूविधकह्योने मुख्यपणेतेदोय॥वेरागसंसार
 नोकह्योए विजोअध्यात्मजोय ॥सु०२॥ ससारवेरागथी
 सुणीने मोहस्वरुपजाणो॥कालअनादिसंसारमाए जन्म
 मरणठाणो ॥सु०३॥ रागद्वेषमोहछेने शुचांशुचकहिये
 तेसर्वनेदूरकरीने॥चारीत्रलेइये ॥सु०४॥ पंचमहाव्रतसु
 धांपाले निग्रथपढकहिये ॥ पछेअध्यात्मसाजलीने आ
 त्मगुणवहिये ॥सु०५॥ तेहनापणदोयजेदछे नाखुतेसु
 णो द्रव्याणुजोगप्रथमकह्योए पछेअध्यात्मनणो॥सु०६॥

खटद्रव्यनेजाणवाए गुणपर्यायसंजुक्त ॥ नयनिक्षेपप्रमा
 णग्रहिने स्यादवादसयुक्त ॥ सु० ७ ॥ पठेपंचद्रव्यनेतुमे पर
 जाणीछमो ॥ एकद्रव्यतमे आदरोवली आत्मसुरढमडो ॥ सु० ८ ॥
 तेविना अध्यात्मकरतो स्वरूपनवीवधे ॥ तेकारणभव्यप्रा
 णियाते प्रथमद्रव्यसधे ॥ सु० ९ ॥ पछे अध्यात्मध्याइयेरे
 एकत्वनाव आवे ॥ केवललेइ मुगते गयाकाइ निजस्वरूपजो
 वे ॥ सु० १० ॥ गुरुतणाउ पदेशथकीजे बोधाविजपाम्या ॥ तेथी
 आत्मकारजकरीने शिषपुरजइठाम्या ॥ सु० ११ ॥ एभेटसात
 मोकह्यो सिद्धकेरोजाणो ॥ मुनीहूकमतेगेवताये अनंतसि
 द्दनाणो ॥ सु० १२ ॥ इतिदालआठमासिपुर्ण ॥

॥ दाल ९ मी ॥ मारुमनमोह्युरेश्रीसिद्धाचलेरे एदेशी
 नेदहवेआठमारेकहूकइसिद्धनारे स्त्रीलींगरेजेह ॥ अने
 कतेसिद्धिरे बोधपामीकरारे ॥ पोतोशिवपुरगेह नेदहवे
 आठमारेकहूकइसिद्धनारे ॥ १ ॥ आकणी ॥ तेस्त्रीनारेनेद
 त्रणकह्यारे तेसुणजां अधिकार ॥ वेदप्रथमरेशरीराका
 दुजोकह्यारे पथतिजोतेधार ॥ भे० २ ॥ वेदतेका
 णोरे लिंगतेशरीरनोआकार ॥ ४ ॥
 शछेरे एकह्यात्रणप्रकार ॥ भे० ३ ॥ वे
 रीतणोरे तेतोह ॥ ५ ॥
 एशुद्धचित्तआण ॥ ने० ४ ॥
 रे डिगवरमतीजेह ॥ ६ ॥

मुक्तीनतेह ॥भे० ५॥ ज्ञानदर्शनगुणचारीत्रनारे एहनेशु
 द्वनहोया ॥ तेहथीमुक्तीएपामंनहीरे पामेशुद्वतेजोयं ॥जे०
 ६॥ हवेगुरुउत्तरतेहनोनाखेसहीरे स्त्रीमुगतेरेजाय ॥ लो
 गप्रयोजनअर्हीकइछेनहीरे तेतोस्वजावेरेथाय ॥जे०
 ७॥ ज्ञानदर्शनचरणगुणतेहनोरे तेमवलीपुरुपनोजोया ॥
 तेहमांफरककाइहोवेनहीरे तेतोस्वजावीकसोय ॥भे० ८॥
 समकीतशुद्धतेपामेसहीरे पछेसीदांतअनेक ॥ ब्रह्मचर्य
 तपालेरेआकरुरे तेमवलीतपविधनेक ॥जे० ९॥ संज
 मपालेसस्रप्रकारथीरे एमनिश्चैनेव्यवहार ॥ तोमुक्तिके
 मस्त्रीजायेनहीरे करोतमोमनशुविचार ॥भे० १०॥ तवडि
 गवरमतवादीकहेरे स्त्रिनेजेठेफेर ॥ ज्ञानदर्शनशुद्धहोवे
 सहीरे पणशुद्धचारीत्रनमेल ॥भे० ११॥ स्त्रिवस्त्रप्रमुखरा
 खतीरे तेतोपरिग्रहकहेवाय ॥ निग्रथविनातोमुक्तिहोय
 नहीरे एतोअनिग्रंथथाय ॥भे० १२॥ वस्त्रविनास्त्रिशोभेन
 हिरे होवेविक्रताचार ॥ पुरुपवस्त्रविनातेशोभतोरे उपस
 र्गनवीहोवेधार ॥जे० १३॥ ज्यापरीग्रहत्यांचारीत्रनहीरे
 इत्यादिकबोलोतेह ॥ मुनीहूकमउत्तरहवेआगलेरे साभ
 लजोगुणगेह ॥जे० १४॥ ढाल९मीसपुर्ण॥

॥ ढाल १० मी ॥ चोमासीपारणुआवे ॥एदेशी॥ हवे
 उत्तरतेहनेदिजे न्यायजुगतीथीलीजे ॥ सुत्रशास्त्रथीकीजे
 तेहजहृदयवरीजेरे ॥ जेदआठमोमोक्षेकीजे हवेउत्तरतेह

नेटिजेरे॥आकणी॥ १ ॥जेवस्यपरीग्रहमानीजे मुक्तिनो
 न्यायंणीजे ॥ एवीदेशनाकेमसुणीजे एतोधर्मपोतानो
 खणीजेरे॥ हवेउत्तर २ ॥ जगवतिसारग्रथनाखु तुमचा
 धरमाहितेढाखु ॥ वस्त्रराखवानीसाखु तेमाटेपरीग्रहन
 आखुरे॥हवेउत्तर ३ ॥ परीग्रहतेमुरछाकहिये साधसाध
 विनेतेनलहिये ॥ समजावसदातेवहिये शुद्धस्वजावमा
 रहियेरे ॥ भे० ४ ॥ वस्त्रादिकउपग्रहणजेह तेतोधर्मना
 भारुयाएह ॥ तहितोचमरीआदिक्रतेह परीग्रहथावे
 सुणएहरे ॥भे०५॥ तवमिगवरमतिबोले रुदियेपोताने
 खोजे॥कर्मआकरुतेनतोले स्त्रिसातमीएनजोवेरे॥भे०६॥
 जोसातमीनकनजावे तोमोक्षक्याथीथावे ॥ विर्यशक्ति
 कहोकेमआवे चक्रवर्तितेनहिथावेरे ॥भे०७॥ वासुदेवव
 लदेवनथावे विद्याचारणपद्दिनपावे ॥ ज्ञयाचारणशक्ति
 नआवे तोमोक्षकेमजावे ॥भे०८॥ हवेउत्तरएहनोदिजे
 आगलढालमाकीजे ॥ रागद्वेपत्यानवीलिजे सजावरहि
 समजिजेरे ॥भे०९॥ मुनीहूकमउपगारबुद्धि भवीजिव
 नेकाजेशुद्धी ॥ परुपेविभावनेरुथी पामेतेपदशुद्धीरे
 ॥भे०१०॥ इतिढालदशमीसपुर्ण॥

॥ ढाल११मी ॥आदितवारैदेवदर्शणकरियेरे॥एदेशी॥
 सुपुंधारोएमजवीतमेदिलमारे कहामीमिथ्यातदूर॥चित
 नहिमलमेरे॥ग०१आकणी॥ सातमियेनवीजावे तेथीमु

कितवारोरे ॥ तोसुमीनमुगतेजाय गतिसातमीएधारो
 ॥ सु०२ ॥ एवोनदिसेनेम सातमीजावेरे ॥ तेहिजमुग
 जाय एमनिश्चनथावेरे ॥ सु०३ ॥ नहिसंग्रामादिकते
 पातिकमोटुरे ॥ तेमांकृपीकर्मदेख इत्यादिकनहिखोटुं
 ॥सु०४॥ तैथीनकेनजाय स्त्रितेजाणारे ॥ पणतेमोक्षजा
 चितमांआणारे ॥सु०५॥ जोगनिथीलेइयेपरीमाण तो
 मेसुणजारे ॥ भुजपरीदुजीएजोय त्रिजियेपस्वीचणजो
 ॥सु०६॥ चतु पदचोथियेजाय उरपरीजाणारे ॥ पांचम
 नकेतेह एमचितआणारे ॥सु०७॥ एमअधोगतिनुंमा
 भिन्नभिन्नकहियेरे ॥ उर्धगतियेअंक आठमेसर्गलइये
 ॥सु०८॥ अधोगतिनेम उर्धनलाधेरे ॥ ज्ञानादिक
 एजेह मुकिततेसाधेरे ॥सु०९॥ चर्काअरीवलजेह स्त्रिन
 थावेरे ॥ तेसुणजोअधिकार आगलकेहेवेरे ॥ सु०१० ॥
 मुनीहूकमभाखेएम दिलमाधरजारे ॥ स्त्रिमुक्तेजाय इ
 कामतकरज्योरे ॥ सु०११॥ इतिढाल ११ मीसपूर्ण ॥
 ॥ढाल१२मी॥ अजितजिनेश्वरचरणनिशेवा ॥एदेशी
 सुधीरेसरधाभवीतमेकरजो टालीमतपक्षदुर ॥ मुकित
 णुएकारणनाखु ज्ञानगुणतेभुर ॥ चवितमेसमजारे ए
 वचनछेसाचु ॥१॥ एआकणी ॥ पद्विपामेतेत्यांइजमुकि
 एवचनछेअप्रमाण ॥ तोवासुदेवनेमहानके चक्रिपण
 खाण ॥न०२॥ बलदेवतोनेनजावे द्योगतीतसजाखी

नेदिजेरे॥आकणी॥ १ ॥जेवस्यपरीग्रहमार्नाजे मुक्तिनो
 न्यायज्ञणीजे ॥ एवीदेशनाकेमसुणीजे एतोधर्मपोतानो
 खणीजेरे॥ हवेउत्तर २ ॥ जगवतिसारग्रथनासु तुमच
 घरमाहितेदासु ॥ वस्त्रराखवानीसासु तेमाटेपरीग्रहन
 आखुरे॥हवेउत्तर ३ ॥ परीग्रहतेमुरछाकहिये साधसाध
 विनेतेनलहिये ॥ समजावसद्रातेवहिये शुद्धरवजावमा
 रहियेरे ॥ भे० ४ ॥ वस्त्रादिकउपग्रहणजेह तेतोधर्मना
 भारुयाएह ॥ तहितोचमरीआदिकतेह परीग्रहथाव
 सुणएहरे ॥भे०५॥ तवाग्निगवरमतिबोले रुदियेपोताने
 खोले॥कर्मआकरुतेनतोले स्त्रिसातमीएनजोवेरे॥भे०६
 जोसातमीनर्कनजावे तोमोक्षकयांथीथावे ॥ विर्यशक्ति
 कहोकेमआवे चक्रवर्तितेनहियावेरे ॥भे०७॥ वास्
 लदेवनथावे विद्याचारणपद्धिनपावे ॥ ज्ञवाचारण
 नआवे तोमोक्षकेमजावे ॥भे०८॥ हवेउत्तरएह
 आगलढालमाकीजे ॥ रागद्वेषत्यानवीलिजे सर
 समजिजेरे ॥भे०९॥ मुनीहूकमउपगारबुद्धि
 नेकाजेशुद्धी ॥ परुपेविभावनेरुयी पामेते
 ॥भे०१०॥ इतिढालढशमीसपूर्ण॥

श्री ॥ न० ३ ॥ नथकीशुद्धतलखीजी नेदकीधादोय ॥ परवस्तुजेजे
 तिकारणतोसुजी टालणप्रगटचोरेसोय ॥ न० ४ ॥ ध्यानअग्नीलंगावी
 थवागोमतसु करीपरनोनाश ॥ स्वगुणस्वसत्ताग्रहिजी पोताशी
 गी तोकेमजुठरवास ॥ न० ५ ॥ नपुशकवेदेसाहिजी सिध्याछेजेजीव।
 याश्रीजिनवोतीनपुशकनवीलहेजी लहेकृत्रिमशीव ॥ न० ६ ॥ एव
 ॥ न० ६ ॥ तेमेमेविसनोजी एहनोजाख्योनेम ॥ एनपुशकजाणितं
 स्त्रिमुक्तेजसिध्यातेथीप्रेम ॥ न० ७ ॥ स्वलिगेजेसिधियाजी न
 मानवीलिंगधुतासविचार ॥ जिनशासनअनुसारनोजी पामिलिंग
 ये तेथीमुक्तिदार ॥ न० ८ ॥ उधोमोपतितेग्रहेजी चरणराखणएधा
 नेननडोळीनोचमुडशीरकरेजी एजिनलिगविचार ॥ न० ९ ॥ एलि
 न० ९ ॥ गहेसिधियाजि तेस्वलिगकहाय ॥ तेथीविपरीतजेरह
 ॥ मुनीहूकमज तेअन्यलिगथाय ॥ न० १० ॥ अवरदर्शणमांसहिजि
 इतिटालीनोगीसन्धासीआद ॥ सर्वेदर्शणमांहिथीजि सर्वेनेखया
 ॥ न० ११ ॥ तेतेभेखेसिधियाजी तेअन्यलिगकहेवाय ।
 ॥ एदेशीधारमोभेदएसिद्धनोजी मुनीहूकमजेथाय ॥ न० १२ ॥ इति
 तेपुरुपाकडाल १३ मी संपुर्ण ॥
 एसिद्धनोज ॥ डाल १४ मी ॥ पंचमीनपविधिसांजलो ॥ एदेशी ।
 जाणियेजंनपुशकलिगेसिधिया गगीलमुनीधाररे ॥ इत्यादिकव
 गी प्रगटजाणिये नपुशकसिद्धविचाररे सिद्धपदनमोभावथी ॥ ११
 नावमाजशी एआकणी ॥ अन्यलिगेसिद्धतेकहा वक्रचुरीप्रमुख
 ॥ न० ३ ॥ आरजअनारजमाहिथी पाम्याअनंतासुखरे ॥ सि

॥२॥ हवेग्रस्थिलिगेकहू ॥ द्रव्यचारं
 वेपनेखंनवीश्रादरे ॥ नहिसाधुपटनाम्यारे ॥
 गृहवासवस्तेथके केवलजेइजेसिद्धरे ॥ ते
 द्विजाश्रिया रीद्विअनतीलीधरे ॥ सि० ५
 वाप्रमुखजाणिये ग्रहस्थिलिगेसिद्धरे ॥ त्वस्व
 रभ्या तेषाम्याअनतीरिद्धरे ॥ सि० ५ ॥
 कला मुक्तिमुखनेवरियारे ॥
 कसिद्धतेठरियारे ॥ सि० ६ ॥
 जोतासविचाररे ॥ एकसमयदोयतिनचार
 धाररे ॥ सि० ७ ॥ किंचितविवरोतसकहू
 रे ॥ प्रथमममेतेजघन्यथी एकथीवात्रिसधाररे
 एउत्कृष्टेपदेकह्यो एमविजेसमेविचाररे ॥
 तिरस जघन्यउत्कृष्टेधाररे ॥ सि० ९ ॥
 सिद्धेएसिद्धरे तोत्रेहकालआवेसहि ॥
 रे ॥ सि० १० ॥ एमसिद्धअनेकपेरे
 णारे ॥ मुनिहूकमएसिद्धना भेदघणावखाणारे
 नमोभावथी ॥ ११ ॥ इतिटाल १४ मी संपुर्ण ॥
 ॥ टाल १५ मी ॥ रागधनाश्री
 जने जेसर्वकर्मनिवारारे ॥ आत्मसत्ताप्रगटी
 गुणधारारे ॥ धनधनसिद्धमहाराजने ॥ एआंकणी
 प्रथमसमयेएकजे सिध्याजघन्यथीजाणारे ॥ ते

रीतखेयुं उत्कृष्टेऽमृतालीसमानोरे ॥ ध० २ ॥ एमाद्वितीयं
 ॥ तिस्रसमे जावतसातमेकहियेरे ॥ एसंख्यायेजेसिध्ववरे
 ग्रहंरहेकाललहियेरे ॥ ध० ३ ॥ अथवातंगणपचासजे
 ॥ यथासमयेमिध्वेरे ॥ उत्कृष्टेसायथजे एमखटसमय
 नहो ॥ ध० ४ ॥ सिध्वतेउपरत्रहेकालजे निश्चयेतेहोयरे
 साएकसतजघन्यथी उत्कृष्टेवोतेरजोयरे ॥ ध० ५ ॥
 सन्नेलगेजाणिये पछेविरहकालजाणोरे ॥ जघन्यथी
 रएकसमे उत्कृष्टेचोरासीवखाणोरे ॥ ध० ६ ॥ चारसमे
 तजेसिध्वशे अथवापंच्याशीजाणोरे ॥ उत्कृष्टेछनुकह्या
 चसमयेलगीवखाणोरे ॥ ध० ७ ॥ अथवासताणुसिद्धे
 न्यथीएपदकहियेरे ॥ एकसतदोयउत्कृष्टथी एमदोय
 लगेलहियेरे ॥ ध० ८ ॥ एपदसर्वेजाखिया जघन्यउत्कं
 णानरे ॥ विरहकालतेपछेखरो एसिद्धतणीसानरो ॥ ध० ९ ॥
 न्यथीएकसोत्रणथी उत्कृष्टेएकसोत्राठरे ॥ तेतोएकज
 नसिध्वया जेहनांकर्मसवीनाठरे ॥ ध० १० ॥ त्यात्रहे
 लजाणिये खटमासनोधारेरे ॥ एअनेकसिध्ववगणव्या
 नेपेएहविचारोरे ॥ ध० ११ ॥ सिध्वस्वरुपभाखीयु तमे
 जोचितमाप्राणोरे ॥ जेध्यावेतेहिजलहे एविजिननी
 णोरे ॥ ध० १२ ॥ तेसिध्वमहेजस्वजावमां निश्चयेतेद
 णोरे ॥ व्यवहारथीपटरकह्या अथवाजेदअनेकरो ॥ ध० १३ ॥
 गुरुमुखथीधारजो जेज्ञानगुणजरियारे ॥ मुनीहूकम

अनुंनवी जेमहेजमुखनादरियारे ॥ ध०१
१५ मी सपूर्ण ॥

॥ कलश ॥ एमसिध्मगुणजाया महज
जेदएभाखिया संक्षेपतमवरणवकीधी सि
खिया ॥ग०१॥ व्यवहारनबंधीएभेदछे च
निश्चयेसहेजस्वभावग्मता आत्मा ० हे
आत्मस्वरुपमेलिगादिकजे के जेद देसेन
दशामाविररहे सलेकिंकरणसिध्मकहि॥ग
ध्वनुस्वरुपध्यावे परभावथोअलगोरहि॥
जेह पामेसुखअनंतवही॥ग०२॥ संवतउगि
अपाडकणपक्षसहि ॥ वास जेएकीव
वहि ॥ग०५॥ सद्यसुदरसुरतशेहेरनो त आ
रहि ॥ एहस्वरुपरचनाकिधी संघतेअति
॥ग०६॥ शुधसमकिततेहपामे जेसरथाकरे
हूकमशुधचिदानंदमय सिध्मपवीतेहनी॥ग०

॥ एसिध्मनाफंडरजेदनी ॥
॥ ढालोसपूर्ण ॥

१ अमरस्तेजमुनिनीसन्नाय.

र्मनी विचित्ररातीवतावीछे ... ३५

१०, तत्वसारोद्धार.

रपीतत्वनापांचनेद

वनत्ववताव्योछे तेमांअजिवनाचेदविगरे

व्योछे ... ३८८

आश्रवतत्ववताव्योछे तेमांमिथ्यात्व,अत्र

गरेचेदवताव्योछे ... ३९४

पुन्यतथापापवेतत्वभेगावताव्याछे ... ४०८

वधतत्ववताव्योछे ... ४१७

तत्वनाचारभेद

तत्वतेमांजिवनाअनेकनेदतथातेने उपजवा

काणांतथाआवखुविगरेघणीवावतोन्नतावीछे ४२२

तत्वतेमांतेनाजुदाजुदाबोलविगतसाथेवता

छेसंजमनाचेदतथावारभावनाउग्रणीविगत

दर्शावीछे ... ४४६

रातत्वतेमांवाह्यतथाअभ्यतरतपविगतवार

व्याठेतथाघणाप्रकारनातपनीरीतीवतावीछे ४४३

तत्व ... ४८७

११ श्रीअनुभवप्रकाश.

स्वभाववताव्योछे ... ४९९

१२ श्रीआत्मचिंतामणी

६५

१ गुह्यतया अगुह्यस्वरूपनी जैलखाणकरावीने शुद्धस्व
रूपग्रहणकर्युछेतथानयनाव्यवनेदकह्याछे ६१७

१३ श्रीचिदानंदवत्रीसी.

१४ श्रीसिद्धनापदमांछे

६१७

१४ श्रीसिद्धनापदरभेदनीढालो

तेसासिद्धनापदरनेद विगतसाथेवतावी स्त्रिमोक्षे
जवाविगरेचरचावतावीछे ६१९

१५ मा पानानी १०मी लीटीमा 'फळ'ने ठेकांणे 'कुल' वाचवुं

१६ मा पानानी १५मी लीटीमा 'एजीव'ने बदले 'अजिव' वाचवुं

